



सुकवि-माधुरी-माला—षष्ठ पुष्प

# मिश्रबन्धु-विनोद

अथवा

हिंदी-साहित्य का इतिहास तथा कवि-कीर्तन

लेखक

‘मिश्रबधु’

# कुछ कुनी हुई साहित्यिक पुस्तकें

दुलारे-दोहावली	२), १), ॥)
दुलार दोहावली (सटीक) और समालोचना	युग भूमिका सहित २)
विहारी रत्नाकर	२)
हिंदी-नवराज	२॥), २)
द्वय और विहारी	१॥), २)
पृथ संग्रह	१॥), २)
पराग	॥), १)
वषा	॥२), १२)
भारत-गीत	॥२) १२)
आत्मापण	॥), १)
निषध निषय	१), १॥)
दिरव-साहित्य	१), २)
वेणीसहार	॥२), ॥)
अज्ञुत आझाप	१), १॥)
साहित्य-सुमन	॥२), १२)
कौ अज्ञान और एक सुमान	१), १॥)
प्राचीन दंडित और कवि	॥२), १२)
मतिराम-प्रभावली	२॥), ३)

साहित्य-सदम	
( द्विवेदीजी )	१॥), २)
सुकवि सकीर्तन	१), १॥)
मौदानद महाकाव्य	॥), १)
भवभूति	॥२), १२)
हास्य-नस	॥२), ॥)
हिंदी साहित्य विमर्श	१), १॥)
पद्य पुष्पांजलि	१॥), २)
परिमल	१॥), २)
कविता	१), १॥)
रतिरामी	१॥), २)
काव्य-कल्पद्रुम	२॥), ३)
वैषध-वर्णित चर्चा	॥) १)
किञ्चक	॥), १)
समापण	१), ॥)
प्रसादजी के दो मास्क	१), १॥)
मल्ल मरेठ	२॥), ३)
सूरसागर	३)
सद्विध सूरसागर	२)
हिंदी-काव्य में नवरस	२)
शरासध महाकाव्य	१)
प्रबंध पद्य	१), १॥)

सब प्रकार की हिंदी-पुस्तकें मिलाने का पता—

गंगा-प्र धागार, ३६ लाटूश रोड, लखनऊ

# मिश्रबंधु-विनोद

थथवा  
हिंदी-साहित्य का इतिहास तथा कवि कीर्तन  
( चतुर्थ भाग )

लेखक  
गणेशविहारी मिश्र  
राजराजा रा० ब० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०  
रा० ब० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०  
“ते मुकुती रससिद्ध कवि बंदनीय जग माहि ,  
जिनके सुजस सरीर कहें जरा मरन भय नाहि ।”

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार  
३६, लाटूश रोड  
लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सजिह्द ३॥ ] स० १९६१ [ सादी ४ ]

प्रकाशक

श्रीदुद्धारदास भार्गव

अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय

लखनऊ

शाखाएँ और सोलें एजेंसियाँ—

गंगा-प्रयागर

सिद्धिदास आदम अलमोर

गंगा-प्रयागर

१२५११, इरासम रोड, कलकत्ता

गंगा-प्रयागर

सराफा बाजार, लखनऊ

गंगा-प्रयागर

कोटगाड, बीकानेर

गंगा-प्रयागर

मीनकंड स्ट्रीट, दरियागंज, दिल्ली

गंगा-प्रयागर

३२८, खैरिंगन रोड, बंबई

गंगा-प्रयागर

जसवंत विहिदगा, लोधपुर

एया प्रचारक — सैफुल्लो जगद

मुद्रक

श्रीदुद्धारदास भार्गव

अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय

लखनऊ



मिश्रकथु-विनाद



श्रीरक्षा-नरेश

भीमान् गबाई मटेद्र महाराजा श्रीवीरसिंह देव गहादुर

G e F A P e s I u k a o w

## समर्पण

हिंदी भाषा एव कविता के अनन्य प्रेमी और सहायक, काव्य-मर्मज्ञ, सौजन्य-मूर्ति, सरल-स्वभाव, निरहंकार, रसिक-शिरोमणि, हिंदी के सुलेखक, स्वदेश एव स्वजाति के अद्वितीय भक्त, प्रजापालक, नरपाल चूड़ामणि हिज हाइनेस सराई महेंद्र महाराजा श्रीवीरसिंहदेव बहादुर ओरठ-नरेश 'सरामद राजा-हाय बुंदेलखंड' के कर-कमलों में यह तुच्छ भेंट ( मिश्रबधु-विनोद, चतुर्थ खंड ) उनकी उदार स्वीकृति से, अत्यंत श्रद्धा और प्रेम-पूर्वक, मिश्रबधुओं द्वारा, सादर समर्पित है ।

गोलागंज, खखनऊ वैशाख शु० ७, संवत् १९९१ २० मई, १९२४ ईस्वी	}	गणेशविहारी मिश्र श्यामविहारी मिश्र (रावराजा, रामबहादुर) शुकदेवविहारी मिश्र ( रामबहादुर )
---	---	--







## भूमिका

चतुर्थ भाग ( मिश्रबधु विनोद ) में पहले प्राय २६४ कवि थे, किंतु अब प्राय १५०० हो गए हैं। इनमें से बहुतेरों ने स्वयं हमारे पास पत्र द्वारा अपना हाल लिख भेजा है, तथा बहुतेरों के हाल उनके मित्रों आदि के द्वारा ज्ञात हुए हैं। कहीं कहीं हाल मैजनेगलों के नाम भी लिख दिए गए हैं, किंतु ऐसा बहुत ही कम हो सका है। ऐसा लिखने का विचार जब से उठा, उससे पूर्व सैकड़ों लोगों के हाल लिखे जा चुके थे। अतएव जहाँ कहीं हाल का आधार प्रथम में न हो, वहाँ स्वयं कवि के अथवा उसके मित्रों के पत्रों का आधार समझना चाहिए। बहुत-से कवि हमको स्वयं ज्ञात हैं। ऐसे स्थानों पर बहुधा ऐसा लिख भी दिया गया है, किंतु कई कारणों से सब कहीं ऐसा नहीं हो सका है। इस भाग के कवियों के आधार दृढ़ हैं। नजर इसमें सिलसिलेवार हैं, किंतु कहीं कहीं 'अ' आदि के भी नंबर आ गए हैं। यह एक प्रकार की भूल समझनी चाहिए, सिद्धांत नहीं। आगे के संस्करणों में यह भी निरूल जायगी। समय के देखते हुए चौथा भाग कुछ बड़ा अवश्य है, किंतु विनोद मुख्यतया कवि-श्रुतियों का कथन है, सो ज्ञात हाल छोड़ देना अनुचित समझा गया। वास्तव में बहुतेरी साधारण ज्ञात घटनाएँ छोड़ भी दी गई हैं, नहीं तो प्रथम दूना हो जाता। आशा है, स्थानाभाव के भय से जो हमें ऐसा करना पड़ा है, उसके लिये कविगण क्षमा करेंगे।

लखनऊ  
सं० १९९१

विनीत  
मिश्रबधु

# विषय-सूची

अध्याय २८—आदि से स० १९४४ पर्यंत के शेष कविगण	पृष्ठ
मुख्यध	१
परम प्राचीन कविगण	६
सत्रजल आदि	२८
स० १००० से आगे	३३
स० १८०० प्रारंभ	६०
स० १८२० „	७४
स० १२०० „	६३
अध्याय ३६—दूसरा अक्षांत काल	१२२
अध्याय ४०—पूर्व नूतन परिपाटी	१३७
स० १६४२—६० का साहित्य	१३७
उपर्युक्त समय के मुख्य कविगण	१७०
उपर्युक्त समय के शेष कविगण	२६१
अध्याय ४१—उत्तर नूतन परिपाटी	३१८
स० १६६१—७२ का साहित्य	३१८
उपर्युक्त समय के मुख्य कविगण	३३७
अध्याय ४२—आजेंरुज	४६०
स० १६७६—६० का साहित्य	४६०
स० १६७७—६० के कवि व श्लेषक	६००
स० १६७६—६० के अग्र्य कविगण	६८७

# मिश्रबंधु-विनोद

## अड़नीसवाँ अध्याय

आदि से सन् १९४४ पर्यंत के श्रेय त्रिगण

मिश्रबंधु विनोद के द्वितीय संस्करण के समय में केवल थोड़ा बहुत परिवर्तन ग्रंथ में नहीं हुआ है, परन्तु फिर से पूरी जाँच और खोज करने से कवियों तथा ग्रंथों की संख्या पहले से प्रायः दबोदी हो गई है। दूसरे भाग तक प्रथम संस्करण में १३२१ कविये, तथा श्रेय १६४० हो गए हैं। तीसरे भाग में भी ऐसी ही वृद्धि हुई है, और चौथे में संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है। दूसरे संस्करण में आन्ति स सवत १९४२ पर्यंत कवियों की कथा प्रथम तीन भागों में है, तथा इस चौथे भाग में १९४२ से श्रेय तक के रचयिताओं के विवरण है। प्रथम तीन खंडों के बहुत-से ऐसे कवि हैं, जो उन भागों के द्वितीय संस्करण के समय हमें मालूम न थे, किन्तु श्रेय ज्ञात हो गए हैं। उनका वर्णन यहाँ करके आगे बढ़ना उचित समझ पड़ता है। उपयुक्त खंडों में पहले का तीसरा संस्करण भी हो गया है, तथा दूसरे और तीसरे के अभी दूसरे ही संस्करण हुए हैं। श्रेय न-जाने कितने दिनों में इनके और संस्करण मिलें। इमलिये जो कुछ समालोचक लोगों को ज्ञात हो चुका है, उसको अपने ही पास पढ़ा न रखकर हम उसे श्रेय प्रकाशित कर देना उचित समझते हैं। इस अध्याय के रचयिता-गण बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं, किन्तु वर्णन-पूर्णता के लिये उनका लिखा जाना आवश्यक था ही, तथा इनमें से कितनों ही ने कई-कई ग्रंथ

यन्त्रण ह । इनमें से मदनमोहन, जनुनाथ भाट, कनककुशल जानकाराम, गगाधर व्यास, जीरा भद्र तथा बहुत स अन्य महाशय मुझसे भी ह । जीरा भद्र ने बहुत परा पात्र कृष्टा है । इस अध्याय में बहुत-स महाराष्ट्र देशवात हिंदी-कवि भी ह । कुल मिलाकर यह भाग बुरा नहीं ह । इसमें कवियों के नवर घड़ा निम्न गण ह, जो अपने उचित स्थान पर उन्हें मिलने । २२ नाथ कवियों के विवरण तृपिकाचार्य राहुल साहतायन नामक लेखक महाशय ने १९८६ की गगा परिष्ठा में निकाला ह जिसके आधार पर उनके कथा यहाँ दिये गए हैं । इनमें स बहुतरे आठवीं नवीं, दसवीं आदि परम प्राचान शताब्दियों के हिंदी-कवि कट गए ह । उक्त ग्रंथ बहुधा तौर में कट जात है । कवियों का प्राचानता बहुत महत्ता-युक्त है, और उक्त आधारों पर अखलविन जान पता ह किन्तु उनके पूरे विवरण साहतायन महाशय ने नहीं दिए ह । जब इस विषय में अधिक ज्ञान होगा तब फिर पुनः कृष्टा जायगा ।

साहतायन महाशय की खोजें कितनी महत्ता पूरा ह, सो प्रकट हा है । आशा है, आर अपने कथा के पूरे इगले नेत्र शास्त्र समाज का वाधित करेंगे । राहुल महाशय को हमने पत्र लिखा था । उसके उत्तर में जो पत्र उन्होंने हमें लिखा है, उसका नकल नीचे ही जारी है, जिससे समय जानन में बहुत सहायता मिलेगी ।

कवियों के नवर डालने में भी एक नवीन प्रश्न उपस्थित है । प्रथम सरकारण में नवर सीधे साथ पढ़ते गए, किन्तु द्वितीय सरकारण के समय यह सोचा गया कि खोगा ने जो इवान दिए हैं वे नवान नवर डालने में अमानक हो जायेंगे । अतएव प्रथम तीन खंड में नवर पुराने ही गले गए, और जिन गवों के बीच जाँच से नए कवि मिले, उनके नवर के से कर दिए गए । जैव गवर १९६६ तथा

१५६७ के बीच में दो कवि नष्ट मिलते हैं, सो उनके नंबर  $\frac{1}{4}$  तथा  $\frac{1}{2}$  कर दिए गए हैं। अब इन तीनों नंबरों के बीच में भी नष्ट कवि मिलते जाते हैं, सो  $\frac{1}{4}$  तथा  $\frac{1}{2}$  आदि के समान नंबर डालने पड़ते हैं। इसमें मुख्यलपन आ जाता है, और समझ पड़ता है कि जिनकी सुविधा पुराने नंबरों के हवालों से होगी, उसमें अधिक शसुविधा इन नष्ट नंबरों के लिखने में नही रही है। चाये खंड में प्राचीन कवि बहुत थोड़े हैं तथा तीन अधिक, सा और भी बढ़ावा आयेगा। फिर ग्रंथ में पूरे कवि मिलते हैं, सो बिना बहुत कुछ जोड़े-नाड़े पता नही लगता। एक यह भी बात है कि किसी महाकवि को पूरा नंबर न देकर किसी अन्य कवि के नंबर के पटे में लिखना उसका अनावश्यक अधीनता-सी समझ पड़ती है, जो अनुचित है। प्रथम खंड में नंबर २७७ है, किंतु उसमें कवि ३३६ सतिविष्ट है। इसी प्रकार दूसरे खंड में नंबर २७८ से १३२१ तक है, किंतु कवि १३०४ है। तृतीय खंड में नंबर १३२२ से २५४६ तक होकर भी रचयिता १५६५ है। फल यह है कि प्रथम तीन खंडों में नंबर २५४६ तथा रचयिता ३१०६ है। चतुर्थ खंड के ३२वें अध्याय में रचयितागण प्रथम तीन खंडों के ही होने से उनके नंबर भी उचित स्थानानुसार बढ़ा गये दे दिए गए हैं किंतु गणेश मिश्र के नष्ट नंबर भी दर्शा दिए गए हैं। ३६वें अध्याय में केवल नष्ट नंबर दिए गए हैं।

### राहुता साकृतायन का पत्र

तूडिपा महाराज तर्नपाल ( ७६६ ८०६ ) के कायस्थ थे, यह सक्कर कृष्ण की पोथी ज ( अथाव सराम ) के पृष्ठ २७३ व में साफ लिखा है। वही यह भी लिखा है कि शहरवा घूमते हुए वारंदा में महाराज धर्मपाल ने महल में भिला के लिये गए थे, उदा

हुई। यह मसक्य क यु निम्बत में मसक्य मठ क पाँच अधिपतियों ( 1091 1279 A D ) की प्रयावली है। यही ची मगोल जातीय चीन-मन्नाग के गुर हुण। घ, छ ज म्बर की पाँचिर्षी तीसरे महत् राज कीतिष्वज ( जन्म ११७१, मृत्यु १२१६ ) की कृतिर्षी है। इहाँ लोगों ने अतिशय सिद्धा की धारियों वा अनुवाद करवाया था।

उक्त ग्रन्थ श्रीर रिन्—रा—यद्—युद्ध—शुद्ध—रा—  
 वत् गतम् पृष्ठ ६६, तथा चतुराशीतिसिद्धप्रवृत्ति, स्तन—म्युर ८६१  
 ( स्तन—युद्ध छापे ) के पृष्ठ १६ में भी शरिकाग श्रीर डेंगिपा का  
 ( जो पहले ओहीमा के राजा श्रीर मंत्री थे ) लूडिपा का निष्य होना  
 वसित है।

महाराज श्वराल ( ८०१ ४६ ड० ) के समय म इन सिद्ध  
 कवियों के हाने का उल्लेख है—

विरुप ( ३ )	चतुराशीतिसिद्धप्रवृत्ति—स्तन-गुर ८६११ P ४०		
गोरथ ( १६ )	, ,	१० ख	४६
कयहपा ( १७ )	गुरु जालधरपा ,	२० ख	तरु
भूसुक ( ४१ )	, ,	३ म	
घगपा ( ५२ )	, ,	४३ म	

लूडिपा श्रीर शवरपा का समकालान होना तथा उनका घमपाल  
 के समय हाना असदिग्ध है। इसके लिये भाट भाषा के कितने ही  
 ग्रंथों में प्रमाण दिया जा सकता है। पर मैंने मसक्य क युग में  
 प्रमाण उद्धृत किया है, जो बहुत ही प्रामाणिक ग्रन्थ-संग्रह है।

यदि उद्योगी समझें तो यश-युक्त को द्वाप में, किन्तु मूल में  
 बहुत ही सावधाना रखनी होगी।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर निनेचन्द्र सेन ने 'वंग  
 साहित्य परिचय' ग्रन्थ लिखा है, जो म्बर १६१४ ड० को छपा

है। उसमें गोपीचंद्र भरघरो पर लिखी पुरानी गीता का मर्मद भी है। प्रोफेसर महाशय ने १८२८ पर लिखा है—“कृष्णदाम वृत्त हिंदी गाने वगाय राजार गुरु जलधर योगी, ताहार (राजा की) माता मैनाजती, तदीय (राजमाता के) गुरु गोरक्षनाथ प्रभृति वगोय गीतोह्वित चरित्रवगर प्राय ममरोर उल्लेख आछे।”

गीत में से—१८४१—

“हरि-गुण-नाम मयना गाऽचार क्षागिल ।  
उत्तर दक्षिण चिता चारोरिज ।  
साक्षात् गोरक्षनाथ आरिया मया रहल ।”

१८८५ में—

“सूर चंद्र पात्रि करि वंगदेश राय ।  
ताराचंद्र तामे हेला ताहार नाय ।  
इहार नैदा शुन ब्रह्मा चंद्राय ।  
गोपीचंद्र तामे ह्नाईहारो कुमारो ।  
विष्णुचंद्र तामे पुत्र ह्दला ताहारो ।  
विष्णुचंद्र नदन ह्दला रूपचंद्र ।  
ततहु उपति होण गोविंद ण चंद्र ।”

१९०२ में—

“योगमिथ्या हाडिषा कालूषा गोर्ष मीन  
सत मिद्धा अयतार गुरुयाम हीन ।  
पाटिका नगर राजा गोविंदचंद्र भूप ।  
जलदरी हाडिषा ह्दल हाडि रूप ।”

हाडीषा जलधरपा ही है। कालूषा ४ बरहपा ( १० ) ४ ।

आपका

माहृम्य-मगोत्र राहुल



## मिश्रप्रभु विनोद

इन पाँच कविता के समय प्रमाणित होते हैं हिंदी-साहित्य का प्रारम्भ काल स० ८०० तक सिद्ध हो जाता है। हाल ही में प्रसिद्ध पुराणवेत्ता धातू कागजसाह जीयन्माल ने स० १६२ में राजा होशियार महाराजा शर्मा के समयकी पाँच कवि क प्रथम में पाठ्य क भाषा भाषा का भी उद्घाटन पाया है। इस भाषा पाठ से हिंदी भाषा का प्रयोजन निश्चयता ही ही हिंदी भाषा की प्राचीनता उभर आता है तक पहुँचती है। अब कविता का क्या कहता है।

( ३१०० ) नाम—( १ ) सरहपा ( सिद्ध न० - ) ।

समय—८०० के लगभग ।

प्रथम—( १ ) क-ख गहा ( २ ) क-ख गहा टिप्पण ( ३ ) कायकाप मृत्युव्रगीति ( ४ ) चित्तका अमृतव्रगीति, ( ५ ) दाहिनीवद्व गुरु गीति, ( ६ ) दाहा-काप उपदेश-गीति, ( ७ ) दाहा-काप गीति ( ८ ) दाहा-काप-गीति तत्त्वापदेश रिप्य, ( ९ ) दाहा-काप गीति भागना रष्टि चयाफल ( १० ) दाहा काप वयल तिलक, ( ११ ) दाहा का चयागति, ( १२ ) दाहा का नहामुद्राव ( १३ ) दाहा-काप उपदेश-गाथा ( १४ ) महामुद्रावद्व वद्वगुह्य गीति ( १५ ) काक-काप रिविस्वरवद्व गीति, ( १६ ) गुरु गीति ।

नया के तदनुसार स पता चला कि इनके उपर्युक्त काव्य-ग्रंथ मगला से भारतिया में प्रसुवावित हुए हैं ।

विशेष—इनके अतिरिक्त नाम राजुलनद और सरावभद्र भी हैं । राजा नगर के रहनेवाले दाहाग थे । भिन्नु टोकर नाबद विद्यालय में रहने लगे । सरहपा इनके प्रधान शिष्य थे । लोड तात्रिक नागाव भी इनके शिष्य थे । य गाँव नरेश धर्मपाल का समय ८२६ स ८६६ तक था । उनके शिष्य लुहिपा शरपा के शिष्य थे जिन्होंने शरपा के गुरु हमार कवि सरहपा थे ।

उदाहरण—

गई मन, पया १ सघरए, रवि शशि गाह प्रयेर,  
नहि वर विच विगान पर, मरह कदिअ उयेर।

“पदिअ मरत मय सुवगाणइ।

देहहि दुख समत १ जाणइ।”

‘समजागमणु एतेन विगदिअ ;

तोपि खिलज मनइ हँट पदिअ।’

“जो भयु मो तिपा ( क्या ? ) रा मनु, भयु न मरणहु पण्य ;”

‘णरुमभावे विरदिअ, विमरामड पणियण्य।’

“घोर भार घटमणि जिनि उन्नाम बरेह,

परममहाखुड णुङ्गयो, दुरिआ एरोप हरेह।’

“जीवतह जो गउ जरउ, मो एनरामर होइ,

गुरु उणसे विमरामड, मो पर धवणा काइ।

इउठे कुख गीति पय—

राग द्वे शाग

“नाद न पिउ १ रवि न शशि-मदल,

विअराअ सदाव सूवत। धु०

उयु रे उजु छादि मा अहुरे वरु,

निअहि घोहिमा जाहुरे खर। धु०

हाधरे कान्काण मा लोउ दापण,

अपणे अया दुमनु निम मण। धु०

पार उअारे मोइ गजिह,

दुज्जण सागे अरवसरि जाइ। धु०

धाम दादिण जो माल विखला,

मरह मणइ वय उहुअदि भाइजा।’ धु०

राग भैरवी

काय यावदि रग्निण के<sup>२</sup>द्याल,  
 सद्गुरु घट्टय घर पतराल । ध्रु०  
 चीथ धिर करि घट्टुरे नाहा,  
 धन उपाण पारण जाड । ध्रु०  
 नौवाही ( नौवाद्या ) नांका टागुअ गुणै,  
 मलि मेल सहँ नाटण थार्ये । ध्रु०  
 वाट अमघ स्वार्थानि यलथा,  
 भव उलाक पद्यथि चालिथा । ध्रु०  
 कुल लड रर सात उजाअ,  
 सरह भणइ ग ( अ ) यें पमाण । ध्रु०

नाम—( ३ ) शबरपा ( सिद्ध २ ) ।

समय—स० ८२१ क लगभग ।

अर्थ—( १ ) वित्तगुह्यमभीरार्थगीति, ( २ ) महामुद्रावत्र  
 जीति, ( ३ ) शून्यता दृष्टि, ( ४ ) खन्ग याग ( ५ ) सहारावर  
 स्वधिष्ठान, ( ६ ) महानापदेश स्वधिष्ठान ।

विवरण—ये उपयुक्त सरहपाद क गिप्य तथा गौडेधर महाराज  
 धर्मपाल के लेखक लूपा क गुरु थे । सम्भव है, उपयुक्त अर्थों में  
 कुछ सरकृत या पाली के भी हैं । महाराज धर्मपाल का समय स०  
 ८२६ से ८६६ तक है । एक गवतपा इ० श्रमवीं शताब्दी में भी हुआ  
 है । वह मैत्रीपा या अक्कलीपा के गुरु थे । उनकी भी पुस्तकें सम्भव है  
 शबरपा की पुस्तक में शामिल हों । ये अर्थ तत्काल क तत्काल  
 में हैं ।

उदाहरण—

ऊँचा-ऊँचा पावत तर्हि यसट मयरीवाली,  
 मारिपीपंड परदिय सपरी गिवत गजरी ।

उमत्त मयरो पागल शयरो मानर गुली गुहाड,  
तोहोरि खिच्च घरियाँ गामे सहज सुदरी ।  
शाणा तरवर मोलिल रे गअणत लागली डाली,  
पकेली मयरी प वण हिण्ड्ढर्ण कुडल वज्रधारी ।  
तिअ घाड खाट पडिला मयरो महासुत्वे सेनि छाइली,  
मयरो भुजग खडरामणि दारी पेहराति पाहाइली । ध्रु०  
द्विअ नाँरोला महासुहे कापूर खाड,  
सून निरामणि कठेलः घा महासुहे राति पोहाइ । ध्रु०  
गुरघाक् पुज घा विध खिच्च मयँ बाण,  
पुवे शर-मघाने विधट विधट परम शिवाणे । ध्रु०  
उमत्त मयरो गरुआ रोपे,  
गिरिवर मिहर सधि पढसते मयरो लोडिव रुडले ।

राग रामक्री

"गअणत गअणत तइला वाड्ही हचे कुराडी,  
कठे निरामणि घालि जागते उपाडी । ध्रु०  
छाट्टु छाड भाआ भोहा विर में दुटोली,  
महासुहे बिलमति शयरो लड्ग्रा मुणमे हेती । ध्रु०  
हेरिण मेरि तइला वाडी खममे ममतुला,  
पुकडण सर कपास पडिला । ध्रु०  
तइला वाडिर पामेर जोहणा वाडी ताण्ला,  
फिटेलि अघारी र आकाश फुलिआ । ध्रु०  
कुगुरि ना पानेता रे शयरा शयरि मातेला,  
अणुदिअ शयरो किंविन चेअइ महासुहे मेला । ध्रु०  
घारिवासे भाइलारें दिअों घचाली,  
तँडि तोलि शयरो हकण्णा काडण मगुण शिघाली । ध्रु०

राग भैरवी

काञ्च रावदि सन्मिण ३६  
 सदगुरु वम्रण धर पतवाल । ध्रु०  
 चाद्य धिर करि धहुरे नाही,  
 अन उपाण पारण नाई । ध्रु०  
 नौवाहा ( नौवाघ्रा ) नौश टागुथ ७  
 मलि मल सहजै जाडण श्राणै । ध्रु०  
 वाट थमद्य स्वाग्नि बलया  
 भव उलोळ पत्रवि बोलिया । ध्रु०  
 कुल नह पर माते उजात्र,  
 मरह भण्ड ग ( थ ) यें पमाण । ध्रु०

नाम—( ३ ) शवरपा ( सिद्ध २ ) ।

समय—स० ८२५ क लगभग ।

प्रथ—( १ ) वित्तगुह्यमभोरार्चगीति, ( २ )  
 नीति, ( ३ ) शूचना दृष्टि ( ४ ) सङ्ग याग, ( ५ )  
 स्वधिष्ठान, ( ६ ) सङ्गापदेश स्वधिष्ठान ।

निरण—य उपयुक्त सरदपाद के शिष्य तथा गौरी  
 धर्मपाल के लेखक लूहिवा के गुरु थे । सम्भव है, उ  
 कुल सरहून या पाला के भी हा । महाराज धर्मपाल  
 ८२६ से ८६६ तक ह । एक शयःपा ह० दमर्वा गता  
 है । वह मैत्रीवा या अत्रधूतीवा के गुरु थे । उनकी भी ५  
 शवरपा की गुप्तका में शामिल हों । य प्रथ त  
 में ६ ।

उदाहरण—

'ऊँचा-ऊँचा पावत तर्हि घमट रु  
 मारगि पीच्छ परदिय सषरी गिवत

उमत् सवरो पागत शवरो माकर गुर्जा गुहाउ,  
तोहोरि शिथ धरिणी खाभे सहज सुदरी ।  
शाणा तरवर मोलिल रे गद्यणत तागेली डाली,  
ण्केली मयरी ए वण हिंङ्कण्य कुडटा वज्रधारी ।  
तिथ घाउ खाट पडिला मयरो महासुत्रे सेरि छाइली,  
सवरो भुजग खड्गामणि दारी पेहराति पाहाइली । ध्रु०  
हिथ ताँबोला महासुहे फापर खाड,  
मून निरामणि कठेनाथा महासुहे राति पोहाइ । ध्रु०  
गुरवाक् पुज था शिथ शिथ मयँ थाण,  
एके शर-मघाने विधह विधह परम जिवाण । ध्रु०  
उमत् सवरो गरुधा रोपे,  
गिरिवर सिहर मधि पडसते सवरो लोडिच रडले ।

### राग रामक्री

“गद्यणत गद्यणत तइला वाड्ही हँचे कुराडी,  
कठे नैरामणि बालि जागते उपाडी । ध्रु०  
छाहु छाड भात्रा भोहा त्रिर में दुडोली,  
महासुत्रे बिलसति शवरो लडत्रा सुणमे छेती । ध्रु०  
हेरिण मेरि तइला वाडी खममे ममनुला,  
पुकडण सर कपाम फटिला । ध्रु०  
तइला वाडिर पासँर जोहरा वाडी ताण्ळा,  
फिटेलि थधारी र आकाश फुजिथा । ध्रु०  
कुगुरि ना पाकेता रे शवरा शवरि मातेला,  
थणुदिथ शवरो विपिन चवड महांसुदँ मेला । ध्रु०  
चारिवासे भाइलारँ दिथी चचाली,  
तँटि तोलि शवरो एकण्ला कादश सगुण शिवाली । ध्रु०

मारिख भय मत्तार दह दिड दिध विघनी,

ह रसे सपरो निरमण भइला पिटिलि पधरात्री । ध्रु०

नाम—( ३ ) नाय एव वा कारोपा ( सिद्ध १८ ) ।

समय—स० ८४० के लगभग ।

अर्थ—निर्विकल्प अक्षर । इतिह २६ प्रथ ४ जो तत्र में  
३ विज्ञाने विदी का क्षेत्र यही प्रथ ४ ।

विवरण—यह महाशय महाराज के शिष्य प्रवर्तमान सिद्धनामानुष  
के क्षेत्रे थे । भिनु टोकर यत्न लक्ष विहार में रहे ।

उदाहरण—

राग पटभजरी

'जहि मय इच्छि ( १ ) वय हा रग,

य लणमि यथा कंठि गद पइठा । ध्रु०

अरु कण्ठा मन्लि वाज्य

आज, व खिरास राग । ध्रु०

चाउर चादक्षंति जिय पतिमान्य

विज निरुण तहि टलि पटमइ । ध्रु०

दायि भय विज वा चापार

चात चादी नुण विचार ।

आज वै मजन वि रिट

भय विज नुर जियारिड । ध्रु०

( ३११० ) नाम—( १ ) रूदिपा ( सिद्ध १० ) ।

समय—स० ८४५ के लगभग ।

अर्थ—( १ ) अभिमान विमग, ( २ ) तत्र हरभाय दोहा-कोष,  
( ३ ) शुद्धोदय, ( ४ ) भगवद्धर्ममय, ( ५ ) रूदिपादीतिहा ।  
ये प्रथ तत्र तत्र म० ।

विवरण—यह महाराज धनपाल के समय ( ८२६-८६६ स० )

में लेखक थे। शवरराज के शिष्य हुए। ८४ सिद्धों में इनका नाम प्रथम गिना जाता है। इनके शिष्यों में सिद्ध शारिका और देवीपा कहे जाते हैं।

उदाहरण—

राग पटमजरी १

“काना तरार पच विडाल,  
उचल चीप पड्यो माल ।  
दिट ऋरिअ महासुह परिमाण,  
लुइ भणइ गुर पूच्छिअ जाण । ध्रु०  
सअल स ( मा ) हिअ पाहि ऋरिअइ,  
सुख उगेतें निचित मरिआइ । ध्रु०  
गडिपुड छादक वाच करणक पादेर आस,  
सुतु पास भिति लाहुर पास । ध्रु०  
भणइ जुइ आम्हे माये दिग,  
धनरा चमण बेणि पादि वइण । ध्रु०

राग पटमजरी ०६

भाय न होइ शभाव य जाइ,  
आइस सघोहें को पतिगाइ । ध्रु०  
लुइ भणइ घर नुराख विणाया,  
तिअ दाण पिजसइ उह लागे या । ध्रु०  
जाहेर वान चिह्न रव य जासी,  
सो कहसे प्रागम वेणें गहाणी । ध्रु०  
काहेरे किय भणि मइ दिवि त्रिरिद्धा,  
उदक चाँद जिमि साचन गिच्छा । ध्रु०  
लुइ भणइ भाइव कीस,  
जालइ धच्छमता हेर उह य डिम् । ध्रु०



नाम—( १ ) वीणापा ( निद्र

समय—२२० के लगभग ।

अथ—वद्वडाकिनी निरनकस ।

विवरण—गौड़ ऋ के अग्रिय वर में इनका जन्म हुआ था ।  
इनके गुरु का नाम भद्रपा ( सिद्ध २४ ) था । पाँच में घाप कथहपा  
क गिष्य हुए । कथहपा के महारे इनका समय ज्ञात हुआ है ।

उदाहरण—

### राग पटमनरी १७

‘सुज साठ सनि सागलि साना  
अरदा गडी वाकि कि अत अवरुती । ध्रु०  
वाजड अला महि हू अवीणा  
मुन ताति घनि रिलसद् ग्या । ध्रु०  
आलिकाकि येणि सारि सुणआ,  
गधवर समरस साधि गुणिआ । ध्रु०  
नव करड करहक लपि विड  
बनिभ ताति घनि स पल विद्यापिड । ध्रु०  
भाचनि वाजिन गाति दवा  
उद नाडक विममा हो । ध्रु०

नाम—( १ ) तुङ्गुरिपा ( निद्र ३४ ) ।

समय—स० २६० के लगभग ।

अथ—( १ ) तम-सुष भावनानुसारियोगभावनोपदेश, ( २ )  
सवपरिच्छेदन ।

विवरण—करिलपन्नु क ग्राह्य वे । चरनटीपा के शिष्य और  
भगिपा इनके गुरुभा थे । इनके उरयुग ने अथ हिंदी में है । वे  
तजर के पुस्तकालय में हैं ।

उत्तरहरण—

राग गवडा ०

“तुलिदुडि पिटा धरण न जाड,  
 रखरे तंतलि कुर्भारे ग्यात्र ।  
 शॉगन धरण सुन भो बिभाती  
 कानेट धौरि निल अधराती । ध्रु०  
 मुसुरा नि गेल बहुडी जागत्र,  
 कानेट धोरे निलका गड मागत्र । ध्रु०  
 दिवसड बहुडी काड्ड टरे भात्र,  
 राति भडले कामह जात्र । ध्रु०  
 अडसन चया कुक्कुरा पाण गाड्ड,  
 कोटि मज्जे एकुडि अहि सनाट्ट ।’ ध्रु०

राग पटमजरी ००

निम्न लिखित पद गायकभाइ प्रोरियटल मारात, बहीदा, का  
 पुस्तक साधनमाला से लिया गया है ।

“हॉउ निवासी गमण भतार,  
 मोहोर विगोत्रा कडण न जाड । ध्रु०  
 फेटलिउ भो माण अत उटि चाडि,  
 जा एथु चाहाम सो एथु नादि । ध्रु०  
 पहिल बिद्याण मोर यामन पूड,  
 नादि विद्यारते सेव वाट्टा । ध्रु०  
 जाण जौरण मार भडजमि पूरा,  
 मूल नजलि याव मवारा । ध्रु०  
 भाणधि कुक्कुरीपाण भव पिरा,  
 जो एथु यकण मा एथु रीरा ।’ ध्रु०

अलक्ष-लक्ष चित्ता महानुडे,

विलसद् वारिः० । ध्रु०

द्विता मते कितो तत द्वितो रे काय बलान,

अपद् दान महानुद् जीय दुलख परम निवाये । ध्रु०

दु रें मुखे गुरु करिआ भुजद् इदीजानी,

स्वरापर न वेवद् दारिक सधलानुत्तर मानी । ध्रु०

राधा राधा राधार अर राध माहरा थाधा

ध्रु पाथ पण दारिक द्वादशभुअर्थे लधा । ' ध्रु०

नाम—( १- ) दामिपा ( सिद्ध ४ ) ।

ममप—८३० कं लगभग ।

अर्थ—( १ ) अक्षरद्विकोपदेश, ( २ ) दामि-गीतिका ( ३ )

नाडीविद्वारेयोगवर्षा ।

विवरण—यद् महागव मगध नेश निवासी अत्री थ । इनक गुरु  
वाग्धापा और विरूपा दोनो थ । दामिपाद् के नाम स तत्रर में २१  
अर्थ मिलते हैं पर इसी नाम के एक और सिद्ध हा गण है, धन  
हीक नहीं कहा जा सकता कि कौन अर्थ कियसा है ।

उदाहरण—

राग गणार १०

नगर वारिद्विर दामि तोहोरि कुदिया,

एह धाद् याद् मा दाम नाशिया । ध्रु०

आलो डॉवि हाप मम करिवे म सांग,

निविण काएह कापालि जोह लाग । ध्रु०

एक मा पथा थोमही पामुनी,

एहि अदि नाचअ दावी वापुधा । ध्रु०

हाली डॉवा तो पुद्मि मद्भावे

असमि जामि दामि कापरि नारें । ध्रु०

ताति विक्णञ्च डोंगी अवर ना चगता,  
तोहोर अतरे छादिनड णट्टा । ध्रु०  
तुलो डोंबी हाउँ कपाली,  
तोहोर अतरे मोए घलिलि होडरि माली । ध्रु०  
सरवर भाजीय डोंबी राअ मोलाण,  
मारमि डोंबि लेमि पराण । ' ध्रु०

धनसी राग १४

“गगा जउना माँभेरे वहइ नाई,  
तहिं बुडिली मातगि पोइआ लीले पार करेइ । ध्रु०  
वाहतु डोंगी वाहलो डोंबी वाटत भइल उद्वारा,  
सद्गुरु पाअ पण जाइब पुणु जिणउरा । ध्रु०  
पाँच केहु अल पडते मागे पिटत काच्छी बाधी,  
गअण दुखोलें सिचहु पाणीन पइमइ सावि । ध्रु०  
चद सूज दुइ चका सिठी सहार पुलिदा,  
वाम दहिण दुइ माग न खेइ याहतु छदा । ध्रु०  
कवडी न लेइ षोडी न लेइ सुच्छडे पार करेइ,  
जो रथे चटिला वाहवाण जाइ दुलें कुल दुइइ ।” ध्रु०

भिष्ठावृत्ति नामक पुस्तक म, जो तजूर में है, इनका यह दोहा मिलता है ।

निम्न लिखित पाठ तहासा के मुक्कयिहार की हस्त लिखित प्रति के अनुसार है—

“भुजइ मअण सहाव र कमइ सो सइअल,  
मोअ ओ धम करडिया भारउ काम सहाउ ,  
अच्छउ अकस छ पुनइ, सो ससार विमुक्क,  
प्रहस महेसर गारायणा, सकस असुद्ध सहाव ।”

नाम—( २६ ) भूसुरु या शातिदेव ( सिद्ध ४१ ) ।

समय—स० ८०० के लगभग ।

ग्रंथ—गृहजगीति ।

विवरण—नालद के पाम इत्रिय वग में पैदा हुए थे, और भिक्षु होकर उसी विशार में रहने लगे । उस समय गांडेश्वर देवपाल वहाँ के राजा थे, जिनका समय स० ८६६ से ९०६ तक कहा जाता है । उपर्युक्त ग्रंथ मागधी हिंदी में लिखा हुआ भोटिया भाषा में मिलता है ।

उदाहरण—

राग रामोद २७

“अधराति भर कमल विक्रमड,  
 बतिम सोदधी तमु अग उहृणमिड । ध्रु०  
 चालिउध परहर मागे धवधूद,  
 रथणहु पहेने कइइ । ध्रु०  
 चालिअ परहर गड गिगण  
 कमलिनी कमल बइइ पणालें । ध्रु०  
 विरमानद विलक्षण सुध,  
 जो एयु बूमइ सो ण्यु सुध । ध्रु०  
 भूसुक भणइ मह बूमिअ मेलें,  
 सहजानद महामुह लाले ।’ ध्रु०

राग मल्लारी ४६

“वान एाव पादी पैदशा न्वालें धाहिड,  
 अदल बगाले क्लेश लुदिव । ध्रु०  
 अजि भूसुक बगाली भइली,  
 जिअ धरणी चइली लेली । ध्रु०  
 उहि जो पचघाट यह दिवि सत्ता एग,  
 ए जायमि चिअ मोर कई गइ पइटा । ध्रु०

मोण तग्ध मोर किंपि य धादिउ,  
निघ परिवारं महासुद्धे थादिउ । ध्रु०  
चउमोदि भडार मोर लइआ सेम,  
जोयते महलें ताहि विशेष ।' ध्रु०

नाम—( ६३ ) कर्णपा ( सिद्ध १७ ) या कर्णपा और कृष्णपा  
भी था ।

समय—स० ८८० के लगभग ।

ग्रथ—काहवादीगीतिरा, महादुडननूल, वसततिलक, असबध  
दृष्टि यत्रगीति और दोहा-कोप माही भापा में है । इन्होंने अतिरिक्त इनके  
और भी बहुत-से ग्रथ सङ्कत या पाती में हैं । ये सब ग्रथ तनूर में हैं ।

विवरण—इनका जन्म कर्णाटक में हुआ था । जाति के ब्राह्मण  
थे । महागज देवपाल के समय में थे । स० ८६६ ६०६ तक जिनके  
राज्य का समय था । इनके गुर का नाम सिद्ध जालधरपाट है ।  
इनमें ८४ सिद्धों में बहुत थोड़ा पंडित करते हैं । इनके सात आठ  
शिष्य चौरामो सिद्धों में गिने जाते हैं । धमपा, कतलिपा, महीपा,  
उधलिपा और भडेपा थे, तथा वनसला और मेसला दो योगिनियाँ  
थीं । जवलिपा इनके प्रशिष्य थे ।

उदाहरण—

आगम वेश पुराणे, पठित माग वहति ;

पङ्क सिरीफल अलिघ्र जिम वाहेरित अमयति ।

ग्रहण गमइ उहण जाइ, वेशि रहिअ तसु निचल पाइ ।

भणइ ऋण मन कहयि न फुटइ निचल पवन धरिणि धर बत्तइ ।

णवण किजइ मत्र य तत, शिथ घरणि लइ केलि करत ।

शिथ धर घरिणी जावण भजइ ताव कि पव वण्य विहरिजइ ।

जिमि लोण विलिजई पाणिण्हि, तिम घरणी लइ चित्त ,

समरस जइ तक्खणे, जड पुणु ते सम नित्त ।

## नज्जीतिना

कोलनथ र मिश्र बोल, मुम्मुषि रे कडोल,  
घने किरिण्ड बमड करणे कियर गारोला ।  
तहि पल रज्जद गाद, मथ र्णा पिज्जद,  
हते कलिजर पणिअद, टुटुर यजिअद ।  
चउसम कथुरि मिल्हा कगु लान्अद,  
मालद घाख-मालि अर् तहि भलु स्वाडअद ।  
पेंगण खेट करत, शुद्धाशुद्ध य मणिअद,  
निरशु अग घ्यावि अद तहि जय राव पणिअद,  
मल अजे कुट्ट वापद, दिन्मि तहिन वनि अद ।

## राग पटमनरी

मादि शक्ति मि धरि प्रभदे, अनहा म्मर धानण वीर नादे ।  
काह कसला यागी पट्ट अघारे, देह अघरी विहरण ण्कारे । ध्रु०  
आलि कालि घग नेउर चरणे, रवि शशि-कुल किउ आभरणे । ध्रु०  
राग अग मोह नाइअ छार, परम मास जरण मुक्तिार । ध्रु०  
मारिअ गामु नखद घरे शाली माअ मारिआ काह भइअ कवाली । ध्रु०

## राग पटमनरी २६

सुण वाह तयता पहारी, मोह भगर लुद स अला अहारी । ध्रु०  
धुमद न चेअइ मपरविभागा, सहज निशालु काकिला लागा । ध्रु०  
चेअण य वेअन भर निद गला, सअल सुफल करि सुदे सुनेला । ध्रु०  
स्वपणे मट देगिल तिभुवण सुण धारिअ अवशा गमण मिदल । ध्रु०  
शाधि करिअ चालधरि पादे पासिण राइअ मोरि पान्त्रिा चादे । ध्रु०

नाम—( २६ ) तातिपा ( सिद्ध १३ ) ।

ममय—स० ८० क लगभग ।

अथ—'चतुर्गोभायना अथ तज्ज मं ह ।

विवरण—यह महाशय टम्बेन न तंतुमाय ( करी ) थे । जालधर—

पाट के शिष्य होकर सिद्ध-संप्रदाय में हो गए। कण्हपा भी इनके गुरु थे। उन्हीं से इनके समय का पता लगता है। उपयुक्त ग्रंथ पुरानी मालवी या मगही में लिखा है। इनका जो उदाहरण नीचे दिया जाता है, वह चर्यांगीति का है।

### राग पटमजरी

टाकत मोर घर नाहि पदवेपी, दांडी तै भात नाहि निति आवेशी । ध्रु०  
बेंग ससार बड़हिल जाग्र, दुहिल दुधु कि पेरे पमाय ,  
चलद विद्यापल गाविशा चौंफे, पिटा दुहिण पतिना सांभे ।  
जो सो बुधी सो धनि बुधी, जो पो चोर सोइ साधी,  
निते निते पित्राला पिहेपम जुम्भ, ढेरणण पापर गीत बिरले बूमभ ।

यह पद चर्यांगीति में ढंढनपाद के नाम से है, पर इन गाम का कोई सिद्ध नहीं हुआ। इसीलिये कुछ लोग इसे ततिपाद का मानते हैं।

नाम—( १४ ) मानपा ( सिद्ध ८ ) ।

समय—स० ८८० के लगभग ।

ग्रंथ—बाह्य तर बोविचित्तत्रयोपदेश' तजूर में है ।

विवरण—यह महाशय मधुप थे। इनका जन्म आसाम में हुआ था। इनके पुत्र 'भस्व्येन्द्रनाथ' थे, जिनके शिष्य प्रसिद्ध महात्मा गोरखनाथ कहे जाते हैं। गोरखनाथजी के समय में मतभेद है। इनका पथ श्रान भी भारतवर्ष में प्रस्तुत है, जिनके माननेवाले लाखों मनुष्य हैं। इनकी रचना का उदाहरण चर्यांगीति से दिया जाता है।

उदाहरण—

कहति गुरु परमार्थेन वाट, कम कुरग समाधिक पाट ।

कमल विकसिल कहिह राजमरा, कमल मधु पिबिनि धोके न भमरा ।

नाम—( १५ ) भादेपा ( सिद्ध ३२ )

समय—स० १०० के लगभग ।

ग्रंथ—तजूर में इनका कोई ग्रंथ नहीं मिला।



विवरण—धारास्त्री के निरकार-मूल में उत्पन्न हुए थे। सिद्ध कण्ठपा के शिष्य थे। उर्हामे इतके समय का पता लगता है। धर्या गानि से इनकी एक गीति लिखी जाती है—

राग मल्लारी ३४

एत काल हाँड अचिद्वे स्वमोहें, एते मष्ट बुभुज्य सद्गुरु याहें । ध्रु०  
 एवें विश्वरात्र भक्तु खग, गण्य समुदे टविप्रा पद्ग । ध्रु०  
 पेलमि दह दिह मयइ शून, विश्व विदुशे पाप न पुण्य । ध्रु०  
 धाहुने दिल मोहस्तु भणिया, मइ अशरिल गअणत पणियाँ । ध्रु०  
 भादे भणइ अभागे एइप्रा, विश्वरात्र मइ अशर कण्ठा । ध्रु०

गाम—( ३ ) महीपा ( महिला ) ( मिद ३० ) ।

समय—म० ३०० के लगभग ।

अथ—वायुतस्त्र दोहा-गीतिछा ।

विवरण—यह महाराज मगध नरक शूद्र थे। इनके गुरु मिद कण्ठपा थे। तमूर में इन्कर ऊपर शिया सथ मिला है, तो गुरानी मगही का है। यह महीपा और महीधरपा एक ही जान पड़ते हैं। धर्यागीति से, जा भिन्न भिन्न कवियों की रचनाया का एक समूह है, इनकी गीति लिखा जाती है। इनका समय कण्ठपा के शिष्य पर लिखा गया है।

राग भैरवी

तिनिणँ पाटे लागलि र अणइ वसण घण गाजइ,  
 तासुनि मार भयजर र सद्य मडल सणल भानइ ।  
 मातेल धीअ-गअण धावइ निरतरगअणत तुमें घोलइ । ध्रु०  
 पाप पुण्य वेणि तिडिअ मिक्कड माण्णि वभाटाण  
 गअण टाकलि लागिरे चित्ता पइए चिजना । ध्रु०  
 महारस पाने मातेल र तिहुअन सणल उणरती  
 पच विपय रे नायक रे विपय का चीन दक्षी । ध्रु०

भर रवि किरण गतापे रे राघव्यागण गह पट्टा,

भयति मक्षिता महिष्या मट पथु सुत ते किपि न दिवा । ध्रु०

नाम—( ३ ) कचलपाद ( सिद्ध ३० ) ।

समय—स० ६१५ के लगभग ।

ग्रथ—( १ ) अमरबंध इष्टि, ( २ ) अमरबंध-मर्ग इष्टि, ( ३ )

कचलगीतिरा ।

विवरण—उड़ीसा के राजपूतों में इनका जन्म हुआ था । भिक्षु होकर त्रिपिटक के पठित हुए । इनके गुरु का नाम घटापाद था । सिद्ध राजा इंद्रमूर्ति इनके शिष्य थे । उपयुक्त ग्रंथ प्राचीन उड़िया या मगही में लिखे हुए हैं ।

उदाहरण—

राग देवकी ८

“सो भरिती करुणा नावी,

रूपा थोइ महिके ठावी । ध्रु०

वाहतु कामलि गद्यय उयेसें,

गेली जाम यह उट पाइसें । ध्रु०

खुटि उपाड़ी मेलिलि काळि,

वाहतु कामलि मदगुरु पुच्छि । ध्रु०

मागह चंहिले चउद्विग पाहय,

केटु छाल नहि के कि वाहय के पारय । ध्रु०

वाम दाहिण चापा मिलि मिति मागा,

वाटत मिलिलि महामुट सगा ।” ध्रु०

नाम—( ३ ) जालपरपाद अथवा आदिनाथ ( सिद्ध ४६ ) ।

समय—स० ६२५ के लगभग ।

ग्रथ—( १ ) श्री गीत, ( २ )

विररण—नगर भाग देग ( १ ) के प्राङ्गण-वश म उगपन हुए थे। पीछे घगापाद के शिष्य होकर भिषु हो गए। इनके शिष्य प्रसिद्ध मस्येन्द्रनाथ, करहपा और ततिपा थे। करहपा महाराज देवनाल ( सं० ८६३ ६०९ ) के समय में हुए थे। उन्हीं से इनके समय का पता लगता है।

उगहरण—

राग निरद, ताल माठ ७२

“अख्य निरजन अद्द प अतु  
 पद्म गगन कमरने साधना  
 शून्यता बिरामित रायश्री चिय  
 दयपान विन्दु समय जो दिना । ध्रु०  
 नमामि निराक्षय निरचर  
 स्वभाव हनु स्फुरन सनापिता,  
 मरद चद्र-समय तेज प्रकासिता  
 जरज-अद्द समय ध्याविता । ध्रु०  
 खड्ग पागांवर सादिर अक्षरवर्त  
 मेरु-मडल भमखिता  
 निमल हृदयार अक्षरवर्ति ध्याविते  
 अद्वितिनिकजत्र मय साधना । ध्रु०  
 आनद परमानन्द विरमा  
 अतुरानद ज मभया  
 परमा बिरसा माँके र न छादिर  
 महासुग सुगत सन्द प्राविता । ध्रु०  
 हे अक्षर अक्ष श्रीचक्षमवर  
 अनत कोटि मिद पारगता,

श्रीहृत्तवदियाने पूर्ण गिरि,

जालधरि प्रभु महामुख-जातहुँ । ध्रु०

नाम—( ३ ) ककणपाद ( सिद्ध ८६ ) ।

समय—स० ६५० के लगभग ।

ग्रंथ—चर्यादोहाओपगीतिना । ग्रंथ तजूर में मिला है ।

विवरण—त्रिगुणनगर के राजवंश में उन्नत हुए थे, और कबलपा-  
वाले परिवार के सिद्ध थे । चयागीति से उदाहरण दिया जाता है ।  
कबलपाद ६१५ के थे । इससे इनका समय ६५० के लगभग समझ  
पड़ता है ।

सुने सुन मिलिआ जयें, सञ्जल धाम उइआ तरे । ध्रु०

आच्छु हुँ चउखण सबोही, माम्क निरोह अणु अर बोही । ध्रु०

विदु-णाद यहि ण पइठा, अण चाहते आण विणठा । ध्रु०

जथा आइकेसि तथा जान, माण थाकी सञ्जल विहाण । ध्रु०

भणई ककण कल णल सादें, सय विच्छरिल तधता नादें । ध्रु०

नाम—( ३ ) तिलोपा ( सिद्ध २२ ) ।

समय—स० ६५५ के लगभग ।

ग्रंथ—अंतरवाद्यविषयनिवृत्ति भावनाक्रम, कल्याणभावनाधिष्ठान,  
दोहा-कोष और महामुद्रोपदेश ।

विवरण—इनका जन्मस्थान भगुनगर ( ? त्रिहार ) था । यह  
महाशय गुह्यापा के शिष्य तथा कयहपा इनके दादा-गुरु थे । विक्रम  
शिला के सिद्ध नारोपा इनके पट्ट शिष्य थे । इनके ऊपर लिखे  
मगही भाषा के ग्रंथ तजूर में सुरक्षित हैं ।

उदाहरण—

स मवेअन ततफल, तिलोपाण भणति ;

जो मण गोअर गोइया, सो परमथे न होंति ।

नाम—( ३ ) नाड( नारो )पा ( सिद्ध २० ) ।

समय—स० १०३० के लगभग ।

ग्रंथ—( १ ) ताडपडितगीतिका, ( २ ) वज्रगीति ।

विवरण—इनके पिता कारमीर निवामी ब्राह्मण थे । वह भगध में थाण थे, वहा इनका जन्म हुआ । बहुत बडे विद्वान् होकर सिद्ध निलोपा क शिष्य हो गए । ताडपडित्यालय में शिक्षा पाई थी । विक्रमशिला में पूव द्वार के महापडित हुए । इनका देहावसान स० १०६६ में होना कहा जाता है । उणाहरण स्वरूप इनकी कोई रचना नहीं मिलता । चर्यांगीति में ताडकपाद के नाम से एक पद मिलता है, पर इस नाम क कोई सिद्ध नहीं हुए । संभवत यही ताडकपाद ताडकपाद हैं । वह गीति नीचे दी जाती है—

अपरो नाहिं सो काहेरि शका  
ता महामुदेरी दूटि गलि कथा । ध्रु०  
अनुभय सहज भा भोलरे जाइ,  
चाकाटि विगुभा जसो तइसो होइ । ध्रु०  
जइसने अड़िने स तइछन प्रच्छ  
सहज पिथक जोइ भोंति माहो वास । ध्रु०  
बाड कुरु सतारे जाणी,  
वाक रथातीत काँहि बस्यायी । ध्रु०  
भणइ ताडक पधु नाहि अरकाश  
जा पुकइ ता गलें गलपाम । ध्रु०

नाम—(  $\frac{3}{8}$  ) जथानत ( जयनती ) पाद ( रिश्द २८ ) ।

समय—स० १०२० के लगभग ।

ग्रंथ—तकदुहरकारिका और मध्यमनायतार टाका तनूर में है । चर्यांगीति स इनकी गीति नीचे लिखी जाती है ।

विवरण—यह गीति क ब्राह्मण भागलपुर नरेश क मन्त्रा थे । इनक गुरु-शिष्य का पता नहीं लगता, अत समय का भी ठीक

ज्ञान नहीं हो सका है। माया आदि से स० १०५० के लगभग जान पड़ते हैं।

### राग शबरी

पेखु सुअये अदरा जइसा,  
 अतराले मोह तइसा । ध्रु०  
 मोह विमुक्ता जइभाणा,  
 तरे तूडइ अयणा गमणा । ध्रु०  
 नो दाडइ नौ तिमइ न चिइनइ,  
 पेख मोअ मोहे यति-बलि थाकइ । ध्रु०  
 छाअ माआ काअ समाणा,  
 वेणि पाखें मोइ विणा । ध्रु०  
 चिअ तथता स्वभाये पोहिअ,  
 भणइ जअनदि फुडय अणय होइ । ध्रु०

नाम—( ३ ) शातिपा ( रत्नाकर शाति ) ( सिद्ध १० ) ।

समय—स० १०७० के लगभग ।

ग्रन्थ—सुख-दुःख-परिचयागरुष्टि ।

विवरण—यह महाशय मगध के ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। बहुत बड़े विद्वान् थे। सिद्धनाडनाद का इनका संग रहा। कहा जाता है, सिद्धों में इनके बराबर कोई दूसरा पंडित नहीं था। महाराज महीपाल ( १०३१-१०८३ ) के समय में विक्रम शिला, त्रिहार में पूव द्वार के पटित बने। इनका आयु १०० वर्ष से अधिक की कही जाती है। भोटका मर्यालोचया इन्हा का शिष्य था, और तिब्बत के सर्वोत्तम कवि और सिद्ध ने दुनुं भि ला रे पा ( दीपा स० ११३३, मृत्यु ११७६ ) इनके चेले थे। चर्यागीति से इनकी गीति लिखी जाती है—

## राग रामक्री १५

सथ सवेद्यण सहस्र विचारें ते अलवय लक्षणान जाड ।  
 जेजे उजूवाट गला अनायाटा भडला सोहं । ध्रु०  
 पुने तुल मा होइ रे मूदा उजूवाट समारा  
 बालमिण पूयाकु य भूल\* रात्रय करारा । ध्रु०  
 माघा मोहा समुदारें अत न युक्तमि घाहा,  
 प्राग गाव न भेला दीसथ भाति १ गुच्छसि नाहा । ध्रु०  
 सुनापतर उड १ दिसइ भाति न घामसि जाते,  
 प्या अत महासिद्धि सिङ्गण उजूवाट जा अते । ध्रु०  
 धाम-द्राहिण दो वाटाउडाटा शाति तुलथेड सकलिड,  
 घाटन गुमा स्वदतनि नो हाइ आति पुत्रिथ घाट जाइउ । ध्रु०

## राग शीमरी २८

तुला धुणि धुणि थांसुर थांसु, ओसु धुणि धुणि शिगर सेसु । ध्रु०  
 तउपे हरुथ य पाविद्यइ, नाति मथइ किण सभावि अइ । ध्रु०  
 तुला धुणि उणि मुने अहारिड, पुन लइथा अपना चगरिड । ध्रु०  
 बहल घट तुइ मार न दिशथ शांति भणइ बालाग न पइसथ । ध्रु०  
 कान न करण जणहु जयति, सैं\* भँवेअथ बालधि मांति । ध्रु०

नाम—( १७ ) जज्जल ।

समय—स० १३५७ ।

विवरण—महाराणा दम्भारसिंह मवाइ के सेनापति थे ।

उदाहरण—

पथ भरु दर भरु धरणि तरणि रइ धुक्लिथ कपिथ ,  
 कमठ पिठ टापरिथ मेरु मदर तिर-कपिथ ।  
 काठ चलिथ हम्मीर धीर गद्य-जूइ सँजुत्ते ,  
 किरुड कठ थाकइ मुक्लि ग्नेरुइ के पुत्ते ।

विषय दिग्द सख्याह वाद उपर पफर दह ;  
 वधु ममदि रवा धयउ मामि हम्मीर यमय लह ।  
 टहुल वाइ पद भमउ वम्य रिउ सोमदि डारउ ;  
 परमर पफर ठिन्नि विज्जि पम्य उम्पानउ ।

हम्मीर वज्जु जज्ज मरह, कोहायल मुद मर उजउ ;

मुलता मीस हरवाल दह, तेमि वर्यर दिम यनेउ ।

यह उदाहरण प्राकृत पंगल ( शैल पशियाटिक मोमाइट ) में उद्धृत है ।

नाम—( ५३ ) शोम सुन्ता, महाराष्ट्र प्रांत ।

मय—स्फुट ।

कविता-काल—स० १४२० ।

विवरण—यह सेननाई के समकालीन कवि थे । मुमलमान होते हुए भी इन्होंने धीरुष्ण भक्ति पर भाव-पूरण रचनाएँ कीं । इनके अतिरिक्त ब्राह्मी मुहम्मद जिदा कबीर, सैयदहुसेन, यहादुर यासा, खलीकशाह मुनीर, ब्राजिलगर्ग, शाहबग, मुलतानशाहिद, आदि, शोम मुहम्मद आदि मुमलमान हिंदी-कवि इस प्रांत में हो गए हैं ।

नाम—( ५३ ) फरीद, महाराष्ट्र प्रांत ।

मय—स्फुट ।

कविता-काल—स० १४२० ।

विवरण—यह कवि शोम सुन्ता के साथी और सेननाई के समकालीन थे । धीरुष्ण भक्ति पर इन्होंने अधिकांश रचनाएँ कीं ।

नाम—( ५३ ) चपा ने रानी ।

रचना-काल—स० १६२७ के लगभग ।

कविता—श्र गार रस के स्फुट छंद ।

विवरण—यह श्रीकानेर नरेश राजा पृथ्वीराज की रानी तथा •



लाना दे की सरनी धा । इनकी कविता राजाधानी मिश्रित हिंदी में  
हुया करती थी ।

नाम—( १६५ ) मोहनदास ।

रचना-काल—म० १६५० क लगभग ।

ग्रंथ—( १ ) मोरगावली, ( २ ) दादावली, ( ३ ) रागावली,  
( ४ ) विरवत्रहागान, ( ५ ) दरदनामा, ( ६ ) कवितावली,  
( ७ ) सनैयावली ।

विवरण—श्रीयुग भानरावनी का कथा है कि यह कवि गालिया  
रायातगत तवरधार प्रांत के तिरासी गांधारी धीतुलमीदागनी के  
समकालीन थे । थाप मोहन पय नामक त्रिगुणी मत के प्रतिपादक  
फद जाते हैं । भालेरावजी महाशय को बहुत मे छद् इन क प्राप्त  
हुए हैं ।

( १६६ ) नाम—चतुर्गुंज कवि, औरछा ।

जन्म-काल—अनुमानत १६२० वि० ।

कविता-काल— ,, १६४० वि० ।

सत्कालीन महागजा धीवीरसिंहदेव प्रथम के आश्रित ।

उदाहरण—

सेत चमर चिलकत दत डगमगत दगत दग ,

शीत हलत तन कुलत वित्त धिल मिला धरत पग ।

द्रग भरत श्रुत अश्रुत वास नासा भ्रम भुव्लिय ;

काल विकह हुदियह धान यद श्रीसर हुक्किन् ।

जपहि न राम 'चप्रभुज' प्रबल, रह्य सकल दिन दुरद वर ;

सुमकह असुमक सक्क फजर, है कनु लपर कि वे म्वर ।

सोरठा

अरे असिहा वीर, नेक न चित्तगत डोकरा ,

पातक नमत शरीर, नव धारा मुव त्रिक्विया ।

आतक्यो असपत्त उठिय त्रिसिध सिध विय ,  
दुघन देश दलमलन देश दक्षिन दिय कपिय ।  
फिर कपिय गुजरात बहुर उत्तर सु कप कर ,  
काल पीठ दे गयत देग अति ज्वाल विषम म्तर ।

अगवय देव दानत न बोइ, 'चमभुन' जग जहँ नितियध ;  
अमि टेक अनि पग टेकर, धरम टेक ठहिय भयव ।

नाम—( २५६ ) केशव मिश्र ।

रचा-काल—स० १६७७ ।

ग्रन्थ—जहाँगीरजसचद्रिका ।

नाम—( २५७ ) महाराजा विक्रमाजीतसिंह, औरछानरेश,  
औरछा ।

कविता काल—स० १६८० वि० ।

उपनाम 'लघु'

ग्रन्थ—( १ ) लघु सतसई, ( २ ) मादव लीला ।

उदाहरण—

तू मोहन उर यत रही, मोहन उर यत कीन ,  
सब लीनें तो में रहें, तू उन ही बिच लीन ।  
ह जमुना जम ना जहाँ, जमुना नाम प्रकास ,  
बाहुल शुक्रा न्हाइ तहँ, मिटे जमपुरी रास ।  
जा जमुना जमु ना जहाँ, ना जम उर तेहि ठाँइ ,  
विमल मगा हरि रँग सना, हो जु अघन दुसदाइ ।

नाम—( २५८ ) शिवलाल मिश्र, औरछा ।

कविता-काल—स० १६८० वि०, जन्म स० अनुमानत १६६० ।

महाकवि बलभद्रपी के पौत्र ।

उदाहरण—

जाट<sup>१</sup>, बुलाहेर, सुरे, दरजी<sup>३</sup>, मरजी में मिल्यो चरु चूकि चमारो<sup>४</sup>,  
दीनन की कटु कौन सुनै, निमित्त यौम रहे इनहीं की चमारो ।  
को 'शिवलाल' की दान मुनै रघुनाथ के द्वार पै फोऊ पुकारो  
जेमे बड़े करधार को इन पानिन ने दरवार दिगारी ।

नाम—( ३६ ) सामल भट्ट, गुजरात प्रात ।

काल—स० १६८४ १०४४ ।

ग्रथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—डॉ० प्रियर्सन के कथनानुसार यह महाशय कवि नरसी  
मेइता के अनुयायी थे । आप रजिदास पटेल के श्राधित थे । इनका  
दोहा, चौपाइ छप्पय आदि गुजराती में की हुई मत्र भाषा छंदों का  
रचना श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी की रामायण के ऋग पर है ।

'चोपइ तुलसीदाम की छप्पय सामलवास' इतनी ख्याति इनके  
रचित छप्पयो की है ।

नाम—( ३७ ) साहजहाँ ।

साहजहाँ विनोद प्रभु सों बलि रागिनीन रजाय तिहारी  
इत्यादि अष्टक है ।

समय—स० १६८४ १७१५ तक । चाहे यह शाहनहाँ बादशाह  
हों चाहे किसी अन्य कवि ने उनके नाम पर अष्टक लिखा हो ।  
दूसरा ही विचार पुष्ट समझ पड़ता है ।

नाम—( ३८ ) गुरनारायण भट्ट, महाराष्ट्र देश ।

काल—स० १६८५ ।

विवरण—आप राजा शाहजी के यहाँ दरबारा कवि थे ।

नाम—( ३९ ) राजमल, आगरा ।

१ जाट = घना जाट । २ बुलाहे = कबीरदासजी । ३ दरजी = नाम  
दरजी । ४ चमारो = रैदास चमार ।

ग्रन्थ—ममयमार ।

रचना काल—स० १६६३ ।

त्रिवरण—मूल-ग्रन्थ मसूत में है । लेखक ने इस ग्रन्थ की हिन्दी में पद्योपदेय टीका की है । जाह्नवर्द्ध के राज्य-काल में ग्रन्थ का समाप्त होना पाया जाता है ।

नाम—( ३३० ) भागीरथ, कोलारस ( नरधर-राज्यांतर्गत ) ।

ग्रन्थ—गौर-नत्र ।

रचना-काल—१७ वीं शताब्दी का अंत ।

त्रिवरण—कवि ने ज्ञानूगो होने के कारण अपने ग्रन्थ में जमान सबधी हिसाब का वर्णन दिया है ।

नाम—( ३३४ ) कृष्णदास, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रन्थ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७०० ।

त्रिवरण—महाराष्ट्र प्रांत के प्रसिद्ध कवि जयराम शास्त्री के यह गुरु थे । कहा जाता है, मूल से इतना विवाह प्य नाह की कन्या म हो गया था, जिसका उल्लेख 'भद्र-खीलामृत' नामक मराठी-ग्रन्थ में पाया जाता है ।

उदाहरण—

जसुमति-सुत नदलाल, धुज की गैल डोलै ।  
 पीतांबर कडनि काडि, गोवन के सरा जात,  
 फेट मुरलि, मुहुट सीस, धन-धन विच डोलै ।  
 वृ दादन कुज जात, गावत हरि कृष्णदास,  
 या छवि कध कहि ग जात, रमनामृत घोलै ।

नाम—( ३३४ ) गेमदास ।

समय—१७०० के लगभग ।

ग्रन्थ—शुक्-रभा-सत्राद ।

उदाहरण—

जाट<sup>१</sup>, बुलाहे<sup>२</sup>, लुरे, दरजी<sup>३</sup>, मरजी में मिलयो घर चूकि चमारी<sup>४</sup>  
 लीनन की बहु कौन सुने, गति यौम रहे इहाँ की चमारी ।  
 जो शिवलाल की बात सुने रघुनाथ के द्वार पे कोऊ पुकारी ;  
 ऐसे बड़े कण्ठाकर को इन पाणिन न दरवार विगारी ।

नाम—( ३४ ) सामल भट्ट, गुजरात प्रांत ।

काल—स० १६८४ १७४४ ।

ग्रंथ—ध्रुव कविता ।

विवरण—डॉ० प्रियमर्न के कथनानुसार यह महाशय कवि नरसी  
 मेहता के अनुयायी थे । आप रविदास पटेल के आश्रित थे । इनकी  
 दोहा, चौपाई छप्पय आदि गुजराता में की हुईं मज भाषा छंदों की  
 रचना श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी की रामायण के ढंग पर है ।

'चोपड़ तुलसीदास की छप्पय मामलदास' इतनी म्थाति इनके  
 रचित छप्पया का है ।

नाम—( ३५ ) साहजहाँ ।

साहजहाँ विनोद प्रभु सों बलि राचिबिन राजाय तिहारी  
 इत्यादि अष्टक हैं ।

समय—स० १६८४ १७१५ तक । चाहे यह शाहजहाँ बादशाह  
 हों चाहे किसी अन्य कवि ने उनके नाम पर अष्टक लिखा हो ।  
 दूसरा ही विचार पुष्ट समझ पड़ता है ।

नाम—( ३६ ) गुरुगारायण भट्ट, महाराष्ट्र देश ।

काल—स० १६८५ ।

विवरण—आप राजा शाहजी के यहाँ दरवारी कवि थे ।

नाम—( ३७ ) राजमल, आगरा ।

१ जाट = बल जाट । २ बुलाहे = कबीरदासजी । ३ दरजी = नाम  
 दरजी । ४ चमारी = रैदास चमार ।

ग्रथ—समयनार ।

रचना-काल—स० १६६३ ।

विवरण—मूल ग्रथ समृद्ध में है । लेखक ने इस ग्रथ की हिंदी में छदोबद्ध टीका की है । शाहजहाँ के शासन-काल में ग्रथ का समाप्त होना पाया जाता है ।

नाम—( ३३३ ) भागीरथ, कोलारस ( नरवर राज्यांतर्गत ) ।

ग्रथ—लेख-तत्र ।

रचना-काल—१७ वीं शताब्दी का अंत ।

विवरण—कवि ने प्रान्तगत होने के कारण अपने ग्रथ में जर्मति-भवधी हिमाय का वर्णन दिया है ।

नाम—( ३३४ ) वृष्णदास, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रथ—रफ्त ।

कविता-काल—स० १७०० ।

विवरण—महाराष्ट्र प्रांत के प्रसिद्ध कवि जयराम शास्त्री के यह गुरु थे । कहा जाता है, भूल से इनका विवाह एक नाई की कन्या से हो गया था, जिसका उल्लेख भद्र-खीलामृत'-नामक मराठी ग्रथ में पाया जाता है ।

उदाहरण—

जमुमति-मुत नदलाल धज की गैल डोले ।  
पातावर वटनि काड़ि, गौनि के मग जात,  
फेट मुरलि, मुकुट सीम, मन-यत विच डोले ।  
मृ दादन धुन जात, गायत हरि वृष्णदास,  
या छवि कहु कहि न जात, रसनमृत घोले ।

नाम—( ३३५ ) रमदास ।

समय—१७०० के लगभग ।

ग्रथ—शुक रभा-सदाद ।

विवरण—यह रावराजों में दादूदयाल के गिण्य रचयिता के शिष्य थे ।

नाम—( ३३९ ) सुंदर ।

ग्रंथ—द्वान्श मासा रचन ।

विवरण—श्रीयुक्त भालेरावजी का कथन है कि आप ग्वालियर-निवासी तथा बाणशाह शाहजहाँ के समकालीन थे, और उक्त ग्रंथ ( २४ छंद ) उन्हें प्राप्त हुआ है । काय उक्त कौटिल्य का कहा जाता है ।

नाम—( ३४३ ) अकरा, ग्राम जेतलपुर ( अहमदाबाद ) प्रांत गुजरात ।

रचना काल—स० १७०२ ।

ग्रंथ—( १ ) अन्तर्गीता स० १७०२, ( २ ) पर्याकरण, ( ३ ) मङ्गलीला, ( ४ ) अनुभवविन्दु, ( ५ ) चित्त विचार-सवाद तथा कुछ हिंदी-कविताएँ ।

विवरण—आप जाति के सुनार थे । कहा जाता है इनके कुछ कुटुंबी जब काल के मुख में पड़ गए, तब इन्होंने वैराग्य धारण करके जयपुर की ओर गुरु-नीचा ली । इसके पश्चात् आप काशी को गए, और वहीं रहकर आपने महात्मा ब्रह्मानंदजी से उपनिषद् और वेद-शास्त्रों का अध्ययन किया । इन्हीं की छोटी की एक और कवि प्रीतम नाम के गुदरात में हो गए हैं । महाशय भालेराव लिखित आपका सचित्त चरित्र अब 'सत चरित्र-माला के नाम से, पुस्तक के रूप में, छप चुका है । इनकी कविता 'अकबरी वाणी शीपक में साहित्य वर्धक मंडल से प्रकाशित हो चुकी है । आपकी कविता सावित्री हुआ करती थी । यह महात्मा कवि पेमाद के समकालीन थे । कविता द्वादश-युग साधारण है ।

उदाहरण—

जावत हे सय लोख यहाँ स, आवत नहिँ जन कोठ फिरी,  
राग रागा से बडे भट पडित, ढोऊ न दे पट को पतरी।  
धन, दारा, सुतादिऊ रहत परे, मानीनता देह मग धरी,  
इतनी तो अपो नयन ते देखि, और 'अया' मन ने पन्नी।

नाम—( ३५० ) हरिसिंह महाराजा।

ग्रंथ—उपाहरण।

रचना-काल—स० १७०५।

विवरण—यह महाशय गहलोतराज्य महाराजा पुरनमल के पुत्र थे।

नाम—( ३५६ ) रूपसिंह (महाराजा)।

जन्म-काल—स० १६८५ यवेरा ग्राम में।

रचना-काल—१७१०।

विवरण—सन् १७०१ में महाराजा हरीसिंहजी के भतीजे होने के कारण किसानगढ़ राज्य के अधिकारी हुए। यशभार्याजी के शिष्य गोपीनाथजी के शिष्य थे। गहनहा के दरबार में आपका बड़ा मान था। दारा के सहायक होने के कारण धौलपुर के युद्ध में घात गति को प्राप्त हुए। चार होने के अतिरिक्त कविता प्रेमी तथा स्वयं कवि थे।

उदाहरण—

वन तें वानर अनि नज आवत।

येनु वनाय रिभाय जुवति जा गौरी रागहिँ गावत।

वारिज बदन लाल गिरिधर को निरखि सखी सनुपावत।

रूप कगच्छ करत ध्यारी पर रूपहिँ मन अति भावत।

नाम—( ३५६ ) केहरि, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल - - - १०।



विवरण—ये राजा शाहजी के दरबारी कवि थे । उनका गुण-गान में इन्होंने फुल्लर छंद लिखे ।

नाम—( ३३६ ) गयद कवि और मुधार कवि, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—सुट ।

कविता-काल—१७१० ।

विवरण—ये दोनों राजा शाहजी के दरबारी कवि थे । गयद कवि के नाम का उल्लेख सूदन कवि ने 'मुजा-रामो' में किया है ।

नाम—( ३३६ ) चतुरद ठाकुर, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—सुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे ।

नाम—( ३३३ ) बलभद्र कवि महाराष्ट्र प्रांत ।

कविता-काल—१७१० ।

विवरण—आप राजा शाहजी के यहाँ एक दरबारी कवि थे । आपने राजा शाहजी की पारितापिक में एक हाथी दिया था । इस कवि का वखन यों पाया जाता है—

एक बड़े बलभद्र कवि रशी शाह के साथ,

उहु गन नृप के नीति का खेल लगायो हाथ ।

आपकी समस्या-पूर्ति में कवि जयरामजी ने राजा शाहजी का मीर जुमला से युद्ध हाने का इस प्रकार वर्णन दिया है—

र्यास सहस्र अस्त्रधार वर मिर जुमला के संग,

जग करत रख रंग मों उ ह यों पायो भग ।

नाम—( ३३४ ) विश्वभर भट्ट, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—सुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

विवरण—इन्होंने अपने आश्रयदाता राजा शाहजी का तिलगाण,

कॉलिंग, कर्नाटक आदि की चढ़ाह्या का 'अमृत'धनि और 'कलमा' छंदा में वर्णन किया है।

उदाहरण—

अद्भुत नरपति शाह, देभि सुव प्रबल बाहुबल ;  
मज्ञत जित तित तात और ममेत शत्रु-दल ।

नाम—( ३६५ ) रघुनदा, महाराष्ट्र प्रात ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी और मजभाषा के कवि थे ।

नाम—( ३६६ ) रघुनाथ व्यास, महाराष्ट्र प्रात ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे । जयराम कवि ने इनकी समस्या पूर्ति इस प्रकार की थी—

यालम की घाट लरें बार-बार बावरी-सी,  
बैरिन की यधू फिरें बेरन के यन भैं ।

नाम—( ३६७ ) शिवदास ठाकुर, महाराष्ट्र प्रात ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवियों में थे ।

नाम—( ३६८ ) श्याम गुसाई, महाराष्ट्र प्रात ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे । इनके इस दोहे को  
“श्याम गुसाईं यों कही, चत्र लेहि मदाय,  
अर्थ चित्र कछु कवि कहौ, जापर रीकें शाह ।”

विवरण—ये राजा शाहजी के दरबारी कवि थे । उनके गुण-गान में उन्होंने फुटकर छन्द लिखे ।

नाम—( ३३६ ) गयद कवि और सुभार कवि, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—१७१० ।

विवरण—ये दोनों राजा शाहजी के दरबारी कवि थे । गयद कवि के नाम का उल्लेख भूदन कवि ने 'सुज्ञान-रासा' में किया है ।

नाम—( ३३६ ) चतुरद ठाकुर, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे ।

नाम—( ३३३ ) बलभद्र कवि महाराष्ट्र प्रांत ।

कविता-काल—१७१० ।

विवरण—आप राजा शाहजी के यहाँ एक दरबारी कवि थे । आपने राजा शाहजी ने पारितोषिक में एक हार्थ दिया था । इस कवि का उल्लेख यों पाया जाता है—

एक बड़े बलभद्र कवि रहो शाह के साथ,

उहु गन नृप के धीति का लेन लगायो हाथ ।

आपकी समस्या पूर्ति में कवि जयरामजी ने राजा शाहजी का मीर जुमला से युद्ध होने का इस प्रकार वर्णन दिया है—

वीर्य सहस्र अतवार वर मिर जुमला के सग

जग करत रण रग मो उहु यों पायो भग ।

नाम—( ३३४ ) विश्वभर भट्ट, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

विवरण—आपने अपने आश्रयदाता राजा शाहजी का तिलगान,



कवि जयराम ने ममस्था ममस्तर इम अकार पूरा किया था—

“ने तरवारि गही फर वारिज वारि दिशा धरि राजगु भागे,  
शाहबली तव घातु को जमु, राहु शशी वस राहन लागे।”

नाम—( १६९ ) सुरलाल, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरवारी कवि थे। इन्होंने शाहजी का मीर जुमला व साथ युद्ध और रायल की चढ़ाई का वर्णन किया है।

उदाहरण—

रतिवत नन मोह वै वोलिवत धर,  
सुनो साह मकरद जत कलरा वी ।  
वेर कडावते सो सय ही दरन लागे,  
डारत तरग पौन पात मानो धन की ।

नाम—( १७१ ) अज्ञात ।

रचना-काल—१७१२ ।

ग्रंथ—( १ ) राठीवचनिका, ( २ ) राठीव कुल-कवित्त ।

विवरण—यह दिगल भाषा काव्य है । स० १७१२ में जाखौन क राठीर रतनसिंह का जा युद्ध औरगजेव से हुआ था, उसका वर्णन ग्रंथ में किया गया है । इसमें हिंदी छंदों के अतिरिक्त कुछ गुजराती पद्य भी हैं । दूसरे ग्रंथ में राठीव-वश की उत्पत्ति, उसके गुरु प्रवर, कुलदेवी इत्यादि का उल्लेख है ।

नाम—( १७२ ) बाल कवि ।

रचना-काल—स० १७१२ ।

ग्रंथ—केशव-यावनी ।

विवरण—इन्होंने उक्त ग्रंथ अपने गुरु जैन-जनी श्रीकेशवाचार्य के नाम से रचनाया है । ग्रंथ छप्पय छंदा में है ।

नाम—( ४१० ) मानसिंह, महाराष्ट्रदेश ।

समय—स० १७१७ ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

विवरण—आप श्रीशिवाजी महाराज के समकालीन थे । महाशय भालेरावजी का कथन है कि आपकी बहुत-सी हिंदी-कविता उनके पूना निवासी मित्र मुजूमदार के संग्रह में है । यह कवि सभ्यत नाथ पवी थे ।

उदाहरण—

गिगरी कोन सुधारे रे, नाथ दिन गिगरी कौ सुधारे रे ।

बनी बनी का सब कोइ सापी, गिगरे काम न आवै रे ।

भरी सभा मों लज्जा राखी, दीनानाथ गुमाई रे ।

भली बुरी यह दोनो बहिनें परपरा से आई रे,

नाथ जाळदर मुद्रावाले 'मानसिंह' जस गाई रे ।

नाम—( ४१३ ) जगन्नाथ जोशी, जैसलमेर ( मारवाड ) ।

रचना-काल—स० १७१८ ।

ग्रंथ—कोक-भूषण ( कामशास्त्र ) ।

विवरण—आपने उक्त ग्रंथ जैसलमेर के महाराजा श्रीधर्मरामिहजी की आज्ञा से बनाया ।

नाम—( ४११ ) यस्ताविरसिंह, सकेसर, ( खुरासान देश के अतर्गत ) ।

ग्रंथ—राम विनोद ।

रचना-काल—१७२० ।

इस विषय में कवि ने इस प्रकार उल्लेख किया है—

“गगन पाणि फुनि दीप शशि, मर तिथि मृगसर मास,  
शुक्रौ पञ्च त्रयोदशी, बुद्धवार दिनु जास ।”

विवरण—ग्रंथ में वैद्यक का कविता बद्ध वर्णन है ।

नाम—( ४५५ ) लाला दे, ( धीकानेर की रानी ) ।

रचना-काल—सं० १७७७ के लगभग ।

कविता—स्फुट छंद ।

विवरण—यह धीकानेर के राजा पृथ्वीराज की रानी थी । इन्होंने अपने पति से ही चार-रम की कविता करनी सीखी थी । कहा जाता है, एक समय जब विसौदाधीश राणा प्रताप इनके पति राजा पृथ्वीराज के अनुरोध से बादशाह अकबर के साथ युद्ध करने को उद्यत हुए थे, तब इन्होंने अपने पति के पास निम्न लिखित घोषा लिए भेजा था—

“पति त्रिद की पतसाह सूँ यदैं सुनो मैं आज ;

कहँ पातल अक्षर कहीं, करियो वदो अकाज ।”

राजा पृथ्वीराज को इनसे उक्त प्रेम था । और कहा जाता है, इनकी अकाल मृत्यु हो जाने पर उक्त राजा को अत्यंत दुःख हुआ, और उन्होंने आग पर पकाईं रसोईं खाना छोड़ दिया ।

नाम—( ४५८ ) रामसुतामज, महाराष्ट्र ।

काल—सं० १७२६ ।

ग्रंथ—गोपीचंद्रायाम ।

विवरण—आप नाथ पंथी साधु थे । ग्रंथ अनेक छंदों का है । इसमें छ सगं है, और प्रत्येक छंद में मराठी हिंदी की युग्म रचनाएँ हैं ।

नाम—( ४६१ ) गगेश महाराष्ट्र देश ।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा कविता ।

विवरण—कहा जाता है, आप भूषणजी का महाराज शिवाजी के दरवार में सम्मानित होना सुनकर उक्त महाराज के दरवार में पहुँचे थे । आपकी बहुत थोड़ी कविता उपलब्ध हुई है ।

उदाहरण—

राज माँ राज सिवराज महाराज सब  
 साज मे भूप में धाज देखे ,  
 सुरत से सार दीदार भरि जान कै,  
 मदन से सर्व सौंदर्य रेखे ।  
 बन्त के तरत सारूढ खुशबन्त  
 दिनबन्त के धर्म सत्कर्म साठे ,  
 धीर गभीर फेयूर मणि मौर के  
 हृदय से बढते मव मराठे ।

नाम—( ४३३ ) तुलसीदास, महाराष्ट्र प्रात ।

ग्रन्थ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७३० ।

विवरण—यह शिवाजी के समकालीन थे । इन्होंने सिंहगढ़ विजय का वर्णन पँवाढा में किया हे ।

नाम—( ४७ ) शिवराम कल्याणकर, महाराष्ट्र प्रात ।

ग्रन्थ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७३० ।

विवरण—यह पूर्णानंद के शिष्य और समर्थदासजी के समकालीन थे ।

उदाहरण—

हुकुम साहिब का, हम तो चोपदार बाँका,  
 मझा, विष्णु, महेशा, प्रभु का अवतार खासा ,  
 दश धारो पर सत्ता, मझा सव्यलोक का दाता,  
 पूर्ण गुरु शिवराम धदा, बढगी कर ले ये खादा ।

नाम—( ४६० ) जगन्नाथ ।





कविता-काल—स० १०३५ ।

विवरण—यह औरगज़ेब बादशाह के समकालीन, साधु पुरुष और फ़ारसी के ज्ञाता थे । कहा जाता है, उर्फ़ शाह इनकी भेट से प्रसन्न हुआ था ।

उदाहरण—

चलो भाई, दत्तनगर जोइ आवेगा, आवेगा, सुख पावेगा ।  
 आवेगा, पड़तावेगा, जम के हाथ बिकावेगा ।  
 सत्यलोक से प्रागे चलना, वैकुण्ठ में नाहीं रहना,  
 कैलास को पीछे डालना, गुरु के पीछे पीछे चलना ।  
 निराकार के तख्त सँवारे, दत्त निरजन राजा,  
 आत्मानाम कहे घर अपना, बाजे अनहद बाजा ।

गम—( ४५३ ) नाथस्वामी, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—छुगरगहज़ारा ( हिंदी-ग्रंथ ) ।

कविता-काल—स० १०३५ ।

विवरण—संभवत यह नाथ पंथी साधु थे ।

नाम—( ४५३ ) बयानाई महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १०३५ ।

विवरण—यह समर्पदासजी का शिष्या थी । इनकी कविताएँ भक्ति भाव से पूर्ण हैं ।

उदाहरण—

AUGARHARD CHAIPODIA SETH  
 JAIN LIBRARY,  
 BHKANER, RAJPUTANA.

याग रँगोला महल बना है,

महल बीच भूलना सुला है ।

इस भुलने पर मूलो भाई,

जनम-मरन की भूल न थाइ ।

ग्रंथ—नासवेनु उपाख्यान ।

रचना काल—स० १७३४ ।

नाम—( १६० ) प्रेमनाथ, उपनाम प्रेमसखी, गुजरात प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ ।

विवरण—इनकी कविताएँ प्रेम-रस-पूर्ण हुआ करती थीं । आप कवि सामल भट्ट ( स० १६८४ १७४४ ) के समकालीन तथा सहजानंद स्वामी के शिष्य थे । मुख्यत इनकी रचनाएँ गुजराती भाषा में होने के कारण उम्र प्रांत के यह एक महान् कवि कहे जाते हैं । अभिमन्यु आख्यान नामक ग्रंथ में इनका एक हिंदी पद्य पाया जाता है ।

नाम—( १६१ ) अज्ञानदास महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—मराठी हिंदी मिश्रित पँथाड़े ।

कविता काल—स० १७३२ ।

विवरण—यह गांधली जाति के थे । राजपूताने के भाट चारणों की तरह महाराष्ट्र प्रांत में इस जाति के लोग धीरे तथा श्रम-रस-पूर्ण पँथाड़े और टावनिर्णय गाथा करते थे । इन्होंने अरजलपरी के वध का पँथाड़ा महाराज शिवाजी और उनकी माता को सुनाया था ।

उदाहरण—

अरजल—“तू तो कुनबी का छोहरा ।

शिवाजी— तू श्री भगरनी का छोरा

शिवाजी सरना पर लाया तोरा

×

×

×

अरजल जाति का भगरी,

तू तो करता तुकानदारी ।”

नाम—( १६१ ) आत्माराम, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७३५ ।

विवरण—यह श्रीरंगनेव बादशाह के समकालीन, साधु पुरुष और फारसी के ज्ञाता थे । कहा जाता है, उन्हें शाह इनकी भेट से प्रसन्न हुआ था ।

उदाहरण—

चलो भाई, दत्तनगर कोइ आयेगा, आवेगा, सुख पावेगा ।  
जावेगा, पड़तायेगा, जम के हाथ त्रिकावेगा ।  
सन्धलोक से आगे चलना, बैकुंठ में नाहीं रहना ,  
कैलास को पीछे ढालना, गुरु के पीछे पीछे चलना ।  
निराकार के तत्त मँवारे, दत्त निरजन राजा ,  
आत्मानाम कहे घर अपना, बाजे अनहद धाजा ।

नाम—( ४६३ ) नाथस्वामी, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—ब्रह्मशरगहजारा ( हिंदी ग्रंथ ) ।

कविता-काल—स० १७३५ ।

विवरण—संभवत यह नाथ पंथी साधु थे ।

नाम—( ४६३ ) बयाबाई महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७३५ ।

विवरण—यह समर्थदासजी की जिल्दा थी । इनकी कविताएँ भक्ति भाव से पूर्ण हैं ।

उदाहरण—

बाग रेंगीला महल बना ह ;  
महल बीच भूलना खुला है ।  
इस भुलने पर भूलो भाई ;  
जनम-मरन की भूल न याइ ।

## मिथर्वधु विनोद

दामी यथा कडे गुरु-मय्या ने,  
गुम्हूँ भुजाया मोद् भुलाने ।

नाम—( ४६३ ) अस्वर्लिंग, महाराष्ट्र देश ।

काल—स० १७३६ ।

विवरण—आपरी रचना मिश्रित है ।

नाम—( ४६८ ) मानसिंजी, ( महाराजा ) वृष्णागड ।

जन्म—स० १७१२, भादी सुदी ६ को माढलगड में ।

रचना-काल—स० १७३७ ।

विवरण—महाराज रूपसिंही के पुत्र तथा कवि थे । आपने  
गहनादे मुधुज्जम के साथ कलकत्ते की यात्रा की । महारुवि वृ द का  
आप विशेष सम्मान करते थे । तैलंग ब्राह्मण भट्ट विठ्ठलनाथजी से  
आपने 'सम्पायक-रहस्य' की रचना कराई ।

नाम—( ४६४ ) रायमल ।

प्रथम—आदिपुराण ।

रचना काल—स० १७३७ ।

विवरण—प्रथम में जैनतीर्थकर आदिनाथजी का चरित्र वर्णित  
है । यह एक विशाल जैन-साहित्य-संग्रह है ।

नाम—( ४६६ ) केशवस्वामी मागानगरकर, हैदराबाद  
( निजाम ) ।

प्रथम—एकादशी चरित्र एवं स्फुट ।

कविता-काल—स० १७३६ ।

विवरण—यह रामदासजी ( शिवाजी के गुरु ) के समय के साधु-  
पद्यायतन में से एक थे । इनके पिता आमाराम पत, तानाशाह  
नामक कुतुबशाह के कारबारी थे ( देखो विनोद द्वि० भाग, पृष्ठ ४३६ ) ।

उदाहरण—

पद

बस्वा करले विप्रेरु, मयमे सत्र मीर्द्धि ण्क  
अपने करप मे अपनी माया, प्रपच भृगु जाल देस ।  
यस्ती देह, जीव शील में, नाना देव अनेक ।  
निगुण मो यह कछु नाहि भावै, केशव कहत अलेख ।

नाम—( ५१० ) रूप, मेढताप्राम, मारवाड ।

रचना-काल—स० १७३६ ।

प्रय—रस-रूप ( नायिका भेद ) ।

विषय—आप पुस्करणे माह्वण, रामदास के पुत्र थे ।

नाम—( ५११ ) भैरव अवधूत, उपनाम ज्ञानसागर,

महाराष्ट्र प्रात ।

प्रय—ज्ञानसागर ।

कविता-काल—स० १७४० ।

मृत्यु-काल—स० १८०० ।

विषय—यह गंगाजी के समकालीन कवि थे । सन्यास लेने के बाद इन्होंने अज्ञान नाम ज्ञानसागरमें रक्खा । यह वेगती और महानिष्ठ थे ।

उदाहरण—

मगल मूरति नाचत आवे, कोटि सूर्य-सम तज ।

विकसति, ज्योति से ज्योति मिलाव ,

आहृद वाजत सचही बाजे, सोह ताग मुनारे ।

ज्ञान शिव गुरु सागर अवधूत आतमभाव बतावे ,

मगल मूरति नाचत आवे ।

नाम—( ५१२ ) विद्याधर ।

प्रय—विद्याविलास ।

नाम—( १३६ ) आनन्ददास, तजोर ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

मृत्यु-काल—स० १७८० ।

विवरण—कहा जाता है, गिराना के पिता को श्रैद्ध करने के उपलक्ष्य में इनका धानपुर-राज्य से चण्डा नामक ग्राम जागीर में दिया गया था । मराठी के अनेके कवि होते हुए भी इन्होंने हिन्दी-कविता से प्रेम था ।

नाम—( १३७ ) गिरिधर, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—सीता-स्वयंवर एवं स्फुट ।

कविता-काल—स० १७१० ।

विवरण—यह रामदासजी की गिण्या चण्डावाह के शिष्य थे । भालेरावजी के कथनानुसार इनके रचे हुए ग्रंथों का सरचा ४० और स्फुट २४,००० छंद हैं ।

नाम—( १३८ ) गोविन्ददास, मेरठ ।

ग्रंथ—छंद शास्त्र ।

रचना-काल—स० १७१० के लगभग ।

विवरण—इनके ग्रंथ में दशमेक पताका आदि चित्र-नाय के उदाहरण हैं ।

नाम—( १३९ ) बल्लभ ( मुकवि ), कृष्णागढ़ ।

कविता-काल—स० १७१० के लगभग ।

ग्रंथ—बल्लभ मुद्रावली, बल्लभ विलास ।

परिचय—आप वृद्धा के पुत्र तथा नागरीदासजी के शिष्य थे ।

उदाहरण—

बन-बन चापन सौं घाघनी कहत पत्ते,  
कोऊ जात धारो जतु कतु दुस पारिगे ,

सुनि हँ जो माननद महाबली राजसिंह,  
 ताही द्विन तुरत तुरग चढ़ि धारंगे ।  
 नव जे दरारे ताको पहिरंगे धारे पच,  
 प्रान जे तिहारे यमपुर पहुँचावगे,  
 उधरै गो धरम फहावंगे बाघबर,  
 ताहि कोई जोगिया दिगधर बिद्धावंगे ।

नाम—( १३० ) मदनमोहन ।

प्रथ—स्फुट कविता ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी के मध्य-काल के लगभग ।

विवरण—इनकी रचना में शून्योत्रियों की सुधयता है ।

उदाहरण—

रे तमचुर चितचोर भोर किन बोलई,  
 वृ दावन की कुजनि केलि कलोलइ ।  
 कुजन-कुजन पिरत सुशब्द सुनाइयो,  
 प्रीतम नैननि लागे जत्र जगाइयो ।  
 उरन सो उर, भुजन सो भुज सग, सोवति धैन सो,  
 अधर श्मृत पियत लटके नैन लटके नैन सो ।  
 श्लक श्लकनि माँक उरमी भाल लाल गुलाल सो,  
 चद सो ब्रजचद उरमे श ग शंग गुपाल सो ।

नाम—( १३१ ) मध्व मुनीश्वर, महाराष्ट्र प्रांत ।

प्रथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७५० ।

मृत्यु-काल—स० १७६१ ।

विवरण—कहा जाता है, यह शिवाजी के सेनापति कन्होजी



आग्ने के गुर थे । अमृतराय कवि हाके शिष्य थे । द्वारा अमली नाम महादेव या न्ययक पतखाया जाता है ।

उदाहरण—

भज मन शंकर भोलानाथ ।  
एकहि लोटा भर जल चाहे, चावल खेल के पात ;  
बाणँ गौरि, जग में गगा, महिमा धरनि न जात ।  
धरे यधयर साहँ विशगर, लिण त्रिशूलहि हाथ ,  
अ ग विभूति, मसान में खेलत, मध्व मुनीरवर साथ ।

नाम—( १३३ ) रामचद्र ।

अर्थ—भाव दीपक ।

रचना-काल—सं० १७२० । इस विषय में कवि ने स्वयं लिखा है—

“एक सहस्रर सप्तशत ऊपर और पचास,”

विवरण—अर्थ का विषय तत्त्व ज्ञान है ।

नाम—( १३१ ) दिनकर, महाराष्ट्र प्रांत ।

अर्थ—स्वानुभव दिनकर एव स्पुष्ट ।

कविता-काल—सं० १७२२ ।

विवरण—इन्होंने अपने पिता नरहरि से शिष्या पाई थी । कहा जाता है, १२ वर्ष तक तप करने के बाद यह रामदासजी के शिष्य हुए ।

उदाहरण—

पद

दूरि करो गुमराह, थाया ,  
देदी घात से कजु नहिं काम, अच्छी है गरिवाई ।  
धुरे फेल से कोड न जीते, जम दी दुरी खसलाह ।  
कह गिनकर एक राम भजन बिन मूडी सब चतुराई ।

करम करामति कान वृत्तग,  
तजि भजि राम अनंत अभग ।  
निसि बासर यह धानि यवान,  
रामहि राम सुगन्ध पान ।

नाम—( ११ ) राजेंद्र मुनि ।

रचना-काल—स० १०२३ ।

अर्थ—( १ ) राजवल्लभी गीता ( छंदोबद्ध, स० १०२३ ),  
( २ ) श्रीवृष्ण-वाल गीता, ( ३ ) सुध-वापनी और ( ४ ) शान  
धानी ।

विवरण—श्रीसुत भाखेरावजी का कथन है कि इनका 'राजवल्लभी  
गीता' अथ अमृतसर के श्रीवृष्ण मंदिर में प्रस्तुत है, और उस प्रति  
में रचना-काल स० १०२३ दिया हुआ है ।

उदाहरण—

टीका सुनत सुतान अस चित मन नित रह लाय ।

आविद्या अम मिटि गयो, पुरुषोत्तम सुख पाय ।

राजवल्लभी टीप कहाये, श्रोता-वद्म यहु सुख पाय ।

भगवद्गीता श्रेष्ठ कहाई, श्रीमन तिरपित अर्जुन शार्ङ्ग ।

नाम—( १११ ) उद्धव चिदूषण, उद्धवार्य, महाराष्ट्र प्रात ।

अर्थ—सत चरित्र एव स्पृष्ट ।

कविता-काल—स० १०२५ ।

विवरण—यह महाराष्ट्र प्रात के अथ सत-चरित्रकार कहे जाने हैं ।  
इ होने ब्रजभाषा में कतिपय संतों के चरित्र लिखे हैं ।

नाम—( ११० ) भगवतीदास, धारा ।

अर्थ—शुद्ध विलास ।

रवनाका—स० १७२६ । साल के विषय में कवि ने इस प्रकार लिखा है—

“सवत सग्रहसे पचावा,  
शुभ वमत वैमार सुहावा,  
गुरु पद्य तृतिया रविवार”

विवरण—आप जैा धम के अनुयायी थे । अथ में तत्व ज्ञान का स्पर्हीग्रहण है ।

नाम—( ६३० ) ( महाराजा ) राजमिहजी, कृष्णागढ ।

जन्म-सवत् १७२१, पार्श्विक सुदी १२ ।

काव्य काल—१७२६ ।

ग्रंथ—गणितकी हरण, चामासखलीला, बाहुविलास, राज प्रसार,  
सुख समीप आदि ।

परिचय—सुकवि वृद्ध स आपने कविता कर्नी सीखी थी । यह काल मुगलों के पतन का था । दंगर में आपका विशेष मान था । मुसलमान और आज़म के युद्ध में राजमिहजी की वीरता का आपने बरतान किया है ।

उपदेश—

चद उतै इत गोकुलचदहि प्रगटत होइ परी  
उतहि चकोरी इत की गोरी नन-मन लखि बिपरी ।  
उत की भोगी इत रिख योगी महामोद मन मारै ;  
उत दै अमृत इत पचासृग लखी प्रगट नहि धारै ।  
उत दुखराज इत मजराजा दोठ सुरराज सुदाई ;  
पाप कर्म वे धर्म-कर्म ये निगम पुरानन गाई ।  
गोपी ग्याल तदी सब पाखरू दूध-दही विरारै ;  
राजसिंह प्रभु मत्र के जीवन मत्रि जगत निस्तारै ।

नाम—( १३६ ) दरिया माहस, जैतरान धाम ( मारवाड़ ) ।

राम-काल—स० १७३३ ।

मृत्यु-काल—स० १८१५ ।

विवरण—आप मुसलमान-कुलोत्पन्न थे । आपकी कविता एवं जीवन चरित्र बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित हो चुका है । इसी नाम के एक और कवि न०१४८ पर आ चुके हैं, किन्तु यह इनसे भिन्न है ।

नाम—( '१३' ) केशवराय मिश्र ।

ग्रंथ—धृदमाल ।

उदाहरण—

सवत सत्रह सै वरम उनसठ जहाँ प्रकास,  
माघ रवेत चौदम निसा, भगल कीसु सुभाम ।

नाम—( '१३' ) रसाल ।

रचना-काल—स० १७६० ।

ग्रंथ—( १ ) राम चरित्र ( ऐतिहासिक काव्य ), ( २ ) पाठव-  
सौंदर्यचंद्रिका ।

विवरण—महाराज भालेरावजी का कथन है कि, उक्त ग्रंथ रतलाम के नरेश महाराजा रत्नसिंह के पुत्र कमचुन रामसिंह के यशोगान पर है । कहा जाता है, बादशाह औरंगजेब की आज्ञा से रामसिंह दौलताबाद के युद्ध में सम्मिलित हुए थे, और उसी युद्ध की घटनाओं का वर्णन इस ग्रंथ में दिया हुआ है ।

नाम—( '१३' ) गोपालसिंह ।

ग्रंथ—क्रियाकोष ।

रचना-काल—स० १७६१ ।

विवरण—ग्रंथ में दैनिक दिनचर्या, प्रतादि का वर्णन है ।

नाम—( '१३' ) बुधसिंह महाराजा ( बुधराज ), वैदी ।

रचना-काल—स० १७६१ स सं० १८०० तक ।

प्रथम—नेह-तरंग ( नायिका भेद ) ।

विवरण—बादशाह घटानुरशाह के माय चाप दिल्ली के गार्ही दरवार से आपको 'रावराज' हुइ थी ।

नाम—( ६३० ) तिलोहराम, ग्राम मेडला (

रचना-काल—स० १७६७ ।

प्रथम—रस प्रकाश भाषरीपक ।

उदाहरण—( प्रथम के अंतिम दोह )

औरी प्रथनि में करपी, मुमति दृष्टि  
चहे रीति रम रीति की मानीदासतिह  
सतरह से अरु सतसदें, शुक्ल भाद्रपद  
तियि द्वितिया मगल भण, भयो रहस्य विदौ

नाम—( १३५ ) हेमराज ।

प्रथम—प्रथम-सार सिद्धांत ।

रचना-काल—स० १७६३ ।

विवरण—प्रथम में तरु ज्ञान विषयक विचारों का

नाम—( १३३ ) गोबर्द्धन ।

प्रथम—( १ ) मधुमालती, ( २ ) मैनालत, ( ३ )  
को प्रथम ।

रचना-काल—स० १७७२ ।

विवरण—प्रथम की भाषा मालवीय है ।

नाम—( १३३ ) पूरण ।

प्रथम—दोला मारु की कथा ।

रचना-काल—स० १७७२ ।

नाम—( १३३ ) उमापतिजी ( कबीरवर ) ।

रचना—स० १७७२ ।

परिचय—महाराजा रावसिंह के समकालीन थे । राजा ने सुजावल-पुर आपको दान किया । दान पत्र से पता चलता है कि आप काशिराम शर्मा के पुत्र, पुरा के रहनेवाले थे ।

कविता का नमूना प्राप्त नहीं है ।

नाम—( १३५ ) निरजन माधव, महाराष्ट्र प्रांत ।

प्रथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १७७२ ।

विवरण—यह बाजीराव पेशवा ( प्रथम ) और बालाजी बाजीराव के आश्रित तथा कई भाषाओं के ज्ञाता थे ।

नाम—( १३६ ) इन्द्रजीत महाराज कुमार ।

प्रथ—शोकशास्त्र ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी के लगभग ।

नाम—( १३७ ) नैनसुर, करौली ।

प्रथ—माणिकपाल वाराणसी ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी ।

विवरण—यह महाशय करौली-नरेश महाराजा माणिकपाल के आश्रित थे ।

प्रथ—खंड-काय और छंदोभग पूर्ण साधारण है ।

नाम—( १३८ ) ज्ञानचंद्र ।

प्रथ—उपदेश सिद्धांत-रत्नमाला ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी ।

विवरण—प्रथम गद्य पद्य मिश्रित है ।

नाम—( १३९ ) केशवानंद रामचंद्र ।

प्रथ—पुण्याधव ।

रचना-काल—स० १७७७ ।

नाम—( ११७३ ) सपतराव वैद्य ।

रचना-काल—स० १८६३ ।

ग्रंथ—नारायण-कवच ( काव्य ग्रंथ ) ।

विवरण—आप मालवांतगत पीपलरायाँ ग्राम के निवासी थे ।  
श्रीयुत भालैरावजी द्वारा आप हमें पात हुए हैं ।

नाम—( ११७४ ) रामदयाल तेगरो, ग्राम मौंड, जिला  
दरभंगा ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विवरण—इनका जेहात हुए १०० वर्ष के लगभग हुए हैं ।

उदाहरण—

भजु राम नाम राम नाम रामा ।

राम नाम वेद मूल, इनके नहिं और सुल, भजत  
जमत शिषिय सुल छूटत भव ग्रामा ॥ १ ॥

राम नाम विमल नीर, सगम सत्सग नीर,  
मज्जत निर्मल शरीर, पावन निज धामा ॥ २ ॥

राम नाम कमल फूल, संतन-मन भ्रमर भूल,  
पीवत रम कूमि कूमि अमृत अनुग्रामा ॥ ३ ॥

राम-नाम निराकार, रामचाल नमस्कार,  
दीनै हरि भक्ति सार, पथ पल भर रामा ॥ ४ ॥

नाम—( ११७५ ) साह्यराम महत, पचाड़ी स्थान, जिला  
दरभंगा ।

ग्रंथ—भजनावली ।

विवरण—आप वैष्णव-संप्रदाय के सत थे । इनकी मृत्यु हुए  
सौ वर्ष से अधिक हुए हैं ।

नाम—( ११७६ ) खरगसेन ।

ग्रंथ—उपा हरण ।

रचना काल—सं० १८६५ ।

विवरण—भाषा अच्छी है ।

नाम—( ११६२ ) केशवराय कायस्थ, बुंदेलखंड ।

ग्रंथ—श्रीगणेश-कथा ।

रचना-काल—सं० १८६८ ।

विवरण—भाषा साधारण है ।

नाम—( ११६३ ) गव्ज कवि, गुजरात प्रांत ।

काल—सं० १८६८ ।

विवरण—आपने बड़ीदा नरेश महाराजा फतेहसिंह गायकवाड की प्रशंसा में लावणी रची ।

नाम—( ११६४ ) कालूराम ।

ग्रंथ—ज्ञानार्णव ।

रचना काल—सं० १८६६ ।

विवरण—ग्रंथ में तत्त्व ज्ञान विषय है । भाषा साधारण है ।

नाम—( ११६५ ) धर्मचंद ।

ग्रंथ—जैन-सूत्र ।

रचना काल—सं० १८६६ ।

विवरण—जैन दर्शन के सूत्रों पर टीका है ।

नाम—( ११६६ ) नयनानंद ।

ग्रंथ—शालभद्र राजा की कथा ।

रचना-काल—सं० १८६६ ।

विवरण—ग्रंथ जैन-साहित्यातर्गण है ।

नाम—( ११६७ ) मनोहरदास सोनी, साँगनेर ।



प्रथम—धर्म परीक्षा ।

रचना-काल—स० १८६६ ।

विवरण—प्रथम का विषय धार्मिक है ।

नाम—( १ ५ ६ ) ऐनानन्द कवि, ग्वालियर ।

प्रथम—कुडलियात्मक गीता ।

रचना-काल—स० १८७० ।

विवरण—आप मुमलमान फकीर थे । महाराजा दौलतराव सिंधिया के समय में आपका होना पाया जाता है । अभी तक आपकी समाधि ग्वालियर जिला पर विद्यमान है । भाषा पर आपका अफ़्दा अधिकार था ।

उदाहरण—

ऐनानन्द फकीर हैं, परमहंस निर्वाण,  
 दाही-भूँड़ में ढावतें, भसम करें असनान ।  
 भसम करे असनान, रतें पीतांबर सारा ;  
 जानहिं एकहि दहा तुरक हिंदू नहिं न्यारा ।  
 भिडुक दोऊ दीन के, ऐन एक ही जान ;  
 ऐनानन्द फकीर है, परमहंस निर्वाण ।

नाम—( १ ५ ३ ) नेमिदत्त, ग्वालियर ।

प्रथम—नेमिपुराण । जैन रचना है ।

रचना-काल—स० १८७० ।

नाम—( १ ५ ३ ) प्रभाकर, महाराष्ट्र प्रांत ।

धर्म—सुकुट ।

कविता-काल—स० १८७० ।

विवरण—यह अंतिम पेशवा शार्जीराव के समकालीन थे । इन्होंने गंगार रम पूर्ण आवनियौ और वीर-रम पूर्ण पवदि लिखे हैं ।

नाम—( १३०४ ) लालजीत ।

ग्रथ—अकीर्ति जिन-मदिर पूजा ।

रचना-काल—स० १८७० ।

नाम—( १३०५ ) सरूपचंद ।

ग्रथ—अकीर्ति जिन मदिर पूजा ।

रचना-काल—स० १८७० । जैन कवि ।

नाम—( १३०६ ) भूपतिराम ।

ग्रथ—त्रिलोकमार ।

रचना-काल—स० १८७१ ।

विवरण—ग्रथ में जैन दशानामुमार तीन लोकों का छंदोबद्ध वर्णन दिया हुआ है ।

नाम—( १३०७ ) रामचंद्र ।

ग्रथ—भाव-समह ।

रचना-काल—स० १८७१ ।

विवरण—ग्रथ में जैन पूजा का वर्णन है ।

नाम—( १३०८ ) फाजिलखॉ, गुजरात प्रांत ।

रचना-काल—स० १८७२ ।

ग्रथ—हुसूलखोर की लीला ।

विवरण—पेशवाओं का राज्य जय गुजरात में था, उसी समय में आपका होना पाया जाता है ।

नाम—( १३१० ) रसिकराय ।

ग्रथ—द्वारकाजीश चौरासी ।

रचना-काल—१८७२ । कवि इस विषय में लिखता है—

“सवत अठारह बहतर

कृष्णाष्टमी शुभ साजि ,

शुभवार आषाढ सुदि,  
 बहु दुहुभी पर गाजि ।”

विवरण—संभवत यह महाशय महाराजा दौलतराय सिंधिया के दीवान 'पारखजी' थे। इनका मथुराजी में द्वारकानाथ का मंदिर बनवाना पाया जाता है। इनके कई पदों के संग्रह में 'पारख' का उल्लेख पाया जाता है।

नाम—( १३१२ ) भाणिकचंद ।

ग्रंथ—परमागमसार ।

रचना-काल—स० १८७३ ।

विवरण—ग्रंथ का विषय जैन तत्वज्ञान है ।

नाम—( १३१४ ) सूरूपसिंह ।

ग्रंथ—उत्तपुराण ।

रचना-काल—स० १८७३ ।

विवरण—जैन साहित्य में यह एक प्रसिद्ध ग्रंथ है। भाषा उत्कृष्ट है।

नाम—( १३१५ ) अचलसिंह ।

ग्रंथ—समरमार

रचना काल—स० १८७४ ।

विवरण—ग्रंथ ज्योतिष के विषय पर है ।

नाम—( १३१६ ) चंद्रमान ।

ग्रंथ—कार्तिक-माहात्म्य ।

रचना-काल—स० १८७५ ।

विवरण—ग्रंथ में मालवीयन की झलक है ।

नाम—( १३१७ ) प्रवीण ।

काल—१६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध ।

ग्रंथ—स्वप्नाध्याय ( सुशोचक ) ।

विवरण—श्रीपुत्र भाचैरापजी के कथनानुसार आपका समय लिखा गया है ।

नाम—( १३११ ) दीनदयाल, टुंडार ( जयपुर राज्य ) ।

ग्रंथ—बुधजन सतसैया ।

रचना-काल—१८७६ । कवि ने इस विषय में स्वयं लिखा है—

“सबत् अठारह सै असी, एक बरस ते घाट ;

जेठ कृष्ण रवि अष्टमी, हुयो सतमई पाठ ।”

विवरण—ग्रंथ में व्यापहारिक बातों का वर्णन है ।

नाम—( १३६० ) जीवनदास, बहादुरगढ़ ।

ग्रंथ—पंचकल्याण ।

रचना-काल—स० १८८० ।

विवरण—आप जैन धर्मानुयायी थे ।

नाम—( १३७२ ) बली हाजी, ग्राम कोलारस ( नरवर ) ।

ग्रंथ—हाजीबलीनामा ।

रचना काल—स० १८८० ।

विवरण—आप मुसलमान थे । सूक्री होने के कारण आपने हिंदू-तत्त्वज्ञान का अष्टा अध्येयन किया था । आपने ग्रंथ में तत्त्वज्ञान पर अच्छे भाव कहे हैं ।

नाम—( १३८० ) गणधर सूरि ।

ग्रंथ—ग्रामानुशासन ।

रचना काल—स० १८८१ ।

विवरण—ग्रंथ जैन तत्त्वज्ञान पर है ।

नाम—( १३८१ ) पत्रालाल ।

ग्रंथ—पाहुड़ ग्रंथ ।

रचना-काल—स० १८८१ ।

विवरण—कुद् कुदाचाय-कृत मूल ग्रंथ का यह अनुपाद है। ग्रंथ का विषय जैन दर्शन शास्त्र है।

नाम—( १५८५ ) लुप्तमान हकीम।

ग्रंथ—( १ ) नयीहतनामा ( अनुवादित ), ( २ ) मुगल-पुराण, ( ३ ) सुखदेव-लीला, ( ४ ) वैष्णव।

रचना-काल—स० १८८२।

नाम—( १५८६ ) गुणभद्र सूरि।

ग्रंथ—घा मानुष सन।

रचना-काल—स० १८८३।

विवरण—मूल ग्रंथ का यह में अनुवाद है। ग्रंथ में जैन दर्शन के अनुसार तत्त्वज्ञान का वर्णन है।

नाम—( १५८७ ) हरि, शाहाबाद ( कोटा राज्य )।

ग्रंथ—रममजरी।

प्रविता-काल—स० १८८३।

ग्रंथ लोपन काल के उपलक्ष में कवि ने निम्न लिखित छंद दिया है—

शिविवसु रूप सुमवत नम सित पांचे पुण्यादित्य ,

तादिन किए आरभ श्रुतिति बोध सुभग रममजरी।

विवरण—कवि ने अपने आश्रयदाता की गुणभादकता का अष्टधा वर्णन किया है। संभवत यह कोटा-राज्य के आश्रित थे। इसी नाम के दूसरे कवि विनोद के द्वितीय भाग में हैं ( देखो न० ८५३ )।

नाम—( १५८९ ) निरचलदास, बूंदी।

ग्रंथ—( १ ) विचार-सागर, ( २ ) वृत्तप्रभाकर।

विवरण—जाति के भाव चारण थे, किंतु माधु हो गए, ऐसा कहा जाता है। उक्त दोनों ग्रंथ इन्होंने बूंदी नरेश महाराजा राम सिंहजी के आश्रय में रचकर बनाए।

नाम—( १३५८ ) परमसुख सिंघई ।

ग्रंथ—नसीहतनामा ।

रचना-काल—स० १८८७ ।

विवरण—ग्रंथ में व्यावहारिक बातों का वर्णन है ।

नाम—( १३५९ ) माणिकदास ।

प—राम-रसायन ।

ग-काल—स० १८८७ ।

विवरण—ग्रंथ में राम नाम स्मरण का महत्त्व वर्णित है ।

नाम—( १३६० ) दीनदवेश, काठियावाड ।

कविता काल—स० १८८८ ।

ग्रंथ—स्पुट कविताएँ ।

विवरण—छाव जानि के लुहार तथा बाल साधु के शिष्य थे ।

चिनोद में न० १२२५ पर इसी नाम के एक मुसलमान युदेलखड़ी

कवि और आ चुके हैं, किंतु वह इन महाशय से प्रयत्न हैं । यह हिंदू

और मुसलमान में भेद नहीं मानते थे । इनकी भाषा गुजराती-

मिश्रित हुआ करती थी, और रचनाओं में आध्यात्मिक भाव की

कलक रहती थी ।

नाम—( १८५५ ) दुलीचंद ।

ग्रंथ—मोक्ष-मार्ग प्रकाश ।

रचना-काल—स० १८१० ।

विवरण—ग्रंथ वैराग्य और नीति पर है ।

उदाहरण—

मिलि मिलि कुडनि निकुजत पधारा करै,  
 नदन सुधारा करै चदन दलान की ;  
 बर अरिबिदन की माला गुदि डारा करै  
 गुलसी गुलाब मध्य कुचित कलान की ।

## मिश्रधनु विनोद

बल्लरी दरीचिन म खरं लङ्कारा करै,  
 गुफित लतान-मध्य प्रथित पखान की,  
 राधा महारानी महाराज कृष्णचन्द्रजू की,  
 धारती उतारा करै टारा देवतान की।

नाम—( १८३९ ) भगतीराम उपनाम सुशराम, कृष्णगढ़।

कविता-काल—१८२० के छाम रास।

परिचय—छाप भी वृ दजी के पशधरा में थे।

उदाहरण—रानी जतनकुवरी के सती होने का वर्णन।

कृष्णगढ़ चढ़ती रनी मा भई रानावत,  
 सती सत्य सुगत को फर्म करिबो करी ;  
 कह 'सुशराम भाग एक धरि धीरज सो,  
 घर बावनेराजू को ध्यान धरिबो करी।  
 राम रट कू पट झरु झरुटकर,  
 लाय की लपट सौ लपट लरिबो करी।  
 प्रेम-धनुराग भरी गौरी ज्या सुहाग भरी,  
 भाग भरी भूरि चाग भर जरिबो करी।

नाम—( १८३६ ) मनोहरदास स्वामी, गुजरात प्रांत।

काल—१९वीं शताब्दी का अंतिम समय।

प्रिय—स्फुट कविताएँ।

विवरण—छाप रामानंदी संप्रदाय के साधु थे।

नाम—( १८५० ) शिवरामन वानपेयी (शिवराम), असनी।

कविता-काल—प्राय १९वीं शताब्दी का अन्त।

प्रिय—कविप्रिया की टीका।

विवरण—छाप घसी के वाजपेयी, असनी के रहनेवाले थे।

छापका महाराज बाँदी से प्रगाढ़ प्रेम था, और कहा जाता है कि वहीं

के आप राजकवि थे । आपके बराबर मैसौली राज्याध्यक्ष में अभी मौजूद हैं । इनकी कविताएँ प्रसाद-गुणालंकरण हुआ करती थी । आपकी रचनाओं का समावेश ग्रंथ के आधार में अभी तक नहीं हुआ है । सुना जाता है, आपके पौत्र प० उमेशचन्द्र वाजपेयीजी शीघ्र ही इस प्रशसनीय कवि की कृतियों को एक एक पुस्तकाकार संस्करण में निकालनेवाले हैं । यह कवि महाशय तथा ऊपर दिए हुए इनके ग्रंथ का नाम हमको प० बालमुकुन्द पांडेय, गोरखपुर द्वारा ज्ञात हुए हैं ।

उदाहरण—

एक तो चसील होय दूजे नैन सील होय,  
तीजे बने डील होय चौथे घोष टानेगो,  
पाँचवे प्रथीन होय, छठवें छली न होय,  
सातवें शरम, आठें शोज उर आनेगो ।  
कहै 'शिवराज नेति नयमें निगाह रागें,  
दसवें दिमाग, गुन ब्यारें पहिचानेगो,  
बारहें विमल बुद्धि, तेरह तरहदार,  
चौदहें चतुर साहि गुनी जन मानेगो ।

नाम—( १८३० ) प्रजेंद्र, भरतपुर ।

ग्रंथ—रसानन्द ( प्रजेंद्रप्रकाश ) ।

रचना-काल—स० १८११ ।

विवरण—संभवत यह कवि भरतपुर के राज्य शासक में से थे ।  
ग्रंथ गायिका भेद पर है ।

नाम—(  $\frac{१८३१}{१८३१}$  ) गंगावर प्रधान ।

ग्रंथ—आदिपुराण ।

रचना-काल—स० १८१२ ।



विवरण—ग्रथ का विषय जैन पुण्य है ।

नाम—( १८३१ ) फत्तेसिंह कायस्थ, शिवपुरी, रियासत  
ग्वालियर ।

ग्रथ—दक्रतरनामा, अर्थात् हिंदी में हिमाचल रियासत के विषय का  
छंदोयुक्त वर्णन ।

रचना काल—स० १८१२ ।

नाम—( १८३० ) रणधारसिंह ।

ग्रथ—( १ ) काव्य रत्नाकर, ( २ ) भूषण-कौमुदी, ( ३ ) पिंगल  
वा नामाणय, ( ४ ) रम रत्नाकर ।

जन्म-काल—स० १८७७ ।

विवरण—ज्ञिर्मादार सिद्धरामऊ, जौनपुर । श्लोक प्र० श्री० रि०  
से सं० १८६४ निकलता है ।

नाम—( १८५३ ) मोहनदत्त ।

रचना काल—अनुमानत १६वीं शताब्दि का अन्तिम काल ।

ग्रथ—ग्राम बोध ।

विवरण—श्रीयुक्त भानरावजी का कथन है कि उन्नत ग्रथ प्राप्त  
हुआ है, और उसमें विविध छंदा में वेदांत वर्णित है ।

नाम—( १६९८ ) बलनाथरसिंह ( कविराव ) ।

जन्म-काल—स० १८७३ ( स० १६६२ में शरीरांत हुआ ) ।

रचना-काल—स० १८६८ ।

ग्रथ—( १ ) सरूप-यश प्रकाश, ( २ ) गभु यश प्रकाश,  
( ३ ) सज्जन यश प्रकाश, ( ४ ) पतह-यश प्रकाश, ( ५ ) सामत-  
यश प्रकाश, ( ६ ) रसोत्पत्ति, ( ७ ) अन्वोका यश प्रकाश,  
( ८ ) सवाणव, ( ९ ) रागिनियों की पुरतकें, ( १० ) केहरि प्रकाश,  
( ११ ) सधित्र रमिक्रिया तथा सज्जन चित्त-चन्द्रिका ।

विवरण—दसादी रायों के वंशज । इनके पूर्वज जयपुर राजकुवि

ये । मेवाड़ में कई गाँव पाए थे । आप भी उदयपुर आदि कई राज्यों के कवि थे ।

उदाहरण—

लष गुनो नील ते करोर गुनो बज्जल ते  
 अरव खरव गुनो करदम फारा ते ,  
 'बल्लत' भनत लग्यो आनि अवनीपन के,  
 विंदा मो कलक भइ अकयर धारा ते ।  
 मेदपाट मडल मक्षीप निज पानिपसों  
 धरिके विबुध हरि हर के सहारा ते ,  
 घोय जो न लतो 'श्रीप्रताप' बीरबर तो तो  
 धोतो न कलक वो हचार गग धारा ते ।

नाम—( १०३४ ) वैजनाथ भाडेने ( ब्राह्मण जुम्होतिया ),  
 दतिया ।

जन्म-संवत्—अनुमानत १८७० वि० ।

कविता काल—अनुमानत स० १९०४ ।

उदाहरण—

जरब जरी पै नग जटित जगहर के,  
 पदर किनारा गज मुद्रा मग गौड़ जात ,  
 माज तन भूषण अभूत कदरप अर्प,  
 करुष टवानल की उपमान रौंध जात ।  
 कहे 'वैजनाथ आफताब को दयावें आव,  
 ताब महताब की न चघलान कौंध जात ;  
 तेरे मुख-चंद्र को प्रकाश छिति माँहि देख,  
 चक्रत भयी सौ चित चंद्र चकचौंध जात ।  
 हय हाथी हययार रम और रतन की खान ,  
 'वैजनाथ' करबो कठिन मान्य की पहिचान ।

नाम—( १०११ ) गणपतराव, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—स० १६०६ ।

विवरण—यह नासिक के निवासी थे । कीर्तन क्रिया करते थे ।

नाम—( १०११ ) दत्तनाथ, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता काल—स० १८६० ।

मृत्यु-काल—१६०६ ।

विवरण—यह महीपतिनाथ कवि के समकालीन थे ( देखो न० ८३ ) । इनकी मृत्यु १३६ वर्ष के उपांत हुई । भालेजीराव का कथन है कि इनका मठ अथ तक उज्जैन में बना हुआ है, जहाँ से महादाजी शिंदे कृत 'कवितामार संग्रह', 'माधव विलास' नामक ग्रंथ उन्हें पहले-पहल प्राप्त हुआ था ।

नाम—( १०११ ) नागजी श्रीदीन्य राधट, गुजरात प्रांत ।

काल—स० १६०६ ( 'सौराष्ट्र इतिहास' से ) ।

ग्रंथ—कुडलिदा ग्रंथ ।

नाम—( १०११ ) प्रागनि कवि ।

रचना काल—स० १६०६ ।

ग्रंथ—अमर-गीत ।

विवरण—उक्त रचना व्रजभाषा में है । महात्मा सूत्रदास ने सबसे प्रथम अमर-गीत रचा था, और उनके परचात् नददास, वृंदावनदास, रसिकराय आदि कवियों ने भी इसी विषय पर रचनाएँ की हैं । नददास कृत अमर-गीत बहुत प्रसिद्ध रचना समझी जाती है । मुलनामक दृष्टि से छापका भी अमर-गीत हिंदी साहित्य

में विशेष स्थान रखता है। नंद यशोदा और गोपियो को समझाने तथा उन्हें उचित मार्ग पर लाने के हेतु ऊयो का धीरुष्य द्वारा यज्ञ में भिजवाया जाना ग्रंथ में वर्णित है। वर्णन उत्कृष्ट तथा सरस है। इस कवि महाशय का परिचय माधुरी पत्रिका ( वर्ष ४, खण्ड १, मध्या १ ) में दिए हुए प० भगरिथप्रसाद दीक्षित के लेख के आधार पर दिया गया है। दीक्षितजी का कथन है कि उक्त कविकृत भ्रमर-गीत का उल्लेख रोज की रिपोर्ट में है, और इस ग्रंथ की सवत् १६०५ की लिखी हुई प्रति भी प्राप्त हुई है।

उदाहरण—

आयसु दीदो सया सुजाहि ।

स्यदन घड़ी, सिधारी वन काँ मिद्धि रावरे आनिहि ।

कैसी हैं जसुदा जननी जिनि पालि कियो परधीन ,

मोहि अद्धत अब होति होहिगी पर पूतह आधीन ।

गहियो पायँ नंद बाबा के कड़ियो यहँ सँसेसौ ,

जो तुम त्रियो महाकृत हमसों गुनि न सकत गुन सेमौ ।

समाधान कीजेह गोपिन काँ, दीजेहु निर्मल ज्ञान ,

कड़ियो जोग-जुगति सो 'प्रागनि त्रिपुटी समय ध्यान ।

नाम—( २०५ ) रसिकलाल उपनाम रामदास माधुर, तहसील रामगढ़, राज्य अलवर ।

जन्म-काल—स० १८०६ ।

रचना-काल—स० १६१० ।

मृत्यु काल—सं० १६५० ।

ग्रंथ—गीतामृत धारा ।

विवरण—आप रूद्रमलजी के पुत्र थे। वेदांतसार नामक आपका एक दूसरा ग्रंथ अमुद्रित रूप में आपके वंशज लाबा भैरोंलाल तथा गोपालसहाय माधुर, अलवर के पास मौजूद है, ऐसा कहा जाता है।

नाम—( १५ ) रामाजी दादा शिंदे ।

ग्रंथ—( १ ) कमलावती की कहानी, ( २ ) वशावली इतिहास ।

रचना काल—सं० १६१० ।

विवरण—आप महाराजा सविधा के बंधुधर थे । ग्रंथ की भाषा उर्दू मिश्रित है ।

नाम—( १०६६ ) किशोरसिंह काब्रल, ग्राम पीयरामर, रियासत बीकानेर ।

जन्म-काल—सं० १८८६ के लगभग ।

मृत्यु-काल—सं० १९०८ ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप रियासत बीकानेर के एक सम्मानित सरदार थे । कुछ काल तक उक्त रियासत में इस्पेक्टर-पुलिस तथा वकील धाबू के नाते काम कर चुकने पर यह महाशय वहाँ के हाईकोर्ट-जज हो गए । यह कवि ठाकुर धनुरसिंह, राष्ट्रधर ( बीकानेर ) द्वारा हमें ज्ञात हुए हैं ।

नाम—( २११ ) लक्ष्मीनाथ गोसाई, मिथिला ।

रचना-काल—सं० १९१४ के लगभग ।

ग्रंथ—भजनावली ।

विवरण—आप मैथिल ब्राह्मण थे । काशी के विख्यात पंडित राजाराम शास्त्री आपके शिष्य थे । आपका देहांत हुए लगभग पचास वर्ष ध्यतीत हुए हैं ।

नाम—( १०६३ ) मीरादास, मालवा ।

ग्रंथ—नरसी मेहता का मामेरा ।

रचना काल—सं० १९१६ ।

नाम—( १६६८ ) गंगाधर व्यास, राज्य छतरपूर ।

जन्म-काल—सं० १८६६ ।

रचना-काल—सं० १९१६ ।

मृत्यु-काल—सं० १९०२ ।

ग्रन्थ—( १ ) नीति-जत्रंगी, ( २ ) गो-माहात्म्य, ( ३ ) भृगु-हरि-चरित, ( ४ ) धीविश्वनाथ पताका, ( ५ ) कल्पियुग पत्रीसी, ( ६ ) सुदाना चरित, ( ७ ) मयापाख्या ( दर्दोषद्व भाषाजुगद ) श्रीर स्पष्ट कवितापू ।

विषय—श्याप सनाथ्य ब्राह्मण थे । थापके पिता का नाम प० रामलाल श्याप तथा पितामह का प० लक्ष्मणलालजी श्याप था । इनके पूर्वजों का आदिम निवास स्थान रामलाल था, किंतु बाल्यांतर में यह महोश जिला दर्भारपुर में आकर बस गए थे । तदनंतर धरपुर-राज्य में आए । पाठिय तथा सुलीयता की दृष्टि से श्यापजी का घराना प्रतिष्ठित है । थाप जन्मत एक आशुकवि थे, श्रीर सुदेल-वंशी भाग पर थापका अष्टा अधिकार था । थापजी बनारस हुई बहुत-सी काव्य पत्रियाँ सूर्य-साधारण में, लोकोक्ति की भाँति, प्रचलित हैं । बीसवीं शताब्दी के सुदेलखंडी कवियों में श्यापजी का आसन श्रेष्ठ है । यह महाराज छतरपुराधीश श्रीमान् महाराज विश्वनाथसिंहजी देव के आश्रित कवि थे । हर्ष का विषय है, इनकी कविता तथा ग्रंथों का समूह प० रामनारायण शमा के संपादकत्व में गंगाधर-अथावली के नाम से श्रीसनाथ्य ग्रन्थमाला, कालपी से शीघ्र ही प्रकाशित होयाला है ।

उदाहरण—

मत्त मर्तगन की गति सों गजगामिनि नाम मिल्यो मुन्वदानी,  
थ्यों 'द्विज गग' तजै नहिं ताहि, मराल हँसी मरिहँ मन मानी ।  
यों लचिहँ कच भारन खंक, न मानत संक निर्मक दिखानी ;  
मद चलै किन चंद्रमुखी, पग लाएन की अँखियाँ उरकानी ।

नाम--( १५० ) मुग्धानद स्वामी ।

ग्रंथ--( १ ) मनमोहिनी विनोद, ( २ ) धर्म-सजीवनी,  
( ३ ) मिश्रव्यास, ( ४ ) विचित्र धर्म निणय, ( ५ ) स्वर्णकार  
महाकाण्ड, ( ६ ) धर्मव्यकुञ्ज पञ्चावली, ( ७ ) आत्म तीथावलोकन,  
( ८ ) राष्ट्रीय आग्रहा दर्पण, ( ९ ) ब्रह्मनिणय, ( १० ) प्रश्नोत्तरी,  
( ११ ) सुखार्णव गीता, ( १२ ) निर्याय नियम, ( १३ ) अन्व  
शमापण, ( १४ ) गुरु निर्णय, ( १५ ) सनाढ्य-व्यशावली,  
( १६ ) सुखार्णव प्रवाण, ( १७ ) स्वराज्य विनोद, ( १८ ) कम-  
सदागता, ( १९ ) ज्ञान पर्युति, ( २० ) सान्धर्म ( २१ ) ज्ञान  
मार्ग, ( २२ ) ईश्वरदायकार, ( २३ ) वेदोक्त मायन, ( २४ ) धातव्य ।

पत्रम-काल - १८८१ ।

इषाना-काल - १८९६ ।

नाम--( १५१ ) इ शाश्वद्वलायों ।

इषाना काल - १८९७ के लगभग ।

काल--कवि सतसु विज्ञान के समकालीन थे ।

विषय--शापने किंदी की लड़ी वाली में 'रानी केतकी की कथा'  
पुनी । इसी का पुत्रास पुत्र उर्दू मिश्रित गद्य-काव्य है, इसे चाहे  
किंदी ५६६ भावे ब्रह्म ।

नाम--( १५२ ) लक्ष्मीप्रसाद थापक ( सनाढ्य नादरण ) ।

फोतपी ।

नाम-काल--सं० १८९० वि० ।

काल-काल--सं०

१८९० से १९००

१९०० से १९१०

१९१० से १९२०

१९२० से १९३०

१९३०

उदाहरण—

प्रचड चंड मुट राड रड मुड के धरा,  
हुँकार घोर शोर ते टरे मरे निशाचरा ;  
अनत धीर धीय कीर्ति लोक लोक को धरी,  
रुरत दू द खडिण बिलव थंय क्यों करी ।  
अपार टुन्य दाह दाह शुद्ध बुद्धि कीजिए,  
सदैव सुख दयनेय शत्रु शीश मीजिए,  
अधीन मातु जान हीन दीन की व्यथा हरी,  
दुरत दू द खडिण बिलव थंय क्यों करी ।

नाम—( २१३० ) ( राजा ) पृथ्वीसिंह ( जी ), कृष्णागढ़ ।

परिचय—इनका पहला नाम स्वोपानसिंह था । मोहकनसिंहजी के मरने पर यह उनके उत्तराधिकारी हुए, तथा पृथ्वीसिंह नाम पडा । यह वैष्णव तथा ध्यनहार उश्ल राजा थे । कभी कभी कविता भी करते थे ।

रचना काल—स० १६२० के लगभग ।

नाम—( २१३५ ) हसरज ( जी ), कृष्णागढ़ ।

परिचय—घृ दजी के वंशज तथा कृष्णागढ़ के दरबारी कवि थे ।

रचना-काल—स० १६२० के लगभग ।

उदाहरण—

नूर घट ध्यानन पै आज चढ़यो सूरन को,  
परम प्रनानि को उद्यगल हू मिटि गौ ;  
कौपे उर चोरन के धाड़वी धधक रहे,  
नीति धन प्रीति सा अनीति बीज हटि गौ ।  
पाटके विरानत श्रीपृथ्वीसिंह भूपति के,  
तपन प्रताप लोक तामस उद्यटि गौ ,



नाम—( २१०० ) सुखानन्द स्वामी ।

प्रथ—( १ ) मनमोहिनी विनोद, ( २ ) धर्म-सजीवनी,  
( ३ ) विवेकसार, ( ४ ) विविध धर्म नियम, ( ५ ) स्वर्णकार  
ब्राह्मण, ( ६ ) कान्यकुब्ज-यशावली, ( ७ ) आत्म तीर्थावलोकन,  
( ८ ) राष्ट्रीय आल्हा सर्पण, ( ९ ) मङ्गलनियम, ( १० ) प्ररनोत्तरी,  
( ११ ) सुखानन्द-गीता, ( १२ ) निर्णय नियम, ( १३ ) राजव  
रामायण, ( १४ ) मूल निर्णय, ( १५ ) समाह्वय-यशावली,  
( १६ ) सुखानन्द प्रकाश, ( १७ ) स्वराज्य विनोद, ( १८ ) कर्म-  
उपासना, ( १९ ) ज्ञान पद्धति, ( २० ) राजधर्म, ( २१ ) ज्ञान-  
सपण, ( २२ ) इश्वरावतार, ( २३ ) वेदोक्त गायन, ( २४ ) ब्राह्मण ।

जन्म-काल—स० १८६१ ।

रचना काल—स० १९१६ ।

नाम—( २१०१ ) इशाञ्जल्लारजो ।

रचना-काल—स० १९१७ के लगभग ।

काल—कवि लखनूनीलाल के समकालीन थे ।

विषय—यान्ने हिंदी की खूबी बोली में 'रानी केतड़ी की कथा'  
रची । इसमें अनुभास युक्त उर्दू मिश्रित गद्य काय है, इसे चाहे  
हिंदी कहें, चाहे उर्दू ।

नाम—( २११५ ) देवीप्रसाद थापक ( सनाह्वय ब्राह्मण ),  
कालपी ।

जन्म-काल—स० १८६० वि० ।

कविता-काल—स० १९२० ।

स० १९२० से १९३५ तक प्रधाना-यापक, कालपी मिडिल-स्कूल ।  
१९४५ वि० म डिप्टी इन्स्पेक्टर ऑफ़ स्कुल ।

प्रथ—( १ ) ध्यान माला, ( २ ) मन विनोद, ( ३ ) दुर्गाष्टक ।

अधिकांश छन्द, कवित्त, सवैया प्रादि हैं। कहीं-कहीं दोहे-सोरठे भी मिलते हैं। 'धर्म प्रदर्शिनी' सं० ११६३ में समाप्त हुआ। यह श्रीवैद्येश्वर प्रेस में मुद्रित हुआ है। धर्म प्रदर्शिनी धर्म विषयक गद्य पद्यात्मक ग्रन्थ है।

उदाहरण—

फटि जाते संस के सहस्र फन भारत तें,  
 दिग्गज टतारन के दुस को छुटावतो ;  
 पुहुमि सहमि दगटग दगमग होति,  
 हह तनि जलधि को जल बढ़ि आरतो ।  
 रहि जातो वेद पथ सुपथ करे को कहीं,  
 देवन की सेवन में कौन मन लावतो ,  
 'ईश्वरीप्रताप' खौ न अधम उधारन को  
 बानो गहि कालिका को नाम जग दावतो ।

नाम—(  $\frac{३१५३}{५३}$  ) शिवदयाल पाडे ( भेष ) कश्मीरी

मोटल्ला, लखनऊ।

नाम-सवत्—लगभग ११००।

रचना-काल—स० ११२४।

ग्रन्थ—दशम स्कन्ध भागवत के भाग का छन्दोबद्ध अनुवाद।

विवरण—आप हमारे पूज्य पिताजी तथा लेखराज कवि के मित्रों में थे। बड़े जिज्ञासु चरित्र थे। एक बार यतन गिरो करके हम लोगों का सविधि आतिथ्य किया, और यह बात हमें पीछे से विदित हुई।

उदाहरण—

चित की हम ऊधो जो बातें करे अवकास अकामन पाइहै जू,  
 इन तुग के तुग तरगन के उमडे जल कैसे समाइहै जू।

धाक परे देगन घौ' हाक परे रागुग वै,  
घौकल धरा को मय णके साथ मिटि गौ ।

गाम—( ११३५ ) ज्ञानअली ।

समय—सं० १९२२ ।

ग्रथ—मियवरकेलिपदावली । ( ५० श्रै० रि० )

नाम—( ११३५ ) ( महाराजकुमार ) नर्मदेश्वरप्रसाद  
सिंहजी ।

आपका जन्म सं० १८९६ में गद्दीशपुर गढ़ावाड़ में, हुआ था । आपका पिता का नाम गुलसीप्रसादसिंह था । आप प्रारंभी संस्कृत-भाषाओं के विद्वान् तथा हिंदी भाषा के कवि थे । आपके पूर्वज उज्जैन से आकर यहाँ बसे थे । यं लोग प्रमार-वृत्रिय-वश के थे, परंतु उज्जैन से आए हुए होने के कारण इनके वशघर उज्जैन गाम से विख्यात हुए । गढ़र के बाद आपने गद्दीशपुर का रहना छोड़कर वहाँ से दक्षिण तीन मील दूर दिल्लीपुर-नामक ग्राम में अपना निवास-स्थान बनवाया । आप प्रायः हुमराँव जाया करते थे । यहाँ से सं० १९६३ में आपको पचायात रोग हो गया, और इसके बाद इस रोग के कारण आप साहित्य-सेवा से वंचित रहे ।

आपने 'शिवाशिव शतक', 'शृंगार दपण', 'पंचरत्न' और 'धर्म प्रदशिनी' नामक चार ग्रंथों की रचना की । 'शिवाशिव शतक' सं० १९३२ की माघ-शुक्ला पंचमी को बना । यह भारत जीवन प्रेस में छपा है । इसमें नामानुसार १०० कवित्त सवैयों में शिव की स्तुति है । शृंगार दपण नव शिख का ग्रंथ है । इसकी रचना शिवाशिव शतक के एक वर्ष उपरांत हुई, और यह ग्रंथ सेंट्रल प्रेस, दीनापुर में प्रकाशित हुआ । पंचरत्न अभी तक प्रकाशित है । यह सं० १९४२ के पूर्व का होगा । इसका होना इनके वशघर दुर्गाप्रसादसिंहजी द्वारा विदित हुआ है । जीवनी भी इन्हीं के द्वारा प्राप्त हुई है । इसमें



दुरिहै हग कोर पो भेख फहूँ मिंगरा मत्र फेरि बहाइहै जू ;  
सिंगरी यह रावरी ज्ञान-क्या कहि कौन को पो समुझाइहै जू ।

नाम—( २१४० ) गिरिधर ।

कविता-काल—स० १६२५ के लगभग ।

ग्रंथ—( १ ) प्रताप-मशेंद्र-चंद्रिका, ( २ ) शिवमागर, ( ३ ) गोपाल सागर, ( ४ ) मखिरन माला ( संस्कृत-ग्रंथ का हिंदी में छदोक्कद भाषांतर ) ।

विवरण—आप गुजरात के अतर्गत बीजापुर ग्राम के निवासी थे । आप कवि ज्येष्ठालाल के सहाय्यायी तथा सहकवि थे । दोनो में ज्येष्ठालाल की कविता करने में विशेष प्रख्यात हुए । उपर्युक्त ग्रंथ दोनो कवियों की मिलकर बनाई हुई रचनाएँ हैं । आप दोनो महाशयों का गुजरात के राजवाड़ों में अच्छा सम्मान था ।

नाम—( २१५० ) राजेंद्रसिंह व्यवहार ।

ग्रंथ—( १ ) तुलसी का भक्ति-मार्ग, ( २ ) तुलसी पाव्य-कलाधर, ( ३ ) तुलसीदास और कालिदास, ( ४ ) बशीरुल्लाह, ( ५ ) ग्राम सुधार, ( ६ ) आदर्श ग्राम, ( ७ ) पुनर्विवाह, ( ८ ) सत्य विनय, ( ९ ) गीता की गाथा, ( १० ) शांति निकेतन अथवा शिव भारती का सप्राम-स्थल, ( ११ ) ईसा का उपदेश, ( १२ ) महा कवि कालिदास ।

जन्म-काल—स० १६०० ।

विवरण—आप जबलपुर के प्रसिद्ध रहस्य व्यवहार रघुवीरसिंह के पुत्र हैं ।

नाम—( २२१६ ) रघुनाथप्रसाद उपाध्याय, जौनपुर ।

ग्रंथ—निर्णय-भरती ।

जन्म-काल—स० १६०१ ।

विवरण—साधारण थेकी ।

मृत्यु-काल—सं० १६७२ ।

ग्रन्थ—( १ ) ज्ञान विनोद ( ज्ञान-वाटिका ), ( २ ) नाटक,  
प्रहसन आदि ।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण ब्रह्मज्ञ के मिश्र थे । कदा  
जाता है, आप अध्यापक साहसी पुरुष थे । आपने १८ वर्ष  
की अवस्था में लार्डी से एक गेर मारा था । आप ग्वाड़ी बोलो में  
भी कविता करते थे, किन्तु कविता के योग्य आप प्रजभाषा को ही  
मानते थे । प० शिवरत्न मिश्रजी, भागलपुर का कथा है कि इन कवि  
महाशय ने अपनी मारी कविता त्रिवारी रामचामी भगलू त्रिवारी  
के गाम पर की है, और आपने इसी कविता-संग्रह का गाम 'भगलू  
वृत्त ज्ञान विनोद' रखा है । उक्त ग्रन्थ हमें मिश्रजी से प्राप्त हुआ  
है, और उसकी भूमिका में यह लिखा हुआ है—

“एक दिन भगलू त्रिवारी, टिकारी राम के जो थोड़ी कविता  
जानते थे, हमारे संगी हुए । जो वही कविन्व बनाने की श्रद्धा हमारे  
चित्त में उत्पन्न हुई । उन्हा के नाम से काव्य रची गई ।”

उदाहरण—

काया बीच में जाकर बैठा दसत मरुल तमासा है ;  
देखो वह है अथवा खिलाड़ी समझें न नहिं आता है ।  
पक्ष बयारि लगे मा दोने तिहूँ लोकर भरमाता है ;  
जहँ जहँ मनुष्या खेल करत है, तहँ तहँ खेल खिलाता है ।  
चित्त माया दौड नाच नचावत कुन् परिवार बनाता है ,  
ग्रसे रहत चहुँ और से मन को ता त्रिच आप न आता है ।  
है वह सदा सवन तें न्यारा छाया कर दरसाता है ;  
मन स्थिर करके देखहु 'भगलू' आपै आप लखाता है ।

नाम—( २३७४ ) मोहनलाल चतुर्वेदी, मैनपुरी ।

जन्म-काल—सं० १६०८ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—( २१३५ ) अङ्कूलाल वैद्य ( ब्राह्मण सनाढ्य ),  
ललितपुर ( झाँसी ) ।

जन्म-काल—स० १९०८ ।

कविता-काल—स० १९३० ।

विवरण—दीवान विजयप्रहादुरमिह ननौरा के स० १९६१ वि०  
से १९८२ वि० तक मुफ्तार रहे । अब अवकाश ग्रहण कर ललितपुर  
में रहते हैं ।

ग्रंथ—पारजात रामायण ।

उदाहरण—

तोटक

निगमागम शारद शेष सदा ,  
निर अतर भाष स्वयंभु मुदा ।

गनराज उबारनहार प्रभो ,  
दुर माह विदारन राम नमो ।

स्वर भी स्वर भू स्वर पाल हरी ,  
जन जान सुदामह धान करी ।

भृगुराम धनत अनंत गती ,  
जय दानदयाल अपार मती ।

मल रूप निरूप अनूप तनं ,  
अति अद्भुत काति सुर्याम धन ।

कह राममुकुंद गुर्विद प्रण ,  
इम यदि सुरेश गण भवन ।

नाम—( २३५४ ) धनधारीलाल मिश्र, लालूचक, भागलपुर ।

जन्म-काल—स० १९०२ ।

रचना-काल—अनुमानत स० १९३० ।

मृत्यु-काल—सं० १९७२ ।

ग्रंथ—( १ ) ज्ञान विनोद ( ज्ञान-वाटिका ), ( २ ) नाटक,  
प्रहसन आदि ।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुञ्जोज के मिश्र थे । कहा जाता है, आप असाधारण साहसी पुरुष थे । आपने १८ वर्ष की अवस्था में लाठी से एक शेर मारा था । आप पढ़ी बोली में भी कविता करते थे, किंतु कविता के योग्य आप व्रजभाषा को ही मानते थे । प० शिवरत्न मिश्रजी, भागलपुर का कथन है कि इन कवि महाशय ने अपनी सारी कविता टिकारी ग्रामवासी भगलू तिवारी के नाम पर की है, और आपने इसी कविता-संग्रह का नाम 'भगलू व्रत ज्ञान विनोद' रखा है । उक्त ग्रंथ हमें मिश्रजी से प्राप्त हुआ है, और उसकी भूमिका में यह लिखा हुआ है—

“एक विप्र भगलू तिवारी, टिकारी ग्राम के जो थोड़ी कविता जानते थे, हमारे सगी हुए । जो वही कवित्व बनाने की श्रद्धा हमारे चित्त में उत्पन्न किए । उन्हा के नाम से काव्य रची गई ।”

उदाहरण—

काया बीच में जाकर बैठा देखत सरल तमासा है,  
देखो वह है अन्व खिलाही समझे में नहीं आता है ।  
पच बयारि लगे मन दोले तिहूँ लोक भरमाता है,  
जहँ-जहँ मनुष्य खेल करत है, तहँ तहँ खेल खिलाता है ।  
चित्त माया दोउ नाच नचावत कुल परिवार बनाता है,  
ग्रसे रहत चहुँ ओर से मन को ता बिच प्राप न आता है ।  
हे वह सदा सबन तें न्यारा छाया कर दरसाता है ;  
मन स्थिर करके देखहु 'भगलू आपै आप लखाता है ।

नाम—( २६७४ ) मोहनलाल चतुर्वेदी, मैनपुरी ।

जन्म-काल—सं० १९०८ ।



कविता-काल—स० १६३० के लगभग ।

मृत्यु-काल स० १६६४ ।

ग्रंथ—मनुस्मृति का हिंदी पद्यानुवाद ।

विवरण—यह माधुर चतुर्वेदी ब्राह्मण पंडित यमुनादासजी के पुत्र थे । आपका ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित है । पंडित उमरावसिंह-पांडेय, भगी चतुर्वेदी पुस्तकालय, मैनपुरी का कथन है कि इनके चशम श्रीयुक्त लक्ष्मीनिधिजी द्वारा उनको यह ग्रंथ देखने को मिला है ।

नाम—(२१५५) रामप्रतापसिंहजी, मैनपुरी नरेश ।

जन्म-काल—स० १६०६ ।

कविता-काल—स० १६३० ।

मृत्यु-काल—स० १६६३ ।

ग्रंथ—राग-तंत्र्य दपण ।

विवरण—आप वतमान मैनपुरी नरेश के पिता थे । यह बड़े गुणग्राही तथा हिंदा प्रेमी थे । प्रसिद्ध गायनाचार्य मुझालालजी और पंडित काशीनाथजी आपके दरबारियों में से थे । ग्रंथ में भिन्न भिन्न राग-रागिनियों संगृहीत हैं ।

नाम—(२२५६) माधवसिंह ( कविराघ ), कृष्णागढ़ ।

जन्म काल—स० १६०६ ।

रचना-काल—स० १६३१ ।

ग्रंथ—लक्ष्मणप्रकाश तथा स्फुट छंद ।

विवरण—कविराघ बख्तावरसिंह के पुत्र तथा उर्दू के शिष्य थे । इनका राजदरबारों में मान था ।

उदाहरण—

घानन भयक्वारी गुन हरि अकवारी,

भौहें धनु बकवारी, मौहें उर-शालिका,

आनंद करनवारी, चित्त को हरनवारी,  
 शोभा को करनवारी, धारी मनि-मालिका ।  
 'माधव' बखानै, घर चमृत वयनवारी,  
 नररज नयनवारी गज-मद चालिका ;  
 भृकुटी त्रिशूलवारी, प्रीति मन पालवारी,  
 आनी है गुपाललाल पेमी प्रज्जवालिजा ।

नाम—( २०६८ ) रामरूपदास, ग्राम चनौथ  
 ( मगध देश ) ।

मृत्यु-काल—स० १६३१ ।

ग्रन्थ—गोपाल-सागर ( भक्तनावली ) ।

विवरण—आप राधावल्लभीय वैष्णव-सम्प्रदाय के थे । इनका  
 देहात ८२ वर्ष की अवस्था में हुआ ।

नाम—( २०६९ ) मन्नू कवि ब्रह्मभट्ट, मऊंसी ।

अनुमानत जन्म-काल—स० १६१० ।

कविता-काल—स० १६३० ।

ग्रन्थ—आप कई ग्रन्थ के रचयिता कह जाते हैं । किन्तु वे अब तक  
 अप्राप्त ही हैं ।

उदाहरण—

एक पाद अथ त्रिपाद की त्रिभूति सब,  
 श्रीमुख सहस्र पाद, अधज अरत जात,  
 श्रीपति स्वयम् शंभू अयु तप तेज सबै,  
 'मखू करि' नजर निद्रावरें करत जात ।  
 यत्र यत्र धरत पदारविद रामचन्द्र,  
 तत्र तत्र भूरि भूमि भाव सों भरत जात,  
 देवी देव वृन्द के, इन्द्रन उपेंद्रन के,  
 मुकुट महेंद्रन के पाँचरे परत जात ।

नाम—( १२३० ) गुरुनाथदास पांडेय, इटावा ।

जन्म-काल—स० १६०० ।

मृत्यु-काल—सं० १६८० ।

विवरण—भाषादित ( Advice to Young Woman-  
गाम्भी श्रीगोस्वामी पुस्तक का अनुवाद )

विवरण—यह इटावा के सुप्रसिद्ध पंडित जगन्नाथदासजी के सुपुत्र थे । आप संस्कृत, हिंदी तथा श्रीगोस्वामी के अष्ट विज्ञान थे । कोटा राज्य की दीवानी के पद पर रहने लगभग २० वर्ष तक यहाँ योग्यता-पूरा कर लिया और गजदम न रहें समयहादुर दीवान महादुर, सी० एम्० आर्० आदि उपाधियाँ प्रदान पर सम्मानित किया । हम समय आपके पुत्र पंडित विश्वभरनाथ एम्० ए० आपके दीवानी के पद की सुशोभित कर रहे हैं ।

नाम—( १२३१ ) रामश्रीयोन सोनार, टिकैतगढ़, लखनऊ ।

जन्म-काल—स० १६०० ।

कविता-काल—स० १६३२ ।

मृत्यु-काल—स० १६७० ।

विवरण—राजा ताल साधारणिक नमोडीगाले के यहाँ हुनकर मान था । प्राचीन प्रथा की रचना की है, जो साधारण धोषी की है ।

ग्रंथ—राधाकृष्ण-नक्ष शिखर, अलंकार-चंद्रिका ।

नाम—( १२३२ ) शिवप्रसाद शर्मा द्विवेदी, सरयूपारीण  
ब्राह्मण, गाहगा, रियासत बि नावर ।

ग्रंथ—राम-सोपान, स्फुट कविता व लेख ।

जन्म-काल—स० १६०८ ।

नाम—( १२३३ ) देवीराम ( द्विज वैनी ) ।

जन्म-काल—स० १८६२ ।

रचना-काल—स० १६३२ ( निधन-काल स० १६७१ ) ।

प्रथ—समस्या-पूर्तियों के बहुमध्यक छंद ।

विवरण—लग्नज निवासी बान्धुवन ब्राह्मण, वाचिदश्वली शाह के पुश्तैनी कवि थे । स० १६१४ के शहर में इनके ६ भाइ मारे गए । पश्चात् यह देशाटन करते करते काशी था, थीजयशंकरप्रसाद के याया के मुनीम हो, वहाँ स्थायी हो गए । फारसी के भी ज्ञाता थे । काशी-कवि मंडल की बहुसख्यक समस्या-पूर्तियाँ किया करते थे । हिंदी-शब्द सागर के संपादन विभाग में कुछ दिन तक रहे । इनके शिष्य प० छद्मलाल पाठक को कुछ इनके छंद मिले थे, वे ही रह गए हैं । आप तोपनिधि के शिष्य एवं उन्हीं की कोटि के सुरवि थे ।

उदाहरण—

सीताराम लग्नज मिलोकि ग्राम नारी नर  
 मोहित है ठाढ़े सबै णकटन लाय कै,  
 तिन में सयानी नारी अरज गुजारी आनि  
 चनक दुलारी आगे सीसन नवाय के,  
 काकी ही पियारी दोऊ राहस वसन में  
 'बेनी द्विज दीनिए दया सा समुझाय कै,  
 लाजन लजाय अकुलाय तबै सैनन सो  
 दीन्हों हे लप्याय राम मुरि मुसुनाय कै ।  
 लोल लोल कलित अपोलन पै वारौ चंद्र  
 मोतिन की माला वारौ दत फलकन पै,  
 'बेनी द्विज' खजन चकोर वारौ नैनन पै  
 नेजन की नोकें वारि डारौ पलकन पै ;  
 अधर ललाई पै ललाई वारौ मानिक की  
 वारौ मन धन हूँ बुलारु हलजन पै,  
 गोलन के गोल वारि डारौ नाग छौनन के  
 विहारी की अमोल अलकन पै ।

चपक बरन मन हरन मुनीसन के  
 जुरी धानि धानन पै दुति है निगत की,  
 'बेनी द्विज' कुसुम कली-सी खिली राजै घर  
 धग अरुनाइ छाड़ हिय हुलमत की,  
 धीपल अनार-से अमोल कुच साहँ गोल  
 नैनन लही ह कज छवि बिलसत की,  
 चाहिष बिहारी लाजै नैनन निहारी  
 वृषभान की दुलारी फुलवारी हे बसत की ।  
 मान भरे सुदर सुजात धान सान भरे  
 सोभा के निधात सान सुधर आगली के,  
 तेज भरे तरन तरगी अगी दामन क  
 दुष्टन सँघारिये को मारिन्द दुनाली के,  
 रोव भरे राजत महान अोज मौज भरे  
 बेनी द्विज' कमल कुलीन कज शर्ली के,  
 अमित सुशाली भरे आली पोति जाली भरे  
 लाली भरे ललित ललाम नैन काली के ।  
 जैसी प्रीति स्वाती सा परीहा के ठनी है जीव,  
 वैसे ही हमारी प्रीति पीउ सों ठनी रहै ।  
 जैसी चाह चद की चमोर के चुभी है चित्त,  
 ताहू सों दुचद मेरी धारजू धनी रहै ।  
 बार-बार गौरी सों यिनै के यह मांगति हौं,  
 'बेनी द्विज' दीटि म धरोइ माँ धनी रहै,  
 चाहँ जीन बाल के परे यो प्रेम जाल तऊ,  
 लाल दर लागिय की लालसा बनी रहै ।  
 नाम—( १३६३ ) बहादुरसिंह, योगासर, रियासत बीकानेर  
 नाम-बाल—म० १६११ ।

ग्रन्थ—अश्विन-जाति की सूची ।

मृत्यु-काल—स० १६७२ ।

विवरण—आप ठाकुर शिवनाथसिंहजी, जागीरदार बीदासर एवं प्रथम श्रेणी के तालीमी सरदार के पुत्र थे । इन्होंने रियामती कांसिल के मेंबर रहकर अच्छे अच्छे सव्यानित्र काम किये थे । हिंदी-भाषा के यह महाशय अच्छे विद्वान् थे । अपने ग्रन्थ में आपने राजपूताने के ३६ वंश का विस्तार-पूर्वक वर्णन दिया है । यह ग्रन्थ आपके पौत्र ठाकुर हीरारसिंहजी ने छपवाया है, और अब उसके तीन संस्करण निकल चुके हैं । ( ठाकुर चतुरसिंह, राष्ट्रवर, बीकानेर, द्वारा ज्ञात ) ।

नाम—( २३६४ ) हरिहरप्रसादसिंह, ( महाराजकुमार ) दलीपपुर, ( शाहानाद ) ।

जन्म-काल—स० १६११ ।

रचना-काल—स० १६३६ के लगभग ।

मृत्यु-काल—स० १६४६ ।

ग्रन्थ—( १ ) हरिहर गतर, ( २ ) अस्फुटावली, ( ३ ) पद्-पदावली, ( ४ ) अस्मरणी, ( ५ ) सिम्ब-नर घणन ( अग्रप्राप्य ) ।

विवरण—आप श्रीमहाराजकुमार बाबू भुवनेश्वरप्रसादसिंहजी के पुत्र तथा श्रीमहाराजकुमार बाबू नमदेश्वरप्रसादसिंहजी के भतीजे थे । आपने संस्कृत, फारसी तथा हिंदी में ज्ञान प्राप्त किया था । कायालवार आदि विषयों के भी आप ज्ञाता थे । इनका 'गिर नर-घणन' नामक ग्रन्थ प्रायः अग्रप्राप्य है । कतिपय छंद इस ग्रन्थ के मिले हैं, ऐसा कहा जाता है ।

उदाहरण—

अरुनारे कज पै सुमन करिहारी तापै

इटीवर कजन पै राचत अमरान,

नील मणि-न्यस तापै बेहरि की कटि  
 तापै जमुना तरंग और रुचि अनि मोह मन ।  
 मरकत पत्र पै यसीरन मत्र तापै  
 संप से निरारि कै निराजै नाग पंचफन ।  
 तापै अथ विष तापै शुक चुग गर तापै  
 धनु पेम सर तापै अध मसि तापै घन ।

नाम—( २५७५ ) लक्ष्मीलाल मिश्र बी० ए०, बकील,  
 मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० १९१२ ।

मृत्यु काल—स० १९७० ।

प्रथ—स्फुट कविता ।

विवरण—आप मैनपुरी निवासी माधुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे ।  
 आप अपने जिले के प्रसिद्ध बकील थे । बकाजत करने के पहले कुछ  
 काल पर्यंत यह सेंट जॉन्स कॉलेज आगरा में गणित के प्रोफेसर  
 ( अध्यापक ) थे । प० उमरावसिंहजी पाटय मंत्री चतुर्वेद  
 पुस्तकालय, मैनपुरी का कथन है कि उन्हें इनके कविता करने के  
 विषय में इनके पुत्र प० मजनाथजी बी० ए० द्वारा मालूम हुआ  
 है, और नीचे दिष्ट हुए दोहे भी प० मजनाथजी से ही उन्हें प्राप्त  
 हुए हैं ।

उदाहरण—

छर्बी कृष्ण दपण निरन्वि राधा भई अधीर ,  
 कठिन मान अरु मोह की गही मूँदि रग पीर ।  
 मोह गयो मिलनो गयो, यों कहि चले मुरारि ,  
 राधे हिण्ड उराइनो लग्यो धबुक अनुहारि ।  
 सहमी-सी सो रहि गई, बँधी प्रेम-रस डोरि ,  
 कहुँ ठनगन कहुँ रसिबो, कहुँ मूलता मरोरि ।

नाम—( १५११ ) जीवारामजी धौये ।

ग्रंथ—सभा विलाम ( नरलक्षिणोर प्रेस, लग्नाठ से मुद्रित ) ।

नाम—( ) जोधराम अजरामर गौर, मुजनगर  
( कच्छ देश ) ।

जन्म-काल—स० १६१३ ।

मृत्यु-काल—स० १६७३ ।

विवरण—आप कच्छ मशाराजा के पुरोहित होने से 'गौर' कहलाते थे । आप द्विंदी तथा गुजराती दोनों भाषाओं में कविता किया करते थे । 'सरस्वती शृंगार'-नामक मासिक पत्रिका भी आपने निकाली थी ।

नाम—( १५११ ) तिलकसिंह ठाकुर, गागपुर, जिला  
सोतापुर ।

ग्रंथ—( १ ) बेर्यासागर, ( २ ) कृष्णखंड ।

जन्म-काल—स० १६१३ ।

नाम—( १५११ ) हाजीअलाखॉ, 'अलि', जिला दमोह ।

जन्म-काल—स० १६१३ ।

कविता-काल—स० १६३८ के लगभग ।

मृत्यु काल—स० १६७८ ।

ग्रंथ—( १ ) वेदपरोपकारक, ( २ ) गलदलगजन, ( ३ ) हानी श्यात-माला ( २०० मत्तगयद व सवैत ), ( ४ ) अजाम-बदी ( नाटक ), ( ५ ) मोरभज-चरित्र, ( ६ ) इद्र-सभा का इयाल, ( ७ ) गौ अष्टक, ( ८ ) शराब की ऐसी-तैसी ।

विवरण—आप हैदराबाई जौहरी के पुत्र थे, और आपका जन्म बहमील हटा में हुआ था । व्यापार के हेतु आप जिला दमोह में



रहने लगे थे। यह उर्दू, हिंदी तथा संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। ऊपर दिए हुए आठ प्रकाशित ग्रंथों के अतिरिक्त इन्होंने लावनी, ग्याल हृष्यादि हजारों की संख्या में कविताएँ लिखी हैं। इनकी रचनाओं के मुख्य विषय देशोपकार, समान सुधार आदि रहा करते थे। नीति तथा शिक्षाप्रद बातों का ही आपके काव्य में विशेषतया उल्लेख है। ब्रजभाषा से आपको विशेष प्रेम था, और इसी भाषा में आपकी रचनाएँ हैं। यह महाशय एक अच्छे कवि होने के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैद्य भी थे। इस समय आपके पुत्र करीमलालजी जिला दमोह में रहते हैं। [ महाशय लक्ष्मीप्रसादजी मिश्री, हटा (दमोह) से ज्ञात ]।

उदाहरण—

दाता नहीं रक होत दान के णि तैं करी,  
 कूर ना घृष होत गग के नहाण तैं,  
 अन्न के गह तैं कूर शूर नहीं होय जात,  
 यगुल्ल ना हस होत मोती के खुगाण तैं।  
 पोथी पाय मूर्ख जन पढित हूँ जात नदा,  
 तपी नहीं होत भक्त भग के रमाण तैं,  
 रून पिणँ स्यार नहीं सिद्ध होत राजाधली,  
 तीसुर के जाए धान होत न सिपाए तैं।

नाम—( २५३६ ) कालिकाप्रसाद चौबे, कटनी।

जन्म-काल—स० १९१३।

कविता-काल—स० १९४०।

मृत्यु-काल—स० १९६२।

ग्रंथ—( १ ) राम चरित, ( २ ) पुलिस-पेक्ट, ( ३ ) स्फुट रचनाएँ

विवरण—आपका नाम उन्नाव जिले के धीघापुर ग्राम में हुआ था। आपके पिता पं० धनसुन्दरामजी चौबे त्रिदिश-संता में सुबेदार

के पद पर ये और सन् १८२०वाले विद्रोह के समय अच्छा काम करने के उपलक्ष में ब्रिटिश सरकार ने इन्हें पदक आदि प्रदान करके सम्मानित किया था। आप तीन भाई थे। आपके ज्येष्ठ भ्राता राय-यहादुर पं० बालाप्रसादजी चौबे डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट पुलिस के पद पर थे, तथा मँकले भाई पं० मानिकप्रसादजी चौबे इंदौर में प्रधान जेलर थे। चौबेजी स्वयं पुलिस इन्स्पेक्टर तथा घानरेरी मैजिस्ट्रेट थे। [ पं० मातादीन शुक्ल, अध्यापक ग्युगिसिपल हाइस्कूल, कटनी के द्वारा ज्ञात ]।

नाम—( १५३६ ) काशीनाथजी मिश्र, मैनपुरी।

ग्रन्थ—( १ ) स्फुट कविता, ( २ ) लघु पाराररी की छंदोबद्ध भाषा-टीका।

रचना-काल—स० १६४० के लगभग।

विवरण—आप माधुर चतुवदी ब्राह्मण थे। यह सर्गाय मैनपुरी नरेश श्रीरामप्रतापसिंहजी के दरबारियों में से थे। महाराजा भरतपुर तथा काजरोली भी आपके आश्रयदाता थे। भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्रजी से इनकी घनिष्ठ मित्रता थी। यह ज्योतिष, वैद्यक तथा संगीत के अच्छे पंडित थे। भारतेंदुजी ने जो राग-रागिनियाँ रचीं, उनके स्वर-कार आप ही थे। [ पं० उमरावसिंहजी पाडेय, मंत्री चतुर्वेद पुस्तकालय, मैनपुरी के द्वारा ज्ञात ]।

नाम—( १५४० ) गरीबदास गोस्वामी ( सनाढ्य ब्राह्मण ), दतिया।

जन्म-काल—स० १६१०।

कविता-काल—स० १६४०।

विवरण—स्व० महाराज भवानीसिंह दतिया नरेश के मंत्री ( दीवान ) थे।

उदाहरण—

कियो जो अराम पै लियो न राम-राम नाम,  
 होय बस धाम के निवाम कामताई है,  
 जो पै ग्राम धाम में विताण बहु याम धा  
 श्याम देव धाम भवतापन नराई है ।  
 प्रेम नाम धाम मन होय विश्राम धाम,  
 रसिक अनाम होत सत मनभाई है ;  
 कामना मनाई तो पै काम ना मनाई जो पै,  
 कामना मनाई तो पै काम ना मनाई है ।

नाम—( २५५६ ) जयगोविन्द, ग्राम बहोरा, जिला पूर्णिया  
 ( बिहार प्रात ) ।

जन्म-काल—स० १६१० के लगभग ।

रचना-काल—स० १६४० ।

मृत्यु-काल—स० १६७० ।

ग्रन्थ—( १ ) अलवार आझर, ( २ ) कविता-श्रीमुदी ( अमुद्रिन ) ।

विवरण—श्राप श्रीरामभस्मादजी के पुत्र थे । नाति के ब्रह्म  
 भट्ट थे । कविता प्राय बचपन ही से किया करते थे । यह  
 महाशय पूर्णिया जिलातगत धीनगर राय के अधिकारी श्रीकुंवर  
 कालिकानर्दतिहारी के आश्रित कवि थे । [ श्रीरामगोविन्दसिंह वमा  
 मदारीचक ( विशर ) के द्वारा ज्ञात ] ।

उदाहरण—

चबनों सुपथ परमारथ में रत मन,  
 पान गगा-तोय अरु तिनमें नहावनो,  
 रूप-राशि राधा रूप्यपद में अचल भक्ति,  
 घदन सुगध उचि अग में लगावनो ।

भोजन सुधय, घृत, गोरम के दूध मारि,  
 कविता के आनंद म समय चिताबनो ;  
 रहनो निरोग तैगोविंद सतसगति म,  
 पते देहि वात पुनि घोर नारि चावो ।

नाम—( १५७ ) नोरगोलाल चौधरी 'नददास', फटलगाँव,  
 जिला भागलपुर ( मिठार ) ।

जन्म-काल—सं० १६२० ।

रचना-काल—सं० १६४० के लगभग ।

मृत्यु-काल—सं० १६०६ ।

ग्रन्थ—( १ ) नगक्षेत्र, ( २ ) उद-सागर, ( ३ ) श्रीहरिनामाष्टकम् ।

विवरण—आप कान्यकुब्ज प्राक्ष्यण प० गदाधरनाथ चौधरी के पुत्र थे । [ श्रीयुत श्रीनाथ चौधरी, सगरामपुर ( भागलपुर ) द्वारा ज्ञात ] ।

नाम—( १५९ ) रामनाथ रत्नुचारण, नेतवाचारण राज्य जयपुर ।

ग्रन्थ—राजस्थान का इतिहास ।

मृत्यु-काल—सं० १६६२ के लगभग ।

विवरण—यह सागर निवासी तैजमलजी रत्नुचारण के पुत्र थे । इन्होंने जयपुर, जोधपुर तथा किशुनगढ़ राज्यों में ऊँचे-ऊँचे पदा पर रहकर सहायिक काम किए हैं । यह महाशय अँगरेज़ी तथा हिंदी के अच्छे ज्ञाता थे । आपका 'राजस्थान का इतिहास' एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है । [ डाक्टर चतुरमिह राष्ट्रर, बीकानेर द्वारा ज्ञात ] ।

नाम—( १६० ) लाल कवि, दतिया ।

जन्म-काल—अनुमानत सं० १६१० ।

कविता-काल—सं० १६४० ।

विवरण—जाति के धीवर थे ।

उदाहरण—

तेरे ही वियोग रयामताईं मन छाव रही,  
 भयो है मखीन कहुँ नेक हू सुगोरो ना,  
 कीनी आप प्रीत अवे साइ तो दिखात पीत,  
 पूरी फुलवारी पै सनेह कहुँ जोरो ना ।  
 'खाल कवि' सुजन सातन की रीत पही,  
 करके सनेह सील फेर कहुँ तोरो ना ।  
 पावत पराग गुन गावत मुशारो देख,  
 आवत मलिद अरविद मुज मोरो ना ।

नाम—( २५८८ ) बचऊ चौने ( रसीले ), काशी ।

ग्रन्थ—ऊधो उपदेश ।

कविता-काल—सं० ११४१ के पूव ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—( २५८८ ) कालीप्रसाद भट्ट, उरई ।

ग्रन्थ—रसिक-विनोद, द्वि० अं० रि० ।

विवरण—सं० ११६६ में मृत्यु हुई । पिता का नाम छविन  
 भट्ट था ।

नाम—( २५६२ ) जीवाभक्त भावनगर, काठियावाड़ ।

ग्रन्थ-काल—सं० १११६ ।

ग्रन्थ—फुट कविताएँ ।

विवरण—आप गोहिल राजपूत काका भाई के पुत्र थे । भावन  
 के महाराज श्रीप्रयवतसिंहजी की रानी श्रीअमजीया साह्या के आ  
 में कुछ काल पर्यंत यह महाशय थे । उक्त रानी साह्या के स्वगत  
 होने पर यह परमहंस बनकर नमदा-सद के प्रदेश में रहने लगे,  
 इसी स्थिति में कविता करने लगे । कविता में प्रथम यह अपना नाम  
 'जीवा' रखते थे, और परचात 'जीवनराम' रखने लगे ।

निलासपुर ।

ग्रंथ—( १ ) प्रबोध-चन्द्रिका-कण्ठ का हिन्दी-अनुवाद, ( २ )  
शबरीनारायण-भाहाम्य, ( ३ ) रामायण-विशेष-कण्ठ ।

विवरण—एही बोली की कविता ।

मृत्यु-काल—स० १९२२ ।

नाम—(  $\frac{२४६३}{६३}$  ) राममनारर सिंह, ग्राम मौला बगरीमपुर,

जिला रायवरेली ।

जन्म-काल—स० १९२१ ।

रचना काल—स० १९४१ क काल ।

ग्रंथ—( १ ) स्फुट कविता, ( २ ) कालमद-रूत मन्त्र

चादवरी का पद्यानुवाद ( धार ) ।

विवरण—आपके पूर्व में कविता-संग्रह आया है जो  
जिला रायवरेली के रहनेवाले थे । आपका जन्म है, इसके निम्न

काल में रोजगार करने थे, और एक-दो-तीनों में कार्य

गण । आप प० रामाधारनी निम्न काल में हुए थे । इन्होंने

में, प० अयिकादत्तजी ध्यास की अभिभावकता में रहकर, सरस्वती-साहित्य का अध्ययन करके वहीं से काव्यतीर्थ की उपाधि प्राप्त की। आपका संबंध कलकत्ते के प्रसिद्ध 'जीवानन्द विद्यासागर' प्रेस से, सरस्वती प्रयाग के सशोभक के नाते, बहुत काल पर्यंत रहा। यह संस्कृत के विद्वान् होने के अतिरिक्त हिंदी के भी कवि थे। यदा कदा आपकी रचनाएँ मनोहर अथवा 'मिश्र' उपनाम से अंकित रहा करती थीं। कहा जाता है 'पथिक-दूत'-नामक संस्कृत-काव्य प्रथम इन्होंने रचा, किंतु इनकी यह कृति अथ उपलब्ध नहीं है। हमें यह कवि महाशय प० शिवशंकर धारपेयी, रायपुर के द्वारा प्राप्त हुए हैं। और, उन्हीं के पास इनकी स्फुट कविता का जो संग्रह है, उमा से नीचे दिया हुआ उदाहरण लिया गया है।

उदाहरण—

युगल शिरोर नैनकोर की मरोरम में  
सान मान धारा करै रूप अभिमान की ;  
दपति इशारा धड़े प्रेम से निदारा करै,  
कुज भूमि झारा करै उभय मिलान की ।  
सृगमद, केसर कपूर, केवड़े को नीर,  
वीथिन द्वारा करै रौसै भस्मिकान की ।

नाम—( ३५६५ ) कामताप्रसाद का रस्य, बुदलखडो, चिर-गौर, भोजपुरी ।

ग्रन्थ—( १ ) रामाष्टक, ( २ ) संचित रामारवमेव आदि कुछ पुस्तकें ।

जन्म-काल—स० १६१० ।

विवरण—आप अपनी धुन के इतने पक्के हैं कि देवता संबंधी जो पुस्तकें आपने पहले बनाई थीं, उनको अपनी स्त्री पुत्रादि की मृत्यु पर उन्हीं देवता की दया का अभाव मानकर फूँक दिया ।

नाम—(  $\frac{२४६४}{३}$  ) गोपालजी, सोठारम, पोरबदर ।

जन्म-काल—स० १६१७ ।

मृत्यु-काल—स० १६७२ ।

ग्रन्थ—( १ ) काव्य प्रभाकर ( रुक्मिणी विवाह ), ( २ ) मल्लिद शतक, ( ३ ) रसाल मचरी, ( ४ ) तावात्मघोष, ( ५ ) हम्मीर-सर बावरी, ( ६ ) मखि-लक्ष्मण-बत्तीसी ( बकौदा ), ( ७ ) नारायण सरोवर माहात्म्य, ( ८ ) द्वादशज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्र, ( ९ ) यराहशिकाराष्ट्र, ( १० ) शिवाष्टक, ( ११ ) भुवनेश्वरीदेवी स्तुति, ( १२ ) विंध्यवासिनीदेवी-स्तुति, ( १३ ) खेगार उदवाहनद पायूप ( भुज के राज खेगार के विचार का वणन ) ।

विवरण—इन्होंने कच्छगुप्त नगर में कविताभ्यास किया था । डूंगरपुर में आपका शरारात हुआ ।

नाम—(  $\frac{२४६४}{६}$  ) श्रीवज ( रेवरेंड एडविन ) ।

रचना-काल—सवत् १६४२ के लगभग ।

विवरण—आपका जन्म सवत् १६१७ में, खदन नगर में, हुआ । आप पादरियों के काम पर सवत् १६३८ में पहलेपहल भारत में आकर मिज़ाूर में दस ग्यारह वर्ष रहे । वहाँ आपने हिंदी सीखी । पीछे से आप बहुत काल तक काग़ी में रहे । आपने इसाई-मत की पाँच पुस्तकें हिंदी में लिखीं, और तुलसीदास के जीवन-चरित्र पर एक निबंध भी रचा । आप नागरी प्रचारिणी सभा के एक प्राचीन सहायक और बड़े ही उदारचेता सज्जन हैं । अब आप विलायत चले गए हैं । आपने हिंदी-साहित्य का सचित्र इतिहास अँगरेजी में लिखा है ।

नाम—(  $\frac{२४६४}{६}$  ) मोठालालजी व्यास व्यावर, राजपूताना ।

ग्रन्थ—( १ ) सर्वतोभद्र चक्र, ( २ ) भारत का वायुशास्त्र, ( ३ ) राह साह्य की भूल ।



जन्म काल—स० १९१७ ।

नाम—( २५०१ ) सीतारामजी मिश्र, मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० १९१८ ।

मृत्यु-काल—स० १९८१ ।

ग्रंथ—( १ ) दगल मैनपुरी, ( २ ) गो हुकार-खाड़ीसी ।

विवरण—थाप माधुर चतुर्वेदी प्राज्ञाण थे, श्रीर श्यामसुंदर हार्द-  
स्कूल, चेंदौसी में अन्तिम समय तक हिंदी अध्यापक रहे ।

## उत्तालीसवाँ अध्याय

### दूसरा अज्ञातकालीन प्रकरण

अज्ञात कालवाले कवियों के कथन इकतीसवें अध्याय में हो चुके हैं । विनोद के तीन खंड छप जाने के पीछे बहुत-से अज्ञात कालवाले जो कवि प्राप्त हुए हैं, उनका वर्णन, इस अध्याय में अज्ञातदि क्रम से, किया जाता है ।

नाम—( ३३६१ ) प्रवादत्त, उपनाम सुजान कवि ।

ग्रंथ—सुजान-सरोज ।

विवरण—थाप हल्दी निवामी प्राज्ञाण थे । उक्त ग्रंथ बवल-  
किशोर प्रेस, लखनऊ में छप चुका है ।

नाम—( ३३६२ ) अमृतानन्द स्वामी ।

ग्रंथ—कृष्णामृत ( च० प्रै० रि० ) ।

नाम—( ३३६३ ) अज्ञात ।

ग्रंथ—सौलंकी वशावली ।

विवरण—कान्य अर्णव है । इसमें स्य परीय अचरीय राजा के  
वशज घट दोहरमलपर्याय सोलंक्रिया का वर्णन दिया हुआ है ।

उदाहरण—

सामायो आयो सरण, तव पायो आर्णद ;  
समभायो नृप धक् को, प्रबल धुदायो पंद ।  
दुर्घासा-से प्रबल को दृष्ट आप प्रभु दीन ;  
भरराज शैवरीप-से को महाराज प्रवीन ।

नाम—( ३३३४ ) इ द्रुदेयनारायण शर्मा ।

नाम—( ३३३५ ) ईश्वरीप्रतापनारायण राय ।

प्रथ—हास्य शृंगार ।

विवरण—आप पट्टरीना ग्राम के निवासी थे । आपका वर्णन  
'कवि व चित्रकार' में दिया हुआ है ।

नाम—( ३३३६ ) ऊधव ।

प्रथ—( १ ) शृंगार-सुधाकर, ( २ ) नल शिखर हजारा ;

( ३ ) रत्नमालिनी ( हस्त लिखित ) ।

उदाहरण—

मोहन से विपरीत रती करि कामिनी काम-कृपा सुख पाण ;  
अगन मज्जन बुद विरापत केस सु आहवे आनन छाण ।  
फेरिके हाथ सों बूरो बनावत 'ऊधव' याहि लमे मन भाण ;  
मानहु राहु प्रस्यो सब मडल डै अरविदन आनि धुदाण ।

नाम—( ३३३७ ) रघूचरण ।

प्रथ—स्वरूपमाला ।

विवरण—यह करौली गाँव के चौधरी थे ।

नाम—( ३३३८ ) गणपति ।

काल—अज्ञात ।

प्रथ—छुदात्मक रामायण ।

विवरण—उक्त प्रथ का केवल छरकांड महाराय भाखेरावर्गी  
को ... है ।

नाम—( ३३१६ ) गोप भाट, गुजरात प्रांत ।

ग्रंथ—छाद राग तथा वीण राजा के पुत्रों का वर्णन ।

नाम—( ३४०० ) गोपालनाथ, महाराष्ट्र देश ।

ग्रंथ—शुभ कविता ।

विवरण—आप नाथपर्या साधु तथा आत्माराम के शिष्य थे ।

उदाहरण—

कर विचार मन र । तू क्या करे गुमान ,

टांटा का मित्रान आत्पर जयगा नानान ।

नाम—( ३४०१ ) चतुर ।

ग्रंथ—काव्य कुतूहल ।

विवरण—यह पैलगी गोकुलस्थ भट्ट ब्राह्मण थे ।

नाम—( ३४०२ ) चतुरदास, वाजलवास, जीरपुर राज्य ।

ग्रंथ—चतुर स्माल ( चतुरस्रमय नायक-नायिका भेद पर ग्रंथ ) ।

नाम—( ३४०३ ) चतुरदास महंत, रतलाम ।

ग्रंथ—( १ ) महिमापर्वा, ( २ ) ज्ञानपर्वा, ( ३ )

गोविंदनामपर्वा, ( ४ ) प्रश्नोत्तरपर्वा, ( ५ ) आनंदपर्वा, ( ६ )

गुणमालिका, ( ७ ) गभर्लीला, ( ८ ) धर्मोपश, ( ९ )

अमरकोष ।

विवरण—आप रामानंदी संप्रदाय के ज्ञाता थे ।

नाम—( ३४०४ ) छत्रशाहदेव, महाराजा सिहरौली ।

ग्रंथ—पदरत्नावली ( राग रागिनिया का ग्रंथ ) ।

विवरण—यह सिहरौली के प्राचीन राजाओं में से थे ।

नाम—( ३४०५ ) छेदीदास धावा ।

ग्रंथ—( १ ) सत महिमा, ( २ ) श्वेद-सागर ।

नाम—( ३४०६ ) जनपदित, महाराष्ट्र-देश ।

ग्रंथ—शुभ कविता ।

विवरण—आपके बहुत-से हिंदी पद महाराष्ट्र-देश में कीर्तन करनेवाले प्रायः गाये करते हैं।

नाम—( ३४०७ ) जिनदास।

ग्रंथ—नाममाला।

विवरण—श्रीनन्ददासजी का घनाया हुआ इसी नाम का ग्रंथ प्रसिद्ध है। और जैन धर्मानुयायी समझ पड़ते हैं, क्योंकि आपने ग्रंथ में श्रीच-श्रीच में तीर्थंकरों के नामों का उल्लेख किया है।

नाम—( ३४०८ ) डाल।

ग्रंथ—काय-समूह ( ब्रह्मेश्वर प्रेस, धबई से मुद्रित )।

नाम—( ३४०९ ) तुलसी।

ग्रंथ—( १ ) नयनाभङ्गि, ( २ ) अष्टाग योग ( ३ ) वेदात्त ग्रंथ, ( ४ ) चौधरी ग्रंथ, ( ५ ) करनीसारजोग ग्रंथ, ( ६ ) साधु लक्षण, ( ७ ) तत्त्व गुण भेद।

विवरण—यह राजपूताने में एक साधु हो गए हैं।

नाम—( ३४१० ) दाताप्रसाद कायस्थ, मिर्जापुर।

नाम—( ३४११ ) दुर्गादत्त, धृदावन।

ग्रंथ—आप हिंदी एवं संस्कृत के भारी विद्वान् तथा कवि थे। आप एक घड़ी में १०० श्लोक रचते थे। आपकी 'घटियाशत' उपाधि थी।

नाम—( ३४१२ ) दूधाहाडानी वे आग्रडी, गुजरात प्रांत।

ग्रंथ—दूधाहाडानी त्रैयामरी।

रचना-काल—लगभग १७१७।

विवरण—आप बादशाह अमर के समकालीन थे। ग्रंथ चारण्य-भाषा में, जो डिंगल भाषा कहा जा सकती है, लिखा गया है। ग्रंथ में राजा हाडा दूदल का अम्बर के साथ जो युद्ध हुआ था, उसका वर्णन है।

उदाहरण—

चासद्र माल चहुधाय ;  
 षकाय में धरतावय धाय ।  
 पुरण नद्यत्र तंजम प्रमाय ;  
 केंवर जनमे मुहित कैलाय ।

नाम—( ३४१३ ) नवाय अनवरखों ।

अर्थ—अनवर चद्रिका ( बिहारी-सतगई की टीका ) ।

विवरण—आप सैयद मुस्तफाखी के पुत्र थे ।

नाम—( ३४१४ ) नारायण स्वामी, सरकारी बड़ा मंदिर,  
 रियासत कपूरथला ।

अर्थ—( १ ) रघुनाथ नाटक, ( २ ) श्रीकृष्ण जन्म नाटक, ( ३ )  
 अनुराग-रम, ( ४ ) मज बिहार ।

नाम—( ३४१५ ) निष्कुलानंद स्वामी, गुजरात प्रांत ।

अर्थ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप स्वामी सहजानंदजी के शिष्य थे । इनके विषय  
 में कवि दलपतराम ने यों कहा है—

“मानहु ह वैराग्य कि मुरती ;  
 रखत सदा प्रभु पद में मुरती ।”

नाम—( ३४१६ ) नोहर ( नवहरि ) सिंह ( अनुरूप ),  
 वृदावन ।

अर्थ—( १ ) हनुमानुत्पत्ति, ( २ ) नोहर विनोद, ( ३ ) नोहर  
 विलास, ( ४ ) सतिवानी, ( ५ ) अनुभव ज्ञान ।

नाम—( ३४१७ ) परमश ।

अर्थ—भक्ति-सत्ता ।

विवरण—आप डुमराय निवासी वैश्य थे ।

उदाहरण—

कहाँ जाऊँ कासो निज दीनता कहूँ मैं श्याम,  
 मूँदे लेत नैन कोऊ नेक न निहारो है ।  
 पातक अपार पेपि नरकहु मूँदे नाक,  
 मूँदे जम कान हौं मारो गहि चारो है ।  
 गिनती करी तू 'परमेश' विनती है यहै,  
 दीन नाथ, दीन बधु बिरद तिहारो है,  
 सय है विपद्य कोऊ पच्छ न हमारो गहे,  
 मोर पच्छवारो, तुही मोर पच्छवारो है ।

नाम—( ३४१८ ) पीतावर पंडित ।

ग्रंथ—( १ ) विचार चंद्रोदय, ( २ ) बाल-योध, ( ३ ) पच-  
 दशी की टीका, ( ४ ) अष्ट उपनिषद् की टीका ।

विवरण—आप कच्छ माडवी निवासी सारस्वत ब्राह्मण थे ।  
 सस्कृत के अच्छे विद्वान् थे, और वेदांत विषय पर भाषा में अच्छे-  
 अच्छे ग्रंथ बनाए हैं ।

नाम—( ३४१९ ) बगीराम, ग्राम जासोर, मारवाड़ ।

ग्रंथ—( १ ) जल भूषण, ( २ ) जल रूपक ।

नाम—( ३४२० ) बहिराम ।

ग्रंथ—सुदामा-चरित्र ।

नाम—( ३४२१ ) भवानीदास रामसनेही साधु, जोधपुर ।

ग्रंथ—( १ ) भवानीनामव्याला, ( २ ) भर्तृहरिशतक ( तीन  
 भाषाओं में ), ( ३ ) भद्रमाल ।

नाम—( ३४२२ ) भवानीप्रसाद, उपनाम भगवत ।

ग्रंथ—प्रेमावलि ( प्र० प्रै० रि० )

विवरण—ओरछा निवासी ।

नाम—( ३४२३ ) भारतचंद्र राय ।

विवरण—श्रीयुत गोविंदरामचंद्र चांदेजी का कथन है कि स्वर्गीय श्रीज्ञानमोहन घमाजी ने अपने 'शब्दशास्त्र-नामक खेस में इन्हें एक वगदेशीय हिंदी कवि बतलाया है। घमाजी का यह खेस हमारे देखने में नहीं आया है, किंतु वह 'मासुरी पत्रिका की किसी सख्या में निरख चुका है, जेगा कहा जाता है।

नाम—( ३४२४ ) भौन ।

अर्थ—शक्ति चिंतामणि ( पृष्ठ ३४ ) ।

नाम—( ३४२५ ) मधुमुदन बल्लभ ।

अर्थ—( १ ) सेवा प्रणालिका-प्रदण निर्णय, ( २ ) स्फुट पद ।

विवरण—राधावल्लभीय सध्दाय ।

नाम—( ३४२६ ) मारामनलाल बाजपेयी 'राघव', ग्राम पाली, जिला हरदोई ।

एविता-काल—अज्ञात ।

अर्थ—( १ ) सुदामा चरित्र ( २ ) वामन-चरित्र, ( ३ ) विद्या विलास, ( ४ ) पक्षी विलास ।

विवरण—संभवतः यह महाशय कवि हरिनाथजी के समकालीन थे । [ प० रामाज्ञा दिवंगी के द्वारा ज्ञात ] ।

उदाहरण—

देत किलकाह देह दिग्गजन दा" सीता,  
 साक की दवा है करें खाई भक्ति अग की ;  
 साखदा सराई मिल बल की न था, देव,  
 हम वी लता हैं सुपना-सी साधु सग की ।  
 'राग्य सुकवि कटे हिये सों गिगरो बेगि,  
 मेरे मन खाई खोप खाई रन रग की ;

गिरिन को उाँहे, साती निषु खवगने, लगे ।

धरिन को भाँहे बस भाँहे बभरग का ।

नाम—( ३४२७ ) मनिराम ।

प्रथ—( १ ) गोप-पवार्मा, ( २ ) लनरन्ध र्ण, ( ३ )  
वल्लभद-कृत 'नख शिख' की टीका ।

नाम—( ३४२८ ) महावीरदाम ।

प्रथ—छद-रामायण ।

नाम—( ३४२९ ) महासिंधु ।

प्रथ—छद-शृ गार ( दिगल-प्रथ ) ।

विवरण—आप मारपाइ के निवामा से ।

नाम—( ३४३० ) महिरामनडी हर्ष कानर, राइहोटे,  
काठियावाड ।

प्रथ—प्रवीण-सागर ।

विवरण—आपके उन्न शृत्र मने का काव्य है । आपका  
शरीर पात हो जाने पर हम प्रथ का कृपु रूप में  
ने सजाकर पला किया ।



पानि के जलु कड़ाँ पहिचानत धीपम के तप की गरदी की,  
 केसरि की करिह रहँ किमत हे न परीन्व जहाँ हरदी की।  
 कायर को न कछु परिहै कल सूरन को सुधि है मरदी का,  
 बेदरदी न प्रवीण चहे कछु जानहिगो दरदी दरदी की।

नाम—( ३४३१ ) मन्त्र ( मन्त्रराम ), जोधपुर।

ग्रन्थ—रघुनाथ रूपक विंगल ( भारवाही भाषा में )।

नाम—( ३४३२ ) माधवसिंह रागा आगता।

ग्रन्थ—रम विलास।

नाम—( ३४३३ ) मानिकुटास।

ग्रन्थ—( १ ) सतोप-सुरतरु, ( २ ) सत्सग प्रभाव, ( ३ )  
 राम-रमायन, ( ४ ) कवित्त ग्रन्थ, ( ५ ) आत्म विचार।

विवरण—आप अहमदाबाद के पाटीदार थे। आप एक अष्टम  
 विद्वान् थे। कहा जाता है, कारण-वशात् आपने वैराग्य धारण  
 कर लिया था, और साधु होकर उज्जैन में जा बसे।

नाम—( ३४३४ ) मोरा संयद ताइर।

ग्रन्थ—गुन-सार।

नाम—( ३४३५ ) मूदजो।

ग्रन्थ—कविप्रिया की टीका।

विवरण—राजापूताने के चारण।

नाम—( ३४३६ ) मूलचंद ज्ञानी।

ग्रन्थ—( १ ) पदार्थ-भ्रजूषा, ( २ ) तत्त्वानुसंधान।

विवरण—आप वैद्य थे।

नाम—( ३४३७ ) मोहनदास महत, गोरखपुर।

ग्रन्थ—बृहत् सनातन धर्म-सार ( पृष्ठ ३३८ गद्य द्वि० त्रै० रि० )।

नाम—( ३४३८ ) मौड़जी, मलिया गाँव के ठाहुर साहब ।

अथ—पोस्त पचीमी ।

विवरण—आप यदुवशा थे । उक्त अथ अरुमचियों के लिये रचा गया है ।

उदाहरण—

जे ही दुखदारी या मानते हो सारी तुम,  
दिल में विचारि देरो कैसी यह मारी है,  
गाऊँ मुरा घारी जारी रेत गा उघारी चाँस,  
मुस्त मन भारी उठे हिम्मत पिपारी है ।  
रजन जो नारी लाग धोडे दिन प्यारी बह,  
पाछे देत गारी अत विप-सम तारी है,  
करत पुकारी सुनु अरा हमारी माँक,  
अक्रिम की यारी सारे भौग की गुवारी है ।

नाम—( ३४३६ ) मगलदास महत, सिहोर राज्य भाजनगर,  
( काठियावाड ) ।

अथ—शिव विलास ।

नाम—( ३४४० ) रघुनाथ, जूनागढ़ ।

अथ—( १ ) बेट बावनी, ( २ ) बाल-लीला ।

विवरण—आप चड़नगरा नागर ब्राह्मण थे ।

नाम—( ३४४१ ) रसुरगमण ।

अथ—श्रीसरयूरसरगलहरी ।

नाम—( ३४४७ ) रसरशि उपनाम रामनारायण, जयपुर ।

अथ—( १ ) कवित्त-रत्नमाला, ( २ ) रसिक-पचीमी ।

विवरण—आप जयपुरार्धीश मदारान्त प्रतापसिंहजी के सप्तकालीन थे ।

उदाहरण—

श्रीमन्नारायणननु के चरन को सेवक श्री,  
 रामानुज सप्रदाय शिष्यपद पायो हों ;  
 रसिक-सभा में बैठि बोलिये को थाज मेरे,  
 वाज मोह थाहे हृदि लाम लोभ छायो हों ।  
 विप्रवर वंश रामनारायण नाम नीसो,  
 कविता में छाप 'रस राशि हरि क्याया हा ;  
 सबका मुहायो ममी साम गुन गायो भया,  
 मेरो मन भायो सब ही का मन भायो हा ।

नाम—( ३४४३ ) रगनाथ ।

ग्रंथ—( १ ) सरजूलहरी, ( २ ) भक्ति-भंगरा ।

नाम—( ३४४४ ) रगोदास ।

ग्रंथ—समय प्रथम ।

विवरण—राधावल्लभा ।

नाम—( ३४४५ ) रगलदास, जूनागढ़, काठियावाड़ ।

ग्रंथ—( १ ) द्रौपदी पट निधान, ( २ ) नाममाला ।

विवरण—आप बड़नगरा नागर ब्राह्मण थे ।

नाम—( ३४४६ ) राजकुमार श्रीशिवेंद्र साही ।

ग्रंथ—फुट पद्य-रचनाएँ ।

विवरण—आपका उपनाम लालसाहब था । यह जाति के भूमिहार ब्राह्मण आर महाराज भेतिया के जामातृ थे । आप राधधानी माँका जिला छपरा के निवासी तथा पंडित रगनाथ दीक्षित के चरण थे ।

नाम—( ३४४७ ) राधावल्लभ ।

ग्रंथ—( १ ) भीष्मपत्र, ( २ ) गीता भाषा, ( ३ ) शालिहोत्र,  
( ४ ) राग रत्नाकर ।

विवरण—आप किरानगढ़पासी चारण थे ।

नाम—( ३४४८ ) राधिकादास, शेररजो ग्राम, गुजरात ।

ग्रंथ—भारत-चरित्र ग्रंथ ।

नाम—( ३४४९ ) रामरूपि ( रामरतनदास ) पटावत,  
भिहरी ग्राम, उदयपुर ।

ग्रंथ—राम-सहस्रनाम ।

नाम—( ३४५० ) रामकिशोर, लखनऊ ।

ग्रंथ—जल मूला ।

नाम—( ३४५१ ) रामदीन, उपनाम सुंदर ।

ग्रंथ—विनय पलेरा समर [ प्र० श्रौ० रि० ] ।

विवरण—धसेला, जिला हर्मापुर निगर्मा ।

नाम—( ३४५२ ) रायसिंह ।

ग्रंथ—शिवरजन ।

विवरण—आप मल्लिआव गाँव के जलमंडा बघेला क्षत्रिय थे ।

नाम—( ३४५३ ) लक्ष्मिन कवि, अवध प्रांत ।

उदाहरण—

लक्ष्मिन कहेँ देखा विचारि कुछ भावत ना बिन धनै है ;

इत्यादि ।

नाम—( ३४५४ ) लालधहादुर, अनेई ग्राम, काशी ।

ग्रंथ—हल्दीघाट का युद्ध ।

नाम—( ३४५५ ) घुदायन वैश्य, काशीपुर, तराई

ग्रथ—भारताय शिष्टाचार ।

नाम—( ३४५६ ) विहारीलाल लाला ।

ग्रथ—कायस्थ-बुल चंद्रिका, [ प्र० त्रै० रि० ] ।

विवरण—ऊँडा राज्य छतरपुरवार्मी ।

नाम—( ३४५७ ) शिवदिनकेशरी, पैठन, महाराष्ट्र देश ।

ग्रथ—स्फुट कविता ।

विवरण—आप नाथ पथके परपरा अनुयायी तथा स० १२८६  
वाल महात्मा ज्ञानेश्वर की शिष्य परपरा में से थे। 'नाथ पथ का बना  
यारा सब दुनिया से न्यारा है' यह प्रसिद्ध पद आप ही का बनाया  
हुआ है। आपका कविता मधुर प्रभावोत्पादक तथा उपदेशात्मक  
हुआ चलती थी। केमरीनाथ आपके गुरु थे ।

उदाहरण—

( १ )

किन बैरिन ने बैर कियो री ;

साजन कूँ बैराग दियो रा ।

पेहरा मुदा भस्म चगाया , पान में कुडल अलख नगायो ।  
खाँदि तो पावरी हाथ में भोली , गने बिच निगुन माला सैली ।  
शिवदिन मनोहर केमरि प्यारा , अलख अलख सब जोति उगारा ।

( २ )

हम फकीर जन्म के उदासी अर्धे निरजन बारी ।

सत्त कि भिच्छा दे मेरी माई मन आठ भरपूर ,

बार-बार हम नहिँ आने के हरदप हार खुसी ।

सोना रूपा धेला पैसा ओ कुछ हम ना चाहें ,

प्रेम कि भिच्छा ला मेरी माई हम पढ़ी परदेसी ।

सिर फोड़ जलाली करते भगन हार धो न्यारे ;  
 शिवदिन के प्रभु केमरि साहेब चरनो के रहिवासी ।  
 हजरत अल्ला सत्र दुनिया पालनवाला ।  
 जिसका आसमान है तबू । धरती जाजम पचना खरू ।  
 ऊपर गादा है गा गबू । हरदम अल्ला अल्ला ॥ १ ॥  
 चंद्र-सूरज दोनो ह चिरागी । नत्र दरवाज दसवीं गिरकी ।  
 ऊपर रक्वी है एक फिरकी । सब घट अल्ला अल्ला ॥ २ ॥  
 सात समुदर खदक खोली । मोहबत का दरयाजा मोली ।  
 अबोल बोलत मीठी धोली । सब रस अल्ला अल्ला ॥ ३ ॥  
 साईं केमरि गुर पिरसारा । शिवदिन नाम मुरीद हिलारा ।  
 क़यमग जागत ज्योत हिजाश । लाल हि लाला अल्ला अल्ला ॥ ४ ॥

नाम—( ३४६८ ) श्यामकरण ।

प्रथ—( १ ) अभयोदय भाषा, ( २ ) अजितोदय भाषा ।

नाम—( ३४७६ ) श्रीमजु केशानन्द, स्वामी गुनरात-श्रात ।

प्रथ—स्फुट रचाम ।

विवरण—यह काशी निवासी सहजानदजी के शिष्य थे ।

नाम—( ३४६० ) सत्यराम ।

विवरण—धीयुत गोविन्द रामचन्द्र चादे इन्हें बंगालीय हिंदी-कवि  
 यतलाते हैं ।

नाम—( ३४६१ ) स्वामी नित्यानन्द ।

प्रथ—श्रीहरि दिग्विजय ।

विवरण—आप उत्तर भारत के निवासा तथा सहजानदजी के  
 शिष्य थे । प्रथ में विशिष्टाद्वैत-प्रदाय तथा भक्ति मत का प्रतिपादन  
 किया गया है ।

नाम—( ३४६२ ) हज्जारोलाल कायरथ, गोंडा ।

ग्रन्थ—सायनी भाषा नानक साहब ( पृष्ठ २३४ ), दि० त्रै० रि० ।

नाम—( ३४६३ ) हरिनाथजी, ग्राम पाली, जिला हरदोई ।

विवरण—आप कायकुञ्ज ब्राह्मण थे । [ प० रामाशा द्विवेदीजी द्वारा ज्ञात ] ।

उदाहरण—

पल पुरवाइ दिण अजन घटान छाइ,  
 चापि धितताइ अणसाई मन भाई है ;  
 यगुला मिताइ, असिताई बेकी कोबिताई,  
 महु अरणाइ इदधनु घति छाई है ।  
 प्रेम बरसाइ 'हरिनाथ नेम भरि लाई  
 गजनि सवाई त्यों ब्याण्ड दरसाई है,  
 परी भद्र पाई कहीं ऐमी अतुराई तेर—  
 नैननि निकाई अनु पावस सुहाइ है ।

नाम—( ३४६४ ) हरिवशातरायण ।

ग्रन्थ—सुदामा चरित्र, [ च० त्रै० रि० ] ।

नाम—( ३४६५ ) त्रिकुमदास ।

ग्रन्थ—( १ ) रुक्मिणी विवाह, ( २ ) अकोर लीला, ( ३ ) पर्वत-पथीसी, ( ४ ) वैष्णव-संप्रदाय के स्फुट पद ।

विवरण—यह काठियावाड़ देशांतगत जूनागढ़ में बस गण थे । आप नागर गृहस्थ मजुमदार थे । आपके सात पुत्रों में से रजीतदास तथा देवराकर अच्छे कवि हो गण हैं । आदि में आप बल्लभ-वंशोरपन्न गोकुल निवासी तैलंग ब्राह्मण थे ।

## चालीसवाँ अध्याय

### पूर्व नूतन परिपाटी

सन् १९४२ से १९६० तक

यों तो हिंदी प्रौढ़ माध्यमिक समय में ही परिपक्व हो चुकी थी, और जिय महत्ता का साहित्य गोस्वामी तुलसीदास तथा सूरदास ने उस काल बनाया, वैसे हम लोगों के मानने अब तक नहीं आया है, तो भी हमारी साहित्य प्रणाली तथा साहित्य-सेवियों की संख्या इन दोनों में समय के साथ अच्छी वृद्धि हुई है। पूर्वा-लकृत काल में जिस महत्ता के बहुतेरे साहित्य-सेवी उपस्थित हुए, उतन उनसे पहले कभी न हुए थे। उत्तरालकृत काल तक अच्छे-अच्छे कविगण स्याया साहित्य रिरचन में प्रचुरता से समर्प रहे, किंतु परिवर्तन काल में यद्यपि विषया की अच्छी वृद्धि हुई और गद्यशक्ति के साथ उपयोगी रचनाओं का आशा-जनक आरम्भ हुआ, तथापि स्वामी दयानंद सरस्वती को छोड़कर कोई भी कवि या लेखक स्यायी साहित्य न उपस्थित कर सका। फिर भी यह अचरय मानना पड़ेगा कि केवल स्वामीजी का अस्तित्व एक ऐसा अमृत्य पदार्थ था, जो परिवर्तन-काल को भी बहुत उत्तुष्ट बनाता है। आपके मध-रत्न प्रलय पर्यंत ममान को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। यद्यपि हम लोग आर्यसमाजी नहीं हैं और स्वामीजी के बहुतेरे विचारों से हमारा मतभेद है, तथापि केवल साहित्य-समालोचक के नाते हम उनके प्रयोग पर उपर्युक्त मत प्रकट करते हैं। यह स्वामीजी के ही उपदेशों का फल था कि हमारे देश से हुगा, काली आदि की धाम-मत-शृणु उपासना निबल हुई, गाजी मियाँ, पीर आदि के मान का बल घटा, तथा भाइ, ईसाइ, मुस्लिम, सिख आदि धर्मों की वृद्धि, जो हिंदुओं के उन मतों में जाने से



हो रहा था, यह स्थिति हुई। हिंदू-समाज में नूतन परिमार्जित विचार फैलने लग, और सामान्य कुरीतियों आदि के हटाने की गत्य उपवास्य आदि बनाने की ओर हमारे लोगों की रुचि बढ़ी। वास्तव में स्वामीजी हिंदू-समाज पद्य साहित्य के लिये फलानर हुए हैं, और उनका इन दोनों पर भारी श्रेण है। भारतेंदु-काल को स्वामीजी तथा अँगरेज़ी राज्य के प्रभावों से अरुदा लाभ हुआ, और हमारे साहित्य की प्रगति उपयोगी भागा की ओर शीघ्रता से बढ़ने लगी। भारतेंदु ने अनेकानेक विषय पर परिधम किया, किंतु उनस्यम देश भक्ति तथा नाटक-युद्धि की प्रधानता रही।

हमारा नियम रहा आया है कि प्रत्येक कवि का पूरा विचारण उसके फाय्यारभ काल में ही हम दे देने हैं। इस प्रथा से यह भी समझ पड़ सकता है कि माना उसकी स री कृतियाँ आरभ-काल में ही हमारे साहित्य क्षेत्र में आ गईं, यद्यपि बात यह है कि पूरे समय के बचन म उसकी रचनाया का प्रभाव समाज पर उन प्रथों के रचना-काल से ही वास्तव में पड़ता है। अतएव भारतेंदु के समय वाले अनेकानेक मरस्वता के लाल पेमे थे जिनके बचन ता उसा समय हा गए हैं, किंतु जिनके प्रभाव नूतन परिपाटी के समयों में भी पड़ते रह। भारतेंदु के समयवाले प्रधान साहित्य-सत्रियों में जगमोहनमिह, ध्यानवासदास, सुशी देवीप्रसाद, महारानी वृषभानु कुंवरि, ललित, सदाजयम, बालकृष्ण भट्ट, महात्मा अद्दानंद (मशीराम) शिवसिंह मंगर, भीमयेन शर्मा बद्रीनारायण चौधरी, नासुरामशकर द्विजराज प्रतापनारायण मिश्र जगन्नाथप्रसाद भातु लाला सीताराम, शिवनदनसहाय दीनदयालु शर्मा, महार्याप्रसाद द्विवेदा, गोपालराम गहमर श्रीधर पाठक गौरीशकर-हीराधद आषा (म० म०), और हीरालाल एमे सुलेखक हुए, जिनके प्रभाव अथ तक बचे आते हैं। इनम स कुछ महाशय अथ भा प्रस्तुत हैं तथा



कांग्रेस के मतभेदों पर प्रकट में युद्ध ध्यान ही नहीं देती थी। इस नियम को पहनेपहल भग करके खाद कान ने दस महाराज के विचारों का उत्तर दिया। भारतीय तथा भारतीय शास्त्रों को भूरा मतलाश्र भी उन्होंने दस म भारी असंतोष उत्पन्न किया, तथा बग-भग में उसका बहुत परिन्द न हुआ। इस प्रकार खाद कान के समय से जनता में राजनीतिक आंदोलन ने भारी बल पन्दा। इस समय का घटन आगेवाले अध्याय में आयेगा। हमारे इस पूर्व नूतन परिपाठवाले समय में राजनीतिक आंदोलन की महत्ता न तो दस म थी, न हमारे साहित्य में ही देन पड़ती है। मध्य १९२६ में सरस्वती पत्रिका का निकलना हिंदी के लिए उम्र समय एक गौरव की घात थी, क्योंकि ऐसी मन भग की कोई पत्रिका तब तक हिंदी में न थी। इसके संपादक था० श्यामसुन्दरदासजी के परचार प० महावीर प्रसाद द्विवेदी हुए। इनके सगदफर्य में सरस्वती ने हिंदी क्षेत्रकों पर व्याकरण मन्धी प्रभाव डाला, जिसका कथन आगे के अध्याय में आयेगा। इस काल अयोध्यासिंह उपाध्याय, जगन्नाथदास रत्नाकर, अजमरीजी, गयाप्रसाद (मनेही) राय देवीप्रसाद (पूर्ण), देवकीनन्दन खत्री, अतुर गदाधरसिंह (सचेंडीवाले), श्यामसु दरदास, धननन्दनमहाय, कन्नमल, रुपनारायण पांडेय तथा बालमुकुंद गुण हमारे मुख्य साहित्य-सेवी हुए। हम खोर्गा (मिथयुओं) ने भी स० १९२५ से काव्य क्षेत्र में पैर रक्खा। इस काल सबसे बड़ी घात यह हुई कि प्राचीन प्रथावाली शृंगार कविता का घञ बहुत क्षीण पद गया और विविध रिपयों के घटन अधिकता से होने लगे। प्राचीन समय के भी कवियों में कितनों ही ने अनेकानेक ऐसे प्रथ घनाए किन्तु समय ने उत्कृष्ट रचनाओं को छोड़ शेष की घपनी उदर-दरी में रख लिया है, तथा बहुतेरी प्रकृष्ट रचनाएँ भी काल

क्यलित हो गई है। अवरश्य ही कभी-कभी उनम से कुछ ग्रथ किसी प्रकार विकराल काल के उदर मे बल-पूर्वक निकाल से लिए जाते हैं, शेष सदा के लिये जाते रहे। पर वतमान समय के साहित्य सेवियों की रचनाओं के विषय में काल की यह गति अभी पूण वेग से जैसे चल पाती, जिमसे इस कालवाले भले बुरे सभी प्रकार के सैकड़ा हज़ारों ग्रथ हमारे सामने प्रस्तुत ह। अपने जीवन काल में तो साधारण रचयितागण भी किसी न किसी प्रकार स्वरचित ग्रथों को जीवित रखते हैं, किंतु उनके शरीरात के साथ ही उनके प्राय सब ग्रथ मृत हो जाते हैं। ऐसा होना अनिवाय ही समझना चाहिए, वरन् एक प्रकार से वह लाभकारी भी ह, क्योंकि जत्यत साधारण तथा अनुपकारी ग्रथों की भरमार से साहित्य का लाभ क्या हो सकता है ? अतएव रचयिताओं को उचित है कि बहुत-से ग्रथ बनाने की चेष्टा छोड़कर विशेष परिश्रम द्वारा थोड़े हा म ऐसे विषयों पर अच्छी पुस्तकें बनावे, जिनमें उन्हें उपर्युक्त पात्रता हो। काल बढ़ा बली है, और उससे बचाकर अपने ग्रथा को जीवित रखना बड़ा कठिन है। बिना पूण धमत्कार लाण कोई ग्रथ कभी जीवित न रहेगा, ऐसा सभी को समझ रहना चाहिए।

जितने परिश्रम से दस ग्रथ बनाए जाते हैं, उतने से यदि एक बने, तो शायद अपने धमत्कार के कारण काल की दरालता का वह चिरकाल तक सामना कर सके। साधारण कवियों की यात जाने दीजिए, स्वयं यिहारी ने अपने हज़ारों दोह फाड़ फाड़कर फक दिए होंगे और केवल ७१६ बचा रखे, जिनकी बड़ीलत उाड़ी गणना हिंदी नवरत्नों में है। यदि वह दस बारह हज़ार दाँदे लिखते अथवा शेष रखते, और उनमें केवल ७०० ८०० वास्तव में अच्छे होते, तो उनका सादृश महाव कदापि न हो सकता। लेखकों को यह भी उचित है कि नवीन ग्रथ बनाने के स्थान पर अपनी प्राचीन रचनाओं पर

रचनाओं में कोई भारी मुख्यता नहीं है। समाज सुधार पर बहुतों ने कथन किए हैं, किन्तु इस काल रिभी लेगे लेखक का नाम नहीं आता, जो मुख्यतया समाज-सुधारक बड़ा जाये। इन दिनों के देश-प्रेमिया में सबसे पहले स्वामी दयानंद सरस्वती तथा भारतेन्दुजी के नाम आते हैं। स्वामीजी का आयसमाज धर्म ही देश-प्रेम का भारी समर्थक है। उनके उपदेशों का ध्येय मुख्यतया समाज-संशोधन द्वारा देश-प्रेम-वृद्धि न था। भारतेन्दुजी पद्य-रचयिताओं में सबसे प्रथम देश-भक्त थे। इनके नाटक—प्रेमयोगिनी, चंद्रावली, नालदेवी, भारत दुर्गा और सत्यहरिचंद्र उत्कृष्ट हैं। इनमें सत्यहरि चंद्र में पूण मौलिकता नहीं है, तथा चंद्रावली उच्च साहित्यिक छटा रखते हुए भी रंग-मंच के अयोग्य है। फिर भासाहित्य की दृष्टि में यह स्तुत्य है। शेष तीनों नाटक बढ़िया हैं ही। इन पाँचों ग्रंथों की गणना स्थायी साहित्य में हो सकती है। इनमें से किसी किसी में जातीयता और ग्रन्थों में प्रेम की पुत्र बहुत ही रलाप्य है। अभी तक सिवा जयशंकरप्रसादजी के और कोई हिंदा नाटककार भारतेन्दु के घराबर नहीं हो पाया है। देश-भक्ति में नूतन परिपाटी काल में माधवराय सप्रे (१९४२), रामदास गौड़ (१९४८), अशु मलाल सेठी (१९२०), सचेंडी वाले टाकुर गदाधरसिंह (१९२१), रामनाथ ज्वातिपा (१९२१), नदकुमार शर्मा (१९२८) तथा दर्वीप्रसाद शुक्ल (१९२३) के नाम गिनाए जा सकते हैं। इनमें से कई महाशय राजनीतिक कार्यकर्ता भी हैं और उत्कृष्ट गद्य-लेखक तो सब हैं। साहित्यिक दृष्टि से हम टाकुर गदाधरसिंहजी के गद्य को बहुत ही ऊँची श्रेणी का मानते हैं। इनके गद्य में देश-प्रेम की भावना लंबालंब झलक रही है, और आरोचन सभा स्थानों पर प्रस्तुत है। आपका प्रथम ग्रंथ 'चीन में तेरह नाम' बहुत ही स्तुत्य है। इसके पढ़ने में कमी जी नहीं

कबता। आपसमाजियों ने व्याख्यान की प्रणाली पर जोर दिया, जिससे सनातनधर्मियों ने भी झुमे उठाया। इनमें दीनदयालु शर्मा तथा ज्वालाप्रसाद मिश्र पहले आ चुके हैं, तथा भाइ परमानंद ( मन्गरी ) और गणशक्त शास्त्री ( १९२७ ) इस काल के हैं। यों तो बहुतेरे महाशय धारा प्रवाह से व्याख्यान देने हैं, किंतु यहाँ उन्हीं के नाम दिष्ट किए हैं, जो या तो धार्मिक उपदेशक हैं या राजनीतिक वक्ता। महामना मालवीयजी हमारे सबसे पुराने तथा प्रभावशाली व्याख्याता हैं। दीनदयालु शर्मा की जिज्ञा में भी भारी बल है। और भी बहुत-से महाशय हैं, जिनके नाम तक गिनाना एक भारी काय होगा।

पत्रकारों में इस काल देवदत्त शर्मा ( स० १९४२ ), महता सज्जाराम ( १९४२ ), बालमुकुंद गुप्त ( १९४७ ), गोपालदास ( १९४८ ), पद्मलाल ( १९४८ ), गंगाप्रसाद गुप्त ( १९२० ), नरकुमारदेव शर्मा ( १९२८ ) आदि के नाम आते हैं। इन महाशयों के पत्रों में से बहुतों के पत्र १९६० के पीछे निकले, किंतु इन पत्रकारों के नाम लेखनारम्भ-काल के अनुसार उपर्युक्त समयों पर आते हैं। पत्र-कला ने हमारे हिंदी-भाष-लेखकों को कालक्षेप का भाग, स्वतंत्र जीवित तथा देश पर भारी प्रभावोत्पादन के बल दिए। उपर्युक्त महाशयों में म महता सज्जाराम, बालमुकुंद गुप्त तथा गंगाप्रसाद गुप्त की प्रधानता समझ पड़ता है। बालमुकुंदजी गुप्त इस नामावली में बहुत निकलने हुए पत्रकार हैं। सामाजिक और धार्मिक विषया पर विचार तो आपके प्राचीन थे, जिससे हम लोगों का इनसे कई बार वाद विवाद भी हुआ, किंतु आपकी जिज्ञादिली लेखों तथा भारतमित्र पत्र को बहुत सुपाठ्य बनाती थी। आप कहते थे कि मिश्रबधु हमसे खद तो लेते हैं, किंतु-रष्ट्र कभी नहीं-होते। बात यह भी कि, मतभेदवाले लेखों का स्वदन

करते हुए भी इनके व्यक्तित्व के कारण हमें भारतमित्र में भी समय समय पर अपनी खूब निकालना अच्छा लगता था। इनके क्षेत्रों में सत्रीयता तथा परित्रम सौझाई था। शिव शम्भु का चिह्न मज्जाऊ और जुड़ीनी जाता ने सखानव भरा था। समाचारों की वृद्धि तथा सामाजिक विचारों के सम्यक् विस्तार से निश्चित विषयों पर प्रथ-रचना की प्रयात्नी हमी काव से जोर पकड़ने लगी है। यावत् राधाकृष्णदास (१९४०) ने चनेकानेठ विषया पर सुन्दर प्रथ-रचना की, तथा काय-क्षत्रम भी वेग ही मौदाय दिग्गताया। पदरीदत्त शर्मा (१९४१) तथा चमीरशर्मा (१९२०) ने नीति का कथन दिया। सुदरलाल (१९२६) ने बालोपयोगी पुस्तकों की रचना की। गगारशंकरजी पधौली (१९२१), गगनोहन शर्मा (१९२२) और महेंद्रलाल गग (१९२३) ने उपयोगी विषयों पर अच्छे प्रथ रचे।

इन विषयों पर कथन यहाँ सूक्ष्मता पूर्वक किए जा रहे हैं, क्योंकि प्रथम प्रत्येक रचयिता का यत्न दिया ही गया है, जहाँ यह देखा जा सकता है। ठाकुरनमोद स्वर्गी (१९४०) ने व्यापारी और कारवारी नामक पत्र निकाला तथा उसे ही विषयों पर प्रथ-रचना भी की। रामनारायण मिथु (१९४६) तथा साधुरक्षणप्रसाद (१९२०) ने इस काल यात्रा पर प्रथ लिखे। साधुरक्षणजी का भारत भ्रमण कई भागों में एक बड़ा ही उपयोगी ग्रंथ है। रामनारायण मिथु ने दो अन्य महाशयों के साथ मोरप-यात्रा लिखी है। हम (शुक्रदेवविहारी मिथु) ने भी प्रायः सवा सौ पृष्ठों की योरप-नीरोग यात्रा प्रकाशित की है। वाचस्पति नेत्रारी (१९४६) ने ज्योतिष पर कई प्रथ बनाए हैं। हरिनाथ (१९२३) और जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी (१९२७) ने हास्य रस का मजा दिखलाया है। रंगनारायणपाल (१९४६) तथा जवानसिंहजी

( १९२० ) ने प्रेमात्मक विषयों पर कविता रची । पहले ने प्रेम की व्याख्या की है और दूसरे ने गद्य शिल्प लिखा । श्यामसुंदर ( १९२२ ) और रामसिंहजी ( १९२६ ) ने नायिका-भेद पर ग्रंथ रचे तथा अलंकारों पर भैरवदान ( १९४६ ), जगन्नाथ चौधे ( १९२० ), और मुरारिदानजी ( १९२० ) ने इस काल परिश्रम किया । इनमें मुरारिदान का ग्रंथ बहुत प्रशंसनीय है । शास्त्रीय विषयों पर ( षू षू ) महाराजा विश्वनाथसिंह, खुनदन भट्टाचार्य, उदयचंद्र ओसवाल बनादाम, शिवनीलाल, गुमानसिंह, तुलसीराम शर्मा, लेखराम, कपाराम शर्मा और स्वयं स्वामी दयानंद सरस्वती परिश्रम कर चुके थे । इनमें से बहुतांश ने उपनिषदों आदि पर टीका टिप्पणी करके आध्यात्मिक ज्ञान के तथ्यों का निरूपण किया था । नूतन परिपाटी-काल में ऐसे विषयों पर निहारीलाल जैन ( १९४६ ), यादू भगवानदास ( १९२० ), सुदशाचार्य ( १९२० ), राजाराम शास्त्री ( १९२२ ), नरेश दुबे ( १९२२ ), महामहापाध्याय डॉक्टर गगनाथ झा ( १९२६ ), लाला कानोमल ( १९२७ ), रामावतार पांडेय ( १९२६ ) तथा लाला रामजी शास्त्री ( १९६० ) ने विशेष श्रम किया । इन सबों के ग्रंथ महत्ता-युक्त हैं । हम ( श्यामविहारी मिश्र तथा शुक्रदेव विहारी मिश्र ) ने भी भारतवर्ष के इतिहास तथा सुमनों जल्लिम प्राय ४०० पृष्ठों में हिंदू धर्म निरूपण पर अपने विचार लिखे हैं । यादू भगवानदास ने अंगरेजी भाषा में इस विषय पर कई उत्कृष्ट ग्रंथ रचे, जिनमें प्राचीन दार्शनिक प्रश्नों पर नवीन विचार अच्छे हैं, विशेषतया Science of peace and science of emotions में । झा महाशय ने प्राचीन दार्शनिक शास्त्र का अच्छा मनन करके उन पर उपयोगी ग्रंथ लिखे हैं । लाला कानोमल ने हिंदी में दार्शनिक विषयों पर श्रम करके अनेक सुपाठ्य ग्रंथ



बनाए। हम विशाल विषय की नूतन परिपाटी-काल के बन्धकों द्वारा अच्छी छग-सुष्टि हुई है।

पुराणा के धर्म पर बहुतों ने नहीं लिखा है। वास्तव में बौद्ध विचारों के आक्रमण द्वारा वैदिक धर्म का अंत हो गया और हिंदू-समाज ने एक दृमरा हा धम चलाया, जिसे पौराणिक कहते हैं। इस नवोदित धर्म में कुछ सिद्धांत वैश्विक मन के थे, कुछ बौद्ध एवं जैन के और कुछ नवीन आगतुकों के प्रभाव से सामाजिक विचारों के परिवर्तन द्वारा सिद्ध किए हुए नव धार्मिक एवं सामाजिक आचारों और विचारों के। इसने वैदिक धर्म में माने हुए कई विचारों को बिना निषेध ठहराए ही चुपके-से छोड़ दिया, तथा प्राचीन एवं नवीन सिद्धांतों को लेकर नए धर्म के अंग प्रत्यंग बढ़े खातुय में सुगठित करके उसे एक सुचारु-रूप दिया। इस नव धर्म विस्तार में मुख्य श्रेय उन दशाध्या का था, जिनमें हमारे समाज ने अपने को पाया।

महात्मा गौतमबुद्ध का प्रादुर्भाव सबन् पूर्व छठवीं शताब्दी में हुआ तथा सम्राट् अशोक का सबन् पूर्व तीसरी शताब्दी में। महात्मा बुद्धद्वारा चलाया हुआ हीनयानीय बौद्ध धर्म अशोक के पहले बहुत करके गृह-त्यागिया का सम्प्रदाय-मात्र रहा, न कि गृहस्था का धर्म। साधारण समाज पर तब तक उसका प्रभाव बहुत नहीं था। अशोक ने बौद्ध तथा कई जैन सिद्धांतों में से गृहस्था द्वारा पालित होने योग्य विचार चुनकर काम काजू धर्म उपस्थित किया, जो उनके प्रभाव तथा अपनी धार्मिक एवं उपदेशकों की उद्यता के कारण समाज के एक बड़े अंश में स्थापित हुआ। उनके बौद्ध होने के कारण वह माना बौद्ध धर्म ही गया। अपने ऊँचे-से ऊँचे फैलाव काल में भी बौद्ध धर्म के अनुयायी राज्या में हिंदुओं से कम थे, ऐसा अनुमान प्राचीन ग्रंथों के देखने से होता है। गृहस्थों में आने से प्राचीन हिंदू विचारों का प्रभाव बौद्ध

धर्म पर पड़ने लगा। दशा यह थी कि यदि एक भाई हिंदू था, तो दूसरा बौद्ध। चीन और हिंदुओं में खाने-पीने, संबंध विवाहादि में कोई भेद न था, जैसी दशा आजकल भी चीन, जापान, लका आदि के बौद्धों और इसाइयों में पाई जाती है। बौद्ध तथा हिंदू एक दूसरे के सिद्धांतों से प्रभावित होने लगे और दोनों के सिद्धांत मिलने लगे। तीसरी शताब्दी संवत् तक भारत में शक, प्रमद, गुर्जर, तुर्क यूएची, सीरियन आदि कई जातियों का घुसना आकर समान भ मिल गई। पाँचवीं शताब्दी में इसी प्रकार हूण आकर मिल गए। कनिष्क अशोक के समान भारी सम्राट् थे। उनके समय पहली शताब्दी तक हिंदू और बौद्ध इतने मिल चुके थे कि महात्मा बुद्ध में मानुषिक भावों का शिथिलीकरण होकर पूरा देवभाव लुप्त हुआ था, भेद केवल इतना था कि हिंदू लोग देव-समाज में बुद्ध का स्थान नीचा मानते थे, और बौद्ध लोग उसे बहुत ऊँचा करते थे। दोनों के स्वभावों को मानते जानते थे, भेद केवल टनटी मानुषिक महत्ता का था। इसी बौद्ध-मत को महायान कहते हैं।

बौद्ध तथा ब्रह्मण्य अन्य जातियों के विचारों द्वारा प्रभावित होकर हमारा धर्म प्राचीन वैदिक मत से बहुत दूर हट गया, यद्यपि हमने वेदों का मौखिक मान कर्मा नहीं छोड़ा। हमें नव विकसित मत को पौराणिक कहते हैं। चला ता यह समाज की शक्तों द्वारा विकसित धार्मिक भावों से, हिन्दु धर्म में स्वामी शंकराचार्य तथा रामानुजाचार्य ने हमें ब्रह्मण्य का सामंजस्य मिलाने का दायर निरूपण कर दिया। कहने को तो वे भोग बौद्ध-काल के पड़छेवाले प्राचीन वेदों तथा शास्त्रों को ही मानते रहे, हिन्दु होने अपने धार्मिक विचारों का जेसा नव धार्मिक सामंजस्य निरूपण किया, तथा नव विचारों द्वारा प्रभावित भाव, उन्हें ही दिखाने का। इन पौराणिक धर्म को

प्रधानुयायी पंडित लोग अब भी वैदिक धर्म से अभिन्न मानते हैं, तथापि सगुणोपासना, अवतारों का मान, यज्ञ का साधारणतया अभाव, प्रति माथों की विशेषता, गंगा-यमुना आदि पर महती श्रद्धा, मूर्तियों तथा नदियों पर आधित तीर्थ-स्थानों आदि के मान, त्रिमूर्ति की दृढ़ स्थापना एवं इत्यादि के शिथिल प्रभाव में यह पौराणिक मत प्राचीन वैदिक मत से भिन्न है। इस विषय पर हमारे नूतन परिपाठी मालवाले तथा इनके पढ़ेवाले लोगका ने बहुत कुछ नहीं कहा। स्वामी त्वाणद सरस्वती ने इन बातों का वेद समर्थित न कहकर त्याज्य मतलाया, किंतु मिथुद्गाद सरस्वती आदि वाशी के तथा अन्य भारतीय प्राचीन प्रधानुयायी विद्वान् इस मत में प्रसिद्ध ही करते रह, और उपर्युक्त बातों को वेदानुद्धृत बनलाने रहे। डॉक्टर सर रामकृष्ण भांडारकर ने पहलेपहल हिंदू धर्म के सिद्धांतों का पतिहासिक वर्णन करके पृथक् पृथक् विचारों के उदय का काल निर्णय किया। यह निर्णय प्राचीन हिंदू ग्रंथों के आधार पर ही किया गया। हमने भी इस विषय पर पहले से विचार करके हिंदू धर्म के विकास पर मुमनोजलि तथा भारतीय इतिहास में निबंध लिखे थे। पीछे से भांडारकर महाशय के प्रथम तथा अन्य पुस्तकें पढ़ने का नम अवसर मिला, तब अपने प्राचीन विचारों में नाना भाव जुड़े उनका भी पृथक् कथन हमने मुमनोजलि के ही एक निबंध में कर दिया है। इस प्रकार यह पौराणिक मत के उदय का इतिहास बड़ा ही शिष्टा प्रद एवं रोचक है। पौराणिक मत की क्रमावृत्ति का वर्णन हिंदी में हमने अब तक किसी अन्य ग्रंथ में नहीं देखा है। डॉक्टर भा महाशय तथा बाबू भावानदास के लेख हिंदी में बहुत थोड़े हैं और अँगरेज़ी में अधिक किंतु ये महाशय हमारे ही हैं जो इनके अँगरेज़ी ग्रंथों से भी हमें हिंदी की अग-सुष्टि समझ पड़ती है।

हैरररररसाद तेवारी ( म १६४८ ) ने पौराणिक ग्रंथों का अनु

वाद करके उन पर अपने भी कुछ विचार प्रकट किए हैं। अन्यान्य लेखकों ने पौराणिक कथाओं के भाग लेकर ग्रंथ लिखे हैं, विशेषतया रामायण, कृष्णायन, द्रापदी-चीर हरण, अभिम-यु वध, नल-दमयती, जयद्रथ वध, प्रह्लाद मोचन, सुदामा चरित्र, कम-वध, कार्ष्णी लीलाओं आदि पर। ये विषय हजार बार पुनरावृत्तियों द्वारा ऐसे साधारण क्या कींके हो गए हैं कि इन्हीं पर नए ग्रंथों के पढ़ने को जी नहीं चाहता। फिर भी हमारे कविजन इनका वयन बरते हुए कोई नवीन विचार तक नहीं लाते और समय तथा अममर पैस कुछ कथन प्राचीन व्यास लोग कर गए हैं, उन्हीं को ग्रंथ बन करके मान लेना बुद्धिमानों की सीमा समझते हैं। एक समय था, जब इन प्राचीन विषयों पर सभवनीयता के आधार पर कुछ कहने वाला धर्म विरोधी समझा जाता था। शय ऐसी सकीणता बहुत कुछ दूर हो चुकी है, किंतु फिर भी हमारे नये प्रतिशत कविगण इन विषयों पर कथन करते समय प्राचीन ग्रंथों के शक्तत्व से आगे एक पैग देने तक की हिम्मत नहीं करते। ऐसे दास मानस युद्ध लेखकों को इन प्राचीन विषयों पर लिखना ही न चाहिए और ऐसे नवीन विचार। तथा घटनाओं का सहारा ईदना चाहिए, जिनमें वे अपने मन को दास-कल्प के बाहर पावें। फिर नूतन परिपाटावाले समय की कान कहे हम आज तक भी अपने अधिकार कर्तव्य को ऐसे ही दास मानस के अनुपायी तथा समाज को मिथ्या विश्वास की ओर घसाटनवाले पाते हैं। साहित्यकार के जहाँ अधिकार बहुत हैं, वहाँ उसके भार भी अगार है। जो मनुष्य अपने को दास-कल्प के बाहर न पावे, उसे उचित है कि कम-से-कम समाज को मिथ्या उपदेश तो न दे।

एक नाटककार महाराज लिखते हैं कि सुदामा ने जो गुराह के दिए हुए घने स्वयं मर-सव खा लिए, और भगवान्

कृष्ण का भाग उन्हें न दिया, इसी पर भगवान् ने मानसिक शाप दिया कि जितने चने उन्होंने बेजा चाये, उनमें से एक-एक चने के लिये उन्हें जय एक-एक दिन का उपवास हो चुकेगा, तभी उनके इस बाल्य काल के पाप का प्रायश्चित्त होगा; नहीं तो सुदामाजी को दुझापे तक भारी कष्ट क्या सहना पड़ता, क्योंकि पहले भी तो भगवान् उन्हें सुखी कर सकते थे। उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण का प्रभाव तो अद्भुत दिखला दिया, किंतु इतना न सोचा कि एक-एक चने के लिये अपने मित्र तथा प्राण्य को एक-एक उपवास का दंड देना कितना क्रूर क्रम है? कवियों को भावों के सब पक्षों पर विचार कर लेना चाहिए, यह नहीं कि मूर्ख मोहिनी शक्ति के सहारे युग की एक ही टाँग कह देनी।

कहने का प्रयोजन यह है कि पौराणिक साहित्य तथा धर्म को हमारे लेखकों द्वारा उचित मान नहीं मिला है। पहले तो कतिपय प्राचीन व्यासों ने ही उसमें मूल-मोहिनी कला का उचित से बहुत अधिक सहारा लेकर असम्भव कथनों की खानि बना डाला, और पीछे से हमारे हिंदी लेखकों ने उन असम्भव कथनों की खानि को शिथिल करने के स्थान पर और भी बढ़ किया, जिसका फल यह हुआ कि हमारी अपद जनता असंख्य उपदेश पाकर केवल धरामात प्रदर्शन को धार्मिक महत्ता का मूल-मंत्र मान बैठे हैं। जो लेखक कुभक्षण की मूछ को चार योजन से एक तिल कम घतलावे, वह इसाई है। यदि राम-राज्य का समय म्यारह हजार वर्षों से एक दिन कम कह दिया जावे, तो घटा सनातनधर्म नहीं हो सकता। वेद पुराणों से बहुत प्राचीन हैं। जब वे ही 'आवेम शरद शतम्' का कथन करते हैं, और अथर्ववेद तथा परम प्राचीन उपनिषद् ११६ वष की आयु को बहुत भारी मानते हैं, तब पुराणों के ऐसे अमान्य भाषणों पर ज़ार देना बुद्धि-मानी नहीं है। फिर भी अब तक आयसमाजी लेखकों के अतिरिक्त

शेष कवियों में से नब्बे प्रतिशत ने ऐसे विषयों पर सामाजिक चान-  
 धर्न का अपना पवित्र कर्तव्य पालित नहीं रक्खा। पुराणों के घेने  
 क्यन धार्मिक प्रश्न न होकर ऐतिहासिक-मात्र हैं। प्रश्न यही है  
 कि इतिहास सिद्ध क्या बात है कि राम-राज्य ग्यारह सहस्र वर्ष रक्ष  
 या तीस-चालीस वर्ष-मात्र ? राम को अवतारी पुरुष मानते हुए भी  
 कोई मनुष्य इस ऐतिहासिक प्रश्न पर स्वच्छदता पूर्वक विचार कर  
 सकता है, किंतु हमारी जनता के अध विरवास अशुद्ध उपदेशों के  
 कारण इतने दृढ़ हो गए हैं कि वह इन सरल प्रश्नों पर सरल  
 विचार करने को तैयार नहीं है। हमारे अधिकांश कविगण भी ऐसे  
 विषयों में जनता के उपदेगक न होकर उपदेश देते हुए भी वास्तव  
 में उसी के अनुयायी और दाम हैं। ऐतिहासिक कवियों का कर्तव्य है  
 कि समवनीयता को हाथ से कभी न जाने दें, किंतु होता ऐसा  
 नहीं है। यों तो साहित्यिक ग्रणों से समवनीयता प्राय अर्तबद्ध  
 है, किंतु जब कवि इतिहास कहने बैठे या किसी प्राचीन या नवीन  
 घटना का ऐतिहासिक रूप में कथन करता हुआ भी अयभव कथनों  
 का सहारा लेवे, तो उसकी रचना शतमुग्य मे तिरस्करणीय होगी।

नूतन परिपाटी-काल की यह मुख्यता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त लोग  
 लेखकों के रूप में हिंदी में आने लगे, जिसमे हमारे यहाँ नव  
 विचारोत्पादन बल पूर्वक चलने लगा। कुछ दिनों तक संस्कृत,  
 बँगला, गुजराती, अँगरजी आदि के अनुवाद बहुतायत से बने,  
 जिससे न केवल भाषा परिवर्द्धन हुआ, धरन भाषा में भी नवीनता  
 एवं सांस्कृत शब्दों की वृद्धि हुई। इस विषय पर कुछ अधिक  
 प्रकाश उत्तर नूतन परिपाटी के कथन में डाला जायगा। यहाँ केवल  
 इतना कह देना अलम् है कि नव विचारागमन के साथ भाषा का  
 भी रूप बदलने लगा, और उस पर दृढ़ हिदा-शब्दों की अपेक्षा  
 अन्य भाषाओं के शब्द-समूह का साम्राज्य चलने लगा। सबसे

अभिज्ञ संस्कृतपन की वृद्धि हुई। यह उन्नति है या अवनति, सो अभा इन नहीं कहते, किन्तु बात जमी अवश्य हुई।

पौराणिक मत्त का द्वायसमाप्त धार विराध करता है। समाप्त में भी बहुतेरे उच्च काटि के खतरक तथा व्यापता है। भारत-दु-काल में महात्मा अद्दानद तथा लाला मानवन्तियाय भारी समाप्ती मन्त्रक एवं व्याख्याता हुए। पूर्व नूतन परिपाटी-काल में समाप्ती क्षेत्रों में निम्न-समाप्तों के नाम आते हैं—गापालदाम दवगण शर्मा (१९४६), देवीदमाप्त (१९४६), विष्णुलाल शर्मा (१९४६), घड़ीदत्त शर्मा (१९४६) नरदर शास्त्री (१९४६) और टाडूर गदाधरसिंह (१९६१)। इनमें से कई महाशय उत्कृष्ट लेखक तथा व्याख्याता थे। विशेष विवरण आगे मिलेगा। प्राधान्य अँगरेज़ क्षेत्रकों में डॉक्टर रुडाकर हान ली, क्रैशिक पिन्डाट, डॉक्टर सर जाम प्रियसन, जाम क्रिश्चन आदि ज्ये महाशय थे, जिन्होंने लिखा तो अँगरेज़ी में, किन्तु हिंदी पर प्रचुर परिश्रम किया। ज्ञान महाशय हिंदी में लेख तथा कथिता भी रचते थे।

पैंतीसवें अध्याय (मिथसु विनाद तृतीय भाग) में हमने कई विषयों का कथन करत हुए ताटका का भी कथन (पृष्ठ ११७४-७६) किया है। उस स्थान पर वर्तमान नाटककारों के कथन कर दिए गए हैं। वह कथन पूरे वर्तमान प्रकरण में सबद्ध था, सो उसमें १९२६ से अब तक का सूक्ष्म कथन किया गया है। अब उन्नी विषय पर पूर्व नूतन परिपाटी-कालवाले नाटककारों का पृथक् वर्णन किया जाता है। भारत-दु के पूर्व पूरे नाटक उनके पिता गिरिधरदासजी ने रचा, जिसे गुरुप-नाटक कहते हैं। उसका भी गद्य खड़ी बोली में न होकर मजभाषा में है। भारत-दु हरिश्चंद्र ने मर्बाग सुदर खेलने योग्य उत्कृष्ट नाटक रचे। अँगरेज़ी, बँगला आदि के प्रभाव से भारत-दु के पीछे चपू, भाण, महसनादि कुव





समाज पर कैसे ग्रंथा का कैसा प्रभाव पड़ता है, इस काम-काज से वे खींची हुई होती हैं। कपनियों द्वारा नाटक खेती जाने से उनके रचयिताओं की कीर्ति भी बहुत ज़रूर फैलती है, विसस उनका अधिकाधिक प्रोत्साहन एवं लाभ भी होता है। इन कारणों से बंगाल का नाटक-विभाग अच्छी उन्नति कर चुका है, किंतु हमारा अनुभव की जाँच से पृथक् रहकर खयाली संसार का ही निजासी है।

फिर यहाँ की जनता उपर्युक्त अनुचित उपदेशों के कारण केवल मूर्ख मोहिनी विद्या को पसंद कर पाती है, जिम्मे यथायथा हमारे नाटक रचयिता उसी प्रकार के ग्रंथ बनाने ह। उन बेचारों का हममें कम दोष है और समाज का अधिक। फिर भी मूर्ख-मोहिनी विद्या के प्रवृद्ध होने के कारण ये लोग कुछ समालोचकों के कोप भाजन भी हुए हैं। ज्यों-ज्यों जनता की रुचि ऊँची होती जायगी, और हमारे उपदेशक तथा लेखक अपने भार का अनुभव करेंगे, त्यों-त्यों हमारा नाटकीय विभाग भी उन्नत ग्रहण करेगा। भाषाओं की यह गशा है कि बंगाल में संस्कृत शब्द का बाहुल्य है तथा पञ्जाब में प्रारसी शब्दों का। बंगाल से पञ्जाब तक ज्यों-ज्यों पश्चिम जाते जाइए, त्यों-त्यों संस्कृत शब्दों की कमी तथा प्रारसी का आधिक्य होता जाता है। जैसे शब्द लखनऊ के समीप साधारणतया बोले तथा समझे जाते हैं वैसे ही का निराकरण हम लोग संस्कृत पर प्रेम रखने के कारण से ही करते हैं, और कभी-कभी साधारण प्रारसी-शब्द लिख भी जाते हैं किंतु पढ़ने के निकट वह शब्द निराकरण कृत्रिम न होकर एक परम साधारण बोल-चाल का कल है। वहाँ प्रारसी-गर्भित शब्द लागू समझ ही नहीं पाते। हमी प्रकार इधर तथा और पश्चिम की घोर लोग साधारण समझे जानेवाले संस्कृत-गर्भित शब्द नहीं समझ पाते। अतएव भाषा में संस्कृत अथवा प्रारसी, दोनों के गूढ़ शब्द न जाने चाहिए, जिसमें

कि वह मातृभाषा के निकट रहे और अधिक-से अधिक देश में समझी जा सके।

हमारे यहाँ नाटक विभाग बहुत करके भारतेंदु के समय से चला। हमारे प्राचीन नाटककारों में केवल भारतेंदु और श्री निवासदास सुकवि थे। शेष के नाटक ऊँची कक्षा तक न पहुँच सके। यहाँ पर केवल मौलिक ग्रंथों पर कथन किया जाता है। अनुवादकों में लाला सीताराम, सत्यनारायण (धारा निवासी), ज्वालाप्रसाद मिश्र, गोपालराम (गहमर निवासी), रूपनारायण पाठेय आदि ने अच्छे अनुवाद किए, किंतु इनकी रचना में भाषा ज्ञान के अतिरिक्त कोई विशेष महत्ता नहीं है। रत्नचंद्र (न्याय-सभा, दिव्यी उदू), रामकृष्ण वर्मा, किशोरीलाल गोस्वामी आदि ने भी नाटक रचे, किंतु उस उच्चता के नहीं, जो समाज में उन्हें वाहवाही का भाजन बनाव। नूतन परिपाटीवाले नाटककारों में राधाकृष्णदास (१९४०), हरीरामजी त्रिवेदी (१९२०), अक्षयधरप्रसाद साहू (१९२०), बलदेवप्रसाद मिश्र (१९२१), कृष्णबलदेव वर्मा (१९२२), हरिपालसिंह (१९२४), प्रजादन्तप्रदाय (१९२६), रूपनारायण पाठेय (१९६०) तथा रामनारायण (१९६०) के नाम आते हैं। हम (श्यामविहारी मिश्र तथा शुक्रदेवविहारी मिश्र) ने भी चार नाटक बनाए हैं, अर्थात् त्रयोन्मीलन, पूर्व भारत, उत्तर भारत और शिवार्जुन। ये सब खलने के योग्य हैं। अग्रिम नाटक अभी अमुद्रित है। पूर्व भारत तीन जगह खला जा चुका है। राधाकृष्णदास का महाराणाप्रताप अच्छा नाटक हाकर भी उच्च कोटि का नहीं है। कृष्णबलदेव वर्मा का भट्टेश्वरि अच्छे भाव दिखलाता हुआ भी बहुत उत्कृष्ट नहीं है। इतरे के नाटक बहुत नामी नहीं हैं, ज समालोचना द्वारा उनके गुण-दोषों पर अभी तक सम्यक् प्रकाश पड़ा है। फलतः अभी तक नूतन परिपाटी-वाले नाटकों

द्वारा नाटकीय विभाग की अधिक उन्नति नहीं कही जा सकती।

उपन्यास विभाग चलता तो पहले से था और प्रौढ़ माध्यमिक तथा अलकृत कालवाले कुछ प्रथम इसी विभाग में था सकते हैं, तथा दृश्याश्रया आदि के भी प्रथम ऐसे ही हैं, तथापि इसका प्रचार भारतेंदु के समय से ही माना जा सकता है। उस काल के औपन्यासिक अनुवादकारों में चाचू गदाधरसिंह, रामकृष्ण वर्मा, कार्तिक-प्रसाद, गोपालराम गहमर निजामी तथा रामचन्द्र वर्मा के नाम आते हैं। गोपालराम ने बहुतेरे मौलिक उपन्यास भी भारतेंदु काल से पीछे लिखे। अनुवादकों के विषय में भाषा के अतिरिक्त कुछ अधिक विवरण अनावश्यक है। नूतन परिपाटीवाले लेखकों में महता लज्जाराम ( १९४२ ), अयोध्यासिंह उपाध्याय ( १९४७ ), किशोरीलाल गोस्वामी ( १९४७ ) देवकीनन्दन खत्री ( १९४८ ), गोपाललाल खत्री ( १९४९ ), उदितारायणलाल ( १९५० ), सकल नारायण पांडेय ( १९५३ ), श्यामविहारी मिश्र तथा शुभदेव विहारी मिश्र ( १९५५ ), भगनन्दनमहाय ( १९५६ ), चतुर्भुज सहाय ( १९५६ ) रामनारायण पांडेय ( १९६० ) आदि औपन्यासिक माने जा सकते हैं। महता लज्जाराम ने लिखे तो दो-तीन अच्छे उपन्यास हैं, किंतु इनके उपदेश जनता के विगड़े हुए पुराने विचारों की दृढ़ता के पक्ष में होने से हानिकारी हैं। उपाध्याय जी के दो-एक प्रथम उपन्यास कह जा सकते हैं और अच्छे भी हैं, तथापि वास्तव में उनमें भाषा के तो परमोत्कृष्ट उदाहरण हैं, किंतु औपन्यासिकपन की बहुत कमी है। गोस्वामीजी के कुछ उपन्यास अच्छे भी हैं, किंतु बहुतों में रनियापन तथा जनता को पसंद साधारण भावों द्वारा धनोपाजन के प्रयत्न अधिकता से आकर उनकी साहित्यिक उन्नति के बाधक हो गए हैं। देवकीनन्दनजी के चंद्रकांता तथा चंद्रकांता-सतति कुछ दिन बहुत ही अधिकता से जन समुदाय

को पसंद आए। इनमें लोक-रजा की मात्रा बहुत प्राचुर्य से है और उपदेश भी अच्छे मिलते हैं, किंतु असभ्यता के कारण इनका साहित्यिक मूल्य अधिक नहीं है। भाषा इनकी चलती हुई कुड़-कुड़ उर्ध्वन लिए हुए सुपाठ्य तथा सुबोध है। हमने वीरमणि नामक एक ही उपन्यास प्रथम लिखा है, जिसमें औपन्यायिक धुमाय का प्राचुर्य न होने हुए उपदेशरूपन अधिकता से है। सामाजिक उपन्यास होकर यह ऐतिहासिकरूपन एवं धर्मापदेश के पुट लिए हुए है। घननंदनप्रसाद साधारणतया अच्छे औपन्यासिक हैं। रुपनारायणजी पाठेय के मौलिक उपन्यास शुरे नहीं हैं। फलतः पूर्व नूतन परिपाटी के लेखकों द्वारा इस विभाग की कुछ अच्छी पुस्तकें हुई हैं। आख्यायिका के विषय का आरंभ गिरिजा कुमार घोष ( १९६० ) ने कर दिया है, किंतु यह विषय प्रौढ़ता पर आगे आनेवाला है।

मत्कवियों में भारतेंदु-काल में प्रतापनारायण मिश्र, ललित, श्रीधर पाठक, बलदेव आदि ऐसे महाशय थे, जो पूर्व नूतन परिपाटी-काल में भी रचना करते रहें। नूतन काल के मुकवियों में निम्न-महाशयों के नाम गिनाए जा सकते हैं—विशाल, द्विजराज, वज्रराज, अयोध्यासिंह उपाध्याय ( १९४७ ), कन्हैयालाल पोद्दार ( १९४७ ), जगन्नाथदास रत्नाकर ( १९४८ ), शिवविहारीलाल मिश्र ( १९४८ ), जगन्नीलाल ( १९४८ ), सुप्रराम चौबे ( १९४९ ), सीताराम उपाध्याय ( १९४९ ), रघुनाथप्रसाद शर्मा ( १९५० ), भागवतप्रसाद ( १९५० ), दामोदरसहायसिंह ( १९५१ ), जयदेवजी भाट ( १९५३ ), मथुराप्रसाद पांटेय ( १९५३ ), प्रबोधचंद ( १९५४ ), भगवानदीन मिश्र ( १९४४ ), बनवारीलाल ( १९५५ ), राय देवीप्रसाद पूण ( १९५५ ), अक्षय चट मिश्र ( १९५६ ), बक्सराम पाठे ( १९५८ ), समापति

( १६२८ ), रघुनाथसिंह ( १६२२ ), अजमेरीजी ( १६६० ), गयामसादजा सनेही ( १६६० ), देवनारायण ( १६६० ) आदि । हम ( रयामत्रिहारी मिश्र तथा शुक्रदेवविहारी मिश्र ) ने भी मिलकर प्राय ४०० पृष्ठों का पद्य-काव्य नाटकों से इतर बनाया है, जिसमें से प्राय १६० पृष्ठों की गड़ी वाली में कविता है और शेष अग्रधी तथा वज्रभाषा की । परिवर्तन काल में कविता गिरी दशा में रही और हरिश्चन्द्र-काल में कुछ उन्नति करके उसने पूर्व नूतन परिपाटी काल में बल धारण किया । लाला भगवानदीन आदि कई कवियों ने भी काव्य पर भी ध्यान दिया है । हमने भी लखनऊ शरिफ और बुंदेलखण्ड में भी काव्य करने का प्रयत्न किया है । पहले प्रथम में पौराणिक रीति पर ही काव्य है और दूसरे में आधुनिक रीति का युद्ध कथित है । उपयुक्त कविया में से कई वज्रभाषा में रचना करते हैं और कई स्वज्ञा बालों में ।

उत्कृष्टता इन दानों भाषाओं में अच्छी जा सकती है, किंतु खड़ी बोली की रचना नवीनता के कारण साधारण होने पर भी कुछ कुछ कमनीयता मंडित देख पड़ती है । साहित्य-नीरव के लिये नवीनता एक प्रकार से आवश्यक गुण है । वज्रभाषा में प्राय पाँच सौ वर्षों से नायिका-भेद का बंधन होता चला आया है, सो मय-के-सब भाव जूठ-से हो गए हैं । अब ठमी प्राचीन विषय पर घेपने चले जाने से भावों में नवीनता तथा वणन में चमत्कार लाना कठिन है । हमलिये जिन महाशयों को वज्रभाषा पर ममता हो, उन्हें प्राचीन प्रयानुरूप नायिका-भेद, नख शिख, अलंकार पदभ्रानु आदि के बंधन छोड़कर प्रयान्ता बदलनी होगी, नहीं तो गोस्वामाजी की कहावत उनका रचना पर चरितार्थ हो जायगी कि "जो प्रथम सुध नहीं आदरही, सो अम आदि बाल कवि करहीं ।" अब भी वज्रभाषा में उत्कृष्ट बंधन हो सकते हैं, किंतु

की अत्यधिक आवश्यकता है। कुछ महाशयों का विचार है कि यह व्रजभाषा का युग नहीं है। हम इस मत के विरोधी हैं। हाँ, विना योग्यता के रचना स्तुत्य कभी न योग्य। एबी बोली दिनोंदिन उन्नति करती जाती है, और भावों, प्रणालियों एवं भाषा, तीनों में नवीनता से भ्रित होने से रचियर होती है। उपयुक्त कवियों के शृङ्खल कथन यहाँ नहीं विण जाते हैं, क्योंकि आगे चलकर ऐसा किया ही जायगा, और इनमें से बहुतों की कृतियों के उदाहरण दे दिए गए हैं, जिससे पाठकगण स्वयं समझ सकते हैं कि उन लोगों में कैसा कवि-चमत्कार है। आजकल की कविता में देश प्रेम अधिकता से देख पड़ता है, जो योग्य भी है। प्राचीन विषय धीरे धीरे छूटते जा रहे हैं। कोरे मनोरंजक विषय कम होकर समाज का ध्या उपयोगी विषयों पर जा रहा है। सन् १९६० तक की कविता में खड़ी बोली के सामने व्रजभाषा का पद्य में बहुत अधिक प्रयोग है।

प्राचीन टीकाकारों में सूरत मिश्र, कृष्ण कवि, सरदार, गुलाब चारण, सीतारामशरण, ज्वालाप्रसाद मिश्र, विनायकराव, रामेश्वर भट्ट आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। पूर्व नूतन काल में जगन्नाथदास रत्नाकर (१९४८), मजरद भट्टाचार्य (१९५७), लाला भगवानदीन (१९५७), श्यामसुन्दरदास रात्री (१९५७) आदि के नाम आते हैं। रत्नाकरजी ने विहारी-रत्नाकर में विहारी-सतसई की सधमान्य अधच पांडित्य पूर्ण टीका की, तथा पाठ शोधन में भी रत्नाकर्य धम किया। लाला भगवानदीन ने भी विहारी और केशवदास पर धम किया। भट्टाचार्य ने अनेक टीका-ग्रथ रचे। श्यामसुन्दरदास ने चद-कृत रासो की पाद टिप्पणी आदि पद्म्याजी के साथ लिखीं। हम (श्याम-विहारी मिश्र तथा शुक्रदेवविहारी मिश्र) ने भूपण भधावली की, शुक टीका प्रचुर परिष्कृत से लिखी, शोधन, और गणेशविहारी मिश्र ने

( १६५८ ), रघुनाथसिंह ( १६५९ ), अन्नमेरौजी ( १६५९ )  
 गवामसादजा मनेही ( १६६० ) देवनारायण ( १६६० )  
 हम ( रयामजिहारी मिश्र तथा शुकरेशविहारी मिश्र )  
 मिलकर प्राय ४०० गृहों का पद्य-काव्य माटकों से इतर  
 है, जिसमें से प्रायः १६० गृहों की खड़ी बोली में कविता है और  
 श्रवणी तथा वज्रभाषा की । परिवर्तन काल में कविता गिरी दशा  
 रही और हरिश्चन्द्र-काल में कुछ उन्नति करके उसने पूर्व नृ  
 परिपाटी काल में बल धारण किया । खाला भगवानदीन आदि  
 कवियों ने वीर काव्य पर भी ध्यान दिया है । हमने भी जयकुरु  
 शरिय और यूर्दीपाराश में वीर काव्य करने का प्रयत्न किया है  
 पहले प्रथ में पौराणिक रीति पर वीर काव्य है और दूसरे में आधुनिक  
 रीति का युद्ध कथित है । उपयुक्त कविता में मैं कई वज्रभाषा  
 में रचना करते हूँ और कई खड़ी बोली में ।

उत्कृष्टता इन दोनों भाषाओं में अस्वीकार्य है, किंतु खड़ी  
 बोली की रचना नवीनता के कारण साधारण होने पर भी कुछ कुछ  
 कमनीयता महित दृश्य पड़ती है । साहित्य-भारत के लिये नवीनता  
 एक प्रकार से आवश्यक गुण है । वज्रभाषा में प्राय पाँच सौ वर्षों  
 से नायिका भेद का कथन होता चला आया है, सो सब-के-सब भाष  
 जूठ-से-ही गए हैं । अब उन्नी प्राचीन विषय पर चिपते चले जाने  
 से भावों में नवानता तथा बणन में चमत्कार लाना कठिन है ।  
 इमलिये गिन महाशय्या को वज्रभाषा पर समता हो, उन्हें प्राचीन  
 प्रधानरूप नायिका भेद, नाय शिष्य, चलकार पट्टभट्ट आदि  
 के बणन छोड़कर प्रयात्नी बदलनी होगी, नहीं तो गोस्वामीजी  
 की कहावत उनका रचना पर चम्तिार्थ हो जायगी कि "जो  
 प्रयत्न सुध नहीं आदर्ही, सो धम बादि बाल कवि करही ।" अब  
 भी वज्रभाषा में उत्कृष्ट बणन हो सकते हैं, किंतु

की अत्यधिक आवश्यकता है। कुछ महाशयों का विचार है कि यह ब्रजभाषा का युग नहीं है। हम इस मत के विरोधी हैं। हाँ, बिना योग्यता के रचना स्तुत्य कभी न बनेगी। रबड़ी बोली दिनोंदिन उन्नति करती जाता है, और भावों, प्रणालियों एवं भाषा, तीनों में नवीनता से मद्धित होने से रचिकर होती है। उपयुक्त कवियों के पृथक् पृथक् कथन यहाँ नहीं विष्ट जाते हैं, क्योंकि आगे चलकर ऐसा किया ही जायगा, और इनमें से यदुर्ता की कृतियों के उदाहरण दे दिष्ट गण हैं, जिससे पाठकगण स्वयं समझ सकते हैं कि उन लोगों में कैसा कवि-चमत्कार है। आजकल की कविता में देश-प्रेम अधिकता से देख पड़ता है, जो योग्य भी है। प्राचीन विषय धीरे-धीरे छूटते जा रहे हैं। कोरे मनोरञ्जक विषय कम होकर समाज का ध्यान उपयोगी विषयों पर जा रहा है। सबत् १९६० तक की कविता में रबड़ी बोली के सामने ब्रजभाषा का पद्य में बहुत अधिक प्रयोग है।

प्राचीन टीकाकारों में सूरत मिश्र, कृष्ण कवि, सरदार, गुलाब चारण, सीतारामशरण, ज्वालाप्रसाद मिश्र, विनायकराव, रामेश्वर भट्ट आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। पूर्व नूतन काल में जगन्नाथदास रत्नाञ्ज (१९४८), ब्रजरत्न भट्टाचार्य (१९५७), लाला भगवानदीन (१९५७), श्यामसुन्दरदास खत्री (१९५७) आदि के नाम आते हैं। रत्नाकरजी ने बिहारी-रत्नाञ्ज में बिहारी-सतसई की सवमान्य अथच पांडित्य-पूर्ण टीका की, तथा पाठ शोधन में भी रत्नाञ्ज्य श्रम किया। लाला भगवानदीन ने भी बिहारी और केशवदास पर श्रम किया। भट्टाचार्य ने अनेक टीका-ग्रंथ रचे। श्यामसुन्दरदास ने चद-कृत राश्रम की पाद टिप्पणी आदि पद्याजी के साथ लिखी। <sup>१</sup> ~~हम~~ / बिहारी मिश्र तथा शुकदेवबिहारी मिश्र) ने ऐतिहासिक एवं साहित्यिक टीका प्रचुर परिश्रम से शोधन में भी श्रम किया, और गणेशबिहारी मिश्र



पाद टिप्पण के साथ प्रकाशित कराईं। नूतन काळ में टीका का काम खप्या हुआ।

अनुवादकारों में इस काळ शरद्वद सोम ( १२४० ) तथा मथुराप्रसाद मिश्र के नाम आते हैं। सोम ने चारह सजनों द्वारा महा भारत का गवानुवाद कराया, तथा मिश्रनी ने कई ससृत और बेगला के प्रथा का अनुवाद किया। यह इतर अनुवादकारों भी हैं, जिनके नाम अत्र सवधों में बड़े गए हैं। निषधों में, भारतेंदु-काळ में, बालकृष्ण भट्ट तथा प्रतापनारायण मिश्र के परिधम सामने आते हैं, किंतु इनमें विशेष उत्कृष्ट नहीं है। पीछे गहमर निवासी गोपाल रामजा ने निषध रचे, और भीमसेन शमा भी अच्छे निषधकार हैं। इनका रचनाएँ पाश्चिम पूर्ण हैं। बाळमुद्दुदगुप्त-शृत शिवशमु का चिट्ठा मनोरजक निषध है। महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित बेरुन विचार रणायजी तथा निषध मालादश उपयोगा प्रथ है, किंतु अनुवाद मात्र होने से इनकी हिंदी में महत्ता नहीं है। सरदार पूर्णसिंह ने कुछ भावात्मक निषध हिंदी में लिखे जो श्रेष्ठ थे। इनके निषध पत्रिकाओं में लक्ष्य-मात्र थे, किंतु ये उत्कृष्ट। यारू रयामसुंदरदास ने कई अच्छे निषध रचे। बाला कलामल के दार्शनिक निषध उच्च कक्षा के हैं, किंतु उनमें कुछ कुछ मौलिकता ही कम समझी जाती है। हम (रयाम-विहारी मिश्र तथा शुक्दरविहारी मिश्र) ने आत्म शिक्षण-नामक दो बड़े से पृष्ठों का निषध लिखा, जो द्वितीयावृत्ति तक पहुँच चुका हिंदू धर्म पर हमारे निषध सुमनोंजलि तथा भारतवर्ष के प्रथा के साथ चार से पृष्ठों पर विस्तृत हैं। हम (शुकदेव के षण्ठ) ने हिंदी-साहित्य का भारताय इतिहास पर प्रभाव-की कहा और निषध पटना विश्वविद्यालय के लिये लिखकर प्रथम पुष्प के रूप में पढ़ा। यह ३३४ पृष्ठों भी मजभाषा

हमारे यहाँ निषध ग्रन्थ है तो अच्छे, किन्तु उस उच्च धेयी के नहीं हैं, जैसे अँगरेजी आदि में पाए जाते हैं । राजनीतिक विषयों का घोर उचित कारणों से भारत का ध्यान बहुत अधिक्ता से रखा हुआ है, किन्तु इस बात से अन्य उपकारी विषयों की उन्नति कुछ कुछ रुकी हुई अग्रसर है । यही दशा निषध की है । भारतीय हिंदी लेखक सङ्घ में है तो बहुत अधिक, किन्तु उनमें से बहुतों में स्वावलम्बन एवं विस्तृत ज्ञान की मात्रा घटी हुई है । ऐसे लोग की दशा बहुत करके शून्य-मनुकपत्त है, जो अपने परम मनीष सत्कार में आगे बढ़कर मानो कुछ जानते ही नहीं । हमारे यहाँ बीसवीं शताब्दी में भी ऐसे विषयों पर वाद विवाद हुआ करते हैं, ता उन्नत देशों में १५वीं १६वीं शताब्दी में ही निर्णीत हो गए थे । ऐसी दशा में उच्च कोटि के निषध आर्वे कहीं से ? अभी ज्ञान ही विस्तृत नहीं । आशा है, ऐसा समय भी शीघ्र ही आयेगा, जब हम लोग अपनी भाषा में सभी प्रकार के ग्रन्थ देंगे । समालोचना आदि भी निषध में ही आती है, किन्तु हमने इनके कथन अलग किए हैं । गणेशशाब्द से पुरातत्त्व-संबंधी ग्रन्थ भी नबध रचता है किन्तु हम यहाँ केवल साहित्यिक गणेशशाब्द का कथन करते हैं । इस संबध में भारतेंदु-काल में ठाकुर शिवसिंह नगर तथा डॉक्टर मर जॉन प्रियसन ने अच्छा श्रम किया । इधर पूर्व नूतन परिपाटी-काल में कुछ काम हम ( मिश्रबधु ) ने हिंदी ग्रंथों की खोज, मिश्रबधु विनोद तथा हिंदी-नवरत्न द्वारा किया, तथा यानू हीराबाल एवं यानू श्यामसुंदरदास खत्री ने भी रत्नाय परिश्रम किया है ।

समालोचना का कुछ-कुछ काम प्राचीन आचार्य लोग गुण-दोष कथन के अर्थों में करते आए थे, किन्तु उसे विशिष्ट गुण-दोष-कथन से बढ़कर समालोचना कहना शोभा नहीं देता । दायत्री ने

इस निरीक्षिका शक्ति को कुछ बढ़ावा । इधर आकर भारतेंदु-काँड में धर्तरीनारायण चौधरी ने इसका कुछ काम उठाया, किंतु वह गौरव न पा सका । महावीरप्रसाद द्विवेदी ने लाला मोताराम की 'एक पुस्तिका की कहने को तो समालोचना लिखी, किंतु वास्तव में वह समालोचना न होकर व्याकरण-संघर्षी दोष प्रदर्शन-मात्र था, सो भी अशिष्ट भाषा में । द्विवेदीजी उक्त कालिदास की निरकुशता बहुत बरके व्याकरण संघर्षी और कहा-कहीं शाब्दिक प्रयोगों पर विचार का निर्भर मात्र है । उनकी नैपथ्य-चरित चर्चा में समालोचना का कुछ रंग आया है, किंतु वह भी मर्याद रूपा नहीं है, क्योंकि यह भाषादि बाहरी घातों पर बहुत करने सीमित है, और भाव तक नहीं पहुँचता । हम लोगों ने हिंदी नवरत्न तथा मिश्रबधु विनोद में बहुत-से कवियों की पृथक्-पृथक् समालोचनाएँ कुछ विस्तृत रूप में लिखीं, तथा केवल सम्मति न देकर, कवियों की रचनाओं से उदाहरण सामने रखकर अपने कथनों को पुष्ट करने का प्रयत्न किया । अनंतर श्याम सुंदरदास ने भी हिंदी भाषा और साहित्य-नामक ग्रंथ में साहित्य मर्मज्ञों की रचनाओं पर आलोचनाएँ लिखीं जिनमें कहीं-कहीं मतभेद संभव है, किंतु अधिकतर स्थानों पर निष्पक्ष भाव से तथा शुद्ध समालोचना की गई है । इनमें विचारों के आधार-स्वरूप प्रमाण नहीं दिष्ट गण है जिससे सर्वमान्य कथन तो ठीक बैठते हैं, किंतु नवीन विचार निराधार-से हो जाते हैं । पंडित पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी की भली-शुरी कैसी भी प्रशंसा करने का बीड़ा ही उठाया था । कोई भी प्रमाण कैसा भी शिथिल हो, किंतु शर्माजी के लिये देव कवि को निम्न तथा बिहारी का स्तुत्य ठहराने को यह अलम् हाता था । बिहारी पर जो आपने बड़ा ग्रंथ प्रचुर परिश्रम से बनाया, वह श्लाघ्य होने पर भी अनुचित विचारों के भारी समारोह से बहुत कुछ दूषित है । शर्माजी प्रबल खेखक तथा भ्रमकर्ता आलोचक थे,

किंतु हम उह समालोचक नहीं कह सकते, क्योंकि दृष्ट्याद उनके विचारों में कुछ अधिक्ता से है। हिंदी में उर्दू-कवियों का कुछ ज्ञान शर्माजी लाए थे। लाला भगवानदीन की समालोचना भी कुछ-कुछ दृष्ट्याद लिए हुए थी, किंतु शर्माजी के समान नहीं। लालाजी समा-लोचक न होकर वास्तव में टीयाकार थे।

कई महाशय अनेक साहित्यकारों तथा साहित्य पर समालोचना लिखते हुए कुछ विषया पर पचास पचास, साठ-साठ पृष्ठा के निबध से लिख जाते हैं, और अतः में उदाहरण की भाँति आलोच्य कवियों अथवा साहित्यिक समय के रचयिताओं से दो चार मोटी-मोटी बातें कहकर समाप्त लेते हैं कि उन्होंने शिष्ट कवियों अथवा समयों के साहित्य की समालोचना कर डाली। वास्तव में यह समालोचना न होकर उन विषया पर निबध-मात्र होता है, जिनके कथन उन्होंने किए हैं। समालोचना में मुख्य वचन कवि का चाहिए, और उसी की रचना के साथ जहाँ कहीं अच्छे सिद्धांत मिलें, उनका सूक्ष्मता पूर्वक विवरण मिल देना उचित है। जहाँ कविता का वर्णन मुख्य तथा सिद्धांतों का गौण होगा, वहाँ साहित्य-समालोचना समझी जायगी, किंतु जहाँ सिद्धांतों का प्रचुर कथन होकर कविता का सूक्ष्म वर्णन उदाहरण की भाँति दे दिया जायगा, वहाँ साहित्यिक समा-लोचना के स्थान पर रचना-कथित सिद्धांतों पर निबध-मात्र मानी जायगी। बहुत-से समालोचक आजकल कवियों पर गाल-गोब्र शब्दों में सम्मति देने चल जाते हैं, किंतु उनका किसी कारण माला द्वारा समर्थन करते ही नहीं। कारण शून्य सम्मति कथन की ही से समालोचना कहकर सकारण कथन को समझाना-मात्र करते हैं। ऐसे विचार प्रत्यक्ष ही बोधे हैं, क्योंकि कारण शून्य कथनों का मानना-न मानना पाठ्य की विश्रुता पर अवलंबित है, न कि समा-लोचक के भाव प्रकटीकरण पर।

इतिहास के विषय पर हमारे प्राचीन कवियों ने परिश्रम नहीं किया। पुराण, भारत आदि परम प्राचीन ग्रंथ इतिहास ही हैं, किन्तु हिंदी में न जाने से हमसे असबद हैं। हमारे प्राचीन हिंदी कविया ने षष्ठ काव्य, रासो आदि रचे जो ऐतिहासिक मादित्य होने पर भा मिश्रुद्ध इतिहास नहीं हैं। इतिहास के लिये न केवल सत्य घटनाओं का कथन आवश्यक है, परन्तु समय का शुद्ध एवं सालवार निरूपण उसका प्राण ही है। हिंदी में इतिहास कथन भारतेंदु काल से प्रारंभ हुआ। उन्होंने स्वयं कई छेम छोटे ग्रंथ तथा जारन परिचय रचे। फिर भी साधारण कथनों के अतिरिक्त ये गवेषणात्मक न थे। हमारे सबसे प्राचीन इतिहास-लेखक महा महोपाध्याय रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंद शोभा ( १८२० ) हैं, जो अजमेरवाले अजायबघर के क्यूरेटर हैं। इतिहास आपका न केवल शौक, वरन् जीविज्ञा का भी साधन है। आरने कई अच्छे इतिहास ग्रंथ रचे हैं, जैसा कि आपके वित्कृत विवरण में लिखा गया है। इतना फिर भी समझ पड़ता है कि अंगरेजों की भाँति भारतीय गण्य मान्य महाशयों अथवा ग्रंथों को कल्पित प्रमाणित करने में आपको कुछ आनंद-सा आता है। लाला सीताराम ने अयोध्या का एक गवेषणा पूर्ण उत्कृष्ट इतिहास हाल ही में लिखा है। जोधपुरवाले मुशी देवीनसाद भी हमारे अन्तः गवेषणा पूर्ण इतिहासकार थे। लाला खानपतराय ने कुछ दिन हुए, प्राचीन भारत का एक भारी इतिहास रचा। पंडित हरिमगल मिश्र भी इतिहास लेखक थे, जिनका रचनारम-काल पूर्व नूतन परिपाटी में आता है। इस समय के अन्य लेखकों में निम्न लिखित सम्मनों के नाम गिनाए जा सकते हैं—हरिचरणसिंह ( १८४० ) हनुमंतसिंह ( १८४७ ), रामचंद्र दुबे ( १८५५ ), गंगाप्रसाद गुप्त ( १८५७ ), कमलाप्रसाद ( १८५६ ), बदरीप्रसाद त्रिपाठी ( १८५६ ) सुंदरबाब

( १९२६ ) तथा श्रीरामनेत ( १९६० ) । इन सब महाशयों ने इतिहास विभाग पर श्लाघ्य परिश्रम किया है । इनके विवरण आगे कुछ विस्तार में मिलेंगे । हम ( श्यामविहारी मिश्र तथा शुकदेवविहारी मिश्र ) ने दो भागों में प्राचीन भारत का इतिहास रचा । पहले खंड में प्राय २०० पृष्ठों में ६००० स० पूर्व से ६०० स० पूर्व तक का विवरण है, तथा दूसरे में ६०० सवत् पूर्व से मुसलमान विजय तक का । आकार में दोनों भाग प्राय बराबर हैं । इनके अतिरिक्त दो और छोटे-छोटे इतिहास ग्रंथ हमने लिखे, तथा कई का संपादन किया ।

जीवन-चरित्र-रचयिताओं में सबसे पहले यदु आदर के माय महात्मा श्रद्धानंद का नाम आता है । आप भारतेंदु-काल में थे । आपने कई परमात्पृष्ट जीवन-चरित्र रचे । ज्यादयाता भी आप यदु ही उत्पृष्ट थे । शिवनंदनसहाय ने गोस्वामी तुलसीदास तथा भारतेंदु के बहुत ही श्रेष्ठ जीव-चरित्र लिखे ।

पूर्व नूतन परिपाटी काल में अबिहासदा त्रिपाठी ( १९४६ ), गोपालवल्लभ ( १९२३ ), श्यामसुंदरदास ( १९२७ ) तथा सूर्यकुमार वर्मा ( १९६० ) के नाम आते हैं । उपयुक्त प्रथम दो लेखक माधारण हैं, तथा सूर्यकुमार वर्मा ने इनसे बढ़कर जीवन-चरित्र बनाए हैं । श्यामसुंदरदास ने हिंदी-कोविद-रत्नमाला में ८० लेखकों के जीवन चरित्र लिखे, किंतु वे छाटे-छाटे लेख हैं । यादू मज्जनंदनसहाय ( १९२६ ) ने चार बहिया जीवन-चरित्र रचे हैं । इस काल में इतिहास की अग पुष्टि तो अच्छी हुई, किंतु जीवन-चरित्रों में तादृश उन्नति न हो सकी । पुरातत्व विभाग में भारतेंदु-कालवाले श्रीमाजी तो प्रस्तुत हैं, किंतु कोई नवीन भारी लेखक न हुआ ।

अब भाषा-सवधी उन्नति का कुछ ध्यान किया जाता है । हमारे

यहाँ पद्य-रचना तो प्राचीन काल से होती आई थी, किंतु गद्य का साहित्य में पहले-पहले प्रयोग ज्योतिरीश्वर गुरु ने किया। गद्योपधि का कुछ कथन हमने प्रथम भाग के संक्षिप्त इतिहास प्रकरण में किया है। उन बातों को यहाँ दोहराना अनावश्यक है। उत्तरालंकृत काल में नज़ीर अकबराबादी, सदासुखलाल, इशाअता, लख्खुजी लाल और सदा मिश्र के समय से गद्य में खड़ी बोली का प्रचार बढ़ा। नज़ीर सुसज्जमान होकर भा कृष्ण भक्त थे। सदासुखलाल ने बहुत करके भाव व्यंजना में कुट्ट गभारता युक्त परिष्कृत रूप में शुद्ध खड़ी बोली लिखी, किंतु उसमें पंडिताऊपन का कुछ पुट था। इशाअता ने प्रायः उन्नीसवीं शताब्दी के समान विशुद्ध हिंदी लिखी, जिसमें भाषा सवर्धा अलंकारों का भी समावेश था। इनमें शब्दों के अतिरिक्त उर्दू वाक्य-योजना भी थी। इनकी भावभंगी ण्य शैली चमत्कृत अथवा नवीनता मण्डित थी, किंतु इनके लेखों में भारतीयता कम थी। इनकी चमत्कृत तथा हँसा पूर्य प्रणाली गभीर विषयों के अयोग्य थी। लख्खुजी लाल मजभाषा मिश्रित खड़ी बोली लिखते थे, और सदा मिश्र पूर्वी पुट लिए हुए शुद्धतर खड़ी बोली। लख्खुजी लाल ने अपनी मधुर, किंतु कुछ शिथिल भाषा से उर्दूपन बचाया। सदा मिश्र खाली भाव प्रकाशन की पद्धति स्तुत्य थी किंतु फिर भी इस काल की भाषा अ-व्यवस्थित, अनियंत्रित, प्रतिक्रान्ता युक्त अथवा भाव प्रकाश में निवृत्त थी। उसमें अनेकरूपता पाई जाती है। इनके पीछे ईसाई लेखकों ने विशुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग किया। इनके शब्दों तथा वाक्यों में उर्दू का बहिष्कार तथा हिंदीपन का आदर था। इन लोगों ने ग्रामीण शब्द तक लिखकर उर्दूपन बचाया। अनंतर राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह, स्वामी दयानंद और भारतेन्दु के समय आते हैं। इनमें से शिवप्रसाद ने लिखड़ी (उर्दू मिश्रित) हिंदी चलानी चाही, किंतु शेष लेखकों के उद्योग से शुद्ध हिंदी ही

लोक-व्यवहान हुए। भारतेंदु साधारण सरल मिश्रित शुद्ध  
 बड़ी वाली लिखते थे, जिसमें मङ्गलपत्र या उद्‌घोषण की  
 भाषा नहीं होती थी। भारतेंदु-काल में भाषा को शक्ति  
 और दीप्ति प्राप्त हुई, तथा गद्य ने उत्कृष्ट रूप धारण किया।  
 उनके पीछे प्रतापनारायण मिश्र की नाया चुटकुलेबाजी लिए हुए  
 प्रबुद्ध उच्चरती दृढ़ती चलती थी, जिसमें आलोचन की भाषा अच्छी  
 थी। भारतेंदु-काल के उपर्युक्त कवियों और लेखकों ने प्रायः उन्हीं  
 की-सी हिंदी का व्यवहार किया, जिसमें समय के साथ कुछ संस्कृत  
 पद प्रयुक्त हुए। महावीरप्रसाद द्विवेदी सबल लेखक हैं। श्रीधर  
 पाठक बहुत फरके पद्य लेखक थे। पुरोहित गोपीनाथ भी उच्च भाषा  
 का व्यवहार करने थे। पूँ नूतन काल में अयोध्यासिंह उपाध्याय  
 उत्कृष्ट गद्य-लेखक हैं। अन्य अनेकानेक श्रेष्ठ गद्य-लेखकों के नाम अन्य  
 स्थानों में ऊपर आ चुके हैं, जिनमें भुवनेश्वर मिश्र (१९४६),  
 रामनारायण मिश्र (१९४६), नैनेंद्र किशोर (१९५०), गदाधरसिंह  
 (१९५१), गंगाप्रसाद अग्निहोत्रा (१९५२) और नरदेव शास्त्री  
 (१९६०) के भी नाम विशेषतया गिनाए जा सकते हैं। धर्म साहित्य  
 के विषय में अधिकतम व्यास तथा श्यामसुंदरदास ने गद्य-काव्य  
 मीमांसा अथवा साहित्यालोचन में अच्छे प्रकार से प्रकाश डाला है।  
 कामताप्रसाद गुरु (१९५०) ने व्याकरण पर अच्छा परिश्रम किया।  
 आपने अंगरेजी के ढंग पर हिंदी-व्याकरण को चलाया है, जिसमें  
 कई स्थानों पर संस्कृत के उन नियमों का भी स्थान दे दिया है, जो  
 हिंदी से संबद्ध हो गए हैं। इनके व्याकरण में भाषा के गूढ़ीकरण  
 की ओर दृष्टि नहीं है, किंतु संस्कृतपत्र की ओर रमण है, तथा  
 अनावश्यक विस्तार भी उसमें पाया जाता है। आपने भाषा भास्कर  
 से बहुत कुछ लाभ उठाया है, तो भी आपका श्रम रक्षणी है।  
 आयावादी कविता का ओर अभी तक नहीं उठा है। एषनेश मिश्र



तथा रामनाथ ज्योतिषी ( १९५१ ) ने नवीन विषयों पर कुछ रचना की। यही दश उमरावसिंह कारणिक ( १९४६ ) की है। महावीर प्रसाद ( १९५० ) ने वैद्यक के विषय पर ग्रंथ-रचना की, तथा गंगाप्रसाद एम्. ए. ( १९५६ ) ने हिंदी तथा अँगरेज़ी में धार्मिक और ज्योतिषीय विषयों पर पांडित्यपूर्ण ग्रंथ लिखे।

आगे से हमारे प्रसिद्ध तथा अप्रसिद्ध कवियों एवं लेखकों के पृथक् वर्णन चलते हैं। जिन सज्जनों के कथन मुख्य भाग में आए हैं, वे विशेषतया महत्ता युक्त हैं। जिनके वर्णन चक्र में हैं, उनमें से भी बहुतेरे अथवा कुछ ऐसे ही होंगे, किंतु उन सबके ग्रंथों का पठन हम कहीं-कहीं भली भाँति नहीं कर सके हैं। यदि ऐसा होता, तो संभवतः चक्र के भी कुछ लेखक मुख्य भाग में आ जाते। समय लिखने में प्रत्येक कवि के रचनारस का ही कल लिखने का प्रयत्न किया गया है। प्रायः सब एक ही दिया गया है, जिससे चारम काज का ही प्रयोजन लेना चाहिए।

स० १९४५ ५० के मुख्य रचयिताओं के विवरण

समय—संवत् १९४५

नाम—( ३४६५ ) इश्वरी ( ईसरी ) बगौरा ( छतरपुर )।

जन्म स० अनुमानत १९२०।

कविता-काल—१९४५।

विवरण—छतरभुज नगरदार के कारिदा थे, जैसा कि एक स्वच्छ पर आपने कहा भी है—

“छतरदार चतुरभुजज के हम कारदा आपणें।”

आपकी रचना छतरपुर में बहुत प्रसिद्ध है और लोग इसे ग्रामों में बहुत गाते हैं। भाषा ठेठ बुदेखखंडी है।

उदाहरण—

बखरी१ रह्यतर हैं भारे की ,  
 दई पिया प्यारे की ।  
 कधी भौत उठी माँटी की ,  
 छई पूस चारे की । बखरी०  
 बेबदेन३ बड़ी येवाडा ,  
 जेह में दस द्वारे की । बखरी०  
 नहीं कियार कियरिया एझी,  
 बिना कुची तारे की४ । बखरी०  
 'ईसुर'चाए निऊरें निदिनाँ,  
 हमे कौन उवारे५ की । बखरी०  
 जय से भइ प्रीत की पीरा ,  
 खुशी नहीं जोद नीरा७ ।

पूरा माटी भयो फिरत हं, इते उते मन हीरा ,  
 कमती आ गइ रकत माम की, यहो दगन ते नीरा ।  
 फूँकत जात धिरइ की आगी, सूखत जात शरीरा ।  
 योई नीम में मानत ईसुर, योई नीम की कीरा ।

× × ×

हम वै बैरिन यरसा आईं,  
 हमे यचा जेव माई ।  
 घद के घटा घटा ना देखें,  
 पटा देव भगनाई ।

१ बखरी = घर । २ रह्यतर = रहियत, रहते हैं । ३ बेबदेन =  
 बिना रोक की । ४ कुची-तारे की = कुजी-नाके की । ५ उवारे की = सुमौने  
 की । ६ जो = यह । ७ जीरा = जिरा, जी ।

यार तथा घराना प्रतिष्ठा-पूर्ण है, और तेरे कहैयासावनी के लक्ष्म से यह घराना विशेष कीर्ति-सखा हुआ है।

सेठजी शब्दे विद्वान् हैं। आपकी साहित्यिक सेवा हिन्दी-महात् में महत्त्व-पूर्ण है। स० १९२० में 'भर्तृहरि-शतक' का सेठजी-द्वारा हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित हुआ। इससे अतिरिक्त आपने 'गंगाधररी', 'हिन्दी-भक्त-विमल', 'पचगीत' आदि अनुवादिन ग्रन्थ बनाए। 'पचगीत' से अभिप्राय श्रीमद्भागवत के कई अध्यायों के समरलोकी अनुवाद का है। आपकी विशेष महत्त्वपूर्ण रचनाओं में सल्लकार-प्रकारा और 'काव्य-कल्पद्रुम' हैं। इनमें आपकी साहित्यिक आचार्यता का परिधय निराला है। मस्खली मासिक पत्रिका में इनकी 'प्रेम-सरावर', 'जोकिज', 'यशह का समुद्र-न' आदि स्फुट कविताएँ निकल चुकी हैं। 'महाकवि भारवि-शापक' आपका लक्ष्य विद्वत्ता-पूर्ण समझा जाता है। यह बड़े गौरव की बात है कि आपने व्यापारी कार्यों में व्यस्त रहने हुए भी सेठजी ने हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण सेवा की है और कर रहे हैं।

उदाहरण—

शक्ति पुजन की मद गुजा सो बन कुंजन मंथु बनाय रहीं ;  
 लगी अग अनग तरंगन सों रति रा उमग बनाय रहीं ।  
 विबसे सर कान कपित के रज रजन जै द्विरकाय रहीं ;  
 शक्ति मद सु-मद प्रभजन ये मकरद शरो दिशि छाव रहीं ।  
 नैदनदन के रिमत आनन पास लागी रहे कान सदा भर जी ;  
 अघरामृत कौ रस पान धरे अजतोपित सों न रहे परजी ।  
 कर जोरि कै तोहि प्रणाम करौ मुरली ! मुनु एक यही अरजी ,  
 मुरजापर सों मम दीन दश कहियो फिरि है उनका मरजी ।  
 उखत पीत उरोज लसै, युग दीरध घचक दीठि विहोक्ति ;  
 गेह की देहरी वै स्थित है, पिय आगम के उतसाह प्रलापित ।

कचन कुंभ कुसुम सने पट कचन धधनवार सुशोभित,  
मंगल में उपहार किण विन ही धम रंजमुनी समयोचित ।  
नाम—( ३४७३ ) किशोरीलाल गोस्वामी ।

शुदावन-वासा इन गास्वामीजी का जन्म स० १६२० में हुआ ।  
आप संस्कृत तथा हिंदी के बहुत अच्छे पंडित थे । आपने कई  
ग्रंथ संस्कृत में, प्राय १०० हिंदी ग्रंथ स्फुट विषयो पर, ६२ हिंदी-  
उपन्यास लिखे, और उपन्यास नामिक पुस्तक बहुत दिन तक  
लिखीं । लोग में आपकी हिंदी में संस्कृत के शब्दों का आदर  
रहता है, तथा उपन्यासों में साधारण भाषा का । आपने प्रेमरत्न-  
माझा-नाम्नी एक पद्य-रचना भी की है । इन्हींसे हिंदी-साहित्य  
सम्मेलन में आप सभापति थे । १६८६ में आपका शरीरान्त हो गया ।  
आपके उपन्यास योरपाय आदि ग्रंथों पर भी अत्यंत चिंतित हैं  
तथा कहीं-कहीं उनमें रसियायन की मात्रा कुछ बढ़ गई है । आपने  
उपदेशों पर अधिक ध्यान न देकर ऐसे उपन्यास लिखे हैं, जो ससार में  
प्रचलित ग्रंथ हैं । कुछ दिन आपको उनसे चार पाँच महान की  
वार्षिक आय रही थी । गोस्वामीजी हमारे परमोत्कृष्ट गुरुत्वों  
में से थे ।

नाम—( ३४७४ ) गणेशबिहारी

जन्म-काल सं० १६२२ ।

कविता-काल सं० १६४७ ।

विवरण—इनका जन्म सन् १६२२ में इटागा में हुआ था ।  
इनके पिता पंडित बालराम मिश्र प्रसिद्ध महाजन, जमींदार और  
कवि थे । इन्होंने बाल्यावस्था में हिंदी, संस्कृत और फारसी पढ़ी,  
और सन् १६३६ में इटागा में एक कपड़े की दुकान खोली, जो दस  
वर्ष तक चलती रही । स० १६४६ में पिताजी ने अरवस्थ होने के  
कारण घर का काम करना छोड़ दिया । उसी समय से दुकान उठाकर

यह घर का काम-काज सँभालने लगे। इनके बड़े पुत्र राजकिशोर अमरिका से इन्जिनियरी की शिक्षा प्राप्त कर लपड़े की मिलों में उच्च पद पर हैं। इनके दो विवाह प्रायः पीछे हुए, पर दोनों द्वितीय पंचत्व को प्राप्त हो गईं। इन्होंने मित्रों के आग्रह पर भी तीसरा विवाह नहीं किया। आपने दूर-परि कृत प्रेम चद्रिका, राग-रत्न और सुजान-विनोद को टिप्पणी समेत संपादन करके नागरी प्रचारिणी सभा-प्रयत्नाला में प्रकाशित कराया। कुछ छंद भी इन्होंने बनाए हैं, पर इम धोर विशेष रुचि नहीं है। गद्य-रचना आप बहुत करते आए हैं। हिंदी नवरत्न और मिश्रबधु विनोद अपने दो भाद्यों के साथ आपने बनाए।

उदाहरण —

मथन लगे तब स्थितु देवपानत्र मिलि मारे,

कड़े प्रथोदश रव सरी परमा अति धारे।

लियो सधन तिन धाँटि कइयो तब विपम हलाहल,

लगे जरन सत्र लोक तूरी भाग्या धीरज बल।

तब पात क्रिया नहि विपम विप तीनि लोक नारन तरन,

सोइ आसुतोप सकट सकल हक्हु समु असरा मरन। १।

मन भावन छैन छुगीलो लखौ इत राधिका प्रम प्रभा सों सगी,

उत कान्ह बजावत नैसुरिया दुहुँ शौरन सों सुपमा है धनी।

इत राधिका भूलत भूला भल, समकें जुत भूपण जामें कनी।

बरी हीरन सों गहने पहने छवि देखिण जोरी अनूर धारी।

नाम—( ३४७५ ) ठाकूरप्रसाद खत्री, काशी।

इनका जन्म स० १९२२ में हुआ। आपने काशी नागरी प्रचारिणी सभा में बहुत दिन काम किया, तथा वैपारी और कारवारी-नामक पत्र भी निकाला, जो बड़ा उपयोगी था। व्यापार आदि उपयोगी विषयों पर कई पुस्तकें लिखीं, और इसी प्रकार के बड़िया खेल लिखने

पर सभा से पदक आदि भी पाए । आपके निम्न लिखित ग्रंथ हमने देखे हैं—लखनऊ की नयागी, हमारा प्राचीन ज्योतिष, करदा, सुधड़ दरजिन, मिस्ट्रीज़ कोर्ट ऑफ़ लदन के कुछ अंश का अनुवाद और न्यापारिक कोश । आप एक सच्चन पुरुष तथा मित्र बन्सल थे । चित्त की मत्राई आपमें आधिपत्य ले थी । आपकी रचनाओं में साहित्यिक गौरव पर ध्यान न होकर उपयोगिता पर था ।

नाम—( ३४७६ ) बालमुकुन्द गुप्त ।

जन्म-काल—स० १६२२ ।

रचना-काल—१६४४ ।

विवरण—इनका जन्म स० १६२२ में रोहतक जिले में हुआ । इनको हिंदी लेखन से सदैव बड़ी रचि थी, और इन्होंने पत्रों के संपादन से ही अपनी जीविका भी चलाइ । आपने सात वर्ष बगमाली का संपादन किया, और फिर भारतमित्र के आप जीवन-पर्यंत संपादक रहे । रंगवली नाटिका, हरिदास, शिवशम्भु का चिट्ठा, स्फुट कविता, खेलौना आदि पुस्तकें भी रचीं । इनकी गद्य और पद्य-रचनाओं में सजीवता तथा मज़ाक की मात्रा प्रबू थी, और वे बड़ी मनोरंजक होती थी । होली के अवध में ये टसू आदि प्रबू मार्के के बनाते थे । इनका शिवशम्भु का चिट्ठा एक बड़ा ही लोक प्रिय ग्रंथ है । गुप्तजी एक बड़े ही जिंदादिल लेखक थे तथा समालोचना भी अच्छी करते थे । इनका शरीरपात स० १६६४ में हुआ ।

उदाहरण—

हुए मारली पद पर पन्जे , बराबरिक के लग गए धरके ।  
बगमाली समझे पौ छुके , होली है भइ होली है ।  
बग-भग की बात चलाइ , काटा ने तकरीर सुनाइ ।  
तब मुरली ने तान लगाइ , होली है भइ होली है ।  
होना था सो हो गया भैया , अथ न मचायो तोया दैया ।

यह घर का काम-काज सँभालने लगे। इनके बड़े पुत्र राजकिशोर अमेरिका से इंजिनियरी की शिक्षा प्राप्त कर कपड़ों की मिलों में उच्च पद पर हैं। इनके दो विवाह आगे पीछे हुए, पर दोनों स्त्रियाँ पंचत्व का प्राप हो गईं। इन्होंने मिश्रों के आग्रह पर भी तीसरा विवाह नहीं किया। आपने दूरकृत प्रेम चक्रिका, राग-रत्नाकर और सुजान-विनोद को लिपिपी समेत संपादित करके नागरी प्रचारिणी सभा प्रथमाज्ञा में प्रकाशित कराया। कुछ छंद भी इन्होंने बनाए हैं, पर इन और विशय रचि नहीं है। गद्य-रचना आप बहुत करने आए हैं। हिंदी गवरल और मिश्रबधु विनोद अपने दो भाइयों के साथ आपने बनाए।

उदाहरण—

मयन लगे जब सिंधु देवनाग्न मिलि सारे,  
कड़े प्रयोदश रय सबै परभा अति घारे।  
लियो मयन तिन घाँटि कदवो तब विपम हलाहल,  
लग जरन सब लोक कूरि भाग्या धीरज बल।

गब पाग कियो जेहि विपम विप तीनि लोक तारन तरन,  
मोह आमुताप सकट मरल हस्तु सभु अतरन सरन। १।

मन मानन छेल छुपीलो लग्यो इत राधिका प्रेम प्रभा सों मना,  
उत काह बजावत दारुनिया दुहुँ गोरन सों सुपमा है धनी।  
इत राधिका भूलत भूला भल, चमकै इत भूषण जामै कनी;  
बड़ी हारन सों गहने पहने छवि देखिण जोरी अनूर धनी।

नाम—( १४०२ ) ठाकुरप्रसाद खत्री, फारसी।

इनका जन्म सं० ११२२ में हुआ। आपने काशी नागरी प्रचारिणी सभा में बहुत दिन काम किया, तथा पैवारी और फारवारी-नामक पत्र भी निकाला जो बड़ा उपयोगी था। व्यापार आदि उपयोगी विषयों पर कई पुस्तकें लिखीं, और इसी प्रकार के बहिया छेव लिखके

पर सभा से पदक आदि भी पाए । आपके निम्न लिखित ग्रंथ हमने देखे हैं—लखनऊ की नयागी, हमारा प्राचीन ज्योतिष, फरदा, सुघड़ बरगिा, मिस्त्रीज होट ऑफ़ लदन के कुछ अंश का अनुवाद और व्यापारिक कोश । आप एक सज्जन पुरुष तथा मित्र बन्सल थे । चित्त की सग्राई प्रापम आधिपत्य से थी । आपकी रचनाओं में साहित्यिक गौरव पर ध्यान न होकर उपयोगिता पर था ।

नाम—( ३४७६ ) बालमुकुन्द गुप्त ।

जन्म-काल—स० १६७२ ।

रचना-काल—१६४५ ।

विवरण—इनका जन्म स० १६२२ में रावतक जिले में हुआ । इनको हिंदी लेखन से सदैव बड़ी रुचि थी, और इन्होंने पत्रों के संपादन से ही अपनी जीविका भी चलाइ । आपने सात वर्ष बंगाली का संपादन किया, और फिर भारतमित्र के आप जीवन-पर्यंत संपादक रह । रत्नावली नाटिका, हरिदाम, शिवशु का चिट्ठा, स्फुट कविता, खेलौना आदि पुस्तकें भी रचीं । इनकी गद्य और पद्य रचनाओं में सर्जीधता तथा मज़ाज की मात्रा प्रबू थी, और वे बड़ी मनोरंजक होती थीं । होली के संबंध में ये सू आदि प्रबू मार्के के बगाले थे । इनका शिवशु का चिट्ठा एक बड़ा ही लोक प्रिय ग्रंथ है । गुप्तजी एक बड़े ही जिंदादिल लेखक थे तथा समालोचना भी अच्छी करते थे । इनका शरीरपात स० १६६४ में हुआ ।

उदाहरण—

हुए मारली पद पर पंचे , बराबरिक के लग गए धरके ।  
बगाली समझे पौ छुके , होती हे भइ होली है ।  
धग भग की बात चलाइ , फाटा ने तकरीर सुनाइ ।  
तब मुरली ने तान लगाई , होली है भइ होनी हे ।  
होना था सो हो गया भैया , अब न मचाओ तोबा दैया ।



घर को जाओ तेउँ यलैया , होली है भइ होली है ।  
 जैसे खियरल जैसे टारी , जो परनाला सोई मारी ।  
 दोगा का है पय अघोरी , होली है भइ होली है ।

नाम—( ३१०७ ) राधागृष्णदाम ।

यह महाशय काशी के रहनेवाले वैश्य तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र के फुंरे भाई थे । इनकी मृत्यु २ एप्रिल स० १९६४ में, फेरब ४२ वष की आयुसा भ, हो गई । स्वयं भारतेंदु ने इन्हें, हिंदी लिखने को प्रोत्साहित किया था और धीरे धीरे यह विशद हिंदी लिखने भी लगे थे । यह महाशय बट ही सत्ता पुरप और हमारे मित्र थे । इनसे मिलकर चित्त प्रसन्न हो जाता था । इन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा की सदैव सहायता की । यह उसके कुछ समय तक मंत्री और प्रथमालाक संपादक रह । हमारे बाबू साहय फाय्य पर भी विशेष ध्यान रखते थे । बहुत से प्राचीन कविता का भोग-बहुत हाल भी इन्होंने लिखा है । आपन भारतेंदुजी के फालचक्र, प्रशस्ति समग्र, सती प्रताप राजसिंह आदि अरूरे प्रभा को पूरा किया । इनके रचित प्रथा के नाम नीचे लिख जाते हैं—

धाय चरितामृत, धर्मालाप भरता क्या न करता, श्वणलता, बापा रावल, दु खिनी वाला, नि सहाय हिंदू सामयिक पत्रों का इतिहास, बाबू हरिश्चंद्र, सूरदाम, नागरीदान और विहारीलाल के सक्षित जीवन चरित महारानी प्रभावती, राजस्थान बेसरी नाटक, हुंश नदिनी महाराणा प्रताप आदि । इन्होंने नहुप नाटक, सूरसागर और भद्र नामावली का संपादन भी अच्छे प्रकार किया । इनका गद्य अच्छा होता था और पद्य भी यह साधारणतया अच्छा लिखते थे । इनके नाटक रचित हैं, पर उनमें कहीं-कहीं भारतेंदु के नाटकों की छाया आ गई है । बाबू साहय एक प्रकृत लेखक और अमशील साहित्यिक पुरुष थे ।

उदाहरण—

हे-ह रॉर सिरामणि मय सरदार हमारे,  
हे विरक्ति-सहचर प्रताप के प्रापियारे ;  
तय भुज-बल सा मैं भया रखा करन समर्थ,  
मातृ भूमि स्वार्थीनता प्रयत्न शत्रु करि ध्यर्थ ।

अपेक्षन कष्ट सहि ।

या प्रताप ने उचित कड़ा कै अनुचित भाग्यो,  
पर स्वतंत्रता-हत जगत-मुल नृ सम भाग्यो ;  
दाय महल रॉटल विण मुग्य सामान विहाय,  
छाति बना का धूरि को गिरि गिरि में टकराय ।

जनम-दुग्य भेलि कै ।

नाम—( ३४०८ ) शरच्चद्र सोम ।

इन्होंने बारह पद्धिता द्वारा समस्त १८ पव महाभारत को, प्रति श्लोक अनुवाद कराके सं० १९४७ में प्रकाशित किया । यह ग्रंथ यह ही महत्त्व का है । इसकी भाषा भी सरल और सुहावनी है । काशी त्रेश का महाभारत छद्मोद्भूत है, और कुछ संक्षेप से लिखा गया है, परंतु इसमें महाभारत के सद्गुण ग्लोको का अनुवाद साधु भाषा में किया गया है । यदि इसमें अनुवादकर्ता पद्धितों के नाम भी दे दिए जाते, तो कोई हज न होता । इस तरह जान नहीं पड़ता कि कौन किसकी रचना है ? सोम महाशय ने यह काम बड़ा ही उत्तम किया कि भिन्न भाषा भाषी होकर भी उन्होंने महाभारत-सरीखे भारा तथा लाभकारी ग्रंथ को हिंदी में लिखवाकर प्रकाशित किया । इसके लिये यह समस्त हिंदी जानने-जातों के धन्यवाद के पात्र है । उदाहरणार्थ हम थाड़ा-सा अनुवाद यहाँ पर देते हैं—

श्रीवैशंपायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय ! इस प्रकार कुरु-कुल-भेष्ट पाद्यों ने अपने संगियों के सहित प्रसन्न होकर अभिमन्यु का

विवाह किया, फिर रात्रि भर सुख से अपने घर में रहे और प्रातः काल होते ही राजा विराट की सभा में आए। वह राजा विराट की सभा मणियों से गिंचा हुआ, फूल की मालाओं से सुशोभित और सुगंधित जल से डिंकी था। उनी में सब राजाओं में श्रेष्ठ पांडव लाग आरू यडे। उनके बेटे ही सब राजाओं से पूजित बूडे महाराज विराट और द्रुपद आसनों पर बडे। उनके परचार श्रीकृष्ण बडे। द्रुपद के पाप कृतवर्मा और धलदेव बडे। राजा विराट के पाप महाराज युधिष्ठिर बडे। राजा द्रुपद के सब पुत्र, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, प्रद्युम्न, साव, अभिमन्यु और राजा विराट के महारथीर पुत्र, ये सब एक स्थान पर बडे। पांडवों के तुल्य रूपान् और पराक्रमी द्रौपदी के पाँचा महावीर पुत्र मणिचरित सोने के सिंहासनों पर बडे। जब उत्तम वख और आभूषणधारी राजा लोग अपने अपने योग्य आसनों पर बैठ चुके, तब वह राजाओं मे भरी सभा ऐसे शोभित हुई, जैसे निमल तारों से भरा आकाश साक्षता है।

समय—सन् १६४८

नाम—( ३४०६ ) जगन्नाथदास रत्नाकर ची० ए० ( धैर्य ), काशी।

जन्म-काल—स० १६२३।

कविता-काल—स० १६४८।

विवरण—रुत काल आप अयोध्या नरेश के यहाँ निजी अमात्य ( प्राइवेट सेक्रेटरी ) रहे। आपने हिंदोला, समालोचनादर्श, साहित्य रत्नाकर, घनाक्षरी नियम-रत्नाकर और हरिश्चंद्र तथा उद्धव-शतक-नामक ग्रंथ रचे। कई वर्ष तक आपने 'साहित्य-सुधानिधि' नाम्नी मासिक पत्रिका का संपादन किया। आप ब्रजभाषा के एक उत्कृष्ट कवि थे। विहारी-रत्नाकर आपका अरुदा टीका ग्रंथ है।

गगावतरण, काव्य पर आपको हिंदी पेन्डेडेमी से २०० २० पुरस्कार में मिले । आप सूर-सागर को शुद्धता पूर्वक संपादित करने में व्यस्त थे कि १९८६ में आपका शरीरांत हो गया । आपकी रचना पद्मावरी ङग की समझी जाती है । उसमें पुराने प्रकार के साहित्यिक भाव प्रासुर्य से हैं । आपके छंद तथा भाव प्राचीन कवियों की शैली लिए हुए होते थे, किंतु ऐसे कथन और निचार प्राचीन काल से कई बार फहे जाने के कारण अब कुछ आरौचन शून्य और फीके लगने लगे हैं । आपमें प्राचीन प्रथा का साहित्य-गौरव ग्वासा था, किंतु नवीनता की कमी से कुछ फीकापन भ्रलक जाता था । हमारे प्राचीन मित्र थे और जब लापनऊ आते थे, तब हमने प्राय मिल लेते थे तथा देर तक बातें करते थे । आपके छंदा में उमग की मात्रा पदमैत्री-युक्त अर्द्धी थी । गगावतरण, हरिरचष्ट आदि रचनाएँ सभ्य-समाज में आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं । सूर और बिहारा पर रवकार-जी ने अच्छा परिश्रम किया था ।

नाम—( ३४८० ) जगलीलाल भट्ट ( जगली ), पैंतेपुर, जिला सीतापुर ।

रचना—स्फुट काव्य ।

जन्म-काल—स० १९२३ ।

समय—१९४८ ।

विवरण—यह सीतापुर में शिक्षक हैं । कविता सरस तथा उद्दृष्ट करते हैं । कोई प्रय नहीं बनाया है, परंतु स्फुट छंद बहुत से रचे हैं ।

उदाहरण—

विलुलित थलकें ललित भाल बाल मुख  
वनक बिसाल महताबी दरसति है,  
लोभी लक लचनि नचनि चितवनि खल  
चचल तुरग-सी सितायी दरसति है ।

सौरभित फूल-सी अमूल सुष-मूल दुति ।  
जगती दुकूल में न दावी दरमति है ।  
फावी सित कचुवी में उरज सहावी श्राव  
ऊपर अयूरध गुल्लावी दरसति है ।

नाम—( ३४८१ ) नेषमीनदन गत्री, काशी निवासी ।

जन्म-काल—स० १११८ ( मुजफ्फरपुर में )

कविता-काल—स० ११४८ के लगभग ।

विवरण—२४ वर्ष की अवस्था तक यह मुजफ्फरपुर एव गया जिले में रह और इसका पीछे काशी में रहने लगे । इन्होंने जगलों की अच्छी सैर की थी । अपने देखे हुए स्थानों एवं जंगलों का वर्णन इन्होंने अपने उपन्यासों में प्रत्यक्ष किया । इनके बनाए हुए चद्रकाता, चद्रकाता सतति, नरेंद्रमोहिनी, कुसुम कुमारी, वीरेंद्रवीर, काजर की पत्नी, भूतनाथ आदि उपन्यास परम लोकप्रिय एवं मनोहर हैं । इनके उपन्यास ऐसे राचक हैं कि बहुत-से लोग ने उन्हें पढ़ने ही को हिंदी सीखा । इन्होंने पंडित माधवप्रसाद के मपादकत्व में सुदर्शन नामक एक मासिक पत्र भी निकाला था, पर वह बंद हो गया । इनकी इला इला हिन्दी में बहुत से उपन्यास लेखक हो गए हैं, और इस विभाग की अच्छी पूर्ति हुई है । इनके उपन्यासों में अत्यंत यत्न बहुत रहती है, जो अनुचित है । इनकी भाषा बहुत सरल होती है और वह मनोहर भी है । इनके उपन्यासों में लोक-हित-साधन का बहुत विचार नहीं रहता । इनका शरीरपात हो चुका है । इनके पहले तिलिस्म रूप यदनने से "उत्तित्व का दिग्दर्शक बदलाव आदि का पूर्वरूप रोगाण्ड्य की पीतलमाली मूर्ति नामक उपन्यास में है । ऐसे ही विचार कुछ अन्य योरपीय उपन्यासों में हैं । किसानों याज्ञान में प्यारी का पूर्वरूप है । स० ११५३वाले एक वैष्णवता विषयक हिंदी के उपन्यास में प्यारी बड़ी हुई है । यह बहुत बड़ा ग्रंथ है ।

फिर भी बाबू साहय ने चद्रवांता तथा चद्रकांता-मत्तति में तिलिस्म और ऐयारी को बहुत रोचक रूप से पता बसाया है, जैसा इनके पूर्व यत्नी लेखकों ने न कर पाया था। इस प्रकार के और भी बहुतोंरे ग्रंथ इतरा न बनाए, पर उन यूँदों भेंट न कर सके। भूतनाथ में तिलिस्म और घग्नाभा के रहस्य इतने बड़े गए हैं कि कोई घटना बड़ होती ही नहीं। भूतनाथ अधिकाधिक घग्ना-नोपन से विद्वुल विगड़ गया है। बाबू साहय ने इमथा आदिम भाग ही लिखा भी था और पीछे का विगड़ा हुआ भाग हारों का है। चद्रवांता-संतति इनकी सर्वोत्कृष्ट रचना है।

नाम—( ३७८२ ) भोगवतीश्री ।

ग्रंथ—मतमत प्रकाशिका ।

मृत्यु काल—स० १६७३ ।

विवरण—यह मुंगेर जिल्लागत गोगरी के बाबू मंतरामजी की स्त्री थी। इस समय इनके दूकानोंते पुत्र बाबू जयदेवरामजी बनेली-राज्य में एक उच्च कर्मचारी हैं। इनकी कविता भक्ति-रस की है।

उदाहरण—

विनय सुनहु मेरी मातु भवानी ।

मैं धृति दीन मतीन हीन मति, दयहु दुखित गार्हि जानी ।

कृपा करहु भव पार उतारहु, दहु चरण गुण-खानी ।

सुखि पदारथ तव धरखन म, पावहि सुर, गुनि जानी ।

पद पकन रा दहु कृपा करि, निन किहरि मोहि जानी ।

शुभ निशुभ का नाश क्रियो तुम देवन ग्राम मिटानी ।

हरहु मोच मोहि पार लगावहु, दया करहु रदानी ।

नाम—( ३४८३ ) रामदास गौड एम० ए०, बनारस ।

जन्म-काल—सं० १६३८ ।

रचना काल—स० १६४८ ।

ग्रन्थ—( १ ) सक्षिप्त रामायण (अप्रकाशित), ( २ ) स्वप्नादर्श,  
( ३ ) राष्ट्रीय शिक्षावली ( सात पुस्तकें ), ( ४ ) हिंदी कं ज्ञात  
ग्रन्थों की सूची ( अँगरेज़ी में ), ( ५ ) भारी भ्रम ( The Great  
Illusion का अनुवाद ), ( ६ ) विज्ञान की हिंदी-उर्दू-बादें ।

विवरण—आप जाति के कायस्थ मुशी ललिताप्रसादजी के पुत्र  
हैं । आपने शिक्षा सेंट्रल हिंदू-कॉलेज, बनारस तथा म्योर सेंट्रल  
कॉलेज, इलाहाबाद में प्राप्त की । इन्होंने दस वष की अवस्था ही  
में सक्षिप्त रामायण नामक एक काव्य ग्रन्थ, जो कि ऊपर दिया हुआ  
है, रचा । यह हिंदी गद्य तथा पद्य दोनों के लेखक हैं । दर्शन, इति  
हास, विज्ञान, साहित्य आदि विषयों में इन्होंने व्यापारण ज्ञान प्राप्त  
किया है । आप एक कट्टर देश भक्त तथा स्वतंत्रता प्रेमी हैं । कायस्थ  
पाठशाला, इलाहाबाद के रसायन विभाग के प्रोफेसर आप कई  
वर्षों तक रहे । हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस से इनका संबन्ध प्राच्य  
विभाग में रामायण के प्रोफेसर के नाते बहुत समय तक रहा । आपकी  
रचना देश भक्ति लिपि, दृष्ट सुपाठ्य तथा सुंदर होती है । ( धीयुत-  
रघुवरदयालजी मिश्र द्वारा ज्ञात ) ।

उदाहरण—

वद भारतवपमुदारम् ।

पावन आय भूमि मनभावन सरसावन सुख-सारम् ।  
हिमगिरि सेत मुष्ट सम भोजत सुर प्रभून वरसावत,  
सरन दीप जिमि कमल चरन पर सागर पाद्य दिवावत ।  
धमनी सिरा मनहुँ धन सरिता बहत अमिय की धारा,  
तैतिल कोटि बमत सुर धन तरु रोमावली अपारा ।  
गो, गज, यागि, रतन, अयर धन अन्न अमल जल पूरे,  
मुग्ध मनन धन नगर मनोहर हरित सस्पमय ररे ।  
निज व्यवसाय निरत सुचरित जन दखइ फलुप तें न्यारे,

सत्य सिपाह स्नेह की बेधी नहीं व्यभिचार निहारे ।  
 देम-देस के प्रानी जीवत तेरी ही भुज छाया,  
 भए कर्नाटे रागि सकत नहीं तय सहाय विा काया ।  
 देशनात अर पात्र चीह के दाा मुश पर दीजे,  
 लुटे न काप, अटे सपति, निज धम रहे सोह कीजे ।  
 नीच लुटेरे ना फट्टुं ताके तेरी दिसि निरर्द्धाई,  
 तैतिस कोरि उटै निमक भुज, तर्न थर हं भाई ।  
 आप धन के लोभ पाप तें यिनमे शत्रु घनेरे,  
 जनपद तेरोट तुहा प्रापति, छत्र सीस इक तेरे ।  
 नाम—( ३४८४ ) शिवविहारोलाल मिश्र ।

जन्म-काल—सं० १६१७ ।

पविता-काल—१६४८ के लगभग ।

विवरण—आपका जन्म सवत् १६१७ म इटाजा ग्राम में हुआ था । आपके पिता पंडित बालदत्त मिश्र बड़े प्रसिद्ध महाजन, जमींदार और कवि थे । आपने बाल्यावस्था म इटाजा और फिर महोना में उर्दू की शिक्षा पाई और अत म लखनऊ में रहकर अंगरेजी पढ़ी । पढ़ स पाय करके नौ मान तक आपने ए० ए० में शिक्षा पाई, पर इस समय आप कुछ ऊँचा सुनने लगे, सो बन्नास म अध्यापकों का पढ़ाना भला भाँति न सुन पाते थे । इस कारण पढ़ने से आपका चित्त ऊब गया और आपने सरकारी नौकरी कर ली । थोड़े दिनों म बकालत पास करके सवत् १६४६ मे आप बख्तनऊ में बकालत करने लगे । अपने इस काम स पैत्रिक सपत्ति बढ़ाने में आपने बड़ी सहायता दा और महाजनी के व्यापार को जमींदारी म बदल दिया । स० १६५० में आप हैजा-रोग से बहुत पीड़ित हुए की कम आशा रही, पर इस्वर ने अद्वा कर में आपको कुछ मान खाँसी और ज्वर का



रोगारहा, और एक बार छ मास समुद्र-तट पर वाहटेर में रहना पड़ा, जिससे उस रोग से भी मुक्ति हो गई, परंतु रवास की शिकायत कुछ घली ही जाती थी। आपका शरीरपात ११७४ में हो गया।

कविता की ओर पहले आपका ध्यान न था, पर पीछे से यह रुचि भी आपको हुई, और सवत ११४८ क लगभग में आप रचना करने लगे।

उदाहरण—

कूमत है मद् मा भरि कै मृग से पुनि चाँकि चहुँ दिसि जो है,  
खजन से उदि जात सबै धल मीन सपच्छ मनौ सुग सो है ;  
नूतन कज समान विधाम धरे चल ये सबको मन मोहै,  
पै उलटो गुन धारि मदा बनि यान समान हनै मन को है । १ ।

मीन मृग खजन सुरग सा चपलताइ,

कज दल ही सों लै सरूप मुद पायो है ।

वेधकपनो है जीन अति अनियारो ताहि ,

यानन सों लैक पूरताई उपजायो है ।

स्यामता हलाहल सों मद् सों ललाइ पुनि

चार मतपार।पन लैकें छवि छायो है ।

अभिय सा लैके सेतताइ जग मोहन को ,

विधना सुगल इन नैन बनायो है । २ ।

आपके एक पुत्र और दो कन्याएँ हैं। पुत्र लक्ष्मीशंकर मिश्र विलायत में पढ़कर अब लखनऊ में वैरिस्टरी करते हैं।

नाम—( ३४८५ ) धदरीदत्त शर्मा, काशीपुर, नैनीताल ।

जन्म-काल—स० ११२४ ।

समय—स० ११४६ ।

प्रथ—( १ ) दशोपनिषत् ( अनुवाद ), ( २ ) विवेकानन्द के व्याख्यान ( भाषा ), ( ३ ) अइला संताप, ( ४ ) संस्कृत प्रबोध,

- ( ५ ) कर्म-योग, ( ६ ) मनुष्य का धर्म, ( ७ ) चरित्र शिक्षा,  
 ( ८ ) विचार कुमुदांजलि, ( ९ ) विधवोद्गाह-मीमांसा,  
 ( १० ) प्रथमाकोदय ।

विवरण—आपने कापुर आय-मनाचार का सपादन किया ।  
 कानपुर में आप अध्यापक और सभ्य लेखक थे । समाजी क्षेत्रों  
 में आप गहनमुखा दृष्टिवाले शास्त्रज्ञ थे । इनके द्वारा हिंदी में प्राचीन  
 शास्त्रों की ज्ञान-वृद्धि हुई है । आपका धर्म श्लाघ्य है ।

नाम—(१४८६) विहारीलाल जैन (बुलदशहरी), धाराबकी ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

रचना-काल—सं० १९४१ ।

प्रथ—( १ ) वृहत् जैन शब्दाणव ( जैन साइको पीठिया,  
 सं० १९२६ ) ।

( २ ) अमत्राल-वृत्तिहाम ( सं० १९७८ ) ।

( ३ ) वृहत् त्रिषचरिताणव ( अकारादि ध्रम से कई  
 भागों में तैयार हो रहा है ) ।

( ४ ) श्रीनंदुमार-भाटव ।

- अपूर्ण { ( ५ ) वृहत् हिंदी शब्दाणव ।  
 ( ६ ) हिंदी-व्याकरण के पारिभाषिक शब्द ।  
 ( ७ ) प्रकीर्णक कविता-संग्रह ।  
 ( ८ ) लघु स्थानागाणव ।  
 ( ९ ) विशानाकोदय भाटव ।  
 ( १० ) विश्वावलोकन ।  
 ( ११ ) आश्चर्यजनक स्मरण-शक्ति ।  
 ( १२ ) अमोल धृती ( निज-चिन्तन उद्-पुस्तक का हिंदी-

रोगारहा, और एक बार छ मास समुद्र-तट पर घाटेर में रहना पड़ा, जिससे उस रोग से भी मुक्ति हो गई, परंतु रसास की शिकायत कुछ घली ही जाती थी। आपका शरीरपात ११०४ में हो गया।

कविता की ओर पहले आपका ध्यान न था, पर पीछे से यह रचि भी आपको हुई, और सन् ११४८ के लगभग से आप रचना करने लगे।

उदाहरण—

भूमत हैं मद सों भरि कै मृग से पुनि चाँकि चहुँ दिशि जो हैं,  
खजन से उड़ि जात सबै थल भीन मपच्छु मनी जुग सो हैं,  
नूतन कज समान विकास धरे खख ये सबको मन मो हैं,  
पै उलटो गुन धारि मदा बनि धान समान हनै मन को हैं। १।

भीन मृग खजन तुरग सा चपलताइ

रुज दन ही सों लै सरूप मुद पायो है।

बेधरूपनो है जौन अति अनियारो ताहि,

धानन सा लैके कूरताई उपजायो ह।

स्यामता हलाइल सों मद सों ललाई पुनि

चार मतवारापन लैके छवि छायो है।

अभिय सा लैके सेतताइ जग मोहन को,

मिधना जुग ७ इन नैनन बनायो हे। २।

आपके एक पुत्र और दो कन्याएँ हैं। पुत्र लक्ष्मीशंकर मिथ विज्ञायत न पढ़कर अब लखनऊ में बैरिस्टरी करते हैं।

नाम—( ३४८५ ) बदरीदत्त शर्मा, काशीपुर, नैनीताल।

जन्म-काल—स० ११०४।

समय—स० ११४४।

प्रथ—( १ ) दशोपनिषत् ( अनुवाद ), ( २ ) विवेकानन्द के व्याख्यान ( भाषा ), ( ३ ) भद्रला संताप, ( ४ ) सस्कृत प्रबोध,

- ( ५ ) कर्म-योग, ( ६ ) मनुष्य का धर्म, ( ७ ) चरित्र शिक्षा,  
 ( ८ ) विचार-कुमुदाजलि, ( ९ ) विध्वोद्वाह-मीमांसा,  
 ( १० ) प्रयथाकोदय ।

विवरण—आपने कानपुर आय-समाचार का संपादन किया । कानपुर में आप अध्यापक और सबल लेखक थे । समाजी लेखकों में आप यहून्मुली दष्टिवाले शास्त्रज्ञ हैं । इनके द्वारा हिंदी में प्राचीन शास्त्रों की ज्ञान-मृद्धि हुई है । आपका श्रम श्लाघ्य है ।

नाम—( १४८६ ) बिहारीलाल जैन (बुलदशहरी), धारावकी ।  
 जन्म-काल—स० १९२४ ।

रचना-काल—स० १९४६ ।

प्रय—( १ ) बृहत् जैन शब्दाणव ( जैन साइको पीढिया, स० १९५६ ) ।

( २ ) अमवाल इतिहास ( स० १९७८ ) ।

( ३ ) बृहत् त्रिवचरिताणव ( अकारादि क्रम से कई भागों में तैयार हो रहा है ) ।

( ४ ) श्रीनबुकुमार नाटक ।

अपूय { ( ५ ) बृहत् हिंदी शब्दाणव ।  
 ( ६ ) हिंदी व्याकरण के पारिभाषिक शब्द ।  
 ( ७ ) प्रकीर्णक कविता-संग्रह ।  
 ( ८ ) लघु स्थाणागाणव ।  
 ( ९ ) विज्ञानाकोदय नाटक ।  
 ( १० ) विश्वावलोकन ।

( ११ ) आश्चर्यजनक स्मरण शक्ति ।

( १२ ) अमोल बूटी ( निज-रचित उर्दू-पुस्तक का हिंदी-अनुवाद, १९७० ) ।

( १३ ) जैन धर्म के विषय में श्रत्रेण विद्वानों की सम्मतिर्था,  
दो भाग ।

( १४ ) इनुमान चरित्र नावेल भूमिका ( हिंदी अनुवाद ) ।

( १५ ) चतुर्विंशति जिन पंच कल्याणक पाठक ( एक  
प्राचान सुप्रसिद्ध जैन कवि की कृति का संपादन ) ।

( १६ ) धनमाल विधि, न० १२ ।

( १७ ) उपयोगी नियम ।

( १८ ) २४ जैन तीर्थंकरों के पंच कल्याणकों की शुद्ध  
तिथियों का तिथि क्रम से नमत्रों-सहित शुद्ध तिथि-कोष्ठ ।

विवरण—आप स्य वशोज्ज्वल मीतल गात्रीय अग्रजाल जैन श्रीयुत  
ताला देवीदासजी के सुपुत्र हैं । आपकी जन्मभूमि बुलंद शहर है ।  
आप ८ ई० स तथा सी० टी० परिक्षाएँ पास कर चुकने पर आज प्राय  
गत ३० वर्ष से अध्यापक के नाते गवर्नमेंट सर्विस कर रहे हैं ।  
इस समय आप गवर्नमेंट हाईस्कूल वाराणसी में अमिस्टेंट मास्टर  
हैं । यह महाशय बड़े साहित्यानुसारी तथा जैन समाज के एक सुप्रसिद्ध  
एव प्रतिष्ठित विद्वान् हैं । आप हिंदी उर्दू, फ़ारसी, अँगरेज़ी  
आदि भाषाओं का अच्छा परिचान रखते हैं । ऊपर दिए हुए ग्रंथों  
के अतिरिक्त योग्यार, प्रश्नोत्तरी स्वामी शम्भूराचार्य, मोनप्रबंध-नाटक,  
नीति-दण्ड, भवृंहरी नीतिशास्त्र आदि संहृत ग्रंथों का उर्दू में  
आपने अनुवाद किया है ।

उदाहरण—

( प्रकीर्ण कविता संग्रह से )

सस दिवस की सपदा प्रबगुण लावे सात,  
काम, क्रोध, मद, लोभ, दल तथा घैर धर घात ।  
पर यदि पर उपकार में धन मर्चे मन सोल,  
सस गुणनकर मुत्र शो, सो भर ख यमोख ।

क्षमा दया धीदायं अरु मादव मन सतोप,  
 आयव शाती-सहित जो श्री० एल्० यह निर्दोष ।  
 अशुभ कम अंधियार में माय देइ कुइ गाँहि,  
 श्री० एल्० छाया मनुज को तजे अंधरे माँहि ।  
 बहु मुावो कम थोलवो, यह है परम विरेक,  
 श्री० एल्० यों विधि ना रचे, कान दोय जिम एक ।  
 कटे धचन तिहुँ काल में समान थोलत गाँहि,  
 श्री० एल्० यों विधि ना रचे हाइ न निह्वा माँहि ।

नाम—( ३४८७ ) भुवनेश्वर मिश्र ।

यह दरभंगा निवासी हिंदी-भाषा के एक प्रतिष्ठित लेखक थे ।  
 आपका जन्म सं० १९०४ में हुआ । आपने अनेकानेक उत्कृष्ट लेख  
 कई पत्रों में छपवाए और कवि-परिचय, कवि-सोपान, परलाक, घराऊ  
 घटना, बलवत भूमिहार आदि कई ग्रंथ रचे, जिनमें घराऊ घटना  
 हमारे देखने में आया है । यह स्वभावोक्ति एवं हास्यरम पूण ग्रंथ  
 है । मिश्रजी की लेखन शैली बड़ी विलक्षण एवं चमत्कारिक है ।  
 यह महाशय दरभंगा मयकालत करते थे । आप चंपारन चंद्रिका  
 तथा हिंदी बगवामी के संपादक भी रह चुके हैं ।

नाम—( ३४८८ ) रामनारायण मिश्र, काशी ।

ग्रंथ—जापान-उपण्य ।

जन्म-काल—सं० १९२४ ।

विवरण—आप हिंदी के सुलेखक हैं । आपने बहुत दिन तक  
 शिक्षा विभाग में डिप्टी इस्पेक्टरी के पद पर नौकरी की । इस समय  
 आप हिंदू यूनिवर्सिटी के स्कूल में हेडमास्टर हैं । आप हिंदी का  
 बहुत काम कर रहे हैं । आपने और भी हिंदी की कुछ पुस्तकें लिखी  
 हैं । हाल ही में अपने 'योरप प्रवास' पर एक अच्छी सी पुस्तक दो  
 अन्य महाशयों के साथ लिखी है ।

नाम—( ३४८६ ) रामेश्वरबर्शासिंह ठाकुर ।

यह बड़े ज़मींदार परसहड़ी सीतापुर के थे । आपका जन्म स० १६२४ में परसहड़ी में ठाकुर बेनासिंह के यहाँ हुआ । आपके पिता शब्दे गिव भद्र और हिंदी-साहित्य के ज्ञाता थे । हमारे ठाकुर साहब ने हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत और उर्दू भी पढ़ी । आपने हिंदी-काव्य के तीन ग्रंथ रचे, अर्थात् साहित्य श्रीनिधि, सोरठा शतरु और रकुं काव्य । हिंदी में आपका उपनाम श्रीनिधि था । आपने उर्दू-गज़लें और हिंदी में बहुत-सी गाने की चीज़ें भी रचीं । गान विद्या में आपको अज्ञा बोध था । आप बड़े उदार और मज्जन पुरुष थे । आपके छंद अनुप्रास पूण और उत्कृष्ट हैं । थोड़े दिन हुए आपका शरीर पात हो गया ।

उदाहरण—

श्रीनिधि तू मानुष महीपन की कहे कौन,  
 जहाँ देवराज के-से चँवर दरयो करे ,  
 ब्रह्मा विष्णु नन्द-से परे हे चरणातुज मैं,  
 ऋषि-मुनि पाको ध्यान उर मैं धरयो करे ।  
 ऐसी आत्ति शक्ति भातु साहति सिंहासन पै,  
 जाके रूप आगे रमा रति हू दरयो करे ,  
 दीस निसि भानु सित भानु जाकी फेरी करे,  
 धरी सम ऋद्धि सिद्धि टहल करयो करे । १ ।  
 राजती पताकी बेस अजब कताकी प्रभा,  
 हेरि हरिता की हरी हरित लता की है ,  
 पल्लव मुता की और नर बनिता की कहा ,  
 अन्य समता की है न काहू देवता की है ।  
 जगतपिता की घाम अग्निनी सुनैमिष म  
 श्रीनिधि को दाइती प्रकास कविता की है ;





## उदाहरण—

यौवन रुर अनुपम पायकै पयों खलती हो इती इतरानी ;  
 गहक यादि गँवाइए ना फिरि ऐसो समै मिलिद्वै न सयानी ।  
 प्रेम पयोधि म पानि परारि ले ज्यों बहती दरयाव के पानी ;  
 हौस पुराह ल्वी जा जिय की हँसि बोलि पुनाइ मगोहर यानी ।  
 जादिनतें तेरी तरनाइ यह आई बार कहर मचाई हाय सहर सहर है ;  
 गैल-गैल देखिये को छैल लखचाण रहैं धूमत दिवाने धने टहर-टहर है ।  
 भूखे गा हिय में यह नजर नुकीला पबी घबी दिन पल दिन पहर पहर है,  
 गोला कपोलन पै अघर अमोलन पे गजब गुराइ रही लहर-लहर है ।

नाम—( ३०६१ ) सुरराम चौने ( कवि गुणाकरजी ), ग्राम  
 रहलो, जिला सागर, ( मध्य प्रात ) ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

कविता-काल—स० १९४६ के लगभग ।

ग्रन्थ—( १ ) वर्ण प्रबोध, ( २ ) गित प्रबोध, ( ३ ) लिपि  
 प्रबोध, ( ४ ) महिला गान माला ( तीन भाग ), ( ५ ) व्यायाम  
 पुस्तक, ( ६ ) हिंदी प्रवेशिका ( दो भाग ), ( ७ ) कान्यकुब्ज  
 दर्पण, ( ८ ) 'स', 'म' का भगड़ा, ( ९ ) पापी पचक, ( १० )  
 तुलसी महिमा ( अमुद्रित ), ( ११ ) तुलसी कृत रामायण ( समा  
 लोचना/मक ग्रन्थ, अमुद्रित ) ।

विवरण—आप का अकुब्ज माहाण प० गणेशप्रसादजी चौबे के पुत्र  
 हैं । आप नुरुवि ही नहीं, वरन् सुयोग्य कर्ता तथा लेखक भी हैं ।  
 आपका रचनाएँ विशेषतया बाल-साहित्य, वीर-साहित्य, हास्य  
 रस, नीति, प्रीति आदि विषयों से संबध रखती हैं । प्रायः 'गुणाकर  
 उपनाम से कविता की है । आपका काव्य गुरु एवं विद्या-गुरु सागर  
 त्रिपाठी प० जगन्नाथप्रसादजी थे । इस समय यह महाशय पेंशन प्राप्त

कर जीवन व्यतीत कर रहे हैं । [ प० रामनाथ शुक्ल, मॉरिस-कॉलेज, नागपुर द्वारा ज्ञात ] ।

उदाहरण—

हमारी उनमें भक्ति महान ।

सदृज प्रसन्न वदन है जिनका, तन है तेज निधान,  
 पुष्ट बलिष्ठ, साहसी है जो कर्मवीर प्रतियान ।  
 सरल, उदार, सदाय, सतोषी, प्रमाशील, सधान,  
 कहे हुए दो पलट न जाने, चाँ लौं तन में प्रान ।  
 मिलें सदा से उर से उर ता, तजें धृष्टित अभिमान,  
 भाषा, भूमि, भूप, भगवत के, सच्चे मत्र जहान ।  
 रहे लक्ष पर हित पै जिनका जिहें स्वहित इच्छान,  
 कहे 'गुणाकर' जिन्हें हृदय से दें सज्जन सम्मान ।

नाम—( ३४६२ ) हनुमतसिंह रघुवशी क्षत्रिय ।

जन्म काल—स० १६२४ ।

आप रामरूत पेंग्लो ओरियटल प्रेस के अध्यक्ष श्रीर हिंदी के एक  
 सुयोग्य एवं प्रसिद्ध लेखक हैं । आपके पिताजी ठाकुर गिरिवरसिंह  
 भी हिंदी के अच्छे कवि तथा वक्ता थे । इनके चचेरे भाई ठाकुर  
 उदयवीरसिंहनी अलीगढ़ के प्रसिद्ध बैरिस्टर हैं । आपका जन्म स्थान  
 चादोग, जिला बुलंदशहर है । कुछ काल तक यह भिगा नरेश  
 श्रीराम उदयप्रतापसिंहजी के यहाँ एक अच्छे पद पर थे । आपके  
 बनाए प्राय २२ ग्रंथों में मेवाड़ का इतिहास, क्षत्रिय कुल तिमिर-  
 प्रमाकर, महाभारत सार तथा वीर बालक मुख्य हैं । महाराष्ट्र  
 केसरी शिवाजी, चरिय चद्रिका, गृहिणी कृत्य दीपिका, अभिमन्यु  
 आदि का आपने संपादन भी किया है । आपके विषय स्तुत्य हैं तथा  
 लेखन शैली

समय—संवत् १६५०

नाम—( ३३६३ ) अर्जुनलाल सेठी ।

ग्रंथ—महेंद्रलाल-नाटक ।

आप जयपुरवासी खंडेलवाल जैन हिंदी के परम प्रेमी हैं । जैन समाज में हिंदी की प्रतिष्ठा के लिये आपने बहुत कुछ उद्योग किया है । आजकल राजनीति में विरोध भाग लेते हैं, जिससे आपको कई बार कष्ट भी उठाने पड़े हैं । आप एक प्रसिद्ध देश प्रेमी ह ।

नाम—( ३४६४ ) ऋषिदेव शोभा ।

जन्म-काल—स० १६२५ ।

रचना काल—स० १६२० ।

ग्रंथ—( १ ) सीता-स्वयंवर, ( २ ) धरक-यात्रा, ( ३ ) रामचरित, ( ४ ) योगानंद तरगिर्णा, ( ५ ) ज्ञान प्रभाकर, ( ६ ) मेघनाद वध नाटक ( ७ ) घायल माता नाटक

विवरण—आप हुसेपुर जिला सारन निवासी दान्यकुण्ड ब्राह्मण प० कृष्णदेव शोभा के पुत्र हैं ।

नाम—( ३४६५ ) कनकलता, दत्तिया ।

जन्म-काल—स० १६२५ ।

ग्रंथ—( १ ) दत्त-चरित-तीर्थ-यात्रा, ( २ ) वन-यात्रा, ( ३ ) अजभूषणधन-चालीसी, ( ४ ) रसिक-विनोद ( ५ ) पद ।

विवरण—राधावल्लभी । दत्तिया नरेश महाराजा भवानीसिंहजी की सहायिनी थीं ।

नाम—( ३४६६ ) कामताप्रसाद गुरु, सागर ।

जन्म-काल—सं० १६३२ ।

ग्रंथ—भाषा-वाक्य पृथक्करण, हिंदी-व्याकरण ।

विवरण—आजकल जबलपुर में निवास करते हैं । अपने व्याकरण-कार हैं ।

उदाहरण—

उदय अस्त में एक्या है जिसका व्यग्रहार,  
यही मित्र सूरज मुग्धी कर सरता है प्यार।  
ज्ञान, द्रव्य, यश, स्वार्थ की है जिसमें भरमार,  
यसे हुए उस हृदय म कहीं बसेगा प्यार।

नाम—( ३४६० ) गौरीशंकर गुरु ( कर्वाँद्र ), दतिया।

जन्म-व्रत—स० १६२० ( पद्माकर ६५१ )।

रचना-काळ—स० १६२० के लगभग।

ग्रंथ—( १ ) प्रताप पचीसी, ( २ ) कीर्ति पचासा, ( ३ ) कवित्त  
रामायण, ( ४ ) विश्व विलास ( नाटक )।

विवरण—आप अग्निगोत्रीय द्वाविड़ ब्राह्मण दविपर पद्मास्त्रात्मज  
प० मिट्टीलालजी के पौत्र हैं। आपके पिता प० लक्ष्मीधर  
( श्रीधर ) जी भी एक असाधारण कवि हो गए हैं। अपने पिताजी  
की भाँति आप भी दतिया के राजकवि के पद को मुखोभितकर  
रहे हैं। इनके पूर्वजों का, विशेषतया पिताजी का काव्य शक्ति के  
नाते धुदेलखड की प्रायः समस्त रियासतों में विशेष सम्मान रहा।  
वर्तमान दतिया नरेश धीलोकेंद्रचंद्राटुर गोविंदसिंहजू देव ने इनके  
'विश्व विलास' नामक नाटक पर प्रसन्न होकर उन्हें कर्वाँद्र की  
उपाधि एवं राज्य-सम्मान प्रदान किया है। राज्य-कार्यों में भी आपका  
मान है। कवि होने के अतिरिक्त आप धर्मोपदेशक भी हैं, और  
इसी कारण आपके नाम के साथ 'गुरु' शब्द सलग्न हो गया है।  
वास्तव में आपकी कविता शक्ति आपके कुल की संपत्ति है। कहा  
जाता है कि कर्वाँद्रजी के निज् पुस्तकालय म पद्माकरजी आदि पूर्व  
कवियों के कई उत्तमोत्तम ग्रंथकाशित ग्रंथ संगृहीत हैं। ऊपर दिष्ट  
हुए आपके ग्रंथों म से आखिरी दो ग्रंथ अभी अग्रकाशित रूप में  
हैं। आपकी साहित्य-रचना पद्मास्त्री शैली पर श्लाघ्य है।

उदाहरण—

( विरय-विलास )

कलित कलिंदी फूल कुजन कदवन की,  
 अथा की कतिगा सुनाई छाह बट की ;  
 दारन तपन ताप धीपम की भीपम में,  
 बैठे तहाँ आनंद अनूप छवि गट की ।  
 राधे मुर-इन्दु पै बिलोकि श्वेद सिन्दु प्यारो,  
 करत समार धीर लैकै पान पट की ।  
 काह दल बाज कहे सहन मरीचि तहाँ,  
 लटक छपीनो छाह छावत मुट्ट की ।

नाम—( ३४६८ ) चन्द्रकला घाई, बूंदी ।

समय—स० १६१०

प्रथ—( १ ) कल्याणतक, ( २ ) रामचरित्र, ( ३ ) पदवी-  
 प्रकाश, ( ४ ) महोत्सव प्रकाश, ( ५ ) पत्रों की प्राचुर्य से  
 समस्या पूर्ति ।

विषय— यह कविराज गुलामसिंहजी की दासी पुत्री कविता  
 अच्छी करती हैं ।

उदाहरण—

सागर धरम को उजागर प्रवीन महा,  
 परम उदार मन उन सुख दारनो ;  
 गुन रिक्कार कवि कोविद निहालकर,  
 बैरी मद गार उपकार उर धारनो ।  
 चन्द्रकला कहै रनधीर पर पीरदार,  
 पस विसतार कर जग सुख सारनो,  
 मारवाड़ नाथ सरदारसिंह सील सिंधु,  
 आनंद को कद दीन दारिद बिदारनो ।

नाम—( ३४३६ ) जगन्नाथ चौबे ( माधुर ), पूँदी ।

जन्म-काल—स० १६२८ ।

कविता-काल—सं० १६६० ।

ग्रन्थ—( १ ) अर्लकार-माला, ( २ ) रामायण-सार, ( ३ ) माधुर-  
कुल-कल्पद्रुम, ( ४ ) शिक्षा दर्पण, ( ५ ) यमुना-पचीसी ।

विवरण—यह सुकवि पूँदी दरवार के आश्रित कवि शारसीराम  
के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

भूमि करयो धर दिगवर तिलक भाल,  
विप्र उपवीत करयो यज्ञ के हवन मैं ;  
माधुर कहत मुरनाथ मुरभोग करयो,  
घाहन बनायो विधि आपो गवन मैं ।  
विस्व को सिंगार भयो मुच्यमा धर धरि,  
जैस निसि बाढ़े तऊ छवि की छवि मैं ,  
पूँदीनाथ प्रबल प्रताप रघुधारसिंह,  
तेरो जस आवत न धीन्ही भुवन मैं । १ ।

नाम—( ३५०० ) जैनेन्द्रकिशोर ।

ग्रन्थ—( १ ) कमलिनी, ( २ ) खगोल विज्ञान, ( ३ ) मनोरमा,  
( ४ ) सोमा सती, परम्य आदि ।

विवरण—आप गद्य के सुलेखक, धारा के प्रसिद्ध जर्मींदार ग्रन्थ  
बाल जैन हैं । कई छोटी-बड़ी कथाएँ भी लिख चुके हैं । नामी  
उपन्यास-लेखक हैं । परम्य पर आपको हिंदुस्तानी एकेडेमी से  
पुरस्कार मिला है ।

नाम—( ३५०१ ) भगवानदास घाजू ( वैश्य ) ।

जन्मकाल—१६२६ ।

विवरण—आप काशी निवासी प्रसिद्ध विद्या प्रेमी एक परम प्रसिद्ध

पुरप है। आप प्रथम तीन वर्ष तक तहसीलदार तथा चार वर्ष तक डिप्टी कौन्सिलर रहे। फिर आपने १९७४ में इम्तीआ देकर सेंट्रल हिंदू-कॉलेज का स्थापन तथा संवत् १९८० तक उसी का संवर्धन किया। आप उसी कॉलेज में साततन धर्म पर व्याख्यान भी दिया करते थे। तत्पश्चात् कारी विश्वविद्यालय सोसायटी के उपमंत्री एवं विश्वविद्यालय के कार्ट, कौंसिल, सनेट तथा सिंडीकेट के सदस्य रह। संवत् १९७८ में आप हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति थे। आपने धार्मिक तथा आध्यात्मिक विषयों पर अंगरेजी एवं हिंदी में कई पुस्तकें लिखीं। सामाजिक मुद्दों के भी आप पक्षपार्ती हैं। हिंदू धर्म पर आपके ग्रंथ बहुत विद्वान् पूज्य हैं। आप भारी विद्वान्, रईस और धार्मिक पंडित हैं।

नाम—( ३५०२ ) भजानोप्रसाद पुरोहित ।

जन्म काल—१९२५ ।

विवरण—शिक्षा विभाग-संबंधी बहुत-सी पाठशालापयोगी पुस्तकें आपने लिखी हैं। आप दुबे कान्यकुब्ज ब्राह्मण प० त्रिहारीलाल के प्रपौत्र तथा प० बालमुकुंद के पुत्र हैं। शिक्षा विभाग मध्यप्रान्त में आपने स्वयं तथा आपका पिता पितामह ने भी नौकरी की।

नाम—( ३५०३ ) भागवतप्रसाद ( भानु ), हरदी गाँव, रोनाँ राज्य ।

जन्म काल—सं० १९२४ ।

कविता-काल—सं० १९५० के लगभग ।

ग्रंथ—नगर दर्शन ( नाटक ) ।

विवरण—आप हिंदी तथा उर्दू के अतिरिक्त धरवी और फारसी के भी ज्ञाता थे। कहा जाता है कि कानून में भी उन्होंने अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। यह महाशय हमें श्रीयुक्त भानुसिंह बघेल, रीवा द्वारा ज्ञात हुए हैं। कविता आपकी अच्छी है।

उदाहरण—

है नभ में क्या घटा की लटा क्षुभानु नष्ट उनप घन रयामा ;  
 नीचे निहारिण हार पहार में है बरसा ये बहार की सामा ।  
 पाहवा बैसा ममै है मुहाषना शाम को साधन को अभिरामा ;  
 दलिण ना यह सामा के श्वेत ह देत ह वैसो करुतर कामा ।

नाम—( ३२०४ ) महावीरप्रसाद मालवीय, गोपीपुर, जिला  
 मिर्जापुर ।

जन्म-काल—स० १३२२ ।

ग्रंथ—( १ ) अभिनय विद्याममगर, ( २ ) रामरसोदधि,  
 ( ३ ) रत्नराजमहोदधि वैद्यक, ( ४ ) बाल तंत्र वैद्यक, ( ५ ) होली  
 बहार, ( ६ ) परमा-बहार, ( ७ ) मास प्रबोध, ( ८ ) धीर निषट्ट  
 वैद्यक, ( ९ ) वैद्य दिवाकर ।

विवरण—आप कुछ दिन प्रियवदा मासिक पत्रिका के सलाहक  
 भी रहे । वैद्यक पर आपने ग्रंथ अच्छे ह । आप वं० वैशनाथ  
 मिश्र के पुत्र थे । मगध की शिक्षा प्रणाली के अनुसार बारह  
 वर्ष का अवस्था तक अमरकोश, सिद्धांतश्रीमुदी, रथुशशादि काव्य  
 आपका घर पर ही पढ़ाए गए । आगे आप संहृत-काव्य के  
 अच्छे मनन तथा कवि हुए । हिंदी भाषा से आपको प्रेम था  
 ही, संस्कृत-साहित्य में भी आपने विशेषतया पांडित्य प्राप्त किया  
 था । कहा जाता है कि एक घंटे में यह महाशय २० श्लोकों की रचना  
 अच्छी तरह कर लते थे ।

आप काव्य-रचना के अतिरिक्त चित्र-कला तथा संगीत में भी  
 निपुण थे । गया प्रांत के पीडाचक्र ग्रामवाले बाबू देवनर्मिह के यह  
 आश्रित थे, और उन्हीं की ही हुई जमींदारी का उपभोग इनके  
 वंशज आज तक करते हैं ।



उदाहरण—

वैचि कै धीर शरीर उधारत जो धर तें हम कुंमन धाया ;  
और मैं का से कहीं भक भारी के सोरि कै पूजन हार गिराया ।  
रंति कुरीति सथै उनकी 'रघुनाथ' न धीरत नारि पराया ;  
री सगि ण कोउ सजान का, अरि ना सलि, ता सलि कुज की हाया ।

×

×

×

नाम—( ३१०३ ) मुरारिनामजी कथिराजा ।

यह महाराज जोधपुर नरेश के आश्रय में रहते थीं उनके राज्य के एक ऊँच कर्मचारी थे । इन्होंने जसवत जगोभूपल-नामक अलंकार का एक बढ़िया तथा भारी ग्रन्थ २२१ पृष्ठा का स० १११० के लगभग बनाया । यह ग्रन्थ स० १११४ में प्रकाशित हुआ । यह महाराज सस्कृत के अष्टोपेदिता थे, और अलंकारों के शूद्र लक्षण निरूपण करने में इन्होंने अष्टोपेदिता धर्म किया । इन्होंने अलंकारों के नामों ही से उनके लक्षण निकाले और गद्य की भी अष्टोपेदिता रचना की । इनका स्वर्गवास प्रायः स० ११६६ के निकट हुआ ।

उदाहरण—

कैसी अली की भली यह मानि है देविण पीतम ध्याता लगाय कै ;  
छाक गुलाब मधु सा मुरारि सु गेलि नखलिन में निरमाय कै ।  
खेलत कतकी जाय जुहीन म खेलत भाखती धृद अधाय कै ;  
आज जो जोधत खोवत दीस वै सोवत है नखिनी सँग आय कै । १ ।

नाम—( ३१०६ ) रघुनाथप्रसाद शर्मा ( भरतार कवि ),  
कचूरा, जिला सीतापुर ।

जन्म स्थान—कुँदेरा ( जिला सीतापुर ) ।

ग्रन्थ—सुट्ट छंद ।

विवरण—आप काव्य-कला-नुराल व० वैद्यनाथ के प्रपौत्र तथा  
प० प्रयागदास ( परवन ) शूद्र के पुत्र हैं । आपने एक हज़ार से

अधिक छंद रहे हैं, किन्तु वे अभी अप्रकाशित रूप में हैं। चाप एक मत्कवि हैं।

उदाहरण—

कलित कलेवर कलभ कमनीय मुख,  
 सोहत सिंदूर भरो ललित लिलार है।  
 लसत मर्लिङ लट पटित सरोजन को ;  
 लोनो लोल लंबित अरूठो उर हार है।  
 ध्यावत हों तोहि सिद्धिसदन शिवा के सुन,  
 सपति समेत सुग्य लहत अपार है।  
 बुद्धि के प्रकासन को विघन विनामन को,  
 रघुनाथ दासन को 'दूजो कौन द्वार है।  
 द्रुपद-सुता लखि दीन हरि अद्भुत बसन अमिता,  
 चीर हरन को कीन्ह जनु पूरण प्रायश्चित्त।  
 कौन कहत है खान्ह को कारो श्याम शरीर,  
 यह ऐसी पै हे कदाँ ध्यारी प्रभा गँभीर।  
 फनक कुज में वृजि अम कुटिल करीली पाँति,  
 निमि फाटत लै हे भला सेइ सखी दिन राति।  
 पथ पथिक पाया पवन पाचक पावत पाथ,  
 जासु टपा से तामु पै बलिहारी रघुनाथ।

×

×

×

नाम—( ३२०७ ) राजवरलाल खरे कायस्थ, तालवेहट  
 ( माँसो )।

कविता बाल—स० १६२०।

जन्म-काल—स० १६२३।

ग्रंथ—( १ ) दानखीला, ( २ ) सुधाराज-सरोवर, ( ३ ) राज  
 सतसई, ( ४ ) नारी प्रशसा, ( ५ ) विनय चालीसी, ( ६ ) हनुमान-

बधीसी, (०) राज रहस्य और धीमज्जगवतीता का अनुवाद।  
उदाहरण—

हुपद पुत्र तप शिष्य सुधीरा ।  
शुद्धिमान रघु - कुशल गैर्भीरा ।  
पांडु नृपति चतुरगिनी शूह क्षत्र मज्ज तात ;  
काह उपस्थित रघु विपे पुत्र हेतु अकुलात ।  
नाथ भीम अगुन सम भारी ;  
शूरवार अगणित धनु धारी ।  
महारथी युयुधान गैर्भीरा ।  
नृपति त्रिरात्र-रु हुपद सुधीरा ।  
एष्टनेतु जेहि विरम भारी ;  
चेरिता यश अमित पमारी ।

नाम—( ३२०० अ ) सरयूप्रसाद जायसवाल ।

आपके पिता श्री-सरयुरामजी अपनी जन्मभूमि, जिला मुल्तानपुर अतर्गत बरघारापुर गाँव में आकर मुरार छावनी (रियासत म्वाळियर) में पहले बस गए थे, किंतु शहर के अजसर पर यह राज छोड़कर इन्होंने कनाधर ग्राम, रियासत म्वाळियर को अपना निवास-स्थान बनाया। इसी ग्राम में जायसवालजी का जन्म सं० १६२२ में हुआ। आपने घैराग्य, ईश्वर सबधी उलाहना, समय की बचलता, ससार के भोग विलास वी क्षण भंगुरता आदि विषया का भी अच्छा बखन किया। कहा जाता है कि 'आनंद-सरोज'-नामक आपकी एक हस्त लिखित पुस्तक उपलब्ध हुई है। यह उर्दू में विशेष रूप से काव्य रचना किया करते थे, और हिंदी-कविता की अपेक्षा इनकी उर्दू ही की कविता अधिक भाषा में मिलती है। आपकी मृत्यु २० वर्ष की अवस्था में सं० १६७५ में हुई।

उदाहरण—

अगमवृत्त गले मृगद्वान्त सा मकर के शशि मस्तक सोई ;  
शीत से गग घटाय महश सो मज्जन सौं अघ को त्रिय लोई ।  
लोक सुगंध उड़े त्रिहि मात की देह सुधारि सौं कष्ट को ब्योई ।  
सो प्रथमै तिहसी हरि के पद सौं तिहि दरान से मन मोई ।

नाम—( ३६०८ ) साधुशरणप्रसाद, त्रि० बलिया ।

जन्म-काल—सं० १६०८ ।

समय—स० १६४० ।

ग्रन्थ—भारत भ्रमण, पाँच भाग, धनशास्त्र-संग्रह ।

विवरण—इन्होंने भारत भ्रमण नामक ग्रन्थ यदा ही प्रशमनीय बड़े  
श्रम से बनाया । यह ग्रन्थ परिभ्रमण करनेवाला को उपयोगी और  
सर्वसाधारण को दर्शनीय है । इसमें हरणक स्थान का प्रशमनीय  
और यथोचित वर्णन दिया गया है । इसके अतिरिक्त और भी कई  
ग्रन्थ आपने बनाए । स० १६६६ में आपका स्वर्गवास हो गया ।

नाम—( ३६०९ ) मुद्रशनाचार्य, काशा ।

जन्म-काल—सं० १६२५ ।

ग्रन्थ—( १ ) भगवद्गीता सतसह, ( २ ) आलवार-चरितामृत,  
( ३ ) स्त्री चर्या, ( ४ ) नीति रत्नमाला, ( ५ ) विशिष्टाद्वैत अधि-  
करणमाला, ( ६ ) अद्वैतचन्द्रिका, ( ७ ) सस्कृत भाषा, ( ८ ) श्री  
रगन्धक शतक, ( ९ ) भगवद्गीता भाषा भाष्य, ( १० ) शास्त्र  
दीपिका प्रकाश, ( ११ ) आर्घ्य नलचरित्र-नाट्य ।

नाम—( ३६१० ) हरीरामजी त्रिवेदी 'स्नेह', हटा, दमोह ।

जन्म-काल—सं० १६३० ।

कविता-काल—सं० १६५० ।

ग्रन्थ—( १ ) केरुई नाटक, ( २ ) हरदील नाटक, ( ३ ) स्फुट  
लावनियाँ ।

विवरण—आप प० पद्मार्जुनराम शर्मा के पुत्र हैं । हिंदी के अतिरिक्त मराठी के भी ज्ञाता हैं । पत्रभाषा में कविता करने हैं । आनन्दलाल शर्मा-जीला पर 'प्रिय प्रबन्ध'-नामक ग्रन्थ पत्रभाषा में लिख रहे हैं । [ अद्युक्त नहुआलजी, अध्यापक, इटा ( इमाह ) द्वारा ज्ञात ]

नाम—( ३२११ ) हेमनकुमारी चौधरी ।

आपका जन्म स० १९२५ में जाहौर में हुआ और १९४२ में विवाह के पश्चात् ये शिक्षांग चली गईं । आप कई स्थातों में रहीं और सदैव परोपकारी कार्य करती रहीं । आपने आदर्श माता, माता और कन्या, गारी पुष्पावली और हिंदी बंगला प्रथम रिपन नामक पुस्तकें रचीं । आप हिंदी में ब्रह्मता भी देती हैं । आपकी खेतान प्रथा उच्च है ।

समय—सत्रत् १९५१

नाम—( ३२१२ ) गदाधरसिंह ठाकुर सचेंडीवाले ।

जन्म-काल—स० १९२९ ( फाशी म ) ।

आपका निवास-स्थान सचेंडी, जिला प्धानपुर है । आप १८ वर्ष सरकारी पलटन में नौकर रहकर आर्य-विभाग में १९०) मासिक वेतन पर पास्ट मास्टर हुए । सेना विभाग में थर्मो एव चीन के युद्धों में आप लड़े, तथा शाहशाह पटवर्ध के तिलकोत्सव में निमंत्रित होकर प्रिलायत गए । इन्होंने छोटे ग्रंथों के अतिरिक्त चीन में तेरह मास, हमारी पटवर्ध तिलक-यात्रा तथा रस-आपान-शुद्ध नामक ज्ञान परमोत्तम भारी पुस्तकें भी लिखीं । इनके ग्रंथों में भारतोत्थान पर हर जगह चढ़ा झोर दिया गया है । देश-हित इस महापुरुष की नम नस में भरा था और रचनाओं से यह भली भाँति प्रदर्शित होता है । इनके ग्रंथों में जिंदा दिल्ली की यात्रा खूब है और उनसे बहुत अच्छे उपदेश मिलते हैं । यह महाशय अपने मरण

के प्राय १६ वष पूर्व से इनारे मित्र रहे और इनका व्यवहार सदैव एक-सा रहा। आय-समाज के यह एक बड़े पत्रके सभासद् थे, और उसकी प्रार्थनाओं तथा कायनाहियों में बड़ी रचि रगते थे। आय-सामाजिक पत्रों में भी इन्होंने बहुतायत से लेख लिखे। इनके प्रथ परम सजीव एवं उद्याशय-पूख हैं। आपका शरीर-पात स० १६७६ के निकट हुआ। गत महायुद्ध में जाकर आप रोग-ग्रस्त हो गए, जिससे कुछ दिनों में आपका स्वर्गवास हो गया।

नाम—( २२१३ ) गगाशकरजी पचौलो, बूँदी।

जन्म-काल—स० १६१४।

रचना-काल—सं० १६२१-७२।

प्रथ—निम्न विषयों पर लेख मालाएँ हैं—

- |                        |   |  |
|------------------------|---|--|
| ( १ ) कृषि विद्या      | { | ( १ ) खेत-भूमि की परीक्षा, औज़ार, बीज आदि। ( २ ) खाद, ( ३ ) पशु परीक्षा, ( ४ ) दूध व उसका उपयोग, ( ५ ) हंस और खाँद, ( ६ ) सकरीपरण अर्थात् पैवद, कलम चदाना आदि। ( ७ ) केला, ( ८ ) नींबू-नारंगी, ( ९ ) तर जीवन, ( १० ) कपास, ( ११ ) आलू, ( १२ ) मूँगफली की खेती तथा उसके बीज का उपयोग। |
| ( २ ) ज्योतिष          | { | ( १ ) नक्षत्र, ( २ ) करण लाघव, ( ३ ) ग्रहण प्रकाश, ( ४ ) इफ् सस्वरण।   |
| ( ३ ) विज्ञान तथा हुनर | { | ( १ ) स्वर्णकारी, ( २ ) कागज़-काम, रदी का उपयोग आदि, ( ३ ) कृत्रिम काष्ठ, ( ४ ) रसायन-शास्त्र।   |

(४) विविध

( १ ) नागरोत्पत्ति, ( २ ) भूगोल भरतपुर,  
 ( ३ ) सनातनधर्म रत्नमयी, ( ४ ) रस-रत्नाकर,  
 ( ५ ) निज उपाय, ( ६ ) संध्याति निषय,  
 ( ७ ) सायन, निरयन गणना पर विचार, ( ८ )  
 पुरानी घटनाओं के समय को निकालने में  
 ज्यातिष क्या सहायता देता है, ( ९ ) पटल  
 विल, ( १० ) हिंदू धर्म का प्रस्तार, ( ११ )  
 प्राकृतिक भूगोल, ( १२ ) उपवन विनोद,  
 ( १३ ) नुमगा-सम्रह, ( १४ ) वर्षों के श्रावण  
 व शरुा, ( १५ ) स्मृति-सार सम्रह ।

विवरण—आप नागर ब्राह्मण-कुलोत्पन्न हैं। आपकी जाति का आदिम  
 निवास-स्थान काठियावाड़ प्रदेशांतर्गत पुराण प्रसिद्ध चमत्कारपुर व  
 ध्यानदपुर ( सामंत बड़नगर ) रहा है। आपके पूर्वज भी इसी स्थान के  
 निवासी थे। कालांतर से पचीलीजो के पूर्व आपना आदिम निवास  
 स्थान छोड़कर अलागड़ में आकर बस गए, और वहीं आपका जन्म  
 हुआ। आपने उच्च शिक्षा और विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त किया।  
 आपकी लेख-भाषाएँ इस बात का भली भाँति परिचय देती हैं। इस  
 समय आप भरतपुर राज्य से पेंशन पा रहे हैं, और बूँदी-राज्य में न्याय  
 विभाग के मंचर हैं। आपके ग्रंथ उपयोगी विषयों पर हैं। ऐसे ही उपकारी  
 तथा लोकोपयोगी लेखकों द्वारा हिंदी का मस्तक ऊँचा हो सकता है।

X

X

X

नाम—( ३२१४ ) दामोदरसहायसिंह ।

जन्म-काल—१६३२ ।

१. रचना-काल—सं० १६२१ ।

१. ग्रंथ—( १ ) उद्यम विचार, ( २ ) काल-पचासा, ( ३ ) हमारी  
 शिक्षा प्रणाली, ( ४ ) श्रीहरिगीतिका, ( ५ ) नृपसूर्यास्त, ( ६ )

आग्रभाय-सगीत, ( ७ ) संधीना-सगीत, ( ८ ) कविता-कुतुम,  
( ९ ) चातक-वाल्लोसी ।

विवरण—घास गुरी शिखर-भरमहाय के पुत्र हैं । घापो हिंदी  
मदिर-नामक एक पुस्तकालय छपरे में स० १६७९ में खोला, जिसके  
घापो सयुक्त मंत्री हैं । यह महाशय मुकवि हैं ।

उदाहरण—

प्रेम धन ! प्यारा सभी को है घटा, पर सभी का प्रेम तुम्हो है घटा ;  
है महा सुखोद तेरा दृष्ट में, जान थी घापी लगाकर मैं बटा ।  
जिसि पासर ताहन चाहक है फिरे वागा पूरा की घाया म ;  
अरे घाये एतो मता हौं घरीं जितो वृष्ट भरो हौं सुभायन में ।  
बुद्ध हू मुनि ले नू दमादर दी रत सम रखा न रमाया म ;  
मा भू ग फिरे भँडरान कहाँ बस रे बस गीरि के पावन में ।

नाम—( १६११ ) बलव्यप्रसाद मित्र ।

यह महाशय मुरादाबाद शहर के रहनेवाले पण्डित ज्ञानप्रसाद  
मिश्र के छोटे भाई थे । इनकी अराल मृत्यु केवल ३६ वर्ष की  
अवस्था में, स० १६९२ में, ७ अगस्त को हो गई । यह महाशय हिंदी  
और संस्कृत के अच्छे लेखक थे, और सत्रप्रकार नामक पत्र भी  
इन्होंने कुछ दिना निकाला । मिश्रजी ने बहुत-से प्रथम स्वतंत्र और  
कुछ अनुवाद करके रखे तथा कतिपय नाटक-ग्रंथ भी बनाए, जिनमें  
नद विदा-नाटक हमारे पास है । यह महाशय कविता भी प्रशस्त  
करते थे । इनके प्रथम पानीपत, देवा उपन्यास, कुदमदिनी, दड-  
मंग्रह, राजग्यात, नेपाल का इतिहास, तांतिया भीन, पृथ्वीरान  
चौहान, अश्यामरामायण भाषा, प्रफुल्ल और कलिकपुराण भाषा  
प्रधान हैं । हमारे मिश्रजी की पतमा समय के लेखकों में पहलेपहल  
पेमे थे, जिनका निर्वाह केवल अपनी पुस्तकों की बिक्री से होता था ।  
यह इनके लिये बड़े गौरव की बात थी । इनके लेख बड़े गौरव एवं



भाषा ललित होता था, पर इनके छद्म वंश अप्रूप न थे। इन्होंने महावीर चरित्र और उत्तर-रामचरित्र नामक भवभूति के नाटक तथा के उल्हा भी बनाए, जो अत्रकाशिन श्रवण्या में महाराज छतरपुर के पुस्तकालय में हैं। इनकी अकाल मृत्यु से हिंदी की भारी क्षति हुई। यदि आप दीर्घजीवी होते, तो इनके परमोत्कृष्ट तथा गभीर गद्य लेखक होने की आशा थी।

उदाहरण—

लग्यो यह मुज बान नग तीको।

जनस्थान पश्चिम की भूमी चित्र बनो सुर जीको।

दानवगण अर ऋषि मतग वो थान यही सुगतीको।

धमणा धरम चारिणी शयरी लखौ प्रेम यह तीको।

ये दोनो नाटक प्राय डेढ़ डेढ़ सौ पृष्ठों के हैं।

गाम—( ३२१६ ) मथुराप्रसादजी मिश्र।

आपका जन्म-स्थान जिला सुलतानपुर अमेठी-राय के अंतर्गत पच्छिम गाँव है। यह संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे और भाषा का काव्य मनोहर करते थे। बँगला का भी अभ्यास आपने किया था। इन्होंने बाबू कालीप्रसादसिंह सब जज लखनऊ की आज्ञानुसार और उन्हीं की सहायता से कृत्तिवास हृत बँगला-रामायण के लकाकांड का छद्मोद्भूत अनुवाद करके स० १९२१ में प्रकाशित किया। उसके पीछे उत्तरकांड का भी अनुवाद आरम्भ किया गया, परंतु वह प्रकाशित नहीं हो पाया, और बीच ही में पदितजी एच सब-जज साहब का स्वगवास हो गया। यह लकाकांड संपूर्ण सुलसीदास की रामायण से आकार में कुछ कम न होगा। इसमें रायल अठपेजी के २१० पृष्ठों में कथा, १० पृष्ठों में भूमिका, २ में विषय-सूची तथा ७८ पृष्ठों में टिप्पणी आदि हैं। कुल ६०३ पृष्ठों में यह कांड समाप्त हुआ। इसमें कथा बहुत विस्तार से लिखी

गई है। भाषा इसकी सस्कृत, ब्रज भाषा तथा ब्रैसगाड़ी मिथित है। हम मधुराप्रमादनी को मधुमूदनदासजी की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण—

रवि किरण तजु ते प्रकट शशधर ज्योति ज्योतिष्मान ;  
 श्रम बिंदु भलकत चंद्रमुख अरबिंद बिंदु समान ।  
 रवि उदय ते लागि अस्त युद्ध प्रवृत्त नहि अवसान ;  
 कर मध्य भीषण धनुष बरसहि प्रगर अगणित आन ।  
 तूखीर ते शर लेत क्षण यन्मात्र बाण लप्ताय ;  
 दरसात रिपु दल पर परत शत सहस ते अधिकाय । १ ।

समाम जासु यम धादि गए पराइ ,

कोदड दाय लसि उपत देवराई ।

जेते सुरामुर सुवीर त्रिलोक माहा ,

जाके कराल शर ते धिर कोउ नाही ।

प्रादेश कारि शशि सूर समीर जाके ,

त्रैलोक्य हर्षित महा त्रिनिपात ताके ।

मानद देव-मुनि वृद्ध ऋचा सुनावै ,

गधर्व दुहुभि यज्ञाय सुगीत गावै ।

नाम—( ३५१७ ) रामनाथ ज्योतिषी वृदावन शुक्ल के पुत्र ।

जन्म-स्थान—भैरमपुर, रायबरेली ।

जन्म-काल—स० १६३१ ।

रचना-काल—स० १६२१ ।

ग्रंथ—( १ ) सी० आर० ठास की महायात्रा, ( २ ) धार नारी, ( ३ ) विधवा वतीना, ( ४ ) रामचर्दीय महाकाव्य ( मुदित ), ( ५ ) महाभारत महाकाव्य, ( ६ ) लाहौर की कांग्रेस, ( ७ ) मोतीलाल जीवन चरित्र, ( ८ ) यतींद-नवरत्न, ( ९ ) ज्योतिषी-सतसद्, ( १० ) कृष्णदत्त काव्य, ( ११ ) अयोध्या-शाकद्वीपीराज

पंज ( गद्य ), ( १२ ) गांधी और गोकुलमेज, ( १३ ) गांधी शत  
नाम-स्तोत्र ( समृद्ध ), ( १४ ) शिवकुमार नीरज-चरित्र, ( १५ )  
सामयिक साहित्य-सरोवर, ( १६ ) जगदेव मुयश कर्दव, ( १७ )  
रामचंद्रोदय, ( १८ ) शक्ति पुष्टीर जन्म ।

विचरण— भैरवपुर, जिला रायबरेली में कई राजदरारों में सम्मान  
सहित रहे । वैष्णव-सम्मेलन पत्र के संपादक रहे हैं । फर  
सनातनी होने पर भी समाज-सुधारक । विधवा विवाह, श्रद्धा  
द्वार आदि के समयक । गांधी भद्र तथा त्रिविध विषयों-सहित राष्ट्रीय  
कवि । आजकल अयोध्या में राजकवि और पुस्तकालयाध्यक्ष हैं ।  
रत्नाकरजी वृत्त बिहारा रत्नाकर के लिये षड् मास जयपुर में रहकर  
आप यही सामग्री लाए थे, जिसका उल्टेसे उल्टे प्रथ की भूमिका  
में वर्तमान है । २५६ पृष्ठों का श्रीराम चंद्रोदय काय प्रथ छप  
चुका है, जो हमारे पास है । इसकी कविता आज-पूण तथा श्लाघ्य  
है । आपने कुञ्ज-कुञ्ज केशवदास की प्रणाली ग्रहण की है । ज्योतिषीजी  
सजन पुरुष और उत्कृष्ट कवि हैं ।

उदाहरण—

रायबरेली प्रात रात्र रहयाँ गुण-मंडित,  
भण भूप रघुबीरवत्स वल्लकीर्ति जसदित ।  
रघुनदा का शास्त्रि रहे परधानाध्यापक ;  
तिनकी कृपा कटाक्ष 'ज्योतिषी' भे बहुव्यापक ।  
विज्ञान, व्याकरण, न्याय नय,  
ज्योतिष - काय कलाप परि,  
पुा चदापुर नृप सँग रहे,  
द्वादशब्द सुद मान मदि ।  
पित्त नाश करि देत, यात को प्राप्त दिखावत,  
कक ज्योतिषी विदारि, मारि, अथ ताप भगावत ।

अपर रोग हरि दहरि पिहरि हरि खोग पडापत ;  
मकल पाप मताप चाप शिर भार उगापत ।

असना - पान गघन अमा,

दरम - परत सुख शूरि है ;

शुभ अतिव 'तुलसी आमलक',

जीवन जीवन - मूरि है ।

न्याय और नीति के अवश-चद स्पन्द की ,

जोतिर्नी प्रकाश-पुत्र प्रौढ़ पर पौखि ही ;

धार्मिक तैतिक समाग-धर वृष्टा की ,

पूल फलवारी भारी स्वयं सुधि सार्वे ही ।

देश वर-वीरता की रन की विशाल भाव ,

पति थी मुमपति के राखिये की लार्वे ही ,

गुदो बस्यो जाय हाय दीरि मून देख्यो आय ,

एहो रामरमान तुम्हीं भारत की आर्ये ही ।

गुरु थी पुजारी पडे पडित भिखारी भद्र ,

रागी थी बिरागी दागी काम करै चोरी के ,

गौश्री में घूम हूस राजा प्रजा धूम भण ,

धनिय पदावै व्याज अग जिमि होरी के ।

'जोतिर्नी' दुकान के मुनाफा को न परिमान ,

धरम विधात दान मान ककमोरी के ;

गारत न होय कैसे आरत स्वरूप यहि ,

भारत में सारे रोचगार मुशतपोरी के ।

बेचा को वत कतवारिन को पूरो तत ,

घर को महत करै वैभव की परजा ;

गुदो गेह रक्षक विदेशी घखभक्षक ह्यै ;

बोहै जोति 'जोतिर्नी' स्वतन्त्रता के करखा ।

णकता के सूत में अद्वृत देश धाँधै यीर,  
 देशी माल देश ही में राखै हीहि हरजा;  
 घनरूप धारै, राता रक की सँवारै देह,  
 घरजा बनाय डारै दारिद को घरला।  
 परसुराम अरु राम कृष्ण के रहे विरोधी,  
 ईशो, बुद्ध, प्रताप, शिवादिक के पय रोधी;  
 तिमि गाधी व परे देखि जहँ तहँ रिपुरुरे,  
 वचक देश सुधार धार के यंधन पूरे।  
 जाप्रत प्रभात में निरखि निज,  
 द्विध भिन्न माया महल।  
 शुचि सृष्टि सुधारक के सदा,  
 रहते द्रोही दैत्य - दल।  
 समय—सवत १६५२

नाम—( ३६१८ ) कृष्णधलदेव खत्री, कालपी।

धन्म काल—स० १६२० के लगभग।

समय—१६५२।

प्रथ—भर्तृहरि-नाटक, फाहियान भाषा, छूणत्साग भाषा, विद्या विनोद पत्र का कुछ साल तक संपादन।

विवरण—यह महाशय हिंदी के बड़े रसिक और गद्य के मुखेलक थे। प्राचीन विषयों की खोज में भी इन्होंने समय लगाया। इनका भर्तृहरि नाटक पढ़ने में रुलाइ छा जाती है। विद्या विनोद पत्र भी इन्होंने कुछ साल निकाला। आपका स्वर्गवास स० १६८८ में हुआ। मरने के पूर्व इनको इस बात का कुछ भान हो गया था, जिससे यह हम तीनों लोग तथा अन्य मित्रों से यही कहकर मिल गए कि शायद अब मिलना न हो।

नाम—( ३६१६ ) गंगाप्रसाद अग्निहोत्री ( पंडित )।

यह हमारे प्राचीन मित्र थे। आप हिंदी के एक परम प्रसिद्ध गद्य-लेखक और कई स्वतंत्र गद्य एवं अनुवाद-ग्रंथों के रचयिता थे। आप मध्य प्रदेश की दुधवादा रियामत में ऊँचे कर्मचारी थे। आपने मराठी के विपनूणकर-नामक प्रसिद्ध लेखक के सस्कृत कवि पंच एवं निषधमालादर्श का भाषा अनुवाद किया तथा रस-वाटिका नामक रम-सम्बन्धी एक अच्छा रीति-ग्रंथ लिखा। भवभूति के आधार पर इन्होंने मालती माधव नामक एक ग्रंथ उपन्यास के ढंग पर बनाया। नर्मदा पर आपने एक कविता ग्रंथ भी रचा। आप भाषा के बड़े ऊँचे लेखकों में गिने जाते हैं। आपके ग्रंथों में नियमनाला, प्रणयी माधव, राष्ट्र भाषा, संस्कृत-कवि पंच, मेघदूत, डॉक्टर जासन की जीवना और नर्मदा विहार मुख्य हैं। कुछ काल आप कोरिया रियामत के दीवान थे। गो-वशोद्धति के आप बड़े ही प्रेमी रहे और इस विषय पर बहुत सी गद्य तथा पद्य-कविता आपने की। आपका म्यगवास स० १९८८ में हुआ। आपके ग्रंथ गभीरता पूर्ण तथा रोचकता से अलंकृत हैं।

नाम—( ३५२० ) जगन्मोहन वर्मा।

इनका जन्म स० १९२७ में बस्ती जिले के देवीपार नामक ग्राम में हुआ। आप टाडूर धरानसिंह के पुत्र थे। आपने १६ वर्ष की अवस्था में उर्दू तथा फ़ारसी की शिक्षा घर पर ही समाप्त की। इसके पीछे आप अँगरेज़ी हिंदी तथा सस्कृत का अध्ययन करने लगे। स० १९६६ में आप हिंदी शब्द-मार्ग के संपादन-कार्य में सम्मिलित हुए, तथा स० १९७४ तक यह कोष-संपादन-कार्य करते रहे। आपने अनेकानेक लेख पत्र-पत्रिकाओं में लिखे। इनका स्वग वास हुए कई वर्ष हो गए हैं। आपके जगबहादुर, बुद्धदेव, श्येन आग, लोकरू-वृत्ति, सुंगयुन नामक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं तथा शून्यसाग विवेकानंद का ज्ञान-योग, राजयोग, भक्ति-योग, काव्य-

कलानिधि, विद्यामाली, शब्दशास्त्र और पुरुषार्थ नामक ग्रंथ भी  
अप्रकाशित हैं। आपकी हिंदी-सेवा उपयोगी विषयों पर होने से बहुत  
महत्ता युक्त है। भाषा तथा भाव भी उच्च काटि के हैं। इनकी रचनाएँ  
स्वदेशानुराग-युक्त होने से और भी जगमगा उठी हैं।

नाम—( ३२१ ) दर्शनदुने, ग्राम बदनवार, परगना सताल,  
( निहार प्रात )।

जन्म-काल—स० १९३२।

कविता-काल—स० १९२२।

मृत्यु-काल—सं० १९६६।

ग्रंथ—( १ ) दर्शन विनाद ( सं० १९२२ ), ( २ ) मेघनाद  
ग्रंथ नाटक ( सं० १९२३ ), ( ३ ) मै मा दुर्गा, ( ४ ) श्रीमच्छं  
कराचार्य विरचित मखिरलमाला का हिंदी गद्य पद्यानुवाद ( सं०  
१९२३ ), ( ५ ) प्रबोध चंद्रिका ( सं० १९२३ ), ( ६ ) प्रेम  
प्रगाह, ( ७ ) शैवानंद, ( ८ ) युगलविहार, ( ९ ) संगीतसार,  
( १० ) उपासना विषय पर व्याख्यान ( सं० १९२६ ), ( ११ )  
दुगा आगमनी-स्तोत्र, ( १२ ) निज भाषा की कविता, ( १३ )  
हरेनामैव केवलम् ( हिंदी अनुवाद ), ( १४ ) पावस पचासा,  
( १५ ) शृंगार तिलक ( १६ ) श्रुतमान्ता, ( १७ ) शृंगार-संहार  
( ससृष्ट-काव्य ग्रंथ ), ( १८ ) चैतामग्रह।

विवरण—आप भारतवासी गोपीय प० श्रवण दुबे के पुत्र थे।  
हिंदी तथा ससृष्ट के अतिरिक्त आपने अँगरेज़ी की भी शिक्षा पाई  
थी। कविता बनाने की प्रवृत्ति आप में पहले ही से थी। इनका तथा  
इनके पूर्वजों का जीविका साधन कृषि-कर्म था। ऊपर दिए हुए अठारह  
ग्रंथों के अतिरिक्त इन्होंने 'समस्या-सूक्ति प्रकाश' तथा 'द्वीपदी-वीर  
हरण' नामक दो ग्रंथ और बनाए, किंतु वे अब उपलब्ध नहीं हैं।  
शृंगार तिलक, श्रुतमान्ता तथा शृंगार-संहार इनकी रचनाओं के

सर्वोत्तम नपूने हैं, ऐसा कहा जाता है। आपकी मध रचनाएँ अभी तक अमुद्रित रूप में पढ़ी हुई हैं। [ प० बालामसाद दुबे, शिक्षक, गोवा इंस्टीट्यूट, (सताल परगना) द्वारा ज्ञात ] आप धार्मिक तथा दार्शनिक विषयों पर बहुत धम कर चुके हैं तथा नुक्ति भी हैं।

उदाहरण—

कैधों बल बन मरुद कुच पान हतु,  
 चपकि मल्लिद रग मत्त चैठो परयी।  
 कैधो कुमुमायुध के कचन शिलीमुग पै  
 तमत कुधातु गुण सोद हिमवरकी।  
 उपमा बिलोकि कुच कमल मरीच्ये कहै,  
 हिम को संयोग पाय नैहे त्रिधौ मरकी।  
 'दरसन' याही दर अचल दुरात कुच;  
 कलरा ढकी हे मनो देव पचरकी।

× × ×

नाम—( ३६२२ ) चुन्नेला वाला।

यह विदुषी कवियित्री लाला भगवानदीन (सपादक, लक्ष्मी पत्रिका) की धर्मपत्नी थीं। शुरु है कि इनका आपाद, सयत् १६६० में बैकुण्ठ्यास हो गया। इनकी रचित कविता का समग्र करके चतुर्भुजसहाय वर्मा, छतरपुरवासी ने बालाविचार नाम से प्रकाशित किया। इसमें १२ विषयों पर कविता है, अर्थात् माता महिमा, पुत्री के प्रति माता का उपदेश, गृहिणी सुख, सस्यार सार, शबन्त उपासक, चाहिए ऐसे बालक, पुत्र, भारत का नरेश, सावधान, बाल दिनचर्या, राधिका कृत कृष्ण चिंतवन और कृपा-कौमुदी। ये सब प्रथ ४० पृष्ठों में समाप्त हुए हैं। इसके प्रथम लाला भगवानदीनका रचित विरह बिलाप नामक काव्य छपा है। बालानी का काव्य बहुत ही देशप्रेम-युक्त, सरस, मनोहर तथा उपदेश पूर्ण है। इसी भाँति के विषयों पर कविता



रचना आजकल प्रत्येक शिक्षित का काम है। बालाविचार बहुत प्रशंसनीय प्रथ है। उदाहरणार्थ हम भारत के नशे से कुछ कविता यहाँ देते हैं। नशे का बखान माता अपनी पुत्र से कह रही है।

माता —

ह प्यारे कदापि तू इसको तुज श्याम रेखा मत मान ;  
यह है शैल हिमाचल इसको भारत भूमि पिता पहचान ।  
नेह-सहित ज्यों पितु पुत्री का मादर पालन करता है ;  
यह हिमगिरि त्यों ही भारत हित पितृभान हिय धरता है ।  
गंगा-यमुना युगुल रूप से प्रेम धार का देकर दान ;  
भारत भूमि रूप दुहिता का नेह-सहित करता सनमान ।

पुत्र—

यह जो घाम और नशे के रेखामय अतिशय अभिराम ;  
शोभामय सु दर प्रदेश है मुझे यता दे उसका नाम ।

माता —

चेग यह पजाप-देश है पुण्य भूमि सुख शक्ति निवास ,  
सर्व प्रथम इस थल पर आकर क्रिया अरया ने निगवास ।  
कहीं गान ध्वनि कहीं वेद ध्वनि कहीं महामन्त्रा का नाद ,  
यज्ञ धूम से रहा मुदासित यह पनाय सहित अह्लाद ।  
इसी देश म बस के 'पोरम' ने रखा है भारत-मान ;  
जब सम्राट सिन्दूर आकर विद्या चाहता था अपमान ।  
इमसे नीचे देव पुत्र यह देश दृष्टि जो थाता है ;  
सकन बालुकामय प्रदेश यह राजस्थान कहाता है ।  
इसके प्रति गिरिवर पर वेदा अह प्रत्येक नदी के तीर ;  
देश-मान हित करते आए आत्मवितर्जना क्षत्रिय वीर ।  
कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ अमर चिह्नों के रूप ;  
धीर कहानी रजपूता की लिखी न होवे अमर अनूप ।

छत्री कुल अचतस वीरवर है 'प्रताप'जी का यह देश ;  
रानी पद्मावती सती ने यहीं किया है नाम विशेष ।  
क्षत्रीय-जात को च्छद्विष करना इसको नित्य प्रथाम ;  
हमसे क्षत्रीवर्ग क जग म सदा रहेगा रोशन नाम ।

नाम—( ३६२३ ) राजाराम शास्त्री ।

इनका जन्म सं० १६२७ म हुआ । आप दयानन्द-कॉलेज, लाहौर  
में अध्यापक रहे । वारमीकीय रामायण, वेदांतदर्शन, योगदर्शन,  
मनुष्य-समाज, शंकराचार्य ( जीवन-चरित्र ), पृथ्वीदारण्यकोपनिषत्,  
दशोपनिषत् भाष्य-नामक ग्रंथ आपने बनाए । आप भाषा के  
मर्मज्ञ और उपयुक्त ग्रंथों के अतिरिक्त भी अन्य कई पुस्तकों के  
रचयिता थे । आप बड़े ही परोपकारी और धर्मनिष्ठ सज्जन बड़े  
जाते हैं । आपका साहित्यिक श्रम बहुत उपयोगी तथा शलाय है ।

नाम—( ३६२४ ) श्यामसुंदर ( श्याम ) ।

यह असनी, जिला फ़तेहपुर निवासी पंडित मन्नालाल मिश्र के पुत्र  
और कवि सेवक के शिष्य थे । इन्होंने सं० १६६२ में ठाकुर महेरचर  
यशसिंह तथल्लुङ्गदार रामपुर, मथुरा जिला सीतापुर के आशा-  
नुसार महेश्वर-सुधार-नामक ग्रंथ बनाया । इसमें नायिका भेद  
का बर्णन है, और अंत में समस्या पूर्ति के छंद हैं । इस ग्रंथ की  
भाषा व्रज भाषा है । कवि ने प्रायः सब उदाहरणों का तिलक भी  
कर दिया है । यह महाशय साधारण श्रेणी में गिने जाते हैं । उदा  
हरणार्थ इनका एक छंद लिखा जाता है—

शोभित मोरपखा श्रुति कुण्डल माल बिसाल हिए बिलसी है,  
श्याम-सरोज विनिदक नैन सुभानन की समतान ससी है ।  
बैा सुधा मुसकानि अमी सम देख अरी उर आनि गसी है,  
मूरति माधुरी मोहन की सुनतै सजनी मन माँहि बसी है । १ ।

मन्य—सय १०५३

नाम—( ११२१ ) जयदेवजी भाट, अलवर ।

जन्म-काव—सं० ११२८ ।

रचना-काल—सं० ११२३ ।

रचना—रूप काव्य ।

विवरण—आप राय राजा अलवर के माधित थे । आपकी कविता बड़ी ही मरग होती है ।

उदाहरण—

पेंत्री सुगंध भरी लतिफा सोद गोरखधप प्रधप पावो ;  
 त्यो जयदेव विमूनि ही भाति यदे अनुराग पराग लगावो ।  
 गिरम गोल निषाल अनोठ विरई शुनि बोल अतोल सुगावो ;  
 प्राग की भील वियागिन पै तिराग पच्छीर हूँ मांगन आवो । १ ।  
 सारन को करिबै चहुँ ओरन मंद भरे यन मोर नचंगे ;  
 बारिद बागु छटा जुा देखि वियोगिन के ता ताव तचंग ।  
 त्यो जयदेव उमगन सा नर-नारि अपार विहार रचंग ;  
 पायस की शयु म सयनी विन पीताम के छिमि मान बचंगे । २ ।

नाम—( ३१२६ ) मथुराप्रसाद पांडेय, मथुरा ।

मृत्यु-काल—सं० ११०८ ।

ग्रंथ—रूप कविताएँ ।

विवरण—आप एक अच्छे आशुभवि थे । आपकी कुछ आठ रचनायों के उदाहरण नीचे दिष्ट गए हैं । ये आप 'विदित' उपनाम से अंकित रहा करती थीं । कहा जाता है कि इन्होंने कई ग्रंथ लिखे हैं, किंतु ये धर्मी अमुद्रित हैं । यह महाराज भगवान् धीरुष्य एव मथुरापुरी के अनन्य भद्र थे, और इसी पुरी में तीव्र सन्यास ग्रहण करके निवास करते थे । [ प० जगदीशपति त्रिपाठी, काशी द्वारा ज्ञात ]

उदाहरण—

विलोकित जाकी नइ सुपमा सुखमानि समागमे रहैं रतिमार ;  
सने तन सोनजुरी शामी के प्रसूनन हूँ से महा सुखमार ।  
एरी विपुरी धो घटा घन की-सी 'विचित्र' छटा सरसै ये सुमार ;  
सो भानुसुमारी के तार लसैं शृपभानुकुमारी धो 'ददुमार' । १ ।  
मयूरपत्न्या उनके सिर पै इनके गुही बेनी कि महु सरोर ;  
कसी उनके कटि बाजनी पीत, चुभी उनके चुनि चूनरी छोर ।  
'विचित्र' सी वे हापै, उनपै ये, करै रत बात में घात करोर ;  
गड़ी उनकी धँसियाँ हापै, उनकी इनपै बिगड़ी बरजोर । २ ।

नाम—( ३१२७ ) महेंदुलाल गर्ग ( पंडित ) ।

आपका जन्म सं० १९२८ में हुआ । आप सेना विभाग में डॉक्टर थे, सो स्थान स्थान पर प्रून् घूमे । आपने कारमार और चीन भी देखे । गंग तिनोद, अनतज्वाला, पृथ्वी परिक्रमा, पति-पत्नी-सगाद, तरणों की दिग्ग्यां, जापान दृषण, चीन दृषण, जापानीय छा शिक्षा, प्लेग चिकित्सा, भुव-देश, सुख-मार्ग, परिचर्या-प्रणाली आदि अनेक उपयोगी ग्रंथ आपने लिखे । इनके अतिरिक्त डाक्टरों विषय के भी आपके कुछ ग्रन्थ ग्रंथ हैं । अंततज्वाला ग्रंथ हमारा देखा हुआ है । आपके ग्रंथ उपयोगी और शिक्षामुद हैं । आप बड़े उत्साही अपने धुन के पक्के सज्जन थे ।

नाम—( ३१२८ ) सकलनारायण पाडेय ।

आपका जन्म सं० १९२८ में हुआ । आप बड़े ही उत्साही पुरुष और उन्नति-सचधी नवीन सामाजिक विचारों के पक्षपाती रहे । मुख्यतः आप ही के परिश्रम से आरा नागरी प्रचारिणी सभा स्थापित हुई । आपने अनेक ग्रंथ रचे, निरम से हिंदी सिद्धांत प्रकाश, सृष्टितत्व, प्रेमतरंग, आरापुरातत्व, वीरबाबा निबंध-माला, व्याकरणतत्व आदि प्रधान हैं । राजरानी और अपरानिता आपके

उपन्यास है। थाप घटे ही मिलनमार श्रीर उदार प्रकृतिवाल पुन्य थे। थापने जैनेद्रकिशोर की एक अच्युती जीवनी भी लिखी। थापराजिता उपन्यास में चरित्र चिन्त्य उच्च फोंटि का है। पंडित्यदी हमारे उत्कृष्ट गद्य लेखका में से हैं।

गाम—( ३६२१ ) हरिनाथ ( आलू पंडित ) ।

जन्म-काल—स० १६२३ ।

रचना काल—स० १६६३ ।

ग्रथ—( १ ) आलू पुराण, ( २ ) हलचल हल्ला, ( ३ ) हलचल कजरी, ( ४ ) हलचल पुराण ।

धिवरण—थापतपुर सराय तक्री में जन्म हुआ। भाद्रकाल फाणी में चिरकाल से रहते हैं। हास्य-रस के उद्भूत कवि एवं खेवक हैं। आलू पंडित के नाम से प्रसिद्ध हैं। समाज तथा देश सुधारक हैं।

उदाहरण—

आलू पंडित की आई रोदाई,  
हर से खादै उदारिन खादै हुन्नर नइ सिखलाई।  
गुरु वही जो चेला सिखावै करै कमाई तो खाई;  
आलूजी के व्याह भण जब दूनी दुलहिन पाई।  
हे दुलहिन दूनी औ मोठी गाम हे बैंगन पाई  
नारद नित चाहत पंडित सँग जो भागत हरखाई।

समय—संवत् १६५४

नाम—( ३६३० ) गोप्यअलादेवी 'ज्ञान-कला', अपहर ग्राम, छपरा जिला।

जन्म-काल—स० १६३६ ।

कविता-काल—सं० १६६४ ।

मृत्यु-काल—सं० १६७७ ।

ग्रन्थ—( १ ) सियवर-सप्तक, ( २ ) हनुमानाष्टक, ( ३ ) राम नाम-माहात्म्य-चालीसा, ( ४ ) विनय-पचासा, ( ५ ) भूला-बहार, ( ६ ) श्रीहनुमान यशावली, ( ७ ) श्रीसीताराम-होली-बहार, ( ८ ) आनन्द निधि-दोहावली ( अप्रकाशित ), ( ९ ) जयकार शतक, ( १० ) युगल-केलि-गीतावली, ( ११ ) श्रीसीताराम-नख शिख, ( १२ ) शिवाष्टक ।

विवरण—आप कायस्थ कुलोत्पन्ना बाबू युगलकिशोरलालजी की पुत्री थीं । आपका जन्म गया ज़िलातर्गत त्रिनामा-नामक ग्राम में तथा विवाह अफहर ग्राम के निवासी बाबू कृष्णदत्तदेवजी के साथ हुआ । आप महात्मा श्रीतुलसीदासजी की शिष्य-परंपरा-वाले महात्मा श्रीजानकीशरणी की शिष्या थीं, और इन्हीं के पास आपने रामायण का अध्ययन किया तथा कविता करती सीखी । आपको संगीत से भी अनुराग था । इनके अप्रकाशित ग्रंथों की प्रतिलिपि प्रतियाँ उक्त महात्मा श्रीजानकीशरणी के यहाँ मौजूद हैं । आप एक अच्छी स्त्री-कवि थीं । [ श्रीरामचरणी, किशोरी-भवन, मुज़फ्फरपुर, बिहार द्वारा ज्ञात ] ।

उदाहरण—

कैधों शोभा सर बिच विकस्यो मरोज, कैधों  
 सोरह फलान-युत अद्भुत सुचद है ।  
 कैधों विधि निच निपुनाई तै मुकुर रच्यो,  
 देखि ताहि लियो करि भदन पसद ऐ ।  
 कैधों अक्षय फरजद मन मोहिबे को,  
 सुदर अनूप पंचवान केरे फद है ।  
 'गोपशली' कैधों अद्भुत आव भरो,  
 मिधिलेश नदिनी को मुख आनंद को कद है ।

नाम—( ३६३१ ) प्रबोधचंद्र, कतरोसराय ( गया ) ।

जन्म-काल—सं० १९२६ ।

उदाहरण—

### विप्रेदन

यौवन मीमा प्रचठ-त्ताप में गुलाम रहा है मेरा मन ;  
तीव्र-त्तालमा लू की लपटें घड़ती जाती हैं छुन-छुन ।  
अतस्थल को जला रहा है धधक-धधकर प्रेम अनल ;  
पूट-पूटकर विलप रही है परदे में पासना विच्छल ।  
मेरी हृदय वेदना हर जा दरम दिग्गबर ये स्वामी ;  
पा विश्राम सुन्द छाया में होऊँ तेरा अनुगामी ।

नाम—( ३६३२ ) भगवानदीन मिश्र ( तीन ) ।

जन्म-काल—स० १९११ ( अनुमान में । हमारे मिलनेवाले थे । )

विषय—यह खैराबाद, सीतापुर निवासी एक प्रसन्निय कवि थे ।

आपने विविध छंदों में एक रामायण तथा बहुतेरे सुन्दर छंद कहे ।  
होली विषयक बहुत-से कबीरवादी विषयों के भी आपने घनाशरी आदि  
छंद रचे । साहित्य विषय के आनंद में प्रायः आप निमग्न हो जाते  
थे । अनुचित अभिमान के यह ऐसे विरोधी थे कि उसको कदापि  
महान नहीं कर सकते थे । दीन कवि दरिद्रता की दशा में भी उदा  
रता का सुख अनुभव करने और यथामाध्य धीमान् मनुष्यों की भाँति  
व्यय करने से मुक्त नहीं होते थे ।

इनके विषय में इनके मित्र ने क्या ही टीक-टीक कहा था कि—

भनत विशाल जग शोधक भँहीवा रचि,

मानिन को मान भरसावत किरत हैं ।

चारु कविताई के अनद को सरूप निज

भीतन को दीन दरसावत किरत हैं ।

आपकी मजभाषा-रचना उच्च कोटि की है । इनके छंद हमने बहुत  
सुने हैं, किंतु इस समय कोई उदाहरण हमारे पास नहीं है ।

नाम—( ३२३३ ) श्यामविहारी मिश्र ( रायबहादुर तथा राव राजा ) ।

इनका जन्म सं० १९३० म इगोजा, जिला सप्तगढ में हुआ । इनके पिता पं० मालदत्त मिश्र एक मुकवि थे । पारयायस्था में उच्च पढ़ इन्होंने लखनऊ आकर सं० १९४२ में अँगरेजी का पढ़ना धारंभ किया । सं० १९४२ में बी० ए० पास करके इन्होंने दूसरे साल एम० ए० पास कर लिया, और सं० १९४४ मे य डेपुटी-कलेक्टर नियत हा गण । सं० १९६२ में इन्होंने अपनी गौरी पुलीस में बदलवाकर डेपुटी सुपरिंटेंडेंट का पद पाया, और सं० ६७ में महाराज छतरपुर ने इन्हें अपनी रियासत के दीवान होने के निमित्त चुनाया । तब यह पुलीस छोड़कर फिर डेपुटी कलेक्टर पर चले गए । अनंतर आप रजिस्ट्रार कोआपरेटिव-क्रेडिट-सोसायटीज तथा फार्सिल थॉरू स्टेज के मेंबर हुए । डेढ़ साल पछी डेपुटी-कमिश्नरी पर रहे । इन्होंने पद्य रचना १५ या १६ वर्ष का अवस्था से धारंभ कर दी थी, और सं० १९२५ म अपने कनिष्ठ भ्राता शुभदेवविहारी मिश्र के साथ लव-कुश-चरित्र-नामक पद्य ग्रंथ अलागद में रचा । इसी समय से प्राय सब छुद और गद्य लेख सामे ही में बनते रहे । सं० १९२६ में सरस्वती पत्रिका निकली । तभी से गद्य लेख भी लिखने लगे । पहला गद्य लेख हमीरहठ की समालोचना विषयक था, जो सरस्वती के प्रथम भाग में छपा । पीछे मे स्कूट लेखों के अतिरिक्त, विकटोरिया अष्टादशी, व्यय, हिंदी अपील, रूस का इतिहास, भारत का इतिहास (दो भाग) जापान का इतिहास, नेग्रोन्मीलन नाटक, भारत विनय, सुमनाजलि, हिंदी-नवरत्न, मदन-दहन, रघुसभ्य, हा काशीप्रकाश, चूंदी-बारीश, धीर-मणि, आत्म शिक्षण, पद्य पुष्पावलि, पूर्व भारत नाटक, उत्तर-भारत नाटक, शिवाजी नाटक आदि ग्रंथ समय-समय पर इन्होंने अपने कनिष्ठ भ्राता के साथ बनाए । इनमें से व्यय, रूस का इतिहास,



जापान का इतिहास और हिंदी-नवरत्न ग्रंथ में हैं। हा काशी-काशी और भारत विनय गद्दी बोली के पद्य में और नाटक छोड़ शेष ग्रन्थ-भाषा पद्य में हैं। भूपण प्रयावली नामक ग्रंथ में भूपण की कविता पर टिप्पणी एवं समालोचना है। हिंदी नवरत्न तथा यह ग्रंथ मिश्र बधु विनोद प० गणेशविहारी तथा प० शुकदेवविहारी के साथ बनाए गए। स० १९८६ में आप हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति नियुक्त हुए। इन तीनों भाइयों के विचार नूतन हैं। काशी-नागरी प्रचारिणी सभा के द्वारा यू० पी० सरकार की सहायता से हिंदी लिखित ग्रंथों की गोज का काम प्राय ४० वर्षों से हो रहा है। उसकी बहुतेरी वार्षिक तथा त्रैवार्षिक रिपोर्टें निकला करती हैं, जिन्हें सरकार अपने यम से छापती है। हम काय के निरीक्षण का काम श्यामविहाराजी ने १ या १० वर्ष किया, तथा शुकदेवविहारीजी ने सात बड़े साल। ज्येष्ठ भ्राता के इस काम की दो त्रैवार्षिक रिपोर्टें प्राय पाँच-पाँच सौ पृष्ठों की हिंदी तथा अंगरेजी में निकली थीं, जो इन दोनों भाइयों ने लिखी थीं और जिन्हें सरकार ने छपाया। इस लिये गोज के काम से मिश्रबधु विनोद को बहुत कुछ सहायता पहुँची है। विनोद म खोन के अतिरिक्त और भी बहुत-सा मसाला है। हम लोगों के मिश्रबधु विनोद तथा हिंदी नवरत्न कई उत्तर भारतीय विश्वविद्यालयों में पाठ्य ग्रंथ कई सालों से चले आते हैं। ये दोनों प्रधानतया गोज और समालोचना के ग्रंथ हैं। भारत के इतिहासवाले ग्रंथों में प्राय ६००० सवत् पूर्व से ६०० सवत् पूर्व तक का इतिहास है। दूसरे खंड में बौद्धकाल से प्रारंभ होकर मुसलमानों के आने तक का ग्रंथ है। इन दोनों भागों में ईद-खोन का बहुत काम है। आत्मशिक्षण एक उपदेश प्रद निबंध है, जिसमें धरित-सशोधन की शिक्षा दी गई है। भारत विनय गद्दी बोली में १४७ पृष्ठों का देश भक्ति पूर्ण काव्य-ग्रंथ है। हम लोगों

के पारो नाट्य-ग्रंथ स्टेज पर खेलेने योग्य है । शिवाजी अभी प्रकाशित नहीं हुआ है, किन्तु जल्द छपेगा । पूर्व भारत काशी छतरपूर और घृदावा में खला जा चुका है, तथा पनाथ में पाठ्य पुस्तक है । इसके चार सस्करण निकल चुके हैं । इसका बंगला में अनुवाद भी हुआ है । धीरमणि उपन्यास-ग्रंथ २, जिम्मे थलाउहीन के मनम मेवाङ्ग-सुद्ध का भी वर्णन आया है । घूँदी-वारीय ब्रजभाषा का पाठ्य ग्रंथ है । मुमनोंमलि तथा भारत के इतिहास में हिंदू धर्म पर भी भारी विवेचन है । मदा-दहन और रजुसभव में कालिदास के माङ्गे तीन अध्यायों का स्वच्छ अनुवाद है । पद्य पुष्पाञ्जलि में २४० पृष्ठों में हमारे सुने हुए पद्य-साहित्य का सन्निवेश है । शिवाजी स्वदेशानुराग युक्त नाटक है, और उत्तरभारत वैसे ही है, जैसा कि पूर भारत । नेत्रोर्मिला में कचहरियों पर प्रकाश पड़ा है । रूप और जापान के इतिहास छोटे रूप में उन देशों का पूरा वर्णन करते हैं ।

उदाहरण —

समरथ सुतन पै रागत पिता है प्रेम,  
 मातु पै लुपतन बिसैल अपनावर्ता,  
 देलि प्रीद सुत को सुजम मन-भोद भरै,  
 कादर को तबहू दिना न बिसरावती ।  
 मातु भारती को हीं तौ कादर कृत मति,  
 याते अथ चरन सरन तकि धावती ;  
 अरविंद नद सों न सकति अमद पाइ,  
 मातु तखचद की छटा ही चित भावती ।

X

X

X

समय—संवत् १९५५

नाम—( ३५३४ ) नारायण स्वामी, माडवारी गली, लखनऊ

जन्म-काल—स० १९३० के लगभग ।

रचना काल—१९१६ ।

ग्रंथ—( १ ) स्वामी रामतीर्थ के व्याख्यानों के हिंदी अनुवाद  
( २ ) भगवद्गीता की व्याख्या ( दो भागों में ) ।

विषय—आप स्वामी रामतीर्थ के शिष्य तथा उनके आश्रम के अधिष्ठाता हैं । अंगरेजी जानते हैं, संस्कृत के अच्छे पंडित तथा हिंदी के उत्कृष्ट व्याख्याता हैं । आप बड़े परोपकारी, समुद्र प्रांतीय धर्म रक्षिणी सभा के सभापति तथा उत्साही कार्यकर्ता एवं सज्जन हैं । कई मंदिरों का उद्धार एवं सुप्रबध किया है । हम लोगों पर भी कृपा करते हैं । शास्त्र भी हैं ।

नाम—( ३१३१ ) बनवारीलाल चतुर्वेदी, हरदोई ।

जन्म-काल—स० १९३० ।

मृत्यु-काल—स० १९७१ ।

ग्रंथ—तिमिर प्रदीप ।

विषय—आप मायूर चतुर्वेदी गणपति प० हुन्मचदजी मिश्रके पुत्र तथा हरदोई जिले के सदर मजिस्ट्रेट थे । आप सुकवि समझ पड़ते हैं ।

उदाहरण—

तिमिर प्रदीपक ग्रंथ मिल्यो सुंदर सुभाव्य छुत ,

ज्योतिष दीप अपार तासु माया आशय छुत ।

फलित गणित अरु प्रश्न तंत्र शुभ लग्न तंत्रिका ;

जय र अजय के प्रश्न यागिनी मंत्र जत्रिध ।

लघु जातक जातक सबै सय सुनि सुनि आशय सुहित ,

यह रचौ छुद रचना मुकम सो संपत हौं आपु हित ।

नाम—( ३१३६ ) रामचंद्र दुवे ।

जन्म-काल—१९३० ।

ग्रथ—( १ ) हूँगरपुर-राज्य का इतिहास, ( २ ) घाँसवाड़े का इतिहास, ( ३ ) होरेशस या कुमारी, ( ४ ) निर्धन राम, ( ५ ) खेतड़ी राज्य का इतिहास ।

विवरण—हूँगरपुर निगसी प० भब्यालाल के पुत्र ।

नाम—( ३६३७ ) राय दधीप्रसाद ( पूर्ण ) ।

जन्म-काल—सं० १६२६ ।

कविता-काल—सं० १६२६ ।

मृत्यु-काल—सं० १६७२ ।

विवरण—यह काव्यस्थ महाशय कानपुर में बकालत करते थे, जो अच्छी चलती थी । राय साहय कविता के बड़े प्रेमी और गाने-बनाने में भी निपुण थे । इनके रचित तथा अनुवादित गृयुजय, धाराधरधावन, चंद्रकलाभानुकुमार नाटक और बहुत-से स्फुट छंद हैं । यह रसिक-समाज के उपसभापति थे, और रस-धाटिका में इनकी बहुत-सी समस्या पूर्ति की रचना प्रकाशित हुई थी । सरस्वती में भी इनकी कविता प्राय छपा करती थी । इनका काव्य बहुत सरस होता था । गद्य के भी यह अच्छे लेखक थे । इनका धाराधरधावन, ( मेघदूत भाषा ) एक सुंदर ग्रथ है, जिसमें फालिदास के पूण भाव लाने में यह समर्थ हुए हैं, और उस पर भी इसमें शिथिलता नहीं आने पाई, जो प्राय अनुवादों में आ जाती है । यह गड़ी बोली का काव्य भी करते थे, जो प्रशंसनीय है । इनका नाटक खेलने के अयोग्य, किंतु दानवोत्कर्ष-पूण होने से अच्छा कहा जा सकता है । वास्तव में नाटक न होकर वह नाटक के रूप में एक उत्कृष्ट काव्य ग्रथ है । इनकी भाषा प्राय ब्रजभाषा होती थी, जो सानुवास और हृदय प्राहिणी है । इनकी कविताओं का संग्रह 'पूर्ण संग्रह' नाम से छप चुका है । इनकी गणना तोप कवि की श्रेणी में की जाती है । आप हमारे मित्र थे । इनमें बचित्व शक्ति उच्च कोटि की थी ।

उदाहरण—

कचा के भूखन सँवारे पुतरान धारे,  
 धारी जरतारी पीत सारी सुन्दकारी है;  
 सूनी दुपहर में निदाघ की विहारी पास,  
 पूरन सिधारी घृपभानु की कुमारी है।  
 मनचद्र ध्यान में मगा रसवान प्यारी,  
 ताती पौन लेपत बसत की धयारी है;  
 आतप थलड षडकर की प्रचड सोऊ,  
 मात मुचद की अमद उजियारी है। १।  
 कुजन के सघन तमालन के पुनन में,  
 करत प्रवेश न दिनेश उजियारो है;  
 प्यारी सुकुमारी श्याम सारी सजे ठाड़ी तहाँ,  
 तिलमणि-मालन का जाल छनि धारो है।  
 द्विटके बदन चद्र कुतल अमद श्याम,  
 श्यामा रग पागी मान रभा को विदारो है;  
 पूरन सुअगन पै सौरभ प्रसग पाय,  
 भूमै श्याम भौरन को झुड मतधारो है। २।

नाम—( ३१३८ ) शुकदयविहारी मिश्र, रायबहादुर।

इनका जन्म स० १९३६ में इगैजा में हुआ। इनके पिता प० पालदत्त मिश्र एक प्रसिद्ध जमींदार और कवि थे। इन्होंने बाल्या बम्ब्या में उद् पढ़कर स० १९४६ में लखनऊ जाकर अँगरेजी पढ़ना आरंभ किया। स० १९५७ में इन्होंने बी० ए० होकर स० १९५८ में हार्दिकोर्ट बकालत की परीक्षा पास की। कुछ साल बकालत करके स० १९६६ में इन्होंने मुसफ़ी कर ली। इसके बाद सय-जन्म तथा रियासत छतरपूर में दीवान हुए। स० १९८८ में स्नायु-रोग से पीड़ित होकर दवा करने को आप थोरप गए, जहाँ छ महीने रहकर

आपने दवा की, तथा इटली, आस्ट्रिया, जर्मनी, हालैंड, हँगलैंड, फ्रांस और स्विट्ज़रलैंड देखे। अनंतर नीरोग होकर भी आपने उसी सबत् म नौकरी से पेंशन ले ली। सं० १६८४ म इन्होंने रायबहादुर की उपाधि पाई। इन्होंने पद्य-रचना १५ वष की अवस्था से आरंभ की थी, परंतु प्रथम ग्रंथ लघुकुश-चरित्र सं० १६५५ में अपने ज्येष्ठ भ्राता श्यामविहारी मिश्र के साथ अलीगढ़ में बनाया। सरस्वती पत्रिका के निकलने के साथ इन्होंने गद्य लिखना आरंभ किया। ग्रंथों के विषय में जो कुछ श्यामविहारी मिश्र के ध्यान में लिखा है, वही इनके विषय में भी समझना चाहिए, क्योंकि इन दोनों की प्रायः सब हिंदी-रचनाएँ सांके ही में बनी हैं।

सन् १६८६ में आप पटना विश्वविद्यालय म श्रवैतनिक रामदीन शीडर एक साल के लिये नियुक्त हुए। आपने नियमानुसार आठ व्याख्यान दिए। विषय था भारत के इतिहास पर हिंदी-साहित्य का प्रभाव। इस पर ३३४ पृष्ठों का एक ग्रंथ बन गया, जो छप चुका है।

उदाहरण—

बालमीकि व्यास कालिदास भवभूति आदि,  
 लादिले सुतन को न तेरे बिसरायो में,  
 पंगु सम तज गिरि लघन को धाय मातु,  
 तो सुत बनन हेतु लालसा बड़ायो में।  
 भ्रातन के धवल मुजस मैं कपूत बनि,  
 केवल कराल कालिमा को चपकाया में,  
 राखु मातु सारदा दया की दीठि फेरु तज,  
 साहस के अय तौ सरन तकि आयों में।

× × ×

पिंगल सों छाँटि सख सुदर सरस छंद,  
 परना के देवि यहि रचना मैं धारा कर,

रक्तता बिदारि त्या प्रगाढ़ अधिकार दैके,  
 सत्रद-ममूह मम सम्मुख पयारा कर ।-  
 परम विसाल ध्यनि व्यग्यन को घाल करि,  
 दोपन के जालन दया सों बेगि जारा कर ,  
 भूपननि भावनि रसनि परिश्रित कै,  
 बाल कविता को मानु सारद सहारा कर ।

गाम—( ३५३६ ) सूर्यकुमार वर्मा, कठवारा, लखनऊ ।  
 हाल में ग्वालियर निवासी ।

जन्म काल—लगभग स० १६३० ।

रचना-काल—स० १६५५ ।

ग्रन्थ—पुरातत्त्व एवं इतिहास पर कई ग्रन्थ लिखे हैं ।

विवरण—काशी-नागरी प्रचारिणी सभा के उत्पन्नाही सदस्य हैं ।  
 पहले काश्मीर में काम करते थे । अब ग्वालियर रियासत के उच्च  
 कर्मचारी हैं ।

समय—स वत् १६५६

नाम—( ३५४० ) अक्षयवट । मश्र ( उपनाम विप्रचद्र ) ।

इनका जन्म जेष्ठ शुद्ध १२, स० १६३१ को डुमराँव में हुआ ।  
 इनके पिता राजेश्वरी राधामसादसिंह महाराज डुमराँव के सभासद्  
 थे । यह शाकद्वीपी ब्राह्मण थे । इन्होंने संस्कृत भाषा अच्छी पढ़ी  
 है । चार वर्ष मालवा में इन्होंने जैन ग्रंथों का भाषा से संस्कृत  
 में अनुवाद किया, और तीन वर्ष कलकत्ता एवं मेरठ-कॉलेज में  
 संस्कृत का अध्यापन किया, तथा कुछ काल डुमराँव नरेश  
 के बालक को पढ़ाया । एक वर्ष इन्होंने अबधकेसरी मासिक पत्र का  
 संपादन किया । आपने संस्कृत के कुछ ग्रन्थ बनाए, और ध्यानद  
 कुसुमोद्यान एवं सदायहार नामक दो हिंदी पद्य ग्रन्थ भी रचे । पहले  
 में मनहरनों में शृंगार काव्य श्रीर द्वितीय में गाने की चीजें हैं ।

इनके अतिरिक्त मिथर्जी ने गगाजहरी, गगाटक, महिम्न, रिपगाङ्ग और भामिनीविलास का पद्य में तथा माकंडेय पुराण, देवी चौखानी और दशरुमार चरित्र का गद्य में अनुवाद भी किया। आपने अयोध्या नरेश, महाराणा प्रतापसिंह, पंडित राधाचरण ज्योशी, अज्ञान कवि, बच्चू मलिक, बालराम स्वामी, उमारनिदल शर्मा, कवि गोविंद गिल्ला भाई और दुर्गादत्त परमहंस के जीवन चरित्र लिखे। पुस्तक जल भी आपके बहुत हैं। उदाहरण में श्यामाभाय से केवल दो छंद पदाँ लिखे जाते हैं। आप उष धोखी के गद्य-लेखक और सुखवि हैं।

बार-बार धनके चरुँघा बचला री देखु,  
 विप्रचंद्र बारिद ह बारि परमायै है ।  
 पौन पुरवाई पदै पपिदा पुकारै पीय,  
 मारदल कृकि कृकि मदन जगायै है ।  
 ऐसे समै नाहीं निषदंगो तेरो णरी थीर,  
 ताहक अकली धैठि वेदन पदायै है ;  
 मानि ले हमारी यात येगि बलु मेरे साथ,  
 जोरि कर आयु तोहि कान्हर पुजायै है ।  
 क्यै सु गग तीर छी तिकुज में तिवाम कै,  
 महेश को प्रखाम कै यिमारि नीच आस कै ;  
 कलत्र पुत्र देह-भेद नैद छोकि हँ सयै,  
 उचारि शभु युद्ध मथ होयेंगे सुखी कयै ।

नाम—( ३६४१ ) गगानाथ झा डाक्टर, महामहोपाध्याय,  
 एल् एन्० डी० डी०, लिट्० ।

जन्म-काल—स० १६२६ के लगभग ।

यह संस्कृत के महान् पंडित हैं। आप इलाहाबाद विरयविद्यालय के नौ वष पायस-चैंसलर रहे। आपने संस्कृत के अनेक ग्रंथ रचे



व्या कुल भाषा के भी गद्य ग्रन्थ गभीर विषयों पर बनाए और हाल ही में न्याय-दर्शन तथा वैशेषिक दर्शन नामक ग्रन्थ लिखे हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डॉक्टर येनीप्रसाद वैद्य, डॉक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी, धीरेन्द्र वर्मा आदि भी हिंदी के सुलेखक हैं।

नाम—( ३५४२ ) रामसिंहजी के० सौ० आई० ई०, राज्य सीतामऊ ।

रानीर-कुल भूपय्य सीतामऊ नरेश श्रीराजा सर रामप्रतापसिंहजी का जन्म पौष वदी २, गुरुवार सं० १९३६ को धार राज्यातीत काशी बड़ीदा नामक ग्राम में हुआ। श्रीमान् ने १२ वर्ष की अवस्था से इंदौर, डेली-कॉलेज में शिक्षा पाई। वहाँ का शिक्षण आपने सं० १९२२ में संपूर्ण किया, और तत्पश्चात् माल-सम्बन्धी काम आपने भरतपुर में सीखा। वहाँ के तत्कालीन हाकिम यदोवस्त सरमाइ केल ओडायर ने आपके काम के विषय में बहुत प्रशंसा की। भारत सरकार ने निरुत्सवधी जानकर श्रीमान् शार्त्लसिंहजी के वैकुण्ठवास होने पर, आपको सीतामऊ राज्य का अधिकारी माना, और आपका राज्यारोहण सं० १९२६ म बड़े समारोह से हुआ। राजशासन-कला की दृष्टि से इनका जीया प्रशंसनीय है ही, किंतु हिंदी-साहित्यिक सेवा की दृष्टि से भी इनका चरित्र मौलिक तथा अभिनवनीय है। आप कवि हैं तथा विद्या-व्यसन आपका मुख्य व्यवसाय है। वन भाषा तथा संस्कृत दोनों में आप कविता करते हैं। इनकी हिंदी कविता विशेषतया दो प्रकार के छंदों में विभक्त है—कवित्त और सबैया। इनकी प्रथम कृति 'राम विलास'-नामक कायात्मक ग्रन्थ है, और यह सं० १९६३ में प्रकाशित हो चुका है। यह ग्रन्थ भक्ति पूण है। 'राम विलास' के पश्चात् यथावकाश आपने 'मोहन विनोद'-नामक दूसरा ग्रन्थ रचा। यह नायिका भेद पर है, और

आपकी शृंगारिक कविता की मौलिकता इससे प्रकट होती है। ग्रंथ अभी अप्रकाशित रूप में है।

आपको काव्यानुराग के अतिरिक्त विज्ञान से भी रुचि है। आपका 'वायु विज्ञान' नामक तीसरा ग्रंथ भी बहुधा सं० १९६३ ही में प्रकाशित हुआ।

उदाहरण—

( राम विलास से )

ग्रथ बाधव सग जितें तितहीं,  
 शिशु रूपहि धारि फिरयौ करिण ।  
 रजधानि मरे नर नारिन के,  
 नित लोचन लाभ सरयौ करिण ।  
 चित्त चोरत तोतरि धातन तें,  
 पितु मातु प्रमोद भरयौ करिण ।  
 श्बुनाथ सदा यह साज सजें,  
 मम नेत्र पवित्र करयौ करिण ।

( मोहन विनोद से )

मीन कम खनन के भण मद भग सबै,  
 'मोहन' निहारे नेक नैनन तुनाई को,  
 पूरन सरद चद धीन छवि होत बेनि,  
 पेखि जाके आनन की सोभा सुधराई को ।  
 चाप चार बिषापल देगि के लजात हिय,  
 भौंह की बँकाई घरु अधर ललाई को ;  
 रसिक सुजान काह रीझें क्यों न जेमी लसि,  
 राधा गुन-खान की स्वरूप अधिकाई को ।

नाम—( ३५४३ ) प्रजनदनसहाय ।

आपका जन्म सं० १९३१ म हुआ। आप जिला धारा में

अभितयारपुर के कायस्थ कानूनगो वंशी यात्रु, शिवनदनसहाय के पुत्र हैं। अँगरेज़ी बी० ए० पास करते आप आरा में बकालत करते हैं। आरा-नागरी प्रचारिणी सभा के मंत्री तथा नागरी हितैषिणी पत्रिका के आप संपादक रहे हैं। भाषा गद्य और पद्य के अच्छे लेखक हैं। कविता प्रशसनीय होती है। निम्न लिखित २० ग्रंथ हिंदी में आपके रचित तथा अनुवादित हैं। इनके अतिरिक्त समाचार-पत्रों में आपके लेख तथा कवितार्थ प्रायः छपती रहती हैं। इनके ग्रंथों के नाम—

पद्य—( १ ) हनुमानलहरी, ( २ ) श्रीमज्जिमिनोद, ( ३ ) सत्यभामा मंगल, ( ४ ) एक निजन द्वीपवासी का विलाप।

नाटक—( १ ) मृत्यु प्रतिमा ग्रीक, ( २ ) उद्धव-नाटक, ( ३ ) बूढ़ा वर ( गद्य-पद्य मिश्रित प्रहसन )।

अनुवाद—( १ ) चंद्रशेखर उपन्यास, ( २ ) कमलाकान्त का हृत्तहार प्रहसन।

( १ ) अर्थशास्त्र।

समालोचना—चंद्रशेखर उपन्यास की समालोचना।

उपन्यास—( १ ) राजेंद्र मालती, ( २ ) अद्भुत प्रायश्चित्त, ( ३ ) मीनोपासक, ( ४ ) आदर्श मित्र।

जीवन-चरित्र—( १ ) प० बलदेवप्रसाद की जीवनी, ( २ ) राय बहादुर अक्षिमधर की जीवनी, ( ३ ) विद्यापति टाकुर की जीवनी, ( ४ ) बाबू राधाकृष्णदास की जीवनी।

संपादित—मैथिल कोकिल।

आपने भाषा में कई आवश्यकीय विषयों पर रचना की है। आपका कविता-काल स० १९१९ ममकना चाहिए।

×

×

×

समय—मंच १९१७

नाम—( ३१४४ ) लाला कन्नोमल एम्० ए०, साहित्यालंकार।

आपका जन्म आगरे के एक मुसलमानि घरिय घराने में स० १६३२ में हुआ। आप जाति के गार्ग गोत्रीय अग्रवाल घरिय थे। एम्० ए० के अतिरिक्त इन्दागे शानूनी शिष्या भी प्राप्त की।

सं० १६५४ के लगभग कॉलेज छोड़ने पर इन्दागे रियासतों में नौकरी स्थाकार कर ला। यह राज्य जोधपुर में ७ वर्ष तक उच्च पद पर रहे, और तब से मृत्यु पर्यंत यह रियासत धौलपुर में रहे। इस राज्य में आप बहुत काल पर्यंत शिक्षा विभाग के उच्च कर्मचारी रह, और इस क्षेत्र के लिखे जाने पर इसी वर्ष कार्तिक स० १६६० में आपका स्वर्गवास हो गया। फिर ज्युडीशल सेक्रेटरी के पद पर सुशोभित हुए। आप दार्शनिक तथा धार्मिक विषयों में बड़ी योग्यता रखते थे, और आपके महान-पूर्ण प्रथम मुख्यत इन्हीं विषयों पर हैं। आपने आज तक २५ के ऊपर हिन्दी-ग्रंथ लिखे। इनके अतिरिक्त लगभग २० प्रथम अँगरेजी भाषा में हैं। आपके हिन्दी ग्रंथ ये हैं—( १ ) गीता-दर्शन (द्वितीय संस्करण), ( २ ) साहित्य-संगीत निरूपण, ( ३ ) द्युट स्पेंसर की अज्ञेय मीमांसा, ( ४ ) ह्युट स्पेंसर की श्रेय मीमांसा, ( ५ ) भारतवर्ष के धुरधर कवि, ( ६ ) सामाजिक सुधार, ( ७ ) अँगरेजी-राज्य के मुख्य, ( ८ ) जैन-सत्त्व-मीमांसा, ( ९ ) हिन्दी प्रचार के उपयोगी साधन, ( १० ) प्ररतोत्तरमाला, ( ११ ) कबीर-सुभाषित रत्नमाला, ( १२ ) सप्त भगीनय, ( १३ ) हिन्दू-सभ्यता की प्रारम्भिक शिक्षा, ( १४ ) हिन्दी-व्याकरण-बोध, ( १५ ) हिन्दी-व्याकरण-सार, ( १६ ) हिन्दू-जाति में स्त्रियों का गौरव, ( १७ ) एनसचेंज, ( १८ ) योग दर्पण, ( १९ ) वैशेषिक-दर्पण, ( २० ) न्याय-दर्पण, ( २१ ) सनातनधर्म, ( २२ ) भारतवर्ष का सदेश, ( २३ ) बाहस्पत्य अर्थशास्त्र, ( २४ ) महिला-सुधार, ( २५ ) विविध विषय लेखमाला।

ऊपर दिए हुए ग्रंथों के अतिरिक्त समय-समय पर अनेकानेक

विषयों पर आपके कई सार-गर्भित लेख निकल चुके हैं। आपका शरीर रात ११६० म हुआ।

नाम—( ३२४२ ) गणेशदत्त शास्त्री वानपेयी, कन्नौज।

जन्म-काल—लगभग ११३२।

आप भारत वम महामंडल के सयल उपदेशक थे। आपने धर्म प्य दशन शास्त्र विषयक बुद्ध ग्रथ भी लिखे। आपके विचार प्राचीन प्रथा के हैं।

नाम—( ३२४६ ) गंगाप्रसाद गुप्त, काशी।

यह अग्रजाल पत्य हैं। इनका जन्म काल स० ११४२ है। आपने सं० ११२७ स हिंदी टेलन का काय आरभ किया, और धव तरु आप २६ ग्रथ रच चुके ह, तिनमें उपन्यास का प्राधान्य है। आपके ग्रथों में मुख्य ये हैं—राजस्थान का इतिहास ( पूर्वादि ), यनियर की भारत-यात्रा, पञ्जा-राज्य का इतिहास, लका भ्रमण, तिव्यत वृषात, कालिदास का जीवन चरित्र, रामाभिषेक, टुल और सुत्र, पूना में हलचल और हिंदी का भूत, वर्तमान और भविष्य। आपने समय-समय पर भारत-जीवन्, हिंदी-केसरी, धीवेंकटेश्वर-समाचार और मारवाड़ी का स पादन किया, तथा हिंदी-साहित्य-नामक मासिक पत्र निगाला है। गत दस-ब्यारह वर्षों से यह काशी से हिंदी-केसरी नामक साप्ताहिक पत्र निकाल रहे हैं। आपके बहुतेरे ग्रथ उपयोगी विषया पर हैं। आप हमारे एक अमरील लेखक हैं।

नाम—( ३२४० ) जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, मलयपुर, मुंगेर।

जन्म-काल—स० ११३२।

ग्रंथ—( १ ) वस समाजती, ( २ ) स सार-चक्र, ( ३ ) तुक्रान, ( ४ ) विचित्र विचरण, ( ५ ) भारत की वर्तमान दशा, ( ६ ) स्वदेशी आंदोलन, ( ७ ) गद्यमाला, ( ८ ) मधुर मिलन आदि अनेक ग्रंथ लिखे हैं।

विवरण—विशेषतया उपन्यास-लेखक । आप यद्दे ही मजाक-पस द सजन हैं । हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के समापति हा चुके हैं । विचार आपके पुराने टग के हैं ।

नाम—( ३५४८ ) जानकीशरण 'स्नेहलता' ग्राम सौर दरियापुर, गया ।

जन्म-काल—स० १६३२ ।

कवित्त-काल—सं० १६५७ के लगभग ।

ग्रंथ—( १ ) विरहानल, ( २ ) श्रीहरि-कीर्तनपदावली, ( ३ ) गजाष्टर, ( ४ ) श्रीहंसबला-समक, ( ५ ) नवीन भद्र-माल ( १००० छप्पय अमकाशित ), ( ६ ) मानस-उत्तर पचा यली ( ३०० दोहे, अमकाशित ), ( ७ ) स्फुट रचनाएँ ।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्न थायू श्यामदासजी के पुत्र हैं । आपके पिताजी एक भद्र पुरुष थे, और इहाँ से आपने साहित्य का ज्ञान तथा रामायण का परंपरागत अर्थ प्राप्त किया है । यह महात्मा श्रीतुलसीदासजी के शिष्य परंपरा में से हैं । निम्न लिखित छंदों से इस यात का परिचय मिलता है ।

विप्र किशोरीन्त को प्रथकार हो दीन,  
अक्षपदत्त पठि ताहि सौं चित्रकूट महँ लीन ।  
रामप्रतापहि सो दई लखि तातें शिवलाल,  
दत्त फनीशहि जान निज सो दीन्यो सुगमाल ।

( मानस मयकर शिवलाल पाठक )

शेषदत्त सन तासु सुत लखि जानदीप्रसाद,  
तिन प्रति श्याम सुदासजी पदे सहित अहलाद ।  
जिा मुत मानस अर्थ युत भावादिक शुभ रीति,  
पदे पदाष्ट करि कृपा 'स्नेहलता' डि सप्रोति ।

( जानकीशरण 'स्नेहलता' )

क्रिया जाता है। अश्वरी पौत्र की आमद सुनकर राधा प्रतापसिंह अपने शूर-वीरों से कहते हैं—

सय वीरों से ललकार के यक बात सुनाइ ;  
 यह आगिरी बिनती मेरी सुन लो मेरे भाई ।  
 पैदा हुआ ससार में यक रोज़ मरैगा,  
 मरना तो मुश्किल है न टारे से टरैगा ।  
 फिर इससे भला मीठा कहो कौन पढ़ैगा ;  
 रजपूती की क्या गोट का पी रोज़ थढ़ैगा ।  
 पाँस धरो तलवार तयर तार की चारो ;  
 रन रोज़ मरद का है नरद शत्रु की मारो ।  
 पुरपों के बड़े बोल की इज्जत को बचाना ;  
 माता य पहन बेगी का सत बर्म रथाना ।  
 निज धम य सुर धामों का सम्मान बढ़ाना ।  
 तीरथ य महाधामों का सत्कार कराना ।  
 इन धामों में गर जान का डर हो तो न डरिए ;  
 क्षत्री का परम धम है यह ध्यान में धरिए ।  
 तिन में जो हो यकृतिगर्जी भगवान् का आदर ;  
 यापा के ध सागा के हों उपकार सरों पर ।  
 वहनों क्रिध कन्याओं की इज्जत की हो कुछ डर ;  
 यश लेने का कुछ ध्यान हो निदा का हो कुछ डर ।  
 धीराम की थीलाद की इज्जत प नज़र हो ,  
 तो भाइयों यह धम है बस बाँधो कमर को ।

काव्योत्कर्ष की परख पर हमारा इनका मतभेद था। आप विशारी और केशवदास को देख करि से थो छतर समझते थे।

नाम—( ३५२२ ) रामसुन्दरदास खत्री ( रायबहादुर ) ।

इनका जन्म आषाढ़ स० १९३२ में, बनारस में, लाला देवीदास

स्वप्ना के घर हुआ । इनके पूर्व पुरुष लाहौर वासी थे, किंतु वे बनारस में रहने लगे । आपने स० १६५४ में बी० ए० परीक्षा पास की, और स० १६५६ से दस वर्ष तक रिदू-कॉलेज में अध्यापक का काम किया । वाशी नागरी प्रचारिणी मभा स्थापित करने में आपने विशेष श्रम किया, और बारह वर्ष से अधिक आप उसके मंत्री रहे । सभा को वर्तमान उद्यत दश में पहुँचाने में सबसे बड़ा श्रेय आप ही का है । आप ६ वर्ष तक हिंदी लिखित ग्रंथों के खोज वाला काम भी करते रहे । खोज की रिपोर्टों से आपकी विद्वत्ता प्रकट होती है । सरस्वती पत्रिका के आप दो वर्ष स्वतंत्र संपादक रहे, और पृथ्वीराज-रासो के संपादन में दो अन्य महाशयों के साथ इनके द्वारा अच्छा श्रम हुआ । 'हिंदी क्रोडिद-रत्नमाला'-नामक ग्रंथ में आपने ८० लेखों की जीवनिर्णय दी है । आपने कई सान परिश्रम करके कई अन्य महाशयों के साथ 'हिंदी-शब्द-सागर'-नामक भारी कोष बनाया । इनके अतिरिक्त कई छोटे-बड़े ग्रंथ आपने बनाए और संपादित किए । आप गद्य-लेखक अच्छे हैं और आपके अन्वेषण महत्त्व पूर्ण होते हैं । हिंदी के लिये जितना धम आपने किया है, उतना बहुतों ने नहीं किया होगा । आपका जीवन हिंदी के लिये बड़ा ही उपकारी है । कई विद्वानों की सहायता से आपने ८ वर्ष के प्रचुर परिश्रम से 'हिंदी-वैज्ञानिक कोष'-नामक एक और भी उपयोगी ग्रंथ तैयार किया । आपमें एक विशेष गुण यह भी है कि आप दूसरों को प्रोत्साहन देकर हिंदी की सेवा में तत्पर करते रहते हैं । बहुत-सी पुस्तकें आपने संपादित की हैं । 'साहित्यालोचन' तथा 'हिंदी-भाषा और साहित्य'-नामक आपके ग्रंथ प्रसिद्ध हैं । गवेषणा और संपादन आपके मुख्य विषय हैं ।

समय—रावत् १६५८

नाम—( ३६६३ ) गोकुलप्रसाद, कटनी-मुडधारा ।

जन्म-काल—स० १६३३ ।



मृत्यु-काल—स० १९८३ ।

रचना काल—स० १९२८ ।

ग्रंथ—( १ ) रायपुर-रश्मि, ( २ ) दुर्ग-दर्पण, ( ३ ) सिवनी सरागिनी ।

विवरण—आप रायबहादुर हीरालालजी ( भूतपूर्व डिप्टी-कमिश्नर, मध्य प्रदेश ) के भ्राता थे । आपने बी० ए० तक शिक्षा पाई, और मध्य प्रदेश में क्रमशः ऊँचे-ऊँचे पद प्राप्त किए । अंत में आप १९०७) २० माहवारी घेतन पर असिस्टेंट कमिश्नर, इनकमटैक्स हो गए । इनको हिंदी-साहित्य से बड़ा प्रेम था, और सरकारी काम में व्यस्त रहते हुए भी इन्होंने ग्रंथ लेखन बड़ी सफ़लता पूर्वक किया । ऊपर लिखे हुए आपके ग्रंथों पर सामयिक मासिक पत्रिकाओं में प्रशंसा पूर्ण समालोचनाएँ निकल चुकी हैं ।

नाम—( ३५२४ ) नदकुमारदेव शर्मा ।

जन्म काल—स० १९३६ ।

रचना-काल—स० १९२८ ।

ग्रंथ—( १ ) युवक-शिक्षा, ( २ ) बाल्यीर चरितावली, ( ३ ) इटली की रक्षाधीनता, ( ४ ) सिक्कों का उत्थान और पतन, ( ५ ) पंजाब-केसरी महाराजा रणजीतसिंह, ( ६ ) पंजाब हरण, ( ७ ) वीर केसरी शिवाजी, ( ८ ) लोकमान्य तिलक, ( ९ ) पत्र-संपादन-कला, ( १० ) महाराणा प्रतापसिंह, ( ११ ) लाजपति महिमा, ( १२ ) महारामा गाखले, और ( १३ ) स्वामी विवेकानंद ।

विवरण—आपकी जन्म भूमि मथुरा है । कार्य-वश कलकत्ता में निवास करते हैं । आप ज्ञानसागर, शर्मन समाचार, स्वदेश-ग्रंथ, आर्यमित्र आदि कई पत्रों के संपादक रह चुके हैं तथा उत्कृष्ट गद्य लेखक हैं । आपके ग्रंथों के विषय बहुत उपादेय और श्लाघ्य हैं । ऐसे ही ग्रंथों की आज आवश्यकता है ।

नाम—( ३२२२ ) परमानन्द भाई ।

जन्म-काल—स० १९३३ ।

ग्रंथ—( १ ) गीतागृत, ( २ ) मेघा-सदेश, ( ३ ) वीर धैरागी, ( ४ ) आप भीती, ( ५ ) घोरप का इतिहास, ( ६ ) भारतवर्ष का इतिहास, ( ७ ) हिंदू-नीचा का रहस्य । 'भाषाशपार्थी' साप्ताहिक पत्रिका के संपादक रहे ।

विवरण—करियाळा, त्रिंता मेलम निवामी भाई ताराचंद के पुत्र हैं । आप देश हित-संबंधी कामों में सदैव लगे रहते हैं । आप आर्य्य-समान के नेता हैं, और शुद्ध तथा सगठन का काम बड़ी मुत्तैदी से कर रहे हैं । हिंदू-सभा के आप स्तम्भ रूप हैं । देश में आपका बड़ा नाम है । आपके ग्रंथ बहुत उपादेय तथा सुपाठ्य और शिक्षाप्रद हैं ।

नाम—( ३२२३ ) भवानीदास फायरथ खरे 'सुशील कवि' तालवेहट ( माँसी ) ।

कविता-काल—स० १९२८ ।

ग्रंथ—( १ ) सत्यनारायण मत-कथा का अनुवाद, ( २ ) श्रीमद्भागवत पुराण ( पृष्ठ-संख्या प्राय २०००, अप्रकाशित ) ।

उदाहरण—

प्रथम जन्म जिन दान न दीन्हा,

है काल जन्म तिन्ह लीहा ।

पेट भरन किंता निशि बारा ;

पावत जीन कट संसारा ।

×

×

×

दारा सुवा आपने जानहि ;

निज समय तिन हित धन आनिहि ।

×

×

×

ग्रन्थ—( १ ) कुल-कलक्रीडा, ( २ ) भयानक भूल, ( ३ ) परलोक की बातें, ( ४ ) आध्यात्मिक रहस्यों में सामाजिक जीवन, ( ५ ) विवेकानन्द की जीवनी, ( ६ ) रोम का इतिहास, ( ७ ) राजनीतिक विकास, ( ८ ) पाटलिपुत्र का ऐतिहासिक महत्त्व, ( ९ ) अनोखा रबीनाज़ ( पद्य ), ( १० ) अभिमन्यु का आत्मदान ( सड काय ) आदि ग्रन्थ तथा खेल ।

विवरण—आप अज्ञात काल ( दूसरे ) श्रावित महावीर प्रसादनी के पुत्र हैं । आपनी मातानी मुशिक्षिता थीं । इसी से पाल्यावास्था से ही आपने हिंदी साहित्य से अनुराग हो गया । यह पहले हाज़ीपुर में रहते थे और पश्चात् पटना में निवास करने लगे । आपने हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत तथा अँगरेज़ी में भी ज्ञान प्राप्त किया है । बिहार प्रांत में हिंदी-साहित्य का प्रचार करने का श्रेय आपको बहुत कुछ है । कुछ काल तक यह 'बिहार-यधु' नामक साप्ताहिक पत्र के संपादक थे । कहा जाता है कि मुकामली काव्य ग्रन्थ के कर्ता विद्यारत्न प० विद्यानन्द को यह अपना गुरु मानते थे ।

उदाहरण—

( निर्बल सेग से )

गंगा की धारा बैठ घाट पर निरखी,  
जो गढ़, मदा के लिये न आई फिर वो ।  
विश्राम हीर यह कल-कल करती धारा,  
दौड़ी है जाता सनिक न चलता चारा ।  
पीछे देती थपकियाँ करोड़ों आती,  
हैं लगातार बस यही समा दिपलाती ।  
जीवन की धारा उसी तरह है भाई,  
भूमडल में अज्ञात स्रोत से आई ।  
टकराकर बुद-बुद बने—जीव भी बनते,

६१

कुछ समय फुदकते पैंठ अकड़कर चलते ।  
पर फिर तुरत ही टूट किधर हँ जाते,  
नहिं तनिक किसी को पता कभी बतलाते ।  
कैसा कइकहा दिवार यार है जीवन,  
होते ही जिनके पार, न आता कुछ बन ।  
नहिं आदि अत का पता सत धरराते,  
ज्ञानी विज्ञानी खोज खोज मर जाते ।

नाम—(३२२६) गंगाप्रसाद एम्० ए० डेपुटी-कलेक्टर,  
गोरखपुर में थे । अब सरकारी नौकरी छोड़कर टेहरी राज्य में  
जुडीशल मेंबर हैं ।

जन्म-काल—१९३४ ।

ग्रंथ—( १ ) ज्योतिष चन्द्रिका, ( २ ) सूर्य सप्तरवणन ।  
अँगरेजी में आपने ईसाइ और मुस्लिम धर्मों पर हिंदू-मत का अण्य  
एक बड़े ग्रंथ में लिखलाया है ।

विवरण—आपके ग्रंथ विद्वत्ता पूण्य हैं ।

नाम—( ३२६० ) देवीप्रसाद शुक्ल बी० ए० ।

यह कानपुर, मोहल्ला कुरसवाँ के निवामी एक सज्जन, उत्साही पुरुष  
और हमारे परम मित्र हैं । आप गद्य हिंदी अच्छी लिखते हैं । एक  
साल सरस्वती पत्रिका का आपने बड़ी योग्यता से संपादन किया,  
और कान्यकुब्ज-सभा एव पत्र में भी बड़ा काम किया । आपका  
जन्म सं० १९३४ में हुआ । आप कानपुर के कॉलेज में अध्यापक  
थे, तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आजकल यही काम करते  
हैं । देश हित के कार्यों में आप सदैव तत्पर रहते हैं । इस समय  
आप प्रयाग हिंदू बोर्डिंगहौस के वाटन भी हैं । आप बड़े ही सज्जन  
पुरुष हैं ।

नाम—(३२६१) बदरीप्रसाद त्रिपाठी, नवीनगर, जिला सीतापुर

जन्म—संवत् १९३४ वि० ।

यह महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण शिवराजपुर के तिवारी हैं । आप रियासत नवीनगर कटेसर से पेंशन पाते हैं । समय-समय पर आपने बहुत-सी प्रासंगिक कविताएँ कीं । हमके अतिरिक्त आपने दो स्वतंत्र ग्रंथ भी लिखे—अथात् ( १ ) बदरी-संहिता और ( २ ) धात्मरामायण । इनका काव्य ऐतिहासिक होने के कारण रोला छंद प्रधान है, जिसका उदाहरण निम्न लिखित है । आपके पुत्र अनूपजी भी सत्कवि हैं ।

### बदरी-संहिता

जरी ना वा धरी जा छन बिरयो पत्र दिवान ;  
जैचद कनउजराय जाच्यो गोर देश कृशान ।  
हेतु फूमन गेइ पृथ्वीरान वरा सयोग ;  
बरी संयोगिन स्वय भय प्राप्त मन संभोग ।  
पाय ऐसी आणि जागी नोगिनी परचड ,  
लांघि रैनर चली भारतखड जारन चड ।

नाम—( ३५६२ ) रतुनाथसिंह बी० ए० ठाकुर ।

यह बाराबंकी में बंजरत करते थे । आपका जन्म स० १९३४ में शाहपुर में हुआ । आपके पिता ठाकुर पिरथासिंह एक प्रतिष्ठित ज़मोदार थे । आपने गद्य और पद्य दोनों में रचना करने का अभ्यास बाल्यरूप से ही रखा । स्कूट छंदों के अतिरिक्त आपने लखनऊ-वर्णन छंदों में लिखा था, जो सरस्वती पत्रिका में निकला । आपको कविता मगोहर होती थी । आपका शरीरगत स० १९८६ में हुआ ।

उदाहरण—

क़ैशन नूतन और पुरानो इन मधमें लखि लीजै ;  
धौक नाय शाही को धनुभव पूरन मन सों कीजै ।  
दक्स नवाबी खबे पटे धूहीदार हुटगा ;

कान फुरेहरी हाथ स्मलिया जूता रग बिरगा ।  
 बने लिफाफा ऊपर चित्तै फूँकहु सों उडि जावैं,  
 घर में बेगम नगी बैठी आप नवाय क्हावैं ।  
 ऊँचे महल गली सन्नी अति कोठे नरक कि दूती ;  
 सबक पदाय छीनि धन सरबस पीछे मारैं जूती ।  
 इत सित चलदल असित श्वान सह भैरवाथ विराजैं ;  
 तेजपुत्र अभिराम श्याम तन कोटि काम छवि लाजैं ।  
 प्रति रविवार देव दरसन लागि होति इहाँ बड़ि भीरा ;  
 गुरु रवि चौस भीर-भारन चपि धरति धरनि नाहि धीरा ।

नाम—( ३२६३ ) रामानतार पाडेय एम० ए० ( साहित्या-  
 चार्य ) पटना ।

जन्म-काल—स० १६३४ ।

ग्रंथ—( १ ) थोरपीय दशन, ( २ ) हिंदी-व्याकरणसार आदि  
 अनेक ग्रंथ रचे हैं ।

विवरण—आप धुरधर पंडित एव सरल और निष्कपट पुरुष थे ।  
 पटना-युनिवर्सिटी में कायकर्ता तथा साहित्य सम्मेलन के समा-  
 पति थे । आपका शरीराल लगभग १६८७ में हुआ । गद्य के  
 सुलेखक थे ।

नाम—( ३२६४ ) सुंदरलालजी कटरा, प्रयाग ।

जन्म-काल—स० १६३४ ।

ग्रंथ—( १ ) बालोपदेश, ( २ ) बाल-संचतत्र, ( ३ ) बाल  
 गीतावलि, ( ४ ) बालस्मृतिमाला, ( ५ ) बाल-भोज-प्रबंध, ( ६ )  
 बाल-सुवरा, ( ७ ) योगवाशिष्ठसार, ( ८ ) रामाश्रवमेय, ( ९ )  
 भारत में अँगरेजी-राज्य ( यह ग्रंथ जप्त हो गया है ) ।

विवरण—प्रार्धान निराम-स्थान धनमज, जिला मैनपुरी । आप  
 देश भक्त तथा राष्ट्रीय कार्यकर्ता एव सुलेखक हैं । कई बार देश-प्रेम के

कारण जेल जा चुके हैं। व्याख्यान भी आप प्रमाह धारा में देते हैं। आपके प्रथम देश-भक्ति पूण तथा चरित्र-शोधक है।

समय—संवत् १९६०

नाम—( २५६२ ) अजमेरीजी।

जन्म-काल—१९३२ के लगभग।

रचना-काल—१९६०।

रचना—ओड़छा राजवंश, बुदेलखंड-व्ययन, समुद्र-व्ययन आदि अनेक छोटे-बड़े ग्रंथ हैं।

विवरण—यह महाशय चिरगाँज, जिला झंसी निवामी मुसलमान हैं। इनके पूज्य पुरुष भाट थे और यह वैष्णव हैं। दखकर कोई इन्हें अहिंदू नहीं कह सकता। आशुकवि तथा सभा चतुर हैं। औरों की योली, बाजा आदि की ध्वनियों सुगमता पूर्वक मुख से उतार सकते हैं। वतमान ओड़छा नरेश ने २०) मासिक नियत कर दिए हैं, और इन्हें वहाँ माल में दो ही पार जाना पड़ता है। आपका साहित्य देश भक्ति पूर्ण, रोचक, सरस, नय विचार-युक्त, गंभीर तथा उत्कृष्ट है। वतमान कवियों में आपका पद उच्च है।

उदाहरण—

ओ अपार जल राशि सर्वदा उथल पुथल क्यों होती है ?  
 ओ उन्मादिनि, क्या क्षण भर भी कभी नहीं छू सोती है ?  
 देवि दूर से दीप्य रहा है हिल्लालित हृदय स्पदन ;  
 साथ-साथ ही सुन पड़ता है कोमल कठ करण क्रदन ।  
 आतीं और लौट जाती है भग्न भावनाएँ तेरी ;  
 जाती हैं, गिरती हैं, फिर भी करतीं हैं फिर फिर पेंरी ।  
 क्षण-भर भी न छिपा रहता है उद्वेलित उर का उड्वास ,  
 अथु धार प्रतिपल पड़ती है पैरों ,पर पैरों के पास ।

नाम—( ३२६६ ) इ दुयालादेवी, वी० ए० ।

कविता—स्फुट छंद ।

उदाहरण—

तुम्हें बुलाऊँ घूँ मैंमने तेरे मैं क्या अपनी भेट,  
तुम्हें रिक्ताँ कैसे प्रभुवर ! यह विता करती आखेट ।  
मेरी छिन्न भिन्न धीणा में नहीं प्रभो ! मीठी भकार ;  
सुरखी में शूदु तान नहीं है, है केवल भीषण हकार ।  
शब्द शब्द म भरा हुआ है मेरा रोदन और विलाप ;  
हो करयोग ! इसे सुन करके नहीं पमीजोगे क्या आप ?

नाम—( ३२६७ ) कन्हैयालाल माथुर ।

जन्म-काल—स० १६३८ ।

कविता-काल—स० १६६० ।

यह कायरथ महाशय माथुर स्टेशन 'यसवा', रियासत जयपुर ( राजपूताना ) के रहनेवाले है । ( इलाक़े राज जयपुर में हमारा गाँव है यसवा—नहीं आवोहवा में जिसका सानी शह या शर्या ) ब्रामाया तथा उदूँ म कविता किया करते हैं । इनके पिता किशोरीलालजी तथा पितामह गूजरमलजी कविता के रसिक थे । इनकी भी बचपन से कविता की ओर रचि रही । आप सैकड़ों मथ प्राचीन कवियों के हस्त लिखित व मुद्रित देखकर संग्रह करते रहते हैं । इनके भकान 'यसवा' के पुस्तकालय में २६ हजार के लगभग पुस्तकें हैं । इनके रचे हुए हिंदी में 'माथुर-ग्रेम पताका' तथा उदूँ में भावेल 'तरंग नीजवानी' है । आप श्रीविष्णु स्वामी संप्रदाय के शिष्य हैं । कुछ दिनों रियासत जयपुर की पुलिस में धानेदार रहे हैं ।

उदाहरण—

आपस मैं न करो खुगली, न करो अपने मुख आप बड़ाई ;  
नाहिँ हँसो श्रँगहीनन को, न लखो पर नारिन सुदरताई ।



भीर समै नहिं हारिण हिम्मत, नहिं बनो जग के दुखदाई,  
'माधुर' है मुख के सख यार, भजो वृषभान-कुमारि-कन्हारै ।

नाम—( ३२६८ ) गयाप्रमादजी (सनेही) कानपुर निवासी ।

जन्म-काल—स० ११३२ के लगभग ।

रचना-काल—स० ११६० ।

रचना—सुट्ट छंद ।

विवरण—आप कानपुर-साहित्य-समाज में गुरवन् माने जाते हैं ।  
छंद भी अच्छे बनाते हैं । मुकवि के सपादक हैं । आपके पढ़ने का  
दग अच्छा है । कवि मम्मेलना में प्रायः सभापति होते हैं । आपकी  
रचना उच्च श्रेणी की है । त्रिशूल के नाम से उद्द राजनीतिक साहित्य  
भी रचा है ।

नाम—( ३२६९ ) गोपालदेवी ।

प्रथम—उपसपादिका गृहलक्ष्मी । इनके पति भी लेखक हैं ।  
गोपालदेवी ने स्त्रियों के पढ़ने योग्य कई प्रथम लिखे हैं ।

नाम—( ३२७० ) देवकीनन्दन मिश्र (सनाढ्य) ग्राम फुटेरा  
(मधोसी) ।

जन्म-काल—स० ११३३ ।

कविता काल—स० ११६० ।

विवरण—कवीर केरवदासजी के वंशज ।

प्रथम—( १ ) रामाष्टक ( २ ) कालिकाष्टक, ( ३ ) सुट्ट  
छंद-संग्रह ।

एकन यों बल तात सुमात के,

एकन आत सुमाह दिमान के ;

कोड सुरूप गुमान भरे,

कोड भूप बड़े बल जंग-जहान के ।

कोउ प्रयीन गृद्ग मुयीनन,  
 कोउ महा निज गान मुतान के,  
 'देवकिनदा' हैं शरणागत,  
 श्रीरघुनद की ध्यान के धान छे ।

नाम—( ३२०० अ ) देवनारायण स्रुत्रिय सटवा, जौनपुर,  
 हाल राज्य कालान्दर जिला प्रतापगढ़ ( लला ) ।

ग्रंथ—( १ ) रामेश मनारजनी, ( २ ) त्रियोग वारिध, ( ३ )  
 यथुविद्रोह, ( ४ ) पायन पचाएक, ( ५ ) वशाणव, ( ६ ) धरत  
 इतिहास, ( ७ ) प्रेम पदावली, ( ८ ) गृ गार आरसी ।

जन्म-काल—सं० १६३४ ।

रचना-काल—स० ११६० ।

विवरण—एव धीर गग में उत्कृष्ट काव्य दिया है ।

गंग-तरंग उठै कच-चीच म, अग उमा अरधग बसी है ;  
 नग है अग धनग है सग भुगगम भूपण भाल ससी है ।  
 प्यारे लला पग सबत ही तव सेवक की विपदा यिनसी है ;  
 सकर धाय सहाय करौ अथ मेरी हँसी नहि तेरी हँसी है ।

धरनो रहत नहि गरजो करत नित,  
 हरजो हमारो होत सुनि कैरि धम-धम ;

जुगनू चमाकै चहु चातकी अलापे अलि,  
 धुरवा धरा पै धरो दरदरी दम दम ।

घहरि घहरि धारै ठहरि - ठहरि जावै,

• पहरि - पहरि उठै गगन में धम - धम ;

यिज्जुगन विरही विचारी उर धीरन को  
 तीरन की लीन्यो मनो प्यारे लला चम-चम ।

नाम—( ३२७१ ) नरदेव शास्त्री, गुरुकुल-महाविद्यालय,  
 ज्वालापुर ।

जन्म-स्थान—निजामराज्यांतर्गत कर्नाटक प्रदेश ।

ग्रंथ—( १ ) आय-समाज का इतिहास भाग १, ( २ ) आर्य-समाज का इतिहास भाग २, ( ३ ) आर्य-समाज का इतिहास भाग ३ ( अप्रकाशित ), ( ४ ) गीताविमर्श, ( ५ ) कारावास की कहानी, ( ६ ) ऋग्वेदालोचन ।

विवरण—आप ऋग्वेदी देशस्थ महाराष्ट्र शास्त्रज्ञ हैं । आपकी प्रारंभिक शिक्षा पूने के नूतन मराठी विद्यालय ( न्यू पूना-कॉलेज ) में हुई । इसके पश्चात् आपकी उच्च शिक्षा पंजाब में हुई, और वहाँ से आप स० १९२५ में एन्ट्रेंस तथा स० १९६० में शास्त्री परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए । कलकत्ता से इन्होंने स० १९६३ में वेदतीय की उपाधि प्राप्त की । कुछ काल तक गुरुकुल कागदी तथा गुरुकुल घुंदावन में यह महाशय आचार्य रह चुके हैं । 'भारतोदय' तथा 'शंकर' साप्ताहिक पत्रों के संपादन का भी इन्होंने काम किया है । आशंकल आप राजनीतिक तथा शिक्षा-संबंधी काम कर रहे हैं । आपके समाजी ग्रंथ विद्वत्ता पूर्ण एवं सुपाठ्य हैं ।

नाम—( ३२७२ ) बाबूराम विष्णु पराडकर ।

जन्म-काल—स० १९३८ के लगभग ।

रचना-काल—स० १९६० ।

विवरण—आप फारी से निकलनेवाले दैनिक 'आज' के संपादक और यशस्वी लेखक हैं । दैनिक 'भारतमित्र' के संपादक भी रह चुके हैं । आपके समापत्तिव में सर्व प्रथम संपादक-सम्मेलन हुआ ।

नाम—( ३२७३ ) याज्ञिकत्रय, शाहपुरा, अलीगढ़ ।

रचना-काल—सं० १९६० ।

रचना—स्पष्ट लेख प्रचुरता से ।

विवरण—मयारंकर याज्ञिक ऋषि हैं, तथा जीवनरंकर और

मधानीराकर भतीजे हैं। इन महाशयों के खेस बहुधा खोज, इतिहास, पुरातत्व आदि पर होते हैं। जीवनशंकरजी स्वार्थ-पत्र के संपादक भी थे। आप महाशयों ने कई कवियों के विषय में विनोद-समधी कार्य में हमारी सहायता की, जैसा कि स्थान-स्थान पर लिखा हुआ है। आपके लेखों में खोज, विद्वत्ता और श्रमशीलता के उदाहरण मिलते हैं।

नाम—( ३२०४ ) रामनारायण मिश्र साय्यरत्न तथा काव्य तीर्थ, आरा, हाल छपरा।

जन्म-काल—स० १९४३।

कविता-काल—स० १९६०।

ग्रंथ—( १ ) जनक-याग-दर्शन नाटक, ( २ ) कम-वध-नाटक, ( ३ ) विरदावली, ( ४ ) मङ्गि-सुधा, ( ५ ) स्पुष्ट काव्य गद्य तथा पद्य।

विवरण—संस्कृत के बहुत अच्छे विद्वान् हैं। सरकार से काव्य-तीर्थ तथा कलकत्ता-युनिवर्सिटी से साय्यरत्न की उपाधि मिली। भाषा गद्य तथा पद्य के आप अच्छे लेखक हैं। दो नामक भी आपने बनाए हैं।

नाम—( ३२०५ ) रूपनारायण पाडेय, लखनऊ।

जन्म-काल—स० १९४१।

रचना-काल—स० १९६०।

ग्रंथ—( १ ) शिवशतक, ( २ ) श्रीकृष्णमहिम्न, ( ३ ) गीत गोविंद की टीका, ( ४ ) रमा उपन्यास, ( ५ ) पतित पति उपन्यास, ( ६ ) गुप्तरहस्य उपन्यास, ( ७ ) हरीसिंह मल्लवह, ( ८ ) धाँस की फिरकिरी उपन्यास, ( ९ ) फूलों का गुच्छा, ( १० ) चौबे का चिट्ठा, ( ११ ) नीति-रत्न-माला, ( १२ ) कृष्ण-

लीला नाटक, ( १३ ) तारा उपन्यास, ( १४ ) कृत्तिवामीप  
 रामायण धालकाड, ( १५ ) रसिकरजन पद, ( १६ ) आचार्य  
 प्रबध, ( १७ ) प्रसन्न राघर नाटक, ( १८ ) शुक्रोत्रिसुधासागर,  
 ( १९ ) रमा-शुक्र-सवाद, ( २० ) बाल कालिदाम, ( २१ ) चंद्रमभ-  
 चरित, ( २२ ) आशा कानन, ( २३ ) पत्र पुष्प आदि ।

विवरण—भारत घम महामंडल में निगमागम चद्रिका, का  
 कुछ दिन तथा माधुरी और सुधा का कई साल सपादन किया  
 है । आपने बहुत-से बँगला-नाटक और उपन्यासों के अनुवाद किए  
 हैं, तथा कुछ मौलिक प्रथ भी लिखे हैं । आप अच्छे गद्य लेखक तथा  
 सुकवि हैं । यदि जीविका साधनार्थ आपको अनुवादों पर ही बहुत  
 अधिक ध्यान न देना पड़ता, अपच मौलिक प्रथों की ओर धार  
 मुक्तै, तो सभवत परमोच्च धे णी के कवि होते ।

उदाहरण—

बुद्धि विवेक की जोति उझी, ममता मद मोह घटा घनी घेरी,  
 है न सहारो, अनेकन हैं ठग, पाप के पद्मन की रहै परी ।  
 त्यों अभिमान को कूर इतै, उतै कामना रूप सिलान की डेरी ;  
 तू चलु मूढ़ सँभारि अरे मन, राह न जानी है, रँनि अँधेरी ।

नाम—( ३५७५ अ ) लक्ष्मणाचार्य महत वाणीभूषण । नरसिंह  
 देवला, जिला अममेरा ।

जन्म-संवत् १९३४ ।

रचना काल संवत् १९६० ।

प्रथ—( १ ) अद्भुत रामायण, ( २ ) शिक्षा शतक ।

विवरण—आप रियासत ग्वालियर में धीलक्ष्मीकांत नरसिंह  
 देवला के महत हैं । ग्वालियर की मजलिस आम के मेंबर हैं । आप  
 एक सुकवि हैं ।

उदाहरण—

विराजे थे निकुंज में श्याम ।

चहुँदिशि क्षिति राताएँ लहरत फदेव छाँद अभिराम ।

मधुर मधुर कालिंदी बलरव टिग छत्रमन मुख दैन ;

फेरी कूक लगाय थिरफिहँ चले बलैया जैन ।

कटि पट पीत किए हैं धारन अरु पदुम धहरात ;

बनमाला धरनन लौं हलरत जन-मन-मधुप मुहात ।

अलकावरी कपोलन द्वित्री जनु कोमल रिशु ब्याल ;

शाभित मुकुट शीश वै जगमग कलगी मुकी विशाल ।

मकरात्रति कुदल धवनन महँ भाल तिलक की रेण्व ;

आभा पसरि रही है चहुँदिशि लजत भानु द्यवि देल ।

संवत् १६४५ मे ६० तरु के शेष कविगण

समय—संवत् १६४५

नाम—( ३२७६ ) गिरिवारी सातनपुर अचववासी ।

ग्रंथ—श्रीकृष्ण-चरित्र । [ मृ० त्रै० रि० ]

समय—स० १६४५ ।

नाम—( ३२७७ ) गुरुदयाल त्रिपाठी बकील, रायबरेली ।

जन्म काल—स० १६२५ के लगभग ।

रचना-काल—स० १६४५ ।

विवरण—आप कई वय तक 'कान्यकुब्ज हितकारी' के सपादक रहे और, इस समय रायबरेली में बकालत करते हैं । कान्यकुब्ज पत्रों में प्रायः लेख लिखा करते थे । हमारे मित्र और परम सज्जन पुरुष हैं ।

नाम—( ३२७८ ) गगावट्टा ठाकुर ताल्लुकदार, रामकोट, सीतापुर ।

जन्म-काल—स० १६२० ।

प्रथ—धीरुष्य-चद्रिका ।

विवरण—साधारण भोगी । १११६ में स्वर्गवासी हो गए ।

नाम—( ११०१ ) दामोदरसहायसिंह, 'कवि किंकर', सीतलपुर ( सारन ) ।

जन्म-काल—स० ११११ ।

रचना-काल—स० ११४६ के लगभग ।

प्रथ—( १ ) सुधा-सरोवर, ( २ ) रसाञ्ज, ( ३ ) सधि-सदेश, ( ४ ) हिंदी-गीता, ( ५ ) मातृ भार, ( ६ ) शिक्षा निर्बंधावली आदि ।

नाम—( ११८० ) दाशरथीदास उपनाम दिव्य ।

प्रथ—रामलीलासहायक । [ सं० त्रै० रि० ]

नाम—( ११८१ ) परसदास वैरागी ग्राम चगोई, रियासत भीकानेर ।

जन्म-काल—सं० ११२० के लगभग ।

प्रथ—रुफ्त कविताएँ ।

विवरण—भाप अभी वर्तमान हैं । इन्होंने भीकानेर-राज्यांतर्गत आपूवाखा ग्राम निवासी ठाकुर चतुर्सिंह राष्ट्रधर को सहायित करके २४ छंद 'चतुर चौबीसी' नाम से बनाए । उक्त ठाकुर साहब के द्वारा हमें यह कवि ज्ञात हुए हैं ।

उदाहरण—

तन को देत न त्रास बचन असृत-सम बोलै ;

मन म भाव मलीन कबहु नहिं राखै बोलै ।

चखै निगम की चाल, छिद्र-झल सारे बाढ़ै ;

खालच ममता कूटि-कूटि घर बाहिर काढ़ै ।

सब कूड़ फपट त्यागन करै, रात दिवस हरवर रटै ;

कवि परसदास उन पुरुष को दास किए पातक कटै ।

नाम—( ११८२ ) भीमसेन प्राधान, गुरुकुल कागड़ो ।

प्रथम—योगशास्त्र भाषा ।

नाम—( ३२८३ ) मधुरअली ( मजुअली ), ग्राम पुरैना, रीवाँ राज्य ।

काल—बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्ध ।

प्रथम—( १ ) युगल विनोद-यदावली ( २०८ पृष्ठों का कविता-संग्रह ), ( २ ) युगल विनोद, ( ३ ) युगल दिबोल-खीला ।

विवरण—ग्रामज जन्म वैसे क्षत्रिय-कुल में हुआ था, और ग्राम माधव संप्रदाय के साधु हो गए । रीवाँ नरेश महाराज रघुराजसिंहजी के ग्राम कृपा-पात्र थे । नृत्य तथा गायन-कला में प्रवीण थे । कहा जाता है, नृत्य करने समय प्रायः पद बनाते जाते और गाते जाते थे । इनकी कविता विशेषतया बघेलगढ़ी हिंदी में हुआ करती थी, जो सखी उपामना के भावों से भरी रहती थी । प्राचीन प्रथा के साधारण कवि थे । [ श्रीयुक्त भानुसिंह बघेल, रीवाँ द्वारा ज्ञात ]

उदाहरण—

समर मुखे लें लगाय लेत खका भर,  
दोनो दल दीरख देखात बड़े चाय सों ।  
हँकरि - हँकारि लेत परुरि पछारि देत,  
ऐसे भट भारी हैं भिरत बेग पाय सों ।  
रावण को बेठा निज कुल को दुणहेटा बेस,  
'मजुअली' जीतन को कीहें यज्ञ जाय सों ;  
खखन लला के हाँके हाय हल कप माप्यो,  
बाप्यो नहिं हृदजीत एक हू उपाय सों ।

नाम—( ३२८४ ) रघुनाथदास ।

प्रथम—( १ ) चित्र सुदामा की गुड़िया, ( २ ) द्रौपदीजू की गुड़िया, ( ३ ) स्वामीजू की गुड़िया, ( ४ ) हनुमानजी की गुड़िया,





नाम—( ३५६३ ) विश्वेश्वरदयाल चतुर्वेदी, मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० १९२० के लगभग ।

प्रथ—महिम्नस्तोत्र का पद्यानुवाद ।

विवरण—यह मैनपुरी के प्रसिद्ध 'पण्डैया' खानदान के हैं ।

नाम—( ३५६४ ) चैकटेश स्वामी ।

प्रथ—आत्मप्रबोध । [ प्र० ग्रै० रि० ]

नाम—( ३५६५ ) शारदाप्रसाद कायस्थ, मैहर ।

प्रथ—( १ ) धीरतमयी, ( २ ) मुक्ति मोदक, ( ३ ) शारदाष्टक,  
( ४ ) रसंद्र विनोद, ( ५ ) शारदा विनय, ( ६ ) उदू-नामायण्य,  
( ७ ) उदू-भागवत ।

जन्म काल—स० १९३० ।

विवरण—भारती तथा सस्कृत के अच्छे ज्ञाता ।

नाम—( ३५६६ ) शिवनरेशसिंह ताल्लुङ्गदार, जगतापुर,  
जिला बहराइच ।

प्रथ—श गार शिरोमणि । [ पृष्ठ २६, द्वि० ग्रै० रि० ]

नाम—( ३५६७ ) शीलमणि राजकुमार ।

प्रथ—हरद्वलतिका [च० ग्रै० रि०] । अष्टनाम [प० ग्रै० रि०]

नाम—( ३५६८ ) शभूनाथ भम्हारी ।

प्रथ—प्रेममालिका । [ द्वि० ग्रै० रि० ]

विवरण—सरधूप्रसाद के साथ बनाया ।

नाम—( ३५६९ ) श्रीगोविन्द साहिव ।

प्रथ—सत्यसार । [ पं० ग्रै० रि० ]

नाम—( ३६०० ) सुधामुखी ।

प्रथ—हरिचन जसावली । [ पं० ग्रै० रि० ]

नाम—( ३६०१ ) सुवस ।

प्रथ—ढेकी [ खोज० स० १९०२ ]

नाम—( ३६०२ ) सूर्यनारायण ।

ग्रंथ—सप्ततरंगिणी । [ प० त्रै० रि० ]

नाम—( ३६०३ ) सत हजुरी ।

ग्रंथ—अवधूत योगसार । [ च० त्रै० रि० ]

नाम—( ३६०४ ) हीरा सखी ।

जन्म-काल—स० १६२० के लगभग ।

ग्रंथ—अनुभव रस ।

विवरण—राधावल्लभी ।

समय—संवत् १६४५

नाम—( ३६०५ ) अशिकाप्रसाद त्रिपाठी, कुदौली नरवल,  
कानपुर ।

जन्म-काल—स० १६१४ ।

रचना-काल—स० १६४६ ।

मृत्यु-काल—स० १६७४ ।

ग्रंथ—( १ ) प्रथम मंजरी, ( २ ) स्वामी भास्करानंदजी का  
जीवन-चरित्र, ( ३ ) भूल निवासी, ठाकुर प्रयागसिंह का जीवन  
चरित्र, ( ४ ) आत्म चरित्र ।

विवरण—समुद्र प्रांत में कुछ समय तक आप सब-डेपुटी इस्पे-  
क्टर-स्कूलस थे । [ प० लक्ष्मीनाथ त्रिपाठी, क्राइस्ट चर्च कॉलेज,  
कानपुर द्वारा ज्ञात ]

नाम—( ३६०६ ) कन्हैयालाल ब्राह्मण, ग्राम धुर्का, जिला  
गया ।

ग्रंथ—( १ ) पिगलसार, ( २ ) समस्यापूर्ति, ( ३ ) सख-  
शुभकरी, ( ४ ) विद्या-शक्ति, ( ५ ) गया पद्धति ।

जन्म-काल—स० १६२१ ।

नाम—( ३६०७ ) गुरुदीन भाट ईसानगर, खीरी ।

ग्रन्थ—(१) मुनेश्वरसङ्ग्रह भूषण, (२) रघुजीत विनोद, (३) विगङ्गा ।  
विवरण—साधारण ग्रंथी ।

नाम—( ३६०८ ) गोकुलनाथ श्रीदीन्य ब्राह्मण, बनारस ।  
ग्रन्थ—पुष्पवती ।

विवरण—गद-लेखक ।

नाम—( ३६०९ ) गोपालदास देवगण शर्मा, लाहौर ।

ग्रन्थ—दयानन्द-जीवन चरित्र, भंगीतसार । [ प्र० प्रै० रि० ]

नाम—( ३६१० ) जानकीदास ।

ग्रन्थ—अखण्डबोध ।

कविता-काल—स० १९२१ के पू० ।

नाम—( ३६११ ) बलदेवदास कायस्थ रटवारा, जिला  
घोंदा ।

ग्रन्थ—( १ ) जानकी विषय, ( २ ) रामायण विष्णुपदी ।

नाम—( ३६१२ ) रगनारायणपाल ठाकुर, हरिपुर, बस्ती ।

ग्रन्थ—( १ ) प्रेम ललितिका, ( २ ) रसिकानन्द ।

जन्म-काल—स० १९२१ ।

विवरण—तोप ग्रंथी ।

नाम—( ३६१३ ) रामलाल ब्राह्मण ग्राम जीर्गी जिला राय-  
बरेली ।

ग्रन्थ—४ ग्रन्थ भाषा में ।

जन्म-काल—सं० १९२१ ।

नाम—( ३६१४ ) लक्ष्मणसिंह तिवारी, भलसड ।

जन्म-काल—स० १९२१ ।

नाम—( ३६१५ ) वाचस्पति तिवारी ( चेत ) गोनी, जिला  
हरदोई ।

ग्रन्थ—( १ ) पचासदीपिका व नष्टनन्मदीपिका, ( २ ) मानस-

प्रश्न दीपिका, ( ३ ) कर्मसिद्धांतदीपिका, ( ४ ) आश्चर्यदीपिका,  
( ५ ) गजीक्रायकर्तीसी, ( ६ ) जादू धगान्द, ( ७ ) प्रारसी-  
शब्द-सज्ञा, ( ८ ) यामिनी योगमालिका, ( ९ ) समस्या प्रकार,  
( १० ) सत्यनारायण-कथा ।

जन्म-काल—स० १९२१ ।

नाम—( ३६१६ ) हरिदास, बिजावर ।

ग्रंथ—कृष्ण चरित धरसाहित को । [ प्र० त्रै० ति० ]

रचना-काल—सं० १९५१ के पूर्व ।

गाम—( ३६१७ ) हितप्रीतमदास ।

जन्म-काल—सं० १९२५ ।

रचना-काल—१९४६ के लगभग ।

ग्रंथ—( १ ) हितचंद्र प्रकाश, ( २ ) वृद्धारण्य विहार, ( ३ )

स्फुट पद ।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदाय के अनन्य वैष्णव थे ।

समय—संवत् १९४७

नाम—( ३६१८ ) कैलाशनाथ वाजपेयी कानपुर ।

ग्रंथ—( १ ) आयगीतावली, ( २ ) दयापद-जीवनी, ( ३ )

पौराणिक भ्रातिहरण, ( ४ ) कृष्ण-लीला ।

समय—स० १९४७ ।

नाम—( ३६१९ ) गोपालदास चल्लभशरण, बिजावर ।

ग्रंथ—संगीतसागर ।

नाम—( ३६२० ) गोवर्धनलाल प्रेम कवि ।

ग्रंथ—( १ ) प्रेम प्रकाश, ( २ ) हितपथदर्शन, ( ३ ) प्रेम

झगदीश ।

विवरण—पहले वृद्धावन में रहते थे, फिर मिर्जापुर में रह ।

नाम—( ३६२१ ) गौरीशंकर उपनाम सुधाकर भट्ट ।

ग्रंथ—(१) नीति भाषा ( १६६२ ), (२) विश्व विज्ञान नाटक ।

विवरण—दतिया-वासी पद्मर-वशज हैं ।

नाम—( ३६२२ ) जगदेवलाल ।

जन्म-काल—सं० १६१७ के लगभग ।

रचना-काल—सं० १६४७ ।

ग्रंथ—( १ ) शिवाष्टक, ( २ ) हनुमानाष्टक, ( ३ ) रामाष्टक,  
( ४ ) फाग-राग ।

विवरण—शरारांत हो गया ह । सगीत तथा कला प्रेमी, भगवद्भक्त  
सज्जन सदाचारी थे । बांसडीह षडिया के श्रीमास्तव कायस्थ थे ।  
चारो धामो फी यात्रा कर थापु थे ।

नाम—( ३६२३ ) जयपाल महाराज ।

ग्रंथ—रसिक-प्रमोद ।

जन्म काल—सं० १६२२ ।

विवरण—शूजा जिला मुंगेर-वासी ।

नाम—( ३६२४ ) ( महाराज ) जवानसिंह ( जी )

ग्रंथ—( १ ) रस तरंग, ( २ ) नय सित, ( ३ ) स्फुट कविता ।

रचना-काल—सं० १६६० के लगभग ।

परिचय—महाराज पृथ्वीसिंहजी के पुत्र तथा वर्तमान महाराजा  
के पिता थे । यह परम वैष्णव श्रीकृष्ण के उपासक थे ।

उदाहरण—

घन सी नोपत धुरत हैं विज्जुलता-सी चाल ,

इंद्र धनुष पट लसत मनु बूझनि बँदी भाल ।

नाम—( ३६२५ ) दामोदर उपनाम उरदाम चौरे ।

ग्रंथ—उरदाम प्रकाश । [ च० त्रै० रि० ]

रचना-काल—सं० १६४७ के पूर्व ।

नाम—( ३६२६ ) देवीदत्त ब्राह्मण जैधी, पो० बिहार ।

जन्म-काल—सं० १९२२ ।

नाम—( ३६२७ ) पीतांबर भट्ट ओरछा के राजकवि ।

ग्रंथ—प्रताप प्रभाकर । [ प्र० श्रै० रि० ]

विवरण—पद्माकर-वंशज । अब प्राय ७० साल के हैं ।

नाम—( ३६२८ ) भगवत चरखारी-वासी ।

ग्रंथ—दृष्टमंत-पचासा ।

रचना-काल—सं० १९२२ के पूर्व ।

नाम—( ३६२९ ) भैरववल्लभ ब्राह्मण ।

ग्रंथ—पाप विमोचन ( शिवस्तुति ) । [ द्वि० श्रै० रि० ]

नाम—( ३६३० ) महीपतिसिंह ठाकुर ।

ग्रंथ—बालविनोद ।

जन्म-काल—सं० १९२२ । मृत ।

नाम—( ३६३१ ) मुशोलाल ।

ग्रंथ—( १ ) दरिद्रता से भेष, ( २ ) कहानियों की पुस्तक, ( ३ ) शील और भावना, ( ४ ) शीलसूत्र, ( ५ ) छात्रों को उपदेश, ( ६ ) पद्म चूड़ामणि-काव्य का हिंदी अनुवाद ।

विवरण—अमवाल जैन लाहौर-कॉलेज में सस्कृत के अध्यापक थे । आपने अब पेंशन ले ली है ।

नाम—( ३६३२ ) यज्ञेश्वर, रामचंद्रपुर ।

ग्रंथ—( १ ) यज्ञेश्वर-विहार, ( २ ) गणेशमनोरजनी ।

जन्म-काल—सं० १९२२ ।

नाम—( ३६३३ ) लक्ष्मणाचार्य गोस्वामी घाणीभूपण, मथुरा ।

ग्रंथ—( १ ) मृतक शब्द विषयक प्रश्नोत्तर, ( २ ) मुहूर्त-प्रकाश, ( ३ ) भीषण भविष्य, ( ४ ) वेद निर्णय, ( ५ ) शब्द-

सिद्धि, ( १ ) शिक्षातन्त्र, ( ७ ) भारत-सेवा ( काव्य ), ( ८ )  
रूपक प्रबोध शतक ।

जन्म-काल—स० १६३२ ।

नाम—( ३६३४ ) लक्ष्मीनारायण ।

प्र य—( १ ) विद्यार्थी माल-श्रीका, ( २ ) गोरख-शतक ।

रचना-काल—स० १६२२ के पूर्व ।

नाम—( ३६३५ ) लालमणि वध रेंटगज, फर्रुखाबाद ।

प्र य—प्रमोद प्रकाश ।

जन्म काल—स० १६२२ ।

नाम—( ३६३६ ) शीतलप्रसादसिंह गहरवार इमामगंज,  
राया ।

प्र य—धीसीतारामचरितायन ।

जन्म काल—स० १६२२ ।

विवरण—धूप सुयोग्य कवि और सज्जन पुरुष हैं ।

नाम—( ३६३७ ) हरिचरणसिंह, अजमेर ।

प्र य—( १ ) वीर नारायण, ( २ ) बूँदी-राज चरितावली,  
( ३ ) पृथ्वीराज-महोबा-संग्राम, ( ४ ) अन्नगपाल पृथ्वीराज-समय ।

जन्म-काल—स० १६३२ ।

समय—संवत् १६४८

नाम—( ३६३८ ) अजयदास ।

प्र य—अजयदास के भूलना । [ तृ० प्रै० रि० ]

रचना-काल—१६४८ ( १६२३ की लिखित प्रति मिली )

नाम—( ३६३९ ) अगदप्रसाद ।

जन्म-काल—स० १६२२ ।

रचना-काल—सं० १६४८ के लगभग ।



नाम—( ३६४० ) ईश्वरदत्त, ( स्वर्गीय ) ।

रचना—मानस दीपिका ।

नाम—( ३६४१ ) ईश्वरीप्रसाद तिवारी ।

ग्रंथ—( १ ) भाषा भगवद्गीता, ( २ ) भाषा भागवत ।

जन्म-काल—स० १९२३ ।

उदाहरण—

तु बँडो ही रामायण नित गावै ।

स्रोतो राम रूप अति सुंदर त्रिन त्रिन मन में ध्यावै ।

बालकाठ प्रभु चरण कमल शुचि जग नदन मुख छावै ;

निर्गुण मगुण मरूप भाउ कहि कथा प्रसंग लगावै ।

बाल केलि पद ऊर्ध्व भाव लखि घुटना मगुपति लावै ;

ब्याह उद्धाह शोरु भौंति जहँ उर विक्रम प्रकावै ।

अति सुंदर कटि देश अयोध्या जहँ सत धम दिपावै ;

प्रभुता बीर बधु की करनी सिय पतिव्रत सरसावै ।

नाम—( ३६४२ ) कुंदनलाल, फतेहगढ़ ।

जन्म-काल—स० १९१५ ।

मृत्यु-काल—स० १९५१ ।

विवरण—आपने स० १९४८ में 'कवि व चित्रकार'-नामक मासिकपत्र फतेहगढ़ से निकाला था, किंतु पीढ़े आपके अस्वास्थ्य के कारण वह बंद हो गया । आप हिंदी के प्रेमी तथा उन्नायक थे । कवि व चित्रकार में समस्याएँ भी रहती थीं, जिनकी पूर्ति में आप कवियों का यथायोग्य सम्मान भी करते थे ।

नाम—( ३६४३ ) गोपालदास, आगरा ।

जन्म-काल—स० १९२३ ।

विवरण—भूतपूष संपादक जैनमित्र ।

नाम—( ३६४४ ) छोटेलाल कायस्थ, देउरी, जिला सागर ।

जन्म-काल—स० ११२३ ।

नाम—( ३६४५ ) पद्मलाल ब्राह्मण, सुजानगढ़, बीकानेर ।

जन्म काल—स० ११२३ ।

ग्रंथ—४० पुस्तकें ।

विवरण—भूतपूर्व सहायक जैय हितैषी ।

नाम—( ३६४६ ) पहलवानसिंह, मकर दानगर, फर्रुखानाद ।

जन्म काल—स० १६२३ ।

ग्रंथ—( १ ) नलोपाख्यान, ( २ ) सक्षिप्त क्षत्रिय-च्यवस्था,  
( ३ ) राठौर वशावली ।

नाम—( ३६४७ ) शैलजी ब्राह्मण (शैल), वैरिहा राज्य, रोवाँ ।

जन्म-काल—स० ११२३ ।

नाम—( ३६४८ ) सूरतसिंह सुधो कवि ।

जन्म-काल—स० ११३० ।

रचना-काल—स० ११४८ ।

ग्रंथ—( १ ) सूरति विनोद, ( २ ) रसवृष्टि ।

विवरण—आपके पिता का नाम रामदीनसिंह था ।

उदाहरण—

रति सौं रसीली गुन प्रागरी मनोज भरी,

बैठि कुरसी पै मानप्यारी कंजि घर में ।

सुंदर सँवारि फेस देखति सुरारविंद,

धरति भनत सुध धारसी लै कर में ।

तामें श्लोप ज्ञानन की माँगहू समेत इमि,

सोहै तौन उपमा कहत जौन उर में ।

सीस पै त्रिबेनी लै फलक घोइये के काज,

मानो धरयो मुदित नयक मानसर में ।

समय—संवत् १६४६

राम—( ३६४६ ) अनिरुद्धदास ।

समय—सं० १६४६ ।

ग्रन्थ—पद्म पचीसी ।

नाम—( ३६५० ) आत्माराम, बडौदा ।

जन्म-काल—स० १६०४ ।

ग्रन्थ—वैदिक विवाहादर्श ।

विवरण—श्रावण बडौदा राज्य में शिक्षा के डाइरेक्टर हैं ।

नाम—( ३६५१ ) कान्हेलाल (काह) गया क्षेत्र, नवागढ़ी ।

जन्म-काल—स० १६२४ ।

ग्रन्थ—( १ ) मगीत मकरद, ( २ ) खानन मयूर, ( ३ ) सुधा  
तरंगिणी, ( ४ ) ध्यानदत्तहरी, ( ५ ) जगन्नाथ-माहात्म्य,  
( ६ ) नन्द शिष्य [ खोज ११०३ ], ( ७ ) ध्यानदत्तार रामायण,  
( ८ ) काम विनोद, ( ९ ) वैद्यनाथ माहात्म्य, ( १० ) हास्य पंच  
रत्न, ( ११ ) सुद्ध शिक्षक, ( १२ ) विरधमोहिनी-संग्रह ।

नाम—( ३६५२ ) गजराजसिंह क्षत्रिय, पैमहरा, जिला  
सीतापुर ।

जन्म-काल—स० १६२४ ।

ग्रन्थ—( १ ) अजिरविहार, ( २ ) धनश्याम धुआनुनिया,  
( ३ ) समस्या प्रकाश, ( ४ ) गर्भ गीता, ( ५ ) छायापुरप ।

विवरण—हिंदी के सिवा श्रावण प्रारंभ में भी कविता करते हैं ।  
कविता अच्छी होती है ।

नाम—( ३६५३ ) गोपाललाल खत्री, लखनऊ ।

समय—सं० १६४६ ।

जन्म-काल—स० १६२५ के लगभग ।

रचना—बहुत-से लेख ।

विवरण—आपने कई साल तक नागरी प्रचारक पत्र को घाटा सहकर भी चलाया, यद्यपि आपकी आर्थिक दशा घैमी अच्छी नहीं थी। आप हिंदी के अच्छे लेखक हैं, और आपने कई उपन्यास आदि लिखे हैं।

नाम—( ३६४४ ) गौरीशंकर, भ्राम गेमता, राज्य गोंडस ( काठियावाड़ प्रांत )।

जन्म काल—स० १६२४।

ग्रंथ—( १ ) श्रौदार्य यात्री, ( २ ) सुर-सुधाकर, ( ३ ) गायन-तरंग, ( ४ ) माचीराज जीव।

विवरण—आपने ग्रंथ नं० १ तथा २ गोंडस दरवार तथा वीर-पुर दरवार के शत्रुघ्न मंत्रों हैं। आप अभी विद्यमान हैं।

नाम—( ३६५४ ) देवदत्त बाजपयी ( पुरंदर )।

जन्म काल—स० १६१८।

विवरण—आपने मजभाषा में बहुत-सी सुंदर रचना की हैं। इनका शरीरांत प्रायः स० १६८६ में हुआ।

नाम—( ३६५६ ) देवोदयालु, जालवर।

जन्म काल—स० १६२४।

ग्रंथ—जीवन-यात्रा।

विवरण—आप आयसमान के उपदेशक हैं।

नाम—( ३६५७ ) दौलतराम नी रिटाचर्ड, सब डिप्टी-इंस्पेक्टर।

नाम—( ३६५८ ) पुत्तलाल ( श्याम ) हलवाई, साँड़ी, जिला हरदोई।

जन्म काल—स० १६२४।

ग्रंथ—( १ ) उरग विषमदा, ( २ ) श्याम कवि-पदावली, ( ३ ) श्याम शतरू, ( ४ ) श्याम कवि-छंद।

नाम—( ३६२६ ) बलभद्रसिंह बहैड़ा, पोस्ट खैरीघाट, जिला  
घहराइध ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

ग्रंथ—( १ ) गमुशतक, ( २ ) रामत्रियापचीम्बी, ( ३ ) देशदीपिका,  
( ४ ) जातियुवती, ( ५ ) प्राणपियारी, ( ६ ) महारानी अष्टक,  
( ७ ) पद्म-वैमायश, ( ८ ) सवाद गुरनातरु, ( ९ ) नवनाथ,  
( १० ) चौरासी सिद्ध ।

नाम—( ३६६० ) बोंवईराम ब्राह्मण, सराई, जिला मिर्जापूर ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

ग्रंथ—प्रताप विनोद ।

नाम—( ३६६१ ) भैरवदान, धोकानेर ।

कविता-काल—स० १९४६ ।

ग्रंथ—‘श्रुतकार इलानिधि’ ।

विवरण—इन्होंने कच्छ दरवार के ठाकुर बैरीनालकी के अनुरोध  
से उक्त ग्रंथ रचा ।

नाम—( ३६६२ ) त्रिखनाथ शर्मा, मथुरा ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

ग्रंथ—( १ ) स्थावरजीव प्रीमासा, ( २ ) घरों व्यवस्था, ( ३ )  
पुराण तंत्र ।

नाम—( ३६६३ ) विष्णुलाल शर्मा एम्० ए० बरेली, सब  
जज अलीगढ़ ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

ग्रंथ—आय-समाप्त परिचय ।

नाम—( ३६६४ ) शिवदुलारे पाडेय, मम्बूरी ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

ग्रंथ—इनुमान तमाचा ।

नाम—( ३६६५ ) शिवप्रसाद, जौनपुर ।

जन्म-काल—सं० १६२४ ।

समय—संवत् १६५०

नाम—( ३६६६ ) अनतराम पाडेय, रायगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १६२८ ।

मृत्यु-काल—सं० १६६४ ।

ग्रंथ—( १ ) हंसोपनिषत् भाष्य, ( २ ) रायगढ़ का भूगोल,  
( ३ ) कपटी मुनि नाटक ।

नाम—( ३६६७ ) अमीरअली सेयद ( भीर ) दवरोकलॉ,  
सागर ।

ग्रंथ—( १ ) नीति दर्पण की भाषा टीका, ( २ ) बूढ़े का व्याह,  
( ३ ) मन्चे का व्याह, ( ४ ) सदाचारी बालक आदि कट्ट ग्रंथ ।

विवरण—कविता अच्छी करते हैं । समस्या-पूर्ति के इनके बहुतेरे  
छंद देखने में प्राण हैं । चाप सुकवि हैं ।

नाम—( ३६६८ ) अमृतलाल माधुर, न० ४ चीनी पट्टी,  
कलकत्ता ।

ग्रंथ—( १ ) राम-रसायन ( अमृत-सतसद् ), ( २ ) कीर्ति-  
राघव ।

विवरण—आपके पिता ने भी राम-मुधारस नाटक एक ग्रंथ  
बनाया है, ऐसा इनका कथन है, किंतु आपने उनके नाम का उल्लेख  
नहीं किया है । अतएव हमने इस बात को इसी स्थान पर लिख  
देना उचित समझा है ।

नाम—( ३६६९ ) अक्षयवरप्रसाद साही चित्रिय, ग्राम  
महुअया, जिला गोरखपुर । [ द्वि० श्रे० रि० ] ।

ग्रंथ—( १ ) पुरधी नाटक ( गद्य पृष्ठ १३४ ), ( २ )  
( पृष्ठ १७४ ) ।

विवरण—वेनिस के व्यापारी के आधार पर प्रथम ग्रथ है ।

नाम—( ३६७० ) उदयलाल कासलीवाल ।

घापो कई जैन ग्रथों का हिंदी में अनुवाद किया है । संकेतनाम जैन । सत्यवादी के भूतपूर्व सपादक ।

नाम—( ३६७१ ) उदितनारायणलाल कायस्थ, गाजीपुर ।

ग्रथ—बंगला के कई उपन्यासों का भाषानुवाद किया है ।

विवरण—यह गाजीपुर के प्रसिद्ध पुरुष थे ।

नाम—( ३६७२ ) केदारनाथ चतुर्वेदी उपदेशक, म्नालियर ।

जन्म काल—स १६२६ ।

ग्रथ—( १ ) फया-बोधिनी ( ग्रथ पद्य ), ( २ ) स्त्री-रत्नमाळा ( गद्य ) ।

नाम—( ३६७३ ) गोपालदास धरैया ।

ग्रथ—( १ ) सुशीला ( २ ) जैनसिद्धांत-दृषण, ( ३ ) जैन सिद्धांत प्रवेशिका ।

विवरण—आगरा निवासी । दिगंबर सम्प्रदाय के धुरधर विद्वान् ।

नाम—( ३६७४ ) चंद्राप्रतीयेयी, बनकटा, आजमगढ़ ।

नाम—( ३६७५ ) जीतसिंह बु देलखडी ।

रचना काल—स ० १६५० ।

ग्रथ—विनयरत्नामृत ।

नाम—( ३६७६ ) जुगुलाद प्राक्षण, गांढा ।

ग्रथ—स्वभाव-सुधारसिंधु, ( पृष्ठ ४८ ), [ द्वि० प्रै० रि० ] ।

नाम—( ३६७७ ) दिग्विजयसिंह राजा ।

ग्रथ—छंद दस्तप्रत, [ प० प्रै० रि० ] ।

नाम—( ३६७८ ) द्वारिकाप्रसाद कायस्थ, खटवारा, जिला थौंदा ।

जन्म-काल—स ० १६२४ ।

रचना-काल—स० ११२० ।

प्रथ—( १ ) स्वर-मघोभिनी, ( २ ) रेगता-रामायण ।

विवरण—रियामत मैहर में इस्पेक्टर थे ।

नाम—( ३६०६ ) पजनसिंह कायस्थ, धु देलखड ।

रचना-काल—स० ११२० ।

प्रथ—पता प्रश ज्योतिष [ प्र० प्रै० रि० ] ।

नाम—( ३६०० ) खुनाथप्रसा कायस्थ, पेंचवारा, जिला  
घोंदा ।

जन्म-काल—स० ११२२ ।

कविता-काल—स० ११२० ।

प्रथ—( १ ) राममंत्र भूषण, ( २ ) रसिक विलास ।

नाम—( ३६०१ ) खुनाथ शाकदोषी, ग्राम राघवपुर, जिला  
पटना ।

जन्म-काल—स० ११२२ ।

मृत्यु-काल—सं० ११६२ ।

प्रथ—( १ ) सुभाषित भूषणम् काव्यम् । ( सूत्रि विलास २००  
श्लोक ); ( २ ) उदय चपू ( काव्य ), ( ३ ) धार्माधारादर्श  
( ३२६ श्लोकों का चित्रग्रथ युक्त काव्य ), ( ४ ) रसमजूपा ( हिंदी  
कविता, स० ११२७, बिहार धधु प्रेस पटना से मुद्रित ।

नाम—( ३६०२ ) राममल ।

जन्म काल—सं० ११२२ ।

प्रथ—प्रवीनसागर ।

विवरण—थाप राजकोट के निवासी चारण थे । उरु प्रथ राज  
कोट के राजा महिराधनजी ने बनाया था, किंतु वह अधूरा रह गया ।  
कहा जाता है कि आपने ही इस प्रथ को पूरा किया है ।



नाम—( ३६८३ ) राधामोहनजी रावत ( चिंतामणि ),  
मैनपुरी ।

सृष्टु-काल—स० १९७५ के लगभग ।

प्रथ—( १ ) श्रीरूष्ण विनोद, ( २ ) रस-सहरी ( दो भाग ) ।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण मैनपुरी निवासी थे ।

प्रथम यह स्थानीय गवर्नमेंट स्कूल में अध्यापक रहे, तत्परचाय वहाँ के  
अध्यक्ष ( सुपरिंटेंडेंट ) हो गए । कुछ काल पर्यंत यह वर्तमान मैनपुरी-  
नरेश के शिक्षक थे । आपके प्रथ स्टीम प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हो  
सुबे है ।

उदाहरण—

कहा कहीं छवि था जुगल की ।

सिंहासन पर केशव रावत शोभा छवि मद्द मदन हरन की ।

फोड कर जोरि सामुहें ठाड़ी भूमि रही फोड चमर टुरन की ।

'चिंतामणि' नरि प्रेम पुलक तन देखि रहे यह काति बदन की ।

नाम—( ३६८४ ) रामदासराय, मुजफ्फरपुर ।

जन्म-काल—स० १९२६ ( अनुमानत ) ।

रचना-काल—स० १९५० के लगभग ।

प्रथ—( १ ) पंच पात्र, ( २ ) दूत-वास्य, ( ३ ) हिंदी-  
व्याकरण आदि ।

विवरण—आप भूमिहार ब्राह्मण हैं । इस समय आप मुजफ्फरपुर  
कॉलेज में संस्कृत तथा हिंदी के प्रोफेसर हैं ।

नाम—( ३६८५ ) रामेश्वरप्रसाद पांडेय, भरतपुर, रीवा  
राज्य ।

जन्म-काल—स० १९२० ।

कविता-काल—स० १९५० के लगभग ।

प्रथ—स्कृत कविताएँ ।

विवरण—आप रीयाँ-राज्य में ससृष्ट भ्रष्टाचार हैं। हिंदी तथा ससृष्ट, दोनों में आप कविता कासे हैं। आपकी रचनाएँ 'रंगेरा' अथवा 'भ्रष्टाचार' उपनामों से यदा-कदा भक्ति रहती हैं। [ धीयुन भालुमिह बाधेल द्वारा जात ]।

उदाहरण—

आयो है असाद गाद पीतम वियोगिन को,  
 आपो नम मेघ शोर चातक मुनायो है ;  
 आयो है तवीन चार बारिद त्यों चार बार,  
 सरग सुगध महि मडल पै आपो है ।  
 आपो है मुजाम त्यों बूटी छटा क्षोषी मध्य,  
 मोर-गण शोर परि धानेद मचायो है ।  
 आपो है न नेह धित चचटा चहुँधै देखि,  
 दरद वचाया मोहि पीतन न आपो है ।

नाम—( ३६८६ ) लाला वी वदीजन, असनी, पतेहपुर ।

विवरण—साधारण धोषी । यह महाराज पैरीमाल के वरपर हैं । आप महाराजा रीयाँ के यहाँ नौकर हैं ।

नाम—( ३६८७ ) शत्रुघ्नीतसिंह ( रीयान ) ।

ग्रंथ—( १ ) प्रमर-वश-रसाकर, ( २ ) चद्रमल्ल श्रुतु ।

विवरण—छत्रपुर-नरेश महाराजा विदयनाथसिंहगुरुदेव के पितृ-पुत्र ।

नाम—( ३६८८ ) शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी ।

ग्रंथ—( १ ) गृहस्थ धर्म, ( २ ) छतवाला की टीका, ( ३ )

नियमसार की टीका, ( ४ ) अनुभवाद् ।

विवरण—आप लखनऊ निवासी अग्रवाल जैन थे। समाज की सेवा नि स्वाध भाव से करने के वास्ते आप प्राय १३५५ में गृहत्यागी भी हो गए ।

समय—सत्रत् १६५१

गाम—( ३६८६ ) गणपति मिश्र, नोरखा, आरा ।

ग्रन्थ—मुक्ति भाग प्रकाश, ( २ ) सुतानन्द प्रकाश, ( ३ ) श्वु  
षण्ड, ( ४ ) सिद्धेश्वरी स्तोत्र अभिवेक ।

जन्म-काल—स० १६२६ ।

विवरण—वैदिक उरदेशक ।

नाम—( ३६६० ) गौरीशंकर भट्ट, कानपुर ।

ग्रन्थ—घापने १० छोटे-छोटे ग्रन्थ लिखे, जिसमें धलकृत ग्रन्थ  
लिखने के भी ग्रन्थ हैं ।

जन्म-काल—स० १६२६ ।

विवरण—भूतपूज सपादक भट्ट भास्कर ।

गाम—( ३६६१ ) छद्गालाल मिश्र मैथपुरी ।

जन्म-काल—स० १६२६ के लगभग ।

ग्रन्थ—( १ ) मैथपुरी-राज्य का इतिनाम ( छद्गोबद्ध अनुवाद ),  
( २ ) ऊमड़ ग्राम Goldsmith's Deserted Village ।  
( ३ ) गंगा लहरी, ( ४ ) अभिमन्यु वध, ( ५ ) मसाले की वर्जिनिया ।

विवरण—घाप पं० भगवानदासजी के पुत्र चतुर्वेदी ब्राह्मण हैं ।  
आगरा कॉलेज में उच्च शिक्षा पाई । कुछ समय तक मैथपुरी  
नरेश के निज्जु अमात्य तथा राजपुत्र के शिक्षक थे । घापका निम्न  
लिखित छद्ग गंगा लहरी के एक श्लोक का अनुवाद है ।

इकधर पढ़ी जय ज्ञान सा निघरे शिव शीश बिहार ठयो ।

यह पेटि अलिगा प्रेम विषे गिरिजा चित कोध अपार भयो ।

चप लाल भण, कहि जात नहीं, यहु डाइ जो सौति समाइ गयो ।

भवतें जननी विनयी लहरें जिनको शिव शीश उठाइ गयो ।

नाम—( ३६६२ ) जागेश्वरप्रसाद कायस्थ, मैहर, मदनपुर ।

प्रथ—चित्त रितास ।

विवरण—[ श्रीयुक्त महेशप्रसादजी मिश्र, कुजविहारीछाब क मंदिर न० ८२, घासी फटरा, गोरखपुर से शात ] मिश्रजी का कथन है कि इन कवि की जीवनी 'कर्वाँद-नामक मासिक पत्र में प्रकाशित हो चुकी है ।

समय—सवत् १९५२

नाम—( ३६६८ ) थोरीलाल शर्मा ।

प्रथ—रमलताजिक । [ द्वि० प्रै० रि० ] ।

नाम—( ३६६६ ) कार्जीशकर व्यास, काशी ।

जन्म काल—स० १६३७ ।

मृत्यु-काल—स० १६६२ ।

नाम—( ३७०० ) कृष्णलाल वर्मा ।

प्रथ—( १ ) चपा, ( २ ) रात्रय का पत्रिक, ( ३ ) दलजीतसिंह ।

नाम—( ३७०१ ) जगन्नाथ द्विज ।

प्रथ—बौताल रमिक ननभावन । [ पं० प्रै० रि० ] ।

नाम—( ३७०२ ) जगन्नाथप्रसाद ।

प्रथ—काग शिरोमणि [ पं० प्रै० रि० ] ।

नाम—( ३७०३ ) जगन्नाथ शुक्ल, पुन्डरत, अमृतसर ।

प्रथ—( १ ) स्त्री शिक्षा-मणि, ( २ ) व्याख्यान विधि ।

विवरण—आप षट् प्रसिद्ध लेखक तथा व्याख्याता थे ।

नाम—( ३७०४ ) जयदेव उपाध्याय, जिला बलिया ।

समय—सं०—१६२२ ।

नाम—( ३७०५ ) जयमंगलसिंह, दुर्जनपुर ।

जन्म-काल—सं० १६२७ ।

नाम—( ३७०६ ) दामोदर ( दपति ) ।

जन्म-काल—सं० ११२७ ।

ग्रन्थ—स्फुट फरिता ।

नाम—( ३७०७ ) देवीप्रसाद ( प्रीतम ) कायस्थ, विजायर ।

जन्म-काल—सं० ११२७ ।

ग्रन्थ—( १ ) श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, ( २ ) गो-गुहार, ( ३ ) बिहारी-सतमई का उद्घोषणमय अनुवाद, ( ४ ) पु देवगण्ड का अद्ययम ।

नाम—( ३७०८ ) पत्रालाल नक्षत्रभट्ट ।

जन्म-काल—सं० ११२७ ।

ग्रन्थ—( १ ) अमृत अक्षर, ( २ ) गोविंद-गीत ( नीति ) सुधा ।

विवरण—गूढ़ाथ नाना विषय संग्रह ।

नाम—( ३७०९ ) प्रभाकर भट्ट, दतिवावासी ।

फरिता-काल—सं० ११५२ ।

ग्रन्थ—( १ ) प्रताप कीर्ति-चंद्रोदय, ( २ ) षट्शतु-अर्थान, ( ३ ) हमीरकुल-कल्पवृक्ष, ( ४ ) अलंकार, ( ५ ) भट्टहरि नीति-शतक, ( ६ ) यथापरीत-सरोज ।

नाम—( ३७१० ) बालगोविंद, अनवरगज, फानपुर ।

जन्म-काल—११२७ ।

ग्रन्थ—( १ ) मनोभव तथा स्फुट छंद । ( २ ) बजरग पचीसी ( च० ग्रं० रि० ) ।

नाम—( ३७११ ) मुमहीराम शर्मा गौड, जिला मेरठ ।

जन्म-काल—सं० ११२७ ।

ग्रन्थ—( १ ) सुभाषितरत्न, ( २ ) सुभाषितप्राप्ति, ( ३ ) सत्याथ प्रकाश ( सस्कृत ) ।

नाम—( ३७१२ ) मेदनीप्रसाद पाडे, मालगुजार परसापाली, रायगढ़, छत्तासगढ़ ।

जन्म-काल—सं० ११२७ ।

ग्रंथ—( १ ) पद्म मनुष्या, ( २ ) विष्णु षट्पदी, ( ३ ) शृंगार-सुधा-समग्र, ( ४ ) गणेशोत्सव दण्ड, ( ५ ) सत्सग विलास-समग्र ।

विवरण—आपकी रचना मजभाषा में है । आपने कुचीसगढ़ के प्रसिद्ध कवियों का चयन एक कवित्त में किया है ।

उदाहरण—

मुकवि गोपाल मिथ द्विज इहलाद कवि,  
 बाबू रेवारास रत्नपुर कं न याने भ्रम ;  
 हो गए अनेक ये धृतीसगढ़ नाह कवि,  
 धीर हैं अनेक बुद्धि विद्या माहि नहि कम ।  
 मुकवि अनतराम मालिक श्री सु दरजू,  
 लावनप्रसाद कवि मति सन अनुपम,  
 मदिनाप्रसाद जैसे भानु कवि भानु सम,  
 है न अति उक्ति कवि मीर है मथक सम ।

नाम—( ३७१३ ) शिवदास पाडेय, मस्तूरी ।

जन्म-काल—सं० १६२७ ।

समय—संवत् १६५२

नाम—( ३७१४ ) कन्दैयालाल ।

रचना-काल—स० १६६३ ।

प्र ५—अजनानदनु दरी ।

विवरण—भरतपुर-बार्मी श्रीमाल जैन ।

नाम—( ३७१६ ) कमलाचता ।

प्र ६—भगिनी-संश्र आदि स्फुट कविता ।

विवरण—आप श्यामाचरणजी की धमपत्नी हैं ।

नाम—( ३७१६ ) कृष्ण ब्रह्मभट्ट, अक्सनी ।

विवरण—महाराज हुमराय के यहाँ राजकवि हैं ।

नाम—( ३७१७ ) गणेशप्रसाद ( गणाधिप ) बिसवाँ, सीतापूर ।

जन्म-काल—स० १६२८ ।

प्रथ—गणाधिप-सयस्व ।

नाम—(३७१८) गोपालदीन शुक्ल (शुक्ल), बिसवाँ, सीतपुर ।

जन्म-काल—स० १६२८ ।

नाम—( ३७१९ ) गोपालवल्लभ ।

प्रथ—हिताचाय महाप्रभु का जीवन चरित्र ।

वियरख—राधावल्लभीय मन्त्रदाय म हैं ।

नाम—( ३७२० ) जगन्नाथप्रसाद कायस्थ, बनारस ।

नाम—( ३७२१ ) जौहरीलाल शर्मा ।

प्रथ—(१) व्याकरण विटप, (२) तौतालकार राम नाटक (च० त्रै० रि०) ।

नाम—( ३७२२ ) पतितदास स्वामी ।

प्रथ—( १ ) गुप्तगीता, ( २ ) भजनावली । (प० त्रै० रि०) ।

नाम—( ३७२३ ) मुहम्मद अन्दुलसत्तार ( प्यारे ) ।

जन्म-काल—स० १६२८ ।

नाम—( ३७२४ ) रामदासराय पुस्तकालयाध्यक्ष, मुजफ्फरपुर, बिहार ।

जन्म-काल—स० १६२८ ।

रचना-काल—स० १६५३ ।

प्रथ—( १ ) शिक्षा-लता, ( २ ) भारत दशा-दपण, ( ३ ) जिंग-धर्म-सशोधन, ( ४ ) हिंदी-करीमा ।

समय—सन् १६५४

नाम—( ३७२५ ) इन्द्रजीत कायस्थ, जिलाहर, शाहजहाँपुर ।

जन्म-काल—स० १६२८ ।

रचना-काल—स० १६५४ ।

प्रथ—नारी धर्म विचार ( चार भाग ), राग खिमटा ।

नाम ( ३७२६ ) खुलासीराम ( द्विज हेम ), जयलपुर छावनी ।

जन्म-काल—स० १९२६ ।

नाम—( ३०२७ ) छोट्टनलाल शर्मा, परोक्षितगढ, मेरठ ।

जन्म-काल—स० १९२३ ।

ग्रंथ—भाग्यत परीक्षा ।

नाम—( ३०२८ ) तुलसीसाहय ।

रचना-काल—स० १९५४ ।

ग्रंथ—घटरामायण ( वृ० त्रै० रि० ) ।

विवरण—हाथरस निवासी थे । ग्रंथ में योग-भाग का वर्णन है ।

नाम—( ३०२९ ) निरजनानन्द स्वामी ।

रचना-काल—स० १९५४ ।

ग्रंथ—निरजन लहरी च० प्रै० रिपोट ।

नाम—( ३०३० ) बरजारसिंह परिहार, ग्राम बिहार,

जिला फर्रुखाबाद ।

जन्म-काल—स० १९२६ ।

ग्रंथ—नीति शतक ।

नाम—( ३०३१ ) बलदेवप्रसाद, खंडेली, जिला हरदोई ।

जन्म-काल—स० १९२६ ।

ग्रंथ—( १ ) अक्याशित यमा, ( २ ) सुख की खानि,

( ३ ) जीवनोद्धार, ( ४ ) रद्री, ( ५ ) सताप शतक ।

नाम—( ३०३२ ) मावूलाल ब्राह्मण, अलवर ।

जन्म-काल—स० १९२६ ।

नाम—( ३०३३ ) बालमुकुन्द शर्मा, मुरादाबाद ।

जन्म-काल—स० १९२६ ।

ग्रंथ—( १ ) सुधम-मजरी ( सनातन धर्म-म्याख्या ), ( २ ) मुक्ता-

बद्धि-रामायण ( दोहा चीपाई ), ( ३ ) आरुहखण्ड रामायण ( राम

चरित्र ), ( ४ ) आरुहखण्ड-महाभारत ( कौरव पाण्डव-जीवा ) आदि ।



नाम—( ३७३४ ) रामाधीन शर्मा, लखनऊ ।

जन्म-काल—स० ११२६ ।

ग्रंथ—पाचाल माहात्म्योत्पत्ति-मार्तंड ।

नाम—( ३७३५ ) शारदाप्रसाद ( रसेंद्र ), मु० मैहर ।

जन्म-काल—स० ११२६ ।

ग्रंथ—रत्नप्रयी आदि ।

नाम—( ३७३६ ) शिवनारायण ग्हा, मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० ११२६ ।

ग्रंथ—विश्वकर्म वश निणय ।

नाम—( ३७३७ ) सपत्ति, मुजफ्फरपुर ।

जन्म-काल—स० ११२६ ।

ग्रंथ—( १ ) नीति भूषण, ( २ ) मंत्रविषादादर-चंद्रिका ।

नाम—( ३७३८ ) सीताराम ( निकुंज ), पन्ना ।

जन्म-काल—स० ११२६ । ( प्र० प्रै० रि० )

ग्रंथ—( १ ) रस-मार्तंड, ( २ ) रसकलानिधि आदि कई

ग्रंथ रचे ।

नाम—( ३७३९ ) हरिपालसिंह क्षत्रिय, सोहिला मऊ,

ढाकजाना सडोला जिला हरदोई ।

जन्म-काल—स० ११३६ ।

कविता-काल—स० ११२४ ।

ग्रंथ—( १ ) दुर्गा विजय, ( २ ) प्रेम-नीतावली, ( ३ ) अष्ट-

पचासी, ( ४ ) प्रेम पचासी, ( ५ ) उपा अतिरुद्ध-नाटक, ( ६ ) वसंत-

विनोद, ( ७ ) पावस प्रमोद, ( ८ ) सिंहासन बचीसी पद्य,

( ९ ) प्रेम-पारिनात, ( १० ) हरिपाल विनोद, ( ११ ) अतु-

रसाकुर, ( १२ ) राग रग, ( १३ ) राग रत्नावली, ( १४ ) वियोग-

धम्राघात, ( १५ ) चंद्रदास नाटक, ( १६ ) इंदुमती उपन्यास ।

विषय—आप उत्साही और अच्छे लेखक थे।

नाम—( ३७४० ) त्रिलोचन मा।

जन्म-काल—स० १९३२।

रचना-काल—स० १९२४।

ग्रन्थ—( १ ) गणपतिशतक, ( २ ) श्रीमगलशतक, ( ३ ) ध्यात्म-विनोद, ( ४ ) जनेश्वर विलाप, ( ५ ) शोकाच्छ्वास, ( ६ ) श्रीकला नद विनोद, ( ७ ) मिथिला की वर्तमान अवस्था और आवश्यक सुधार, ( ८ ) सम्मेलन-संवाद, ( ९ ) जीवन चरित्र विषय, ( १० ) शत्रुतलोपाख्यान।

विषय—आप बतिया, जिला चपारन निवासी कुमार मा के पुत्र हैं।

उदाहरण—

लोचन सुंदर रूप वसी मन पीतम माँहि जगावति है ;  
पूजत जेह सरोज-कली अरु तुग उरोज चढ़ावति है ।  
धो यह स्वेद चले तन ते अथवा करि नेह नहावति है ,  
यों विपरीत रमें लखना की मनान को मय जगावति है ।

समय—सन् १९५५

नाम—( ३७४१ ) अनिरुद्धसिंह।

कविता-काल—स० १९२५।

यह जैपालपुर, जिला सीतापुर निवासी पँवार टाकुर थे। आपकी अकाल-मृत्यु प्राय २७ वर्ष की अवस्था में हो गई। आप हमारे मित्र थे, और कविता अच्छा करते थे। समस्या पूर्वक के कुछ काव्य सुधाधर पत्र में भेजा करते थे। आप साधारणतया एक बड़े जर्मीदार थे।

नाम—( ३७४२ ) अमीर राय ( मोर ), सागर, मध्यप्रदेश।

जन्म-काल—स० १९३०।

ग्रन्थ—कुछ ग्रन्थ रहे।

नाम—( ३०४३ ) ऋषिलाल, मु० गौरा, यादशाहपुर ।

जन्म-काल—स० १२३० ।

ग्रंथ—( १ ) पावस प्रेमलता, ( २ ) वैद्य-परब्रह्म, ( ३ ) माना शैशव आदि ।

नाम—( ३०४४ )—कु जदासो ।

जन्म-काल—स० १२३० ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

विचरण—राधावसुभी ।

नाम—( ३०४५ ) रङ्गजीत मिश्र रायवहादुर, एम्० ए०, ल् एल्० बी०, मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० १२३१ ।

कविता-काल—स० १२२५ ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विचरण—आप माधुर चतुर्वेदी ब्राह्मण्य प० नारायणदासजी के पुत्र हैं । आपने प्राचीय कॉलेज के उप-प्रिन्सिपल, असिस्टेंट कलेक्टर, प्रॉनरेरी मैनिस्ट्रेट, जिला बोर्ड के सभापति आदि के पदों को योग्यता पूर्वक सुशोभित किया है । आपके लेख प्रायः 'सरस्वती' तथा 'चतुर्वेदी' पत्रिकाओं में निकला करते हैं ।

नाम—( ३०४६ ) गजाधरप्रसाद शुक्ल ( द्विज शुक्ल ), पाता घोस, सीतापुर ।

ग्रंथ—रघुवश-भाषा ।

विचरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—( ३०४७ ) गोपालप्रसाद शर्मा रैसलपुर होशगाथाद ।

जन्म-काल—स० १२३० ।

ग्रंथ—( १ ) हित-चरित्र भ्रमोच्छेदन, ( २ ) बालपचरित्र, ( ३ ) रमणीपचरित्र, ( ४ ) गीता : की भक्तिबोधिनी टीका ।

( ४ ) जीवन-चरित्र परमहंसजी को ( १० २२ ) ( दि० प्रै० रि० ) ।

नाम—( ३७६७ ) मैथिल परमहंस ।

प्रथ—१७ प्रथ घनाप ।

नाम—( ३७६८ ) यक्षराजदास भाट, धीनगर ।

जन्म-काल—स० १६३० ।

प्रथ—( १ ) जगदेव पसाली, ( २ ) फोशकली, ( ३ ) रामायण माला, ( ४ ) सूरसागर तरंग, ( ५ ) भट्टोपाख्यान, ( ६ ) धैर्यनाथ माहात्म्य ।

नाम—( ३७६९ ) रघुपतिसहाय कायस्थ, सौसपुर, जिला गाजीपुर ।

जन्म-काल—स० १६३० ।

प्रथ—तुलसीदास का जीवन-चरित्र ।

नाम—( ३७६० ) रामचंद्र आनदराव देशपांडे, अध्यापक नार्मल स्कूल, नागपुर ।

जन्म-काल—स० १६३० ।

प्रथ—( १ ) शिक्षा विधि, ( २ ) महाजनी हिसाब ।

नाम—( ३७६१ ) रामचंद्र ( चंद ) ब्राह्मण जैत, मथुरा ।

जन्म-काल—स० १६३० ।

प्रथ—( १ ) ध्यानदोषान, ( २ ) ध्यानद-कल्पद्रुम, ( ३ ) चंद्र-सरोवर आदि १२ प्रथ रचे ।

नाम—( ३७६२ ) रामदीनजी ( पराशर ) ।

जन्म-काल—१६३० ।

रचना-काल—स० १६६६ ।

प्रथ—( १ ) जगत-ज्योति-नाटक, ( २ ) किशनगढ़ का भूगोळ, ( ३ ) शांति शतक का पद्यमय अनुवाद इत्यादि पुस्तकें जिलीं, अथवा अनुवादित की हैं ।

विषय—फिरानगढ़ राज्य में शिक्षा विभाग के कर्मचारी हैं। वास्तव में इटावा के घतगत असरतनगर के निवासी हैं। राजपूताने के कई स्कूलों में अध्यापक रहे हैं। कविता से विशेष प्रेम है।

उदाहरण—

ऊँचे को नपाइ देत, गिरे को उठाइ देत,  
 धचक्र चलाय चल विचल कराते है ;  
 कायर कपूत इस्फोक रूप आगे करि,  
 मरे गीदहा को हम मिह सों लदाते है ।  
 तीर तरवारि बादूक जो न हावे काज,  
 उसे पकू ज्यग्य की जवान से कराते है ;  
 शासक नवान राजा खातिर हमारी रखै,  
 रवि शशि जाँव नहीं कवि जन जाते है ।

नाम—( ३०६३ ) रामलाल द्विवेदी, वृदावन ।

जन्म-काल—सं० १६३० ।

ग्रंथ—अयोनि-मैथुन प्रावश्चित्त-न्यवस्था ।

विवरण—आप न० २६६५ के लघु भ्राता हैं ।

नाम—( ३०६४ ) रामलोचन पांडेय पैरुवलि, बलिया ।

जन्म-काल—सं० १६३० ।

ग्रंथ—( १ ) कर्म दिवाकर, ( २ ) सद्वा सुधारन

नाम—( ३०६५ ) रोसनासिंह, बगरा, खिला जालौन ।

जन्म-काल—सं० १६३० ।

ग्रंथ—वेदसार ।

नाम—( ३०६६ ) लक्ष्मण भगत पजावी ।

जन्म-काल—सं० १६३० ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

विवरण—राधावल्लभी ।

( ७ ) जीवन-चरित्र परमहंसजी को ( पृ० २२ ) ( दि० प्रै० रि० ) ।

नाम—( ३०२७ ) मैथिल परमहंस ।

प्रथ—१७ प्रथम यनाए ।

नाम—( ३०५८ ) यक्षराजदास भाट, भीनगर ।

जन्म-काल—स० १६३० ।

प्रथ—( १ ) जगदेव पमाली, ( २ ) फोशकली, ( ३ ) रामायण माला, ( ४ ) चूरसागर-तरंग, ( ५ ) भट्टोपाख्यात, ( ६ ) धैर्यनाथ-माहात्म्य ।

नाम—( ३०५६ ) रघुपतिसहाय कायस्थ, गौसपुर, जिला गाजीपुर ।

जन्म-काल—स० १६३० ।

प्रथ—मुलसीदास का जीवन-चरित्र ।

नाम—( ३०६० ) रामचन्द्र आनंदराव देशपांडे, अध्यापक नार्मल स्कूल, नागपुर ।

जन्म-काल—स० १६३० ।

प्रथ—( १ ) शिक्षा विधि, ( २ ) महाजनी हिसाब ।

नाम—( ३०६१ ) रामचन्द्र ( चद ) ब्राह्मण जैत, मथुरा ।

जन्म-काल—स० १६३० ।

प्रथ—( १ ) धानदोधान, ( २ ) धानद-कल्पद्रुम, ( ३ ) चद-सरोवर आदि १२ प्रथम रचे ।

नाम—( ३०६२ ) रामदीनजी ( पराशर ) ।

जन्म-काल—१६३० ।

रचना-काल—स० १६२६ ।

प्रथ—( १ ) जगत-योति-नाटक, ( २ ) किशनगढ़ का भूगोल, ( ३ ) शांति-शतक का पद्यमय अनुवाद इत्यादि पुस्तकें लिखीं, अथवा अनुवादित की हैं ।

विवरण—किशनगढ़ राज्य में शिक्षा विभाग के कर्मचारी हैं। वास्तव में इटावा के अतगत जसवतनगर के निवासी हैं। राजपूताने के कई स्कूलों में अध्यापक रहे हैं। कविता में विशेष प्रेम है।

उदाहरण—

ऊँचे को नवाइ देत, गिरे को उठाइ देत,  
 अचल चलाय चल विचल धराते हैं,  
 कायर कपूत डरपोक रण आगे करि,  
 मरे गीदकों को हम मिह सा टगते हैं।  
 तीर तरारि बनदूज जो न होवे काज,  
 उसे पुरु यग्य की जवान से कराते हैं,  
 शासक नवाय राजा पातिर हमारी रखै,  
 रवि शशि जावें नहीं कवि-जन जाते हैं।

नाम—( ३७६३ ) रामलाल द्विवेदी, वृदावन।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—अयोनि-मैथुन प्रायश्चित्त-व्यवस्था।

विवरण—आप सं० २६६२ के लघु भ्राता हैं।

नाम—( ३७६४ ) रामलोचन पांडेय पैरुवलि, बलिया।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—( १ ) कर्म दिवाकर, ( २ ) सच्चा सुधारन

नाम—( ३७६५ ) रोसनसिंह, वगरा, जिला जालौन।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—वेदसार।

नाम—( ३७६६ ) लक्ष्मण भगत पजावी।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—( ३०६७ ) वृदायनराम ( प्रजेश ) ब्राह्मण, एडा, राज्य रीवाँ ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—( १ ) हनुमानस्तव, ( २ ) हनुमानपंचक, ( ३ ) दानलीला ।

नाम—( ३०६८ ) श्यामसेवक मिश्र सनाढ्य, मऊराज, रीवाँ ।

जन्म-काल—सं० १९३० के लगभग ।

काय समय—सं० १९२२ ।

ग्रंथ—प्रायः तीस पुस्तकें बनाई हैं ।

विवरण—यह महाशय महाराज रीवाँ के यहाँ नौकर हैं । आप सस्कृत, फ़ारसी, बँगला और हिंदी के अच्छे विद्वान् हैं । यह कविवर केशवदासजी के वंशज हैं ।

नाम—( ३०६९ ) हमीरान धारण, ग्राम रीणी, रियासत बीकानेर ।

जन्म-काल—सं० १९३० के लगभग ।

ग्रंथ—छुट कविता ।

विवरण—आप अभी कसबा रीणी में अध्यापक हैं । [ ठाकुर चतुरसिंह, राष्ट्रवर, बीकानेर द्वारा ज्ञात ]

नाम—( ३०७० ) हरिमंगल मिश्र ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३० ।

रचना-काल—सं० १९२२ ।

विवरण—भारतवर्ष के इतिहास पर आपका एक शब्दा ग्रंथ है ।

नाम—( ३०७१ ) हरिशंकर ब्राह्मण, हरदा ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

विवरण—आपको सेठ की पदवा भी प्राप्त है ।

नाम—( ३०७२ ) हितप्रसाद उपनाम गंगादास ।



जन्म-काल—स० १६३० ।

ग्रन्थ—( १ ) स्फुट पं०, ( २ ) हितपंचक । ( तृ० प्रै० रि० )

विवरण—राधावल्लभी अनन्यवीर सेवक ।

• समय—संवत् १६५६

नाम—( ३७७३ ) अनिरुद्ध चौबे 'शेखर' कवि ।

जन्म-काल—स० १६३६ ।

रचना-काल—सं० १६२६ ।

मृत्यु-काल—सं० १६६८ ।

ग्रन्थ—( १ ) शिवरात्रि-माहात्म्य, ( २ ) चणकवरणी, ( ३ )

हनुमान-वार्त्तासा ।

विवरण—आ० रायगढ़ छत्तीसगढ़ निवासी है ।

नाम—( ३७७४ ) गणेशप्रसाद मिश्र ( घनेस ), खागी,

जिला खीरी ।

जन्म-काल—स० १६३१ ।

नाम—( ३७७५ ) गदाधरतिह ठाकुर, बगौछा, जिला

हरदोई ।

जन्म-काल—स० १६३१ ।

नाम—( ३७७६ ) गिरिधरप्रसाद ( प्रेम ), विदोखर, तहसील

हमीरपुर ।

जन्म-काल—स० १६३१ ।

ग्रन्थ—( १ ) अजनीलाबमुधा, ( २ ) श्यामलीला-शतक,

( ३ ) प्रेम पाती ।

नाम—( ३७७७ ) गेंदालाल मिश्र, मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० १६३१ ।

ग्रन्थ—स्फुट कविता ।

विवरण—प्रायः प० तुलसीरामाजी के पुत्र हैं। कलकत्ते में अध्यापन कार्य करते थे।

उदाहरण—

पटके तरु-मूलन ला सिगरे फल फूजे सभी धन के भटके ;  
छटके भटके भट नेकहु यीर लँगूल घुमाद सभी भटके ।  
खटके हिय म यजरग बली रण छाड़ि भजे घर को सटके ;  
बलि भूरति उग्र भयकर-सी भटके घर प्राणन ही घटके ।

नाम—( ३७७८ ) बुधन चौहान, हल्दी ।

जन्म-काल—स० १९३१ ।

नाम—( ३७७९ ) भगवानदीन द्विवेदी ( आत्म ), गोइबा, जिला हरदोई ।

जन्म-काल—स० १९३१ ।

अथ—( १ ) तमाएू माहात्म्य, ( २ ) शिव विनय-पचीसी, ( ३ ) कलियुगी सन्यास नाटक, ( ४ ) हत्याहरण-माहात्म्य, ( ५ ) बारहमासा, ( ६ ) अनूठी भगतिन ( उपन्यास ), ( ७ ) सदुप-देश-दोहावली, ( ८ ) प्राणप्यारी, ( ९ ) रसिकराज पचाशिका ।

नाम—( ३७८० ) भागवती देवी ठकुराइन, गहलौ, फानपूर ।

जन्म-काल—स० १९३१ ।

विवरण—भूतपूर्व सपादिका 'धनिता हितैषी' ।

नाम—( ३७८१ ) भगौरथ दीक्षित ( कर्माद्र ), उगू, जिला चन्नाय ।

जन्म-काल—स० १९३१ ।

अथ—( १ ) गोकर्ण-माहात्म्य, ( २ ) भाँग अफ्रीम विवाद ( ३ ) अयाचक की याचना, ( ४ ) अनिन्द्य विजय, ( ५ ) स्व-आपान-युद्ध ( पद्य ) ।

नाम—( ३७८२ ) मनोहरप्रसाद मिश्र ।

प्रथ—विश्य-बोध ।

विवरण—आप प० रामरूपा मिश्र के पुत्र हैं । छत्तीसगढ़ मासिक पत्र भी आपने निकाला था ।

नाम—( ३७८३ ) महेशप्रसाद ब्राह्मण, शकरगज, रीवाँ ।

जन्म-काल—स० १२३१ ।

नाम—( ३७८४ ) राधामोहनजी मिश्र, मैनपुरी ।

मृत्यु-काल—स० १२८१ ।

प्रथ—( १ ) पुरपत्र की श्रुचाओं का अनुवाद, ( २ ) विदुस्-भीति का पद्यानुवाद ।

उदाहरण—

सहस्र सीस पग आँखि हुई परि रहा जग जोइ ;

भीतर बाहर विश्व के पुरुष पड़ावै साइ ।

बापक है प्रजाड में और देह म जोइ ;

अतरयामी सकल को पुरुष च्छावै सोइ ।

नाम—( ३७८५ ) रामनाथ शुक्ल, भरवपूर, डा० सजुरी, जिला रायचरेली ।

जन्म-काल—स० १२३१ ।

प्रथ—( १ ) शांति-सरोरह, ( २ ) अनु-रत्नाकर ।

नाम—( ३७८६ ) लालमणि, बाँदा ।

जन्म-काल—स० १२३१ ।

नाम—( ३७८७ ) शीतलाबख्शसिंह सेंगर ठाकुर, कौधा, जिला उताव ।

जन्म काल—स० १२३१ ।

नाम—( ३७८८ ) श्यामजी शर्मा ( पाडेय ), भदावरि, आरा ।

जन्म-काल—स० १२३१ ।

ग्रंथ—( १ ) वृद्ध विलास, ( २ ) भाग्यशास्त्रिणी, ( ३ ) श्याम-  
विनोद, ( ४ ) खड़ी बोली पद्यादर्श, ( ५ ) प्रेममोहिनी, ( ६ ) त्रिया-  
घवल्लभ, ( ७ ) श्यामहृदयधन, ( ८ ) सत्त्वामृतकाम्य, ( ९ ) बाल-  
विधवा, ( १० ) गोहारि, ( ११ ) स्वाधीन विचार, ( १२ ) विधवा-  
विवाह, ( १३ ) पंडित मानो-मति-वपेटिका ।

विवरण—गद्य और प्रजभाषा पद्य खड़ी बोली पद्य के लेखक ।

नाम—( ३७८६ ) हरिगोविंद ।

जन्म-काल—स० १६३१ ।

समय—स० १६२७ ।

नाम—( ३७६० ) चक्रपाणि त्रिपाठी, सुहागपुर, क्षोशागाबाद ।

ग्रंथ—राम यश-कल्पद्रुम ।

समय—संवत् १६५७

नाम—( ३७६१ ) जगन्नाथसिंह चौहान, भोगियापूर, जिला  
हरदोई ।

जन्म-काल—स० १६३२ ।

नाम—( ३७६२ ) परमेश्वरदयालु ( रमिक ), तमोली,  
हुमराँव ।

जन्म-काल—स० १६३२ ।

ग्रंथ—( १ ) भक्ति-लता, ( २ ) गाने की चीजें ।

नाम—( ३७६३ ) वचनश मिश्र ।

जन्म-काल—स० १६३४ । ( देखने से ऐसा समझ पड़ता है । )

विवरण—यह स्थासत् कालाकार में नौकर हैं । आप गद्य और  
पद्य के अच्छे लेखक तथा बड़े उत्साही पुरुष हैं ।

नाम—( ३७६४ ) महात्माराम ।

ग्रंथ—गीता सटीक ( ख० प्रै० रि० ) ।

नाम—( ३७६५ ) माधौ तिवारी, जौनपुर ।

ग्रंथ—अध्यात्म-रामायण-सार-संग्रह । ( द्वि० त्रै० रि० )

नाम—( ३७६६ ) मितानसिंह, बरखेरया ।

जन्म-काल—स० १६३२ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

नाम—( ३७६७ ) सुकटलाल उपनाम रंग कवि ।

ग्रंथ—दुर्गा भाषा ।

नाम—( ३७६८ ) मूलाराम ।

ग्रंथ—विज्ञान निरूपिणी । ( प० त्रै० रि० )

नाम—( ३७६९ ) यज्ञराज, नोनरा ग्राम, जिला सुल्ताँपुर ।

जन्म-काल—स० १६३२ ।

ग्रंथ—( १ ) जगदय-यशावली ( लगभग २०० छंद ), ( २ ) रामायणमाला ( लगभग १२० छंद ), ( ३ ) वैद्यनाथ विनोद ( लगभग १२० छंद ), ( ४ ) अमरकोश का उद्धा, ( ५ ) स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप अरर कवि के पुत्र हैं । यह महाशय साहित्य-प्रेमी महाराज कमलानंदसिंहजी बनेली, धीनगर के आश्रय में रह चुके हैं । [ जिला मारन ( छपरा ) निवासी महाशय कपिलदेवनाथसिंहजी द्वारा ज्ञात । ]

उदाहरण—

जहाँ देवासुर-युद्ध शत वर्ष भी समुद्रभण,  
दानव प्रबल फिरें स्वता परान ।  
जहाँ देखि दीन दास अब कीन्ही अट्टहास,  
बढ़ि जागी है अकास भए सुनी देवतान ।  
जहाँ दी-हे काहु वख काहु भूपण्य प्रशस्त,  
दीन्हे अस्त्र शस्त्र यज्ञराज ब प्रमान ।

एहाँ करे को पखान प्रलै भान की समान,  
 जहाँ घंटी भाँह तान भूमि भार। फिरवान ।  
 ( जगदय-मशायबी से )

कोटिन रता को रूप चारति तिनूअ तोरि,  
 कोरि पूतो सरद सुधाघर गनै नहीं ;  
 बिफस्वो विभाति कारि धरय अनत कज,  
 सौरभित सोऊ नेऊ आवत मनै नहीं ।  
 रमा उमा सारदावि सुदरी समेटि सब,  
 यक्षराज ताहु पर उपमा मनै नहीं ;  
 कोमल घटू को सुए हेरि हरि कीसला सों  
 हौसजा के मारे कटू बालउ बनै नहीं ।

( रामायण-माला से )

नाम—( ३८०० ) पुगल माधुरी ।

ग्रंथ—मानसमातंडमाला । ( द्वि० त्रै० रि० )

नाम—( ३८०१ ) रामगुलाम राम जायसवाल, जमोर, गया ।

जन्म-काल—स० १९३२ ।

ग्रंथ—( १ ) रामगुलाम-शब्द कोश, ( २ ) शकुनावली-रामायण,  
 ( ३ ) नाम-रामायण, ( ४ ) पैसा प्रताप-पचासा ।

नाम—( ३८०२ ) रामनारायण ( प्रेमेश्वर ) भाट, बछ्छ-  
 रावों, जिला रायवरेली ।

जन्म-काल—स० १९३२ ।

ग्रंथ—प्रेमेश्वर विरद-दर्पण ।

नाम—( ३८०३ ) रामलगनलाल ( छेम ) कायस्थ, मदरा,  
 जिला राजीपुर ।

जन्म-काल—स० १९३२ ।

ग्रंथ—( १ ) विनय-पचीसी, ( २ ) शंकर-पचीसी । ( द्वि० त्रै० रि० )

नाम—( ३८०४ ) लज्जाशंकर झा बी० ए०, जबलपुर ।

जन्म-काल—स० १९३२ के लगभग ।

ग्रंथ—( १ ) साहित्य-सरोज, ( २ ) शाब्दोपयोगी पाठ्य पुस्तकें ।

विवरण—भाषा गुजरता प्राण्य है । मध्य प्रादेशिक शिक्षा विभाग के एक प्रसिद्ध पुरुष है । स्थानीय ट्रेनिंग-कॉलेज के भाषा उच्च काल तक प्रिंसिपल रह चुके हैं, और इस समय यहाँ मॉडल हाईस्कूल के हेडमास्टर हैं ।

नाम—( ३८०५ ) श्रीलालजी टेंडू, आगरा ।

ग्रंथ—( १ ) सस्कृत प्रवेशिनी, ( २ ) विनदत्त-चरित्र, ( ३ ) सुभाषितरत्न सदोह टीका, ( ४ ) पारवनाथ चरित्र, ( ५ ) गौभट-सार ।

विवरण—पद्मावती पुरवाज के सपादक ।

नाम—( ३८०६ ) शंकरप्रसाद, माधवगढ़, राज्य रोवाँ ।

जन्म-काल—स० १९३२ ।

नाम—( ३८०७ ) हरनदनलाल शुक्ल 'हरिनद', भगवतपुर, जिला कानपुर ।

जन्म-काल—स० १९३२ ।

कविता-काल—स० १९२७ ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ( अप्रकाशित ) ।

समय—संवत् १९५८

नाम—( ३८०८ ) किरानलाल बी० ए० घोसवाल, दरवार जोधपुर ।

जन्म-काल—स० १९३३ ।

ग्रंथ—मारवाड़-मरोड़ ( साहित्य ) ।

नाम—( ३८०९ ) केशवप्रसाद ब्राह्मण, सिसौडी, लखनऊ ।

तहाँ करै को बखान प्रखै भान की समान,  
जहाँ चँदी भौंह तान भूमि भारी किरवान ।  
( जगद्वय-यशावली से )

कोटिन रतो को रूप वारति तिनूका तोरि,  
कोरि पूनो सरद सुधाधर गनै नहीं ;  
बिकस्यो विभाति कोरि थरष अनत कज,  
सौरभित सोऊ नेऊ श्रावत मनै नहीं ।  
रमा उमा सारदापि सुदरी समटि सब,  
यशराज ताहु पर उपमा मनै नहीं ;  
कोमल धरू को मुख हेरि-हेरि कौसला सों  
शौसला के मारे फटू बोलत बनै नहीं ।  
( रामायण-भाषा से )

नाम—( ३८०० ) युगल माधुरी ।

ग्रंथ—मानसमातदमाला । ( द्वि० प्रे० रि० )

नाम—( ३८०१ ) रामगुलाम राम जायसवाल, जमोर, गया ।

जन्म-काल—स० १९३२ ।

ग्रंथ—( १ ) रामगुलाम-शब्द कोश, ( २ ) शकुनावली-रामायण,  
( ३ ) नाम-रामायण, ( ४ ) पैसा प्रताप पचासा ।

नाम—( ३८०२ ) रामनारायण ( प्रेमेश्वर ) भाट, बछ-  
रावाँ, जिला रायबरेली ।

जन्म-काल—स० १९३२ ।

ग्रंथ—प्रेमेश्वर विरद-दर्पण ।

नाम—( ३८०३ ) रामलगनलाल ( छेम ) कायस्थ, मदर्ग,  
जिला रायबरेली ।

जन्म-काल—स० १९३२ ।

ग्रंथ—( १ ) विनय पचीसी, ( २ ) शंकर-पचीसी । ( द्वि० प्रे० रि० )



नाम—( ३८०४ ) लज्जाशंकर भा वी० ए०, जबलपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३२ के लगभग ।

प्रथ—( १ ) साहित्य-सरोज, ( २ ) शाब्दोपयोगी पाठ्य पुस्तकें ।

विवरण—आप गुजराती ब्राह्मण हैं । मध्य प्रादेशिक शिक्षा विभाग के एक प्रसिद्ध पुरुष हैं । स्थानीय ट्रेनिंग-कॉलेज के आप कुछ काल तक मिनिपल रह चुके हैं, और इस समय यहीं मॉडल हाईस्कूल के हेडमास्टर हैं ।

नाम—( ३८०५ ) श्रीलालजी टट्ट, आगरा ।

प्रथ—( १ ) संस्कृत प्रदेशिनी, ( २ ) जिनदत्त चरित्र, ( ३ ) सुभाषितरत्न सदोह टीका, ( ४ ) पारशनाथ चरित्र, ( ५ ) गौभट्ट-सार ।

विवरण—पद्मावती पुरवाल के संपादक ।

नाम—( ३८०६ ) शंकरप्रसाद, माधवगढ़, राज्य सीवों ।

जन्म-काल—सं० १९३२ ।

नाम—( ३८०७ ) हरनन्दनलाल शुक्ल 'हरिनन्द', भगवतपुर, जिला कानपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३२ ।

कविता-काल—सं० १९५७ ।

प्रथ—स्फुट कविताएँ ( अप्रकाशित ) ।

समय—संवत् १९५८

नाम—( ३८०८ ) किशनलाल वी० ए० ओसवाल, दरवार जोधपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३३ ।

प्रथ—मारवाड़-भरोड़ ( साहित्य ) ।

केशवप्रसाद ब्राह्मण, सिसौड़ी, बालासोर ।

जन्म-काल—स० १९३३ ।

नाम—( ३०१० ) कृष्णकुमारलाल ।

जन्म-काल—स० १९२८ ।

रचना-काल—स० १९२८ ।

प्रथ—कई जिले, पर छप न सके ।

विरण—बाँसडीह, बलिया निवासी सज्जन सदाचारी पुरुष तथा हिंदी, फ़ारसी के विद्वान् पर पुराने लेखक । 'भारत मित्र', 'विश्व वंधु' आदि मार्चीन पत्रों में लिखते थे । अब भी कभी-कभी कुछ लिख देते हैं ।

नाम—( ३८११ ) चुनोलाल मिश्र, मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० १९२६ ।

कविता-काल—स० १९२८ ।

प्रथ—स्फुट कविता ।

विरण—भाय माधुर चतुर्वेदी ब्राह्मण प० पुरुषोत्तमबाबजी मिश्र के पुत्र हैं । भायको कविता भाय 'चतुर्वेदी' पत्रिका में प्रकाशित हुआ करती है ।

उदाहरण—

गिरि कानन कामद रूप धरौ सरिता सर सोहत उज्ज्व ही ;  
दमगे फल-फूल उड़ाइन सौं झुकि झूमि रहे धिति मज्ज्व ही ।  
अलि पुजन गुंजन गँजि रहौं कल कोकिल कीर कुलाहल ही ;  
सविता-कल-मंथन हेरन को मुरझानी लता फिरि ते उज्ज्व ही ।

नाम—( ३८१२ ) गोकुलानंदप्रसाद फायरथ, मानपुरा,  
मुजफ्फरपुर ।

जन्म-काल—स० १९३३ ।

प्रथ—( १ ) कमला-सरस्वती, ( २ ) पवित्र जीवन, ( ३ ) मोती,  
( ४ ) गार्हस्थ्य जीवन, ( ५ ) भक्ति-भेंद, ( ६ ) सिंहावलोकन ।

विवरण—सपादक आत्म विद्या ।

नाम—( ३८१३ ) गोरेलाल ( मजु मुशौल ) कायस्थ, ददरी, सागर ।

प्रथ—सुष्ट समस्या-पूर्ति ।

जन्म-काल—सं० १६३८ ।

मृत्यु-काल—सं० १६६२ ।

विवरण—कुछ दिन खशमा पत्रिका, गया क सपादक रह ।

नाम—( ३८१४ ) ज्वालाप्रतापसिंह ( लाल ), पन्नाकोटा, राज्य सिगरीला ।

जन्म-काल—सं० १६३३ ।

प्रथ—( १ ) पावस प्रेम-तरंग, ( २ ) वसत वि गोष, ( ३ ) प्रेम बिंदु, ( ४ ) वैरन पसत ।

नाम—( ३८१५ ) देवासहाय ब्राह्मण, ( मृत ) ।

प्रथ—गद्य-लेखक ।

नाम—( ३८१६ ) धनीराम शुक्ल, सुकलन पुरवा, जिला लखनऊ ।

जन्म-काल—सं० १६३३ ।

प्रथ—सुकुट कविता तथा समस्या-पूर्ति ।

नाम—( ३८१७ ) धर्मराज मिश्र, शिवपुर, दियर, जिला धलिया ।

प्रथ—रसिक-मोहन ।

नाम—( ३८१८ ) नारायणलाल ( रसलोन ), गोस्वामी घारी, राज्य रीवाँ ।

जन्म-काल—सं० १६३३ ।

प्रथ—धीकृप्याष्टक ।

नाम—( ३८१३ ) उक्सराम पाडेय ( हल्दी निवासी )  
'सुजान कवि' ।

पं० उक्सरामजी पाडेय की कविता ललित है । आपने ७ प्रथम रचे ।  
( १ ) सं० १९२८ में बना हुआ तन्मयादश पृष्ठ ३० का प्रथम  
पद्यमय शृंगार-रस से परिपूर्ण है । ( २ ) श्रीकृष्णचंद्राभरण अलंकार  
प्रथम पृष्ठ १४० का भी पद्यमय है । यह प्रथम ही सं० १९२८ का  
रचा हुआ है । ( ३ ) कमलानन्दविनोद पृष्ठ १२४ का है । यह  
पद्यमय प्रथम भा सं० १९२८ का रचा हुआ है । ( ४ ) राधाकृष्ण  
विनाय १९६० के संवत् में बना हुआ २४६ पृष्ठा का प्रथम है ।  
इसके अतिरिक्त ( ५ ) रुक्मिणी उद्वाह पृष्ठ २४, ( ६ ) सद्गुपदेश  
मालिनी पृष्ठ २० और ( ७ ) श्रीरामस्वरभूषण पृष्ठ १०६  
( अलंकार-प्रथम ) भी आपने रचे । य तीनों प्रथम सं० १९६० में  
ही बने । कृष्णचंद्र चंद्रिका सं० १९२० में रची गई ( द्वि० त्रि० रि० ) ।  
आपने समस्या-पूर्ति में बहुतेरे छंद उनाए । आप एक सुकवि थे ।  
समस्या पूर्ति के बहुतेरे छंद देखने में आए हैं ।

नाम—( ३८२० ) जनवारीलाल वैश्य, जबलपुर ।

प्रथम—( १ ) पारहमाणा, ( २ ) जनवारा-कला ।

जन्म-काल—सं० १९३३ ।

नाम—( ३८२१ ) मंगलीलाल कायस्थ, पेंतेपुर, बाराबंकी ।

प्रथम—( १ ) मंगलकोष, ( २ ) विनय चंद्रिका, ( ३ ) कृष्णप्रिया ।

नाम—( ३८२२ ) रणजीतमल्ल ( श्याम ), मगधौली ।

जन्म-काल—सं० १९३३ ।

विवरण—महाराज मन्गीली उदयनारायणसिंह के भाई थे ।

नाम—( ३८२३ ) राजधरलाल ( रात्र ), नृसिंहपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३३ ।

ग्रथ—( १ ) विनयपचीर्सी, ( २ ) हनुमान-पेंतीसा, ( ३ ) भगवद्गीता का अनुवाद भाषा ।

नाम—( ३८२४ ) रामशरण गुप्त 'शरण' वी० ए०, जोधपुर ( मारवाड़ ) ।

कविता-काल—सं० १६६८ ।

ग्रथ—(१) पतिव्रतादर्श ( दमयन्ता ), ( २ ) शरणेश विनय, ( ३ ) शरणेश देशोद्धार, (४) शरण प्रेमोद्धार, (५) शरण-कौतूहल ( अनुवाद ), ( ६ ) मातृ-व्रदना ( अनुवाद ), ( ७ ) शरणोन्निमाला, ( ८ ) शरण-विचारमाला ( गद्यमाला ), ( ९ ) शरण गल्पमाला, ( १० ) शरणो-ल्लेख, ( ११ ) मित्र गडली ( उपन्यास ), ( १२ ) वैदिक धर्म, ( १३ ) सस्कृतानुवाद ( पाठशालोपयोगी पुस्तक ) ।

विवरण—आप श्रीयुक्त गान्धू ललिताप्रसादजी के पुत्र तथा लाला विहारीलालजी के पौत्र हैं। हिंदी-साहित्य में आपको अपनी वाक्यावस्था से ही रचि थी ।

ऊपर दिष्ट हुए शरणोल्लेख-नामक ग्रथ में अपने आत्मजीवन चरित्र पर लिख रहे हैं। वास्तव में आपका मुख्य निवास-स्थान बामोली, जिला अर्लीगढ़ है, किंतु हम समय आप जोधपुर में हेडमास्टर के पद पर होने से वहीं रहते हैं ।

समय—संवत् १६५६

नाम—( ३८२५ ) केदारनाथ, वस्तर-स्टेट ।

जन्म-काल—स० १६३४ ।

रचना-काल—स० १६६६ ।

ग्रथ—( १ ) विपिन विज्ञान, ( २ ) वस्तर-भूषण, ( ३ ) वसत-विनोद, ( ४ ) मैथिलवश वार्ता, ( ५ ) थीसत्यनारायण ।

नाम—( ३८२६ ) गोविंददास ( दास ), रंगार, छतरपुर ।

गाम—( ३८११ ) बन्सराम पांडेय ( हल्दी निवासा )  
'मुजान कवि' ।

पं० बन्सरामजी पांडेय की कविता ललित है । आपने ७ प्रथम रच ।  
( १ ) सं० १९२८ म बना हुआ तन्मयादश पृष्ठ ३० का प्रथम  
पद्यमय अंगार-रम से परिपूर्ण है । ( २ ) श्रीकृष्णचंद्राभरण अलंकार  
प्रथम पृष्ठ १४० का भी पद्यमय है । यह प्रथम भा सं० १९२८ का  
रचा हुआ है । ( ३ ) कमलानदविनोद पृष्ठ १२८ का है । यह  
पद्यमय प्रथम भी सं० १९२८ का रचा हुआ है । ( ४ ) राधाकृष्ण  
विजय १९६० के संवत् में बना हुआ २४६ पृष्ठा का प्रथम है ।  
इनके अतिरिक्त ( ५ ) रविमण्डिता उद्वाह पृष्ठ २४, ( ६ ) सदुपदेश  
मालिका पृष्ठ २० और ( ७ ) श्रीरामेश्वर भूषण पृष्ठ १०६  
( अलंकार प्रथम ) भी आपने रचे । य तीनों प्रथम सं० १९६० में  
ही बने । कृष्णचंद्र चंद्रिका सं० १९२० में रची गई ( दि० प्रे० रि० ) ।  
आपने समस्या-पूर्ति में बहुतेरे छंद बनाए । आप एक सुकवि थे ।  
समस्या पूर्ति के बहुतेरे छंद देखने में आए हैं ।

नाम—( ३८२० ) जनवारीलाल वैश्य, जयलपुर ।

प्रथम—( १ ) बारहमासा, ( २ ) बनगारा-कला ।

जन्म-काल—सं० १९३३ ।

नाम—( ३८२१ ) भगलीलाल कायस्थ, पेंतेपुर, बाराबंकी ।

प्रथम—( १ ) भगलकोष ( २ ) विजय चंद्रिका, ( ३ ) कृष्णप्रिया ।

नाम—( ३८२२ ) रणजीतमल्ल ( श्याम ), मन्हीली ।

जन्म-काल—सं० १९३३ ।

विपरण—महाराज मन्हीली उदयनारायणसिंह के भाई थे ।

नाम—( ३८२३ ) राजधरलाल ( राज ), नृसिंहपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३३ ।

ग्रथ—( १ ) विनयपचीसी, ( २ ) हनुमान-चैतीया, ( ३ ) भगवद्गीता का अनुवाद भाषा ।

नाम—( ३८२४ ) रामशरण गुप्त 'शरण' धी० ए०, जोधपुर ( मारवाड़ ) ।

कविता-काल—स० १६५८ ।

ग्रथ—(१) पतिव्रतादर्श ( दमयती ), ( २ ) शरणेश विनय, ( ३ ) शरणेश दसोद्धार, (४) शरण प्रेमोद्धार, (५) शरण-कौतूहल ( अनुवाद ), ( ६ ) मातृ-वदना ( अनुवाद ), ( ७ ) शरणाग्निमाला, ( ८ ) शरण-विचारमाला ( गद्यमाला ), ( ९ ) शरण-माल्यमाला, ( १० ) शरणो-ल्लेख, ( ११ ) मित्र मङ्गली ( उपन्यास ), ( १२ ) वैदिक धर्म, ( १३ ) सस्कृतानुवाद ( पाश्चालोपयोगी पुस्तक ) ।

विवरण—आप श्रीयुत गान्धर्व ललिताप्रसादनी के पुत्र तथा लाजा विहारीलालनी के पौत्र हैं । हिंदी साहित्य में आपको अपनी मातृवावस्था से ही रचि थी ।

ऊपर दिष्ट हुए शरणोल्लेख-नामक ग्रथ में अपने आत्मजीवन चरित्र पर लिख रहे हैं । वास्तव में आपका मुख्य निवास स्थान यामोली, जिला अलीगढ़ है, किंतु इस समय आप जोधपुर में हेडमास्टर के पद पर होने से यहीं रहते हैं ।

समय—संवत् १९५६

नाम—( ३८२५ ) फेदारनाथ, वस्तर स्टेट ।

जन्म काल—स० १६३४ ।

रचना-काल—स० १६५६ ।

ग्रथ—( १ ) विपिन विज्ञान, ( २ ) वस्तर-भूषण, ( ३ ) वसंत-विनोद, ( ४ ) मैथिलवश गर्ता, ( ५ ) श्रीसत्यनारायण ।

नाम—( ३८२६ ) गोविंददास ( दास ), खगार, छतरपुर ।

जन्म-काल—सं० ११३४ । ( मृत )

प्रथ—( १ ) दाता की सैर, ( २ ) पेट-चपेट, ( ३ ) स्वदेय-सेवा,  
( ४ ) काम्य और लोक-शिक्षा, ( ५ ) प्रेम, ( ६ ) बुद्धलक्ष-रथमाळा,  
( ७ ) सभा माहात्म्य, ( ८ ) नगर जाति का इतिहास ।

नाम—( ३८२७ ) चतुर्भुजसहाय नायक, छतरपुर ।

जन्म-काल—सं० ११३४ ।

प्रथ—( १ ) लंके घुँघुवाला ( पृ० १२२ ), ( २ ) बाबू ताराचंद  
( पृ० १७६ ) ( ११६३ ) उपन्यास गद्य, ( ३ ) धीबी हर्मीदा  
( पृ० १८२ ) ( ११६४ ) उपन्यास गद्य, ( ४ ) मंत्री हरिरथद  
( पृ० ६० ) ( ११६५ ) ( द्वि० प्र० रि० ), ( ५ ) मधु मालता ।

विवरण—आपने हिंदी पालकपन से ही अच्छी लगती थी ।  
अब भी उसी की सेवा में आपका बहुत समय व्यतीत होता है ।

नाम—( ३८२८ ) द्वारिकाप्रसाद ब्राह्मण, योंदा ।

जन्म-काल—स० ११३४ ।

प्रथ—शास्त्रार्थ-विद्वान् ।

नाम—( ३८२९ ) ब्रह्मानन्द सन्यासी ( मृत ) ।

जन्म-काल—स० ११३४ ।

प्रथ—सुशीलादेवी ( उपन्यास ) ।

नाम—( ३८३० ) महावीरप्रसाद नायक, कन्नपुर ।

प्रथ—हैरथ भक्ति, स्त्री जीवन-सुधार ।

नाम—( ३८३१ ) राजेंद्रप्रतापनारायणसिंह, हल्दी ।

जन्म-काल—स० ११३४ ।

प्रथ—पावस प्रलाप ।

नाम—( ३८३२ ) रामगोपाल मिश्र ।

जन्म-काल—स० ११३६ ।

रचना-काल—स० ११३६ ।



प्रथ—( १ ) पतिप्रतापाख्यान, ( २ ) ईश्वर-प्रार्थना, ( ३ ) त्रिकाल-सभ्या, ( ४ ) प्रेम-तरु, ( ५ ) अग्निहोत्र विधि ।  
वियरथ—पिपरिया चाँदोरी, जिब्बा भंडारा निवामी ।

उदाहरण—

मतसग में जा सतगया से पूछ लो तुम कीन हो ;  
जा तरयरा योगियों से पूछ लो तुम कीन हो ।  
गुरुदेव के उपदेश द्वारा जान लो तुम कीन हो ;  
त्रिज्ञान से कर तर साधन मान लो तुम कीन हो ।

नाम—( ३८३३ ) रामदयाल कायस्थ, बेलसोड़ा, जवलपुर ।

जन्म काल—स० १६३४ ।

प्रथ—( १ ) तिथिरामायण, ( २ ) कृष्ण चरित्र, ( ३ ) सुदर्भ-विचार, ( ४ ) भागवत-भावात्म्य, ( ५ ) हित की बातें, ( ६ ) पिप्रसेतु-कथा, ( ७ ) ज्ञानोपदेश वारहमासी, ( ८ ) दीन विनयपचासा, ( ९ ) ज्ञान प्रस्तावरी, ( १० ) सप्रह-शतक ।

नाम—( ३८३४ ) सीताराम प्राक्षण, पिजामावादा, जिला  
आजमगढ़ ।

जन्म-काल—स० १६३४ ।

प्रथ—स्फुट फविता ।

नाम—( ३८३५ ) सु दरलाल ( श्याम ), घोंदा ।

जन्म-काल—स० १६३४ ।

नाम—( ३८३६ ) हनुमानप्रसाद त्रिपाठी, शिउली, कानपुर ।

जन्म-काल—सं० १६३४ ।

प्रथ—( १ ) वेदशास्त्र तालिका, ( २ ) दश धम ब्रह्मण-व्याख्या,  
( ३ ) इशत-सागर, ( ४ ) पापप्रध्वसिनी, ( ५ ) हनुमानचावलीसा,  
( ६ ) मज-दोष दर्पण, ( ७ ) छुआछूत ।

नाम—( ३८३७ ) हरिवंशदीन ।

विवरण—आप नागौर ( बीकानेर ) के महत हैं ।

नाम—( ३८५० ) चाँदसिंह विशारत, बीकानेर ।

विवरण—आप हिंदी-नाथ तथा पद्य दोनो लिखा करते हैं । -

नाम—( ३८५१ ) चिरजीलाल शर्मा, अल्मोडा ।

विवरण—हिंदी के आशु-कवि श्रीर गद्य-लेखक हैं ।

नाम—( ३८५२ ) चपाराम मिश्र, रायचहादुर, बी० ए०,  
मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० १९३५ ।

कविता-काल—स० १९६० ।

प्रथ—( १ ) लीलावती की भाषा टीका, ( २ ) तुलसीदास-श्रुत  
कवित्त-नामायण पर टिप्पणियाँ, ( ३ ) रघुनाथ शिकार ( प्राचान  
प्रथ ) का संपादन ।

विवरण—आप प० खड्गजातजी मिश्र के छोटे भाई हैं । यह  
द्विपुत्री-डाइरेक्टर ऑफ़् इन्स्टीट्यूट रह चुके हैं । ठाकुर कवि-वृत्त  
विहारी-सतसई की टीका का आपने संपादन किया है । इस काल  
आपछतरपूर रियासत के दीवान हैं ।

नाम—( ३८५३ ) छवीलेलाल गोस्वामी ।

जन्म-काल—स० १९४३ ।

गद्य लेखक ( गल्प ), पद्य पुष्प, पद्य पराग, पद्य-कलिका, पद्य  
पल्लव, पद्य मजरिका एवं जावित्री प्रकाशित हो चुकी हैं ( पृष्ठ  
संख्या कुल मिलाकर प्राय ३०० ) ।

विवरण—आप प० किशोरीलालजी गोस्वामी के पुत्र हैं । देश प्रेम  
के कारण आप कुछ काल जेल भी भुगत चुके हैं । आप मथुरा के  
मासिक पत्र 'मोहन' तथा अवाले के 'प्राज्ञ' के संपादक रह चुके  
हैं । इन्होंने वृ दावन-म्युनिसिपैलिटी में हिंदी का प्रचार किया ।

नाम—( ३८५३ ) छ्त्रवीले गोस्वामी, फ़तेहपुर ।

नाम—( ३८५४ ) जगपालसिंहजी ठाकुर, बीकानेर ।

ग्रंथ—महाराज पृथ्वीराज-चरित्र-बेल्जि ( काव्य ग्रंथ ) की टीका ।

विवरण—आप बीकानेर के राजपूत रत्न हैं । आपका उक्त ग्रंथ अभी अमकाशित है ।

नाम—( ३८५६ ) जनार्दन या 'जनसीदन', वाजीतपुर, मुजफ्फरपुर ।

जन्म-काल—लगभग स० १३२६ ।

रचना काल—लगभग स० १३६० ।

ग्रंथ—( १ ) चरित्र-गटन, ( २ ) पुरुष परीक्षा आदि ।

विवरण—आपने कुछ काल तक 'सरस्वती' के संपादकीय विभाग में काम किया है । प्राय ६० ६५ ग्रंथों का आपने अनुवाद किया है ।

नाम—( ३८५७ ) जुगलकिशोर जैन ।

ग्रंथ—( १ ) आर्य मत लीला, ( २ ) पूजाधिकार मीमांसा, ( ३ ) विवाह का उद्देश्य ।

विवरण—देवबंद, जिला महारनपुरवाली अमवाह जैन । जैन धर्म एवं साहित्य के आप प्रसिद्ध समालोचक हैं ।

नाम—( ३८५८ ) ज्योति स्वरूप शर्मा, गभोरपुरा, अलीगढ़ ।

ग्रंथ—( १ ) ऋषि-चरित्रिका, ( २ ) सदाचार, ( ३ ) धर्म-रक्षा आदि प्राय ३० ग्रंथ लिखे हैं ।

नाम—( ३८५९ ) ज्वालादत्त शर्मा, मुरादाबाद ।

ग्रंथ—प्रायश्चित्तादयः ।

नाम—( ३८६० ) ज्वालादेवी ।

ग्रंथ—स्त्री शिक्षा-संबंधी कई ग्रंथ ।

विवरण—आप डॉक्टर रामचंद्र की धर्मपत्नी हैं ।

नाम—( ३८६१ ) देवीप्रसाद उपाध्याय ।

ग्रन्थ—सुन्दर सरोत्तिनी उपन्यास ।

विवरण—आप राज्य रामनगर, घपारन के दीवान हैं ।

नाम—( ३८६२ ) पन्नालाल वाकलीवाल ।

ग्रन्थ—( १ ) नानाणव, ( २ ) स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा ।

विवरण—आप सुगानगढ़ बीकानेर निवासी त्रिदेलवाल जैन हैं, तथा खड्डेनवाल जैन हितैषी के सपादक हैं ।

नाम—( ३८६३ ) प्रभू दान पारण, मारवाड़ ।

विवरण—आश्रयदाता महाराजा असयतसिंह ।

नाम—( ३८६४ ) प्रयागनारायण मिश्र, लग्नऊ ।

ग्रन्थ—( १ ) वशीशतक, ( २ ) मनोरमा, ( ३ ) राघव माल, ( ४ ) मनुकाव्य ।

नाम—( ३८६५ ) प्रियाअली टोडी ।

जन्म-काल—स० १८३५ ।

ग्रन्थ—हितरू के विनय के पद ।

विवरण—सधावल्लभी ।

नाम—( ३८६६ ) यतोलो उपाध्याय ।

रचना-काल—स० १८६५ के पूर्व ।

ग्रन्थ—दाक्षा त्रयध ।

विवरण—समथरवासी ।

नाम—( ३८६७ ) बैजनाथसिंह 'इन्दु', काशीपुर, जिला उत्तरांचल ।

जन्म-काल—स० १८३५ ।

रचना-काल—अनुमानत स० १८६० ।

ग्रन्थ—सुकुट रचनाएँ ।

विवरण—आप कवि क्षमापति-चन्द्रिकाप्रसादसिंहजी ( न०

२१७६) के छोट भाइ तथा धीपुत्र परशूर्तिदत्तजी के पुत्र हैं।  
[ फु० पार्ष्णिह छत्रिय, पिपरसठ ( जिला लगनऊ ) द्वारा  
ज्ञात ]

नाम—( ३०६८ ) मनोहरप्रसाद 'चित', पाठरूपुर, जिला  
उत्तरांच।

जन्म-काल—लगभग सं० ११३१।

रचना-काल—लगभग सं० ११६०।

विवरण—आपने या ग्रंथ बनाए हैं, पुस्तक श्रीपार्ष्णिह छत्रिय,  
पिपरसठ ( लगनऊ ) का कथन है।

नाम—( ३०६९ ) माधवदास स्वामी, नागौर।

ग्रंथ—( १ ) राम-कीर्ति-सागर ( महाकाव्य ), ( २ ) भगवद्-  
गीता का पद्यात्मक भाषांतर।

विवरण—आप सं० लगभग ११३१, श्रीकानेर के भाई हैं,  
ऐसा कहा जाता है। यह महाकाव्य महकृत तथा हिंदी के अच्छे  
ज्ञाता हैं।

नाम—( ३०७० ) राधेग्यान नगरी एडवर्ड हिंदी पुस्तकालय,  
हाथरस।

जन्म-काल—सं० ११३२।

ग्रंथ—स्फुट छंद पद्य लेख।

नाम—( ३०७१ ) रामनारायण पांडेय कान्यकुब्ज, पेंतेपूर,  
जिला सीतापूर।

जन्म-काल—सं० ११३६।

रचना-काल—सं० ११६०।

ग्रंथ—( १ ) जैमिनिपुराण ( आक्षेप ), ( २ ) जन खुनाय  
जीवन चरितामृत, ( ३ ) रामारामा शतक।

विवरण—अच्छी कविता की है। काव्य के बड़े उत्साही हैं।

हमने परलोकवासी मंगलदासजी के नाम काई भजा था, एवं आपने उसका उत्तर और १४ कवियों का जीवन - चरित्र तथा एक श्रवण गुरंत हमारे पास भेजे ।

उदाहरण—

आड़े राम काड़े कटि काढ़नी पितवर की,  
पाड़े कछु दखिन सा लच्छन लसे रहै ;  
साहै उर धनमाल मोतिन की माल पुनि,  
भाल पै तिलक झुति कुबल रसे रहै ।  
सुखमा सुकुट सीस सरसै कलित कंठ,  
कठ हू ललित कल कौतुक कसे रहै ;  
धारे धनु मान अरि मान के मधन वारे,  
जानकी समेत मरे मानस बसे रहै ।

नाम—( ३८७२ ) रामलाल नीमनिहार, बलिया ।

जन्म-काल—सं० १९३५ ।

प्रथ—शमु-पचासी ।

नाम—( ३८७३ ) रामलाल ग्रामा, मैनपुरी ।

प्रथ—स्फुट कविता ।

विवरण—आप स्थानाय स्कूल के प्रधानाध्यापक थे, और परचाद वतमान मैनपुरी नरेश के यहाँ रह ।

नाम—( ३८७४ ) लक्ष्मीनारायण, दतिया ।

जन्म-काल—सं० १९३५ ।

प्रथ—द्वितीया का प्रागट्य स्फुट छंद ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—( ३८७५ ) लालारामजी शास्त्री ।

प्रथ—( १ ) आदि-पुराण, ( २ ) उत्तर पुराण, ( ३ ) धर्म प्रदीप,  
( ४ ) भाष्य-आचार, ( ५ ) तथ्यानुशासन, ( ६ ) चरित्र-सार,

७) शातिनाथपुराण, ( ८ ) धृतावतार कथा, ( ९ ) दृष्टोपदेश,  
( १० ) पौंड्र सस्कृत-विधि ।

विवरण—आप 'जैन गहट' के सहायक संपादक हैं ।

नाम—( ३८७६ ) श्रीपालचंद्र यति ।

रचना-काल—सं० १९६२ के पूर्व ।

ग्रंथ—जैन-संस्कृत शिक्षा ।

विवरण—बीकानेर-निवासी ।

नाम—( ३८७७ ) श्रीराम नेत ( रायसाहब ) ।

ग्रंथ—( १ ) सार्थी शिला-लेख व ताम्रपत्र, ( २ ) राज्य घोरछा,

( ३ ) बु देल-यश-यणन, ( ४ ) बु देला राज्य की समाजोचना, ( ५ )

इतिहास घोरछा, ( ६ ) प्राचीन भारत ।

विवरण—आप रियासत विचार के दीवान तथा हमार मित्र थे ।

नाम—( ३८७८ ) सतदास ।

जन्म-काल—सं० १९३२ ।

ग्रंथ—( १ ) वृहदृष्ट्याम, ( २ ) सेवाशतक, ( ३ ) मानसी

भावना, ( ४ ) राधा-सुधा निधि की टीका ।

विवरण—राधावल्लभी प्रसिद्ध महात्मा ।

नाम—( ३८७९ ) सूर्यकुमार वर्मा, भदौरिया ।

जन्म-काल—सं० १९३२ ।

ग्रंथ—( १ ) अशोक का जीवन चरित्र, ( २ ) बाल भारत,

( ३ ) गारक्रीड, ( ४ ) धर्मपद, ( ५ ) मित्र-लाभ ।

विवरण—ग्वालियर में राजकर्मचारी हैं ।

नाम—( ३८८० ) हरिहरप्रसाद परिव्राजकाचार्य ।

ग्रंथ—( १ ) तुलसीदासभास्कर, ( २ ) तिलकतप ।

नाम—( ३८८१ ) हरीराम उस्ताद, मैनपुरी ।

संस्कृत-काल—लगभग सं० १९७६ ।

हमने परलोकवासी भगलदासजी के नाम कार्य भेजा था, एवं आपने उसका उत्तर और १४ कवियों का जीवन - चरित्र तथा रच-हरण तुरंत हमारे पास भेजे ।

उदाहरण—

आजे राम काष्ठ कटि काछनी पितपर फी,  
पावे षष्ठु दखिन सा लच्छन बसे रहै ;  
साह उर बनमाल मोतिन की माल पुनि,  
भाल वै तिजक भुति फुटल रसे रहै ।  
सुस्वमा मुकुट सीस सरसै कलित कंठ,  
कूठ हू ललित कल कौतुक बसे रहै ;  
धारे धनु मान अरि मान के मधन वारे,  
जानकी समेत मंर मानस बसे रहै ।

नाम—( ३८७० ) रामलालजी मनिहार, बलिया ।

जन्म-काल—स० १६३५ ।

प्रथ—शत्रु-पचासी ।

नाम—( ३८७३ ) रामलाल ग्रामा, मैनपुरी ।

प्रथ—स्फुट कविता ।

विवरण—आप स्थानीय स्वयंसेवक के प्रधानाध्यापक थे, और परबाद-वतमान मैनपुरी नरेश के यहाँ रहें ।

नाम—( ३८७४ ) लक्ष्मीनारायण, दतिया ।

जन्म-काल—स० १६३५ ।

प्रथ—द्वितीया का प्रागट्य स्फुट छंद ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—( ३८७५ ) लालारामजी शास्त्री ।

प्रथ—( १ ) आदि पुराण, ( २ ) उत्तर पुराण, ( ३ ) धर्म प्रश्नो-त्तर, ( ४ ) भावकाचार, ( ५ ) तन्त्रानुशासन, ( ६ ) चरित्र-साह-



७) शातिनायपुराण, ( ८ ) ध्रुतावतार कथा, ( ९ ) इष्टोपदेश,  
१०) पौद्गल सस्कार विधि ।

विवरण—आप 'जैन गज़ट' के सहायक संपादक हैं ।

नाम—( ३८७६ ) श्रीपालचंद्र यति ।

रचना-काल—सं० १६६२ के पूर्व ।

प्रथ—जैन-सम्प्रदाय शिक्षा ।

विवरण—बीकानेर निवासी ।

नाम—( ३८७७ ) श्रीराम नेत ( रायसाहब ) ।

प्रथ—( १ ) सँची शिला लेख व ताम्रपत्र, ( २ ) राज्य श्रोरद्धा,

( ३ ) उ देल-वश वणन, ( ४ ) यु दत्ता राज्य की समालोचना, ( ५ )

इतिहास श्रोरद्धा, ( ६ ) प्राचीन भारत ।

विवरण—आप रियामत बिजावर के दीरान तथा हमारे मित्र थे ।

नाम—( ३८७८ ) सतवास ।

जन्म काल—सं० १६३२ ।

प्रथ—( १ ) बृहदष्ट्याम, ( २ ) सेवाशतक, ( ३ ) मानसी

भावना, ( ४ ) राधा-सुधा निधि की टीका ।

विवरण—राधावल्लभी प्रसिद्ध महात्मा ।

नाम—( ३८७९ ) सूर्यकुमार वर्मा, भदौरिया ।

जन्म काल—सं० १६३२ ।

प्रथ—( १ ) अशोक का जीवन चरित्र, ( २ ) याज्ञ भारत,

( ३ ) गारुडील्ल, ( ४ ) धर्मपद, ( ५ ) मित्र-लाभ ।

विवरण—ग्वालियर में राजकर्मचारी हैं ।

नाम—( ३८८० ) हरिहरप्रसाद परित्राजकाचार्य ।

प्रथ—( १ ) तुलसीदासभास्कर, ( २ ) तिलकदास ।

नाम—( ३८८१ ) हरीराम उस्ताद, मैनपुरी ।

मृत्यु-काल—लगभग सं० १६७६ ।

मध—सुकुट प्रयाल ।

विवरण—आपके रचे हुए प्रयाल प्रायः सर्वत्र गाया करते हैं ।

उदाहरण—

माया मोह कि महिमा न मस्ती चढ़ती मस्तानों को,  
मिलती है अलख सजा फिर उसे बेईमानों को ।  
उहो शास्त्र का करे मुताला बाँधें वेद-पुरानों को,  
लखी धोती पहिन-पहिन जाते गंगा-अस्नानों को ।  
भगवत में नहिं भक्ति भावना, पूजें भूत मन्तानों को ;  
निम्न नारिन का जतन कराँघें घर उल्लास के स्थानों को ।  
पेट के कारण हाग बनावे फिरते दो दो दानों को,  
मिलती है अलख सजा फिर ऐसे बेईमानों को ।

## इकतालीसवाँ अध्याय

उत्तर नूतन परिपाटी

संवत् १९६१ से १९७५ तक

उत्तर नूतन परिपाटी के समय में राजनीतिक आंदोलन का देश में बल बढ़ा । बगभग स बंगालियों को बड़ा लाभ हुआ, और भारतीय शोष प्रातों ने भी उनका साथ दिया । १९६३ में मुमबयानों का एक डेपुटेशन बड़े डाट साइव लॉर्ड मिंटो की सेवा में उपस्थित हुआ, और वहाँ से हिंदुधर्म के प्रतिभूल मुस्लिम अधिकार-वृद्धि के नामले में उसे आर्यासन के वचन मिले । १९६६ ६७ में भारत सचिव लॉर्ड मार्बो ने कुछ राजनीतिक उद्यति की, तिससे देश में कुछ सात्वना हुई । १९६८ में मन्नाडू की तानपेशी का जस्ता दिल्ली में हुआ, तिममें बगभग का प्रश्न ठीक-ठीक निर्यात हो गया । बंगाल के दोनो भाग एक हो गए, किंतु बिहार बंगाल से अलग हो

गया। बंगालिया को बिहार से बहुत लाभ था, क्योंकि दोनों प्रांत एक में होने से विद्वत्ता आदि में अधिक उन्नत होने के कारण बंगाली लोग बिहार के भाग की नीकरियाँ तथा अन्य पद अधिकता से लिए हुए थे। बिहार के अलग होने से बिहारियों के साथ न्याय हुआ, जिससे वे प्रसन्न हो गए, तथा हानि सहते हुए भी अपने पक्ष की नियतता के कारण बंगाली कुछ कदम न सके। १९७१ से १९७२ तक महायुद्ध हुआ, जिसमें भारतीयों ने सरकार के पक्ष में लड़कर अर्द्धी राजभक्ति तथा शौर्य दिखाया। उस काल देश में इतनी अशांति नहीं कि भारतीयों द्वारा सरकारी सहायता के प्रतिकूल कोई आवाज़ उठाता। स० १९७२ में सरकार ने यह घोषणा की कि समय पर भारत का भी प्रतिनिधि बल पूर्ण राज्य मिलेगा। भारत-सचिव माटेग्यू साहब यह जाँच करने को आए कि उपर्युक्त घोषणा के अनुसार भारत में प्राथमिक उन्नति कितनी हो? इस प्रकार उत्तर नूतन परिपाटी काल में राजनीतिक आंदोलन आशा के कारण कुछ सधा रहा, और देश में अशांति की कमी रही। अतएव जो हिंदी-कविता इस काल बनी, उसमें अँगरेजों के प्रतिकूल कोई उद्‌घाटन नहीं, और पूर्व प्रारम्भिक समय में जो भाव प्रबल पक्ष रहे थे, वे कुछ दबे, तथा राजभक्ति के प्रतिकूल प्रभाव में कुछ विचार कम पड़े।

इस समय नूतन परिपाटी काल में बहुतेरे सुलेखक प्रस्तुत रहे, तथा अब भी हैं, एवं दो-चार सुलेखक भारत-दुःकाल के भी प्रवर्तमान हैं। चाहे उनमें उतनी कवित्व शक्ति न हो, तो भी प्राचीनता के कारण उनकी मर्यादा विशेष है, और स्वयं वे तथा अन्य मादिन्या-नुरागी उनकी महिमा कभी-कभी उचित से भी अधिक करते हैं। एक यह भी बात है कि इन प्राचीन कालों के कवियों का पूर्ण महत्ता निखर चुकी है, किंतु नवीन समयवाले रचयिताओं की कुछ गुस्ता अभी भविष्य की गोद में छिपी हुई है, क्योंकि उन्हें बुढ़ाने

होना तथा उनके सब ग्रन्थ बनना रोष है। अतएव उच्चर नूतन काव्य वाले कवियों के विषय में जो कुछ कहा जाय, उसमें कुछ अश मरिच्य की आशा का भी सम्भ्रमा चाहिए। कुछ मिलाकर इस काव्य उपन्यास, नाटक पद्य रचना आदि की वृद्धि दिखाई पसती है, तथा विविध विषयों का फैलाव अज्ज्ञा हुआ है। इस काव्य के मुख्य रचयिताओं में जयशंकरप्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, मदन द्विवेदी गजपुरी, स्वामी सत्यदेव रामद्वत्री, विरसेखरनाथ रेड, गोविंदरत्न पंत, जी० पम्० पथिक, गुलाबराय गुप्त, रामनारायण शर्मा ( १९७२ ), लार्ड्सिंह, माहनकाव्य महतो आदि गिनाए जा सकते हैं। देदाशाह सयद ( १९६२ ) तथा माहम्मद यज़ीरख़ाँ इस काल के श्रेष्ठ मुसलमान लेखक हैं। स्त्री लेखिकाओं या कवियों में मुख्यतया रानी रामप्रियात्री ( १९६२ ), यशोदास्वा ( १९६२ ), सरस्वतीदेवी ( १९६२ ), रमादेवा त्रिपाठी ( १९६६ ), रामेश्वरीदेवी नेहरू ( १९६७ ), हमतकुमारीदेवी ( १९६८ ), चंद्राबाई ( १९७० ), प्रेमकुंवरि ( १९७० ), सुभद्राकुमारी चौहान ( १९७० ) तथा रत्नावती शर्मा ( १९७२ ) के नाम इस काल आते हैं। इनमें से सुभद्राकुमारी चौहान तथा हमतकुमारीदेवी की कविता एवं गद्यों की अर्थात् प्रसिद्धि है, और रामेश्वरी नेहरू मुलेखिका अथवा संपादिका हैं। उपयुक्त द्तर देवियों की भी रचनाएँ कभी-कभी उच्च काव्य की जाती हैं। बड़े हर्ष की बात है कि हमारा स्त्री-समाज इस छूटे-से काल में इतनी कवियों साहित्य-क्षेत्र में उपस्थित कर सका। इन तथा ऐसी ही अन्य बातों से भारतवाचिता की आशा पाई जाती है। भद्रों में इस काल केवल रामजीशरणविष्याचलप्रसाद ( १९६४ ) का नाम आता है। यह समय दब भक्ति का न होकर देश-भक्ति का है। देश भद्रों तथा राजनीतिज्ञों में कालूराम द्विवेदी ( १९६२ ), स्वामी सत्यदेव ( १९६२ ), मदन द्विवेदी ( १९६२ ),

पुरपोत्रमदास टडन ( १२६२ ), रामचंद्र द्विवेदी ( १२६८ ),  
 हितैषीजी ( १२७० ) और दवीप्रसाद गुप्त ( १२७२ ) के नाम  
 इस काल में मुख्य हैं । यां तो देश भक्ति की धारा ऐसे प्राध्व्य से  
 बह रही है कि हमारे बहुत अधिक लेखक इस संख्या में आ सकते  
 हैं, फिर भी यहाँ हमने प्रति विषय के मुख्यातिष्ठस्य लोगा के नाम  
 लिखे हैं । यह मुख्यता कवि विशेष द्वारा वक्षित विषयों के अनुसार  
 मानी गई है, न कि इतरों से श्रेष्ठता के अनुसार । इनके वचन ग्रंथ  
 में दिए ही गए हैं, सो यहाँ विस्तार नहीं किया जाता है । स्वामी  
 सत्यदेव के लक्ष्य पारचात्य अनुभवा क कारण बहुत ही मनोरञ्जक  
 एवं लाभकर हैं । मदन द्विवेदी एक अपूर्व रत्न था, जो हिंदी माता  
 ने अकाल में खो दिया । इतर महाशय भी देश पर तनमो धन  
 न्योछावर किए हुए हैं । इनकी कृतियां से आत्म-त्याग तथा  
 देश प्रेम के महामग्न प्रत्येक स्थान पर प्रतिध्वनित होते हैं ।  
 इनके जीवन धन्य हैं । इन सखी सम्मतिया तथा कार्यवाहियों  
 से हम लोगा का मतैक्य न हाने पर भी इनके स्वाध त्याग पर  
 अनुराग रखना ही पड़ेगा । जैन वैद्य ( १२६२ ) भी कुछ ऐसे ही  
 महाशय मुख्यतया समाज-सुधारक थे, जो हिंदी की उन्नति पर  
 सदैव धमशील रहा करते थे । इनकी अकाल मृत्यु से रागपूताना  
 प्रांत में हिंदी प्रचार को क्षति पहुँची है । जैन वैद्यजी तथा चंद्रधर  
 शर्मा गुलेरी अपूर्व रत्न थे, जिनसे जयपुर की शोभा थी । व्याख्या  
 साध्या में जो तो उपयुक्त तथा अन्य महाशयो में अनेकानेक सज्जन  
 हैं, विशेषतया सत्यदेवजी, टडनजी आदि, किंतु मुख्यतया नदकिशोर  
 शुक्ल ( १२६२ ) और शमानंद ( १२६२ ) के नाम इस विषय  
 में कथन के योग्य हैं ।

इस काल पत्रकारों की हिंदी में योग्यता और संख्या दोनों में  
 अच्छी वृद्धि हुई । निम्न लिखित महाशयों के नाम इस विषय

में विशेषतया गिनाए जा सकते हैं—हरीकृष्ण जौहर ( १६६२ ), छाटेराम शुक्ल ( १३६० ), इन्दजी ( १६७० ) ( स्वामी ब्रह्मानन्द के सुपुत्र ), मातादीन ( १६७० ), शिवदास पाठेय ( १६७० ), लक्ष्मणभातवज्र गर्द ( १६७१ ), नमदासदा मिश्र ( १६७२ ), नारसराज ( १६७३ ), बनारसीदास चतुर्वेदी ( १६७४ ), शिवपूनामहाय ( १६७५ ) । इनमें हरीकृष्ण जौहर, इन्दजी, मातादीन शुक्ल, गदजी, बनारसीदास चतुर्वेदी तथा शिवपूजन सहाय आदि के नाम बहुत प्रसिद्ध हैं । उपयुक्त सभी महारथ पत्र-संपादन काय मुचाठ रूप से करते हैं । पुराने समय में हमारे पत्रकार लोग बहुधा धार्मिक, सामाजिक आदि विषयों में प्राचीन विचार रखने थे, किंतु अब परिष्कृत भाषा का सांभ्राज्य फैल रहा है । हमारी पत्र-संपादन कला उन्नति करती जाती है, किंतु समाज में हिंदी पत्रों का मान कई कारणों से वैसा नहीं है, जैसा अँगरेजी-पत्रों का । इससे हिंदी के मासिक, पाक्षिक आदि पत्र तो कुछ उड़ उड़ कर भा रह रहे हैं, किंतु दैनिक, साप्ताहिक आदि पत्रों की संतोष प्रदायिनी उन्नति नहीं है । संसार में स्थायी, अर्द्ध स्थायी तथा अस्थायी साहित्य का प्रचार होता है । अर्द्ध साधारण प्रथम प्रथम श्रेणी में है, मासिक तथा अर्द्ध मासिक पत्र दूसरी में और दैनिक, साप्ताहिक आदि तीसरी में । तीनों प्रकार का साहित्य समाज पर प्रभाव डालता है । स्थायी साहित्य प्रचुर काल तक स्थिर शिष्टा देता है, किंतु आर्थिक काम-काजों एवं जनता की प्रगति पर जैसा प्रभाव साधारणतया अस्थायी साहित्य का पड़ता है, वैसा स्थायी का नहीं । अर्द्ध स्थायी का दशा दोनों के बीच में है । हमारा स्थायी तथा अर्द्ध स्थायी साहित्य सामाजिक स्थिति के अनुसार बहुत करके योग्य सेवा कर रहा है, परंतु अस्थायी साहित्य प्रामा में तो थोड़ा बहुत प्रभाव रखता है, किंतु नगरों की सुपठित जनता पर वह प्रभाव

सूच्यमाय है। कारण यही है कि धनिषार्य कारणों से हमारे दैनिक पत्र तथा उनके संपादक सत्र धन एवं खोद-ज्ञान म धेगरगी उत्कृष्ट पत्रा तथा संपादकों के धर्मा - दूत पाते हैं। फिर भी इनका प्रभाव देश प्रेम-वृद्धि म पड़ अच्छा रहा है। इन्की शोधनीय दशा प्रतिपाद्य कारणों स होने क कारण समाज द्वारा हमारे पत्र प्रोत्साहन योग्य अर्थात् है। प्रथम-संपादक म हम काज नाखिन्धयत्र जैन ( ११६४ ) तथा प्रजरप्रदास ( ११७२ ) मुख्य है। कई अन्य महाशय भी इस महत्काय में योग देते हैं, किंतु इन दोनों सम्मनों ने अपने प्रयत्न में इसा की मुख्यता रक्की।

विविध विषय वणत में गंगाप्रसाद उपाध्याय ( ११६२ ), चंद्र-मौलि शुक्ल ( ११६४ ) और श्रीरामचन्द्रगोपाल माधुर ( ११७२ ) मुख्य योग्य पढ़ते हैं। रामचरित उपाध्याय ( ११६२ ) तथा दयाल चंद्र गायत्रीय ( ११७२ ) नीतिकार है। दोनों अच्छे लेखक हैं। उपयोगी प्रयत्नों में हम काल काट नवीन नाम नहीं आता। व्यापार संबंधी ज्ञान-वर्द्धन में जी० एम० पथिक ( ११७० ) ने बहुत ही श्लाघ्य काय किया है। इनके प्रथम चर्चे लाकोप्य गा हैं। विशिष्ट विषयों पर हिंदी का ऐसे सुल्लरकों की आप आवश्यकता है। विज्ञान में महेशचरणसिंह ( ११६२ ), महावीरप्रसाद ( ११६३ ) और जग-द्विहारी सेठ ( ११७२ ) के अम श्लाघ्य है। महेशचरणसिंह ने अमेरिका और जापान में शिक्षा पाई है। आपन रसायन पर अथ-रचना की है। सेठजी ने बिपली पर प्रथम लिखकर समाज का ज्ञान बढ़ाया है, और महावीरप्रसाद ने ज्योतिष तथा विज्ञान पर अच्छे प्रथम रचे हैं। ये तीनों महाशय हमारे उपयोगी प्रयत्नों में परम स्तुत्य हैं। यात्रा पर स्वामी सत्यदेव ( ११६३ ) तथा गौरीशंकर-प्रसाद ( ११६२ ) के श्लाघ्य प्रथम हैं। दोनों न अमेरिका, क्रिजी आदि ऐन्वकर रोचक साहित्य रचा है। प्रयास पर भवानीदयाल

( १९७० ) और बनारसीदास चौध ( १९७४ ) ने परिश्रम किया है। इनके प्रथम और प्रथम श्लाघ्य हैं। भवानीदयालजी ने अधिक-तया आक्रिका का यत्न किया है और चौबेजी ने उपनिषदों की राजनीतिक स्थिति का। हास्य रस में इस काल लक्ष्मीनसादजी पाडेय ( १९६८ ) तथा जी० पा० श्रीवास्तव ( १९७२ ) वर्य हैं। इन दोनों की काह विशेष सुप्यता नहीं है। हास्य-रस के सफल कथन में परमाच सामहितिक शक्ति की आवश्यकता है। पात्रों का मूलता का प्रत्यक्ष पर इस रस का उचित समावेश नहीं होता। फिर भी हमारे हास्य रस के लक्षकों ने अत्र तक मूलता का सहारा छाड़कर इसने यत्न में सफलता प्राप्त नहीं पाई है। आगरा में इन विषय पर कुछ श्लाघ्य धर्म हुआ है।

प्रेमानन्द विषया पर जानकानन्द द्विवेदी ( १९६१ ), किशोरीदास ( १९७२ ) तथा माहनलाल ( १९७२ ) के नाम इस काल आते हैं। द्विवेदीजी ने नख शिख उवा प्रेम पर काय रथा, किशोरीदास ने अलङ्कार पर तथा रीति प्रथ प्रनाण, और माहनलालजी ध्वन्य चित्रकार हैं। किन्ता समय में भरा तथा शृंगारी कविया का हमारे यहाँ माहुर्य था, किन्तु समय के उलट-पलट में अब ऐसे रचयिताओं की संख्या घुसपाय है। शास्त्रकारों में इस काल केवल बानू गुलाबराय गुप्त का नाम आता है। थापन तक शास्त्र तथा दर्शन के इतिहास रचें हैं, जो उत्कृष्ट प्रथ हैं। इनमें इन शास्त्रों पर अंगरेजा तथा संस्कृत दोनों के विचारों के सार आ गए हैं। पौराणिक विषया पर खड्क काव्य की भाँति नाटक, काव्य प्रथादि ताँयने, किन्तु किर्मी ने पुराणा पर कइने याम्य निबंध न लिखा। आयसमाजी लेखकों में इन्द्रजी के अतिरिक्त कोई भारी लेखक नहीं दिगई पड़ता।

नाटककारों में इस काल जयशंकर मसाद ( १९६१ ), माधव शुक्ल ( १९६४ ), गोविंदवल्लभ पंत ( १९७० ), प्रेमचंद



( १९६६ ) धीर अविवादक त्रिपाठी ( १९७३ ) प्रमुख हैं। इनमें जयशंकर प्रसाद तथा पतञ्जी न केवल इन काल के, बल्कि हमारे सभी समयों के नाट्यकारों में स्तुत्य माने जा सकते हैं। जयशंकर प्रसाद-सा नाट्यकार हिंदी में भारतेंदु के अतिरिक्त शायद अब तक नहीं उत्पन्न किया है। इन्होंने इन महाशय को चिरायु करे। इनसे हमारे नाटक-विभाग को बड़ी प्राप्ति है। इन्होंने कई नाटक ग्रंथ ( विशाल, जनमेजय का नाग यज्ञ, चंद्रगुप्त मौर्य, अज्ञातशत्रु, वामना, स्कंद गुप्त, कल्याणलक्ष्मी, राजश्री तथा एक घूँट ) रचे हैं, जिनमें स्कंद गुप्त बहुत ही स्तुत्य है। चंद्रगुप्त और अज्ञातशत्रु भी उत्कृष्ट नाटक हैं। अज्ञातशत्रु की भाषा बड़ा कहीं विलक्षण है। यह बात स्कंद गुप्त में नहीं है। अज्ञातशत्रु में पात्रों की परिस्थिति बदलती है, किंतु स्कंदगुप्त में यह भी नहीं है, जिससे खेलने में अड़चन न पड़ेगी। इन दोनों के अतिरिक्त ये दोनों ग्रंथ प्रायः एक-से हैं। इनके अतिरिक्त चित्रण अच्छे हैं, जिनमें मानसिक वृत्तियों की वृद्धि दिव्याद् पत्नी है। कल्याणलक्ष्मी प्रधान रस है, जिसमें चित्रण प्रचुर छटा दिखलाता है। ये नाटक भाषात्मक, आदर्शात्मक तथा इतिवृत्तात्मक हैं, और यही उनकी मुख्यता है। प्रायः अधिक आभ्यासिता से कहीं-कहीं विलक्षणता भी आ गई है। गाने नयानता लिए हुए गान्धीय-पद्य हैं जो कंपनी के विद्योत्पन्न को प्रवाते हुए आराधन लाते हैं। इनके नाटकों का लाल छायावादात्मक भी कहते हैं, विशेषतया वामना और अज्ञातशत्रु को। वामना छायावाद के कारण अरोचक हो गया है, किंतु अज्ञातशत्रु ठीक है। विशाल में महत्ता नहीं है। नाग-यज्ञ साधारण है। शेष नाटक भी ऐसे ही हैं। चंद्रगुप्त अवश्य उत्कृष्ट है। अभी तक प्रसादजी का प्रसादत्व अज्ञातशत्रु, चंद्रगुप्त और स्कंदगुप्त पर अत्यंत प्रभावित है। भाषा की विलक्षणता से अभिनय में इनके नाटक लोक-प्रिय न होंगे, इतना दोष

है। ऋधोपकथन कहीं-कहीं रोचकता को छोड़कर कल्पनिकता से दूषित हो गए हैं। पतंजी को वरमाला अच्छे नाटकों में से है। भाषा तथा गीत काव्य दोनों इसमें धेरें हैं। प्रथम उद्य कोटि का है, किंतु प्रसाद तथा भारतेंदु के उत्कृष्ट नाटका के पीछे रह जाता है। पतंजी यदि हम विषय पर चिंतन लगावें, तो उत्कृष्ट नाट्यकार हो सकते हैं। प्रेमचंद के समान और कबला नाटक है। कबला उद्य कोटि का प्रथम है, जिसमें मुसलमानी मत से सहृदयता बहुत सराहनीय है। नाटक साध त निर्दोष उतर गया है। चरित्र चित्रण भी ठीक है। माधव शुक्ल का महाभारत-नाटक उत्कृष्ट है। उसकी भाषा प्राञ्जल तथा प्रसाद पूर्ण है, और पद्य भी सुंदर हैं। उम्र का ईसा भी बहुत ही प्राञ्जल और सुपाठ्य है। उत्तर नूतन परिपाटी के कुछ नाटक प्रौढ़ हैं। इस विभाग की इस काल अच्छी धारा प्रगति हुई है।

उपन्यासकारों में इस काल निम्न लिखित प्रधान हैं—हरीकृष्ण जोहर (१९६२), आत्माराम देवकर (१९६२), आकारनाथ याज्ञपेयी (१९६३), प्रेमचंदजी (१९६५), धृवाचनलाल वर्मा (१९७०), धनूपलाल (१९७५), धन्यकुमार जैन (१९७५), प्यारेलाल गुप्त (१९७५) तथा बेचन शर्मा 'उम्र' (१९७५)। धन्यकुमार जैन अनुवादकर्ता गल्पकार हैं। आकारनाथ याज्ञपेयी का धर्म स्तुत्य है। उम्रजी बड़े समल तथा यथाथ लेखक हैं। इनकी लेखन-शैली बहुत स्तुत्य है, किंतु अश्लील विषयों में ज्ञान-वृद्ध न करते-करते कभी आप इतना दूर निकल जाते हैं कि समस्त पढ़ने लगता है कि आपको उसी वर्णन में मजा आता है। यदि ऐसे विषयों को छोड़कर आप मद्रिषयों पर धर्म करें, तो अच्छी व्याप्ति के योग्य हो जायें। अब आप सिनेमा में चले गए हैं। प्रेमचंदजी हमारे उपन्यासकारों में सर्वोत्कृष्ट समझे जाते हैं। इन्होंने जीकि

ज्ञान का प्रकृष्ट समग्र दिखलाया है। यदि इतिवृत्तात्मकता को कुछ कम करके ध्याप आदर्शात्मिकता एवं भावात्मिकता की ओर कुछ झुक सकते, और अपने चरित्रों को साथ त एक-सा निभा सकते, तो परमोत्कृष्ट औपन्यासिक होने की पात्रता आपर्म प्रस्तुत थी। देश प्रेम की ओर तो ध्याप बढ़े हैं, किंतु जितना कुछ देशीय मान है, उसकी भी सम्यक् रक्षा ध्यापसे नहीं हो सकी है। एक क्षत्रिय रहस ता योरेशियन बालिका के साथ रगभूमि में अपना पुत्र विवाहने की स्वीकृति दे देता है, किंतु जातीय अभिमान यश योरेशियन एक हिंदू से अपनी लवकी नहीं विवाहता। यह चित्रण असली चित्र का ठीक विपरीत दृश्य दिखलाता है। इतना सत्र होते हुए भी हम आपको एक भारी उपन्यासकार मानते हैं। आपके बड़े ग्रंथ उत्कृष्ट, किंतु सदोष हैं, तथा छोटी कथाएँ बढ़िया और निर्दोष हैं। इनमें वयन की शक्ति अच्छी है, किंतु कथाओं के देखते हुए प्राय अनुचित विस्तार द्वारा ग्रंथ बढ़ गए हैं। जयशकर प्रसाद ने भी ककाल-नामक उपन्यास लिखा है। उसका कथा भाग इतना घुमावदार और परिणाम ऐसा अरोचक है कि ग्रंथ उत्कृष्ट होकर भी पसंद नहीं आता। वृंदावनलाल के गढ़-कुंठार का ग्रंथमाद्द बढ़िया है, किंतु उत्तराद्द शिथिल पढ़ गया है। लेखक ने बुदेखखट का हाल खूब जानकर ग्रंथ लिखा है।

हमारे गल्प तथा आख्यायिका लेखकों में इस काल निम्न लिखित महाशयों की गणना हो सकती है—जयशकर प्रसाद ( १९६० ), प्रेमचंद ( १९६२ ), लक्ष्मीनारायण गुप्त ( १९७० ), विद्याभूषण ( १९७२ ), कौशिकजी ( १९७० ), सुदशनजी ( १९७० ), चतुरसेन शास्त्री ( १९६३ ) आदि। प्रसादजी की कहानियों में साहित्यिकता उत्कृष्ट है, तथा आध्यात्मिकता एवं ऐतिहासिक श्रोत्र को उसी में मिलाकर आपने अच्छी दृष्ट दिखलाई है। जो

मुख्य गण उनके नाटकों में हैं, वही यहाँ भी मिलते हैं। प्रेमचंद ने समान तथा कौशिकजी ने कुटुंब पर अच्छा प्रकाश डाला है। प्रेमचंदजी घटनाओं के सहारे अधिक चले हैं, किंतु प्रसादजी भावों की प्रधानता रखते हैं। सुंदरानजी ने भारतीयपने का पारचात्य ज्ञान से मिजाकर रोचक प्रबंध बाँधे हैं। हृदयेश (चंडीप्रसाद) अलंकृत भाषा तथा वास्तविकता से आगे बढ़कर कथाओं में भी भावुकता दिखाने हैं। चतुरसेन की भाषा में अपूर्व बल है। हम इनका प्रायः अद्वितीय गल्पकार मानते हैं। राय कृष्णदास उच्च कोटि की कहानियाँ लिखते हैं, किंतु आध्यात्मिकता के आधिक्य से सब लोग उनमें तादृश आनंद नहीं पाते। फिर भी हम इनके प्रथम में कुछ-कुछ जटिलता हाते हुए भी अच्छा चमत्कार खिखार पढ़ता है। हमारा गण्य तथा आध्यात्मिक विभाग उत्तर नूतन परिपारी काल ही में उठकर अति शीघ्र प्रौढता को प्राप्त हो गया। अज्ञीम-योग चगताई की भी छोटी कहानियाँ अच्छी हैं, किंतु उनकी उर्वर-कहानिया के हिंदी में अनुवाद मात्र हुए हैं। हम विभाग का अग-पुष्टि भविष्य में भी अच्छी होगी, ऐसी आशा है। कई मासिक पर इस पर विशेष ध्यान देते हैं।

सत्कप्रिया में इस काल निम्न लिखित महाशया के नाम सामने आते हैं— ज्ञानकीप्रसाद ( १९६१ ) शिवरत्न शुक्ल ( १९६१ ), देवीप्रसाद चतुर्वेदी ( १९६२ ) जनादन मिश्र ( १९६३ ), हरिदत्त दीन ( १९६४ ), गदाधरसिंह ( १९६५ ), नूतन ( १९६५ ), चंद्रभानुसिंह ( १९६७ ), सूर्यप्रसाद त्रिपाठी ( १९६७ ), मातादीन शुक्ल ( १९७० ), चतुरसिंह ( १९७० ), मैथिलीशरण गुप्त ( १९७० ) लक्ष्मण शास्त्री ( १९७० ), मातादीन शास्त्री ( १९७० ), अथर्वविहारीलाल माथुर ( १९७२ ), रामनरेश त्रिपाठी ( १९७२ ), जगदीश झा विमल ( १९७३ ), जोचनप्रसाद पाडेय ( १९७२ ),

अबिकावत त्रिपाठी ( १९७३ ), केशवलाल झा ( १९७४ ),  
 रामकुमार वर्मा ( १९७४ ), गुरुभद्रसिंह ( १९७५ ),  
 रामचरित उपाध्याय ( १९७५ ), सुमित्रानन्दन पंत ( १९७५ ), उन्मत्त-  
 सिंह ( १९७५ ), नवीन ( १९७५ ), रामनारायण शर्मा ( १९७५ ),  
 सियारामशरण गुप्त ( १९७५ ) तथा विद्यागी हरि ( १९७५ ) ।  
 इन सब महाशयों ने उत्कृष्ट रचना का है । किसी किसी ने प्रबन्ध-  
 म, किमी ने खड़ी बोली में और बहुतों ने दोना में । इनमें से  
 प्रायः सभी के उदाहरण प्रथम मिलेंगे, सो प्रत्येक साहित्यिक के  
 विषय में कुछ अधिक विवरण अनावश्यक है । प्रथम में बड़े-बड़े  
 उदाहरण दोना सुधमता पूरक मिलेंगे । फिर भी किन्हीं कुछ  
 मैथिली-रचण गुप्त तथा गुरुभद्रसिंह विशेषतया बड़े-बड़े  
 शब्दकोशों ने कुछ उत्कृष्ट रूप प्रथम रचें हैं, तथा गुप्त-रचणों के  
 छोटे-छोटे प्रयोगों में काव्यत्व की कमनीयता अच्छी मिलती है ।  
 बहुत ही लोकमान्य सुकवि हैं, जिन्हें हम भी बड़े-बड़े कवि  
 देखते हैं । प० सुमित्रानन्दन पंत एक बहुत ही ठीक ठीक कवि  
 हैं । इनके तीन प्रथम देखने में आते हैं, जिनमें बड़े-बड़े कवि  
 प्रथम का साहित्य परमात्मिक आनन्द देता है । इनमें से एक  
 यह आनन्द का ऐसे कवि हैं, जिनकी उन्मत्त रचणों में  
 कविया से निःसंकोच भाव से दे सकते हैं । इनमें से एक  
 अमरानी वर्तमान काल के कवियों में बड़े-बड़े कवि हैं ।  
 कविता अजमरी जी में खूब है, भाव-मूर्ति का अर्थ-प्रति-  
 तथा नवीनता की कमनीयता निताली हैं । इनमें से एक  
 काल यदि कवल अथवा प्रसाद और अन्तर्गत में इन कवि  
 किए होता, तो भी वह धन्य हाता ।

टीकाकारों में इस काल मन्मथलाल शर्मा ( १९७५ )  
 प्राधान्य है तथा अनुवादकों में अन्तर्गत में ( १९६५ )

शिवसहाय चतुर्वेदी ( १९७२ ) और नरोत्तमदास ( १९७५ ) का। निबन्धकारों में चद्रमौलि शुक्ल ( १९६८ ), रामचद्र शुक्ल ( १९६५ ) तथा गुलाबराय ( १९७१ ) इस काल में आते हैं। रामचद्र शुक्ल का हिंदी भाषा का इतिहास अच्छा है। आपस हमारे आलोचना विभाग को दीप्ति मिली है। गुलाबरायजी के दर्शनशास्त्र सबरी निबन्ध स्तुत्य हैं। समालोचनाकार इस में काल रामचद्र शुक्ल ( १९६५ ), रामनरेश त्रिपाठी ( १९७१ ) और रामकुमार वर्मा ( १९७४ ) हैं। शुक्लजी ने जायसी पर अच्छा धम किया है। इतिहासकारों में इस काल शिवनाथसिंह सगर ( १९६१ ), चद्र मनोहर मिश्र ( १९६३ ), प्रतिपालसिंह ( १९६३ ), रामदेवजी मोक़ेसर काँगड़ी ( १९६४ ), लक्ष्मीनारायणसिंह ( १९६७ ), जनादन भट्ट ( १९७१ ) तथा लौट्टसिंह ( १९७३ ) मुख्य हैं। इनमें रामदेवजी सबसे श्रेष्ठ हैं। इनका भारतवर्षीय प्राचीन इतिहास सुपाठ्य तथा शिक्षाप्रद है। लौट्टसिंहजी पुरातत्व पर धम करके भारत का अच्छा इतिहास लिख रहे हैं। जनादन भट्ट ने देश-भक्ति को लिए हुए इतिहास लिखा है। इतर महाशयों के भी परिधम स्तुत्य हैं। पुरातत्व में काशीप्रसाद जायसवाल ( १९६३ ), विश्वेश्वरनाथ रेड ( १९६७ ), लोचनप्रसाद पांडेय ( १९७२ ) तथा उपयुक्त लौट्टसिंह वखनीय हैं। इन सभी ने इस विषय पर मान्य धम किया है विशेषतया जायसवाल तथा रेड महाशयों ने। जीवन चरित्रकार इन्द्रजी ( १९७० ) तथा रामचद्र टटन ( १९७० ) हैं। ये दोनों सुखेखक हैं। बनारसादासजी चौधे ने चरित्र चित्रण अच्छे किए हैं।

नई बोली में इस काल मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, रामनरेश त्रिपाठी, लोचनप्रसाद पांडेय, जयशंकर प्रसाद, गोविंद वल्लभ पंत, चतुरसेन शास्त्री, वियोगी हरि आदि उत्कृष्ट लेखक हैं।

अतिम दो महाशय गद्य-काम्य के भी भारी रचयिता माने जा सकते हैं। छायावाद का कथन पहले अलंकार द्वारा होता था। इसे अन्याक्ति कहते हैं। कई कवियों ने अन्याक्ति पर कविता की है। व्यंग्य का विषय भी इसी से मिलता है। प्रतापसाहि ने अन्याय-कौमुदी नामक ग्रंथ ही बनाया था, और चामा दीनदयाल गिरि ने अन्याक्ति-रूपद्रुम रचा। कबीरदास ने उज्ज्वाली आदि में बहुत कुछ अन्याक्ति-गर्भित रचना की। तायसी, कृतबन शंभु आदि अनेकानेक सूली कवियों ने अपने कथा प्रासंगिक प्रयोगों का कथा-विभाग छायावाद-गर्भित रखा। बलक, उमर खैयाम आदि भी ऐसे ही कवि। वड्-सवध, शेखी आदि ने भी कुछ इसी प्रकार के कथन किए। कीट्स ने प्रकृति और सोदय का अच्चा अर्थलोकन किया। महाकवि रवींद्र महाशय भी कुछ ऐसी ही रचना करते हैं। उत्तर नूतन परिपाटी काल में ही वर्तमान छायावाद का प्रचार हिंदी में हुआ। जयशंकर प्रसाद, मोहनलाल महतो तथा सुमित्रानंदन पंत इस काल के मुख्य छायावादी कवि हैं। निरालाजी भी ऐसी ही रचना करते हैं, किंतु केवल एक साल के अंतर के कारण इनका विवरण आगे के अध्याय में आवेगा। रहस्यवादी कवियों में कुछ कुछ आध्यात्मिकता, सांप्रदायिकता आदि प्रायः रहती हैं, यद्यपि अन्याक्ति के लिये किंसा विशिष्ट विषय की आवश्यकता नहीं है। सबसे प्राचीन छायावादी साहित्य स्वयं वेद भगवान् में है।

बहुत-से वर्तमान समालोचक तथा प्राचीन लेखक हमारे छायावादी कवियों के निन्दक हैं। हमने भी बहुतेरी छायावादी रचनाओं में असमर्थ तथा अप्रसाद दूषण पाए हैं। बहुत-से ऐसे कवि विचार धारा इतनी दूर बांध ले जाते हैं कि उनके शब्द उतने ऊँचे भाव प्रदर्शन में अप्रसन्न रहते हैं, जिससे रचना में असमर्थ दूषण आ जाता है। बहुतेरे कवि ऐसे शुष्क प्रकार से वचन करते हैं कि रचना में अलौकिक

आनन्द की कमी से कर्मनीयता की तो कड़ना ही क्या है, साधारण आलोचन भी नहीं रहता। फिर प्रायः सभी छायावादी पद्यकार गण कथा प्रमगादि छोड़कर कवल मुद्रका पर आनी रचनाया को सीमित रखते हैं। ऐसे प्रथों में परमोत्कृष्ट रचना के अभाव में आलोचन की कमी स्वभावशः आ जाती है। कविताओं की जाँच में दो मुख्य प्रश्न यही रहते हैं कि कथा कथन योग्य है या नहीं, तथा यह सुचारुरूप कथा कहें हैं या नहीं? मुद्रका में बहुत करके कथा हाती ही नहीं। सा कथानक के सुगठन एवं विविध परिस्थितियों के यथायोग्य पर्यन्त में जो आनन्द आता है, यह मुद्रक-मूलक रचना म रहता ही नहीं। एक प्रकार से कारा काय्य रह जाता है, जो परमात्कृष्ट न होने से राक्षस नहीं रहता। फिर उसे कविगण जहाँ करी छायावादात्मिका कथा भी कहते हैं, वहाँ प्रायः आध्यात्मिक अथवा प्राकृतिक विचारा को कथा के रूप में चलाते हैं, जिनमें कामना सध्या, छाया आदि पात्र रहते हैं, जिनके कथनों, कर्मा आदि से आध्यात्मिक प्राकृतिक अदि भाव तो उड़ हाते हैं, किंतु कथा विकृत न बूधी हुई रहता है।

जयशंकर प्रसाद का छायावाद उपयुक्त विचारा से उत्कृष्टता के मोक्षान तक नहीं पहुँच पाता। उनके जो मुख्य प्रथ हैं, उनमें एतिहासिकता का प्रधानता है, और छायावाद नहीं के बराबर है। यदि प्रसादजी वरज छायावादी होते, तो हम उन्हें बहुत ही साधारण कवि मानते। मोहनलाल महतो की कविता कुछ उत्कृष्ट है किंतु बहुत ऊँची श्रेणी को नहीं पहुँचती। सुमित्रानन्दन पंत ने केवल परलोक में साहित्यिक गौरव का चमकता हुआ उगाहरण दिखलाया है। इसमें इ तो मुद्रकों का ही रूप, किंतु एक एक विषय पर पर्यन्त कुछ बड़-बड़ भी हैं। इनमें कवल छायावाद नहीं है, परन्तु इतर साहित्य के साथ कुछ कुछ वह भी मिल गया है। यदि



पतञ्जी का साहित्य प्रस्तुत न होता, तो हम भी शायद हिंदी के छायावादी कवियों के निर्दोष म होते। इनके तथा निरालाजी के होने से हम इस विभाग की मुक़ कठ मे स्तुति करेंगे। मुख्य बात कवि सामर्थ्य है। सुकृत्रिगण प्रत्यक विषय का जाज्वल्यमान विवरण लिख सकते हैं। योग्यता काम आती है। यह कहना हमारी समझ में अनुचित है कि हमारे छायावादी कविजन शेखी, फीट्स आदि के बहुत पीछे छूट जाते ह। अभी हमारे यहाँ इसका आरंभ ही है। संभव है, प्रसाद पत और निराला हा मिलकर भविष्य में इस विभाग को परमोत्कृष्ट बना दें। हम ता आन भी इसे उन्नत समझते हैं।

उत्तर नूतन परिपा-। काल तक हमारी हिंदी इतनी सुखदा उन्नति कर आई थी कि हमें स्वयं के विषय म भी बनी तीरता से विवाद चलने लगा, जा अत्र तक चल रहा है। आदिम वैदिक समय में हमारी भाषा आसुरी कहलाती थी, जिसमें ऋग्वेद की ऋचाशा का गान हुआ। उस काल प्राकृत भाषा कैसी थी, इसका पूरा पता नहीं चलता। ऋग्वेद में अनाया के विषय म लिखा है कि इतनी जोड़ भाषा नहीं ह, और य चिल्लाना-मान जानते हैं। फिर भी पंडितों ने जाना ह कि जन समुदाय म उस काल भी या कम से-कम ब्राह्मण-काल म एक भाषा थी, जिसे पहला या पुरानी प्राकृत कहते हैं। समय के साथ इन दोनों भाषाओं का प्रभाव एक दूसरी पर पड़ते हुए नवीन आवश्यकताओं अथवा विचारों के अनुसार दोनों का विकास हुआ। आसुरी बढ़कर पुरानी संस्कृत हा गई, और प्राकृत साहित्यिक भाषा। इस विषय का काम हम (शुद्धवैदिकविहारी मिश्र) ने इतिहास पर हिंदी के प्रभावशाले मथ म भी कुछ किया है। नाराय यह कि सूत्रकाल म इन दोनों भाषाओं म साहित्यिक रचनाएँ होती थी। सूत्र-काल म व्याकरण ने छासी उन्नति की, और प्राय छठी शताब्दी तक यास्क, पाणिनि आदि व्याकरणकारों की सहायता से

आनंद की कमी से कमनीयता की ता करना ही क्या है, माभारण्य आरोचन भी नहीं रहता। फिर प्रायः सभी छायावादी पद्यकार गद्य कथा प्रसंगादि साहित्य केवल मुद्रका पर अपना रचनाशौ को सामित रखते हैं। ऐसे प्रथो में परमोत्कृष्ट रचना क प्रभाव में आरोचन की कमी स्वभावशः आ जाती है। कविताका ही जीव में दो मुख्य प्रश्न यही रहते हैं कि क्या कथन वाग्य है या नहीं, तथा यह सुचारुरूपण कदा कदा है या नहीं? मुद्रका में बहुत परक कथा होती है या नहीं, सा कथानक के मुगजन एवं विविध परिस्थितियों के यथासंभव वर्णन में जो आनंद आता है, यह मुद्रक-मूलक रचना में रहता ही नहीं। एक प्रकार से फारा काव्य रह जाता है, जो परमात्कृष्ट न होने से रागरु नहीं रहता। फिर अन्य कविगण जहाँ कहीं छायावादात्मिका कथा भी करते हैं, यहाँ प्रायः आध्यात्मिक अथवा प्राकृतिक विचारों को कथा के रूप में पखाने है, जिनमें कामना, सभ्या, छाया आदि पात्र रहते हैं, जिनके कथना, कर्मों आदि से आध्यात्मिक, प्राकृतिक आदि भाव ता हा हात हैं, किन्तु कथा विकसित नहीं हुई रहती है।

जयशंकर प्रसाद का छायावाद उपयुक्त विचारा में उत्कृष्टता के सागरा तक नहीं पहुँच पाता। उनका जो मुख्य प्रथ है, उनमें प्रतिहात्मिकता का प्रधानता है, और छायावाद नहीं के बराबर है। यदि प्रसादजी केवल छायावादी होते, तो हम उन्हें बहुत ही साधारण कवि मानते। माइनलाज महता की कविता तुल्य उत्कृष्ट है, किन्तु बहुत ऊँची छेपी को नहीं पहुँचती। मुमिथानदन पंत ने केवल परलोक में साहित्यिक गौरव का चमकता हुआ उदाहरण दिखलाया है। हममें ही जो मुद्रका का ही रूप, किन्तु एक-एक विषय पर चर्चन कुछ बड़े-बड़े भी है। इनमें केवल छायावाद नहीं है, परन्तु इतर साहित्य के साथ कुछ-कुछ यह भी मिल गया है। यदि

पंतजी का साहित्य प्रस्तुत न होता, तो हम भी शायद हिंदी के छायावादी कविता के निंदका में होते। इनके तथा निरालाजी के होने से हम इस विभाग की मुद्र कठ से स्तुति करेंगे। मुख्य बात कवि सामर्थ्य है। सुप्रविण्य प्रत्येक विषय का जाज्वल्यमान विवरण लिख सकते हैं। योग्यता काम आती है। यह करना हमारी समझ में अनुचित है कि हमारे छायावादी कविजन शेर्मा, कौटिल्य आदि के बहुत पीछे छूट जाते हैं। अभी हमारे यहाँ इसका धारण ही है। संभव है, प्रसाद, पत और निराला ही मिलकर भविष्य में इस विभाग को परमोच्छ्रित बना दें। हम तो आज भी इसे उन्नत समझते हैं।

उत्तर नूतन परिपालना काल तक हमारी हिंदी इतना सुखदा उद्यति कर आई थी कि इसके रूप के विषय में भी बड़ी तीव्रता से विवाद चलने लगा, जो अब तक चल रहा है। प्राचीन वैदिक समय में हमारी भाषा आसुरी कहलाती थी, जिसे अश्वत्थ की शृंखला का गान हुआ। उस काल प्राकृत भाषा कैसी थी, इसका पूरा पता नहीं चलता। अश्वत्थ में अनाथों के विषय में लिखा है कि इनकी कोई भाषा नहीं है, और ये खिल्लाना-मात्र जानते हैं। फिर भी पदिता ने जाना है कि जन-समुदाय में उस काल भी या कम से कम ब्राह्मण-काल में एक भाषा थी, जिसे पहला या पुरानी प्राकृत कहते हैं। समय के साथ इन दोनों भाषाओं का प्रभाव एक दूसरे पर पड़ते हुए नवीन आवश्यकताओं अथवा विचारों के अनुसार दोनों का मिश्रण हुआ। आसुरी बढ़कर पुरानी सशक्त हो गई, और प्राकृत साहित्यिक भाषा। इस विषय का काम हम (शुद्धेवविहारी मिश्र) ने इतिहास पर हिंदी के प्रभाववाले प्रथम भी उद्यत किया है। सारांश यह कि सूत्रकाल में इन दोनों भाषाओं में साहित्यिक रचनाएँ होती थीं। सूत्र-काल में व्याकरण ने प्लासी उद्यति को, और प्रायः छठी शताब्दी सवन्-पूर्व तक यास्क, पाणिनि आदि व्याकरणकारों की सहायता से

पहली संस्कृत का अधिक संस्कार होकर यह दूसरी संस्कृत अथवा केषल संस्कृत कहलाने लगी। छठी शताब्दी स० पू० में पाणिनि और ध्रुव के मनन दूसरी प्राकृत (पार्श्वी) भी ध्रुव साहित्यिक भाषा थी। इनके पीछे नद-वश के नर्त्री महर्षि कात्यायन (तीसरी शताब्दी संस्कृत) तथा पुष्यमित्र के पुरोहित महर्षि पत्रवर्जि (दूसरी शताब्दी संस्कृत) ने लारगत व्याकरण की धार भा वृद्धि करके इसे बहुत कठिन कर दाखा। यहीं तक कहा गया कि अर्धशय प्राय पठन स भी व्याकरण का अंत नहीं मिल सकता।

पेगी जटिल भाषा स्वभावश दश की मातृ भाषा या राष्ट्र-भाषा नहीं हो सकती थी, क्योंकि क्रांति दर्श ज्ञान केवल भाषा ज्ञान प्राप्ति में इतना समय नहीं व्यय कर सकते थे, जितना व्याकरण के प्रेमी ज्ञान उनसे चाहते थे। फल यह हुआ कि देश न दिनादिन संस्कृत का हान्य तथा प्राकृत का प्रचार हाने लगा। व्याकरणकार लेखकों पर भाति नीति के कथों, गालिया आदि द्वारा दबाव डालते रहे। यहीं तक कि प्राकृत का व्याकरण भी छड़ हा गया, जिससे देश के लिये किमी और भाषा की आवश्यकता हुई। ऐसा भाषा अपभ्रंश कहलाइ। भारत एक भारी देश है। विविध भातों तथा एक ही प्रांत में भी शब्दों के एकाधिक रूप चलने लगे, अथवा व्याकरण-संबंधी नियमों की स्वभाश अचहेलना होने लगी। लोग मातृभाषा चाहते थे, जो आप-से आप आ जाय, तथा वैयाकरण लोग पंडित भाषा खजानी चाहते थे, जिसके पठन के लिये प्रशुर परिश्रम एवं समय की आवश्यकता थी। लोगों ने पंडितों के कथनों का तिरस्कार करके मातृभाषा का व्यवहार किया। केकड़, कैकेई, केकयी आदि एक ही शब्द के अनेक रूप मंचलित रहे। पतंजलि महाराज ऐसे रूपों की धोर निंदा करते रहे, और पंडित लोग इस मातृ भाषा का अपभ्रंश कहकर अपमान करते रहे, किंतु समार ने हमी का मान

किया। कालिदास और पाण्डित्य तक के समयों (पाँचवीं और सातवीं शताब्दी तक) में इसका प्रचार था। समय के साथ बढ़ती हुई यही भाषा हिंदी हो गई। प्रारम्भिकसमय में हिंदी का अपभ्रंश से मिलता जुलता रूप रहा, किंतु पीछे से इसने शीघ्रता पूर्वक उन्नति की। प्रौढ़ भाष्यमिक काल तक हिंदी पूर्णतया प्रौढ़ होकर परमोत्कृष्ट पद्य प्रथ उत्पन्न कर सकी।

मुसलमानों के आगमन से हिंदू मुसलमानों के भाषा-भेद मिटाने को क्वी नवीन भाषा की आवश्यकता पड़ी। वे लोग दिल्ली, मेरठ-प्रांत में पहले बसे थे, सो वहाँ की भाषा में अपने भी कुछ शब्द जोड़कर बातचीत का काम चलाने लगे। यह भाषा उर्दू कहलाई। जहाँ-जहाँ मुसलमानों का प्रभाव फैलता गया, वहाँ-वहाँ के नगरों में उर्दू का प्रचार होता गया, किंतु ग्रामों में प्राचीन भाषाएँ चलती रहीं। यही दशा आज तक है। शाहजहाँ के समय तक उर्दू ने भी अच्छी उन्नति कर ली थी। हमारे यहाँ तब तक गद्य-काव्य नहीं के बराबर था, तथा पद्य में राजभाषा का प्राधान्य था, अथवा अथवा भी कुछ-कुछ चलती थी। अंगरेज़ी राज्य के स्थापन से गद्य की उन्नति हुई और जल्लूजीलाल, राजा शिवप्रसाद, स्वामी दयानंद, भारतेन्दु आदि के साथ विविध रूप धारण करते हुए हिंदी-नाथ संस्कृत गुफित रूप की ओर अग्रसर हुआ। भारतेन्दु के समय तक देश भाषा से यह हिंदी बहुत पृथक् नहीं; किंतु पीछे के कुछ कवियों आदि ने इसमें अधिकाधिक संस्कृत-शब्दों का प्रयोग बढ़ाया, सो हमारी उच्च श्रेणी की समझी जानेवाली हिंदी लोक-भाषा से दिनोंदिन अधिकाधिक दूर होती जाता है, जिससे इसकी प्रतियोगिनी उर्दू का प्रभाव नगर निवासी हिंदुओं पर से शिथिल होने के स्थान पर बढ़ हो रहा है। इसी संस्कृत-बाहुल्य के कारण हिंदी के नाटक हमारे रंगमंच पर मान नहीं और

पहली संस्कृत का अधिक संस्कार हाफर शब्द दूसरी संस्कृत अथवा फेबल संस्कृत कहलाने लगा। छठी शताब्दी में १० न पाणिनि और युद्ध के समय दूसरी प्राकृत (पाली) भी घेष्ट साहित्यिक भाषा थी। इनके पाठ नद-यश के नंत्री महापि कात्यायन (तीसरी शताब्दी संवत् पूर्व) तथा पुष्यमित्र के पुरोहित महापि पाबळि (दूसरी शताब्दी संवत् पूर्व) ने सांस्कृत व्याकरण की और भी वृद्धि करके हमें बहुत कठिन कर डाला। यदा तक कहा गया कि अक्षय प्राय पठन से भी व्याकरण का घत नहीं मिल सकता।

ऐसी ब्रिटिश भाषा स्वभाष्य देश की मातृ भाषा या राष्ट्र-भाषा नहीं हो सकती थी, क्योंकि फरोदा इरी जाग कपल भाषा शान प्राप्ति में इतना समय नहीं व्यथ कर सकते थे, जितना व्याकरण के प्रेमी लोग उनसे चाहते थे। फल यह हुआ कि देश में दिनादिन संस्कृत का ह्रास तथा प्राकृत का प्रकाश होने लगा। व्याकरणकार ज्ञेयकों पर भक्ति भक्ति के कथना, गात्रियों आदि द्वारा दबाव डालते रहे। यहाँ तक कि प्राकृत का व्याकरण भी रद्द हो गया, जिससे देश के जिय किसी और भाषा की आवश्यकता हुई। जमी भाषा अथवा श कहलाए। भारत एक भारी देश है। विविध प्रांतों तथा एक ही प्रांत में भी शब्दों के पृथक् पृथक् रूप चलने लगे, अथवा व्याकरण-संबंधी नियमों की स्वभावशः अथहेलना होने लगी। लोग मातृभाषा चाहते थे, जो आप-से आप आ जाय, तथा वैयाकरण लोग पंडित भाषा चल्तानी चाहते थे, जिसके पठन के जिय प्रथम परिधन एवं समय की आवश्यकता थी। लोगों ने पंडितों के कथनों का तिरस्कार करके मातृभाषा का व्यवहार किया। केकई, केकेई, केकयी आदि एक ही शब्द के अनेक रूप प्रचलित रहे। पतंगलि महाराज ऐसे रूपों की घोर निंदा करते रहे, और पंडित लोग इस मातृ भाषा का अथवा श कहकर अपमान करते रहे, किंतु सत्तार ने इसी का मान

किया। कालिदास और बाणभट्ट तक के समयों ( पाँचवीं और सातवीं शताब्दी सवत् ) में इसका प्रचार था। समय के साथ बढ़ती हुई यही भाषा हिंदी हो गई। प्रारम्भिकसमय में हिंदी का अक्षर श से मिलता जुलता रूप रहा, किंतु पीछे से इसने शीघ्रता पूर्वक उन्नति की। प्रौढ़ माध्यमिक काल तक हिंदी पूर्णतया प्रौढ़ होकर परमोत्कृष्ट पद्य प्रथ उत्पन्न कर सकी।

मुसलमानों के आगमन से हिंदू मुसलमानों के भाषा-नेव मिटाने को किसी नवीन भाषा की आवश्यकता पड़ी। वे लोग दिल्ली, मेरठ-भात में पहले बसे थे, सो वही की भाषा में अपने भी कुछ शब्द जोड़कर धातुचीत का काम चलाने लगे। यह भाषा उर्दू कहलाई। जहाँ-जहाँ मुसलमानों का प्रभाव फैलता गया, वहाँ वहाँ के नगरों में उर्दू का प्रचार होता गया, किंतु ग्रामों में प्रांतीय भाषाएँ चलती रहीं। यही दशा आज तक ऐ। शाहजहाँ के समय तक उर्दू ने भी अच्छी उन्नति कर ली थी। हमारे यहाँ तब तक गद्य-काव्य नहीं के बराबर था, तथा पद्य में व्रजभाषा का प्राधान्य था, अथवा अचधी भी कुछ-कुछ चलती थी। अंगरेज़ी राज्य के स्थापन से गद्य की उन्नति हुई और लखनऊजीलान, राजा शिवप्रसाद, स्वामी दयानंद, भारतेन्दु आदि के साथ विविध रूप धारण करते हुए हिंदी-गद्य संस्कृत गुणित रूप की ओर अग्रसर हुआ। भारतेंदु के समय तक देश भाषा से यह हिंदी बहुत पृथक् न थी, जिसे पीछे के कुछ कवियों आदि ने इसमें अधिकाधिक ~~संस्कृत-शब्द~~ का प्रयोग बढ़ाया, सो हमारी उच्च श्रेणी की समस्त ~~कविताएँ~~ हिंदी लोक-भाषा से दिनोंदिन अधिकाधिक दूर होती ~~रही~~ है, जिससे इसकी प्रतियोगिनी उर्दू का प्रभाव नगर-निवासी हिंदुओं पर से शिथिल होने के स्थान पर बढ़ हो रहा है। इसी ~~संस्कृत-वाक्य~~ के कारण हिंदी के नाटक हमारे रंगमंच पर मान नहीं रखें, और उस

पर उर्दू का सिद्धा यथावत् जमा हुआ है। बहुत जोग समझते हैं कि यही हिंदी उच्च है, जिसमें संस्कृत-शब्दों का बाहुल्य हो। ऐसे जोगों का आदिष्ठि क्रिया आदि की जा थोड़ी-सी 'नीचता' उनके हिंदी लक्ष्य में लगी रहती है, यह भी निकाजकर करोति, वपति आदि लिखने लग। वास्तव में उच्च हिंदी का उदाहरण यदि देखना हो, तो चतुरमन शास्त्री तथा उग्र की भाषा पढ़ी जाय। यदि संस्कृत शब्द-बाहुल्य में ही हिंदी उच्च हो सकती, तो उत्कृष्ट गद्य लक्षण बहुत सुगम हो जाता। वास्तव में संस्कृत द्वारा गूढ़ की हुई भाषा निम्न है, ऊँचा नहीं।

इतना सब देखकर भी न देखते हुए हमारे संस्कृत प्रेमी महाशय करण सांस्कृत शब्द बाहुल्य से संतुष्ट न होकर संस्कृत व्याकरण के नियमों का भी अधिकाधिक आराधन हिंदी में करना चाहते हैं। पण्डित महाराजप्रसाद द्विवेदी ने इस विषय पर बहुत ही रजसाध्य श्रधना निष्पन्न किया। यह श्रम अदूरदर्शी संस्कृत प्रेमियों के लिये श्लाघ्य है और व्यापक साहित्य प्रेमियों की दृष्टि में निम्न। हमने संवत् १९६७ के निकट अपना हिंदी नवरत्न ग्रंथ साधारण योजकाज के निकटवर्ती भाषा में प्रकाशित कराया। इसमें शब्दों के रूप भी पर्याप्त प्रकार से लिखे हुए थे। द्विवेदीजी ने सरस्वती पत्रिका के प्रकाशक काजमा में हमारी भाषा की निंदा की। हमने उस लख का उत्तर दिया, किंतु कुछ लोगों ने यह भी समझा कि मिश्रबधु भूज से, बिना सोचे-समझे, शब्दों के अशुद्ध रूप लिख गए, तथा अथ धोंगाधोंगी करके उन्हें नवीन सिद्धांत द्वारा ठीक प्रमाणित करते हैं। अतएव परसाल हम (श्यामविहारा मिश्र) ने हिंदी साहित्य-सम्मेलन के सभापतिगले आसन से इसी सिद्धांत पर पुन कथन किए। विभक्ति प्रत्यय लिंग भेद आदि पर भी हम स्वच्छंदता के पक्ष में हैं। इस विषय पर कई सज्जनों ने हमारा विरोध किया है,



जिनके उत्तर हमने माधुरी तथा सुधा पत्रिका में छपवाए हैं। इस पत्र के (तेईसवें) सम्मेलन ने दिल्ली में हमारा यह विचार बिना तद्विषय ही मान लिया है। लभापति श्रीमान् गायकवाड़ नरेश, प्रियुत विद्यालया, मान्यनलालजी चर्चदी आदि ने अपना स्वतंत्र कृतार्थों में भी यही मत देश के लिये अनिर्णय माना। प्रयोजन यह कि यह धर्म अथवा भूलों का विषय न होकर हिंदी के जीवन तथा राष्ट्रभाषा का प्रश्न है। यदि हिंदी पर व्याकरण का बल बढ़ा, तो यह मातृभाषा न रहकर मृत भाषाया म चली जायगी। इसलिय हम लोग मित्रता के रूप में सस्कृत के नियमों को हिंदी में अमान्य समझकर शब्दों के वे रूप लिखते और इतरा से लिखवाना चाहते हैं, जो साहित्य व्याकरण के नियमों से चाह प्रशुद्ध हों, किन्तु देश में उनका प्रचार हो। स्मरण रखना चाहिए कि हिंदी-भाषा ही उन नियमों की तिरस्कार रूपा उत्पन्न हुई है।

इस काल व्याकरणकारों में रामलोचनशरण ( १९७२ ) मुख्य लेखक हैं। बालाप्रयोगी ग्रंथों में रामजीलालशरण ( १९६२ ) ने विशेष धर्म किया।

उत्तर नूतन परिपाटी कालवाले लेखकों तथा कवियों के पृथक् चयन पूर्व क्रमानुसार आगे आते हैं।

समय—सवत् १९६१

नाम—( ३८८२ ) जयशकरप्रसाद, बनारस।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—( १ ) कानन-कुसुम ( १११ कविताथो का संग्रह ), ( २ ) प्रेम पथिक ( भाव-पूर्ण छंदोबद्ध काव्य ), ( ३ ) महाराणा का महत्त्व, ( ४ ) सम्राट् चंद्रगुप्त मौर्य ( ऐतिहासिक नाटक ), ( ५ ) छाया ( चित्ताकषक ११ गल्पों का गुच्छ ), ( ६ ) उर्वशी चंपू ( सस्कृत द्वि० सस्करण ), ( ७ ) राज्यधी ( नाटिका ), ( ८ )

कल्याण ( नाटक ), ( ६ ) प्रायश्चित्त ( नाटक ), ( १० )  
 कल्याण परिणाम ( रूपक ), ( ११ ) करना ( काव्यमाला ),  
 ( १२ ) अज्ञातशत्रु ( बौद्धकालिक नाटक ), ( १३ ) रघुगुप्त  
 विक्रमादित्य ( नाटक ), ( १४ ) प्रतिभ्रानि ( गल्प, गद्य-काव्य ),  
 ( १५ ) कलाज ( उपन्यास ) । कई गल्प भी ।

विवरण—आप काशी के गण्य माय रसदास दवीप्रसादजी  
 'सुधना साहु' के सुपुत्र हैं । आप जाति के कनौजिया वैश्य हलवाई  
 हैं । वर्तमान काल के आप एक सुकवि और उच्च कोटि के नाटक-  
 रचयिता हैं । एतिहासिक विषय पर तथा गल्प प्रथ भी आपने अने  
 लिखे हैं । इनके नाटका का आज़काल बहुत मान है । भारतेन्दु से  
 इतर ऐसा नाटककार हिंदी में शायद कोई नहीं हुआ है । आपके  
 रघुगुप्त विक्रमादित्य, अज्ञातशत्रु और चंद्रगुप्त बहुत ही उच्च  
 कोटि के ग्रंथ हैं । लेखन विधि ऊँची है । नाटका में गाने तथा  
 छंद बहुत ही मनोहर अन्यात्रि मिश्रित भी लिखते हैं । भाषा  
 काठिन्य से इनके नाटक रगभमि में शायद रने नहीं जावेंगे, क्योंकि  
 सब-साधारण उन्हें समझ नहीं सकते । आपके नाटक परमोष पाठ्य  
 ग्रंथ हैं । 'उर्वशी' तथा प्रेमराज्य आपकी प्रारम्भिक रचनाएँ हैं ।  
 काशी की सुरसिद्ध मासिक पत्रिका इन्दु में इनकी गद्य तथा पद्य  
 मय रचनाएँ प्रकाशित हुआ करता थीं ।

उदाहरण—

उदित कुमुदिनी-नाथ हुए प्राची में मे—  
 रतनाकर से सुधा कलश उठता हो जैसे ।  
 धीरे धीरे उठे गई आशा से मन में ;  
 क्रीड़ा करने लगे स्वच्छ स्वच्छद गगन में ।  
 चित्रकूट भी चित्र लिखा-सा देख रहा था ;  
 मदाकिनी-तरंग उसी से खेल रहा था ।

मा का द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी क्या है  
 बृहत् जगत् जगत् न हीरे के जगत् नह,  
 साँच साँचसाँच नै प्रेम ना सुभासी क्या है  
 विद्वान् विद्वान् न हिय पीर माया है,  
 पदा रीतिबन्धु ! शास्त्र-कृता विद्वारी क्यों है

नाम—( १८८३ ) जातकीवसाह द्विपेरी ।

इनके पिता प० रामगुप्तान् कलाकार, शिक्षा सागर, मध्यप्रदेश  
 के रहनेवाले हैं। इनका जन्म स० १९२६ न दुष्का । कविता प्रेम ही  
 द्वारा व्यक्त है । निम्न लिखित प्रथम इनके प्रकाशित पुस्तकें हैं । मुद्रित  
 ग्रंथ—( १ ) जानकी-स्तव, ( २ ) भिय-स्तव, ( ३ ) शिव परिचय,  
 ( ४ ) राधा-काम्य का अष्टाव, ( ५ ) परमपूर काव्य, ( ६ ) नर्मदा-  
 माहात्म्य, ( ७ ) गार तिलक, ( ८ ) प्रेरणा पौष्ट्य । अमुद्रित—  
 ( ९ ) साहित्य-स्तव, ( १० ) काव्य-शोध, ( ११ ) भैमीया भवार,  
 ( १२ ) काव्य-कीर्तिका, ( १३ ) नारी नग्न शिल्प, ( १४ ) प्रकृति-  
 प्रसाद, ( १५ ) अन्वोत्रिपिण्ड स, ( १६ ) अन्वोत्रि-पथासा, ( १७ )  
 राधा-दृष्ट्य-स्तव, ( १८ ) रभा शुक्-संवाद, ( १९ ) विनय शतक,  
 ( २० ) समस्या-वर्षाती, ( २१ ) सानसायन, ( २२ ) महेंद्र-मञ्जरी ।

विवरण—आपने विविध विषयों के चुनाव में अच्छी पड़ता दिखलाई है। इस ओर आपके प्रथा का अभी बहुत चलन नहीं है।

नाम—( ३८८४ ) शिवनाथसिंह सेंगर।

जन्म-काल—१९३६।

प्रथ—( १ ) सिंहल द्वीप में सेंगरा का राज्य, ( २ ) गुहिलोत और नागर माझण, ( ३ ) क्षत्रिय-वशावलि-वेत्तार्यों की निरकुशता, ( ४ ) हिंदू देव मंदिर और पुराने समय के अंगरज कमचारी, ( ५ ) लार्केट्रायान, ( ६ ) भरेह के सेंगर-वश का सक्षिप्त इतिहास, ( ७ ) क्षात्र धर्म, ( ८ ) शिवनाथ भास्कर।

विवरण—आप दुसर आनदीसिंह सेंगर के पुत्र तथा श्रीनगम्मन पुर-नरेश के समीपी भ्रातृ वंश में से हैं। आपका आप बीरानेर राज्य में खासगी विभाग के अधिकारी हैं। आपने क्षत्रिय-जाति का इतिहास बड़ी जोन तथा ध्यान रीति के साथ लिखा है। आपका ऐतिहासिक धर्म श्लाघ्य है।

नाम—( ३८८५ ) शिवरत्न शुक्ल बद्धरावों, जिला रात्रवरेली।

जन्म-काल—सं० १९३६।

प्रथ—( १ ) प्रभु-चरित्र, ( २ ) श्रीरामावतार, ( ३ ) आर्य-सनातनी सवाद, ( ४ ) भिक्षां देहि, ( ५ ) स्वामी विवेकानंद के अंगरेजी लेखों तथा व्याख्यान का अनुवाद, ( ६ ) स्वामी शंकराचार्य का जीवन-चरित्र, ( ७ ) उपदेश पुष्पाजलि, ( ८ ) परदा, ( ९ ) रामावतार, ( १० ) अनु-कविता, ( ११ ) कान्यकुब्ज-रहस्य, ( १२ ) परिहास प्रमोद, ( १३ ) भरत भक्ति। यह अंतिम प्राय पाँच छ सौ पृष्ठों का उत्कृष्ट काव्य प्रथ है। रेख के विषय पर भी आप ने कई प्रथ लिखे हैं। आपका साहित्य श्लाघ्य है। यदि भरत भक्ति का समरकार-पूर्ण भारी प्रथ आपने किया नूतन एवं अच्छे विषय पर लिखा होता, तो आपका परिश्रम वास्तव में श्लाघ्य होता।

विवरण—आप प० वचनि आचारीजी के पुत्र हैं । ऊपर दिए हुए प्रथा के प्रतिरिक्त इन्होंने 'स्टेशन-मास्तर' गाइड' 'शर्टेड लूट' और 'त्रिस्तिक पञ्चाङ्ग' आदि कई अंगरेजी की भी पुस्तकें लिखी हैं । इस समय यह धीरुलसीदासजीदत्त रामायण का नाप्य कर रहे हैं । पहले आप खड़ी बोली में कविता करते थे, जिसे अब प्रभाषा में करने लगे हैं । इधर कुछ समय से पैसवारी भाषा में भी कविता करना आरंभ कर दिया है । यादें दिन हुए, आप रेल की मया से रियासत ब्रह्मवस्था बना रहे हैं ।

उदाहरण—

लागि नै गुलाब तूक आन सब कीनी भइ ,  
 मया हू मान कीन्ह काकिला बनाय कै ,  
 चाकि चारु चातक चितै कै चहुँ आर हरि ,  
 शरद ह काइ कीह खनन तुलाय कै ।  
 शिशिर, हेमत हू तुपार चार कीन्ह बहु ,  
 बलि आरयो कज दल भौरन भनाय कै ,  
 माघ सुदि पचमा शिबिर शीत दाह करि ,  
 गाइयो हे वसत दाह डोलहू चजाय कै ।  
 भायो ना निदाय अरु पाचम शरद सलि ,  
 शिशिर हेमत हू विधान घोर छायो है ;  
 जायो अतुराज सय सुख के समाज आन ,  
 मधुप निकर पिक चातक सुहायो है ।  
 मखिलका गुलाब का मउ पन फूलि रहे ,  
 मलय महेक मनसिन हू जगायो है ,  
 क्यलार् वियोग पीर अमलों सहन करे  
 अमलों न आयो कहाँ अथ ली

समय—सन् १९६२

नाम—( ३८८६ ) आत्माराम देवकर, हटा, जिला दमोह ।

रचना-काल—स० १९६२ ।

प्रथ—( १ ) श्रीलोकय सुवरा ( उपन्यास ), ( २ ) आदर्श मित्र ( उपन्यास ), ( ३ ) मनमोहिनी ( उपन्यास ), ( ४ ) भयकर दुदशा ( उपन्यास ), ( ५ ) माया मरीचिका ( उपन्यास ), ( ६ ) पानी का उलजुला ( उपन्यास ), ( ७ ) स्नेह जता ( गल्प ), ( ८ ) उसुम कला ( काव्य, अमुद्रित ) ।

विवरण—आप महाराष्ट्र क्षत्रिय धायुत सदाशिवराम देवकर के पुत्र हैं । आने अपनी प्राय सभा पुस्तकें गंगा पुस्तकाला, जयनरु को भेंट की हैं । उपन्यास विभाग पर आपने रत्नाय काम किया है ।

नाम—( ३८८७ ) कालूराम त्रिनेदी ( विशारदिक ), राजपूताना ।

जन्म-काल—स० १९२० ।

रचना-काल—स० १९६२ ।

प्रथ—  
 मुद्रित { ( १ ) बाल विवाह-खडन, ( २ ) बाल विवाह-कुठार,  
 ( ३ ) हिंदूपन की रक्षा, ( ४ ) भारत-दु ल नाशक  
 \*अपूर्व ओपधि ( ५ ) प्रार्थना उत्तीर्णी, ( ६ )  
 [ सहसराम का इतिहास ।

अमुद्रित { ( ७ ) घरू माहात्म्य, ( ८ ) भविष्यवाणी, ( ९ )  
 धम दिग्दर्शन, ( १० ) विवाह विधान ।

विवरण—आप प० जयनारायणजी तेवारी के पुत्र हैं । गौड़ माहात्म्यातगत खूदीबाल आपका घर हैं । [ प० भावरमल्ल त्रिनेदी, जसरापुर, द्वारा ज्ञात ] आप देश प्रेमी कवि हैं ।

उदाहरण—

है उपारना तो वेग खलि आघो दीनानाथ,  
 फालू कहे जेमा फिर औसर न पाओगे ;  
 मीफा है इमी गमय दूषता है हिंदी धर्म,  
 उता अतार वह संकर दिग्गओगे ।  
 नमो, गुडमारणिग, बदगी कर्न जो गाय,  
 पूर की मो दया दृष्टि ईश दरमाओगे,  
 मरजाद भिटो है देगत क्या ऊपा सिधु,  
 दरी यदि फरागे, तो पाड़े पड़तायाग ।

नाम—( ३८८८ ) जैन वध, जयपुर ।

रचना-काल—१९१२ ।

विवरण—मिस्टर जैन वध का नाम जवाहरलाल था । आप जाति के जैन वध अथ के थे । इनके पिता महाराजा जयपुर के यहाँ अच्चे पद पर थे । इनका जन्म स० १९३० में हुआ । इन्होंने एट्रेंस ही तक अंगरेजी पढ़ी थी, परंतु विद्या रसिक होने के कारण उसमें अच्ची उन्नति कर ली । आपने बंगला, उर्दू, मराठी, गुजराती और मागधी का भी अभ्यास किया । हिंदी क अद रसिक थे, और नागरी प्रचार का सदैव यत्न करते रहते थे । इन्होंने जैन मत पापक, उचित व्रता और जैन गण्ड-ग्रन्थ निम्नले थे, परंतु वे चल न सके । समालोचक पत्र भी इन्होंने चार साल तक बड़े परिश्रम तथा व्यय से चलाया, जिसके कारण हिंदी सप्ताह में इनकी बड़ा श्याति हुई । छात्रावस्था में इन्होंने हिंदी के 'कमल मोहिनी भँवरसिंह नाटक', 'न्यायमान प्रबोधक' और 'ज्ञान वद्यमाला' नाम्नी तीन पुस्तकें लिखीं । नागरी प्रचारिणी सभा के उत्साही सहायक थे । सभाओं पृथ समाजी में सदैव योग देते रहते थे । हमारे मित्र थे । इन्होंने जयपुर में एक नागरी भवन खोला था, जो अब तक अच्ची

पृथ में है । आप बड़े ही उदार, विद्या प्रेमी तथा निघ-यत्सव थे ।  
थोड़ी अवस्था में ही तथा कुटुंबियों को शोक-सागर में छोड़कर  
चेन्न सवत् १९६६ में चल गये ।

नाम—( ३८८६ ) देवीप्रसार चतुर्वेदी 'पचनेश' ।

जन्म-काल—स० १९३७ ।

रचना काल—स० १९६२ ।

विवरण—आप फ़ारोज़ाबाद के निवासी हैं । सुन्दर छंद बहुधा  
कहा करते हैं, और सुकवि हैं ।

उदाहरण—

जोग जग जाने जग त्यागिरो वियोग जाने,  
परम वियागी याग साधा सुगम है ;  
जगत विचार जगदाश मन जोगे श्रीर,  
चिन्ताचक्र करन की भान्तर निगम है ।  
प्रेम पति पागो त्यां वियाग लखनीन मन,  
सकल विकारहीन मारग अगम है ,  
यागी सब त्याग तिन्हें त्यागत वियोगी कही,  
योगिन ते याग में वियाग कौन कम है ॥ १ ॥  
धुमड़ घमड़ घन मडक अलड़ कैधों,  
सबल सरोप धार दलन उभायो है ;  
गरज अकाश के तड़ाक ताप तुगन की,  
भीगुर मँहूक वीर बाजन यज्ञायो है ।  
दामिनी प्रकाश कैधों सुले नवङ्ग वीरन के,  
धुरधा सुधादि धार धरन धसायो है ;  
प्रीपम महीप जार मान छादिने के हित  
पावस में इद्र वीर टोगो वनि आयो है ॥ २ ॥



नाम—( ३८६० ) नदकिशोर शुक्ल, घाण्डीभूपण ।

जन्म काल—सं० १९३७ ।

रचना-काल—सं० १९६२ ।

प्रथ—( १ ) उपनिषदों का उपदेश, ( २ ) सनातन धर्म धीरे  
दयानदी मम, ( ३ ) तुलसा-महिमा, ( ४ ) तुलसा सूक्ति सप्रद,  
( ५ ) भारत भरित पुरी प्रसाद-न्ययस्था, ( ६ ) खेल क्रिडासक्री  
राष्ट्रीय फाग, ( ७ ) मुष्टी सप्रदाय, ( ८ ) पच गकार प्यारे दोह,  
( ९ ) अद्वैतवाद, ( १० ) गीता रहस्य ( ११ ) भगवान् कृष्ण ।

विवरण—घाण्डी उद्गाय जिलातगत टेदा निवासी प० शिवप्रसन्न  
के पुत्र हैं । भारी व्याख्याता पूर हिंदा के गय पय लेखक हैं ।

नाम—( ३८६१ ) मदन द्विवेदी गजपुरी वी० ए०, एम्०  
ए०, एम्० वी० ।

गोरखपुर जिलातगत रायता-तटस्थ गजपुर ग य में जीविका-वश  
कुछ कान्यकुब्ज घराने था बसे हैं । इ-हा म वरयपगाधाय मगनालय  
के लुपे लोगों का कुल भी है । इसी वश म प० मातादीन द्विवेदी  
एक प्रसिद्ध रहस्य ज्ञानेश्वर और प्रज्ञभाषा क कवि थे । प० मदन  
द्विवेदी आप ही के पुत्र हुए । सं० १९४७ वि० की आपाढी प्रतिपदा के  
दिन आपका जन्म हुआ । सय परीक्षाया का अच्छी तरह पास करते  
हुए १९६५ म आपन गवनमट-कॉलेज, बनारस से वी०ए० पास किया ।  
कविता करने धीरे लख खिलन का आपका लक्ष्यन से शीक था ।

मुख्य काव्य प्रथ—( १ ) मातृभूमि से बिदाई, ( २ ) मातृभूमि,  
( ३ ) मृच्यु-शय्याशायी रावण, ( ४ ) विंध्याचल, ( ५ ) भारत  
माता गांधी के प्रति, ( ६ ) प्रेम पत्र, ( ७ ) प्रामीण दृश्य, ( ८ )  
अर्धरात्रि, ( ९ ) जन्माष्टमी, ( १० ) दासत्व, ( ११ ) गृह-लक्ष्मी,  
( १२ ) सती सुजाचना, ( १३ ) प्राथना, ( १४ ) काशी,  
( १५ ) प्रयाग, ( १६ ) हमारा प्राम, ( १७ ) विश्वामित्र

दशरथ के प्रति, ( १८ ) उच्छ्वास, ( १९ ) चण्डोर की वेदना और  
 घर्षा । आप तहसीलदारी के काम से जुटी न रहने पर भी कुछ न  
 कुछ लिखा ही करते थे । आपने निम्न लिखित और पुस्तकें लिखीं—  
 ( १ ) यधु विनय ( पद्य ), ( २ ) धनुष भग ( पद्य ), ( ३ ) स्वजीत  
 सिंह, ( ४ ) आथ ललना, ( ५ ) गारगपुर विभाग के कवि, ( ६ )  
 भारतवर्ष के प्रसिद्ध पुरुष, ( ७ ) मुगलमानी घात का भारत । शक  
 का विषय है, आपका देशांत बहुत जोड़ी अग्रस्वा में हो गया । आप  
 उच्च श्रेणी के लयक और सज्जन दश प्रेमी थे । आपकी अमर  
 रचनाओं में बहुत ही स्वाध्याय अनूपावन रहता था । यदि आप दीर्घ  
 जीवी होते, तो वर्तमान लखका में बहुत ऊँचे स्थान के अधिकारी  
 पाते । अब भी आपका रचनाएँ बहुत ही श्रेष्ठ हैं ।

#### उदाहरण—

जन्म दिया माता सा निम्ने किया सदा लाजन पावन,  
 जिसके मिट्टी जल से ही है रचा गया हम सकल तन ।  
 गिरिवरगण रचा करते हैं उच्च उठा के शृंग महान,  
 जिसके लता हुमादिक करने हमका अपनी छाया दान ।  
 माता केवल बाल काल न निव अल्प में धरती है,  
 हम अश्रु जम तलक तभी तक पालन पोषण करता है ।  
 मातृभूमि करती है भरा लालन सदा मृत्यु पर्यंत,  
 निमके दया प्रवाहा का नहिं होता सपने में भाँथत ।  
 मर जाने पर कण देहों के इसम ही मिल जाते हैं,  
 हिंदू जलते यवन इसाइ दहन इसी में पाते हैं ।  
 प्येनी मातृभूमि मरी है स्वग लोक से भी प्यारी,  
 जिसके पद-कमला पर मरा तन मन धन सब बलिहारी ।

आप बड़े ही दश भद्र तथा सज्जन थे । आपकी अकाल मृत्यु से  
 हिंदी की भारी हानि हुई है ।

नाम—( ३-६२ ) रामप्रियाजी ।

श्रीमती राधा रघुराजकुंवरि उपनाम रामाप्रिया अन्धप्रदेशात्गत जिला प्रतापगढ़ के धानरेबुल राजा प्रतापसहायपुरमिह के० सी० आई० ई० की रानी थीं । इन्होंने महाराज फण्डरट ससन के तिन्कोत्मय में ईंग्लैंड जाकर महारानी से मुलाज्जात की थी । यह वर्षी चिटुपी थीं । इन्होंने भक्ति पक्ष के अनेक रागों में रामप्रिया पिलास नामक ग्रथ रचा, जिससे डाक्री प्रिया का परिचय मिलता है । इसी ग्रथ से कुछ छंद नीचे लिखते हैं—

कहि रामप्रिया गुन गाँ, तो राम के, छंद रचें जो हुलासन सों,  
सु अलङ्कार उद्द विचारयो नर नित बैठे रई इद आमन सों ।  
फल चारिहु पाँव बिता धर्म के भय ताहि कहाँ जम पागन सों,  
फिरि अतहु स्वग पयान करै कवि बैठे विमान हुलासन सों ।

इन्होंने उपयुक्त ग्रथ के अतिरिक्त स्फुट रचना भी की है । इनकी भाषा प्राज्ञ और भाव सरल है ।

इनका स्वगयान वैशाख सं० १८७१ में हो गया । इनकी कविता श्रेष्ठ थी ।

नाम—( ३-६३ ) सत्यदत्त ।

जन्म-काल—जन्म स० १६३६ ।

यह महाशय अमेरिका से प्रिया प्राप्त करके चौट थाए है । आपका हिंदी प्रेम बड़ा सराहनीय है । अमेरिका से भी अच्छे अच्छे गद्य लेख प्रसिद्ध मसिद पत्रों में सदा छपवाते रहे, और स्वदेशानुराग पूरा लेखों में अनेकानेक बातों का वर्णन करते रहे । आपके यहाँ आ जाने से हिंदी उन्नति की विशेष आशा है । जाति के मत्रा हैं । आपने जातीयशिक्षा, मनुष्य के अधिकार आदि कई उत्कृष्ट गद्य ग्रंथ रचे हैं । बहुतदिना से आप देश भक्त सन्यासी हैं, परंतु हिंदी का काम अब भी बड़े उत्साह से करते हैं । आपने अमेरिका, जर्मनी, कैलाश

आदि की यात्राएँ की थीं, जिनके बयान पुस्तक-रूप में प्रकाशित किए गए हैं। आपकी भाषा बड़ी जोरदार होती है। कहीं-कहीं अत्युक्ति भी समझ पड़ती है। सामयिक पत्रों में आपके लेख निकलते हैं। व्याख्यान भी अच्छे देते हैं। ऐसे ही नवीन भावपूर्ण लेखकों की देश को आवश्यकता है। २०००० से ऊपर प्रतिपाद आपकी विगुल की बिक्रि चुकी है। आपके कई ग्रंथों के बँगला, गुजराती आदि में अनुवाद हुए हैं। गरम विचार अवश्य रखते हैं, किंतु इतने नहीं कि जल नाना पड़ा हो।

नाम—( ३८१४ ) हरीशरण जौहर, कलकत्ता।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—( १ ) तापाय वृत्तान्त, ( २ ) अरुगानिस्तान का इतिहास, ( ३ ) भारत के दशा राज्य, ( ४ ) रूस जापान-युद्ध, ( ५ ) पदार्थों का लड़ाई, ( ६ ) कुसुमलता आदि बहुत-से ग्रंथ।

विवरण—आप हिंदी बंगाली क समादक एवं लब्ध प्रतिष्ठ उप श्रेणी के लेखक हैं।

समय—संवत् १९६२

नाम—( ३८१५ ) काशाप्रसाद जायसवाल एम० ए०  
बैरिस्टर मिर्जापुर, हाल पटना।

जन्म-काल—सं० १९३८।

रचना-काल—सं० १९६३।

ग्रंथ—कनवार-गज़ट, कई स्फुट लेख।

विवरण—आप बड़े निलनसार सज्जन पुरुष हैं। पुरातत्व में आपने अच्छा धर्म किया है, और कई लेख लिखे हैं। प्रसिद्ध हिंदी प्रेमी थीर शास्त्री हैं।

नाम—( ३८१६ ) गिरिधर शर्मा नवरत्न।

जन्म-काल—सं० १९३८।

रचना-काल—स० १२६३ ।

प्रथ—( १ ) सावित्री, ( २ ) सुकन्या, ( ३ ) प्यतु विनोद,  
 ( ४ ) कठिनार्ई में विद्याभ्यास, ( ५ ) प्रथ शास्त्र, ( ६ ) सुधूपा,  
 ( ७ ) आरोग्य त्रिन्दर्शन, ( ८ ) जयानयत, ( ९ ) भीष्म प्रतिज्ञा,  
 ( १० ) शुद्धाद्वैत सिद्धात, ( ११ ) गीतानलि, ( १२ ) चित्रागदा,  
 ( १३ ) यागवान, ( १४ ) राई का पवत, ( १५ ) पय रत्न प्रभा,  
 ( १६ ) उपा, ( १७ ) सच्चे सुख की कुत्रियाँ, ( १८ ) समार में  
 सुख कहाँ है, ( १९ ) बारह भावना, ( २० ) रत्नकरंड श्रावका  
 चार, ( २१ ) नक्तामर दय्याथ मंदिर, ( २२ ) पंचस्त्रोत्र ।

विवरण—आप प्रधारा नागर प्राज्ञण प्रजेरवर भट्ट के पुत्र सशुद्ध के  
 विद्वान्, अच्छे कवि तथा हिंदी के सुयोग्य लेखक एवं कविता प्रेमी हैं ।

उदाहरण—

तिय सुख रई निहार करे विचार न काम का ;  
 करनी के निरधार यह मनुष्य किस काम का ।  
 गिरिधर तत्र विचार दोनो की इक जाति है ;  
 पर जग के व्यवहार यह हीरा यह कायला ।  
 जइ से उपाइ डारो डारो है सुराय मेर

प्राण घाटि धारे धर धुवाँ के मकान में ;  
 मोरी गाँठ काँ, मोहि चाह से तरास डारें,  
 अत चीर डारें धरें नाहि ब्यथा ध्यात म ।  
 स्याही माँहि बोरि बोरि करें मुग्य कारो मेरो,  
 करूँ मैं उजारो तोहूँ ज्ञान के जहान में ;  
 परहूँ पराए हाथ ! तजों न परोपकार,  
 चाहे किस जाऊँ यों कलम कहे कान म ।

नाम—( ३८३७ ) चंद्रमनोहर मिश्र बी० ए०, एल् एल्०

बी० ।

आप सरायमीरा वि.  
 यतानुलाल मिश्र के  
 प्रकृष्टाभाद म वक्रजल  
 में बनाया है। आपका  
 १९६३ से प्रारंभ होता है  
 नाम—( ३८१८ )  
 जिला सथाल ( बिहार )  
 जन्म-काल—स० १९  
 रचना काल—स० १९  
 मध्य—( १ ) जाव  
 ( ३ ) रसविदु, ( ४ )  
 ( ७ ) काला पहाड़ ( ८ )  
 ( १० ) घटकर पर काय,  
 विवरण—आप प०  
 के प्रपौर्य है। मैथिल भा.  
 प्रेस में सहायक सचाल  
 भागलपुर में कारोनेशन  
 कल्पलता नाम की पत्र  
 संपादकत्व में 'मुनभात'  
 यह पत्र धनाभाव के  
 साहित्य के अतिरिक्त  
 पाठशात्रोपयागा पुस्तकें  
 के सुलेखक हैं। वीर-वृत्ता  
 प्रकाशित होनेवाली हैं  
 एवं प्रकृति निरीक्षण तथा  
 उदाहरण—

[आप—प्रकाशित महाग्रन्थ स]  
 प्र दत्त गुहालकृष्ण श्रीविशिष्ट,  
 हैं अतिरिक्त वे कविता भी लिखी।  
 हैं अतिरिक्त प्रकाशित कृतियाँ भी,  
 उक्त कृति पत्र को प्रेम से पूज्यो यो ॥ १ ॥  
 का काल स ही  
 कृति-निष्ठि परे प्योम में सुर आता,  
 दिन गए नित्य उत्सव आता ॥ २ ॥  
 रस विभिमदा थी रहा विश्व मन्य,  
 विद्वित हुइ मदिनी हाय अय।  
 भुरनपरी आकर्मी शकसे थे,  
 परन्तु उप भाग्य क चक्र से वे ॥ ३ ॥  
 सबन महिला के दुराचार-मूर्ख  
 जह हिय गया हिंदुआ का विदूष,  
 सोतय उप बहाने तज न रक्ता निवक,  
 कतिपय मित्र धर्म की छोड़ टक ॥ ४ ॥  
 विगलित हुइ राजपूती गलों से,  
 ही भरत भुवि का जा मिली मोलों से।  
 जो बनकर प्रजा राह का व गुजाम  
 प्रति विनय से नित्य दते सबाम ॥ ५ ॥  
 त्यों दिन फिर गया, हा गई अदिवाली,  
 विद्वित हुइ ज्यो प्यजा चाँदवाली।  
 यों विद्वय-नारिमा नित्य आती नृप से,  
 यों सति जलधि में आप सारी दिग से ॥ ६ ॥  
 प्रतिपालसिंह ठाकुर, पहरा, राज्य जवपुर।

प्रथम—( १ ) बीर बाला, ( २ ) बुद्धेन्द्रचन्द्र का इतिहास ( ब्रह्मा  
प्रथम ), ( ३ ) औद्योगिक शिक्षा ( निम्न ), ( ४ ) त्वेन्द्रपचीसी,  
( ५ ) शिशु-सबोधिनी, ( ६ ) बाब्रिकाविनोदिनी, ( ७ ) पाद  
विहार, ( ८ ) बालनृद, ( ९ ) विदुरमजागर ( संपादन ),  
( १० ) होलीहजारा ( समझ ), ( ११ ) शृंगार-कुण्डली, ( १२ )  
आर्य-देव-कुल का इतिहास, स्फुट जेठ तथा कविताएँ ।

विवरण—आपका जन्म पीप तृष्य ८ शुभवार स ०११३८ को,  
आपके पैतृक नागरी स्थान पहरा म, हुआ । आप सुद्धा क्षत्रिय-  
कुलोत्पन्न दीवान भानुसिंह के सुपुत्र हैं । औद्योगिक शिक्षा पर आपको  
काशी-नागरी प्रचारिणी सभा स स्वर्ण-पदक भेंट में मिला ।

उदाहरण—

बर बार देश घुड़जखण्ड,  
तप याग-केंद्र द्विय भरतखण्ड ।  
तुम त्रिशद विष्यगिरि गगन ताहि,  
नद, गर्न गृह पाताळ जाहि ।  
रवादि सर्व सरन्न अग,  
कहुँ सुखल शुभ कहुँ कठिन श्रम ।  
कहुँ पुष्पित वन, सर, नगर, रेत,  
कहुँ निजन, निजज, विकराल रेत ।  
कहुँ विकट शीत रद कटकटात,  
कहुँ लूक कज्जवर मुलस जात ।  
यहु गढ़ गुफादि मदिर, कुटीर,  
सत, रन, तम-गुणमय जीव भीर ।  
प्रस्थान चार सरितन मैभार,  
गुण अति अनूप आनंद भगार ।

श्याम सरायमीरा जिव  
यतानुलाख मिश्र के पुत्र  
कुरुखाबाद में बसाजत क  
मं बनाया है। आपका ज  
१९६३ से प्रारंभ होता है।

नाम—( ३८६८ ) जन्म  
जिला सथाल ( विहार )  
जन्म काल—स० १९४८  
रचना काल—स० १९६१  
प्र०—( १ ) चार्ज क्रिश्चियन  
( २ ) रसविदुः ( ३ ) पत्र  
( ७ ) काला पहाड़ ( अनु  
( १० ) घटकरपर काव्य, (

विवरण—आप प० मुरा  
के प्रपौत्र हैं। मैथिल भाषा  
प्रेस में सहायक संचालक  
भागलपुर में कारानेशन अ  
कल्पता नाम की एक प्र  
सपादकत्व म 'सुप्रभात' ना  
यह पत्र धनाभाव के का  
साहित्य के अतिरिक्त धा  
पाठशास्त्रोपयोगी पुस्तकें  
के सुलेखक हैं। वीर-वृत्तांत,  
प्रकाशित होनेवाली हैं।  
एवं प्रकृति निरीक्षण तथा व

उदाहरण—

—अप्रकाशित महाकाव्य स]  
एवं पुत्र गुणाग्रहृता अधिष्ठित,  
नित्य वै धर्मि था मरिष्या।  
प्रकाशित प्रकाशनी गुणता थी,  
कृति पति को प्रेम म पूजती थी।  
गुणाग्रहृता का काव्य के काप से हा  
कुरुखाबाद का कुरु का घर से ही।  
निश्चिन्त पर ध्यान में सुर प्रता,  
त्रि दिन म्प निय कसूर प्राता ॥ २ ॥  
मधु मित्रि सदा भी रहीं विरव मध्य,  
विद्विजि हुई नदिनी द्वार अग्र।  
स) प्र सुवनवर्गी प्राक्रमी शक से ये,  
परम्यं दुष्ट नाय क चक से वे ॥ ३ ॥  
स) ववन-मदिषों के दुराचार पूर्व  
ब्रह्म द्विप गया हिदुषों का विद्वेष,  
सोतम सुषु बन्हाव तत्र म रत्न विरक,  
कतिपय मित्रे धर्म की काइ टक ॥ ४ ॥  
स) विचित्रि हुई राजवृत्ती तलों से,  
भी भरत मुनि का जा मित्रा मागजों स।  
जो बनकर प्रजा राइ का वे गुलान  
अति विनय स नित्य इते सजान ॥ ५ ॥  
ज्यों दिव फिर गया, हा गहू अदिराजी,  
विद्विजि हुई ज्यों प्यवा चाँदवाजी।  
ज्यों विजय-भारिमा नित्य प्राता कृपा से,  
ज्यों सरि जलधि में आप सारा दिशा से ॥ ६ ॥  
विश्वकर्मिह ठाकुर, पहारा, राज्य ब्रतपुर।



ग्रंथ—( १ ) बीर बाबा, ( २ ) युद्धखण्ड का इतिहास ( वक्ता प्रथम ), ( ३ ) धौयोगिक शिक्षा ( निष्पत्ति ), ( ४ ) खेडपचीसी, ( ५ ) शिशु-सबोधिनी, ( ६ ) बालिकाविरोधिनी, ( ७ ) बाळ विहार, ( ८ ) बाळट्ट व, ( ९ ) यिदुरमजागर ( संपादन ), ( १० ) होलाहनारा ( समझ ), ( ११ ) शृंगार-कुण्डली, ( १२ ) आर्य दय-कुण्ड का इतिहास, स्फुट जेम्ब तथा कवितापुँ ।

विवरण—आपका जन्म पौष-शुक्ल = पुष्यवार स ०१२३८ का, आपके पैतृक जागीरी स्थान पहरा म, हुआ । आप युद्धखण्ड शत्रिय-कुलोत्पन्न वीरान भानुसिंह के सुपुत्र हैं । धौयोगिक शिक्षा पर आपको काशी-नागरी प्रचारिणी सभा से स्वर्ण पदक भेंट में मिला ।

उदाहरण—

पर धीर दश युद्धखण्ड,  
 तप याग-केंद्र द्विय भरतखण्ड ।  
 गुण विशद विष्णुगिरि गगन तार्दि,  
 नद, गर्त गूढ़ पाताळ जादि ।  
 रत्नादि सर्व सयज्ञ श्रंग,  
 कहुँ सुखल शुभ कहुँ कठिन शृंग ।  
 कहुँ पुष्पित वन, सर, नगर, खेत,  
 कहुँ निजन, निजल, विक्राल रेत ।  
 कहुँ विकट शीत रद कटकटात,  
 कहुँ लूक कठेवर मुखस जात ।  
 बहु गढ़ गुफादि मन्दिर, फुटीर,  
 सत, रज, तम-गुणमय जीव भीर ।  
 प्रख्यात चार सरित्तन मँझार,  
 तुव अति अनूप आनँद अगार ।

निरपर धनाय तिथति प्रमूर,  
 यमोप कोल सुर नाग सूर।  
 दिति-रनुम, गरुड द्राविड मुर्गाड,  
 मुन सरळ आरजन दिप यर्गाड।  
 कुल सूर - धद्र सता महान,  
 क्रिय सभ्य प्रतिष्ठित ससधान।

नाम—( १६०० ) रामचंद्र द्विवेदी ( श्रीपति ) प्रान अमौली,  
 जिला बलिया।

"RAMA CHAND BHIVEDI"

जन्म-काल—स० १२३८।

JAIN 1111, B1

प्रथ (मुद्रित)—

BIKANER 11111111

( १ ) उपदेश-कुमुमाकर, ( २ ) धर्म, ( ३ ) ईश्वरस्तित्व, ( ४ )  
 गार्धी-गुण धर्म, ( ५ ) अर्थ-अर्थ, ( ६ ) भारत विद्याप-ब्रह्मासी,  
 ( ७ ) हिंदू जाति का सगठन और सुधार, ( ८ ) हिंदुओं का बंधन,  
 ( ९ ) शिक्षा, ( १० ) प्रामाण्य और अर्थहीन भाव।

( अमुद्रित )—

( १ ) भारत-सुधार, ( २ ) कवि मन्नाट् तुलसीदास, ( ३ ) वैदिक  
 सतसई, ( ४ ) खीलावती-जना ( भास्कराचार्य-कृत खीलावती  
 नामक गणित प्रथ का पद्यानुवाद ), ( ५ ) सुख शक्ति-सरावर,  
 ( ६ ) तुलसी-सतसई की टीका, ( ७ ) हिंदू धर्म-मीमांसा, ( ८ )  
 श्रीपति शतक ( १०० भिन्न विषया पर कविताएँ )।

विवरण—द्विवेदीजी हिंदी भाषा के अत्यन्त ममज्ञ हैं। आप हिंदी-  
 साहित्य के जेष्ठतम तथा कवि होने के अतिरिक्त अत्यन्त व्याख्याता  
 भी हैं। वैद्यनाथ धाम के गुरुकुल-स्थापना का मुख्य अर्थ आप ही  
 को है। [ प० गंगाधरसिंह शर्मा, नवलपुर द्वारा शत ]

उदाहरण—

चितै चित चाहि प्रभु जितै जित हेरयो तहाँ ,  
 तेरा ही महान गुन गान गहने पर ,  
 जल धल एको फरूँ खाकी न लखात प्रभु ,  
 पूरन समान पीठ याम दहने परे ।  
 यागन में, बेलिन में श्रीपति चमेलिन म ,  
 चद्र-सूर लोक में प्रतच्छ कहन पर ;  
 पद्मे जगदीश ! तेरी महिमा अपार खनि ,  
 पदित मुकवि हूँ को मौन रहने पर ।  
 ( श्रीपति शतक से )

थलकार गुण हीन दीन दूपा की पीना ,  
 छद छटा की छीन छाव छमता की छीना ।  
 भाव भक्ति रस अग भग नीरस सब भाँती ,  
 नहि कत्रि-कुल आदेय द्वेष दुःख प्रख्याती ।  
 कवि 'श्रीपति' जू गाधी-चरित ससि समान सुपमा रमी ,  
 होहहि सजन सुखदा सदा कलुषा बुल कविता तमी ।  
 ( गाधी-गुण दर्पण से )

समय—स० १६६४

नाम—( ३१०१ ) गगाप्रसात् उपाध्याय, एम० ए० द्या-  
 निवास जीरो रोड, प्रयाग ।

जन्म-काल—स० ११३८ ।

रचना-काल—स० ११६४ ।

ग्रन्थ—( १ ) शेवसपियर ( छ भागा में समालोचनात्मक भूमि-  
 काशों-सहित ग्रन्थ ), ( २ ) पशु-पक्षी-वृत्तात ( चौदह भागों में ),  
 ( ३ ) अँगारज जाति का इतिहास, ( ४ ) विधवा विवाह-भीमासा,  
 ( ५ ) आर्य-समाज, ( ६ ) आस्तिकवाद, ( ७ ) श्रीशंकराचार्य

प्रणीत 'भव-सिद्धांत समूह' का भाषानुवाद, ( ८ ) अद्वैतवाद ( माधुरी पत्रिका में प्रकाशित ), ( ९ ) धर्मपद ( समालोचनात्मक भाषानुवाद, अभी छपना है ), ( १० ) आद्य समाज के सिद्धांत विषयक ७१ ट्रेड ( हिंदी में ६७ थीर अँगरेजी में ४ ) ।

विवरण—आपका मुख्य निवास स्थान मधरा, जिला पय है । इस समय यह दयानंद हाइस्कूल, प्रयाग के मुख्यालय प्रधानाध्यापक हैं । आपने प्रयाग विश्वविद्यालय से अँगरेजी तथा गणितशास्त्र में एम्. ए. की उपाधि प्राप्त की । यह महाराज एक उच्च काटि के विद्वान् हैं, और अपने विद्वान्-पुत्र प्र. ओ. द्वारा उन्होंने हिंदी साहित्य की प्रशसनीय पुष्टि की है । ऊपर लिखे हुए प्रयोगों के अतिरिक्त आपने पाठशास्त्रोपयोगी नए उग के व्याकरण ग्रंथ तथा पाठ्य पुस्तक रची है, और इस उपलक्ष्य में सरकार ने आपको पारितोषिक प्रदान करके सम्मानित किया है । आजकल आप 'समाज-सुधार तथा 'महिला-व्यवहार-चंद्रिका' नामक पुस्तकें लिख रहे हैं ।

नाम—(३६०२) चंद्रमौलि मुकुंत, हिंदू विश्वविद्यालय, काशी ।

जन्म-काल—सं० १८३६ ।

रचना काल—सं० १८६४ ।

ग्रंथ—( १ ) मानस दण्ड ( अर्थकार ग्रंथ ), ( २ ) अक्षर ( अक्षर की नीचनी तथा तत्कालीन इतिहास ), ( ३ ) शरीर और शरीर रक्षा ( ४ ) भाषा-व्याकरण, ( ५ ) अरिपण्यटिक-शिक्षा प्रणाली ( अक्षरलिखित पढ़ाने की विस्तृत रीति ), ( ६ ) मनोविज्ञान ( Psychology ), ( ७ ) रचना विचार ( हिंदी में निबंध तथा पत्र लेखन की रीति ), ( ८ ) नाट्य क्रियामृत ( अँगरेजी में 'लेस टल्स की रीति पर ), ( ९ ) जानकी-गीत संस्कृत की टीका ( अक्षर लिखित ), ( १० ) सादी कृत 'क्रीमा' का हिंदी पद्यात्मक अनुवाद, ( ११ ) गणित की प्रथम पुस्तक ( हिंदी ), ( १२ ) ज्ञानर प्राइमरी

अरिधम्यटिक, ( १३ ) फ्राइनल अरिधम्यटिक, ( १४ ) हिंदी-पाठ-संग्रह भाग दा, ( १५ ) हिंदी-समवायली, ( १६ ) मैकमिलन हिंदी रीडर ।

विवरण—आप धीयुत पंडित काशीरीनजी मुकुल के पुत्र हैं । आपके पूवन वैसवादे में गगातट-पती भागू सेवा ग्राम के निवासी थे, किंतु अब इनका मुख्य निवास स्थान लखनऊ जिले के अतगत अन-रीली ग्राम है । आप काशी-हिंदू विरविद्यालय म ट्रेनिंग-कॉलेज के प्रिंसिपल ( अध्यक्ष ) हैं । इन्होंने कुछ काल तक 'कान्यकुब्ज' तथा 'श्रीजी भद्रवार' का संपादन किया है । आप उच्च कोटि के गद्य-लेखक हैं ।

नाम—( ३१०३ ) माणिक्यचंद्र जैन वी० ए०, वी० एल्० ।

यह खडवा मध्यप्रदेश के वकील थे । आपकी अरस्था प्राय ३० साल की थी कि आपका देहात हो गया । हिंदी प्रथ प्रसारिणी मडली, प्रयाग के मंत्री और बड़े ही उत्साही पुरुष थे । हिंदी के अनेकानेक प्रथ राज-खोजकर प्रकाशित करते थे । हमारा हिंदी-नवरत्न और यह इतिहास आप ही ने बड़े उत्साह पूर्वक हममें सहठ लेकर प्रकाशित किया था । गद्य के एक उत्तम लेखक थे । बड़े ही होनहार पुरुष थे, तथा हिंदी की उन्नति की आपसे बड़ी आशा थी, परंतु शोक है, इनका देहात युवावस्था में ही हो गया । हिंदी के बड़े प्रेमी तथा उत्साही थे । इनकी अकाल मृत्यु से हिंदी की बड़ी हानि हुई ।

नाम—( ३१०४ ) गुहम्मदबखीरखॉं, ग्राम हिंदोरिया, जिला दमोह ।

जन्म-काल—स० १९३२ ।

रचना-काल—स० १९६४ ।

प्रथ—( १ ) वसंत बहार ( अप्रकाशित ), ( २ ) सर्ती सुलोचना ( नाटक, अप्रकाशित ), ( ३ ) सदाचार दपण ( अप्रकाशित ), ( ४ ) स्फुट कविताएँ ।

विवरण—दयरी निवासी सैयद अमीरअली 'भीर कवि' आपके काव्य-गुरु थे। इस समय आप अभ्यापक हैं। आपकी रचनाएँ फ़ानपुर से निकलनेवाले 'शुक्रवि' पत्र में प्रायः निकला करती हैं।  
[ श्रीयुत लक्ष्मीप्रसादजी मिश्री द्वारा ज्ञात ]

उदाहरण—

देश-सुधार करें न कष्ट, पर भेष-सुधार अनेक करेंगे।  
आपुस न करि घेर सदा, करहूँ नहिँ धम में प्यान धरेंगे।  
मानत साथ न बेदन की, कुल-जाज नहाज हुवाय भरेंगे,  
जे नर दूसरे द्वारनि तै गर कूरहि स्नान-समान फिरेंगे।  
पालहु धर्म सबै अपनो, नहिँ दूसरे के पथ पैर अड़ाओ।  
आपुस घेर तजौ अबहु, निज देख दशा हिय में शरमाओ।  
आत छनेह करी सबसे अरु फूट प्रपच को दूर भगाओ,  
जान 'धज़ीर' सु आँसर को अब देश के शीस कलकरुन लाओ।

नाम—( ३६०५ ) रामचंद्र शास्त्रा, लाहौर।

जन्म-काल—स० १६३६।

रचना-काल—स० १६६४।

प्रथ—( १ ) शुद्धि, ( २ ) भारतगौरवादर्य।

विवरण—उत्कृष्ट लेखक।

नाम—( ३६०६ ) रामजीशरण विंध्याचलप्रसाद, ग्राम डरपुर  
नाग, चंपारन ( बिहार प्रांत )।

जन्म-काल—स० १६३६।

प्रथ—( १ ) श्रीरूपायन, ( २ ) विनय रत्नाकर, ( ३ ) अष्टक  
नदर, ( ४ ) कामादिरहीकरण, ( ५ ) नाम यश-दण्ड, ( ६ )  
नाम यश कुशर, ( ७ ) जानकी-वय तरंगिणी ( ८ ) सीता सुवर्ण  
पत्नी, ( ९ ) गुरु-वदना, ( १० ) विलोम-दोहापत्नी, ( ११ ) सारदा  
छबोदर, ( १२ ) प्रह्लाद सौगध, ( १३ ) कलह मोचनी, ( १४ )

विपत्ति भजन, ( १५ ) कल्प-लतिरु, ( १६ ) हनुमन्-पताका, ( १७ ) महासकट मोचन, ( १८ ) तुलसी-चाळीसा, ( १९ ) सूर-चाळीसा, ( २० ) भय सागर नीला, ( २१ ) सद्गुरु-चाळीसा, ( २२ ) प्रेम विवर्दिनी, ( २३ ) आनन्द गुटिका, ( २४ ) गीत मुष्कानली, ( २५ ) सज्जन चरित्र माला, ( २६ ) विष्णुचक्र संहिता, ( २७ ) भगवद्-भयूग, ( २८ ) रामस्तव तिलक, ( २९ ) प्रेम-कुसुमात्रलि, ( ३० ) विनय पुष्पात्रलि, ( ३१ ) पत्र विन्यास ।

विवरण—आप धीमास्तव कायल्य मुशी शिवप्रसादलाबजी के पुत्र तथा धनने प्रांत के एक जर्मादार हैं । आपकी रचनाओं विशेषतया भक्ति-भाग से सबंध रखती हैं । आपके उक्त ग्रंथों में से केवल दो ही ग्रंथ—प्रेम विवर्दिनी तथा नाम-यश-दर्पण—मुद्रित हुए हैं । प्रेम-विवर्दिनी इनकी सबसे पहली रचना है । आयुर्वेद, ज्योतिष, तंत्र-ज्ञान इत्यादि विषयों के भी आप ज्ञाता हैं ।

उदाहरण—

अथ उर धरि पद् राम सिया का, धृत याना जग हृदय दिया को ;  
गावत विशद चरित तिन करा, जिन करणा करि मानस प्रेरो ।  
जो परिपूरण तम अविताशी, अगुण मक्ष साधेत निरासी ;  
मानन अग्रधि प्रकटि जलजाता, भयउ भरु-अलिगण सुगदाता ।  
सोइ अमर गोलाक सरोजा, प्रकट होइ लुवि कोटि मनोजा,  
द्वार फीन चरित जग पावन, सोइ भनत कछु परम मुखावन ।  
ऋतयुग ताना ध्यान समाधी, ग्रेता त्रिविध यज्ञ आराधा ;  
द्वार करि परिचया पी की, जो तरनर पार्वहि गति भीकी ।  
सो वर फल सज्जन फलि पार्वहि, हरि-यश गहि सदम धन गार्वहि,  
बिनु हरि यश विशेष कलि माहीं, तरन उपाय आन कछु नाहीं ।

राम-रूपा दुर्गा यथा, असुर महाकलिकाल ;

पाठक जन वर त्रिबुधगण टारहि विपत्ति विशाल । (कृष्णायन से)

नाम—( ३१०७ ) रामदेवजी प्रोफेसर ।

इनका जन्म स० ११३१ में हुआ । इस समय आप गुदकुल काँगड़ी में अध्यापक हैं । इनका बनाया भारतम्प का इतिहास प्रशंसनीय है । यह बड़ा गवेषणा-गुण प्रथ है । ऐसे प्रर्थों की इस समय आवश्यकता है । श्रीर भी कई प्रथ आपने बनाए हैं ।

नाम—( ३१०८ ) हरिदत्त 'दीन' ।

जन्म काल—स० ११२१ ।

रचना-काल—स० ११६४ ।

प्रथ—( १ ) प्रथ-दीपक, ( २ ) मामान्य नीति, ( ३ ) दीन-चिनोद, ( ४ ) भ्रुव-चरित्र, ( ५ ) सदायं धर्म-रहस्य, ( ६ ) सुवण माला, ( ७ ) माप नियम-चद्रिका, ( ८ ) संगीत-रामायण ।

खेमीपुर जिला आज़मगढ़ के निवासी । सरयूपारीण ब्राह्मण पं० प्रयागदत्त त्रिपाठी के आप पुत्र हैं । आप एक सुकवि हैं ।

उदाहरण—

कहे जात न्यारे हैं अमिन्न जल बीच धार  
सत चित धानेद सरूप गुण धाम हैं ;  
भक्तन के इत बार-बार अवतार धरि  
जग बीच चरित पसारत जलाम हैं ।  
भिन्न भिन्न देश में अनेक भौति पूजे जात,  
भिन्न भिन्न भाषा में अनेक नाके नाम हैं ;  
कई द्विज 'दीन' गौरी शशु राधा श्याम जग  
जननी-जनक सो हमारे सियराम हैं ।

समय—स० १९६५

नाम—( ३१०९ ) कृष्णकाव मालवीय, प्रयाग-निवासी ।

जन्म-काल—लगभग स० ११४० ।

रचना-काल—स० ११६२ ।



प्रथम—( १ ) साहागरात अथवा बहुरानी को सीख, ( २ ) मातृत्व, ( ३ ) मनोरमा के पत्र ।

विवरण—आपने मातृत्व के विषय पर इन प्रथों द्वारा अच्छा प्रकाश डाला है । देश प्रेम के कारण कई बार जेल यात्रा कर चुके हैं । अम्युदय तथा मर्यादा का संपादन बहुत दिन तक किया था । सोहागरात बहुत ही विख्यात है ।

नाम—( ३११० ) गदाधरसिंह ( सजौलिया निवासी ), पो० सिधौली, जिला सीतापुर ।

जन्म काल—स० १९४० ।

जन्म-समय के उपलक्ष्य में आपकी लिंगी सर्वैया नीचे दी जाती है—  
मेखहि लगन बिजै दशमी पुध संवत चाक्षिम प्राष्ठ शुभी धे ;  
सप्तम राहु परातन केतु मयक बृहस्वति कक म चौथे ।  
षष्ठम सुरज शुक्ल उर्षी ये गदाधर हैं परे पूछा न कौथे ;  
दूसरे में शनि, तीसरे मंगल, यों प्रगटात समै प्रद नी धे ।

प्रथम—( १ ) माहित्य दिवाकर ( नायिका-भेद ), ( २ ) भामिनी दुर्भाज ( अमकाशित ) ।

विवरण—आप धीरमशरसिंहजी के पुत्र तथा श्रीमान् राजा सूर्यप्रकाशसिंह सी० आइ० इ० कमलदाधिय के भतीजे हैं । यह महाशय न० २२६७ तथा न० २७४४ पर आप हुण इसी नाम के दो कवियों से भिन्न हैं । हमको यह कवि धीरयुत महिपालसिंहजी, सिजौलिया ( सीतापुर ) द्वारा ज्ञात हुण हैं । इन्होंने पद्मस्तुत्रों का भी अच्छा ध्यान किया है ।

उदाहरण—

बा सुकुमार अती जगै सुदर आभा है केशन में तम तोम की ;  
सादी पोशाक सों जो छवि जाहिर अंगहि अंग धौं रोमहि रोम की ।

( ७ ) भावार्थ जीवन, ( ८ ) विरय प्रपञ्च, ( ९ ) प्रवाहगामिनी  
माता, ( १० ) शशाङ्क, ( ११ ) बुद्ध-चरित्र काव्य, ( १२ ) मुलसी  
दासजी की जावनी तथा उनके प्रयोगों की आलोचना, ( १३ ) जायसी  
की समालोचना, ( १४ ) हिंदी साहित्य का इतिहास ।

विवरण—रूचि पूरा लेखक है। मिश्रयधु नाम सुनते ही जाम बाहर  
हो जाते हैं। और पाठों में उच्च कोटि के लेखक और समालोचक हैं।

नाम—( ३६१६ ) विश्वभरनाथ शर्मा 'कौशिक', कानपुर ।

जन्म-काल—लगभग स० १९४६ ।

रचना काल—स० १९६६ ।

प्रथम—( १ ) चित्रशाला ( दो भाग ), ( २ ) मा ( दो भाग ) ।

विवरण—आप 'हिंदी मनोरंजन' के संपादक रह चुके हैं। कहानी  
के अच्छे लेखक हैं। आरका कहानियाँ सगाइस्य जीवन पर अच्छा  
प्रकाश पड़ा है।

नाम—( ३६१७ ) शमानंद पाठक उपदेशक, खानपुर, औरैया,  
जिला इटावा ।

जन्म-काल—स० १९३६ ।

कविता-काल—स० १९६६ ।

प्रथम—( १ ) कुमार-कतव्य ( दो सस्करण ), ( २ ) रामायण  
शिष्यावली ।

विवरण—आप कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न प० मातादीन पाठक के पुत्र  
हैं। इनको धार्मिक कामा से विशेष प्रेम रहता है, और इनका बहुत  
सा समय वैदिक धर्म प्रचार, अनेक गुरुकुल तथा अनायासों के  
कार्यों में व्यतीत हुआ है। इनके सद्यः इनके तीन ज्येष्ठ भ्राता—पाठक  
ब्रह्मदत्त, डॉक्टर शृण्णदत्त तथा प० दयानिधिजी पंडीत—भी हिंदी-  
लेखक और व्याख्याता हैं।

उदाहरण—

एकहि भानु प्रकाशित ह्ये जग दूरि करै तम-राशि सदा हौं ;  
जीव सबै भयभीत रहैं मृगराज यसै इक कानन माहौं ।  
त्यौं हाँ शमानंद एक हि सूर दलै अरि के गय शक्त नाहीं ;  
एकहि धर्म प्रचार करै जग धार्मिक जो न यसै छल छाहौं ॥ १ ॥  
धार्मिक भूप जबै जग के निज ध्यान प्रजा हित माहि धरेंगे ,  
त्योहि शमानंद वीर दुमार सबै मिलके पुरपाथ करेंगे ।  
दीन दशा लखि कैं तबही जगदीश कृपा करि दुख हरेंगे ,  
रे मन साहसि ! साहस छोड़ न, साहस से सब काज सरेंगे ॥ २ ॥  
नाम—( ३६१८ ) सत निहालसिंह ।

जन्म काल—लगभग स० १६४० ।

रचना-काल—१६६४ ।

ग्रंथ—रुद्र श्रोतस्वी, गभीर, गणेश्या पूषा लेख ।

विवरण—आप अमरिका, योरप, जापान आदि हो आण हैं ।  
ज्ञाता पुरुष ह ।

नाम—( ३६१६ ) सरस्वतीदेवी ।

यह नगवा गाँव जिला आजमगढ़ के कवि त्रिपाठी रामचरित्रजी  
की पुत्री हैं । इनके छठ कानपुर के रसिक-निध्र में दूपा करते थे ।  
इनके पिता दुमराँव महाराज के यहाँ रहते थे । इनके बनाए ( १ )  
नीति निबोध, ( २ ) सुदरी सुपथ, ( ३ ) वनिता षष्ठु और ( ४ )  
शारदा शतक ग्रंथ अच्छे हैं । इनमें से नीति निबोध हमने देखा है ।

उदाहरण—

ऊधय, जाय कइो उनसा पठई पतिया जिन जुक्ति भरी है ;  
ज्ञानी यही जग जाहिर हैं, जिनसों नाहि नायन हू उबरी है ।  
साधन योग स्वतंत्र समाधि विरक्त भरी जग सों फुबरी है ,  
ए प्रजयाल बिहाल महान बियोग की मारु प्रचड परी है ।

विवरण—आपने शालोपयोगी भारतवप, दासबोध, रामदास चरित, हिंदी मेघदूत आदि लगभग ३० ग्रंथ लिखे हैं। आर्यमित्र तथा हिंदी चित्रमय-जगत् का सपादन भी कर चुके हैं। आप हिंदी के लक्ष्य प्रतिष्ठ लेखक और कवि तथा निरभिमानी एवं सद्दय साहित्य सेवी हैं। आजकल दारागंज, प्रयाग में तरुण भारत प्रयावली का संचालन एवं प्रकाशन करते हैं।

समय—संवत् १९६५

नाम—(३६२२) चंद्रभानुसिंह दीवान बहादुर, गरौली, यु. देलरगड।

जन्म काल—लगभग स० १९३२।

रचना-काल—स० १९६७।

आपकी गणना स्वतंत्र रईसों में है। आप हिंदी के प्रेमी हैं तथा कविता भी उत्कृष्ट करते हैं। आपने एक दोहा सतसई लिखी है। आध्यात्मिक विषय में आपके बहुत गहन एवं गंभीर विचार हैं। हमारे मित्र भी हैं। आपकी रचना प्रशंसनीय है।

उदाहरण—

उभकि भिन्कि नकुचत हंसत लसत दगन रतनाड ।  
 लचत मचत पलिया चहत बनत न कजु मनमाह ।  
 दिन बैद्यत दिन दिन उद्यत, भुज उठाय जमुहात ।  
 अरी सखा, यह गात की बात कही नहि जात ।  
 श्वेत चद सख ही कहत "याम चद नहि जोत ।  
 मुने जे गोकुल में हते उदय सु पच्छिम होत ।  
 मुरलीधर मुरली धरी मुरली धरत बनै न ;  
 मुरलीधर मुरली धरें मुरली धरत न बनै ।  
 बनसी बनसी बन बसी घाबन बसी विशेष ,  
 बन विनमी बन बन बसी बनसी बनसी भेष ।

रयामरग बदरा निरखि गरज मधुर मुन कान ;  
 घोड़ ध्यान मुनियान फिर भारत जटा पखान ।  
 कज नखत खँभ केहरी बापी सर्प कपाल ;  
 मृग कशोत बिय धनुष शुक रयाम सेत शशिबाल ।

नाम—( ३३२३ ) छोटेराम शुक्ल महोपदेशक, साहित्यरत्न ।

जन्म-काल—स० १३४२ ( गुरदानपुर में ) ।

रचना-काल—स० १३६७ ।

ग्रंथ—( १ ) हीरे की भँगूठी, ( २ ) सत्सार पाश, ( ३ ) सन्धे  
 और भूटे मित्र, ( ४ ) विनोदी फण्डराम, ( ५ ) सच्चा आत्म-  
 समर्पण, ( ६ ) भक्ति प्रदीप भजनमाला, ( ७ ) बंदी का बदला  
 नेकी, ( ८ ) बाबू खटमलचंद, ( ९ ) चतुर घषा, ( १० ) बड़ई  
 लोगों की अवस्था, ( ११ ) घर का किङ्गलघ्न, ( १२ ) मारवाड़ी  
 व्याकरण, ( १३ ) प्रण-पालन, ( १४ ) बालकों का सुधार, ( १५ )  
 घरघरा, ( १६ ) ज्योतिष प्रवेश ।

विवरण—आप बाला के शुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण गुजराती,  
 मराठी, हिंदी तथा अँगरेजी जानते हैं । आपने पंचराज मासिक  
 पत्र का कई वर्षों तक संपादन किया । आजकल मारवाड़ी हितकारक  
 के संपादक हैं । आप हिंदी के सुकवि एवं अच्छे गद्य लेखक हैं ।

उदाहरण—

हे ईश, हे दयामय, इस जाति को सुधारो ;  
 कुत्सित पुरीतियाँ से अब शीघ्र ही उबारो ।  
 हम भूलकर भले ही तुमको अचेत सोयें ;  
 पर तुम हमें कभी भी जगदीश, मत बिसारो ।  
 हे प्राथना यही अब, मुझ शांति से रहें सब ;  
 कट जायँ दु ख सारे, शरणागतों को तारो ।

विवरण—आपने शास्त्रोपयोगी भारतत्रय, दासबोध, रामदास चरित, हिंदी मेघदूत आदि लगभग ३० ग्रंथ लिखे हैं। आर्यमित्र तथा हिंदी मित्रमय जगत् का संपादन भी कर चुके हैं। आप हिंदी के लघु प्रतिष्ठित लखक श्रीर कवि तथा निरभिमान्नी एवं सद्भय साहित्य-सेवी हैं। आनन्द दारागज, प्रयाग में तदर्थ भारत-प्रयावली का संपादन एवं प्रकाशन करते हैं।

समय—संवत् १९६७

नाम—(३६२२) चंद्रभानुसिंह दीवान बहादुर, गरौली, बुंदेलखण्ड।

जन्म काल—लगभग सं० १९३५।

रचना-काल—स० १९६७।

आपकी गणना स्वतंत्र रईसों में है। आप हिंदी के प्रेमी हैं तथा कविता भी उत्कृष्ट करते हैं। आपने एक दोहा सतसई लिखी है। आध्यात्मिक विषय में आपके उद्भूत गहन एवं गभीर विचार हैं। हमारे मित्र भी हैं। आपकी रचना प्रशंसनीय है।

उदाहरण—

उभक्ति भिभक्ति मरुत्त हंसत जसत दान रतनाठ ;  
 ज्वलत मचत चलिवा चहत बनत न कजु मनमाह ।  
 दिन धैर्यत दिन दिन उद्यत, भुज उठाय जमुहात ;  
 श्री सखा यह गात की बात कही नहि जात ।  
 श्वेत चद सब ही कहत श्याम चद नहि जोत ;  
 मुने जे गोकुल म हते उदय सु पच्छिम होत ।  
 मुरलीधर मुरली धरी मुरली धरत बनै न ;  
 मुरलीधर मुरली धरें मुरली धरत न बनै ।  
 बनसी बनसी बन बर्षी पावन बसी विरोप ,  
 बन बिनसी बन बन बसी बनसी बनसी नेप ।

रयामरंग बदरा निरखि गरज मधुर मुन कान -  
छोड़ ध्यान मुनियान फिर मारत जटा पतान ।  
कज नखत खँभ केहरी वापी सर्प कपाल ,  
मृग कपोत चिंज धनुष शुक रयाम सेत शशिवाल ।

नाम—( ३६२३ ) छोटेराम शुक्ल महोपदेशक, साहित्यरत्न ।

जन्म-काल—स० १६४२ ( बुरहानपुर में ) ।

रचना-काल—स० १६६७ ।

ग्रंथ—( १ ) हीरे की अँगूठी, ( २ ) ससार पाश, ( ३ ) सच्चे  
तेर भूठे मित्र, ( ४ ) विनोदी फण्डराम, ( ५ ) सच्चा आत्म-  
मपण, ( ६ ) भक्ति-प्रदीप भजनमाला, ( ७ ) यदी का बदला  
की, ( ८ ) यावू खटमलचद, ( ९ ) चतुर घषा, ( १० ) बदई  
तोर्गो की अवस्था, ( ११ ) घर का किङ्गल्लखर्च, ( १२ ) मारवाड़ी  
याकरण, ( १३ ) मण-पालन, ( १४ ) बालकों का सुधार, ( १५ )  
रत्ना, ( १६ ) ज्योतिष प्रवेश ।

विवरण—आप बाला के शुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण गुजराती,  
मराठी, हिंदी तथा अँगरेज़ी जानते हैं । आपने पंचराज मासिक  
पत्र का कई वर्षों तक संपादन किया । आजकल मारवाड़ी हितकारक  
के संपादक हैं । आप हिंदी के सुकवि एवं अच्छे गद्य लेखक हैं ।

उदाहरण—

हे ईश, हे दयामय, इस जाति को सुधारो ,  
कुत्सित उरीतियों से अब शीघ्र ही उबारो ।  
हम भूलकर भले ही तुमको अचेत सोवें ,  
पर तुम हमें कभी भी जगदीश, मत विसारो ।  
है प्रार्थना यही अब, सुख शांति से रहें सब ,  
कट जायँ दुःख सारे, शर्यागतों को तारो ।

विवरण—आपने शालोपयोगी भारतवप, दासबोध, रामदास चरित, हिंदी मेघदूत आदि लगभग ३० ग्रंथ लिखे हैं। आर्यमित्र तथा हिंदी चित्रमय नाट्य का संपादन भी कर चुके हैं। आप हिंदी के लब्ध प्रतिष्ठ लेखक श्रीर कवि तथा निरभिमानी एवं सद्दय साहित्य-सेवी हैं। आज़कल दारागज, प्रयाग में तरुण भारत-प्रयावर्ती का संचालन एवं प्रकाशन करते हैं।

समय—संवत् १९६७

नाम—(३६२२) चंद्रभानुसिंह दीवान बहादुर, गरौली, बुंदेलखण्ड।

जन्म काल—लगभग सं० १९३५।

रचना-काल—स० १९६७।

आपकी गणना स्वर्णरत्न रत्नों में है। आप हिंदी के प्रेमी हैं तथा कविता भी उत्कृष्ट करते हैं। आपने एक दोहा सतसई लिखी है। आध्यात्मिक विषय में आपके बहुत गहन एवं गभीर विचार हैं। हमारे मित्र भाई। आपकी रचना प्रशंसनाय है।

उदाहरण—

उभक्ति निभक्ति मकुचत हैंसत लसत हगन रतनाड ;  
लचत मचत चलिया चहत बनत न कछु मनमाह ।  
झिन बँठत झिन झिन उठत, भुच उठाय जमुहात ;  
अरा सखा, यह गात की यात कही नहि जात ।  
खेत चद सब ही कहत श्याम चद नहि जोत ;  
मुने ज गोकुल म हते उदय सु पश्चिम होत ।  
मुरलीधर मुरली धरी मुरली धरत बनै न ;  
मुरलीधर मुरली धरें मुरली धरत न बैन ।  
बनसी बनसी बन बनी चाबन बसी विशेष  
बन बिनसी बन बन बसी बनसी बनसी भेष ।



श्यामरंग घदरा निरखि गरज मधुर मुन कान ;  
 छोड़ ध्यान मुनियान फिर भारत जदा पखान ।  
 कज नावत खँभ केहरी वापी सर्प कपाळ ;  
 मृग कपोत विष धनुष शुक श्याम सेत शशिपाळ ।

नाम—( ३६२३ ) छोटैराम शुक्ल महोपदेशक, साहिबपुरल्ल ।

जन्म-काल—सं० १६४२ ( गुरदानपुर में ) ।

रचना-काल—सं० १२६७ ।

ग्रंथ—( १ ) हीरे की भँगूठी, ( २ ) ससार पाश, ( ३ ) सच्चे  
 और छूटे मित्र, ( ४ ) विनादी फण्दराम, ( ५ ) सधा आत्म  
 समपण, ( ६ ) भक्ति प्रदीप भजनमाला, ( ७ ) बदी का बदला  
 नेकी, ( ८ ) यादू लटमलपद, ( ९ ) चतुर चपा, ( १० ) बदर्ई  
 लोगों की अवस्था, ( ११ ) घर का क्रिज्जलप्रचे, ( १२ ) मारवाड़ी-  
 न्याकरण, ( १३ ) प्रण-पालन, ( १४ ) बालकों का सुधार, ( १५ )  
 घरजा, ( १६ ) ज्योतिष प्रवेश ।

विवरण—आप बाला के शुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण गुजराती,  
 मराठी, हिंदी तथा अंगरेजी जानते हैं । आपने पंचराज मासिक  
 पत्र का कई वर्षों तक संपादन किया । आजकल मारवाड़ी हितकारक  
 के संपादक हैं । आप हिंदी के सुकवि एवं अच्छे गद्य लेखक हैं ।

उदाहरण—

हे ईश, हे दयामय, इस जाति को सुधारो ;  
 कुत्सित कुरीतियों से अब शीघ्र ही उबारो ।  
 हम भूलकर भले ही तुमको अचेत सोवें ;  
 पर तुम हमें कभी भी जगदीश, मत विसारो ।  
 हे माथना यही अब, सुख शांति से रहें मय ;  
 कष्ट जायें दुःख सारे, शरणागतों को तारो ।

नाम—( ३१२४ ) रामेश्वरी नेहरू, देहली ।

जन्म-काल—स १९४२ ।

प्रथ—सपादिका स्त्री दपण ।

विवरण—आप दीवान नरेंद्रनाथ डिप्टी कमिश्नर मुखतान की पुत्री और ब्रजबाबू नेहरू असिस्टेंट एडवाउ टेंड जनरल, देहली की धर्मपत्नी हैं । आपकी विद्वत्ता एवं उत्साह सराहनीय है । आपने भाषा-व्याकरण-सबकी कुछ काम किया है ।

नाम—( ३१२५ ) लक्ष्मीनारायणसिंहजी चौधरी 'ईश', काशी ।

जन्म-काल—स० १९४२ ।

रचना-काल—स० १९६७ ।

प्रथ—( १ ) रस-रत्नाकर ( नायिका भेद ), ( २ ) धनरथय वध ( ऐतिहासिक खड्ग काव्य ), ( ३ ) श्यामा-श्याम विहार ( राधा-कृष्ण का भाग, चरित्र-वर्णन ), ( ४ ) अन्योत्रि-प्रबंध, ( ५ ) पद्य प्रबंध ( स्फुट विपर्या पर कविता ), ( ६ ) वीरादश काव्य ( ऐतिहासिक काव्य ), ( ७ ) कानन-कुसुम ( समस्या-पूरियाँ ), ( ८ ) इन्दुमती ( उपन्यास ) ।

विवरण—आप भूमिहार माह्यण चौधरी शिवमगलसिंहजी के कनिष्ठ पुत्र हैं । जमींदार हैं, और महाजनी का भी व्यवसाय करते हैं ।

उदाहरण—

अखिल, अलख औ अनादि निरुपाधि आपि

व्याधि हू ते रहित अनादि आदि रस है ।

अवनि अकस में अभायो अवकास भरि,

भास-वास प्रायो रहै देत ना दास है ।

सखिल समीर हू ते व्यापक विभूति जाकी,  
 होत अतुभूत पूत पावन सरस है,  
 मोरकर महत ममोदकर पारावार,  
 प्रेम-पथ पूरित विपुष ते सरस है।

नाम—( १६२६ ) लक्ष्मीप्रसाद मिश्री 'रमा'।

रचना-काल—स० १६४४।

रचना-काल—सं० १६६७।

ग्रंथ—( १ ) ययु वियोग ( १६७२ ), ( २ ) रेवा-माहात्म्य  
 ( १६६८ ), ( ३ ) फग-संग्रह ( १६६८ ), ( ४ ) स्तुति प्रबंध  
 ( १६६८ ), ( ५ ) दृष्टांत-माला ( १६६८ ), ( ६ ) धनु-गवैया  
 ( १६६८ ), ( ७ ) क्रव्याली गुलपहार ( १६६९ ), ( ८ )  
 श्रीगौपुष्कर ( १६७० ), ( ९ ) प्रभाती-संग्रह ( १६७० ), ( १० )  
 प्रेम प्रबोध ( १६७२ ), ( ११ ) जावना चौदह रत्न कलगी  
 ( १६७२ ), ( १२ ) काल का चक्र ( १६७६ ), ( १३ ) उर्वशी-  
 चरित्र ( १६७२ ), ( १४ ) राजकुमारी उषा ( १६७३ ), ( १५ )  
 स्वर्गा गना ( १६७४ ), ( १६ ) सती मदाक्षसा ( १६७४ ), ( १७ )  
 प्रेमशतक ( १६७४ ), ( १८ ) जावनी लक्ष्मी विलास ( १६७५ ),  
 ( १९ ) महाकवि केशवदास और उनके ग्रंथ ( १६७८ ), ( २० )  
 राष्ट्रीय रत्न ( १६८० )।

विवरण—आप ठातुर अयोध्याप्रसादजी के पुत्र, हटा जिला  
 दमोह में निवास करते हैं तथा विश्वकर्मा-वंशज शिल्पकार हैं।  
 आपने विविध विषयों पर अच्छे ग्रंथ बनाए हैं।

उदाहरण—

आप भ्रमर ने कहा कर से हे मुसदापी, भानंद-कद;  
 सध्या समय आप क्यों मुझको कर खेते हो उर म बंद।  
 उधर अकेली अजिनी मेरी कष्ट अनेकों सहती है;

नाम—( ३६२४ ) रामेश्वरी नेहरू, देहली ।

जन्म-काल—स १६४२ ।

ग्रन्थ—सपादिका आ दर्पण ।

विवरण—आप दीवान नरेंद्रनाथ डिप्टी-कमिश्नर मुजतान की पुत्री और यजुलाल नेहरू असिस्टेंट पञ्जट टेंट जनरल, देहली की धर्मपत्नी हैं । आपकी विद्वत्ता एवं उत्साह सराहनीय है । आपने भाषा-व्याकरण-संबंधी कुछ काम किया है ।

नाम—( ३६२५ ) लक्ष्मीनारायणसिंहजी चौधरी 'ईश', काशी ।

जन्म-काल—स० १६३२ ।

रचना-काल—स० १६६७ ।

ग्रन्थ—( १ ) रस-रजाकर ( नायिका भेद ), ( २ ) अनरण्य षड ( ऐतिहासिक नव कव्य ), ( ३ ) श्यामा-श्याम विहार ( राधा-कृष्ण का भाग, चरित्र-वर्णन ), ( ४ ) अन्योक्ति प्रबंध, ( ५ ) पद्य प्रबंध ( स्फुट विषयों पर कविता ), ( ६ ) वीरादर्श कान्य ( ऐतिहासिक कव्य ), ( ७ ) कानन-कुसुम ( समस्था-पूर्तियाँ ), ( ८ ) इंदुमती ( उपन्यास ) ।

विवरण—आप भूमिहार ब्राह्मण चौधरी शिवमालसिंहजी के कनिष्ठ पुत्र हैं । जमींदार हैं, और महाजनी का भी व्यवसाय करते हैं ।

उदाहरण—

अलिङ्ग, अलङ्ग औ' अनादि निरुपाधि आधि

व्याधि हू ते रहित अनादि आदि रस है ।

अवनि अक्षस में अभायो अवकास भरि,

आस-वास प्रायो रहै देत ना दस है ।

सखिल समाप्त हूँ ते व्यापक विभूति प्राची,  
 होत धनुभूत पूत पावन सरस है;  
 मोदकर महत प्रमोदकर पारावार,  
 प्रेम-पय-पूरित पियूष ते सरस है।

नाम—( १६२६ ) लक्ष्मीप्रसाद निखी 'रमा'।

जन्म-काल—स० १६४४।

रचना-काल—सं० १६६७।

ग्रन्थ—( १ ) यदु वियोग ( १६७२ ), ( २ ) रेवा-माहात्म्य  
 ( १६९८ ), ( ३ ) फाग-संग्रह ( १६९८ ), ( ४ ) स्तुति प्रथम  
 ( १६९८ ), ( ५ ) दृष्टान्त-माला ( १६९८ ), ( ६ ) घनुर-गवैया  
 ( १६९८ ), ( ७ ) कृन्वाली गुलबहार ( १६९९ ), ( ८ )  
 श्रीगीपुकार ( १६७० ), ( ९ ) प्रभाती-संग्रह ( १६७० ), ( १० )  
 प्रेम प्रबोध ( १६७२ ), ( ११ ) छावनी चौदह रूप कलगी  
 ( १६७२ ), ( १२ ) काल का चक्र ( १६७६ ), ( १३ ) उर्वशी  
 चरित्र ( १६७२ ), ( १४ ) राकुमारी उपा ( १६७३ ), ( १५ )  
 स्वर्गा गता ( १६७४ ), ( १६ ) मती मदाजसा ( १६७४ ), ( १७ )  
 प्रेमशतक ( १६७४ ), ( १८ ) छावनी छपती विलास ( १६७५ ),  
 ( १९ ) महाकवि केशवदास और उनके ग्रन्थ ( १६७८ ), ( २० )  
 राष्ट्रीय रूप ( १६८० )।

विवरण—आप ठाकुर अयोध्याप्रसादजी के पुत्र, हय जिजा  
 दमोह में निवास करते हैं तथा विश्वकर्मा-वंशज शिल्पकार हैं।  
 आपने विविध विषयों पर अष्टौ ग्रन्थ बनाए हैं।

उदाहरण—

आप धरत ने कहा कज से हे सुखदायी, आनंद-कद,  
 सध्या समय आप क्यों मुझको कर लेते हो उर में बंद।  
 उधर अकेली अलिनी मेरी कष्ट अनेकों सहती है।

मम वियोग के दुःसह दुःख से निशि में व्याकुल रहती है ।  
 कदा जलज ने—हे मल्लिक, जिमि तुमको अखिनी प्यारी है ।  
 इसी तरह से मेरी भी तो मिश्र ! आपसे प्यारी है ।  
 अपने अपने प्रेमी को पा सब ही हृदय लगाते हैं ;  
 जीव-हीन, जड़ होकर भी हम 'लड़मी' नेम निभाते हैं ।  
 देखे मैंने विश्व-बीच में जितने सब सुंदर उपमान ;  
 दीरघ पदा उन सभमें तेरा सौन्दर्य मुझको छविमान ।  
 राधा शशि में मिली दखने ध्यान की सुदस्ताई ;  
 जग किरणों में भी लड़मी, अघराग्यो की घरणाई ।  
 आई हूँ जब से अवास में, यही देखती प्रणाधार ;  
 किया न होगा कभी आपने मेरे ऊपर निरक्षुल प्यार ।  
 निममता भुँझलाना देखा, सुने सदा ही वचन कठोर ,  
 प्रेम सिंधु में मुझे डुगाने कभी न आई प्रेम दिलोर ।  
 ज्ञात नहीं, इस निष्ठुरता में मजा कौन-सा पाते हो ,  
 हम देखना है निर्मोही, कब तक तुम डुकराते हो ।

नाम—( ३६२७ ) विश्वेश्वरनाथ रेड, साहित्याचार्य, शास्त्री,

एम्० आर० ए० एस्० ।

आपका जन्म स० १९४७ म, जाधपुर में, हुआ । आप ए०  
 मुकुंदमुरारिजी रेड के सुपुत्र हैं । रेडजी जाति के करमीरी ब्राह्मण  
 हैं । सस्कृत-साहित्य की आचार्य परीक्षा में सर्व प्रथम रहने के कारण  
 जयपुर-राजकीय विद्या विभाग से आप एक पदक द्वारा गौरवान्वित  
 किए गए । जोधपुर ऐतिहासिक विभाग में आपने अश्वसनीय कार्य  
 किया, थीर बने रहते हुए डिगल भाषा की कविता प्रकृतित करने  
 में बंगाल-पश्चिमादि सौसायटी को सहायता दी । जोधपुर राज्य में  
 यह अजायबघर, पुस्तकालय, ज्योतिष-कार्यालय, पुरातत्त्वानुसंधान  
 आदि कई संस्थाओं के सफलता पूर्वक अभ्यस्य रह चुके हैं । इन्हें

पुरातत्त्व-कार्य से बड़ा प्रेम है, और बड़े परिश्रम से प्राचीन मुद्रा-लिपि, कारीगरी, मूर्तियाँ, चित्र आदि विषया का इन्होंने अच्छा ज्ञान संपादन किया है। इनकी अनेक लेख मालाएँ तथा कविताएँ सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में निकल चुकी हैं, और निकला करती हैं। आपने 'शैव सुधाकर'-नामक संस्कृत ग्रंथ की भाषा-टीका लिखी, तथा जोधपुर नरेश जसवंतसिंहजी-कृत वेदांत पंचक और महाराजा मानसिंहजी-रचित कृष्ण विलास-नामक ग्रंथों का योग्यता-पूर्वक संपादन किया है। आपकी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक रचना 'भारत के प्राचीन राजवंश'-नामक ग्रंथ है। आपका धर्म, पुरातत्त्व विभाग पर, उपयोगी तथा श्लाघ्य है।

नाम—( ३१२८ ) शिवप्रसाद गुप्त ( बाबू ) काशी निवासी।

जन्म-काल—लगभग स० ११४२।

रचना काल—स० ११६७।

ग्रंथ—पृथ्वी प्रदक्षिणा, स्फुट।

विवरण—'छात्र' दैनिक पत्र के स्वामी। आप बनारस के बड़े रईसों में हैं। हिंदी तथा काप्रस के बड़े उत्साही कार्यकर्ता हैं। देश-हित के कारण कई बार जेल जा चुके हैं। हिंदी विद्यापीठ कई छात्र लगाकर स्थापित की। वह एक प्रकार से पेसा विश्व-विद्यालय है, जिसमें निवास करते हुए छात्र विद्याभ्ययन करते हैं।

नाम—( ३१२९ ) सूर्यप्रसादजी त्रिपाठी कवि।

आपका जन्म सन् ११४२ विक्रमी में चाराबकी ( यू० पी० ) के समीप ठाकुरपुर नामक ग्राम में हुआ। आप कान्यकुब्ज जात्य हैं। आपके पिता का शुभ नाम प० भागवतप्रसादजी था। आपकी स्वतंत्रता आपके अनुज प० श्यामसुंदरजी की कर्तव्यपरायणता तथा सहनशीलता पर बहुत कुछ निर्भर है। छंद अच्छे बनाते हैं। हम लोगों के मित्र हैं। साहित्यिक सभाओं में जनता आपका मान

हिंदी-लेखक हैं। आप विनोद मिय, सादे रहन-सहनवाले एक प्रतिभा  
पूर्ण एवं प्रभावशाली नाटककार और प्रहसन पूर्ण लेखक हैं।

नाम—( ३६३२ ) लल्लीप्रसाद पाडेय।

जन्म-काल—स० १९४३।

रचना-काल—स० १९६८।

प्रथ—( १ ) ठोक-पीटकर वैद्यराज, ( २ ) रायबहादुर, ( ३ )  
नव कथा, ( ४ ) पत्र पुण्य ( ५ ) पंच पल्लव, ( ६ ) भवत चरित  
माला, ( ७ ) अमियनिमाई-चरित्र, ( ८ ) जगद्गुरु का आविर्भाव,  
( ९ ) जीवन का मुख्य।

विवरण—आप सागर निवासी पं० रामलालके पुत्र तथा सुलेखक  
हैं। हास्य-रस पर आपने विशेष ध्यान दिया है।

नाम—( ३६३३ ) हेम तकुमारीदेवी ( भट्टाचार्य )।

आपका जन्म स० १९४३ में, लखनऊ में, हुआ, और विवाह  
स० १९६६ में। आपको हिंदी से बड़ा प्रेम है, और उसकी उन्नति  
में आप सदैव अग्रशील रहती हैं। प्रयाग प्रदर्शनी से लाभ-नामक  
१५० पृष्ठों के निबंध पर आपको २००) का तथा आदर्श पुरुष  
रामचंद्रवाले लेख पर २०) का पुरस्कार मिला। आपने छी अन्वय,  
युक्त प्रदश का व्यापार, और वैज्ञानिक कृषि-नामक तीन प्रथ  
लिखे हैं।

समय—संवत् १९६६

नाम—( ३६३४ ) चतुरसेन शास्त्री, दिल्ली निवासी।

जन्म-काल—लगभग स० १९४५।

रचना-काल—स० १९६६।

विवरण—आपने कई औपन्यासिक तथा अन्य परमोच्च अर्थी  
के प्रथ लिखे हैं। आप वैद्य हैं, और वैद्यक पर भी एक भारी प्रथ  
लिख चुके हैं। भाषा बढ़िया है और आध्यात्मिकार्थ अच्छी लिखते



हैं। आप यत्नमान काज के प्राय सर्वोत्कृष्ट गद्य लेखक हैं। आपकी भाषा संस्कृतभाषा का सहारा न लेते हुए भी प्रुय जागरदार हैं, तथा भाव मयल और मनार गक हैं।

नाम—( ३६३५ ) मथुराप्रसाद बाजपेयी, सराय मालीजों, लखनऊ-निवासी।

जन्म-काल—स० १६४४।

आपने स्वदश प्रेम-सबधी विषयों पर बहुत-से अध्ये छंद लिखे हैं। आप हमार भागनेय और मुकवि हैं।

उदाहरण—

भारत के नीनिहालो, आशा षकी षगी है ;  
उछ काम कर दिवा दो, गाधी कि ली लगी है ।  
स्वदर क वख तन में, सीना खुला हो रन में ;  
गोली चळ मनासन, हिंसा न होय मन में ।  
आग को उग वदा दो, अंगद-समान पग हो ;  
मुस्क्यान मुख मनाहर, मोहन कि जीत तय हो ।

नाम—( ३६३६ ) महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, वी० एम्-सी०, रायवरेली।

जन्म-काल—स० १६४४।

जन्म-स्थान—ग्राम बिम्बौली, तहसील हंडिया, जिला इलाहाबाद।

ग्रंथ—( १ ) विज्ञान प्रवेशिका ( दो भाग ), ( २ ) गुरुदेव के साथ यात्रा ( पूर्वादर् ), ( ३ ) समुद्र की सैर ( बंगला के 'सागर रक्ष्य'-नामक पुस्तक का अनुवाद ), ( ४ ) सूर्य सिद्धांत का विज्ञान भाष्य ( मूल संस्कृत के ग्रंथ का अनुवाद ), ( ५ ) स्फुट वैज्ञानिक खेरा ।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ मुंशी शिवयदनलालजी के पुत्र हैं। आपने अपनी शिक्षा कायस्थ पाठशाला तथा म्योर-सेंट्रल कॉलेज, इलाहाबाद में प्राप्त की। इन्होंने अपने ग्रंथों तथा लेखों द्वारा

हिंदी-साहित्य के वैज्ञानिक अग की अरुड़ी श्री-वृद्धि की है। आपका सूर्य सिद्धांत विज्ञान भाष्य एक महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रतीत होता है। श्रीवास्तवजी का कथन है कि उनका यह ग्रंथ लगभग १००० पृष्ठों में पूरा होगा। समय-समय पर 'विज्ञान' मासिक पत्रिका में आपके ज्योतिष-संबंधी लेख निकला करते हैं। इस समय यह गवर्नमेंट हाइस्कूल, रायबरेली में अध्यापक हैं। यदि आनंदकल के सुखेखर खोग अपने अनुकूल दो-एक विषय चुनकर केवल उन्हीं पर अपनी-अपनी शक्ति लगावें, तथा परिश्रम एवं साधना से काम लें तो गमाज का ज्ञान-वृद्ध न अर्थात् हो, हिंदी में स्थायी साहित्य बने, तथा उसकी श्रीवृद्धि भी अर्थात् हो। श्रीवास्तव महाशय ऐसे ही अपने अनुकूल विषय पर ही विशेष ध्यान देनेवाले साहित्यिक महापुरुष समझ पड़ते हैं।

नाम—( ३६३० ) सोमेश्वरदत्त शुक्ल वी० ए० ।

इनका जन्म स० १९४४ में, सीतापुर में, हुआ। आपने अपने मातामह से उच्चराधिकार में अर्थात् सपदा पाई। इतिहास एवं अन्य विषयों के कई अच्छे ग्रंथ लिखे हैं। आप विद्या-न्यसनी हैं। छाटे छाटे कई ग्रंथ बना चुके हैं। कुछ कविता भी की है। हॉगलैंड, फ्रांस, जर्मनी के इतिहास तथा सावित्री सत्यवान-नाटक अच्छे हैं। हमारे मित्र भी हैं।

समय—संवत् १९७०

नाम—( ३६३८ ) इंद्रजी, दिल्ली ।

जन्म-काल—स० १९४६ ।

रचना-काल—लगभग स० १९०० ।

ग्रंथ—( १ ) नेपोलियन बोनापार्ट की जीवनी, ( २ ) प्रिंस बिस्माक का जीवन-चरित्र, ( ३ ) गैरिवाल्दी, ( ४ ) उपनिषदों की सूचिका, ( ५ ) सस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुसंधान, ( ६ )

राष्ट्रीयता का मूल मंत्र, ( ७ ) राष्ट्री की उन्नति, ( ८ ) बालोपयोगी वैदिक धर्म, ( ९ ) स्वयं-दश का उद्धार ।

विवरण—आपका जन्म जालंधर शहर में हुआ था । आप स्वर्ग-लोक-वासी महात्मा श्रद्धानंद के सुपुत्र हैं । इस समय दैनिक 'अजु न' पत्र के व्यवस्थापक तथा संपादक हैं । यह महाशय 'स्वयं प्रचार', 'विजय', 'श्रद्धा' आदि पत्रों के संपादक रह चुके हैं ।

नाम—( ३१११ ) ( राय ) कृष्णदास वैश्य, काशी निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४८ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७० ।

आप काशी के रईस और चित्र कला के प्रेमी तथा हिंदी के उत्साही लेखक हैं । आपने नागरी प्रचारिणी सभा में एक कला भवन स्थापित किया है, तथा उसमें अपने यहाँ के बहुत-से चित्र प्रदान किए हैं । आप इस समय नागरी प्रचारिणी सभा के मंत्री और उत्साही कार्यकर्ता हैं । कई उपन्यास छायावादों पर लिखे हैं । हमको ये उपन्यास पसंद हैं, यद्यपि हमारे कई मित्र इस मत के विरोधी हैं ।

नाम—( ३१४० ) कृष्णविहारी मिश्र, गँधौली, सोतापुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४२ ।

रचना-काल—सं० १९७० ।

ग्रंथ—( १ ) देव बिहारी, ( २ ) मतिराम प्रधावली । संपादक माधुरी तथा साहित्य-समालोचक ।

विवरण—प्रसिद्ध कवि मजरज के भतीजे तथा लेखराज के पौत्र हैं । आजकल मेनापति के ग्रंथ का संपादन किया है । हिंदी-साहित्य के अच्छे तथा अपने समय के परमोत्कृष्ट समालोचक हैं ।

नाम—( ३६४१ ) गोविंदवल्लभ पत, रानीसेठ, जिला  
अल्मोडा ( हिमालय ) ।

जन्म-काल—स० १६२६ ।

कविता-काल—स० १६७० ।

प्रथ—प्रकाशित—

( १ ) भारती-कविता गुच्छ ( सं० १६६० ७५ तक की  
रचनाएँ ), ( २ ) जिली ( कहानी, १६७६ ), ( ३ ) कनू की  
खोपड़ी ( प्रहसन, १६८० ), ( ४ ) पञ्चा नगर वन ( प्रहसन,  
१६८० ), ( ५ ) एकादशी ( कहानियाँ ), ( ६ ) वरमाळा ( पौरा  
णिक नाटक, १६८० ) ।

अप्रकाशित—

( १ ) बड़ी—( इतिहास-मूलक उपन्यास ), ( २ ) उदयोदय—  
( ऐतिहासिक नाटक ), ( ३ ) अर्द्धा गिनी—( सामानिक उपन्यास ),  
( ४ ) रवहार ( प्रहसन ) ।

विवरण—पतजी ने अपनी उच्च शिक्षा हिंदू विश्वविद्यालय,  
काशी में प्राप्त की । बचपन से ही ललित कलाओं की ओर आपकी  
रुचि थी । रंग-मंच तथा नाटक आपके प्रियतम विषय हैं । आपने  
साहित्य, मगीत तथा चित्रकारी में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है ।  
नाटक तथा कहानियाँ लिखने के उपलक्ष में आपने स्वर्ण और  
रौप्य पदक भी प्राप्त किए हैं । आपके वरमाळा नाटक की बड़ी  
धूम है । विषयों के चुनाव में आपने बहुत बड़े चातुर्य से काम  
किया है । नाटक तथा उपन्यासों के विषय आपके खूब बढ़िया  
हैं । प्रहसन की भी अच्छा पुट रखते हैं । पद्य-रचना नी भाव-पूर्ण  
की है । वर्तमान समय के कवियों में आपका स्थान ऊँचा है ।  
यदि राजनीति के कामों में बहुत व्यस्त न रहा करते, तो आप  
एक अमर कवि होते ।

उदाहरण—

छाया

सावधान हो, पद रखता हूँ फिर भी तब कोमल छाया ;  
 बार बार है दलित हो रही क्या पूंसे चकती धामा ।  
 रवि की किरणें तुली हुई हैं करने को मेरा अस्तान ;  
 तेरे चरणोभय में मुक्कड़ा जाँपा निखता पथिक ! मुजान ।

में

सुरसरि हिय में छलक रहा है मेरे ही चाँसू की धार ;  
 नव वसंत की बर सुपना म बिररा है मेरा मृगार ।  
 यही जा रही मलयानिल में मेरी है चंचल निर्यास ;  
 इस प्रपुञ्ज शतदल म विकसित है मेरा हा हास विलास ।  
 नील गगन की सघन घटा में छिपा हुआ है मेरा चंद्र ;  
 बालक के पावन मुख में है प्रतिबिम्बित मेरा आनंद ।  
 फोयल के इस कलित कठ म प्रतिभ्वनित है मेरा गान ,  
 इस अमाम की सीमा म परिमित है मेरा ही अवसान ।

नाम—( ३६४२ ) पतुरसिंह राष्ट्रवर बीका शृगोल, पो०  
 नेहर, सरदार शहर, रियासत बीकानेर ।

जन्म-काल—स० १६४० ।

कविता-काल—लगभग स० १६७० ।

ग्रंथ—अर्वाचीन प्रार्वीन सौरदा-सग्रह ( सरस्वती प्रेस, भावनगर  
 में मुद्रित, स० १६७३ ) ।

विवरण—आप ठाकुर वज्रतावरसिंहजी के पुत्र तथा ठाकुर मुकन-  
 सिंह आप बीका शृगोल के पौत्र हैं । आजकल यह महाशय कृत्या  
 सरदारशहर, रियासत बीकानेर में सब इस्पेक्टर चुनिसे हैं । हिंदी  
 भाषा के अच्छे शाता हैं । इनकी समस्या-पूर्तियाँ और स्फुट कविताएँ

‘कवींद्र वाटिका’, ‘कान्य-पताका’ आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित  
शुकी है।

उदाहरण—

मोतिन की मंग है मुगंग नाहि नेत्र नाहि—

तीसरो मुकु कुम को टीको है मथान में,  
चंद्र नाहीं भाज है, सुशेष नाहीं काजो बेणी,  
वीप नाहीं ओपे खरी लेख्य गजान में।  
में हूँ बाजा पीवत ओ खावत धनुरा नाहीं,  
वाटिका का सैर करूँ पीवहू के ध्यान में;  
मैन नू तो मारे मोहि हर जाने दूँदत है,  
बिहरत पीवुरी कनक-स्रतिकान में।

स्फुट सोरटा

कामिनि-नैन कटार, कोमल हिय नर कामि को,  
पैठ जाति है पार, धारे बक चितौन की।  
विद्या बसी विदेश, धर्म-कर्म घर पै नहीं;  
तीन विना घनुदेश, दशा जु बिगरी देश की।

नाम—( ३१४३ ) चदावाई जैन ( पडिता )।

जन्म-काल—स० ११४५।

ग्रंथ—( १ ) उपदेश रत्नमाला, ( २ ) बालिका विनय, ( ३ )  
सौभाग्य-रत्नमाला, ( ४ ) निषध-रत्नमाला, ( ५ ) कृतम्य-रत्नमाला।

विवरण—आप माननीय नारायणदासजी, वृंदावन, की पुत्री हैं।  
आपने सासूत तथा जैन-साहित्य का अरुद्धा अभ्यास किया है।  
जैन-महिम्नादर्श की संपादिका हैं। आरा में आपने अपने ही व्यय  
से एक जैन-बालाभ्रम खोल रखी है, जिसमें बहुत-सी बालिकार्थ  
शिक्षा ग्रहण करती हैं।

नाम—( ३१२४ ) जो० एन्० पयिक ।

आपका पूरा नाम गौरीशकरजी शुक्ल है । उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर आपका प्रधान ध्येय अपनी मातृ भाषा के साहित्य की पूर्ति करना रहा है । इनकी रचनाओं के प्रधान विषय व्यापारिक तथा सामाजिक हैं । व्यापार, उद्योग और अर्थशास्त्र-जैसे गहन विषयों पर इन्होंने जगभग चौदह ग्रंथ रचे हैं, जिनमें से मुख्य करेंसा, स्ट्राव एक्सचेंज, शिल्प विज्ञान, व्यापार-संगठन रीति, भारतीय कपड़े का व्यापार, भारतवर्ष के उद्योग धंधे, भारतवर्ष के बैंक आदि हैं । सामयिक हिंदी, अँगरेज़ी तथा बँगला पत्रों में आपके व्यापारिक लेख समय समय पर निकला करते हैं । हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षा पर भी इन्होंने विशेष रूप से आंदोलन किया है, और इस उपलक्ष में ग्वालियर में मरस्वती पुस्तकालय स्थापित हुआ है । हिंदी साहित्य के व्यापारिक अंग की आप अच्छी धी-भृदि कर रहे हैं । 'धर्मानुदय' तथा 'व्यापार' पत्रों का संपादन भी आपने सुचारु रूप से किया है । आप हमारे परमोपयोगी, अमशील तथा उच्च श्रेणी के लेखक हैं ।

नाम—( ३१४५ ) देवीदत्त शुक्ल, साँईखेड़ा, जि० उन्नाव ।

जन्म-काल—लगभग स० १९४२ ।

रचना-काल—स० १९७० ।

विवरण—यह हिंदी के अच्छे लेखक तथा 'मरस्वती' के संपादक हैं । 'किंकर' नाम से कविताएँ भी लिखा करते हैं ।

नाम—( ३१४६ ) प्रेमकुँवरि महारानी, दतिया ।

जन्म-काल—सं० १९४५ ।

ग्रंथ—( १ ) चंद्रप्रकाश, ( २ ) स्फुट पद ।

विवरण—शाधवन्धनीय शिष्या । रचना अच्छी है ।

'कवींद्र-वाटिका', 'काल्य-पताका' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित  
सुकी हैं।

उदाहरण—

मोतिन की मग है सुगग नाहिं नेत्र नाहिं—  
तीसरो सुकु कुम को टीको है मथान में,  
चंद्र नाहीं भाज है, सुरोप नाहीं कज्जी बेणी,  
बीप नाहीं ओपै लरी लेवण गजान में।  
मैं हूँ बाला पीवत ओ खावत धतूरा नाहीं,  
वाटिका की सैर करूँ पीवहूँ के ध्यान में;  
मैन नू तो मारे मोहि हर जाने हूँ दत है,  
बिहरत बीजुरी कनक-कतिकान में।

स्फुट सोरटा

कामिनि-नैन कटार कोमल हिय नर कामि को,  
पैठ जाति है पार, धारे बक चितौन की।  
विद्या बसी विदेश, धर्म-कम घर पै नहीं;  
तीन विना चतुदेश, दशा जु विगरी दश की।

नाम—( ३३४३ ) चदाबाई जैन ( पंडिता )।

जन्म-काल—स० १३४५।

प्रथ—( १ ) उपदेश रत्नमाला, ( २ ) बालिका विनय, ( ३ )

सौभाग्य-रत्नमाला, ( ४ ) निबंध-रत्नमाला, ( ५ ) कृतव्य-रत्नमाला।

विवरण—आप माननीय नारायणदासजी, वृंदावन, की पुत्री हैं।  
आपने संस्कृत तथा जैन-साहित्य का अच्छा अभ्यास किया है।  
जैन-महिम्नादयों की संपादिका हैं। आरा में आपने अपने ही स्व  
से एक जैन-बालाभन खोज रक्ता है, जिसमें बहुत-सी बालिका  
शिक्षा प्रदत्त करती हैं।



नाम—( ११४४ ) जा० एम्० पचिक ।

आपका पूरा नाम गौरीशंकरजी शुक्ल है । उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर आपका प्रधान भ्येय अपनी माता भाषा के साहित्य की प्रति करना रहा है । इनकी रचनाओं का प्रधान विषय व्यापारिक तथा सामाजिक है । व्यापार, उद्योग और अर्थशास्त्र जैसे गहन विषयों पर इन्होंने लगभग चौदह ग्रंथ रचे हैं, जिनमें से मुख्य करेंसों, स्ट्राक एक्सचेंज, शिफ्ट विज्ञान, व्यापार-संगठन रीति, भारतीय फण्डे का व्यापार, भारतवर्ष के उद्योग धंधे, भारतवर्ष के बैंक आदि हैं । सामंयिक हिंदी, अंगरेजी तथा बंगला पत्रों में आपके व्यापारिक लेख समय-समय पर निकला करते हैं । हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं पर भी इन्होंने विशेष रूप से आंदोलन किया है, और इस उपलक्ष में ग्वालियर में सरस्वती पुस्तकालय स्थापित हुआ है । हिंदी साहित्य के व्यापारिक धरा की आप अच्छी धी-बुद्धि कर रहे हैं । 'धर्माभ्युदय' तथा 'व्यापार' पत्रों का संपादन भी आपने सुचारु रूप से किया है । आप हमारे परमोपयोगी, धर्मशील तथा उच्च श्रेणी के लेखक हैं ।

नाम—( ११४५ ) देवीदत्त शुक्ल, साँईयेड़ा, जि० उन्नाव ।

जन्म-काल—लगभग सं० ११४२ ।

रचना-काल—सं० ११७० ।

विषय—यह हिंदी के अच्छे लेखक तथा 'सरस्वती' के संपादक हैं । 'किंकर' नाम से कविताएँ भी लिखा करते हैं ।

नाम—( ११४६ ) प्रेमकुंवरि महारानी, दतिया ।

जन्म-काल—सं० ११४५ ।

ग्रंथ—( १ ) चंद्रप्रकार, ( २ ) स्फुट पद ।

विषय—राधावल्लभीय शिष्या । रचना है ।

जन्म-काल—स० १९४४।

रचना-काल—स० १९७१।

ग्रन्थ—( १ ) दुखहरन द्वादशी, ( २ ) शक्ति-शतक, ( ३ ) शंकर-हृदय, ( ४ ) स्फुट छंद।

विवरण—पंडित वशगोपाल शुक्ल के पुत्र। प० गयामसाइ पेटपाकेट, रायबरेली आपके ज्येष्ठ भ्राता हैं। स्वयं आप अवध में सब-जत्र घौर हमारे मित्र हैं। आपके उद्याग से सरस्वती-सदन नामक पुस्तकालय, रायबरेली में स्थापित हुआ। वह शारदा-सदन नाम से ग्रन्थ भी चल रहा है। मुकवि हैं। इनकी स्त्री भी कवयित्री हैं।

उदाहरण—

भामिनि महेश की है दाहिनि सदाई मेरे,  
 जारे अरि पाप भाल-ज्वाल धीमहेश की;  
 गोद में महेश की मिलैई सष मोद मोको,  
 प्यावै है पियूप शशि-कला धीमहेश की।  
 करुना महेश की कृतार्थ करती है मोहिं,  
 भावत सतत कल कीर्ति धीमहेश की;  
 कविता महेश की करी में नाम शकर लै,  
 बसै मन भाहिं मनु मूर्ति धीमहेश की।

नाम—( ३३६२ ) मकखनलाल शास्त्री।

ग्रन्थ—( १ ) पंचाध्यायी टीका, ( २ ) तर्वाथ राजवार्तिक।

विवरण—आपका जन्म-स्थान चखली जिला आगरा है। आप जैन-धर्मावलंबी प्रसिद्ध हिंदी लेखक हैं।

नाम—( ३३६६ ) रामनरेश त्रिपाठी।

जन्म-काल—स० १९४६, जौनपुर जिले के कोहरीपुर ग्राम में।

विवरण—यह हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी तथा संस्कृत-भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनके अतिरिक्त गुजराती, बँगला, मराठी आदि प्रांतीय भाषाएँ भी जानते हैं। यह कुछ काल तक ऋतेहपुर में रहे, और वास्तव में यहीं से इनमें साहित्यिक अभिरुचि उत्पन्न हुई।

ग्रन्थ—( १ ) कविता-कौमुदी ( चार भाग ), ( २ ) पथिक ( खड्क काव्य ), ( ३ ) मिलन हिंदी पद्य रचना, ( ४ ) हिंदी का संक्षिप्त इतिहास, ( ५ ) ग्राम गीत, ( ६ ) राम चरित-मानस ( टीका ), ( ७ ) हिंदी-शब्द-कल्पद्रुम ( कोष ), ( ८ ) नीति-रत्नमाला ( तीन खंडों में ), ( ९ ) लक्ष्मी ( उपन्यास ), ( १० ) पृथ्वीराज चौहान ( जीवन चरित्र ), ( ११ ) हिंदी-महाभारत, ( १२ ) उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा ( अँगरेज़ी उपन्यास का अनुवाद ), ( १३ ) आनन्द-वीणा आदि। इनका 'पथिक' खड़ी बोली का एक खड्क काव्य है, और इसी काव्य से इन्होंने अपनी प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया है। हिंदी के प्रचार-कार्य में भी इन्होंने अच्छा योग दिया है। पंडितजी हमारे मित्र और हिंदी के भारी विद्वान् तथा लेखक हैं। विविध विषयों पर आपने अच्छा प्रकाश डाला है। आपका हिंदी-सबधी धर्म परम स्तुत्य है। राजनीतिक काय में आप जेल भी जा चुके हैं। हिंदी के आप परमोत्कृष्ट कवि तथा लेखक हैं।

नाम—( ३६६७ ) ललितकुमारसिंह 'नटवर', महुआर ग्राम, शाहाबाद, ( बिहार-प्रांत )।

जन्म-काल—स० १८२२।

रचना-काल—लगभग स० १८७१।

ग्रन्थ—( १ ) ललितराग-संग्रह, ( २ ) गुलाल ( होली-सुधार की कविताएँ ), ( ३ ) चतुर चर ( स्काउटिंग ), ( ४ ) आदर्श शासन, ( ५ ) बसुरी ( कविता )।

जन्म-काल—सं० १६४४ ।

रचना-काल—सं० १६०१ ।

ग्रन्थ—( १ ) दुखहरन द्वादशी, ( २ ) शक्ति-शतक, ( ३ ) शंकर-हृदय, ( ४ ) स्फुट छन्द ।

विवरण—पंडित वरगोपाल शुक्ल के पुत्र । पं० गयाप्रसाद पेंढवाकेट, रायवरेली आपके ज्येष्ठ भ्राता हैं । स्वयं आप अरब में सब-जज और हमारे मित्र हैं । आपके उद्योग से सरस्वती-सदन नामक पुस्तकालय, रायवरेली में स्थापित हुआ । वह शारदा-सदन नाम से अद्य भी चल रहा है । मुकवि हैं । इनकी स्त्री भी कवयित्री हैं ।

उदाहरण—

भामिनि महेश की है दाहिनि सदाई मेरे,  
जारे अरि पाप भाल-ज्वाल धीमहेश की ।  
गाद में महेश की मिलैहैं सब माद मोको,  
प्यावै है पियूष शक्ति-कला धीमहेश की ।  
करना महेश की कृतार्थ करती है मोहिं,  
भावत सतत कळ कीर्ति धीमहेश का ।  
कविता महेश की करीं मैं नाम शकर जै,  
बसै मन माहिं भजु मूर्ति धीमहेश की ।

नाम—( ३१६५ ) मकरपनलाल शास्त्री ।

ग्रन्थ—( १ ) पंचाध्यायी टीका, ( २ ) सत्वाथ राजवार्तिक ।

विवरण—आपका जन्म-स्थान चखली जिला आगरा है । आप जैन धर्मावलम्बी प्रसिद्ध हिंदी लेखक हैं ।

नाम—( ३१६६ ) रामनरेश त्रिपाठी ।

जन्म-काल—सं० १६२६, जौनपुर जिले के कोइरीपुर ग्राम में ।

विवरण—यह हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी तथा संस्कृत-भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनके अतिरिक्त गुजराती, बँगला, मराठी आदि प्राचीन भाषाएँ भी जानते हैं। यह कुछ काळ तक प्रतेहपुर में रहे, और वास्तव में यहाँ से इनमें साहित्यिक अभिवृद्धि उत्पन्न हुई।

प्रथम—( १ ) कविता-कौमुदी ( चार भाग ), ( २ ) पथिक ( खंड काव्य ), ( ३ ) मिलन हिंदी पद्य रचना, ( ४ ) हिंदी का संक्षिप्त इतिहास, ( ५ ) ग्राम गीत, ( ६ ) राम-चरित-मानस ( टीका ), ( ७ ) हिंदी-शब्द-संग्रह ( कोष ), ( ८ ) नीति-रत्नमाला ( तीन खंडों में ), ( ९ ) लक्ष्मी ( उपन्यास ), ( १० ) पृथ्वीराज चौहान ( जीवन-चरित्र ), ( ११ ) हिंदी महाभारत, ( १२ ) उत्तर ध्रुव की अयानक यात्रा ( अँगरेज़ी उपन्यास का अनुवाद ), ( १३ ) आनंद-धीशा आदि। इनका 'पथिक' खंडी घोली का एक खंड काव्य है, और इसी काव्य से इन्होंने अपनी प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया है। हिंदी के प्रचार-काय में भी इन्होंने अच्छा योग दिया है। पंडितजी हमारे मित्र और हिंदी के भारी विद्वान् तथा लेखक हैं। विभिन्न विषयों पर आपने अच्छा प्रकाश डाला है। आपका हिंदी-संबंधी धर्म परम स्तुत्य है। राजनीतिक काय में आप जेल भी जा चुके हैं। हिंदी के आप परमोत्कृष्ट कवि तथा लेखक हैं।

नाम—( ३६६७ ) ललितकुमारसिंह 'नटवर', महुधर प्राम, शाहाबाद, ( बिहार-प्रांत )।

जन्म-काल—स० १३२२।

रचना-काल—लगभग स० १३७१।

प्रथम—( १ ) खलितराग-संग्रह, ( २ ) गुलाल ( होली सुधार की कविताएँ ), ( ३ ) चतुर चर ( स्काउटिंग ), ( ४ ) आदर्श शासन, ( ५ ) ' ' ' ' )।

विवरण—इनका पहला नाम मी० लतीग्रहुमैन 'नटर' था। गत १८ सितंबर, सन् १९२७ को शुद्ध होकर फिर से हिंदू धर्म के अनुयायी हुए। इनके पिता ठाकुर महादेवसिंह, जिला शाहाबाद के राजपूत और माता सिसौज ग्राम, जिला मुजफ्फरपुर के शेष मदारु मिया की कन्या थीं। यह 'रमणी रत्न-माला', 'किमान-समाचार' तथा 'आशा पत्रिका के संपादक भी रहे हैं। कविता अच्छी करते हैं।

नाम—( ३६९८ ) लक्ष्मणनारायण गर्द ।

जन्म-काल—स० १९४६ ।

प्रथ—( १ ) महाराष्ट्र-रहस्य ( १९७१ ), ( २ ) सरल गाथा ( १९६६ ), ( ३ ) आराध्य और उसके साधन ( १९७१ ), ( ४ ) आत्मोद्धार ( १९७२ ), ( ५ ) जापान की राजनीतिक प्रगति ( १९८७ ), ( ६ ) कृष्ण-चरित्र ( १९७६ ), ( ७ ) गांधी सिद्धांत ( १९७७ ), ( ८ ) एशिया का जागरण ( १९८१ ), और भी कुछ पुस्तकें लिखी हैं।

विवरण—आप महाराष्ट्र वाङ्मय और भारतमित्र के संपादक हैं। संपादन-कला का आपको अच्छा ज्ञान है, और साहित्य सत्ता में आपने विरोध स्थान प्राप्त किया है।

समय—सवत् १९७२

नाम—( ३६६६ ) अवतविहारीनाल माथुर एम्० आई० एस्० ए० 'अवत', गुना, ग्वालियर-रियासत ।

जन्म काल—स० १९६२ ।

रचना-काल—स० १९७२ ।

प्रथ ( अग्रकाशित )—( १ ) हिंदी-पत्र पत्रिकाओं का इतिहास, ( २ ) शरीर पढा ( उपन्यास ), ( ३ ) डाका न डालनेवाला डाकू, ( ४ ) सेठजी की चोरी ( उपन्यास ), ( ५ ) निर्दोष को फाँसी ( उपन्यास ), ( ६ ) प्राचीन भारत, ( ७ ) सुष्ठ कविताएँ

( रामायणाष्टक ), ( ८ ) होली-बहार, ( ९ ) कृष्ण लीला, ( १० ) कस-बध, ( ११ ) कपोत-चरित्र, ( १२ ) राचनीति, ( १३ ) लक्ष्मण-सम्रह, ( १४ ) अरवत भजनावली, ( १५ ) कृष्ण-ज-माष्टक, ( १६ ) रामायण बहार ।

प्रकाशित—( १ ) कविता-कैलि, ( २ ) कविता कुसुम, ( ३ ) गारक्षण ।

विवरण—यह सहायिया गोत्रीय मुंशी जगतबिहारीलाल के पुत्र हैं । आप प्रसिद्ध श्रीपन्यासिक ह, और मज भापा तथा खड़ी बोली दोना म स्तुत्य कविताएँ करते हैं ।

उदाहरण—

जहाँ बना आवास कभी था, रहते थे सुख अरु आनंद ;  
जहाँ प्रेममय हास कभी था, होता था पिलास स्पर्शद ।  
जहाँ स्वर्ग की माया भी बस, करती थी नित नूतन नृत्य ;  
पा करके सकेत तनिक-सा, जहाँ दौड़ पड़ते थे भृत्य ।  
चिसमें बड़े बड़े नृप करते थे सदैव आहार विहार ;  
यश-वैभव दुनिया का साग जहाँ देखता था सत्तार ।  
जहाँ कभी थी स्वर्ग अप्सरा सजती नण नण शृंगार ;  
वही स्वर्ग-सा सदन पड़ा है सुना, करता हाहाकार ।  
चलती था अति प्रीति-पगी-सी जहाँ प्रेम में मग्न पवन ;  
वहाँ आज भी लड़ा सुनाता अपनी गाथा भग्न भवन ।

नाम—( ३१७० ) राजनसिंह, करौंदी, जिला उन्नाव ।

जन्म काल—स० १९४७ ।

नाम—( ३१७१ ) गंगाप्रसाद श्रीवास्तव ( जो० पो० श्रीवास्तव ) ।

जन्म काल—स० १९४७ ।

ग्रंथ—( १ ) लवी दाढ़ी, ( २ ) उल्लट फेर, ( ३ ) मर्दानी श्रीरत,

( ४ ) नोक-भोंक, ( ५ ) महाशय भद्रामसिंह शमा, ( ६ ) तुमदार  
 धादमी, ( ७ ) गदबदभ्राला, ( ८ ) मिस्टर जतखारीदाब,  
 ( ९ ) स्वामी चौखानद, ( १० ) मीठी हेसी, ( ११ ) गगा-जमनी,  
 ( १२ ) कुर्सी मैन, ( १३ ) मार-मारकर हकीम, ( १४ ) अर्न्नों में  
 भूल, ( १५ ) हमाई डाक्टर, ( १६ ) नाक में दम, ( १७ ) जवानी  
 वनाम उदापा, ( १८ ) रग बंठय, ( १९ ) धोग्याधनी,  
 ( २० ) घदौलत-सीट, ( २१ ) चड्दा गुलखेरू, ( २२ ) काठ का  
 उखलू, ( २३ ) प्राणनाथ ।

विवरण—यह गोंडे के प्रसिद्ध चकोल हास्य रस के अच्छे लेखक  
 हैं । फिर भी इतना कहना पड़ता है कि इनका हास्य सब कहीं ऊँचे  
 दर्ज का नहीं है ।

नाम—( ३६७२ ) नर्मनाप्रसाद वी० ए०, जबलपुर ।

जन्म-काल—लगभग स० १९४७ ।

विवरण—यह 'हितकारिणी' के उप संपादक तथा 'श्रीशारदा'  
 पत्रिका के संपादक रह चुके ह । इन्होंने हिंदी साहित्य-सम्मेलन स  
 विशारद तथा कलकत्ते से साहित्य शास्त्री की पदवियाँ पाई ह ।

नाम—( ३६७३ ) लोचनप्रसाद पाडेय ।

जन्म काल—प्राय स० १९४८ ।

प्रय—( १ ) दो मिथ ( २ ) प्रवासी, ( ३ ) नीति-कविता  
 आदि छान्दे-मोटे ११ प्रय ।

विवरण—यह बालपुर, जि० बिलासपुर निवासी हैं । आपने कई  
 गद्य पद्य खड़ी बाला म अनेक पद्य प्रथ रचे हैं । आप एक होनहार  
 लेखक हैं । आपने कविता-कुसुममाला म कई वतमान कवियों की  
 रचनाओं का समग्र किया तथा देश भक्ति पर भी अच्छी कविता  
 रची है ।

नाम—( ३६७४ ) प्रजरब्रदास, काशी ।



जन्म-काल—सं० १६२७ ।

ग्रन्थ—( १ ) ममासिरज्जठमरा ( लगभग ३०० हिंदू-सरदारों की जीवनियों का प्रारंभ से हिंदी अनुवाद ), ( २ ) मुदेज्जठ या इतिहास, ( ३ ) क्रॉच-जाति का इतिहास ।

संपादित ग्रन्थ

( १ ) सुत्तान चरित्र ( २ ) रद्दिमान खिलास, ( ३ ) भ्रमर-गीत ( नददास-कृत ), ( ४ ) मुद्राराक्षस, ( ५ ) भाषा भूषण ( महाराजा यशवर्तसिंह-कृत ), ( ६ ) छुमरो की हिंदी-कविता, ( ७ ) प्रेम-सागर, ( ८ ) राम-स्वयंवर इत्यादि ।

विवरण—यह वैश्य-कुलात्पद्य श्रीयुक्त बलदेवदासजी के सुपुत्र हैं । भारतेंदु यावू हरिश्चंद्रजी की परमाज्ञा पुत्रा विद्यावती इनकी माता थीं । आपको इतिहास से प्रेम और संपादन कला में अच्छी सफलता प्राप्त है । तुलसीदास प्रधानजी के तीन संपादकों में से यह भी एक रह चुके हैं । साहित्यिक गौरव पर आपका वश-परपरागत अधिकार है ।

समय—संवत् १६७२

नाम—( १६७५ ) श्री विक्रादत्त त्रिपाठी, ग्राम रोमोपुरी, तहसील अहरोला, जिला आजमगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १६५१ ।

कविता-काल—सं० १६७३ ।

ग्रन्थ—( १ ) सीय-स्वयंवर ( नाटक ), ( २ ) भग में रग, ( ३ ) आदर्श वीरगना-नाटक, ( ४ ) चर्चा, ( ५ ) सुगल चालीसा, ( ६ ) अहिंसा-समाप्त, ( ७ ) एक-न-एक लगा रहता है, ( ८ ) भाष्य प्रतिज्ञा ।

विवरण—यह मदाशय प० गुरद्वीनजी त्रिपाठी के सुपुत्र हैं । इन्होंने काव्य कला की शिक्षा अपने भाई प० जयगोविंदजी से प्राप्त



विवरण—आप 'कलकत्ता-समाचार' नामक पत्र के संपादक हैं। आपके द्वारा हमें कई लेखनों के विवरण प्राप्त हुए हैं। आप उत्कृष्ट लेखक तथा परोपकारी महात्मा हैं। आपका आदर्श जीवन है।

नाम—( ३१७८ ) लौट्टीसिंह गोतम।

ग्रंथ—( १ ) सत्यदशक, ( २ ) प्राचीन भारत, ( ३ ) जीवन-मुक्ति, ( ४ ) शिक्षा पद्धति।

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—स० १९७३।

विवरण—हरीघाट जिला राजीपुर निवासी डॉक्टर शिवकृष्णसिंह के पुत्र। इस काल क्षत्रिय-कॉलेज, बनारस में आप अध्यापक हैं। इतिहास पर श्रम कर रहे हैं, जो स्तुत्य और अनुकरणीय है।

समय—मवत् १९७४

नाम—( ३९७९ ) केशवलाल मा 'अमल', सोन्हीलो, तारापुर ( मुगेर )।

जन्म-काल—स० १९४९।

रचना काल—स० १९७४।

ग्रंथ—( १ ) काव्य प्रबोध, ( २ ) प्रेम पुष्प-मालिका, ( ३ ) ललित नाजती, ( ४ ) प्रलाप ( गद्य-काव्य )।

विवरण—आप प० गोपाल मा के पुत्र और सड़ी बोलती के सुकवि हैं।

उदाहरण—

रूप

मनोहारिणी नदन-सुपमा,  
राका शशि की निर्मल काति ;  
मादकता मदिरा का प्याला,  
या स्वर्गिक शोभा की आति ।

विरव माधुरी की शुचि आभा,  
 या यौवन का मुदर पृष्ठ;  
 है सोहाग की छटा मनोहर,  
 या विरही जीवन का शूल।  
 प्रकृत नदी का दास्य-उयाति या  
 मधुर मिलन का भाव अनूप;  
 हीतल शीतल फरनेवाला,  
 या तरणी रमणी का रूप।

नाम—( ३६८० ) बनारसीदास चतुर्वेदी।

जन्म-काल—स० १९४६।

ग्रंथ—( १ ) हृदय-तरंग ( २ ) राष्ट्र भाषा, ( ३ ) राने,  
 ( ४ ) केशव चद्रसेन, ( ५ ) भारत भक्त पंडूज, ( ६ )  
 प्रवासी भारतवासी, ( ७ ) किता की समस्या, ( ८ ) किजी प्रवासी।

विवरण—प्रैरोज्ञाबाद, फ़िदा आगरा निवासी पं० गनेशलाब  
 के पुत्र हैं। यह आजकल कलकत्ते में रहकर 'विशाल भारत पत्र'  
 का संपादन करते हैं। उपनिवेश पर आपने विशेष धन दिया है।  
 हिंदी-गद्य के सुलेखक हैं।

नाम—( ३६८१ ) राजकुमार वर्मा 'कुमार', साहित्य रत्नाकर,  
 जबलपुर।

जन्म-काल—स० १९६१।

कविता-काल—स० १९७४।

ग्रंथ—( १ ) भीम प्रतिज्ञा ( नाटक ), ( २ ) वीर इन्मीर ( पद्य  
 ग्रंथ ), ( ३ ) सुखद सम्मिलन, ( ४ ) गांधी गान, ( ५ ) प्रणय  
 परिचय, ( ६ ) साहित्य-समालोचना, ( ७ ) करीर का रहस्यवाद।

विवरण—आप कायस्थ कुलात्पत्र धीयुक्त लक्ष्मीप्रसाद श्रीवास्तव  
 भूतर्ष्य पुस्तकालय असिस्टेंट कमिश्नर मद्रास के पुत्र हैं। यह इस

समय प्रयाग विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्यापक हैं। अन्य प्रथा की बढ़िया कविता रचते हैं।

उदाहरण—

देश-दशा का ध्यान हृदय में होवे प्रतिक्षण ;  
 उसकी सेवा हेतु यह चाहे गोषित-कथ्य ।  
 तन मन धन सबस्य दश हित होवे अर्पण ,  
 मुच से सबट नहूँ यही मुख स निकले प्रण ।  
 भारत के शुभ नाम की माला हाथा में लसे ;  
 हृदय कमल में देश की सेवा भ्रमरी आ फँसे ।  
 आह ! हमारे हाथा से लुट जावे जावन धन कैसे ?  
 प्रेम मुधा से सिंचित उपजन बन जावे हा ! धन कैसे ?  
 दुख दोषा के महातिमिर में ड्रिप जावे विधु मन कैसे ?  
 अपनी थाँयों ही के सम्मुख मा का घोर पतन कैसे ?

समय—सन् १९७२

नाम—( ३६८२ ) गुरुभक्तसिंह ( भक्त ) ठाकुर ।

जन्म-काल—स० १९२० ।

ग्रंथ—( १ ) भक्त मारी, ( २ ) प्रेम पाश नाटक,  
 ( ३ ) मग्निजन ।

विवरण—यह जमानिया, जिला गाज़ीपुर निवासी डॉक्टर कालिकाप्रसादसिंह के पुत्र, बलिधा के प्रसिद्ध रईस तथा हिंदी के कवि एा प्रेमी ह । आपकी रङ्गी बोलकी की रचना काव्यत्व की कमना यता से मडित है ।

उदाहरण—

इसे रलाया, उस हँसाया, कहाँ घृल को दिया दफेल ,  
 इमे हिलाया, उसे मुलाया, क्या अद्भुत है तेरा खेल ।

नवल नायिका सी रस भीनी नौका जो मदमाती है ;  
 छाती फूली हुई पालकी ऋकक हर्ष से जाती है ।  
 सजिल धीचि पर मौज उड़ाती इतराती लहरी ऊपर ।  
 कर पतवारों स पानी म इधर उधर से छप छप का ।

नाम—( ३६८३ ) गौराशकर द्विवेदी ( शकर ), टीकमगढ़ ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२० ।

रचना काल—स० १९७२ ।

ग्रंथ—मुद्गलखण्ड के कवि श्रीर लेखक ( अमुद्रित ) ।

विवरण—ग्रंथ बड़ा श्रीर उपयोगी है । टीकमगढ़ में थाप  
 पास्ट मास्टर हैं । खड़ी बोली में अच्छी कविता करते हैं । धमशील  
 हिंदा प्रेमी सज्जन ह ।

नाम—( ३६८४ ) जर्गाद्विहारा सेठ ।

जन्म काल—स० १९२० ।

ग्रंथ—( १ ) प्राचीन भारत के उपनिवेश, ( २ ) वाटरलू का  
 युद्ध ( ३ ) प्राकृतिक दृश्य, ( ४ ) बबई प्रात का पयदन, ( ५ ) बस  
 विहीन लदन, ( ६ ) पदाथ किस प्रकार बना है, ( ७ ) बिजली  
 के लेंप, ( ८ ) त्रिजली का चालक शक्ति ।

विवरण—बाबू बुद्धबिहारा सेठ रिटायर्ड जज के पुत्र तथा लाहौर  
 गवर्नमेंट-कॉलेज में भौतिक विज्ञान के अध्यापक हैं । आप विजायत  
 से पास करके आए हैं, और आइ० इ० ए० धेगी में हैं । आपके  
 ग्रंथों द्वारा उपयोगी विषयों पर समाज की ज्ञान वृद्धि होती है ।  
 आपका परिश्रम श्लाघ्य है ।

नाम—( ३६८५ ) ठाकुरदास जैन पी० ए०, तालवेहट  
 ( मोंसी ) ।

जन्म-काल—स० १९२२ ।

कवित-काल—स० १९७२ ।

विवरण—अध्यापक सवाई महेंद्र हाईस्कूल, दीकमगढ़ ।

उदाहरण —

### अभिलाषा

प्रभो, आवेगा कब वह काल ?

जब कि राजनीतिक सामाजिक सस्थाओं के काय ;

सबहितकर विभवधुता से होंगे निर्धार्य ।

मित्रता होगी एक विशाल ,

प्रभो, आवेगा कब वह काल ? ॥१॥

जत्र आभ्यन्तर शत्रु विजय से चोतित होगी शत्रि ,

सदाचारमय सत्प्रवृत्ति जत्र यत्र करेगी भद्रि ।

निष्कपट होगी मयकी चाल ;

प्रभो, आवेगा कब वह काल ? ॥२॥

नाम—( ३६८५ अ ) तोरनदवी शुक्ल ( लली ), लखनऊ ।

जन्म-काल—स० १९५३ ।

रचना काल—स० १९०५ ।

ग्रंथ—साहित्य-चद्रिका ।

विवरण—आप लगभग पंद्रह वर्ष से साहित्य सेवा कर रही हैं ।  
स्त्री कविया में आपका स्थान ऊँचा है ।

नाम—( ३६८६ ) दयाचंद्र गोयलोय ।

ग्रंथ—( १ ) मितव्ययता, ( २ ) युवाओं को उपदेश, ( ३ ) शांति-  
वैभव, ( ४ ) अच्छी आदत डालने की शिक्षा, ( ५ ) चरित्र  
गठन और मनोबल, ( ६ ) पिता के उपदेश, ( ७ ) आवाहाम-  
लिकन ।

विवरण—आप अग्रवाल जैन तथा लखनऊ-कालीचरण हाईस्कूल  
के हेडमास्टर थे । जाति प्रबोध नामक मासिक पत्र भी आपने  
निकाला था । आपका देहांत हो गया है ।

नाम—( ३१८७ ) देवीप्रसाद गुप्त कुसुमाकर धी० ए०, एल्  
एल्० धी० ।

जन्म काल—स० १९५० ।

रचना-काल—स० १९७५ ।

ग्रंथ—( १ ) इतिहास दपय, ( २ ) अमेरिकन संयुक्त राज्य की  
शासन प्रणाली, ( ३ ) स्वराज्य, कबीर और होली, ( ४ ) उपाधि  
की व्याप्ति, ( ५ ) कला में गुलज़ार, ( ६ ) दुर्गावती नाटक,  
( ७ ) कुसुमाकर विनोद, ( ८ ) बना हुआ गवाह, ( ९ ) भारत की  
स्वतंत्रता, ( १० ) हम स्वराज्य क्यों चाहिये, ( ११ ) केसर शतक,  
( १२ ) दो सती बालाएँ ।

विवरण—सोहागपुर निवासी तथा जाति के वैश्य हैं । होशंगा  
बाद में आप बसालत करते हैं । देश प्रेम पूर्ण तथा उपयोगी ग्रंथ  
रचे हैं । फड़का देनेवाला रचना की है ।

उदाहरण—

किस टुलिया का हृदय फटा, यह कच्का बादल कैसा ?  
बिनली बनकर तड़प रहा है, कोई घायल कैसा !  
किसके आसू बह आज़, ये पानी बरस रहा है ।  
नभ में चारों आर टुलही टुल्य अब दरस रहा है ?  
इंद्र धनुष को उठा लिया है किसने आज कुपित हो ?  
तारा न आँसू माचा है, जिससे हृदय व्यथित हो ।  
घमासान धन उनड़ रहे है सेना यह बढ़ती है,  
किस टुलिया घायल पर फिर फिर धावा कर चढ़ती है ।  
नभ में छाई है यह जाली किसका रुधिर बहा है ;  
धीरबहूटी बन करू जो भू पर टपक रहा है ।

नाम—( ३१८८ ) धन्यकुमार जन, उपनाम 'सिंह' ।

ग्रंथ—घसतकुमारी ।





जन्म-काल—स० १६६० ( विजयादशमी ) ।

मृत्यु-काल—स० १६७७ ।

ग्रन्थ—( १ ) प्रह्लाद ( खड्ग काव्य ), ( २ ) गंधर्व, ( ३ ) विहार का इतिहास ( अपूर्ण ), ( ४ ) प्रेमाचलित, ( ५ ) स्मृति, ( ६ ) मलयचय ।

विवरण—यह बाबू ठाकुरनसादजी चौधरी के सुपुत्र थे । इन्होंने अल्प जीवन-काल में अपनी प्रखर बुद्धि एवं प्रतिभा द्वारा हिंदी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया । मैट्रिक-परीक्षा में हिंदी विषय में सर्व श्रेष्ठ उर्चीण होने के कारण इनको पटना विश्वविद्यालय से स्वर्णपदक प्राप्त हुआ, किंतु इस फल के प्रकाशित होने के दो सप्ताह पूर्व ही इनकी अकस्मात् मृत्यु हो चुकी थी । बड़े देश प्रेमी, उदार हृदय पुरुष-रत्न थे ।

उदाहरण—

जाता हूँ मैं स्वर्ग को देकर यह संदेश—  
गाकर मरे गीत को करना मुर्गी स्वदेश ।

स्वदेश

ह ह प्रियतम स्वदेश ।

लोक-विदित वर्य देश ।

वीर देश, आदि सभ्य, विरज ज्ञानदाता ।

महिमा तब अति अपार

पावें कविगण न पार ।

सृष्टि द्वार मुखना घर भारत-जन आता ।

स्वामि ! पा विभूति-दास

रहते तुम क्यों उदास ?

व्यर्थ आस, निभय हो स्वर्ग लोक आता ।

## जीवनोद्देश

यह दुल्लभ नर देह ध्यर्ष्य में हमें न खोना,  
मर्त्यलोक में यौन अमरता का हे धोना  
सुख में हँसना नहीं, न है दुख में कुछ रोना,  
रहै हमारे साथ सदा यह श्याम सलाना।

अपने हित करना नहीं हमको कुछ अथ शेष है,  
करना सुखी स्वदेश को जीवन का उद्देश है।

जैसे ही प्रण प्राण-सग निवाह करग,  
फभी विप्ल भय की न तनिक परवाह करेंगे।  
नर को पूछे कौन, काल से भी न डरेंगे;  
तनम निसके लिये, उसी के लिये मरेंगे।

भूले भटका के लिये यह 'विभूति'-सदेश है;  
करना सुखी स्वदेश को जीवन का उद्देश है।

जैसे हो भरना हमें निज भाषा भवार,  
एकमात्र उस है यही देशोदति का द्वार।

नाम—( ३६६२ ) मोहनलाल मेहता गयावाल।

ग्रन्थ—( १ ) निर्माल्य, ( २ ) एकतारा, ( ३ ) रेखता।

विवरण—आप पंडित श्यामलाल मेहता गयावाल के पुत्र हिंदी,  
उर्दू, बँगला, मराठी, अंगरङ्गी और संस्कृत से परिचित हैं।  
व्यंग्य चित्रकार भी हैं। खड़ी बोली तथा ब्रज भाषा दोनों में  
कविता करते हैं। छायावाद पर कई पुस्तकें बना चुके हैं। अच्छे  
श्रीर उस्ताही कवि हैं। छायावादी कविया में आपका उच्च  
आसन है।

उदाहरण—

चंद्र तथा प्रतिमा हल चंद्र की है अपनी पर ज्योति उज्यारी;  
भातुक भाव के हाथन सों सब भाँति सँभारि-सँभारि

देख रहे अनिमेल अनेक सुमान्यन के परसिद्ध पुजारी ;  
भारत भानु के भाल की भव्य है बिन्ती प्रभामयी हिंदी हमारी ।  
जो अन्यक्त सिंधु क्वलोलित है वसुधा में आठा याम ।  
मैं हूँ वही भिन्न होने पर मेरा हुआ दूसरा नाम ।  
है विभिन्नता नाम-मात्र की मुझमें उसमें भेद नहीं ;  
जल-गत रवि की छाया का बया आर नाम है सुना यहाँ ।

नाम—( ३६६३ ) मंगलदेव शास्त्री एम्० ए०, डी० फिल ।

रचना-काल—सं० १९७५ ।

रचना—हिंदी शब्द शास्त्र पर ग्रथ ।

विवरण—आप एक उच्च कोटि के लेखक हैं । विषय भी बहुत  
गंभीर चुना है ।

नाम—( ३६६४ ) रामनारायण शर्मा, राज्य छतरपुर,  
बु दलखंड ।

जन्म-काल—सं० १९६३ ।

रचना-काल—सं० १९७५ ।

ग्रथ—(१)व्यय्य बवडर (२) उडिया पुराण, (३) सगीत-सुधाकर,  
(४) गगाधर प्र धावली (अप्रकाशित), (५) स्फुट लेख तथा कविताएँ ।

विवरण—यह कान्यकुब्ज द्विवेदी-कुलोत्पन्न लेखक है । इनका  
निवास-स्थान कानपुर प्रातातर्गत हयेरवा ग्राम है । कुछ दिन आप  
श्रीमान् महाराजा साहय छतरपुर के हिंदी पुस्तकालय में काम कर  
चुके हैं । इनकी कविता नूतनता से मडित परम अोजस्विनी है ।

उदाहरण—

प्रकृति

ब्रह्म माया से हूँ मैं परे, प्रकृति, परमेश्वरि जाज्वननि ;

नदी कहते हैं मुझको व्यर्थ, नचा स्रुती मुसष्टि को स्वय ॥ १ ॥

पाद-श्लोक मेरा मातंग, बनाकर कर-श्लोक में चद ;  
 तारकावलि गोली हय मान, खोजती फिरती अवर मध्य ॥ २ ॥  
 धरास्थित थावर-जगम सर्व, कर्ना करती हूँ उषल-नयल ;  
 दगमगा जगती को जय कभी, मुस्करा करती उल्कापात ॥ ३ ॥  
 गर्भ से सरिताया को डल, रखपखा पर में सारा नीर ;  
 विशद धारिधि के अतन्नल, विपम यशवानल देती फूँक ॥ ४ ॥  
 धनमय की धवलिन धधरि, जरा में धक, धक, धक धधका ;  
 धूममय धू धू धू प्रतिध्वनि, सुना करती हूँ अधाधुध ॥ ५ ॥  
 अचनि अनुधि को करक नष्ट, शून्यमय दिग्दिगत को पर ;  
 मौज आइ, तो रचता हू, आदने को अंबर अवर ॥ ६ ॥  
 प्रभजन का मैं ज्वल प्रवाह, प्रथम कर रती हूँ शरभ ;  
 सृष्टि ल अंतरिक्ष की गोद, अचनि अवर कर देती णक ॥ ७ ॥  
 हृदय म गिरि राजों के सदा, जलाती हूँ भीषण ज्वाला ;  
 हिमालय को भी मैं नित धुला, बहाती अगनित सरिताएँ ॥ ८ ॥  
 सारगभित थादल के दल, परस्पर टकरा देती जय ;  
 प्रतिध्वनित हाता हू अवर, अंधुमय करता गारा अँनि ॥ ९ ॥  
 विश्व वीणा के टूटे तार, जोड़ गाती हूँ पट्-श्रुत राग ;  
 मौन नीरव प्रलयकर गान, अचण कर धाराता प्रझाड ॥ १० ॥  
 विश्व के काने काने म, जमा है मेरा ही आतक ;  
 सृष्टि का उत्पादन पालन, किया करती म ही सवार ॥ ११ ॥  
 निरंतर परिवर्तन में लीन, न छेती कहीं कभी विधाम ;  
 घोर रुचिकर प्रियकर सर्वदा, किया करती उत्थान-पतन ॥ १२ ॥

नाम—( ३६१५ ) रामरखसिंह सहगल, प्रयाग निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५० ।

रचना-काल—सं० १९७५ ।

ग्रंथ—सपादक चाँद मासिक पत्रिका ।

विवरण—उत्साही, दृढ़ प्रेमी तथा उद्योगी। अशुभ-प्रेम के कारण जल जा चुके हैं।

नाम—( ३६१६ ) राहुल साठुतायन।

जन्म काल—लगभग स० १६६३।

रचना-काल स० १६७६।

विवरण—आप सरज्जत तथा पाली भाषाओं के विद्वान् एक बौद्ध भिक्षु हैं, जो प्राचीन खण्डा पर्व विषय पर उत्तम लेख लिखा करते हैं। आपका कोई ग्रंथ हमारे देखने में नहीं आया, पर लेखन-शैली गंभीर एवं गंभीरपणा पूर्ण है। आपने तिब्बत, नेपाल, सीलोन इत्यादि देशों का भ्रमण करके बौद्ध धर्म एवं प्राचीन विषयों का अच्छी जानकारी है। हिंदी के अत्यंत प्राचीन कवियों के विषय में जो उच्च काटि का लेख आपने 'गंगा मासिक पत्रिका के विशेषांक में, अभी यादों ही मास हुए, प्रकाशित कराया है, उसकी प्रितनी प्रशंसा की जाय, थाकी है। उसका पचास साठ नेपाली, भूटानी तथा अन्य बौद्ध ग्रंथों के आधार पर आपने लिखा है।

नाम—( ३६१७ ) विष्णुदत्त शुक्ल।

जन्म काल—लगभग स० १६६०।

रचना-काल—स० १६७६।

ग्रंथ—पत्रकार-कला। प्रताप के सहायक संपादक।

विवरण—पत्रकार-कला एक उत्कृष्ट ग्रंथ है। हम इसे पुरस्कार के योग्य समझते हैं।

नाम—( ३६१८ ) शिवपूजनसहाय, उनवास, इटादी, शाहाबाबा ( बिहार )।

जन्म काल—स० १६६०।

रचना-काल—अनुमानत स० १६७६।

ग्रन्थ—( १ ) देहाती दुनिशा, ( २ ) महिला-महत्त्व, ( ३ ) विहार  
विहार आदि ।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्न बाबू बागेश्वरीदयाल के पुत्र हैं ।  
वागेश्वरी, 'मतवाला' आदि के संपादक भी रह चुके हैं । आप अच्छे  
अस्य पूर्ण लेख लिखते हैं । उच्च श्रेणी के गद्यकार तथा जिज्ञासु  
पुस्तक पुरुष हैं ।

नाम—( ३६६६ ) श्रीनाथसिंह, प्रयाग ।

जन्म-काल—लगभग स० १६२२ ।

रचना-काल—स० १६७२ ।

विवरण—इनकी 'यीथन-सादय और प्रेम' नामक पुस्तक हाल ही  
में प्रकाशित हुई है । हिंदी के अच्छे लेखक, कवि और 'बाल-सखा'  
के संपादक हैं । सरस्वती का संपादन भी करते हैं । 'बाल-साहित्य'-  
विषयक कई पुस्तकें लिख चुके हैं ।

नाम—( ४००० ) श्रीप्रकाश चेरिस्टर, काशी निवासी ।

जन्म-काल—लगभग स० १६२२ ।

रचना-काल—स० १६७२ ।

रचना—स्फुट लेखक तथा पत्रकार हैं ।

विवरण—संपादक दैनिक पत्र 'आज्ञ' । बाबू भगवानदास के पुत्र,  
प्रसिद्ध देश भक्त और हिंदी प्रेमी हैं । विचारा के कारण जेल जा चुके  
हैं । काशी के रहस हैं ।

नाम—( ४००० अ ) सच्चिदानंद उपाध्याय ( सनाढ्य )  
'आशुतोष', टीरुमगड ।

जन्म-काल—स० १६२४ ।

कविता-काल—स० १६७२ ।

विवरण—दार्ढ्य-विभाग में छाक हैं ।

उदाहरण—

को तनु धारी मरत नहिं, जनमत या ससार ;

'आशुतोष' ते धन्य जो, करत जाति-उपकार ।

( अत्र काशित मुद्रिका-रहस्य से )

धी चल रही शुचि वायु परिमल मद-मद सुखाल-सी ;

अरु चद्रिका प्रसरित जटित धी श्वेत सुभ्र मराल-सी ।

धी गुज धुनि अलि पुज की जय कुज कुन गुजा रही ,

कुसुमित कदवास्व हो कावरी था गा रहा ।

नाम—( ४००१ ) सियारामशरण गुप्त, चिरगाँव, भाँसी ।

जन्म काल—सं० १९१२ ।

रचना काल—सं० १९७२ ।

ग्रंथ—कुड़ बनाए । कुड़ अनुवाद भी हैं । आत्रा नामक ग्रंथ भी है ।

विवरण—प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त के आप कनिष्ठ भ्राता हैं । कविता आप भी अच्छी करते हैं । सामाजिक विषया पर सुरुचिपूर्ण कविताएँ लिखते हैं ।

नाम—( ४००२ ) मुमित्रानदन पत ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२५ ।

रचना काल—सं० १९७२ ।

ग्रंथ—( १ ) वीणा ( २ ) पञ्चव, ( ३ ) गुजन-नामक एक नाटक-ग्रंथ भी लिख रहे हैं ।

विवरण—आप खड़ी बोली में बहुत चमत्कार-पूर्ण रचना करते हैं । छायावादी भी हैं । इनके उपयुक्त तीनों ग्रंथ हमारे देखे हुए हैं । पञ्चव बहुत पसंद है । इनका रचना हिंदी के प्रसिद्ध प्राचीन कवियों के भी साहित्य का सामना कर सकती है । भाषा का अनूठापन तथा उनकी सफलता इनके मुख्य गुण हैं । हम पतजी को वर्तमान कवियों में बहुत ही आदरणीय दृष्टि से देखते हैं । प्रकृति का सौंदर्य आपने अच्छा देखा है । कामलता इनका रत्नान्य गुण है ।



उदाहरण—

ढोलने लगी मधुर मधु वात, हिला वृण, मत्ति, कुज, तरु, पात ;  
 ढोलने लगी प्रिय, मृटु वात, गुज्र मधु गध बूलि हिम गात ।  
 खोलने लगी शयित धिरकाल, नवल कलि अलस पलक दल बाल ;  
 ढोलने लगी ढाल से ढाल, प्रमुत् पुलकाकुल कोकिल बाल ।

नाम—( ४००३ ) हरप्रसाद ( वियोगो हरि ) ।

जन्म-काल—लगभग स० १६२० ।

कविता काल—स० १६७२ ।

ग्रन्थ—( १ ) वीर-सतसई, ( २ ) अतर्नाद आदि कई अन्य ग्रन्थ ।

विवरण—आप रियामत छतरपुर के रहनेवाले हैं, किंतु बहुत दिनों से प्रयाग में रहते हैं । गद्य और पद्य दोनों में अच्छी रचना करते हैं, किंतु विचार कुछ-कुछ प्राचीन है । निधन होकर भी आप बहुत उदार पुरुष हैं । वीर सतसई में नए भाव नहीं हैं, किंतु अतर्नाद अच्छा ग्रन्थ है ।

१६२१-७२ के शेष कविग्रन्थ

समय—संवत् १६६८

नाम—( ४००४ ) ऋषिलाल साह कलवार, महोली, जिला सीतापुर ।

जन्म काल—स० १६३६ ।

ग्रन्थ—( १ ) शृंगार दण्ड ( २ ) विंगलादर्श, ( ३ ) विज्ञान-प्रभाकर, ( ४ ) अलंकार भूषण, ( ५ ) निदान मजरी ।

नाम—( ४००५ ) कृष्णचंद्र ।

जन्म-काल—स० १६३६ ।

मृत्यु काल—स० १६७६ ।

ग्रन्थ—( १ ) पद्यानुवाद वाल्मीकीय रामायण ( सुदरकांड ), ( २ ) गद्य पद्यमय अनुवाद—भवभूति-कृत उत्तर रामचरित, माधव का ( कुछ अंश ), ( ३ ) महावीर -

विवरण—आप भारतेंदु बानू हरिचन्द्रजी के कनिष्ठ भ्राता मोऊलचन्द्रजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। इन्होंने अपने व्यय से ही भारतेंदु नाट्य-मंडली स्थापित की, जो अपना कार्य अभी तक भजी भति कर रही है। आपका चाल्मीकीय पद्यानुवाद विशेषतया रोला छंदों में है। इनका साहित्य मञ्ज-भाषा में है, किंतु उसमें सरकृत शब्दों का अत्यधिक प्रयोग है।

नाम—(४००६) गोवर्धनलाल ( लाला ) बसौदा, ग्वालियर।  
जन्म-काल—स० १६३६।

प्रथ—( १ ) पूर्ति प्रमोद, ( २ ) साहित्य भास्कर, ( ३ ) नगदवन ( नागदमन )।

नाम—( ४००६ अ ) गोविंददास व्यास ( सहाय्य ब्राह्मण )  
ताल रेहट ( फाँसी )।

जन्म-काल—स० १६२७।

कविता-काल—स० १६७६।

प्रथ—( १ ) शिव शिवा स्तवन, ( २ ) सीता निवास, ( ३ ) कृष्ण चरित्र, ( ४ ) जीवन के चार दिन, ( ५ ) पुर की गर्दन, ( ६ ) लोहू का छूट, ( ७ ) परीक्षित शप, ( ८ ) धीकृष्ण-जन्म, ( ९ ) वृ दावन पास, ( १० ) गोवर्धन लीला, ( ११ ) रास-क्रीड़ा मथुरागमन, ( १२ ) उग्रसेन का राजतिलक, ( १३ ) द्वारिका-वास, ( १४ ) मयि-चरित्र, ( १५ ) ऊपा-अनिरुद्ध, ( १६ ) योगिराज।

उदाहरण—

हिमागार शिखरस्य बट शीत माया,

परम रम्य जन शून्य कैलास भाषा।

सुखामीन यामाग शैलात्मजा ह,

सुमाधे प्रवाहित सुदेवापगा ह ।

नमो भूतनाथ नमो शैवरूप,  
 नमो मील्य सिंधु नमो देवभूर्प,  
 नमो कर्कपाल नमो कामफल,  
 नमो विरचनाथ नमो शत्रुनाथ ।

नाम—( ४००७ ) चंद्रशेखर मिश्र, प्यपारन ।

प्रथ—( १ ) मपादक विद्याधर्म-दीपिका, ( २ ) रघुमाहा,  
 प्यपारन ।

विवरण—सुज्ञेखक हैं ।

नाम—( ४००८ ) चपालाल जौहरी ( सुधाकर ), रामगज,  
 स्रहया ।

रचना-काल—स० ११६१ ।

प्रथ—( १ ) माधरी करुण, ( २ ) त्रियोगिनी, ( ३ ) शिक्षकों  
 का कृतव्य आदि ८ पुस्तकें आपो यनाई हैं ।

नाम—( ४००९ ) जयपाल ब्रह्मभट्ट ।

जन्म-काल—सं० ११२२ ।

रचना-काल—स० ११६१ ।

प्रथ—रतिक्रम-प्रमोद ( ११६१ ) ।

विवरण—आप सूना ग्राम, जिला मुंगेर निवासी शंभु महाराज के  
 पुत्र हैं । कवि-वशी हैं तथा समय समय पर सुकु कविताएँ रचा  
 करते हैं ।

उदाहरण—

मति प्रीति के छदन माहि परा पग मारग दु ख बडावन । ह ।  
 पथ माहि विद्या के पायक का चदि मोम-तुरग पै धायनो है ।  
 मनसूर के ऐसे जो सुखि चदे नहि ताहु पै नेक बरावनो है ।  
 जयपाल जु ताते विचारि कई कहु नीको न नेह लगावनो है ।

नाम—( ४०१० ) नारायणजी पुरुषोत्तम ( क्रांत ) ।

जन्म-काल—स० ११३१ ।

कविता-काल—लगभग स० ११६१ ।

प्रथ—गुजराती भाषा काव्य के नौ दस प्रथ । हिंदी में ( १ ) छलधीर यशोधान, ( २ ) काव्य-कलाप ( तीन खंड ) ।

विवरण—मोरवा राज्य के राजपुरोहित तथा गुजराती एवं हिंदी के कवि । ज्वास-राज्य से सम्मान-सहित दो ग्राम पाए हैं । 'मुक्ति' के नवंबर ११३१ के अंक में इनकी जीवनी छपी है ।

नाम—( ४०११ ) धजरगसिंह, हथिया, सोतापुर ।

जन्म काल—स० ११३६ ।

प्रथ—( १ ) रत्न पचीसी, ( २ ) पट्टातु, ( ३ ) वैयनाय छचीसी, ( ४ ) स्फुट कविता, ( ५ ) काशी-कातवाल-पचीसी ।

विवरण—आपका अहांत हो गया है ।

नाम—( ४०१२ ) मधुसूदन गोस्वामी, वृंदावन ।

प्रथ—अमियनिमाह चरित्र । चैतन्य महान्धु का जीवन चरित्र वार्तिक २७२ सप्ता रॉयज १२ पेनी में लिखा गया है । एक ऐसा ही प्रथ पहले बाबू शिशिरकुमार घोष ने बेंगला में बनाया था, जिसका यह अनुवाद है । कहीं कहीं एक अध छद् भी है । यह पुस्तक हमें दरबार छतरपुर में देवने को मिली । उपासना-तंत्र, प्रतिमा-तंत्र, गायत्री परिणय, विकटोरिया चरित, आयसमाजीय रहस्य आदि भी इनके प्रथ हैं ।

नाम—( ४०१३ ) महादेवप्रसाद ( मदनेश ) पटना, मो० मझगाज ।

प्रथ—( १ ) गंगा जहरी, ( २ ) नल शिख रामचन्द्रजी, ( ३ ) मदनेश-मौजकतिका, ( ४ ) मदनेश-करपद्म, ( ५ ) सकमाचन आरसी, ( ६ ) मदनेश-कोप, ( ७ ) तन तीन ताजा की तरहवार कुजी ( ८ ) भैरवाष्टक ।

नाम—( ४०१४ ) रामावतार द्विरेवी, फतेहपुर, जिला वाराणसी ।

जन्म-काल—स० १९३६ ।

रचना-काल—स० १९६१ ।

नाम—( ४०१५ ) शुकदेवनारायण कायस्थ, रामधारीसहाय क पुत्र डीही, जिला सारन ।

जन्म-काल—स० १९३६ ।

प्रथ—नारद मोह वाटिका ।

समय—संवत् १९६२

नाम—( ४०१६ ) अमोरराय, भनुआ, साहाबाद ।

जन्म-काल—स० १९३७ ।

प्रथ—( १ ) रामायण बालकांड छप्पय में, ( २ ) गुलिस्ताँ का आठवाँ बाब कविता में ।

नाम—( ४०१७ ) अविर्काप्रसाद वाजपेयी, कानपुर, सपादक भारतमित्र ।

जन्म-काल—स० १९३७ ।

प्रथ—शिक्षा अनुवाद ।

विवरण—नृसिंह हिंदीवगवासी एवं हितवार्ता का सपादन किया । आपछे विचार प्राचीन तथा के ह ।

नाम—( ४०१८ ) कोतिनारायणसिंह, ग्राम चदनपट्टी, जिला मुजफ्फरपुर ( निहार प्रात ) ।

कविता-काल—सं० १९६२ ।

प्रथ—( १ ) कीर्ति स्तात्र मजरी, ( २ ) कीर्ति राग-भजरी ( दो भाग ), ( ३ ) श्रीजाज बचीसी, ( ४ ) सतनाम ।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ बाबू शुभकरणलालजी के पुत्र हैं । स्थानीय लोकल बंड तथा एमीकलूचरल एसोसिएशन के यह

समासद् रह चुके ह । ( बाबू गिरीन्द्रनारायणसिंह, चदनपट्टी, मुहं  
प्ररपुर द्वारा ज्ञात ) ।

उदाहरण—

कान वही जो सुने हरिगान, श्री ज्ञानी वही जो भजे यदुराई;  
प्रीति रही जो सदा निरहै, धरु स त वही जो तजे ममताई ।  
द्रव्य वही जो उठै परमारथ, नेत्र वही जो तके न दुराई,  
'कीर्तिनारायण' हाथ वही, जो करै सद ही अनदान उठाई ।

नाम—( ४०१६ ) गौरीशकरप्रसाद वी० ए०, एल एल्० वी०,  
वैश्य, वकील, तुलानाला, बनारस ।

जन्म काल—अनुमान से स० १६४० ।

प्रथ—स्फुट लेख, योरप-यात्रा ( तीन लेखक मिलकर ) ।

विवरण—आप कहें क्यों तक नागरा प्रचारणी सभा के मंत्री  
रहे हैं । हिंदी के आप बड़े शुभचिंतक और उत्साहा पुरुष हैं ।  
बनारस में बनारस करतें हैं । आप हमारे प्राचीन मित्र हैं ।

नाम—( ४०२० ) चतुरसिंह रूपाहेली, मेवाड, रानपूताना ।

प्रथ—( १ ) चतुर कुल-चरित्र, ( २ ) खगोल विज्ञान,  
( ३ ) सोरठा-समह ।

विवरण—आप एक प्रतिष्ठित लेखक हैं ।

नाम—( ४०२१ ) छेदा साह, सैयद पौहार जिला कानपुर ।

जन्म-काल—स० १६३७ ।

प्रथ—( १ ) काव्य शिखा, ( २ ) भगवद्गीता की टीका,  
( ३ ) हरगंगा-रामायण, ( ४ ) चानोपदेश-शतक, ( ५ ) भक्ति  
पंचाशिका, ( ६ ) कल्याण-बचीसी, ( ७ ) नारी गारी, ( ८ ) गंगा-  
पंचाशिका, ( ९ ) मारुडेय-वशावली, ( १० ) कृष्ण प्रम-बचीसी,  
( ११ ) कान्यकुब्ज-मुद्राजलि, ( १२ ) काव्य-समह, ( १३ ) सत्य  
वारायण, ( १४ ) जान पाहे उपन्यास, ( १५ ) द्वितीपदेश ।

विवरण—मुसलमान होकर आपने हिंदुओं के-से भी प्रथ रचे हैं ।

नाम—( ४०२२ ) द्विजेश पांडेय ( दडपाणि ), पंडित पुरया,

जयपुर ।

जन्म काल—स० १६३७ ।

रचना-काल—स० १६६२ ।

नाम—( ४०२३ ) प्रजेश महापात्र, असनी, फतेहपुर ।

विवरण—साधारण धैर्यी ।

नाम—( ४०२४ ) भगवानवत्ससिंह, राज्य कटारी, पोस्ट गौरा ।

जन्म काल—स० १६३७ ।

प्रथ—( १ ) बुद्धि प्रकाश, ( २ ) शतरुद्री भाषा-टीका, ( ३ ) लिंगा-

र्षनसार भाषा-टीका, ( ४ ) सीता विनय, ( ५ ) भजनावली,

( ६ ) विनय प्रकाश, ( ७ ) सीता राम रहस्य आदि १४ प्रथ रचे हैं ।

नाम—( ४०२५ ) मन्नीलाल गो.वामो, उपनाम प्रेमवधु ।

जन्म-काल—स १६३७ ।

प्रथ—( १ ) श्री श्रीहिताष्टक ( १६७० ), ( २ ) श्रीहित बारह

सूत्री ( १६७३ ), ( ३ ) सेवा शतक ( १६७३ ), ( ४ ) हित

नयपटी, ( ५ ) गुरु-गीता, ( ६ ) स्फुट पद ।

विवरण—आप राधावल्लभनीय गौड़ ब्राह्मण श्रीनंदकुमारलाल

गोस्वामी के पुत्र हैं । आप वृंदावन-वामी हैं और बेंगलूराले

महाराज के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

नाम—( ४०२६ ) माधौसिंहजी कविराज, वूठी ।

विवरण—यह कविराज रामनाथ के पुत्र हैं । कविता अच्छी

करते हैं ।

नाम—( ४०२७ ) रामचरण भट्ट ब्राह्मण, पिहानी, जिला

हरदोई ।

जन्म-काल—स० १६३७ ।

प्रथ—( १ ) सुरभी शतक, ( २ ) गो विलाप, ( ३ ) अर्ध  
मैलाप, ( ४ ) प्रेमामृत तरंगिणी, ( ५ ) प्रेमामृतवर्षिणी,  
( ६ ) मत्तमत्त विचार ।

नाम—( २०२८ ) रामजीदास घैरथ, ग्वालियर ।

जन्म-काल—लगभग स० १९३७ ।

रचना काल—स० १९६२ ।

प्रथ—सुघर चमत्ती ।

विवरण—पाठ्य पुस्तका का संकलन किया है ।

नाम—( २०२६ ) शिवदयाल ( केवल ) कायस्थ, मगलपुर,  
जिला कानपुर ।

जन्म-काल—स० १९३७ ।

प्रथ—( १ ) काव्य समूह, ( २ ) राग विनोद, ( ३ ) नाठि  
शतक, ( ४ ) चौमासा चतुरग ।

नाम—( ४०३० ) शिवमगलसिंहजी, राजाबहादुर, मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० १९३० ।

कविता-काल—स० १९६२ ।

प्रथ—विहारी-सतसई की छंदोबद्ध टाका ।

विवरण—छात्र चौहानवशीय चत्रिय [राजा रामप्रतापसिंहजी  
मैनपुरी नरेश के पुत्र हैं । आरका उक्त प्रथ स्थानाय नारायण प्रेस  
से प्रकाशित हो चुका है ।

नाम—( ४०३१ ) श्यामसु दरलाल कायस्थ, एम्० ए०  
एल् एल्० बी०, मैनपुरी ।

प्रथ—( १ ) स्थावर जावन्मीमासा, ( २ ) मानव-वर्षा न्यरस्था ।

नाम—( ४०३२ ) हरिदास जैन ।

रचना काल—स० १९६२ ।

विवरण—बुदावन जैन कवि के पौत्र ।



समय—संवत् १९६२

नाम—( ४०३३ ) श्रीकारनाथ वाजपेयी, प्रयाग ।

जन्म-काल—सं० १९३८ ।

रचना-काल—सं० १९६३ ।

प्रथ—( १ ) लक्ष्मी-उपन्यास, ( २ ) दो कन्याओं की घात-घीत, ( ३ ) शाता । और भी कई जीवन चरित्र तथा उपन्यास छापने लिखे थे ।

विवरण—अच्छे गद्य-लेखक थे । अपने श्रीकार प्रेस खोलकर अफ़्ज़ी अच्छी पुस्तकें प्रकाशित की थीं । शोक है, आपका देहांत हो गया है । प्रेस का काम आपके लड़के चला रहे हैं ।

नाम—( ४०३४ ) गणेशप्रसाद काशरथ, टीकमगढ़ ।

रचना-काल—सं० १९६३ ।

प्रथ—मणि द्वीप-मंजरी ।

नाम—( ४०३५ ) गयाप्रसाद ( माणिक ), गया ।

जन्म-काल—सं० १९३८ । वर्तमान हैं ।

नाम—( ४०३६ ) गोवर्धननाथ ( लल्लूजी ), वल्द प० गोपीनाथ ।

जन्म-काल—सं० १९३८ ।

नाम—( ४०३७ ) दयाशंकर, मथुरा ।

प्रथ—शिष्ट रोध ।

नाम—( ४०३८ ) देवनारायण उपाध्याय, गहमर, गाजीपुर ।

कविता-काल—सं० १९६३ ।

प्रथ—( १ ) पद्य पद्धति ( विंगल ), ( २ ) लोकोक्ति शिक्षक, ( ३ ) भारत की प्रतिष्ठा आदि ।

विवरण—आप प० रामपतनजी उपाध्याय के पुत्र तथा स्कूल के अध्यापक हैं । इनकी स्फुट कविताएँ 'आय-महिला', 'धर्म प्रकाश'

घादि पत्र-पत्रिकाघा में निकल चुका है । [ धीयुत प्रसिद्धनारायण  
वर्मा गहमरीजी से ज्ञात ] ।

उदाहरण—

उडुगन हो तुम चमक रह इतरा इतराकर ।  
स्वेत अग नित्र देख गर्व करते इठलाकर ।  
गगन-श्यामता पेयि सदा हँसते रहते हो ।  
बसे उसी के मध्य कृतघ्नी क्यों बनते हो ।  
रचना इमका ध्यान तुरत फल मिल जायेगा,  
हो जाओगे भ्लान फजेजा हिल जायेगा ।  
इसी कालिमा गगन मध्य तँ रवि प्रगटेगा,  
होगे आभल शीघ्र तुम्हारा दृष भिटेगा ।

गाम—( २०३६ ) बडलूप्रसाद त्रिपाठा, करविगवाँ कानपुर ।

ग्रंथ—( १ ) गूढाव-संग्रह, ( २ ) मायाहुर-संग्रहावली, ( ३ )

चारहमासा ( मागर ) ( ४ ) चारहमासी विरह-मञ्जी, ( ५ )

चारहमासा विरहभार ।

नाम—( ४०२० ) बाँकेलाल चौबे, मगलपुर जिला कानपुर ।

जन्म-काल—स० १९३८ ।

ग्रंथ—( १ ) स्फुट छंद, ( २ ) सतसई ( अष्टम ), ( ३ )

वाणी विनोद, ( ४ ) स्वप्न-मुंदरी, ( ५ ) चारहमासा, ( ६ ) मालव

लीला, ( ७ ) द्रीपदी नाटक ( ८ ) चौथ चौमामा, ( ९ ) राम-शतक,

( १० ) तिलकोत्सव ( ११ ) विद्याचाला, ( १२ ) वैद्य बाँके ।

नाम—( ४०४१ ) युद्धिभागर मित्र ।

जन्म-काल—स० १९२३ ।

रचना-काल—स० १९६३ ।

ग्रंथ—( १ ) विनयवावनी ( २ ) चारुचंद्रिका, ( ३ ) ईश वितय,

( ४ ) अरुणदुर्गा, ( ५ ) इज्जत बेग ।

विवरण—आप यदनी, जिला बम्बई-निवासी सरसरिया शास्त्रिय  
प० रामगरीब मिश्र के पुत्र हैं। प्रजभाषा में साधारणतया अच्छी  
रचना करते हैं।

नाम—( ४०४२ ) भागीरथ स्वामी चण्ड, कर्क जावाद।

जन्म-काल—स० १६३८।

ग्रन्थ—( १ ) दुष्प्रभंजन-स्तोत्र, ( २ ) गंगा स्तोत्र, ( ३ ) नदिनी  
नन्दन नाटक आदि सात आठ पुस्तक तथा सामयिक पत्रों में लेख।

नाम—( ४०४३ ) मन्नीलालजी मिश्र।

जन्म-काल—स० १६३८।

ग्रन्थ—( १ ) ध्यानद सुधांजुधि, ( २ ) प्रमोद-सुधा-तरंगिणी,  
( ३ ) भगवद्शक्ति भूषण, ( ४ ) कान्यकुब्ज भूषण, ( ५ ) कात्यायनी  
स्तवन, ( ६ ) कान्यकुब्ज हितोपदेश, ( ७ ) अर्घ्य रामायण,  
( ८ ) जैसलमीर-चरित्र, ( ९ ) गाने का कई पुस्तकें।

विवरण—आप बैतगाँव निवासी प० बालमुकुन्द मिश्र के पुत्र  
हैं। आपका नाद विद्या से भी प्रेम है।

उदाहरण—

सखिन समेत प्यारी यमुना नहान चली,  
धार नील सारी अग सुखमा अमव है,  
भासा में मोहन अचानक ही आयो जान,  
लाजशर घुँघट से की-हों मुख बर है।  
मिश्र मणिलाल प्रभा पीतम बिलोकी ऐसी,  
की-हों अनुमान मान उपमा स्पष्ट है;  
राहू को महान भय मानि के अचान मानो,  
सागर पिता की अक आय छिपो चद है।

नाम—( ४०४४ ) मयूर मदारीसिंह यादविल, महसुई, जिला  
सीतापुर।

जन्म-काल—स० १९३८ ।

विवरण—यह महाशय अधिक कविता नहीं करते थे। इन्होंने कभी-कभी समस्या पूर्ति की है।

नाम—( ४०४५ ) महादेवशरण पाँडे, सारन ।

नाम—( ४०४६ ) महशयखशसिंह, पन्हीना, उन्नाव ।

प्रथ—महशयन-रजन ।

नाम—( ४०४७ ) मुकुंदलाल, टोकरमगढ वासी ।

प्रथ—शिव माहात्म्यमांगर (१९६३), कुडेश्वर पचीसी (१९६४) (प्र० त्रै० रि) ।

नाम—( ४०४८ ) मुनिजिन विनयजी ।

प्रथ—स्फुट लेख ।

विवरण—श्रेतावर चैन साधु तथा हिंदी के प्रेमी ।

नाम ( ४०४९ ) रतनेश मिश्र ।

प्रथ—रसकलस ।

विवरण—कुछ छंद इनके हमने देखे हैं ।

नाम—( ४०५० ) राजदेवी कुंवरि ठकुरानी, गया ।

प्रथ ( १ ) समस्या-पूर्ति ( २ ) रसिक मित्र, ( ३ ) रसिक रहस्य ।

नाम—( ४०५१ ) राधाकृष्ण वाजपेयी चौपटियाँ, लखनऊ ।

जन्म-काल—स० १९३८ ।

विवरण—यह द्विजराज कवि के जामातू हैं, और आपकल वैयक करते हैं। हिंदी-कविता तथा लेख पत्रों में दते रहते हैं। आपको काव्य का अच्छा ज्ञान है।

नाम—( ४०५२ ) रामचरणलाल ब्राह्मण, कौंच, जिला उरई ।

प्रथ—( १ ) सनातन धर्म दर्पण, ( २ ) रामायण-व्यासा ।

नाम—( ४०६३ ) रामनारायणलाल ( बीरन ) कायस्थ,  
छतरपुर ।

जन्म-काल—स० १६३८ ।

नाम—( ४०६४ ) लालसिंह क्षत्रिय ।

जन्म-काल—स० १६३८ ।

प्रथ—( १ ) चंद्रापत्नी, ( २ ) कृषि सिद्धांत, ( ३ ) वीरबाला,  
( ४ ) आधम न्यत्रथा, ( ५ ) श्रवण पुराण, ( ६ ) सहकारिता ।

विवरण—आप द्विगुमरगढ़ ग्राम, जिला गाजीपुर वासी ब्रह्मण्य  
सिंह के पुत्र हैं । आपने राजपूत आगरा का एक वर्ष संपादन किया,  
और अब क्षत्रिय मित्र काशी का संपादन करते हैं ।

नाम—( ४०६५ ) विश्वेश्वरप्रसाद ब्राह्मण, घुघुचिहार्डि,  
राज्य रोवाँ ।

जन्म काल—स० १६३८ ।

नाम—( ४०६६ ) वीरेश्वर उपाध्याय, फान्यकुब्ज ब्राह्मण,  
जारी, इलाना द्रोटा नागपुर ।

जन्म-काल—स० १६३८ ।

प्रथ—( १ ) आर्य रामायण, ( २ ) अद्भुतावतार-काण्ड,  
( ३ ) आनंद-सजीवनी, ( ४ ) फाग चित्तचोर चालीसा, ( ५ )  
भक्ति-संजावनी, ( ६ ) भजन प्राठ चालीसी, ( ७ ) मदन-मोहिनी  
( उपन्यास गद्य ) ।

नाम—( ४०६७ ) शिवभुमारसिंह ठाकुर, काशी ।

जन्म-काल—लगभग स० १६३५ ।

रचना-काल—सं० १६६३ ।

विवरण—आप बड़े उत्साही लेखक, काशी नागरी प्रचारिणी सभा  
के जन्म दाताओं में से हैं । डेपुटी इन्स्पेक्टर स्कूल्स थे । हिंदी में कई  
ग्रंथ लिखे हैं ।

नाम—( ३०२८ ) शिवदासकराम पाडे ( बालक ), दिलवल  
खानपुर, जिला वानपुर ।

जन्म-काल—स० १६३८ ।

प्रथ—( १ ) धनुषयज्ञ नाटक, ( २ ) स्वदेशी काव्य-कल्पद्रुम,  
( ३ ) स्फुट काव्य गद्य तथा पद्य ।

नाम—( ४०२६ ) शुकदेवप्रसाद तिवारी ( निर्मल ),  
सोहागपुर, जिला हुशगावाड ।

जन्म-काल—स० १६४६ ।

रचना काल—स० १६६३ ।

प्रथ—( १ ) सावित्रा चरित्र ( नाटक ), ( २ ) हिंदी दगा  
( नाटक ), ( ३ ) कमला प्रताप ( उपन्यास ), ( ४ ) हिंदी-विष  
यक्त कविताएँ, ( ५ ) होली की राख ( कविता ), ( ६ ) ग्रामीण  
जीवन ( गद्य ), ( ७ ) निचल-ऋदन ( कविता ), ( ८ ) हिंसा का  
शीभत्स डाय ( गद्य ), ( ९ ) भारतीय स्वास्थ्य पर अँगरेजी राज्य  
का प्रभाव, ( १० ) महिला-सप्त-सरोज इत्यादि ।

विवरण—आप का मानिकपुर निवासी शुभैतिया ब्राह्मण प०  
धन्नालालजी तिवारी के पुत्र हैं । आप कुछ काल तक 'पंचरात्र'  
नामक माहेश्वरी-समाजगले मासिक पत्र के संपादक रहे । बचपू से  
'नव-शक्ति'-नामक पत्र निकालने का भी इन्होंने आयोजन किया ।  
आपकी रचनाएँ सामाजिक, धार्मिक अथवा राजनीतिक विषयों  
पर हुआ करती हैं । आपकी पत्नी भीमती गायत्रीदेवीजी भी एक  
अच्छी स्त्री-कवि तथा लेखिका हैं, और इन्होंने 'महिला दूषण' तथा  
'महिला-गान'-नामक पुस्तकें लिखा हैं । [ प० भोत्रिय जागेश्वर  
प्रसादजी शर्मा द्वारा ज्ञात ]

नाम—( ४०६० ) श्यामविहारी शर्मा ।

रचना-काल—स० १६६३ ।

प्रथम—प्रेस प्रकाश ।

विवरण—हमारे पंडितजी, कानपुर गिरासी अरुणपुर उद्यानवाड़े,  
नाथव-साद के पुत्र हैं । आपको चित्र प्रथम से विशेष प्रेम है ।

उदाहरण—

दाएँ दत्त राम-नर पावन दिगंतन म,  
भक्त-उर भक्ति नव अतुर उगाण देत ;  
गाण देत चारो फल तिमल विरुश धारि,  
फरवृत्त आपने प्रभाव तें लनाण देत ।  
नाएँ देत भुक्ति मुक्ति जग में बिदारीराम,  
गग-सी पवित्र पाप पुज का बहाएँ देत ;  
देवन विदेवन में आठो याम सय ठाम,  
कविता-गुसाईँ को पियूष बरसाण देत ।

नाम—( ४०६१ ) सतराम, लाहौर ।

विवरण—आप 'आर्य प्रभा' पत्र का संपादन करते थे ।

नाम—( ४०६२ ) हनुमानप्रसाद वैश्य, अहरौरा बाजार,  
जिला मिर्जापुर ।

जन्म-काल—स० १९३८ ।

ग्रंथ—( १ ) जानकी स्तव्यवर, ( २ ) दुर्गा प्रभाकर, ( ३ ) चंद्रलता,  
( ४ ) हनुमान हार्क, ( ५ ) चंद्रकला-चंद्रिका, ( ६ ) कविता सुधार,  
( ७ ) स्फुट काव्य ।

समय—संवत् १९६४

नाम—( ४०६३ ) अखिलानंद शर्मा, बदाऊँ ।

जन्म-काल—स० १९३६ ।

ग्रंथ—( १ ) दयानंद लहरी, ( २ ) दयानंद दिग्विजयाक, ( ३ )  
आप शिक्षा, ( ४ ) आर्य विद्योदय, ( ५ ) दयानंद दिग्विजय ।

नाम—( ४०५८ ) शिवनालकराम पाडे ( बालक ), दिलनल  
रानपुर, जिला वानपुर ।

जन्म-काल—स० १९३८ ।

ग्रंथ—( १ ) घनुपयज्ञ नाटक, ( २ ) स्वदेशी काव्य-कल्पद्रुम,  
( ३ ) स्फुट काव्य गद्य तथा पद्य ।

नाम—( ४०५९ ) शुकद्वयप्रसाद तिवारी ( निर्बल ),  
सोहागपुर जिला हुशगानाद ।

जन्म-काल—स० १९४६ ।

रचना काल—स० १९६३ ।

ग्रंथ—( १ ) सावित्रा चरित्र ( नाटक ), ( २ ) हिंदी दश  
( नाटक ), ( ३ ) कमला प्रताप ( उपन्यास ), ( ४ ) हिंदी विप  
यक कविताएँ, ( ५ ) हाली की राख ( कविता ), ( ६ ) ग्रामीण  
जीवन ( गद्य ), ( ७ ) निर्बल कदन ( कविता ), ( ८ ) हिंसा का  
धीमत्स इत्य ( गद्य ) ( ९ ) भारतीय स्वास्थ्य पर श्रीगरेजी राज्य  
का प्रभाव ( १० ) महिला-सह-सरोज इत्यादि ।

विवरण—आप कदा मानिकपुर निवासी शुभैतिया ब्राह्मण प०  
धबालालजी तिवारी के पुत्र हैं । आप कुछ काल तक 'पंचराज'  
नामक माहेश्वरी-समानवाले मासिक पत्र के संपादक रहे । बचपू से  
'नव-शक्ति'-नामक पत्र निकालने का भी इन्होंने आयोजन किया ।  
आपकी रचनाएँ सामाजिक, धार्मिक अथवा राजनातिक विषयों  
पर हुआ करती हैं । आपकी पत्नी श्रीमती गायत्रीदेवीजी भी एक  
अच्छी स्त्री-श्रुति तथा लेखिका हैं, और इन्होंने महिला दृश्य तथा  
'महिला-गान नामक पुस्तकें लिखा हैं । [ प० श्रोत्रिय जागेश्वर  
प्रसादजी शर्मा द्वारा ज्ञात ]

नाम—( ४०६० ) श्यामविहारी शर्मा ।

रचना-काल—स० १९६३ ।



प्रथ—प्रेम प्रकाश ।

विवरण—हमारे पंडितजी, कानपुर निवासी अकबरपुर उन्नाववाले,  
प० माधवनसाद के पुत्र हैं । आपको चित्र काव्य में विशेष प्रेम है ।

उदाहरण—

छाप देत राम-यश पावन दिगंतन मं,  
भक्त-उर भक्ति नव अक्षुर उगाण देत,  
गाण देत चारो फल विमल विकाश वारि,  
फलपटुभ आपने प्रभाव तें लताए देत ।  
नाए देत भुक्ति मुक्ति जग में विहारीराम,  
गग-नी पवित्र पाप पुज को वहाए देत,  
देसन विदेसन में आठो याम सब ठाम,  
कविता-गुसाईं को पियूष रसाण देत ।

नाम—( ४०६१ ) सतराम, लाहौर ।

विवरण—आप 'आर्य प्रभा' पत्र का संपादन करते थे ।

नाम—( ४०६२ ) हनुमानप्रसाद वैश्य, अहरौरा धाप्पार,  
जिला मिर्जापुर ।

जन्म-काल—स० १६३८ ।

प्रथ—( १ ) जानकी स्वयंवर, ( २ ) दुर्गा प्रभाकर, ( ३ ) चंद्रलता,  
( ४ ) हनुमान हाँक, ( ५ ) चंद्रकला-चंद्रिका, ( ६ ) कविता सुधार,  
( ७ ) स्फुट काव्य ।

समय—सन् १६६४

नाम—( ४०६३ ) अखिलानंद शर्मा, बदाऊँ ।

जन्म काल—सं० १६३६ ।

प्रथ—( १ ) दयानंद लहरी, ( २ ) दयानंद विम्बिज्याकं, ( ३ )  
आय शिक्षा, ( ४ ) आर्य विद्योदय, ( ५ ) दयानंद दिम्बिज्य ।

नाम—( ४०६४ ) कृष्णानंद पाठक, माधवरामपुर, डा० गोपीगंज, जिला मिर्जापुर ।

जन्म-काल—स० १९३६ ।

विवरण—आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् हैं । भाषा-कविता की समस्या पूर्ति इत्यादि करते हैं । आपके लगभग ७०० स्तुत छंद हैं ।

नाम—( ४०६५ ) चंद्रशेखर ( द्विजचंद्र ) ब्राह्मण, रानीपुर, जिला आजमगढ़ ।

जन्म-काल—स० १९३६ ।

नाम—( ४०६६ ) नाथूराम प्रेमी, देवरी, सागर ।

जन्म-काल—सं० १९३६ ।

विवरण—सपादक जैन द्वितीय । आपने हिंदी ग्रंथ रत्नाकर निकाला है, जिसमें हिंदी के पचास साठ अच्छे ग्रंथ छप चुके हैं । आपने जैन ग्रंथों का अच्छा अध्ययन किया तथा जैन ग्रंथ भाषा में बहुत से ग्रंथ प्रकाशित किए हैं । आप बड़े उत्साही पुरुष हैं ।

नाम—( ४०६७ ) पन्नालाल, घाटमपुर, जिला कानपुर ।

नाम—( ४०६८ ) पुरुषोत्तमप्रसाद पांडेय, बालपुर चंद्रपुर, विलासपुर ।

ग्रंथ—( १ ) जालगुलाब, ( २ ) अनंत खेखावलि, ( ३ ) खेजु माळा ।

नाम—( ४०६९ ) ब्रजनाथ धी० ए०, एल्-एल्० धी०, मुरादाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९३६ ।

नाम—( ४०७० ) ब्रह्मदेवनारायण, मु० बेलवाँ, पो० देव, जिला गया ।

जन्म-काल—स० ११३४ ।

प्रथ—( १ ) कवि-चरित्र, ( २ ) कृपण चरित्र, ( ३ ) कवियुग चरित्र ।

नाम—( ४०७१ ) माधवप्रसाद शुक्ल ।

विवरण—आप कन्नड़ में रहते हैं । कवि, अभिनेता, गायक, नाटककार, देश-प्रेमी धीर सज्जन हैं ।

प्रथ—महाभारत नाटक ।

नाम—( ४०७२ ) राधाकृष्ण श्रवस्थी ।

प्रथ—देवीप्रसाद भूपण ।

नाम—( ४०७३ ) राधाकृष्ण ( घनस्याम ), जयेंद्रगज, वालियर ।

जन्म-काल—स० ११३३ ।

प्रथ—( १ ) भजनसार, ( २ ) उपकार यचीसी आदि ।

नाम—( ४०७४ ) राधाकृष्ण मेहता, लाहौर ।

प्रथ—स्वामीजी के जीवन चरित्र का अनुवाद ।

नाम—( ४०७५ ) ललितकिशोरी गोस्वामिनी ।

जन्म-काल—सं० ११३६ ।

प्रथ—कन्नड़-तरंगिणी ।

विवरण—राधावल्लभभय ।

नाम—( ४०७६ ) श्रीजदमणसिंह क्षत्रिय, लोमामऊ ।

जन्म-काल—स० ११३६ ।

विवरण—आपने कई ग्रंथ रचे हैं ।

नाम—( ४०७७ ) लक्ष्मीनारायण, वरेली निवासी ।

प्रथ—श्री पुरुष धर्म ।

नाम—( ४०७८ ) वामनाचार्य 'वामन' गोस्वामी, मिर्जापुर ।

प्रथ—पञ्चानन-यचीसी ।

नाम—( ४०७१ ) शोतनप्रसाद झाझण, भरसरा, गिला गोरलपुर ।

प्रथ—( १ ) रामचरितावली नाटक गद्य-पद्य, ( २ ) विनय पुष्पावली, ( ३ ) भारतावति सोपान ( १३६४, पृ० १०२ ), द्वि० प्रै० रि० ।  
विवरण—आपमें साहित्य-सेवा जैसा है, यह कान्य से प्रकट होती है । राम भक्ति के सिवा आपमें देश भक्ति भी है । यह अनुपम गुण है ।

नाम—( ४०८० ) सत्यानंद जोशी M B B

प्रथ—नपादक अभ्युदय ।

विवरण—अच्छे लेखक हैं । आप आनन्द प्रातीय छाट साहब के दफ्तर में सुपरिंटेंडेंट हैं ।

नाम—( ४०८१ ) सरयूप्रसाद आचार्य, रईस जगदीशपुर, जिला वस्ती ।

प्रथ—प्रेम माळिका ।

विवरण—वतमान हैं । प्रति एक है, कता दो हैं । शंभुराम मन्धरी भी कर्ता हैं ।

नाम—( ४०८२ ) सावित्रादेवी ब्राह्मणी ।

विवरण—५० बालकृष्णजी भट्ट की पुत्री थीं ।

नाम—( ४०८३ ) हरसहायलाल धो० ए०, डिप्टी मजिस्ट्रेट, चोक्कापुर ।

प्रथ—( १ ) अक्षतार पराभव, ( २ ) कातावियोग, ( ३ ) शकुंतला अनुवाद ।

विवरण—चार अच्छे कवि थे ।

समय—संवत् १९६५

नाम—( ४०८४ ) अशर्फीलाल कायस्थ, बलरामपुर ।

प्रथ—बाल विहार ( कृष्ण-चरित्र, पृष्ठ ६४६ ) ।

नाम—( ४०८१ ) इन्द्रदेवलाज कायस्थ, मनियार, पलिया ।

जन्म-काल—स० ११४० ।

ग्रंथ—स्युट पद ।

नाम—( ४०८२ ) गणेशरामचन्द्र शर्मा, अजमेर ।

ग्रंथ—रामजी के मराठी तथा गुजराती व्याख्यानो का अनुवाद ।

नाम—( ४०८३ ) गदा परसाद पाठक, दारानगर, इलाहाबाद ।

ग्रंथ—( १ ) लक्ष्मण टीका, ( २ ) मञ्जुसूत्र परिषत्त, ( ३ )

शिखा-कल्पद्रुम, ( ४ ) क्लृप्त-दर्पण ।

नाम—( ४०८४ ) गनपाज ( वर्तमान ) ।

ग्रंथ—प्रिया रातम जिलास ।

नाम—( ४०८५ ) गिरिजाशरण, पृथ्वीन ।

जन्म-काल—स० ११४० ।

नाम—( ४०८६ ) गौरचरण गोस्वामी ।

जन्म-काल—स० ११२३ ।

रचना-काल—स० ११६२ ।

ग्रंथ—( १ ) जाली कुम्भलाज, ( २ ) नृपय-नृपय, ( ३ )

विचित्र जाल, ( ४ ) श्रीगंगा-चरित्र, ( ५ ) चोरी है कि दशा-

घाती, ( ६ ) अभिमन्यु वध, ( ७ ) भवना, ( ८ ) चैतन्य

विषय की समाज्ञापना पर समाज्ञोचना, ( ९ ) श्रीविष्णु प्रिया

चरित्र ।

विवरण—आप गोस्वामी राधाचरण के ज्येष्ठ पुत्र मरुत,

बंगला, बिर्दा, अंगरेजी आदि के अच्छे लेखक थे । बाक्यावस्था में

भारी मानसिक परिश्रम करने से आपका स्वभाव हो गया ।

नाम—( ४०८७ ) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, जयपुर ।

जन्म-काल—स० ११२० ।

विवरण—आप अच्छे पंडित एवं बड़े ही नम्र और निष्कपट पुरुष

थे। भारतसे हिंदी-सहायता की यही आशा थी। शोक है, आपका घसमय देहांत हो गया।

नाम—( ४०१२ ) चंद्रलाल गोस्वामी।

जन्म-काल—जयमग स० १९४०।

प्रथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीयाचार्य।

नाम—( ४०१३ ) चंद्रिकाप्रसाद मित्र 'चंद्र' गुरार, ग्वाजियर निवासी।

जन्म-काल—स० १९२०।

रचना-काल—स० १९६२।

प्रथ—स्फुट रचना।

उदाहरण—

कृप्या फालिंदी का कल कल विद्वग घृद कलरव स्वरपार,  
जलित-जताप्रा का पह भुरमुट त्रिविधि समीरण का सघार।  
घृक्ष-वश्लियों का सम्मलेन फालिज कूजित कलित निकुज।  
सरस सुगंध सनी सुमनावलि गूँज रहे जिस पर थलि पुज।  
सभी मनोरम, सभी मधुर हैं, सब जगती से न्यारा है;  
नर क्या, देवों का भी प्यारा भारतवप हमारा है।

नाम—( ४०१४ ) जयलाल, किशनगढ़ राज्य।

प्रथ—( १ ) प्रतिष्ठा प्रकाश ( किशनगढ़ाधीश महाराजा मोहन-  
कमसिंहजी की रानी के बनवाए हुए गोवर्द्धन-मंदिर का बपन ),  
( २ ) धूपन भोग, ( ३ ) कवि-सार-समुच्चय, ( ४ ) तयारीछ राज्य  
किशनगढ़।

विवरण—आप शाकद्वीपी भोजक व्याख्य हैं, और अभी विधमान  
हैं। कविताओं में यह अपना नाम 'जय' रखते हैं।

नाम—( ४०६२ ) धनुर्धर शर्मा ।

जन्म-काल—स० १९४० ।

प्रथ—( १ ) राम-केरुयी-संवाद, ( २ ) जनक-मरणोत्थाप, ( ३ ) मीमा भीष्मागमन, ( ४ ) भट्टिबाल्य का पद्यानुवाद, ( ५ ) अन्वयोक्ति पुष्पावलि, ( ६ ) समस्या-पूर्ति ।

नाम—( ४०६६ ) निकुञ्ज श्रुति राधावल्लभोया ।

जन्म-काल—स० १९४०, वर्तमान ।

प्रथ—स्फुट पद ।

विवरण—टोडी क्रतेहपुर की रानी ।

नाम—( ४०६७ ) नूतन ( कवि ), उन्नाव निवासी ।

जन्म-काल—लगभग स० १९४० ।

कविता-काल—स० १९६२ ।

प्रथ—स्फुट कव्य ।

विवरण—प्रजभाषा तथा खड़ी बोली में अच्छी कविता करते हैं ।  
आप परिश्रमी और साधु प्रकृति के सज्जन हैं ।

नाम—( ४०६८ ) पूरनमल भौंसो ।

नाम—( ४०६९ ) प्यारेलाल कायस्थ, गौरहर ।

नाम—( ४१०० ) ब्रह्मदत्तजी, देवद, जिला सहारनपुर ।

जन्म-काल—स० १९२२ ।

रचना काल—स० १९६२ ।

प्रथ—( १ ) प्रेम-वर्षा ( पद्य ), ( २ ) प्रेमत्रिधि का आदेश ( आध्यात्मिक गद्य प्रथ ), ( ३ ) स्वराज्य पथ, ( ४ ) अध्यात्म-वीणा, ( ५ ) प्रेम निकुञ्ज, ( ६ ) आत्मोद्धार ( अर्थपूर्ण ) ।

विवरण—आप प० भागिरथलालजी के पुत्र तथा स्थानीय स्कूल में संस्कृत अध्यापक ह । [ श्रीयुत कर्दयालाल शास्त्री, देवद द्वारा ज्ञात ]

उदाहरण—

मारे हग बस रहो आली श्याम ।

सजल जलद दुति बदन मनोहर सज गुण उपमा धाम ;

अमित दिवाकर स-कर विविध प्रभु कीन मुकुट विधाम ।

पाप कीट घृति अलक पलक भ्रू बसत दामिनी दाम ;

ध्रुति-कुटल नाना मनि शोभा राजत तिलक छलाम ।

श्रेत बिंदु-कण तारा गुन गण लसत अमित गुण यान ;

मुक्ता-दशन अधर बिद्रुम प्रभु निरल चकित सुर वाम ।

कवि, विधु रविज भानु मणिमाला गल-राजत जप नाम ;

भुज केयूर बलय कर पहुँची कटि काची अभिराम ।

अमित कोटि प्रह्लाड कि शोभा सकोचित लल काम ;

नूपुर चरन-कमल ध्वनि म 'शिशु' कियो चेतन विश्राम ।

नाम—( ४१०१ ) भगवानदास केला, वृदांग निवासी वैश्य ।

जन्म-काल—लगभग स० ११४६ ।

रचना काल—लगभग स० ११६८ ।

प्रथ—विद्य-वेदना और इतिहास तथा अर्थ शास्त्र पर कई अच्छे प्रय लिखे हैं । प्रेम-महाविद्यालय में कई साल अध्यापक तथा प्रेम-पत्र के संपादक रहे हैं । हिंदी के उत्साही लेखक तथा कवि हैं ।

नाम—( ४१०२ ) भगवानदास हालना ।

विवरण—आप हिंदी के प्रसिद्ध लेखक हैं ।

नाम—( ४१०३ ) भगवानदीन मिश्र, शाहपुरा, जिला मडला ।

जन्म-काल—स० ११४० ।

प्रथ—( १ ) राजेंद्र निवास, ( २ ) श्रीरामरघुवश-विनय, ( ३ ) श्रीराम धनुष-यज्ञ, ( ४ ) शशु विवाह, ( ५ ) राम रजनी, ( ६ ) पूज-वाग्मि ।

पम—( ४१०४ ) भवानीचरण ( लालन ), फतेहपुर ।



जन्म-काल—स० ११४० ।

ग्रंथ—( १ ) काखिसा-स्तुति, ( २ ) विनय-सिक-सहरी, ( ३ )  
छवि प्रिया, ( ४ ) अयोध्या-माहात्म्य आदि ।

नाम—( ११०५ ) भोलानाथ राधावल्लभो ।

जन्म काल—स० ११२० ।

ग्रंथ—सुष्ट पद ।

विवरण—हिंदी-साहित्य को ऐसी ऐसी पुस्तकों की षही ही  
आवरणकता है । बाबू साहब ने एक बड़े अभाव की पूर्ति थी । आपने  
अमरिका तथा जापान जाकर विद्या पढ़ी थी ।

नाम—( ४१०६ ) यशोदादेवी मपादिका स्त्री उर्म शिखर ।

ग्रंथ—सखी माता ।

नाम—( ४१०७ ) रघुनदनसिंह, प्राम मग्गी, जिला  
खखनऊ ।

जन्म काल—स० ११४० ।

ग्रंथ—( १ ) सुष्ट कविताएँ, ( २ ) भूमोल, जिला खखनऊ  
तथा सयुक्त-प्रात, ( ३ ) नूतन संगीत दर्पण, ( ४ ) स्वदेशो-  
दार-शतक ।

विवरण—आप इस समय अमेठी में, मिडिल स्कूल के, हेडमास्टर  
हैं । कविता अच्छी करते हैं ।

उदाहरण—

पच यज्ञ वेद विन छिजहु पतित सय,  
अक्षर विहीन पीन दम द्वेष घाती में ;  
ऊँच नीच छुआछूत ही को सय ठौर राज,  
एक जाति बैठि ना सकत एक पाँती में ।  
'रघुनद' केतिक अधेद करी वित्त विन,  
बहु चारी बिभवा बिलाप करै जाती में ;

स्वारथ के बस बिन एकता विहाल खेद,  
 हिंदुन की हीन दमा छेद करे छाती में ।  
 तान तुळ तिल 'श्री' तमोज को न खीजे नाम,  
 असन बसन बिन केने बिललात हैं,  
 छापि-तापि सिगरी बितायति हैं राति, भोर,  
 होत हो तरनि तेज तान्त घमात हैं ।  
 अस्थि-बम ही है अश्लिष्ट देह पंजर में,  
 सभ्यताभिमानी देख दूर ते बिनात हैं ।  
 कीजै 'रघुनदन' सहाय ऐसे दीनन की,  
 शिरि सताण अतुलाण गर जात हैं ।

नाम—( ४१०८ ) राघवप्रसादसिंह 'महत्त', ( राघव )  
 धौनी ग्राम, जिला दरभंगा ।

जन्म-काल—स० ११४१ ।

कविता-काल—स० ११६१ ( सन् ११००- ) ।

ग्रन्थ—( १ ) राष्ट्रीय सगीत, ( २ ) कथा-मञ्जरी ( शीघ्र ही  
 प्रकाशित होनेवाली है ) ( ३ ) बालक रामायण ।

विवरण—आप द्राणावार मूल क भूमिहार ब्राह्मण बाबू जगदेव  
 नारायणसिंह के पुत्र तथा अपने प्रांत के एक प्रतिष्ठित जर्मोदार हैं ।  
 आप बिहार प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन के जन्म दाताओं में से हैं ।  
 बाल-साहित्य के सुष्ठु-वर्धन में आप विशेषकर योग दे रहे हैं ।  
 कविता अच्छी करते हैं ।

उदाहरण—

जननी तुम पद कोटि प्रणाम ।

चमकत सुभग मुहुट तव तिर पै शैलराज हिम धाम ।

पुर नर मुनि सबके मन मोहत सुखकर हर्य लजाम ।

विष्णुपदी रविजा युग सरिता मणि-भाजा सित श्याम ।  
 बिलसति कल्प राशि विनशावनि तव उर शाभा धाम ।  
 यमन धम शुभ गात धनुरम पूरत सय मन काम ;  
 श्रीग धग बहुमूढ्य धमूपय मुर-भदिर धभिराम ।  
 सज्जग भृत्य तव घहरत निसि दिन हिंद-महोदधि नाम ;  
 धरण धोइ मृदु धरण जलन-रज धरत शीश यमु-याम ।

नाम—( ४१०१ ) राजेंद्रसिंह ( कुँवर ), सीतापुर ।

विवरण—घा१ राजा श्रीपालसिंह तारसुद्धदार फे सुयोग्य पुत्र  
 हैं । घा१को हिंदी से विशेष प्रेम है । घा१ ३ साल तक यू० पी० में  
 मिनिस्टर रहे । हाल में गवर्नमेंट से राय न मिलने पर घा१ने इस्तीफा  
 दे दिया ।

नाम—( ४११० ) राधारमणप्रसादसिंह रहस ।

प्रथ—( १ ) महिम्न स्तोत्र भाषा ( १६६२ ), ( २ ) स्तोत्र  
 रत्नावली ( १६६६ ) । [ द्वि० प्रै० रि० ]

नाम—( ४१११ ) रामचरण नागार्च ।

कविता-काल—सं० १६६२ ।

प्रथ—( १ ) धेम स्तुति, ( २ ) हित ध्यान प्रेमाष्टक, ( ३ ) गुरु-  
 प्रेमाष्टक, ( ४ ) ध्यान-स्तुति ।

विवरण—राधावल्लभा ।

नाम—( ४११२ ) रामचरित उपाध्याय, नरसिंहगढ़  
 ( मालवा ) ।

प्रथ—प्रकाशित—

( १ ) सूक्ति मुद्रावली, ( २ ) रामचरित चंद्रिका, } सत्साहित्य-  
 ( ३ ) रामचरित चिंतामणि, ( ४ ) राष्ट्रभारती, } प्रथमाज्ञा,  
 कानपुर ।

स्वारथ के बस विन ण्यता विहाल खेद,  
 हिंदुन की हीन दमा छेद करे छाती में ।  
 सान गुरु तिख श्री' तनोज को न लीजे नाम,  
 असन बसन विन केते बिलखात हैं ;  
 छापि-तापि सिगरी पितायति हूँ राति, भोर,  
 होत ही तरनि - तेज ताकत धमात हैं ।  
 अस्थि-चर्म ही है अवशिष्ट देह पंजर में,  
 सभ्यताभिमानि देग दूर ते पितात हैं ।  
 कीजे 'रघुनदन' सहाय ऐसे दीनन की,  
 शिरिर सताण अतुलाण गरे जात हैं ।

नाम—( ४१०८ ) राधवप्रसादसिंह 'महत', ( राधव )  
 घैनो ग्राम, जिला दरभंगा ।

जन्म-काल—स० १९४२ ।

कविता-काल—स० १९६२ ( सन् १९००- ) ।

प्रथ—( १ ) राष्ट्रीय मगीत, ( २ ) कथा मजरी ( शीघ्र ही  
 प्रकाशित होनेवाली है ), ( ३ ) बालक-रामायण ।

नियरथ—आप द्राणावार मूत्र के भूमिहार मासख, वानू जगदेव  
 नारायणसिंह के पुत्र तथा अपने प्रात के एक प्रतिष्ठित जर्मोदार हैं ।  
 आप बिहार प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन के जन्म दातार्थों में से हैं ।  
 बाल-साहित्य के पुष्ट-वधन में आप विशेषकर योग दे रहे हैं ।  
 कविता अच्छी करते हैं ।

उदाहरण—

जननी तुम पद कोटि प्रणाम ।

धनकत सुभग मुझट तव सिर पै शैलराज हिम धाम ;

सुर नर मुनि सबके मन मोहत सुखकर हर्य जलाम ।

विष्णुपदी रविजा युग सरिता मयि-माळा सित श्याम ;  
 विलसति कलुप-राशि पिनशाग्नि तव उर शोभा धाम ।  
 बसन धर्मं शुभ गात अनुराम पूरत सब मन काम ;  
 र्द्यैग श्यग बहुमुख्य अभूपय सुर-भद्रि अभिराम ।  
 सज्जग भृत्य तव घहरत निसि दिन हिंदू महोदधि नाम ;  
 चरण धोइ मृदु चरण-जलज रज धरत शीश बसु-याम ।

नाम—( ४१०२ ) राजेंद्रसिंह ( कुँवर ), सीतापुर ।

विवरण—आप राजा भीपालसिंह तास्तुष्टदार के सुयोग्य पुत्र  
 हैं । आपको हिंदी से विशेष प्रेम है । आप ३ साल तक यू० पी० में  
 मिनिस्टर रहें । हाल में गवर्नमेंट से राय न मिलने पर आपने इस्तीफा  
 दे दिया ।

नाम—( ४११० ) राधारमणप्रसादसिंह रईस ।

प्रथ—( १ ) महिम्न स्तोत्र भाषा ( ११६२ ), ( २ ) स्तोत्र-  
 राजावली ( ११६६ ) । [ द्वि० प्रै० रि० ]

नाम—( ४१११ ) रामचरण नागार्च ।

कविता-काल—सं० ११६२ ।

प्रथ—( १ ) प्रेम स्तुति, ( २ ) हित ध्यान प्रेमाष्टक, ( ३ ) गुरु-  
 प्रेमाष्टक, ( ४ ) ध्यान स्तुति ।

विवरण—राधावल्लभा ।

नाम—( ४११२ ) रामचरित उपाध्याय, नरसिंहगढ़  
 ( मालवा ) ।

प्रथ—प्रकाशित—

( १ ) सूक्ति मुद्रावली, ( २ ) रामचरित चंद्रिका, } सत्साहित्य-  
 ( ३ ) चिंतामणि, ( ४ ) राष्ट्रभारती, } प्रथमाळा,  
 कानपुर ।

- ( ६ ) देव-दूत, ( ६ ) देव-मभाः } हिंदी प्रथम रत्नाकर, कायालय,  
पथद्व ।
- ( ७ ) भारत भक्ति, ( ८ ) उपदेश रत्नमाला, } एम्० एंड कंपनी,  
गहमर, शाहजपुर ।
- ( ९ ) सत्य हरिश्चंद्र, ( १० ) धनना सुदरी, } गंगा पुस्तकमाला,  
( ११ ) देवा द्रौपदी, } बखनऊ ।
- ( १२ ) सुधा शतक ( १३ ) बरवा चौसई, } इंडियन प्रेस,  
( १४ ) मेघदूत का पद्यानुवाद । } प्रयाग ।

अप्रकाशित—( १ ) सतसई, ( २ ) उपदेश-शतक, ( ३ ) सूक्ति  
रत्नावली, ( ४ ) सिंदूर प्रकरण ।

नाम—( १११३ ) रामजीलाल शर्मा ।

जन्म-काल—लगभग स० १६२२ ।

मृत्यु-काल—लगभग स० १६८३ ।

विवरण—यह प्रयाग में रहते थे । धारने गय में कई उत्तम पुस्तकें  
लिखीं, जिनमें २३५ पृष्ठों का एक प्रथम सीता चरित्र है । आरके  
१६ प्रथों में से ६ बालकों के लिये लिख्य गए । आरने कुछ काल  
विद्यार्थी नामक मासिक पत्र निकाला, तथा एक हिंदी प्रेस जारी  
रिया । आप कुछ काल हिंदी-साहित्य सम्मेलन के मंत्री थे और हिंदी  
के लिये धर्मशाला रहा करते थे । प्रतिभा पूर्य लेखक थे ।

नाम—( १११४ ) रामनारायण ( रमेश ऋषि ), कर्हू खानाद ।

प्रथ—( १ ) सीता-स्वयंवर, ( २ ) गंगा बहरी ।

उदाहरण—

सिख्य ज्ञान, विज्ञान, गान प्ररु बल, विद्या-सप्राम ;  
सफल कला तेरो जग छायो देश देश सब ठाम ।  
विश्व भरथि ! त्रिभुवन पति प्यारी ! धन भारत गुण धाम ,  
सब महिमा राधव किमि बरथै निज मुख बरन्यो राम ।

नाम—( ४११२ ) रामरत्नजी परमहंस ।

ग्रंथ—( १ ) उद्द, ( २ ) कुम्भिया ।

नाम—( ४११३ ) वामुदेव उपनाम पठानश्रलो, कौलारस ।

जन्म काल—सं० १३४० ।

ग्रंथ—द्वि महांमभु की विनय ।

विवरण—राधावल्लभा ।

नाम—( ४११७ ) विध्याचलप्रसाद कायस्थ, हरपुरनाग,  
घपारन ।

ग्रंथ—१= पूण और = अपूर्ण छोटे-छोटे ग्रंथ ।

नाम—( ४११८ ) वेणीमाधव, मित्रा, राज्य रीयाँ ।

जन्म काल—सं० १३४० ।

ग्रंथ—द्यानदरानायक का छद्मोपद् अनुवाद ।

नाम—( ४११९ ) शालग्राम शास्त्री ।

जन्म-काल—लगभग सं० १३४२ ।

रचना-काल—सं० १३६२ ।

ग्रंथ—( १ ) साहित्य दण्ड की विमला टीका, ( २ ) आयुर्वेद-  
महत्त्व, ( ३ ) रामायण में राजनीति आदि ।

विवरण—आप हिंदी के उन्नत समालोचक एवं उच्च कोटि के  
लेखक हैं । सस्कृत एवं भाषा-शास्त्र के अच्छे ज्ञाता हैं । कारी में  
होनेवाले अ० भा० सस्कृत-सम्मेलन में आप सभापति हुए थे ।  
आजकल आप जलनऊ में प्रमुख वैद्य माने जाते हैं । हिंदी मासिक  
पत्रों में आपके लेख निकला करते हैं ।

नाम—( ४१२० ) शिवप्रसाद हेड प० दरभंगा ।

नाम—( ४१२१ ) शिवलालराय ।

जन्म-काल—सं० १३४० ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

नाम—( ४१२२ ) शिवाघार पाडे, प्रयाग ।

जन्म-काल—स० १९४० ।

रचना-काल—स० १९६२ ।

विवरण—इ गलिश-रीडर इजाहाणाद विरय विद्यालय । हिंदी के अछे खेतरक तथा धे छ कुळ के सुशिक्षित सदाचारी महाशय ।

नाम—( ४१२३ ) सुदरीशरण, जयपुर ।

जन्म-काल—स० १९४० ।

प्रथ—नाटक पूव स्फुट पद ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—( ४१२४ ) सूर्यनारायण दीक्षित वकील, खीरी ।

जन्म-काल—लगभग स० १९४० ।

रचना-काल—स० १९६२ ।

प्रथ—कुछे प्रथ लिखे हैं ।

विवरण—खीरी के अछे वकील हैं । इनकी कन्या एम्० ए० पास है ।

नाम—( ४१२५ ) हरीहरलाल गोस्वामा, मुकाम घारी, राज्य रोवाँ ।

विवरण—आप हिंदी के बड़े भारी शुभचिंतक थे । हम लोगों को इस प्रथ के प्रथम संस्करण के बनाने में आपसे सहायता मिली थी ।

समय—सन् १९६६

नाम—( ४१२६ ) उदयनारायण वाजपेयी ।

जन्म-काल—स० १९४२ ।

प्रथ—( १ ) प्राचीन भारतवासियों की विदेश-यात्रा व वैदेशिक व्यापार, ( २ ) महाराज पंचम आज, ( ३ ) विकास सिद्धांत, ( ४ ) कर्म-क्षेत्र ।

नाम—( ४१२७ ) नदकिशोर ब्राह्मण, मुरारिमऊ ।



जन्म-काल—सं० १९४१ ।

प्रथ—संगीत विद्यारत्नाकर । [ दि० प्रै० रि० ]

नाम—( ४१२८ ) बेजनाथ शुक्ल, पेंतेपुर, जिला बाराबंकी ।

नाम—( ४१२९ ) महादेवप्रसाद मिश्र ।

जन्म-काल—सं० १९४१ ।

प्रथ—( १ ) आसावर देवी-भाद्रक, ( २ ) यज्ञरंग-पचासा,

( ३ ) रसिक पचीसी ।

नाम—( ४१३० ) ( लाल ) रघुवरप्रसाद, ग्राम हिंडोरिया,

दमोह ।

जन्म काल—सं० १९३८ ।

कविता-काल—सं० १९६६ ।

प्रथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप दीवान गिरिधारीलाल के पुत्र हैं । श्रीयुत क्षत्री-प्रसादजी मिश्री का कथन है कि दीवानगिरी का पद आपके पूर्वजों को महाराज छत्रसाल के धनतर जो राजा हुए, उनसे प्राप्त हुआ था, और वही पद आज तक आपके वंश में चला आता है । इनकी कविताएँ 'रसिक मित्र', 'कान्य-पताका', 'शुकवि' आदि पत्रों में प्रकाशित हुआ करती है ।

उदाहरण—

पूख पुंय पुराकृत से मन मूरख ! मानुष को तन पायो ;

नाहक को जग जालन में फँसि के तिहि को शठ ! बादि गमायो ।

आयु तमाम ख्याम भई, कवहुँ मुख से नहि राम रमायो ;

भापत हैं 'खुबीर' वृथा सुर-दुर्लभ देह को दाग खगायो ।

नाम—( ४१३१ ) रमादेवी त्रिपाठी, प्रयाग ।

प्रथ—( १ ) रमा विनोद ( १९६६ ), ( २ ) अबला पुकार,

( ३ ) स्फुट, जेस तथा काव्य पत्रों में ।

विवरण—इममें नीति और चेतारनी के १११ दोहे कड़े गए हैं ।  
 आप प० चंद्रिकाप्रसाद त्रिपाठी, प्रयाग की सहधर्मिणी हैं ।

नाम—( २१३२ ) रायचंद्र त्रिपाठी, गौनी, जिला हरदोई ।

जन्म-काल—स० १९४१ ।

ग्रंथ—चंद्र त्रिनोद ।

नाम—( २१३३ ) रामश्रीन कायस्थ, मैहर ।

जन्म-काल—स० १९४१ ।

ग्रंथ—( १ ) सुदरकाद, ( २ ) रामाष्टक, ( ३ ) मुद्रतलर  
 रामायण ।

नाम—( ४१३४ ) शिवसागरराम शर्मा रेना, फतेहपुर ।

ग्रंथ—सत्यनारायण भाषा ।

नाम—( ४१३५ ) सत्यनारायण त्रिपाठी, मधना, कानपुर ।

जन्म-काल—स० १९४१ ।

ग्रंथ—गो विलार ।

नाम—( ४१३६ ) सत्यानंद सन्यासी ।

ग्रंथ—( १ ) पाखंड मत-नुठार, ( २ ) कबीर-पद्य की समीक्षा ।

नाम—( ४१३७ ) सालिग्राम शर्मा, अजमेर ।

ग्रंथ—न्याय दर्शन भाषा-टीका ।

समय—संवत् १९६७

नाम—( ४१३८ ) जगन्नाथसिंह बरसेरवा, जिला हरदोई ।

जन्म-काल—स० १९४२ ।

ग्रंथ—पत्नी वियोग ।

विवरण—हमारे जाननेवालों में हैं । रचना उत्कृष्ट है ।

नाम—( ४१३९ ) जुगलप्रसाद चर्मोदार ।

ग्रंथ—स्कृत कविता ।

विवरण—आप भिलाइ बी० एन्० आर० में रहते हैं ।

नाम—( ४१४० ) ददूदूलाल जैन ।

ग्रंथ—भजन-मञ्जरी ।

विवरण—आप सरूपधर के पुत्र हैं ।

नाम—( ४१४१ ) भगत कवि ।

ग्रंथ—भगत-चार्जासा ।

नाम—( ४१४२ ) मनोहरकृष्ण गोलवलकर, धी० ए०, एल् एल्० धी०, जयलपुर ।

जन्म-काल—लगभग स० ११४२ ।

विवरण—आप जयलपुर के प्रसिद्ध पकीजा में सँ हैं । यह महाराष्ट्र प्राक्ष्य होते हुए भी हिंदी भाषा से विशेष प्रेम रखते हैं । कुछ काल तक 'श्रीशारदा' पत्रिका के संपादक रहे, और आजकल स्थानीय राष्ट्रीय हिंदी-मंदिर के सभापति हैं ।

नाम—( ४१४३ ) यज्ञेश्वरसिंह जारग, मुजफ्फरपुर ।

ग्रंथ—( १ ) यज्ञेश्वर विरोध, ( २ ) राम रहस्य नाटक, ( ३ ) सीताराम नाटक ।

नाम—( ४१४४ ) रामप्रतापसिंह राजा, माड़ा-नरेश ।

नाम—( ४१४५ ) नजनाथ मिश्र धी० ए०, एल् एल्० धी०, मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० ११४८ ।

कविता काल—स० ११६७ ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विवरण—आप स्वर्गीय यकील पंडित दम्मीजाजजी मिश्र के पुत्र हैं । इनकी कविता 'चतुर्वेदी' पत्रिका में प्रकाशित होती रहती है ।

नाम—( ४१४६ ) शिवकरणप्रसाद ( सत्यदेव ), ग्राम महाराजगंज, जिला आजमगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १६४२ ।

प्रथ—( १ ) सत्यदेव विनोद, ( २ ) पूर्ति प्रमोद, ( ३ ) भक्ति शिरोमणि ।

नाम—( ४१४७ ) शिवनारायण कायस्थ ( मिश्र), सनिगवाँ, जिला कानपुर ।

जन्म-काल—स० १६४२ ।

प्रथ—( १ ) सुखद सगीत, ( २ ) सुष्ट काव्य ।

नाम—( ४१४८ ) शंभुराम ।

प्रथ—प्रेम मालिनी ।

विवरण—शंभुप्रसाद आचारी ने भी शंभुराम के साथ यह प्रथ रचा ।

नाम—( ४१४९ ) सगुनचंद्र कायस्थ ।

प्रथ—साधारण धर्म ।

नाम—( ४१५० ) सत्यनारायण पाठे ( सत्यदेव ), सरवरिया, विष्णुपुर, जिला आजमगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १६४२ ।

प्रथ—( १ ) सत्यदेव विनोद ( २ ) चीताल दिवाकर ( ८ भाग ), ( ३ ) साहित्य शिरोमणि-संग्रह ।

समय—सबत् १६६८

नाम—( ४१५१ ) कदवलाल गोरामो, घूँदी ।

विवरण—इनकी अवस्था इस समय लगभग ४० वर्ष की होगी । कविता भी कुछ कुछ करते हैं ।

नाम—( ४१५२ ) कणसिंह चँहडौलो, अलीगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १६३८ ।

प्रथ—( १ ) इति-पथ, ( २ ) यवन-भतादयं, ( ३ ) मेरा मत,

४) कर्णामृत, ( ५ ) अमृतोदधि, ( ६ ) काव्य-कुसुमोद्यान,  
७ ) संगीत-रत्न प्रकाश ।

विवरण—गद्य-पद्य-लेखक ।

नाम—( १११३ ) गोपालशरणासिंह, इलाहा नई गढ़ी,  
राज्य सीवाँ ।

जन्म-काल—सं० ११४८ ।

प्रथ—स्कूट रचनाएँ ।

विवरण—आप सँगर बशोत्पन्न जाल जगतबहादुर के पुत्र हैं ।  
सीवाँ-राज्य के मुनतिष्ठित एवं राज्य चिह्नों से सुशोभित इलाहो-  
दाराँ म से हैं । ११६० से सरस्वती, माधुरी आदि पत्रिकाओं में  
आपकी कविताएँ प्रकाशित होती हैं । ये सरस और सरल हैं ।  
सं० ११८२ में आप अखिल भारतपर्याय कवि-सम्मेलन, वृदावन के  
निर्वाचित सभापति हुए ।

नाम—( ४११४ ) चंद्रराज भडार ।

प्रथ—( १ ) भक्ति-योग, ( २ ) आदश देश-काल, ( ३ ) गार्गी-  
दर्शन, ( ४ ) सिद्धार्थ कुमार, ( ५ ) सम्राट् अशोक, ( ६ ) भारत  
के हिंदू सम्राट्, ( ७ ) नैतिक जीवन, ( ८ ) नाट्य-कला-दर्शन ।

विवरण—आप भानपुरा, इंदौर के रहनेवाले तथा सुखसपत्तिराय  
के कनिष्ठ भ्राता हैं ।

नाम—( ४११५ ) जगद्वेष मिश्र धी० ए०, मैनपुरा ।

कविता-काल—सं० ११६८ ।

प्रथ—ग्रेगरी की प्रसिद्ध गीतिका ( Gray's Glegy )  
का पद्यानुवाद ।

विवरण—यह पं० श्यामजीराम मिश्र के पुत्र हैं । इनका जन्म स्थान  
पिनाइट, जिला आगरा है, किंतु अब यह मैनपुरी में रहते हैं । आप

खड़ी बोली और मजभाषा दोनो म कथिता करते तथा स्थानीय चतुर्वेदी-पुरतन्त्रय के जन्मदाताओं में से हैं।

उदाहरण—

पित चाकड़ ये घस चाह चर्जे जय की जनु काम धुवा कहरे ;  
अधरान पै सोहै तुल्लाह मनी बुँद धुद भमी विधु बाह भरै ।  
बतरानि मं चीपें लसैं जनु स्वाम सितजुद में चपला पहरे ;  
घस बाह नवेलि विजोकि उठै मन माहि मनोभव की लहरे ।

नाम—( ४१२६ ) दयनारायणसिंह ( लाल ), सटा, डाकखाना  
शाहपुर ।

ग्रथ—रमेश-मनोरजनी ।

नाम—( ४१२७ ) मुख्तारसिंह जाट, गिरिधरपुर, मेरठ ।

ग्रथ—हिंदी-वैज्ञानिक क्यपतरु बनाते हैं ।

नाम—( ४१२८ ) रमेश पाँडे ( रामेश्वर ), पंडित पुरवा,  
जिला लखनऊ ।

जन्म काल—स० १९४३ ।

नाम—( ४१२९ ) सत्यनरत शमा, मुरादाबाद ।

समय—संवत् १९६६

नाम—( ४१३० ) गोविंदप्रसादजू देव चौबे ।

जन्म-काल—स० १९४४ ।

ग्रथ—विनय-शतक ।

विवरण—आप नया गाँव पाळदेव जागीर के युवराज हैं ।

नाम—( ४१३१ ) चंद्रभानुराय ।

ग्रथ—नरसिंहपुर नयन ।

विवरण—आप आपू गोउळप्रसाद के ज्येष्ठ पुत्र हैं, तथा दुर्ग,  
जिजा रायपुर, मध्यप्रदेश में निवास करते हैं ।

नाम—( ४१६२ ) घट्टीसिंह वर्मा, अटिया, उन्नाव ।

ग्रंथ—वीरागना-चरित्र ।

जन्म-काल—स० १२४४ ।

नाम—( ४१६३ ) मदनमोहनलाल दीक्षित, धिवरामऊ,  
जिला फर्रुखाबाद ।

जन्म-काल—स० १२४४ ।

ग्रंथ—( १ ) अनुचरी या महचरी ( उपन्यास ), ( २ ) बात की  
चोट ( उपन्यास ), ( ३ ) सत्कार-सेवा ( उपन्यास ), ( ४ ) प्रबन्ध-  
द्वय दो भाग ( प्रबन्ध लिखने की विधि ), ( ५ ) मोहन-मंजरी  
( उपन्यास ) ।

विवरण—आप भारद्वाज गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण प० शंकरदास  
दीक्षित के पुत्र हैं । गद्य तथा पद्य दोनों लिखते हैं । इनके ग्रंथों  
में से मोहन मंजरी को छोड़कर शेष सब मुद्रित हो चुके हैं । समस्या-  
पूर्ति से भी आपको रुचि रहती है । इस समय यह महाशय टाउन  
स्कूल, धिवरामऊ के प्रधान अध्यापक हैं ।

नाम—( ४१६४ ) रामचीज पौड़े, अरवल, गया ।

जन्म-काल—स० १२४४ ।

ग्रंथ—( १ ) विहारी वीर ( गद्य ), ( २ ) मित्र-चेप में शत्रु ( पद्य ) ।

नाम—( ४१६५ ) बचनेश, फतेहगढ़ ।

जन्म-काल—स० १२४४ ।

ग्रंथ—वीरागना चरित्र ।

नाम—( ४१६६ ) वीरसिंह उपदेशक आर्य समाज, फुलपुरा,  
हिसार ।

जन्म-काल—स० १२४४ ।

विवरण—आजकल राजपूत-सभा की ओर से उपदेशक हैं ।

नाम—( ४१६७ ) शिवदास गुप्त 'कुसुम', जिला गोरखपुर ।

जन्म-काल—स० १६२३ ।

जन्म-स्थान—बरहना बाजार, जिला गोरखपुर ।

कविता काल—सं० १६६६ ।

मृत्यु-काल—श्रावण शुक्ल २ बुधवार, स० १६८२ ।

प्रथ—( १ ) भारत की शासन प्रणाली, ( २ ) श्यामा (उपन्यास),  
( ३ ) आरती ( काव्य ), ( ४ ) कीचक-बध ( काव्य ), ( ५ )  
सर्पि ( जीवनी ), ( ६ ) कुमुद-कली ( स्फुट कविताएँ ), ( ७ )  
कमवीर यंत्रिमिन प्र कलिन ( जीवनी ) ।

विवरण—छाप अपने पिता श्रीयुक्त रामगुलामजी के सबसे छोटे पुत्र थे ।

नाम—( ४१६८ ) शकरलाल व्यास ( महेश ) ।

जन्म-काल—स० १६४७ ।

रचना-काल—सं० १६६६ ।

प्रथ—( १ ) श्रृंग-दण्ड, ( २ ) बाबू विवाह-नाटक ( मुद्रित ),  
( ३ ) निमाइ दिग्दर्श ( अमुद्रित ) ।

विवरण—होलकर राज्य के फसरामह निवासी गौड़ ब्राह्मण तथा  
खड़ी बोली के कवि हैं ।

समय—सयत् १६७०

नाम—( ४१६९ ) उमाशंकर, वृंदावन ।

जन्म-काल—स० १६४५ ।

रचना काल—स० १६७० ।

विवरण—गद्य पद्य लेखक एवं सुयोग्य वैद्य ।

नाम—( ४१७० ) ( चारहट ) कृष्णसिंह ( ली ) ।

रचना-काल—स० १६७० ।

विवरण—यह चारण कवि शादूसिंहजा के समकालीन थे ।  
इनके स्फुट छंद जो यंत्रों में छपे हैं, उनमें से एक यही देते हैं ।



उदाहरण—

अध्वर के अध्व का प्रचार कर अधुता ते,  
 वेदमत गाभिन को सुखदा सुजान भो ।  
 धर्म को सुधारो धर्म मर्म को विचारयो यात,  
 कष्ट कलिकाल बीच क्रतयुग मान भो ।  
 शिक्षा रूप भयो भूरि इतरि बराटन कों,  
 पाटन को झोनी तज सुयश वितान भो,  
 ऋष्यागद धरा धव्य धरापति अति धन्य,  
 जामे हू धनन्य ध य जाहिर जहान भो ।

नाम—( ४१७१ ) खगेश कवि ( श्यामलाल ) ।

जन्म-काल—सं० १६४२ ।

नाम—( ४१७२ ) गगानारायण द्विवेदी, लखनऊ निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १६४६ ।

रचना काल—सं० १६७० ।

विवरण—कन्यकुब्ज-कॉलेज, लखनऊ में अध्यापक । स्फुट पद्यकार ।

नाम—( ४१७३ ) गोविंद शुक्ल ।

आप दामोदरपुर, जिला भागलपुर निवासी सरयूपारीय ब्राह्मण हैं । हिंदी से विशेष प्रेम रखते हैं ।

नाम—( ४१७४ ) चुन्नीलाल पाडेय ।

जन्म काल—सं० १६४५ ।

ग्रंथ—( १ ) पद्यपुष्प माला, ( २ ) स्फुट कविता ।

विवरण—आप ऋष्यानंद पाडेय के पुत्र तथा गवर्न-स्कूल मुजफ्फरनगर में सस्कृत-अध्यापक हैं ।

उदाहरण—

कोकिल की कल कूक कलेजा हूऊ उदावत एक निराखी,  
 आग जगी-सी जगे बन में मोहि टैसुन की लवि के नवब्राखी ।

देखत राह थकीं छैलियाँ नहिं थाप सखी अजहूँ बनमाजी ।  
मो-सी अभागिन को यह आज बसत नहीं बस घत है भाजी ।

नाम—( ४१७५ ) छेदालाल कायस्थ ।

प्रथ—अबला-मनरजन ।

नाम—( ४१७६ ) जगतनारायणलाल एम्० ए०, एल्-एल्०  
बी०, एम्० डी०, पटना ।

जन्म-काल—स० ११४७ ।

रचना-काल—सं ११७० के लगभग ।

प्रथ—( १ ) एक ही आवश्यक बात, ( २ ) अर्थशास्त्र, ( ३ )  
हिंदू धर्म ।

विवरण—आपने अर्थशास्त्र तथा हिंदू धर्म पर कई पुस्तकें लिखी  
हैं । पढ़ने से निरूजनेवाले 'महावीर' पत्र के संपादक हैं । इस समय  
बिहार आइन्-सभा के सदस्य हैं ।

नाम—( ४१७७ ) जगदयाप्रसाद ( हितैषी ), कानपुर-  
निवासी ब्राह्मण ।

जन्म-काल—सं० ११४५ के लगभग ।

रचना-काल—स० ११७० ।

रचना—स्फुट छंद ।

विवरण—राजनीतिक कायकर्ता, जेब मुक्त, देश-प्रेमी महाशय  
हैं । रचना भी अच्छी करते हैं ।

नाम—( ४१७८ ) दशरथ बलवत यादव, देवरी, सागर  
( मध्यप्रदेश ) ।

जन्म-काल—सं० ११४६ ।

रचना-काल—स० ११७० के लगभग ।

प्रथ—( १ ) सदाचार-सोपान ( अनुवाद ), ( २ ) त्रिदेव  
निरूपण ( अनुवाद ), ( ३ ) श्री शिक्षा, ( ४ ) माता का कर्तव्य

( गुजराती पुस्तक का अनुवाद ), ( २ ) प्रेम-मंदिर ( मराठी पुस्तक का अनुवाद ), ( ३ ) मार्टिन लूथर इत्यादि ।

विवरण—आप श्रीयुक्त बलवंत राव यादव के पुत्र हैं । आपके पूज्य पिताजी ( महाराष्ट्र ) के निवासी थे । आप महाराष्ट्र-प्रिय तथा बँगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के जानने-वाले हैं ।

नाम—( ४१०१ ) नारायणप्रसाद चैताव, दिल्ली निवासी ।

जन्म-काल—लगभग स० १२४८ ।

कविता काज—स० १२०० ।

प्रथम—दस पद्यों नाटक तथा अन्य कई ग्रंथ बनाए हैं ।

विवरण—इनके नाटकों में बेपदी जनता की प्रशंसा करनेवाली बातें अधिक रहती हैं, तथा पांडित्य पूर्ण प्रयत्न कम । समालोचना असंयत भाषा में भी कर बैठते हैं । यथानाम तथा गुण की कड़ावत चरितार्थ कर देते हैं । नाटकों में चरित्र चित्रण विगड़ जाता है ।

नाम—( ४१०० ) पत्रालाल भैया गयावाल, 'छेज' ।

प्रथम—( १ ) कबली विनोद, ( २ ) वसंत पहार, ( ३ ) काली घटा ( ४ ) कुदलिया-कुदल, ( ५ ) जमाब माता, ( ६ ) उर्वशी, ( ७ ) मोहनकुमारी, ( ८ ) भद्र हरि भूपण, ( ९ ) मय मजरी ।

विवरण—आप बाबू श्यामजी भैया गयावाल के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

घोर घटा घहरं चहुँ थोर मचावत मार है मोर बहार सों ;  
 क्लृप्त काहुकि बाम के सर लखी पिय को घर लाइ विगार सों ।  
 रोस कितैक करे कचि 'छेज' परोसि जऊ समझाय विचार सों ;  
 शुक श्याम के गात पै मारत हाथ चमेली कि हाट सों ।

देखत राह यकीं धैरियाँ नहिं आए सखी अजहूँ बनमाजी ।  
मो-सी अभागिन को यह आज बसत नहीं बस अत है भाजी ।

नाम—( ४१०२ ) छेदालाल कायस्थ ।

प्रथ—अबला-मनरजन ।

नाम—( ४१०६ ) जगतनारायणलाल एम्० ए०, एल्-एल्०  
पी०, एम्० डी०, पटना ।

जन्म-काल—स० १९४० ।

रचना-काल—सं १९७० के लगभग ।

प्रथ—( १ ) एक ही आवश्यक पात, ( २ ) अर्थशास्त्र, ( ३ )  
हिंदू धर्म ।

विवरण—आपने 'अर्थशास्त्र तथा हिंदू धर्म' पर कई पुस्तकें लिखी  
हैं । पढ़ने से निकलनवाले 'महावीर' पत्र के संपादक हैं । इस समय  
बिहार-धार्मिक-सभा के सदस्य हैं ।

नाम—( ४१०७ ) जगदवाप्रसाद ( हितैषी ), कानपुर  
निवासी ब्राह्मण ।

जन्म-काल—सं० १९४२ के लगभग ।

रचना-काल—स० १९७० ।

रचना—स्फुट छंद ।

विवरण—राजनीतिक कार्यकर्ता, जेल मुक्त, देश-प्रेमी महाशय  
हैं । रचना भी अच्छी करते हैं ।

नाम—( ४१०८ ) दशरथ बलधत्त यादव, देवरी, सागर  
( मध्यप्रदेश ) ।

जन्म-काल—सं० १९४६ ।

रचना-काल—सं० १९७० के लगभग ।

प्रथ—( १ ) सदाचार सोपान ( अनुवाद ), ( २ ) विदेश-  
निरूपण ( अनुवाद ), ( ३ ) श्री शिक्षा, ( ४ ) माता का कर्तव्य

( गुजराती पुस्तक का अनुवाद ), ( ५ ) प्रेम-मंदिर ( मराठी पुस्तक का अनुवाद ), ( ६ ) मार्टिन लूथर इत्यादि ।

विवरण—आप धीयुत बलवंत राव यादव के पुत्र हैं । आपके पूर्वज चापोली ( महाराष्ट्र प्रांत ) के निवासी थे । आप महाराष्ट्र-प्रमिय तथा बेंगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के जानने-वाले हैं ।

नाम—( ४१७६ ) नारायणप्रसाद वेताव, दिल्ली निवासी ।

जन्म-काल—लगभग स० १६४८ ।

कविता-काल—स० १६७० ।

ग्रंथ—दस पंद्रह नाटक तथा अन्य कई ग्रंथ बनाए हैं ।

विवरण—इनके नाटकों में बेपदी जनता को प्रसन्न करनेवाली बातें अधिक रहती हैं, तथा पांडित्य पूरा प्रयत्न कम । समालोचना असंयत भाषा में भी कर बैठते हैं । यथानाम तथा गुण की कहावत चरितार्थ कर देते हैं । नाटकों में चरित्र चित्रण विगड़ जाता है ।

नाम—( ४१८० ) पत्रालाल भैया गयावाल, 'छैल' ।

ग्रंथ—( १ ) कजली विनोद, ( २ ) वसंत बहार, ( ३ ) काली घटा ( ४ ) कुडलिया-कुडल, ( ५ ) जमाल माला, ( ६ ) उर्वशी, ( ७ ) मोहनकुमारी, ( ८ ) भृगु हरि भूषण, ( ९ ) मेघ मजरी ।

विवरण—आप बानू श्यामजी भैया गयावाल के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

घोर घटा घड़े चहुँ ओर मचावत मोर है सोर बहार सों ;  
भूजत काहुकि घाम के सग लखी पिय को घर लाइ बिगार सों ।  
रोस कितैक करे कबि 'छैल' परोसि जऊ समझाय विचार सों ;  
सावन में तऊ श्याम के गात पै भारत हाथ चमेळी कि हार सों ।

नाम—( ४१८१ ) प्यारेलाल मिश्र भडारो, वृदावन ।

नाम—( ४१८२ ) बचईलाल, माऊनपुर, इलाहाबाद ।

जन्म-काल—स० ११४२ ।

प्र ४—घजरग विनय आदि ।

नाम—( ४१८३ ) ( बारहट ) मुरारदानजी ।

विवरण—यह क्रिशनगढ़-राज्य में रहते हैं । डिगल पिगल की कविता करना पुरतनी पेश है ।

नाम—( ४१८४ ) रघुनन्दनमिह वर्मा 'लाल', ग्राम सबहद, बिपूना, इटावा ।

जन्म-काल—स० ११२२ ।

रचना-काल—स० ११७० ।

प्र थ—( १ ) लाल तरग ( ३२० छंद, अप्रकशित ),  
( २ ) स्फुट लल्ल ।

विवरण—आप सगर क्षत्रिय श्रीयुत लाल नरपतिसिंहजी ( खाल नाहरसिंहजी ) के पुत्र ह । आप एक जर्मीदार और साहित्य युवागी पुरप हैं ।

नाम—( ४१८५ ) ( महाराज ) रघुराजसिंह ( सा० आई० इ० ) ।

रचना काल—स० ११७० ।

परिचय—महाराज पृथ्वीसिंह के छोटे पुत्र थे । गत महायुद्ध में सरकार की बहुत सहायता की । गुणी जनों का बड़ा आदर करते थे । गंगादीनजी का मृत्यु पर 'गंगा-वाइय विनाद' को छपवाया, तथा निम्न लिखित सोरठा वियाग में दृष्टा—

आवै निशि दिन याद, गंग विना नहिं आपवै,  
कविता से बह स्वाद, कवै न सुणस्यौ कान में ।

नाम—( ४१८६ ) राजेंद्रप्रसाद एम्० ए०, एम्० एल्० ।

जन्म-काल—सं० ११४१ ।

रचना-काल—लगभग सं० ११७० ।

प्रथ—( १ ) अपारन न महात्मा गांधी, ( २ ) अर्थशास्त्र ।

विवरण—आपका जन्म सारन जिलातगत तिरादेह ग्राम में हुआ ।  
विश्वविद्यालयों की उच्च परीक्षाओं में आप प्रायः प्रथम रहे हैं ।  
'देश' नामक बिहार का साप्ताहिक पत्र आप ही का निराका हुआ है ।  
हिंदी-साहित्य से आपका विशेष रुचि रहा करती है ।

नाम—( ४१८७ ) राधाकृष्ण भा एम्० ए० कहलगांव,  
भागलपुर ।

जन्म-काल—सं० ११४२ ।

रचना-काल—लगभग सं० ११७०

मृत्यु-काल—सं० ११८३ ।

प्रथ—( १ ) भारत की नापत्तिक समस्या, ( २ ) भारतीय शासन-  
पद्धति ।

विवरण—आप पटना-कॉलेज में कुछ समय तक प्रधान अध्यापक  
तथा बिहार प्रांत में विषय-कला विभाग के भूतपूर्व प्रधान थे ।  
सामयिक मासिक पत्र पत्रिकाओं में आपके लेख प्रायः निकला करते  
थे । यों तो आपने बहुतेरे ग्रंथ रचे हैं, किंतु उनमें से मुख्य दो आठ  
दे दिए गए हैं । [ श्रीयुक्त मंगलाप्रसादमिहजी द्वारा ज्ञात ]

नाम—( ४१८८ ) रामकुमार गोयनका ।

प्रथ—ऐतिहासिक लेख ।

विवरण—आप कलकत्ता-कार्पोरेशन के सम्बन्ध में विद्वान्  
महाशय हैं ।

नाम—( ४१८९ ) लक्ष्मीदत्त त्रिपाठी, इंदौर, हरदोई,  
कानपुर

जन्म-काल—सं० १३४० ।

रचना-काल—लगभग स० १३७० ।

प्रथ—( १ ) ब्लैकी के 'सेल्स पब्लिशर' का अनुवाद ( प्रकाशित ),  
( २ ) गीतांजलि ( ईगोर कृत ) का अनुवाद ।

विवरण—अ.प.प० अविद्यामसाद त्रिपाठीजी के कनिष्ठ भ्राता हैं ।

नाम—( ४१६० ) वैद्यनाथ मि. 'विडुल', लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग स० १३६२ ।

रचना काल—सं० १३७० ।

विवरण—स्फुट कविता ( यत्रभाषा एवं त्वही बोली ) ।

नाम—( ४१६१ ) शालग्राम भार्गव, प्रयाग ।

जन्म काल—स० १३४४ ।

रचना-काल—स० १३७० ।

प्रथ—विज्ञान पत्र के संपादक १० साल तक रह ।

विवरण—रीडर क्रिजिबल इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हैं ।

नाम—( ४१६२ ) शिवदास पाठ, मौजा आँव, जिला उन्नाव ।

प्रथ—( ( १ ) विधाम-भागर ( २ ) चाणक्य-नीति दर्पण  
प्रकाशित { पर सुदायद्व टीका, ( ३ ) खुर्श की भाषा-टीका,  
( ४ ) हिंदी की चौथी तथा पाँचवीं पुस्तकें,  
( ५ ) महाभारत की भाषा टीका ।

अप्रकाशित { ( १ ) पांडव-वन-गमन-खीजा, ( २ ) काबी-नार्व-  
दमन, ( ३ ) प्रिया मित्रन ( काव्य ) ।

विवरण—आप रघुवरदयाजी के पुत्र हैं । हमें समय विकास' पत्र के संपादक हैं । कई वर्षों तक आपने थीवेंकटरवर तथा धान-सागर प्रेसों में काम किया । आशुकवि हैं, भीरु भाषकी



रचनाएँ अनुपाम युक्त, सरस तथा प्रभावशालिनी हुआ करती हैं। कहा जाता है, आजकल आप 'ज्योतिष-सोपान-नामक पुस्तक लिख रहे हैं। [ श्रीयुत लक्ष्मणप्रसादजी ( विशारद ), बिन्नासपुर द्वारा ज्ञात ]

नाम—( ४१६३ ) श्यामलाल ।

जन्म काल—सं० १९४५ ( वर्तमान ) ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—( ४१६४ ) श्यामसुंदरलाल श्री० ए० ( सी०, आई० ई० ) ।

रचना काल—लगभग सं० १९७० । ( मृत )

विवरण—आप इटावा निवासी महेश्वरी वैश्य थे। बनमेट-कॉलेज, अण्णेर में गणित के प्राफ़ेसर हुए। वहाँ से किशनगढ़ आए। आपने राज्याञ्चति के बहुत-से कार्य किए, तथा धियासो क्रिकेट सोसाइटी की कई पुस्तकें की रचना भी की।

नाम—( ४१६५ ) सुखसप्तिराय भडारी ।

ग्रंथ—( १ ) बुद्धदेव, ( २ ) स्वर्गीय जीवन, ( ३ ) उन्नति ।

विवरण—आपने घोसवाल जैन धर्म महारानी मार्तण्ड आदि कई पत्रों का संपादन किया है।

नाम—( ४१६६ ) सुपार्श्वदास गुप्त ।

ग्रंथ—पालियामट ।

विवरण—दिवी के उत्साही लेखक आरा निवासी भद्रवाल जैन हैं।

समय—संवत् १९७१

नाम—( ४१६७ ) गोपाल दामोदर तामरकर ।

१९४६ ।

ग्रन्थ—( १ ) शिवाजी की योग्यता, ( २ ) शिक्षा-मीमांसा,  
( ३ ) राज्य विज्ञान, ( ४ ) योरोपीय राजकीय आदर्शों का  
विकास ।

विवरण—आप नयागढ़ जिला दुर्ग निवासी महाराष्ट्र प्रांत  
आप हैं । हिंदी के प्रेमी और जन्म प्रतिष्ठ लेखक हैं ।

नाम—( ४१३८ ) दुर्गाशंकर पांडेय, उन्नाव ।

जन्म-काल—स० १९४६ ।

ग्रन्थ—( १ ) नटरपचीर्सा, ( २ ) लेख और लेखक,  
( ३ ) पुस्तकालोकन, ( ४ ) अभिप्रेक, ( ५ ) धर्म-नीति शिक्षा,  
( ६ ) प्रजनाथ शतक ।

नाम—( ४१३९ ) बिहारीलाल नन्दभट्ट ।

जन्म-काल—स० १९४६ ।

ग्रन्थ—( १ ) वैराग्य वाचनी, ( २ ) पचानन चरित्र, ( ३ ) मेघ  
दूत का अनुवाद, ( ४ ) शृंगार चूड़ामणि, ( ५ ) विरह विजाप,  
( ६ ) उक्त अंश, ( ७ ) साहित्य-सागर ।

विवरण—यह विजावर के राजकवि हैं ।

उदाहरण—

कारण हैंता क हो न सीरे हा स्वभाव शुद्ध,  
वराज शशी के दो वशी के हू किसी के हो ;  
कहत बिहारी जागे दिवस रती के हो जू,  
भादक रती के हा रती के और ती के हो ।  
आपनी कड़ी के रेंगे राग में बही क जानो,  
भाव सषही क अपहित सषही क हा ;  
पद मोहिनी के मग्न माह माहि नीके रात,  
रहे मोहिनी के प्रात मिले मोहि नीके हो ।

सरल अथ गंभीर सरस रसना रस व्यापिनि,  
 विविध भाँति उद्य गुण गुणीन ग्रंथन मत्त भापिनि ।  
 धन वे पुरुष अखेद भेद जिन मुख पहिचानो,  
 शुचि सतति सपत्ति सत्य प्रद मुख अनुमानो ।

जिहि रीति व्याप्त मुख जगत मर्हे तसन अन्न्य भाषा गती,  
 जय हिंद निवासिनि मुखप्रदा जय धीभाषा भगवती ।

नाम—( ४२०० ) महावीरसिंह वर्मा ।

विवरण—अटिया, जिला उधवा निवासी चंदेल क्षत्रिय ।

नाम—( ४२०१ ) राजहसप्रसाद, उपनाम हम् ।

जन्म-काल—स० १९४६ ।

ग्रंथ—स्रुष्ट कविता ।

विवरण—यह धौलपुर निवासी आजकल आलावाह में रहते हैं ।

उदाहरण—

बोलेंगे न झूठ हम सत्य को तजेंगे नाहि,  
 चित्त हृद राशि हम मन ना दिगावेंगे,  
 रण को निमग्रण ल बैठि रैह रोद नाहि,  
 आगे ही धरेंगे पाय पीठ ना दिन्वावेंगे ।  
 भीर परे स्वामा हित देंगे हम प्राण चारि,  
 जननां को दूध कभी भूखि ना लगावेंगे ;  
 भूलेंगे न भूखि केहू वात याप दादन की,  
 अग्नि के छीना हम आन को निभावेंगे ।

नाम—( ४२०२ ) शिवरुमार त्राक्षण, प्रास मच्छागर, पो०  
 मसूरगञ्ज ।

जन्म-काल—स० १९४६ ।

( ४२०३ ) सूर्यनारायण पाडय ( रविदेव ), पंतेपुर,

प्रथ—( १ ) शिवाजी की योग्यता, ( २ ) शिवाजी-मीमांसा, ( ३ ) राज्य विज्ञान, ( ४ ) योरपीय राजकीय आदर्शों का विकास ।

विचरण—आप नवागढ़ जिला दुर्ग निवासी महाराष्ट्र प्राकृत्य आप हैं । हिंदी के प्रेमी और लब्ध प्रतिष्ठ लेखक हैं ।

नाम—( ४१२८ ) दुर्गाशंकर पांडेय, उन्नाव ।

जन्म-काल—स० १२४६ ।

प्रथ—( १ ) नटवरपचीर्मा, ( २ ) लेख और लेखक, ( ३ ) पुस्तकप्रकाशन, ( ४ ) अभिप्रेक, ( ५ ) धर्म नीति शिक्षा, ( ६ ) ब्रजनाथ-शतक ।

नाम—( ४१२९ ) बिहारी लाल त्रिभुवन ।

जन्म-काल—स० १२४६ ।

प्रथ—( १ ) वैराग्य यावनी, ( २ ) पचान चरित्र, ( ३ ) मेघ वृत्त का अनुवाद, ( ४ ) शृंगार-चूड़ामणि, ( ५ ) विरह विद्याप, ( ६ ) उल्लसत अपीन, ( ७ ) साहित्य-सागर ।

विचरण—यह विज्ञावर के राजकवि हैं ।

उदाहरण—

कारण हँसा क हा न सीखे हा स्वभाव शुद्ध,  
 वशज शशी के हा वशा के हू फिती के हो ;  
 कइत बिहारी जागे दिवम रती के हो जू,  
 प्राइक रती के हो रता के और ती के हो ।  
 आपनी कही के रँग राग में वही के जानो,  
 भाव सयही के अपहित सयही के हो ;  
 पड़े मोहिनी के मथ्र मोह माहि नीके रात,  
 रहे मोहिनी के प्रात मिल मोहि नीके हो ।

सरल अथ गभीर सरस रसना रस व्यापिनि,  
विविध भाँति उध गुण गुणीन प्रथन मत भापिनि ।  
धन वे पुरुष अखेद भेद जिन तुव पहिचानो ;  
शुचि सतति सपत्ति सत्य ग्रह मुख अनुमानो ।

निहि रीति व्याप्त तुव जगत मर्हे तसन अन्य भापा गती ;  
जय हिंद निवासिनि सुखप्रदा जय श्रीभापा भगवती ।

नाम—( ४२०० ) महावीरसिंह उर्मा ।

विवरण—अटिया, जिला उधवा निवासी चंदेल क्षत्रिय ।

नाम—( ४२०१ ) राजहंसप्रसाद, उपनाम हंस ।

जन्म-काल—स० ११४६ ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विवरण—यह धौलपुर निवासी आजकल आज्ञागार में रहते हैं ।

उदाहरण—

चोलेंगे न झूठ हम सत्य का तजेंगे नाहि,  
चित्त हृद राखि हम मन ना ढिगावेंगे,  
रण को निमंत्रण लै बैठि रहेंगे गेह नाहि,  
आगे ही धरेंगे पाय पीठ ना दिखावेंगे ।  
भीर परे स्वामी दित देंगे हम प्राण चारि,  
जननी को दूध कभी भूलि ना लजावेंगे ;  
भूलेंगे न भूलि केहू यात बाप दादन की,  
छत्रिन के छीना हम ध्यान को निभावेंगे ।

नाम—( ४२०२ ) शिवकुमार त्रावण, ग्राम मच्छागर, पो०  
मसूरगञ्ज ।

जन्म-काल—स० ११४६ ।

नाम—( ४२०३ ) सूर्यनारायण पाडय ( रविदेव ), पतेपुर,  
जिला बाराबकी ।

प्रथ—( १ ) शिवाजी की योग्यता, ( २ ) शिष्या-मीमांसा,  
( ३ ) राज्य विज्ञान, ( ४ ) योरोपीय राजकीय आदर्शों का  
विद्युत् ।

विवरण—आप नवानंद, ज्ञाना दुर्ग निवासी महाराष्ट्र प्रान्त  
आप हैं । हिंदी के प्रेमी और लक्ष्य-प्रतिष्ठ लेखक हैं ।

नाम—( ४१६८ ) दुर्गाशंकर पांडेय, उन्नाव ।

जन्म-काल—स० १६४६ ।

प्रथ—( १ ) नट्यर पचीसी, ( २ ) लेख और खेपक,  
( ३ ) पुस्तकालोकन, ( ४ ) अभिप्रेक, ( ५ ) धर्म नीति शिक्षा,  
( ६ ) वज्रनाथ शतक ।

नाम—( ४१६९ ) विहारीजाल प्रहलभट्ट ।

जन्म-काल—स० १६४६ ।

प्रथ—( १ ) वैराग्य वाचनी, ( २ ) पञ्चानन चरित्र, ( ३ ) मेघ  
वृत्त का अनुवाद, ( ४ ) शृंगार-चूड़ामणि, ( ५ ) विरह विद्याप,  
( ६ ) उक्त त अपाल, ( ७ ) साहित्य-सागर ।

विवरण—यह विद्याधर के राजकवि हैं ।

उदाहरण—

कारण हँसा के हा न सीखे हा स्वभाव शुद्ध,  
वंशज शशी के हो वशी के हू किमी के हा ;  
कहत बिहारी जागे दिवस रती के हो जू,  
प्रादक रती के हो रती के और ती के हो ।  
थापनी कडी क रेंगे राग में वही क जानो,  
भाव सबही क अपहित सवहा के हा  
पद मोहिनी के मत्र माहे मोहि नीके रात,  
रहे मोहिनी के प्रात मिले मोहि नीके हो ।

नाम—( ४२०६ ) माणिकजी मुनि ।

ग्रंथ—( १ ) समाधि-तंत्र, ( २ ) कल्पसूत्र ।

विवरण—स्वेताश्वर जन सा३ ।

नाम—( ४२१० ) यज्ञदत्त शर्मा, विष्णुपुर, पोस्ट बेगूसराय, जिला मुंगर ( बिहार प्रांत ) ।

कविता-काल—लगभग स० १६७२ ।

ग्रंथ—श्रीगौराग चरित्र मानस ( चैतन्य चरित्र ) ।

विवरण—आप मैथिल ब्राह्मण हैं ।

नाम—( ४२११ ) रणवीरसिंहजी ( राजकुमार ) ।

जन्म-काल—आपाढ़ शु० १४, स० १६२६ ।

कविता-काल—स० १६७२ ।

मृत्यु-काल—स० १६७७ ।

ग्रंथ—( १ ) संस्कृत सुधार नाटक, ( २ ) सुभट तरण्य, ( ३ ) सुधार-सगर, ( ४ ) सत्यमेव जयते नानृतम्, ( ५ ) विजयोत्थास, ( ६ ) महायुद्ध आदि ।

विवरण—आप अमठी तेश राजा भगवानबाबा के द्वितीय पुत्र थे । व्यायाम, चित्र कला आदि में आपको रुचि थी । आपने अमठी में आनंद-नाठशाखा स्थापित कराई थी, जिसमें संस्कृत, हिंदी तथा अँगरेजी का शिक्षण दी जाती थी । आपकी अकाल-मृत्यु से हिंदी की हानि हुई है ।

उदाहरण—

नै जै विजै वासर विमल राष्ट्रीय पावन पर्यं जै ;

भारत मुखोज्ज्वलकर निखिल त्योहार तिलक सगर्वं जै ।

शुभ विजय केतु समीरणालोदित सुगगनालभ जै ;

संकलेश लेश अशपकर अवधेश-कीर्ति स्तंभ जै ।

नाम—( ४२१२ ) रत्नावली शर्मा, छपरा, सारन ।

जन्म-काल—सं० ११४६ ।

समय—संवत् १६७२

नाम—( ४२०४ ) दरियावसिंह साधिया ।

ग्रथ—( १ ) कृषि विद्या, ( २ ) हिंदी-व्याकरण, ( ३ ) कदावत्-कल्पद्रुम, ( ४ ) धावक-धर्म ।

विवरण—गढ़ा कोटा, जिला सागर निवासी ।

नाम—( ४२०५ ) दपतिकिशोर गोस्वामी ।

ग्रथ—अप्रवाल चरित्र ।

विवरण—गोस्वामी मज्जभरण के पुत्र तथा भेंडीवाकर ।

नाम—( ४२०६ ) प्रेमदास ।

जन्म-काल—सं० ११४८ ।

ग्रथ—मथुरा विनय ( ११७२ ) ।

विवरण—यह माचाभाट, जिला रायपुर निवासा श्रीमान् हरिदास के पुत्र और निवारक सभदाय के वैष्णव हैं ।

उदाहरण—

चक्रवा चक्र सोच सकोच लह अरु चारु चकोर विनोद भरे ;

चिकली कुमुदावलि मनु गढ़, सकुची कमलावलि शृंग बरे ।

कल्ल कौमुदी जै निशिनाथ उगे, रवि लोहित परिचम पाँच धरे ;

पिय सग सँयोगिनि पायो मुख, मुरझाई वियोगिनि हाय हरे ।

नाम—( ४२०७ ) बालचन्द्राचार्य ।

ग्रथ—( १ ) जग-कृत्व मीमांसा, ( २ ) मानस कृत्य ।

विवरण—आप ग्राम गाँव निवासी श्वेतांबर यति हैं । आपकी संतन-मदन से बड़ा प्रेम है ।

नाम—( ४२०८ ) महिपालमहादुरसिंह ।

ग्रथ—पद्य पुस्तिका ।

विवरण—आप बलिया निवासी हैं ।



सुधारने के उपाय ( गुजराती से अनुवाद ), ( १८ ) मेरे गुरुदेव ( अँगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद ), ( १९ ) स्त्रियों का काय क्षेत्र ( अनुवाद ), ( २० ) राजा और रानी ।

विवरण—यह वशिष्ठ गोत्रीय सनाढ्य ब्राह्मण प० भायजी शर्मा के पुत्र हैं । [ धीनुत दशरथ बलवत यादव, सागर द्वारा ज्ञात ]

नाम—( ४२१६ ) श्यामचरणजी ।

जन्म-काल—स० १९४७ ।

ग्रंथ—( १ ) लालबुभुक्षु कीर्ति-कलाप ( २ ) भाला विरद प्रवाद, ( ३ ) गाय-गुहार, ( ४ ) प्रेमामृत प्रवाद, ( ५ ) धन निरूपण, ( ६ ) पद्म-पुष्पाञ्जलि, ( ७ ) भजनामृत, ( ८ ) द्वैहय वरा यज्ञान, ( ९ ) कुमुद सुवरी नाटक ।

विवरण—कनधी राज्य निवासी हिंदी के उत्साही लेखक ।

उदाहरण —

लखि लीजिण श्याम रसालन में अब वे मधुपूरित घोर नहीं ;  
तिनके प्रिय चाहक ब्राह्मक हूँ डिग हाय लप्रावते भोर नहीं ।  
मनभायक गायक फोफ़िल की अब तो मुददायक शौर नहीं ;  
तुम भूले कहीं यह ग्रीषम है ऋतुबाहक की यह दौर नहीं ।

नाम—( ४२१७ ) श्रीकण्णगोपाल माथुर, विद्याभूषण, विशा रद, भालरापाटन ।

जन्म-काल—लगभग स० १९४७ ।

ग्रंथ—( प्रकाशित )—( १ ) चक्रव्य कला, ( २ ) दो साहित्य-सेवी, ( ३ ) व्यावहारिक विज्ञान, ( ४ ) भिन्न भिन्न देशों के अनोखे रीति रिवाज़, ( ५ ) अजुन, ( ६ ) लज-कुश ।

( अप्रकाशित )—( १ ) युधिष्ठिर, ( २ ) अरब के नौ रत्न, ( ३ ) वचनामृत-सागर, ( ४ ) चक्रव्य-कला ( दूसरा भाग ), ( ५ ) ध्रुव, ( ६ ) वैज्ञानिक लेखों का संग्रह, ( ७ ) कहानी-संग्रह, ( ८ ) सती सावित्री ।

जन्म-काल—लगभग स० ११४७ ।

ग्रंथ—स्फुट लेख ।

विवरण—यह महावीरप्रसादजी उर्षाध्याय की पुत्री तथा माहित्या घाय स्वर्गीय प० रामानन्दार शर्मा एम्० ए० की पत्नी हैं। समाज सुधार तथा स्त्री शिक्षा-सम्बन्धी इनके लेख मासिक पत्र पत्रिकाओं में प्रायः निकला करते हैं ।

नाम—( ४२१३ ) राधाकृष्ण मित्र ।

जन्म-काल—प्राय स० ११४१ ।

विवरण—यह प्रसिद्ध लेखक माधवप्रसाद के कनिष्ठ भ्राता भृगुमित्र जिन्हा रोहतक के रहनेवाले हैं। आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् और हिंदी के सुलखक हैं ।

नाम—( ४२१४ ) वनमाली शुक्ल ।

ग्रंथ—( १ ) श्रीकृष्ण नाटक, ( २ ) कपास, ( ३ ) रेखागणित ।

विवरण—आप रायपुर मध्य प्रांत निवासी सरयूपारीण दार्शनिक हैं ।

नाम—( ४०१५ ) शिवसहाय चतुर्वदी, देवरी, ( सागर मध्यप्रदेश ) ।

जन्म-काल—स० ११४५ ।

रचना-काल—स० ११७२ ।

ग्रंथ—( १ ) भारतीय नीति-कथा, ( २ ) आदर्श चरित्रावली, ( ३ ) ज्ञाना दर्शन ( बँगला-ग्रंथ का अनुवाद ), ( ४ ) योरप में बुद्धि-स्वात्म्य ( अनुवाद ), ( ५ ) वेतून विहार ( अनुवाद ), ( ६ ) धर्म-जाति ( बँगला पुस्तक का अनुवाद ), ( ७ ) रामकृष्ण के सद्पदेश ( ८ ) कमक्षेत्र ( बँगला से अनुवाद ), ( ९ ) गृहिया भूषण, ( १० ) आर्थिक सफलता, ( ११ ) गुरु-शिष्य-संवाद, ( १२ ) जन्म-धीवन, ( १३ ) शारदा ( अनुवाद ), ( १४ ) मनोरंजक कहानियाँ, ( १५ ) पूर्वा की दाबी, ( १६ ) सोने का धाँद, ( १७ ) बच्चों के

नाम—( ४२१६ ) मरजूप्रसाद अग्रथी एम्० ए०, एल्० टो०, जयलपुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७० ।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं । हिंदा-साहित्य में आप प्रेम रखते हैं । यह स्थानीय कवि-समाज के मंत्री हैं ।

गाम—( ४२२० ) सुदरलाल त्रिवेदी राजिय, रायपुर ।

ग्रन्थ—( १ ) विन्टारिया वियोग, ( २ ) रघुनाथ-गुण्य-कीर्तन, ( ३ ) भुव चरित्र, ( ४ ) फरिया-पचीसी, ( ५ ) प्रह्लाद-नाटक ।

नाम—( ४२२१ ) मूरजभानजी ।

ग्रन्थ—( १ ) द्रव्य-संग्रह, ( २ ) पुरुषार्थ सिद्धयुपाय, ( ३ ) परमात्म प्रकाश, ( ४ ) व्याधी बहू, ( ५ ) मनमोहिनी, ( ६ ) ज्ञान सूर्योदय ।

विवरण—देवयद, राजा महारनपुर निवासी अग्रवर्ल जैन हैं । हिंदी की अच्छी सेवा कर रहे हैं ।

समय—मघत् १९७३

नाम—( ४२२२ ) गोवर्द्धनलाल एम्० ए०, धी० एल्० ।

जन्म-काल—सं० १९४८ ।

ग्रन्थ—( १ ) नीति विज्ञान, ( २ ) स्फुट निबन्ध ।

विवरण—आप 'रीणियार' जाति के एक प्रतिष्ठित कुलोत्पन्न वैश्य हैं । इस समय पटना-हाइकोट में बकालत कर रहे हैं । इन्होंने प्रारंभ में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है ।

नाम—( ४२२३ ) जगन्नाथ द्विवेदी ( जगदीश ), पेंतेपुर, जिला वाराणसी ।

जन्म-काल—सं० १९४८ ।

नाम—( ४२२४ ) जीधनराम पाडेय, विभूना, झटारा ।

जन्म-काल—सं० १९४८ ।

विवरण—यह कायस्थ-कुलोत्पन्न श्रीजगन्नाथजी के पुत्र है। हिंदी के अतिरिक्त इन्होंने गुजराती तथा बँगला-भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त किया है। इन्होंने कलकत्ता के विद्वानों द्वारा स्थापित निखिल भारत साहित्य सघ की परीक्षा के उपलक्ष्य में २०० शृष्ट पत्र एक गणेश-सूक्त लेख लिखा था, जिस पर उक्त सघ से इन्हें साहित्यरत्न की उपाधि मिली। जय-कुरु ग्रंथ इन्होंने धर्मपुराणार्थ एच्० एच्० श्री महाराजा सर विश्वनाथसिंहजी के परामर्श में लिखा। यह हिंदी हितैषी खालचंदजी सेठी के आश्रित हैं।

नाम—( ४२१८ ) सदाशिव दीक्षित साहित्याचार्य, भगवत नगर ( हरदोई )।

जन्म-काल—स० १९२६।

कविता काल—स० १९७२।

ग्रंथ—( १ ) माधव-काव्य ( खंड काव्य, २ सर्ग ) अमकाशित, ( २ ) राष्ट्र भाषा का चुनाव, ( काव्य, ३० पदपदी हैं ), ( ३ ) मोहन ( उपन्यास ) अमकाशित, ( ४ ) पांचाली परिचय ( खंड काव्य, ७ सर्ग ), ( ५ ) वृ द-सतसई की टाका, ( ६ ) दाप दिग्दर्शन ( अमकाशित )।

विवरण—आप साहित्यापाध्याय प० मधुरामसादजी के सुपुत्र हैं। आपके शिक्षा तथा कविता गुरु काशीस्थ राजकीय सरस्वत पाठशाला के अध्यापक महामहोपाध्याय प० भवानीदास दीक्षित थे।

उदाहरण—

वानव दुजन दडित होकर जो प्रति ही बिलम्बाय रही है,  
होकर शत्रु अर्धिन अर्धीर भइ अरु जो दुष्ट पाय रही है।  
'जागहु-जागहु' यों कहिके घरु जो दुस्सड़ा निज गाय रहा है,  
जाम लगे कहते हमको यह दुःखित भारत भूमि वही है।

नाम—( ४२१६ ) सरजूप्रसाद अरवंधी एम्० ए०, एल्० टो०, जवलपुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७० ।

विवरण—आप कान्यकुब्ज वासिण्य हैं । हिंदा-साहित्य से आप प्रेम रखते हैं । यह स्थानीय कवि-समाज के मंत्री हैं ।

नाम—( ४२२० ) सुदरलाल त्रिवेदी राजिय, रायपुर ।

ग्रंथ—( १ ) विक्टोरिया वियोग, ( २ ) खुराज-गुण-कीर्तन, ( ३ ) ध्रुव चरित्र, ( ४ ) कल्याण-पचीसी, ( ५ ) प्रह्लाद नाटक ।

नाम—( ४२२१ ) सूरजभानजी ।

ग्रंथ—( १ ) द्रव्य-संग्रह, ( २ ) पुरुषाय सिद्धयुपाय, ( ३ ) परमात्म प्रकाश, ( ४ ) व्याही बहू, ( ५ ) मनमोहिनी, ( ६ ) ज्ञान सूर्यादय ।

विवरण—देवबद, गला सहारनपुर निवासी अप्रवाल् जैन हैं । हिंदी की अच्छी सेवा कर रहे हैं ।

समय—मवत् १९७३

नाम—( ४२२२ ) गोवर्द्धनलाल एम्० ए०, बी० एल्० ।

जन्म-काल—सं० १९४८ ।

ग्रंथ—( १ ) नीति विज्ञान, ( २ ) स्फुट निबन्ध ।

विवरण—आप 'रीणियार' जाति के एक प्रतिष्ठित कुलोत्पन्न वैश्य हैं । इस समय पटना-हार्डकाट में वकालत कर रहे हैं । इन्होंने फ्रांसीसी में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है ।

नाम—( ४२२३ ) जगन्नाथ द्विवेदी ( जगदीश ), पैतेपुर, जिला बाराबंकी ।

जन्म-काल—सं० १९४८ ।

नाम—( ४२२४ ) जीवनराम पाठेय, विधुना, इटावा ।

जन्म काल—सं० १९४८ ।

रघुना-वाङ्—लगभग स० १६७३ ।

प्रथ—( १ ) लोमड़ी देवी छ माहात्म्य, ( २ ) तनातव घर्म प्रकाश, ( ३ ) दुर्दलियानामा, ( ४ ) अन्तार-चरित्र, ( ५ ) काली-नाग नाथन लीला, ( ६ ) गोवर्धन धारण-लीला, ( ७ ) गुरु शिष्य मवाद, ( ८ ) ज्ञानावली इत्यादि ।

विवरण—आप भारद्वाज नाथीय प० शिवचरणलालजी के पुत्र हैं । [ धीयुत लाल रघुनन्दनसिंह पमां, इटावा द्वारा ज्ञात ]

उदाहरण—

भाङ में त्रिपु ड, मुडमाङ है विशङ गङ्गे,  
 भूत-प्रेत मुड साध खंड करे पाप के ।  
 शीश में सुरग रग, भग पिण मस्त आप,  
 लिपटे भुजग अग दुग् हर ताप के ।  
 हाथ में त्रिशङ्क, मूळ सकुङ मँसार के हैं,  
 पावत न चद पार हार नाप नाप के,  
 विपति हमारी त्रिपुरारीजी हस्त नाहिं,  
 जीवनरू गायत गुणानुगद आप के ।

नाम—( ४२२६ ) तारिणीप्रसाद मित्र ।

जन्म-काल—स० १६७८ ।

प्रथ—( १ ) अनुभव प्रकाश, ( २ ) देव सभा, ( ३ ) सती सुलक्षणा, ( ४ ) निमल्ला, ( ५ ) भामिनी, ( ६ ) सती सुलोचना, ( ७ ) महार्थीर-चरित्र, ( ८ ) महाराज प्रथु, ( ९ ) पञ्च चिकित्सा, ( १० ) सती सुफला तथा शाङ्कोपवागी पुस्तकें ।

विवरण—यह मरयूपारीय ब्राह्मण प० दुगाप्रसाद के पुत्र सिहुडी, जिला भागलपुर में रहते हैं ।

नाम—( २२२६ ) दुर्गाशंकरप्रसादसिंह, दलीपपुर, शाहाबाद ।

प्रथ—सुष्ट कविताएँ ।

विवरण—आप श्रीमद्वाराजकुमार नर्मदेश्वरप्रसादसिंहजी 'ईश' के पौत्र हैं ।

नाम—( ४२२७ ) नमु ।

ग्रन्थ—( १ ) शंकर-बहरी, ( २ ) प्रेम-प्रवाह ।

विवरण—आप साठोदरानागर नवियान ग्राम ( गुजरात ) के निवासी हैं ।

नाम—( ४२२८ ) नर्मदेश्वरप्रसादसिंह, उपनाम 'ईश' ।

ग्रन्थ—( १ ) शिवाशिव शतक, ( २ ) शृंगार दर्पण,  
( ३ ) पंचरत्न, ( ४ ) धर्म प्रदर्शना ।

नाम—( ४२२९ ) प्यारेलाल विनोरिया, 'शरज्य' ।

ग्रन्थ—( १ ) दुगाष्टक, ( २ ) शरराष्टक, ( ३ ) भीयुगलकियोर  
की वारामासी, ( ४ ) प्रबोधामृत, ( ५ ) कमलेश विज्ञाप ।

नाम—( ४२३० ) मोतीलाल जैन ।

ग्रन्थ—स्वायत्तचन ।

नाम—( ४२३१ ) राजेश्वरप्रसाद ( अयनोद्र ), ग्राम  
सेगरौली ।

जन्म-काल—सं० १९४८ ।

ग्रन्थ—सामा ( भावण ), सुहाग आदि ।

नाम—( ४२३२ ) रामचंद्रजी पुनारी ।

विवरण—आप वज्रभाषा के अच्छे कवि हैं, ऐसा कहा जाता  
है । [ महाशय प० भाचरमहंजी त्रिवेदी, जसरापुर, द्वारा ज्ञात ]

नाम—( ४२३३ ) रामसहाय मिस्त्री, हटा, दमोह (सी०पी०) ।

जन्म-काल—सं० १९४७ ।

कविता-काल—सं० १९७३ ।

ग्रन्थ—( १ ) मित्र मिज्ञाप, ( २ ) मोहना रानी, ( ३ ) स्फुट  
कविताएँ तथा खेस ।

विवरण—यह श्रीजुत धर्मोद्या निखी के पुत्र तथा वारु लक्ष्म  
प्रसाद निखी के मँझले भाई हैं ।

नाम—( ४२३४ ) शिवराम महादेव पटवर्धन ।

जन्म-काल—सं० १९४८ ।

ग्रंथ—हिंदू धर्म-मीमांसा ।

विवरण—यह होमियोपैथिक डॉक्टर हैं ।

समय—संवत् १९७७

नाम—( ४२३५ ) कन्हैयालाल जैन, कस्तुरी-ग्राम, हापड़  
( मेरठ ) ।

जन्म-काल—सं० १९२७ ।

रचना-काल—सं० १९७४ ।

ग्रंथ—( १ ) प्रेमोपहार, ( २ ) कुसुमित कुसुम, ( ३ ) एक  
आदरा जीवन ( ४ ) भारत जागृति, ( ५ ) श्रीगोपाल ( जैन-  
इतिहास, अपूर्ण ) ।

विवरण—यह श्रीजुत धर्मोद्या निखी के पुत्र तथा वारु लक्ष्म  
प्रसाद निखी के मँझले भाई हैं । इनके पूर्वजों का प्राथमिक  
विद्यालय-स्थापक रूपसे, जैसलमेर था जिसे  
यह शिक्षा मेरठ में आकर चल गये । यह एक -  
श्रीदियों से



था तूने रस में कुटिल विपमता घोली,  
 जो मर्ची विश्व में भीतर-बाहर होली ॥ २ ॥  
 सुख-शांति स्नेह का तूने नाम मिटाया,  
 नय, न्याय, नीति का तुझमें पता न था।  
 था धुँआधार मच रहा विश्व भूकम्बोली,  
 जो मर्ची विश्व में भीतर बाहर होली ॥ ३ ॥

नाम—( ४२३६ ) दामोदर शुक्ल, दत्तिया ।

जन्म-काल—स० १६४६ ।

ग्रन्थ—( १ ) गुरु-अष्टपदी, ( २ ) गुरु अष्टक, ( ३ ) स्फुट छंद ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—( ४२३७ ) बालकृष्ण शर्मा ( नवीन ), कानपुर-  
 नियासी ।

जन्म-काल—लगभग स० १६५४ ।

रचना-काल—स १६७४ ।

विवरण—आप मुकवि तथा प्रताप सपादक हैं । प्रभा का भी  
 सपादन आपने किया था ।

नाम—( ४२३८ ) जैनीप्रसाद डॉक्टर ( वैश्यजैन ),  
 प्रयाग ।

जन्म-काल—स० १६५० ।

रचना-काल—स० १६७४ ।

ग्रन्थ—( १ ) सूरदास, ( २ ) जहाँगीरशाह ( अँगरेजी में ),  
 ( ३ ) हिंदोस्तान की पुरानी सभ्यता ।

विवरण—प्रोफ़ेसर पॉलिटिक्स इलाहाबाद विश्वविद्यालय । आप  
 उच्च श्रेणी के विद्वान् हैं, तथा बहुत ज्ञान-वीन के पीछे उत्कृष्ट  
 श्रेणी के प्रशसनीय ग्रन्थ लिखते हैं । स्वभाव के भी बड़े ही सज्जन  
 पुरुष हैं ।

जय—( १२२१ ) इतिहास निबन्ध न्यु० २०० ।

जय-काव्य—पृ० ११२० ।

जय-काव्य—पृ० ११०२ ।

जय—( अर्थान्तर )—( १ ) बुद्धीमान् जय प्रकृत इत्य-  
र्थे, ( २ ) इच्छा बुद्धि, ( ३ ) अर्थ इत्यर्थे, ( ४ ) बुद्धिहीन  
( अर्थहीन ) ।

( अर्थान्तर )—( १ ) अर्थान्तर, ( २ ) अर्थान्तर, ( ३ ) अर्थान्तर  
इत्यर्थे, ( ४ ) अर्थान्तर-समन्वय ।

जय-काव्य—पूर्वात् अ मुक्त्वा अप्रत्यय-प्रत्ययान्तौ प्रतीत्य नृणां भारतात्  
श्रीमान् अ मन्त्र्ये ग र्त्वीन् तान् वाक् इत्य-याथा क्तिन् नृण इ ।

जय—( १२३० ) रामजीव गमो 'जीवन', गम भरवन,  
विद्या मुच्यते इति ।

जय-काव्य—पृ० ११११ ।

नृप भय तजकर धर्म हित हो अराक मुख खोज ;  
 जीवन काया के निकट पाया का क्या माख ?  
 करना सबको चाहिण उसका ही गुण-मान ;  
 जिसका 'जीवन' ज्ये हो दुनिया का कन्यान ।

समय—सपत् १९७५

नाम—( ४२३१ ) अनूपलाल मडल 'साहित्यरत्न', ममौली,  
 पुरनियाँ, बिहार ।

जन्म-काल—स० १९२७ ।

रचना-काल—लगभग स० १९७५ ।

प्रथ—( १ ) रहिमन-नुषा, ( ० ) निर्मासिता ( उपन्यास ) ।

विवरण—यह बाबू नय्यूमडल के पुत्र श्रीर 'कैपल-कौमुदी'  
 ( मासिक पत्रिका ) के संपादक हैं ।

नाम—( ४२४२ ) अजय उपाध्याय ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२० ।

रचना-काल—स० १९७५ ।

विवरण—आप हिंदी के लघु प्रतिष्ठ समाजोचक, लेखक एवं  
 कवि हैं । कहानियाँ भी लिखते हैं । गणित शास्त्र के अच्छे ज्ञाता  
 हैं, एवं कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं । आजकल पद्म स्टेट हाईस्कूल में  
 अध्यापक हैं ।

नाम—( ४२४३ ) उडिया घाया ।

रचना काल—स० १९७५ ।

विवरण—धार्मिक तथा दार्शनिक लेखक ।

नाम—( ४२४४ ) उदित मिश्र, ग्राम कुँडो, जिला काशी ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२० ।

प्रथ—स्फुट कविता तथा खेल ।

विषय—यह पंडित देवकीनन्दन मिश्र के पुत्र हैं। कई भाषाओं के ज्ञाता और हिंदी-नाय तथा पद्य दोनो लिख्वा करते हैं। इस समय दिल्ली-माडर्न स्कूल में हिंदी के अध्यापक हैं।

उदाहरण—

धन्य धन्य ह किसान, कीरति तव नीकी।

माघ पूज को तुषार, प्रीपम आतप अपार,  
महन करत बार बार जाने को जी की ॥ १ ॥

गीताकर उच्च भाव, सारे जग को सिखाव,  
फल की नहिं राख चाव, आश है हरी की ॥ २ ॥

तन, मन, धन सभी खेत, बसुधा को अन्न देत,  
धम त नित रखत हेतु, थीर बात फीकी ॥ ३ ॥

दया दृष्टि करा नाथ, विनय करों नाथ माथ,  
उदित' सुनो करण-गाथ, ऐसे दरदी की ॥ ४ ॥

मन मरु रिमल विचार तें मरहु न मन भरमाय ;

मन मारे जनि बैठहु, मन मारहु सुख पाय ।

नाम—( ४२४२ ) उमरावसिंह पाडे, मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० १९२६ ।

कविता-काल—स० १९७२ ।

प्रथ -स्फुट जेष्व तथा कविता ।

विषय—यह स्थानीय प्रतिष्ठित जर्मादार प० चिंतामणिजी के पुत्र भद्रभापा तथा खड़ी बोली दानो में कविता करते हैं ।

उदाहरण—

मोर पखा राजत, बिराजै उत चद्र-कला ,

बेसरि सुहाई उत बांसुरी बनाई है ;

बानिक बनायो इतै कृप्य जदुचद आज ,

उतै चद्र चद्रिक सुवेनी चारु चाई है ।

पीत पट अग फहरात महारात उत,  
 चुनरी सुचारु चारु चित्रित जुन्हाई है,  
 गात की गुराई 'उमराव' कवि गाई उतै,  
 मुख मधुराई इत लखित सुनाई है।

नाम—( ४२४६ ) कमलाबाई त्रिपुर ।

जन्म-काल—लगभग स० १६५० ।

रचना-काल—स० १६७५ ।

विवरण—आप कृिबे साहब, इंदौर की धर्मपत्नी हैं। हिंदी-पत्र-  
 पत्रिकाओं में आपके उच्च कोटि के लेख प्रकाशित हुआ करते हैं।

नाम—( ४२४७ ) कल्ला ब्रजवल्लभजी ।

विवरण—यह पुष्करणी बालक्य दरवार हाईस्कूल में हिंदी अध्या-  
 पक हैं।

रचना-काल—लगभग स० १६७५ ।

नाम—( ४२४८ ) कालिदास कपूर ।

विवरण—आप विश्वभरनाथ कपूर के पुत्र तथा कालीचरन-हाई-  
 स्कूल, लखनऊ में हेडमास्टर हैं। आपको हिंदी से विशेष प्रेम है।  
 आपके लेख सरस्वती तथा माधुरी आदि मासिक पत्रिकाओं में बहुधा  
 प्रकाशित होते हैं।

नाम—( ४२४९ ) किसारीदास (वाजपथी) विशारद, शास्त्री ।

रचना-काल—लगभग स० १६७५ ।

प्रय—( १ ) साहित्य मीमांसा, ( २ ) काव्य प्रवेशिन, ( ३ ) रस  
 र अलंकार, ( ४ ) साहित्य उपक्रमणिका ।

विवरण—पंडित तो आप प्राचीन शैली के हैं, पर नवीन समा-  
 ज, संस्कृत के विद्वान्, प्रजभाषा के परम प्रेमी, पर खड़ी बोली के  
 शौधी, उपयोगितावादी, साक्ष्य, वेदात के सुखभोगी, काव्य में  
 स के 'रसराज' होने के प्रतिपादक हैं। इनके विचार-पूर्ण लेख

विवरण—यह पंडित देवकीनन्दन मिश्र के पुत्र हैं। कई भाषाओं के ज्ञाता और हिंदी-गाय तथा पद्य दोनो लिखते हैं। इस समय दिल्ली-भाबर्न स्कूल में हिंदी के अध्यापक हैं।

उदाहरण—

धन्य धन्य हे किस्तान, कीरति तव नीकी।

माघ-पूष का तुषार, प्रीपम आतप थपार,  
सह्य ऋत धार-धार जाने को जी की ॥ १ ॥

गीताकर उद्य भाग, सारे जग को सिखाव,  
फल की नहिं राख चाव, आश है हरी की ॥ २ ॥

तन, मन, धन सभी खेत, वसुधा को अन्न देत,  
धर्म त नित रपत हतु, और बात कीकी ॥ ३ ॥

दया इष्टि करा नाथ, विनय करों नाथ माथ,  
उदित' मुना वरुण-गाथ ऐसे दरदी की ॥ ४ ॥

मन भर निमल विचार तें मरहु न मन भरमाय,  
मन मारे जनि बैठहु, मन मारहु सुख पाय।

नाम—( ४२४५ ) उमरावसिंह पाटे, मैनपुरी।

धम्म-काल—स० १९२९।

कविता-काल—स० १९७२।

ग्रंथ—स्फुट जेव तथा कविता।

विवरण—यह रगनीय प्रतिष्ठित हमींदार प० चिंतामणिजी के पुत्र ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनो में कविता करते हैं।

उदाहरण—

मोर फला राजत, बिराजै उत चद्र-कला,  
बेसरि सुदाइ उत बांसुरी बनावै है;

बानिक बनाया इतै कृष्ण जदुषद आज,  
उतै चद्र चद्रिअ सुबेनी चारु चाइ है।

ध्याती परमक ये नी सी पद्विषाव मा  
 ध्याती मावध्याती पग जीवरे भरति है ।  
 मान करे ध्याती मुख पद्विषाव को उते,  
 ध्याती धनक नीति मोषा ध्याती है ।  
 यधिके नदीये मूनि-मूनि के भवर्षान रयाम,  
 मान भ १ पद्विषाव की ध्याते भरति है ।

नाम--( ४२६१ ) निरा, रात्री निरामी ।

जन्म-काळ--जगन्म सं० ११६० ।

कविता-काळ--सं० ११०६ ।

धर्म--शुद्ध धर्म ।

विरण्य--इमन इनकी कविता मुनी व अध्याय ध्याती है ।

नाम--( ४२६२ ) निरास हर पायक ।

जन्म-काळ--सं० ११६३ ।

धर्म--( १ ) वरणी ( २ ) मता। भुग। क तार ।

विरण्य--उत्तरी निरासी धन्यदुःख वात्रण्य सं० विषयधरजाव के  
 पुत्र । ध्याप मरासती-पुराणकाळ व अध्याय ६, तथा पंधराव, धन्य-  
 धर्म-पताका, धर्मधरा, धन्यगादि तथा क सारादर नी ह्य दुःख है ।

नाम--( ४२६३ ) ध्याती-धा ( इ दुमती ), धनकटा,  
 ध्याजमगद ।

जन्म-काळ--सं० ११६० ।

नाम--( ४२६४ ) जगदीरादतजी शास्त्री, वेनाथाइ ।

जन्म-काळ--जगन्म सं० ११६० ।

धर्म--( १ ) विज्ञान-शिक्षा, ( २ ) मुर भारती-संज्ञ,

( ३ ) हिंसा-साहित्य-सार ।

विरण्य--ध्याप पत्राव विरपविषाव्य के शास्त्री एवं उत्साही  
 धेयक तथा कवि है ।

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हाते हैं। जन्म राननगर, कानपुर है, पर सप्रति हरिद्वार में अध्यापक हैं। सन् १६८६ के ग्वाल्दियर-सम्मेलन में साक्षात्कार हुआ था। वस्तुतः स्वतंत्र प्रकृति के सुयोग्य सज्जन, सर्व साहित्य-सेवी सखा हैं।

उदाहरण--

सुन र कपूर । मदनचूर । इफ सीख मेरी,  
 एतां अभिमान करि नीत्र नसि जाइगो ;  
 रूप मं न रग मं, बिखोकि घिन होय मन,  
 कोदिया सपेद न् अछूत बनि जाइगो ।  
 झुग फीट मारिच में शत्रि है प्रसिद्ध तेरी,  
 नेरु तौ पसाज, सोंक छाए जरि जाइगो ;  
 थौर फी चलावै फौन मैं ही जो न सग होऊँ,  
 पल मैं न जानी कौब देश उड़ि जाइगा ।  
 जहाँ न हित उपदेस शुचि, मो बेसा साहित्य,  
 हो प्रकाश स रहित तो फौन कहै साहित्य ।

नाम—( ४२६० ) कदारनाथ त्रिवेदी 'नवीन', ग्राम कौरैया सरावाँ, सातापुर।

जन्म-काल—स० १६२२ ।

कविता-काल—अनुमानत से १६७६ ।

प्रथ—( १ ) कुञ्जीन ( पद्य ), ( २ ) स्फुट कविताएँ ।

विवरण—यह उपमन्यु-नोत्राय कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। इनके पुत्र 'प्रवीन' भी कविता करते हैं। यह आजकल बिसवाँ, सीतापुर में अध्यापक हैं।

उदाहरण—

पेन अँधियारी रैन कहत यनै न घैन,  
 शिशिर-समीर शीत बाधरै करति है ;



नाम—( १२१८ ) न्यामवसिंहजी लाला ।

विवरण—जैन-समाज में आपके थियाट्रिकल पदा की प्रशंसा है ।  
आपके कतिपय पद अच्छे भी हैं ।

नाम—( ४२११ ) पन्नालाल सिधा ।

प्रथ—परिवार डिरेक्ट्री ।

नाम—( ४२१० ) प्रवासोलाल पर्मा माजवीय, आगर  
मालवा नियासी ।

जन्म-काल—स० १३१४ ।

रचना-काल—स० १३७२ ।

प्रथ—( १ ) वक्ष विज्ञान, ( २ ) आरोग्य-मंदिर इत्यादि ।

विवरण—आपने मुनि, धर्माभ्युदय आदि कई पत्रों का संपादन  
किया है । कविता उस्ताह-युक्त भावों की करते हैं ।

उदाहरण—

पुन हा धन्वा की टकार ।

वही भुजा ठ, वही धनुष है और वही है बाण ,  
फिर क्यों ब्राह्मी दल यदता है, फर इसका संहार ।

क्या कहता है ? भाई, बटे गुरुजन भिय परिवार ,  
खुद मामन स्नेही मरे कैसे कहें प्रहार ।

पि पि ! यह कैसा विचार है, इसे इसी क्षण भूल ,  
केवल कम सत्य है जग में, शेष सभी निस्तार ।

जीव देह ज्या देह वख है सहज यदलता गित्य ,  
मृत्यु एक परिवर्तन है, यह है शास्त्रों का सार ।

तेरा भाई, तेरा बट्ट यदि करता हो पाप ,  
और खदा तू दख रहा हा उनके अत्याचार ।

तब तो धर्म धँसे धरणी म हों विनष्ट क्तव्य ,  
हुइ माह की जय कह तुम्हको धिक्कारे संसार ।

नाम—( ४२२२ ) जगन्नारायणदेव मिश्र ( पुष्कर कवि ) शास्त्री ।

जन्म-काल—आपाद शुक्ल १२, स० १९२२ ।

रचना-काल—स० १९०२ ।

ग्रंथ—( १ ) ब्रह्मचर्य विज्ञान, ( २ ) मधुर, ( ३ ) स्वदेशी तान, ( ४ ) पद्य-ययोधि आदि ।

विवरण—आप अवतार, बसुधरा, मालवमयूर, त्याग भूमि आदि के संपादन विभाग में काम कर चुके हैं, तथा कुछ दिन राम का संपादन भी आपने किया है । आजकल काशी में रहते हैं ।

नाम—( ४२२६ ) दयाशंकर दुबे एम० ए०, एल्-एल्० बी०, प्रयाग ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२० ।

रचना-काल—लगभग स० १९७२ ।

ग्रंथ—विदेशी विनिमय ।

विवरण—नागरिक शास्त्र पर आपने भागवानदास केजा के साथ एक अच्छा ग्रंथ लिखा है । हम समय आप धर्म ग्रंथावली निकाल रहे हैं ।

नाम—( ४२२७ ) नरोत्तमदास श्यामी विशारद, बीकानेर ।

जन्म-काल—स० १९६१ ।

कविता-काल—स० १९७२ ।

ग्रंथ—( १ ) पालरिगढ़ के Scourge of chatsal ( काह्ल्ट का चातुक अपकाशित ) का अनुवाद, ( २ ) राधाकृष्ण मुकुर्जा-कृत Lunda mental unit of India ( भारत की मूल एकता, अपकाशित ) का अनुवाद ।

विवरण—आप राजस्थानी भाषा के लेखक तथा कवि हैं, और इस समय हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस में विभाष्यन कर रहे हैं ।

नाम—( ४२६३ ) विपिनविहारोत्तल ( वैद्य विपिन )

जन्म-काल—स० १३२८ ।

रचना-काल—स० १३७२ ।

प्रथ—( १ ) विपिन-जता, ( २ ) विपिन विहार, ( ३ ) देश-  
दपंथ, ( ४ ) आयुर्वेद-गीतय तथा सुन्द धृद पृथ खेख ।

विवरण—पाँसडीह, बलिया निवासी सु० कृष्णकुमारलाल के  
ज्येष्ठ पुत्र, वैद्यक-परीक्षा पास, पुरातत्व के प्रेमी तथा उस पर महा  
काम्य लिखनेवाले हैं । विपिन-श्रीपहालय में वैद्यक करते हैं ।

नाम—( ४२६४ ) युधचद्र पुरी सन्यासी, स्वामी, ग्राम लवा  
वडा, शुजाबाद ( मुल्तान ) ।

जन्म-काल—स० १३२१ ।

रचना-काल—लगभग स० १३७२ ।

प्रथ—( १ ) श्रीकम सुधार, ( २ ) श्री शिक्षा भजनावली, ( ३ )  
श्री धर्म चेतनावली, ( ४ ) श्री धर्म पुष्पमाला ।

विवरण—इनके पूर्वजों का निवास-स्थान बनारस था ।  
उदाहरण—

साथा रहागी कब तक भारत क नामवाली ।

थीं उठाक दखो भित्ते निशानवाली ॥ १ ॥

गक्रबत ने तुमको घेरा किस शान में पड़ी हो ।

तन की खबर नहीं है भारी सुमानवाली ॥ २ ॥

थीं तुम कभी कहाती भारत कि वीर माता ।

भूली हो तेज अपना देवी के नामवाली ॥ ३ ॥

मुकते थे देव-दानव करते थे दर्श मुनिजन ।

पति-तय धम पर पे तनको जलानेवाली ॥ ४ ॥

अबु'न-से वीर योद्धा, सरधाळ बलि से दाता ।

'युधचद्र' पूज्य माता, उनकी कहानेवाली ॥ ५ ॥

अतः सोष मत बन मतवाला मचा रग-रथ लूब,  
उसी शक्ति से, उसी तेज से कर अरिया पर बार ।  
पुन हा धन्वा की रकार !

नाम—( ४२६१ ) प्रसादीलाल ( शर्मा ) ।

जन्म-काल—सं० १९२५ ।

रचना-काल—सं० १९०२ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा लेख ।

विषय—प० कँदनीराम सारस्वत के पुत्र मनीगढ़, पोस्ट वेवा,  
जिन्हा अलीगढ़ निवासी अध्यापक हैं ।

उदाहरण—

रे मन, प्रीतम ते बिसरायो ।

पिय की सेवा करी न नकहु, सिगरो जनम गँवायो,  
कबहुँ टुक इक ठाँव न बैठ्यो, इत उठ रह्यो भनायो ।  
लिपटयो रह्यो माह-भाया में, प्रीतम दिग नहिँ आयो,  
विपयासक कुचाळ न कबहुँ विपयन ते धिनिँ आयो ।  
ज्याँ मळ कीट सदैव प्रेम सों, मळ ही नाहिँ समायो,  
उलटो चलयो छाँदि मग सुधो, बहुतक में समुभायो ।  
प्रिय प्रीतम का प्रेम पुरी ते छिन छिन दूर दुरायो,  
जिन सँग प्रेम कियो मन मूरख, तिन हुन सग दुरायो ।  
पाप-पुंज दुख रूप जळधि में उलटा ठळि गिरायो ।

नाम—( ४२६२ ) नालमुकुद वाजपेयी, रानीकटरा,  
लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४० ।

रचना-काल—सं० १९७२ ।

ग्रंथ—अध्यापक साप्ताहिक के सपादक थे ।

विषय—आजकल जीवन-बीमा का काम करते हैं ।

नाम—( ४२६३ ) विपिनविहारोन्नाल ( वैद्य विपिन )

जन्म-काल—स० १३२८ ।

रचना-काल—स० १३७२ ।

प्रथम—( १ ) विपिन-जता, ( २ ) विपिन विहार, ( ३ ) देश-  
दृश्य, ( ४ ) आयुर्वेद-गौरव तथा स्फुट घृद पत्र लेख ।

विवरण—पाँसडीह, बलिया निवासी मु० कृष्णकुमारलाल के  
ध्वेष पुत्र, वैद्यक-परीक्षा पास, पुरातत्व के प्रेमी तथा उस पर महा  
काव्य लिखनेवाले हैं । विपिन-श्रीपद्यालय में वैद्यक करते हैं ।

नाम—( ४२६४ ) बुधचंद्र पुरी सन्यासी, स्वामी, ग्राम सबा-  
वडा, शुजाबाद ( मुल्तान ) ।

जन्म-काल—स० १३२१ ।

रचना-काल—लगभग स० १३७२ ।

प्रथम—( १ ) श्रीकम सुधार, ( २ ) स्त्री शिक्षा भजनावली, ( ३ )  
स्त्री धर्म चंतावनी, ( ४ ) स्त्री धर्म पुष्पमाला ।

विवरण—इनके पूर्वजा का निवास-स्थान बनारस था ।

उदाहरण—

सारी रहागी कब तक भारत के नामवाली ।

चाँखें उठाक देखो भिटते निशानवाली ॥ १ ॥

शक्रलत ने तुमको घेरा किस शान में पड़ी हो ।

तन की रमर नहीं है नारी गुमानवाली ॥ २ ॥

यीं तुम कभी कहतीं भारत कि वीर माता ।

भूली हो तेज अपना देवी के नामवाली ॥ ३ ॥

भ्रुकते थे द्रव-दानव करते थे दर्श मुनिजन ।

पतिग्रस्य धम पर ऐ तनको जलानेवाली ॥ ४ ॥

अब्रु नसे वीर थोदा, सरपाल बलि से दाता ।

'बुधचंद्र' पूज्य माता, उनकी कहानेवाली ॥ ५ ॥

अतः सोष मत बन मतवाला मचा रग-रग खूब ,  
वसी शक्ति से, उसी तेज से बर अरियों पर बार ।  
पुनः हो धन्या की टकर ।

नाम—( ४२६१ ) प्रसादीलाल ( शर्मा ) ।

जन्म-काल—स० १९२२ ।

रचना-काल—स० १९७२ ।

प्रथ—स्फुट छंद तथा छेख ।

विवरण—प० कैंदनीराम सारस्वत के पुत्र मनीगढ़, पोस्ट बेबी,  
ज़िला अलीगढ़ नियासी अध्यापक ह ।

उदाहरण—

रे मन, प्रीतम तें विसरायो ।

पिय की सेवा करी न नेरुहु, सिगरो जनम नैयायो,  
कबहूँ टुक टुक ठाँव न बैठ्यो, इत उत रह्यो भ्रमायो ।  
जिपटथा रह्यो मोह-माया में, प्रीतम दिग नहिँ आयो,  
विषयासत्र कुचाल न कबहूँ विषयन ते धिनि आयो ।  
ज्यों मल कीट सदैव प्रेम सों, मल ही माँहि समायो,  
उलटा चलयो धौंदि मग सूयो, बहुतक मैं समुनायो ।  
प्रिय प्रीतम की प्रेम पुरी ते छिन छिन दूर दुरायो,  
जिन खँग प्रेम कियो मन मूरख, तिन हुन सग दुरायो ।  
पाप-पुत्र दुख रूप जबधि मैं उलटा ठेबि गिरायो ।

नाम—( ४२६२ ) गालमुकुद वाजपेयी, रानीकटरा,  
लखनऊ ।

जन्म-काल—खगभग स० १९४० ।

रचना-काल—स० १९७२ ।

प्रथ—अध्यात्म साप्ताहिक के संपादक थे ।

विवरण—आत्मकल जीवन-बीमा का काम करते हैं ।

नाम—( ४२६३ ) विपिनविहारीनाथ ( वैद्य-विपिन )  
जन्म-काल—स० १९२८ ।

रचना-काल—स० १९७२ ।

प्रथ—( १ ) विपिन-जता, ( २ ) विपिन विहार, ( ३ ) देख-  
दपंथ, ( ४ ) आयुर्वेद गौरव तथा स्फुट छंद एव खेल ।

विवरण—पाँसडीह, बलिया-निवासी सु० कृष्णकुमारनाथ के  
ज्येष्ठ पुत्र, वैद्यक-परीक्षा पास, पुराताव के प्रेमी तथा उस पर महा  
काव्य लिखनेवाले हैं । विपिन-श्रीपथालय में वैद्यक करते हैं ।

नाम—( ४२६४ ) युवचंद्र पुरी सन्यासी, स्वामी, प्राम उवा-  
चडा, शुजाबाद ( मुल्तान ) ।

जन्म-काल—स० १९२१ ।

रचना-काल—संगम स० १९७२ ।

प्रथ—( १ ) श्रीकृष्ण मुधार, ( २ ) स्त्री शिक्षा भजनावली, ( ३ )  
श्री धर्म चेतनावली, ( ४ ) स्त्री धर्म पुष्पमाला ।

विवरण—इनके पूर्वजों का निवास-स्थान बनारस था ।  
उदाहरण—

सारी रहांगी कब तक भारत क नामवाली ।

धर्म उठाक देखो भिदते निशानवाली ॥ १ ॥

शाकजत ने तुमको घेरा किस शान में परी हा ।

तन की मृगर नहीं है नारी गुमानवाली ॥ २ ॥

धीं तुम कभी कहातीं भारत कि वीर माता ।

भूली हो तेज धपना देवी के नामवाली ॥ ३ ॥

मुक्ते थे दव-दानव करते थे दर्श मुनि जन ।

पतिभत्य धम पर ये तनको जलानेवाली ॥ ४ ॥

अबु'न-से वीर योद्धा, सरपाल बलि से दाता ।

'बुधचंद्र' पूज्य माता, उनकी कहानेवाली ॥ ५ ॥

अतः सोच मत धन भववाञ्छा मचा रग-रख्य खूब,  
उसी शक्ति से, उसी तेज से कर भरिया पर बार।  
पुन हा धन्वा की रकार।

नाम—( ४२११ ) प्रसादीलाल ( शर्मा )।

जन्म-काल—सं० १९२२।

रचना-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—सुकुट पद तथा छेख।

विवरण—प० कैंदरनाराम सारस्वत के पुत्र मनीगढ़, पोस्ट वेर्वा  
ज़िला अलीगढ़ निवासी अध्यापक हैं।

उदाहरण—

रे मन, प्रीतम तै बिसरायो।

पिय की सेवा करी न नेकहु, सिगरो जनम गँवायो,

कबहुँ टुक इक ठाँव न बैछ्यो, इत-उत रह्यो भ्रमायो।

छिपटयो रह्यो माह माया में, प्रीतम दिग नहिँ आयो,

विषयासक्त कुचाळ न कबहुँ विषयन ते धिनि आयो।

ज्यों मल कीट सदैव प्रेम सों, मल ही माहिँ समायो,

उलटो चल्या वौँदि मग सूपो, बहुतक मैं समुझायो।

प्रिय प्रीतम की प्रेम पुरी ते धिन धिन दूर दुरायो,

त्रिन खँग प्रेम कियो मन मूरख, तिन हुन सग दुरायो।

पाप-पुत्र दुख रूप जलधि मैं उलटा ठेबि गिरायो।

नाम—( ४२१२ ) बालमुकुट वाजपयी, रानीकटरा,

लखनऊ।

जन्म-काल—खगमग सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—ब्रह्मण्य साप्ताहिक के संपादक थे।

विवरण—आठकठ जीवन-बीमा का काम करते हैं।



हिंदी, उर्दू, संस्कृत, फ़ारसी और मारवाड़ी आदि भाषाओं के अध्ये  
 शाता हैं। कुछ समय तक धांप बीकानेर राज्य में अध्यापक थे।  
 [ धांप गोवर्धनदास, अध्यापक स्टेट-स्कूल, बीकानेर द्वारा शात ]

उदाहरण—

नहीं राजनवी यह यहाँ धम सितम है।  
 न तोरी के हम्बों क प्रौकौलतर है।  
 नहीं कूर गुाळक क दौरा जमी पर  
 न तुमों क तोरोजफा कुछ यहाँ पर।  
 नहीं दौर दौराज्य भीरगयाहा।  
 न अक्यर कि तोतोतर की तयार्हा।  
 सदीयों स विद्युने हुए ई जो भाई।  
 उन्हें थप गले हम खगायेंगे थाई।  
 उठा हिंदुघो ! काम करके दिसाधो।  
 शुधी में रुपयों के ताड़े सुटाधो।  
 'मत्तादान' की तुम सुनो अर्त भाई।  
 धरम काम ई देखो धार्धी कमाई।

नाम—( ४२०० ) मुकु दवल्लभ ।

जन्म काल—सं० १२२० ।

ग्रंथ—सुष्ट पद ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—( ४२०१ ) मुरलीधर पाठेय ।

जन्म-काल—सं० १२२० ।

ग्रंथ—( १ ) पूजा फल, ( २ ) हृदय-दान, ( ३ ) शैखशाहा,  
 ( ४ ) लक्ष्मणा, ( ५ ) परिधम ।

- विवरण—बाबपुर, जिन्ना विज्ञानपुर निवासी चिन्तामणि पाठेय  
 के पुत्र ।

नाम—( ४२६२ ) व्रतमोहनशरण ( अष्टाना )

रचना-काल—लगभग स० १९७२ ।

प्रथ—( १ ) भिखारी और भगवान्, ( २ ) वीपदी दिग्दर्शन,  
( ३ ) भोज परिचय । सब अप्रकाशित हैं । ईश्वर प्राप्ति के श्रुत  
बहुसंख्यक पद्य ।

विवरण—धौरास जिला उद्गाय के नवीन कवि हैं ।

नाम—( ४२६६ ) भगवतीप्रसाद, फलरुत्ता ।

विवरण—आप गद्य प्रयत्नकार तथा कवि हैं । [ यह महाशय हमें  
प० अक्षयमल्लजी त्रिवेदी द्वारा ज्ञात हुए हैं ]

नाम—( ४२६७ ) भगवानबख्श ( श्रीकर ) राजा ।

विवरण—इटीजा, लखनऊ । पाँच साल तक राज्य किया ।  
स० १९८८ में देहांत हुआ । आप कविता तथा गान विद्या के विशेष  
प्रेमी थे ।

नाम—( ४२६८ ) महेशनाथ शर्मा, लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग स० १९४८ ।

रचना-काल—स० १९७२ ।

विवरण—आप लखनऊ से प्रकाशित होनेवाले दैनिक 'आनन्द'  
के संपादक एवं बिनाद प्रिय, उत्साही सचन हैं । राजनीतिक आंदो-  
लन में कई बार जेल यात्रा भी कर चुके हैं ।

नाम—( ४२६९ ) मातादीनसिंह गौतम विशारद, दुगरेई,  
फतेहपुर ।

जन्म-काल—स० १९४९ ।

रचना-काल—लगभग स० १९७२ ।

प्रथ—( १ ) ओसवाळ सुधार, ( २ ) बाइबिल की पोल, ( ३ )  
गौतम विचार तरंग ।

विवरण—यह राजपूत कुलोत्पन्न कुँवर कोदीसिंह के पुत्र तथा

उदाहरण—

फरो जगत में रीत शुभ काम, जितने मित्रे तुम्हें धा धाम ।  
 दुष्कर्मों को दीजे त्याग; मन की पकड़ खोजिण बाग ।  
 करै तरस्या या जो योग; ऐव जग में दुखम लोग ।  
 जिनके मन में नहीं विवेक; ऐसे जग में पुरुष शक ।

नाम—( ४२१७ ) मातापसाद शर्मा 'दत्त कवि' चारावकी  
 ( अ०१ ) ।

जन्म-काळ—स० १११२ ।

कविता-काळ—जगभग स० ११७७ ।

ग्रंथ—( १ ) नारद-मोह ( नाटक, धालाई प्रेस, बहराष्ट्र ),  
 ( २ ) लक्ष्मण विजय ( नाटक, स० ११७१, भारत भूषण प्रेस,  
 बलनऊ ), ( ३ ) भारत सत्कार ( पद्य, स० ११८०, प्रमुद्रित ),  
 ( ४ ) स्फुट कविता ।

विषय—श्राव कांडिन्यगोत्रीय शास्त्रीय शास्त्रण प० राजाराम  
 शर्मा ( पाठक ) क पुत्र हैं ।

उदाहरण—

घर्षों की प्रजराज-वाटिका

झीरे रंग केतकी, गुलाब गुंफ झीरे झीरे,  
 गुलाबीन झीरे चार प्राणुट पझीरे री ।  
 झीरे झीध, झीरे सौध, झीरे मज्ज-बाग पौध,  
 झीरे रंग काफिला कलाप कुज झीरे री ।  
 झीरे री हिंदोरन में झीरे राधा कृष्ण, झीरे  
 तरल तरगन में झीरे डंक डार री ।  
 झीरे 'दत्त' झीरे उद्वि, झीरे ही के तोरे मन,  
 झीरे किए डारें ये कर्षन की डारें री ।

नाम—( ४२१८ ) रामगोविंद त्रिवेदी ।

चिंतन, ( ४ ) ससार दर्शन, ( ५ ) शिक्षा-सप्तमती, ( ६ ) आरोग्य-शतक ।

उदाहरण—

अपनी अपक नति के समान,  
करता हूँ तेरा यशोगान ;  
है सत्य भले हों अड - धड,  
जब बदनीय बुदेखसड ।  
गिरि चित्रकूट तेरा प्रधान—  
जब किया राम ने शोभमान,  
कह उठा धन्य था अखिल अड,  
जब बदनीय बुदेखसड ।  
धीवीरसिंह से दानवीर,  
हरदौल तुल्य बलि वीर - धीर ;  
है यद्वा तुके तेरा घमड,  
जब बदनीय बुदेखसड ।

नाम—( ४२१६ ) पार्वतीदेवी ।

रचना-काल—स० ११७७ ।

प्रथ—स्तुत कविता ।

विवरण—आप हिंदी-ससार के प्रसिद्ध लेखक भाई परमानंद की यहिन हैं । इनका विवाह पंजाब के डॉक्टर मिलखीरामजी से हुआ था, किंतु उक्त डॉक्टर महाशयजी की अकाल मृत्यु हो गई । कामेस-कार्य के हतु क्रियों के संगठन के अभियोग में इन्हें कारावास भी सहना पड़ा । अब इनके जीवन का केवल उद्देश्य देश तथा साहित्य-सेवा है । महाशय गदाधरनसादजी अदभुत का कथन है कि उन्होंने कथ्य कवि कृत कान्यकुसुमोद्यान' में इन विदुषी की कविता देखी है । वही कविता हम यहाँ उद्धृत करते हैं ।

उदाहरण—

करो जगत में रीत शुभ काम, जिनवे भिजे तुम्हें धन राम ।  
दुष्कर्मों को दीजे त्याग, मन की परुष खातिर पाग ।  
करे तरस्या या जो याग, पय जग में दुखभ लोग ।  
जिनके मन में नही विरोध, पस जग में पुदप अनेक ।

नाम—( ४२१७ ) मातापसाद शर्मा 'दत्त ऋषि' यारायणो  
( अयय ) ।

जन्म-काल—सं० ११२२ ।

कविता-कात्र—जगभग सं० ११७७ ।

प्रथ—( १ ) नारद मोह ( नाटक, यालार्क प्रेस, यदराइच ),  
( २ ) लक्ष्मण विजय ( नाटक, सं० ११७३, भारत भूपय प्रेस,  
छारनऊ ), ( ३ ) भारत सत्कार ( पद्य, सं० ११८०, अमुदित ),  
( ४ ) स्फुट कविता ।

विवरण—आप कौडिन्यगोत्रीय शाकदीरीय ब्राह्मण प० रामाराम  
शर्मा ( पाठक ) के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

घर्षा को प्रत्रराज-वाटिका

धौरे रग केतकी, गुलाब गुंफ धौरे-धौरे,  
गुलाचीन धौरे घास घाट बहारें री ;  
धौरे धौज, धौरे सौध, धौरे मज-बाग पौध,  
धौरे रग कोकिला कलाप कुत्र धौरे री ।  
धौरे री हिंडोरन में धौरे राधा कृष्ण, धौरे  
तरल तरंगन में धौरे दौक धौरे री !  
धौरे 'दत्त' धौरे बुद्धि, धौरे ही के तारे मन,  
धौरे किए धौरे ये कर्षण की धौरे री ।

नाम—( ४२१८ ) रामगोविंद त्रिवेदी ।

चिंतन, ( ४ ) ससार दर्शन, ( ५ ) शिक्षा-सप्तसती, ( ६ ) धारोग्य-शतक ।

उदाहरण—

अपनी अपक भक्ति के समान,  
 धरता हूँ तेरा यशोगान,  
 है सत्य भले हों अड - धड,  
 जय बदनीय बुदेखखड ।  
 गिरि चित्रकूट तेरा प्रधान—  
 जय किया राम ने शोभमान,  
 कह उठा धन्य था अखिल अड,  
 जय बदनीय बुदेखखड ।  
 श्रीवीरसिंह से दानवीर,  
 हरदीख तुल्य बलि - पीर - धीर;  
 है अडा चुक तेरा यमड,  
 जय बदनीय बुदेखखड ।

नाम—( ४२१६ ) पार्वतीदेवी ।

रचना-काल—स० १९७७ ।

प्रय—स्फुट कविता ।

विवरण—आप हिंदी-ससार के प्रसिद्ध लेखक भाई परमानंद की पहिल हैं । इनका विवाह पञ्जाब के डॉक्टर मिलखीरामजी से हुआ था, किंतु उक्त डॉक्टर महाशयजी की अकाल मृत्यु हो गई । कामेस-कार्य के हेतु स्त्रियों के संगठन के अभियोग में इन्हें कारावास भी सहना पड़ा । अब इनके जीवन का केवल उद्देश्य देश तथा साहित्य-सेवा है । महाशय गदाधरसावजी अकाल का कथन है कि उन्होंने कण कवि कृत 'काव्यबुसुमाधान' में इन विदुषी की कविता देखी है । वही कविता हम यहाँ उद्धृत करते हैं ।

( १ ) इन्द्र पराजय ( खंड काव्य ), ( २ ) घाघ की कविता ( भालोचनात्मक ग्रंथ ), ( ३ ) उद्गार ( स्फुट कविताओं का संग्रह ) ।

विवरण—यह सरयूपारीय ब्राह्मण प० रघुनंदन पाडेयजी के पुत्र हैं । यह महाशय लेखक एवं कवि होते हुए एक अच्छे व्याख्यानदाता भी हैं । इनकी रचनाएँ माधुरी, मनोरमा, कान्यकुब्ज आदि पत्रिकाओं में समय-समय पर निकला करती हैं । [ प० उमाशंकरजी पाडेय, हिराजपट्टी ( आज्ञाभगद ) द्वारा ज्ञात ]

उदाहरण—

आशा

बित्ते रहो बन स्नेह सुमन इस हृदय विपिन के ,

मित्ते रहो बन धीर सदा इस नीर नयन के ।

श्याम सघन घन बन मनु मन-मार जिलाना ,

प्यासे द्विय को कभी प्रेम-पीयूष पिन्नाता ।

धव मजुल मानस मे हरे ' राजहस बन के रहो ,

मम आशा सरिता में सदा सुधाधार बनकर बहो ।

नाम—( ४३०० ) हरद्वारप्रसाद जाजान, थारा ( विहार ) ।

जन्म-काल—स० १९९१ ।

रचना-काल—स० १९७७ ।

ग्रंथ—( १ ) घाघ्ट सून ( प्रहसन, प्र० सं० ६४ ), ( २ )

धूर धेय ( पौराणिक नाटक रूपक, प्र० सं० ११३ ), ( ३ ) पृथ्वी

पर स्वर्ग ( सामाजिक नाटक ), ( ४ ) राज्य चक्र ( ऐतिहासिक

नाटक ), ( ५ ) भगवान् कृष्णचंद्र ( पौराणिक नाटक ) ।

विवरण—यह मारवाड़ी अमवाल (जालान) कुलोत्पन्न सेठ सागर-मल्लजी के पुत्र हैं । इनका थारि निवास-स्थान बीकानेर-राज्यांतर्गत बुरु ग्राम है । इनको हिंदी-साहित्य से श्रद्धयत प्रेम है । आर से

जन्म काल—स० १९२२ ।

रचना काल—स० १९७७ ।

ग्रन्थ—( १ ) दर्शन परिचय, ( २ ) हिंदी-पुस्तक-कोष, ( ३ ) हिंदी विष्णुपुराण, ( ४ ) सार्वर्षिक प्रह्लाद, ( ५ ) महास्त्री मदालसा ।

विवरण—आप सरयूपारीण ब्राह्मण अजुनप्रसाद त्रिवेदी के पुत्र हैं । सस्कृत के विद्वान् तथा दर्शन शास्त्र के ज्ञाता हैं । सस्कृत में व्याख्यान देने का आपका अच्छा अभ्यास है । चर्मा में आप ही ने सर्व प्रथम राष्ट्र भाषा हिंदी का प्रचार किया, और रंगून में विश्व वृत्त पत्र तथा प्रेस की स्थापना की । हिंदी के आप अच्छे खेसक हैं ।

नाम—(४२९६) रामजी शर्मा 'मधुवती', जिला आजमगढ़ ।

जन्म-काल—स० १९२६ ।

कविता काल—स० १९७७ ।

ग्रन्थ—प्रकाशित ( १ ) वैद्य भूषण ( वैद्यक का काव्य ग्रन्थ ), ( २ ) महात्मा गांधी ( पद्य बद्ध जीवनी ), ( ३ ) गोरी घीवी ( उपन्यास ), ( ४ ) मेरी रामकहाना ( उपन्यास ), ( ५ ) महात्म्य ध्रुव ( खंड काव्य ), ( ६ ) द्रापदी-स्वयंवर ( खंड काव्य ), ( ७ ) आजमगढ़ दृश्य ( प्रातीय इतिहास ), ( ८ ) महारथी अर्जुन, ( ९ ) पतिप्राणा राधा, ( १० ) हिंदी महाभारत ( ११ ) श्रीकृष्ण-चरित्र, ( १२ ) भीष्म पितामह, ( १३ ) महर्षि दयानंद, ( १४ ) नर्तक शतक, ( १५ ) नल-दमयती ( नाटक ), ( १६ ) द्रौपदी-धीरहरण ( नाटक ), ( १७ ) चंद्रिका ( उपन्यास ), ( १८ ) दृष्टांत-सागर ।

अप्रकाशित—( १ ) सीता ( नाटक ), ( २ ) हरिश्चंद्र ( नाटक ), ( ३ ) परम भद्र प्रह्लाद ( खंड काव्य ), ( ४ ) राठीरी तलवार



## समय—सयत् १६७६

नाम—( ४३०४ ) कात्तिकेयचरण मुखोपाध्याय ( कालो-  
बाडी ) छपरा, प्रात विहार ।

जन्म-काल—स० १३२४ ।

रचना-काल—स० १३७६ ।

ग्रंथ—( १ ) मुस्तफ़ा कमाल पाशा, ( २ ) सती सुभद्रा, ( ३ )  
मनीपुर का इतिहास ।

विवरण—यह प० कालीकिंकर मुखोपाध्याय के पुत्र हैं ।  
बंगाली सज्जन होते हुए भी इनको हिंदी की निदा एवं अप्रतिष्ठा  
तन्त्रिक भी सहन नहीं होती है । अपनी धर्मपत्नी श्रीमती  
नलिनीबालादेवी को भी हिंदी की अच्छी शिक्षा दी है, और  
उन्होंने योग्यता पूरक 'शकुंतला'-जैसी सुंदर पुस्तक की रचना की  
है । मौलिक ग्रंथों के अतिरिक्त, जो ऊपर लिखे जा चुके हैं, इनके  
अनुवादित ग्रंथों की संख्या लगभग ४०-४२ के हैं । किसी समय  
इन्होंने 'भारतमित्र' के सहकारी संपादक का भा काम किया है ।  
हस समय यह 'हिंदी-दारोगा दफ्तर' के संपादक और 'हिंदूपत्र'  
के निरीक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं ।

उदाहरण—

विजली

निराधार इस नील गगन में  
क्या विजली ! तू बिहँस रही है ?  
भँधियारी इस अमा निशा में  
इतराती क्यों थिरक रही है ?  
सुगतृष्णा - सी मरीचिका - सी  
प्रवचना क्या सिखा रही है ?

‘भारवाड़ी-सुधार’ नामक पत्र आपन ही निकाला है। आजकल यह ‘नवीन भारत’ तथा ‘विचित्र मण्डल’ ये दो पुस्तकें लिख रहे हैं। [ धीयुत सुम्बदेवसिंहजी, आरा नागरी प्रचारिणी सभा, द्वारा श्राव ]

समय—संवत् १९७८

नाम—( ४३०१ ) फूलदसहाय वर्मा एम्० एस् सी०,  
काशी ।

जन्म काल—स० १९४८ ।

रचना-काल—लगभग स० १९७८ ।

ग्रंथ—प्रारम्भिक रसायन ।

विवरण—आपका जन्म-स्थान सारन जिलांतगत कीसड़ ग्राम है। इस समय आप हिंदू विश्वविद्यालय, काशी के रसायन विभाग के अध्यापक हैं। आजकल हिंदी में रसायन विषय की पुस्तकें लिख रहे हैं। आपके रसायन संबंधी महत्त्वपूर्ण लेख पत्र पत्रिकाओं में यथा समय निकला करते हैं।

नाम—( ४३०२ ) रामनारायण मिश्र ।

जन्म-काल—स० १९२३ ।

रचना काल—स० १९७८ ।

ग्रंथ—परिचमी रसायन का संक्षिप्त इतिहास ।

विवरण—रायमरेली प्रांत निवासी ।

नाम—( ४३०३ ) साँवलिया विहारीलाल वर्मा एम्० ए०,  
बी० एल्० छपरा, सारन ।

जन्म-काल—स० १९२३ ।

रचना-काल—लगभग स० १९७८ ।

ग्रंथ—( १ ) योरपीय महाभारत ( पाँच भाग ), ( २ ) गद्य चतुर्विध ( ३ ) गद्य-चन्द्रिका ।

उदाहरण—

घड़ि चितपानैया भइ लज्ज-पयोनिधि पार,  
 एकै वडै रिखाकिए नायिक नदकुमार।  
 अचल अचल चल अचल किय, बाल बाल रुच नैन ;  
 हेरा पेरी दुहुन मन जइ दबाळी मैन।  
 अचल भए चान चित पथिक छोटके दुहुन अरूक ;  
 खर जितौनि काँठनि बिषे, मारग परै न सूक।  
 मदन प्राइ गइरे गइयो, हरत हरि तन भास,  
 मानसगासी गति गही, पारन वारन-शास।  
 औचक थीं चूम्यौ यदन रघो मान मन माँहि ;  
 दुरि उदग कैंपि-कैंपि कइ नई नरेळी नहि।  
 भजै न राका ससि वडै, जाअर परस सुभाय ;  
 पग-सरोज सचुके, तउ मुख सरोज सुसभाय।

नाम—( ४३०६ ) घासीराम व्यास ( सनाढ्य ) मऊ  
 ( मौसी )।

जन्म काल—स० १६९०।

कविता काल—स० १६७८।

उदाहरण—

अक्षत विचार चाह चदन चढ़ाय शुभ,  
 सुमन सुहाती माल सुमन सुहाती की ;  
 'ग्यास' तर अतर सुगधन लगाय पूर  
 आरती उतारें करपूर पूर पाती की।  
 सुजन सँघाती रयाम सुधि रचि राती पूज,  
 सुख सरसाती विधि सुख शरसाती की ;  
 मञ्जु सुद माती पाती त्रिपुरनिपाती महा-  
 देव पै चढ़ावै बेल पाती पचपाती की।

श्रात पथिक की नयन भ्राति को  
 पथ दिखला क्या भगा रही है ?  
 या जलधर के वज्र हृदय का  
 परिचय जग को जना रही है ?  
 गर्वोन्मत्तुन्मत्त जनों के  
 क्या हृत्तल को डरा रही है ?  
 भीमानों की धी की क्या तू  
 घचलता को बता रही है ?  
 या विरहिन का सुप्त ध्यया को  
 रह - रह करके जगा रही है ?

सध्या

हँसान आती तू कुमुमित कनरी को कुमुद की ?  
 चलाने या आती कमल रुलिका के हृदय को ?  
 चकी को प्रेमी से बिलग कर देने विरह या—  
 नवेली आली को पति भय दिखाने सु उर में ?  
 बुबोने आती तू दिवस मथि को क्या उदधि में ?  
 बनाने बाँकी या पति मन रिझानी युवति को ?  
 जगाने है आती मदन मद पूर्णा तरुणि में ?  
 बहाने या आँसू विरह विजुरा के नयन से ?

नाम—( १३०२ ) काशीनाथ द्विवेदी ।

जन्म-काल—सं० १६२४ ।

रचना-काल—सं० १६७६ ।

ग्रंथ—सतसई ।

विवरण—पं० रुद्रदत्त शर्मा के पुत्र ।

गोपाल ! अपनी मिय धरा पर मद्य कीम पसीजिए,  
 केशव ! करण ध्येन अचय कर कुष कृपा अय कीजिए ।  
 माधव ! मलय-भारत समुद्रति का पहा फिर दीजिए,  
 हे राधिकारजन ! स्वजन का शरण में रख लीजिए ।

नाम—( ४३०८ ) धर्म द्रनाथ शास्त्री ।

जन्म-काल—स० १६२४ ।

रचना काल—स० १६०६ ।

ग्रंथ—( १ ) भारतीय तथा पारधात्म द्यन, ( २ ) उपनिषदों  
 का विद्वान्त, ( ३ ) मुद्र धारा ।

विवरण—आप डॉक्टर केशवनाथ के पुत्र तथा मेरठ-कॉलेज में  
 सरहूत के प्राफेसर हैं । आप योग्य वरा एव लेखक भी हैं । द्यन-  
 शास्त्र पर आपने धम किया है ।

नाम—( ४३०६ ) रामसहाय पाडेय उपनाम 'चंद्र' ।

जन्म-काल—सं० १६९४ ।

कविता काल—स० १३०६ ।

जन्म-स्थान—घिनहट, जिला लखनऊ ।

पिता का नाम—प० गौरीशंकरजी पाडेय ।

शिक्षा—साधारण हिंदी उर्दू अंगरेजी ।

विवरण—बड़ी बोली और मन भाषा दानो ही में अच्छी रचना  
 करते हैं ।

उदाहरण—  
 राज भाषा  
 ( कविता )

मान अमद की कुचद हुति होन लागी,  
 उरज उरतगन पै कचुकी सबै लगी ;  
 गुरुता नितयन में नित्य सरसान लागी,  
 सरकति नीची कटित्त को तनै लगी ।

नाम—( ४३०० ) ज्योतिषचन्द्र घोष धी० ए०, ग्राम रूपतल  
जिला भागलपुर ( बिहार प्रांत ) ।

जन्म काल—सं० १३२४ ।

रचना-काल—सं० १३७३ ।

मृत्यु-काल—सं० १३८४ ।

प्रथ—सिकंदर शीर पुरु ( अपूर्ण लब्ध काव्य ) ।

विवरण—यह यादू देवूलाळ घोष के पुत्र थे । सदा परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में उच्चैर्य हुए । सन् १३७७ में धी० ए० हुए । कुछ काल तक यह मारवाड़ी पाठशाला ( हाईस्कूल ), भागलपुर के प्रधानाध्यापक रहे । इनकी कविताएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुआ करती थीं । आपने घणानगर ( भागलपुर ) से सुरभि-नामक साहित्यिक मासिक पत्रिका निकाली थी ।

उदाहरण—

आकाशा

मोहन ! पुन ध्यानदमय ध्रु ति मधुर सुरली तान हो,

जीवन-समर में शक्तिमय फिर पुण्य गीता-गान हो ।

द्वियमाय भारत को नवल स्वर्गीय जीवन दान हो

करुणा-सुधा के पान से जन का परम क्लृपाण हो ।

दारिद्र्य दानव मनुज शोणित से यहाँ है पल खा,

सबको तुषलता चक्र दुख-दुर्भाग्य का है चल रहा ।

घर घर कलह क रूप म फल फूट का है फल रहा,

श्री' द्वेष दायानख मनोवन में भयकर चल रहा ।

ये बुर हा, इनका प्रभो ! अथ शीघ्र ही सहार हो,

सद्भाव से सुरभित सुखद यह स्वयं का सतार हो ।

मानव हृदय औदाय श्री' उत्साह का आगार हो,

नि स्वार्थ पावन प्रेम का सवत्र ही सचार हो ।

किमके क्षयि जाल में लोचना को  
 उलझाकर प्रेम - दिवानी हुई ;  
 किस कुज में तैरा विवाह हुआ ,  
 कर तू अतुराज की रानी हुई ॥ ३ ॥  
 जब स्योम से वारि की मुहावली  
 घटा ! फूलफड़ी धन छूटती थी ;  
 जब अंरु में पैठी हुई धर के  
 चपला प्रणयासव बूटती थी ।  
 जब लंक लचाती लवग - लता ,  
 कली मझिका की जब फूटती थी ;  
 तब बैठ कदव के फुत्र म तू ,  
 सजनी, सुख कौन-सा लूटती थी ॥ ४ ॥  
 उस मीठे अतीत की विस्मृति है—  
 मुझसे क्या कभी हटलाती नहीं ;  
 विचरी जिस मीदाधली 'मैं कभी ,  
 उसी थार क्यों दृष्टि घुमाती नहीं ।  
 वचनामृत से कर लिखित क्यों  
 लतिकाभो के प्राण बचाती नहीं ;  
 ठजड़ी हुई 'चद्र' की चाटिका म  
 हे कुहूकिनी, क्यों अब धाती नहीं ॥ ५ ॥

नाम—( ४३१० ) श्यामाकण वशी, मुँगेर ।

जन्म-काल—सं० १३२४ ।

रचना-काल—सं० १३७३ ।

प्रथ—( १ ) हिंदी-व्याकरण-तत्त्व, ( २ ) मनस्वी ध्रुव, ( ३ )  
 तिलक-प्रथा, ( ४ ) बिहार की सम्मिश्रित परिवार प्रणाली ।

अजन खँजोली अरसीली अँखियान पेखि  
 खजन की, कजन का अपला लनै लगी ;  
 मद मुसकान सा सनेह सुधा घोरै 'चद्र',  
 बोलति नवीना मजु बीना सी बजै लगी ।

खड़ी बोली  
 ( सबैया छंद )

स्वरोँ की सुधा भिचित माधुरी से  
 रस प्राण न कौन-सा खोलती है ;  
 द्विपी अतर न किस वेदना की  
 उलझी हुई प्रियीं खोलती है ।  
 अथवा हुई प्रेम में बाधली तू,  
 प्रति ढाल में साँचली टोळती है ;  
 अथि प्रेयसि श्यामा, विभावरी में  
 कह क्यो तू कुहु-कुहु खोलती है ॥ १ ॥  
 मधुकाते, मनोहर तू कितनी,  
 य मनोहरता घटा पाई कहाँ ;  
 यह मादकतामयी रागिनी है,  
 किसने तुम्हका सिम्लाह कहाँ ।  
 तु सुयागिनी है या वियोगिनी तू,  
 कहाँ थी, किस देश से आई कहाँ ;  
 भरी कठ न तर गई इतना  
 मधु सी मिसिरी-सी मिठाह कहाँ ॥ २ ॥  
 किस कानन में उपनी कर तू,  
 कहाँ खेळी, कहाँ है सयानी हुई ;  
 नवयौवन की अगवानी कहाँ  
 तुम्हको महामोद मदानी हुई ।



समय—सधत् १९८०

नाम—( ४३११ ) उदयशंकर भट्ट ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

रचना-काल स० १९८० ।

प्रथ—( १ ) तथ शिखा-काव्य, ( २ ) विक्रमाश्रित्य नाटक,  
( ३ ) उपमा का इतिहास आदि कई पुस्तकों के लेखक तथा गुमानी  
मिथ्र हृत कृष्णचंद्रिका के संपादक ।

विवरण—युवप्रात के निवासी, आज़कल छाहीर में रहते तथा  
पंजाब विश्वविद्यालय के परीक्षकों में हैं । गद्य रच के होनार  
लेखक हैं । तथशिखा-काव्य पर आपको पंजाब टेक्स्ट-बुक-कमिटी  
से ४२०) इनाम मिला है ।

उदाहरण—

सूर को खँधरो कीन कहे ।

पढ़तहि पद मन मत है नाचत आनँद स्रोत बहे ;  
सरल तरंग हृदय सरिता में कल-कल करि उमहे ।  
जग जगल कइकि भइपट जन तटिनी तट पहिरै ;  
मगति भाव भरि मुकि मुकि भूमि नैनन नीर बहे ।  
द्विन विषाग, द्विन योग, भाग द्विन आयत सब समुहे,  
भेद्यत जलकि फँई मुरलीधर राधा उदब चहे ।  
जइ चेतन, चेतन जइ हाथे भावुकता उलहे ।  
सुकवि सूर की सुनत पदायलि को है मीन गहे ।

मिज्ञा

कैला म्बोली निडुर हृदय की देख कौन देने आया,  
मध न होना रूप-सुधा पी, यह ऊपर तक भर आया ।  
धौखों द्वारा पीकर मचले अपने मन में रख लेना,  
जीवन है, मधु मद है, सुख है, सुसको जय दब भर लेना ।

उदाहरण—

### स्वप्न विपाद

निबिड़ काखिमा से आच्चादित हँसता था आकाश ;  
 और पयाधर सिंहनाद से कहता था "शाशाश" ।  
 पवन तुरगम उस सेनप को दिखा रहा समाम ;  
 प्रकृति जगत् के बीच मचा था ऐमा ही कुहराम ।

मेघ बिंदु के विशिख समक्ष

बना हुआ था मैं ही लक्ष ।

मिला भयकर घर महावन कटक से आकीय ;  
 पय विहीन शत योजन तक था मानो वह विस्तीर्ण ।  
 सिंहादिक ब्यालादिक हिंसक धूम रह थे जतु ;  
 देख देव्यकर दूट रहा था मेरा साहस-चतु ।

कैसे निकरू इससे हाय !

कौन बतावे यहाँ उपाय ।

सब छूटी आशा जीवन का चेष्टित थे सब अंग ;  
 कर पद ने आधार खोज में कर दा निद्रा भंग ।  
 देखा वहाँ न भय था, धी घस केवल कुछ कुछ रात ।  
 पया हुआ था मैं शय्या पर, होने को था प्रात ।

परिवर्तित होकर आह्लाद

कहाँ गए थे स्वप्न विपाद ?

इसी तरह जग में जीवन है करता मिथ्याशोक ;  
 जब तक उसमें दीन्य न पड़ता सचा ज्ञानाज्जक ।  
 सहते हुए ताप इस तन में जब करता है यत्न ;  
 तभी आव यह पा सकता है 'ईश्वर ऐसा, रत्न ।

स्वप्न-कथा का यह उपदेश

प्रहय्य करोगे क्या कुछ देश ?

समय—संवत् १९८०

नाम—( ४३११ ) उदयशंकर भट्ट ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

रचना-काल स० १९८० ।

प्रथ—( १ ) तक्षशिला-काम्य, ( २ ) विक्रमादित्य नाटक,  
( ३ ) उपमा का इतिहास आदि कई पुस्तकों के लेखक तथा गुमानी  
मिथ हृत कृष्णचक्रिका के संपादक ।

विवरण—युक्तप्रदेश के निवासी, आठकाल छाहीर में रहते तथा  
पंजाब विश्वविद्यालय के परीक्षकों में हैं । गद्य शब्द के होनहार  
लेखक हैं । तक्षशिला-काम्य पर आपको पंजाब-वेस्ट युक्त-कमिटी  
से ४२०) इनाम मिला है ।

उदाहरण—

सूर को धँधरो कौन कहे ।

पढ़तहि पढ़ मन मह है नाचत आनंद-स्रोत बहे ।  
तरल तरंग हृदय सरिता में फल-फल करि उमहे ।  
जग जगल अशुकि अशुपद जन तटिनी तट विहरे ।  
मगति भाव भरि भुकि भुकि भूमि नैनन नीर बहे ।  
धिन वियोग, धिन योग, माग धिन आवत सय समुहे ।  
भेटत ललकि कहेँ मुरलीधर राधा उद्वव चहे ।  
जइ चेतन, चेतन जइ हाथी भावुकता उलहे ।  
मुकवि सूर की सुनत पदावलि को है मीन गहे ।

मिच्छा

कैला मोजी निदुर हृदय की देख कौन देने आया,  
मत्त न होना रूप मुधा पी, मह ऊपर तक भर आया ।  
धौलों द्वारा पीअन मचले अपने मन में रख लेना ;  
जीवन है, मधु मद है, सुख है, पुसको जय खद भर लेना ।

हृदय-कुञ्ज में मादकता जय नाच रही हो छुन-छुनकर ;  
 सौंदर्य भ्रुकभोर रहा हा इठलाता अपना पन कर ।  
 आशा शुभ सवाद सुनाता जब आवे नभ से भू पर ,  
 तब डँडेलना रसिक रसाजी आँखों में आँखें भर भर ।

नाम—( १३१२ ) गदावरप्रसाद अष्ट विद्यालकार,  
 विशारद, वनो, नागरी, मुँगेर ।

जन्म-काल—स० १३२३ ।

रचना-काल—स० १३८० ।

ग्रन्थ—ग्रन्थशास्त्र, राजनीति का पारिभाषिक कोष ( अर्घ्य )

विवरण—यह कायस्थ कुलोत्पन्न धान्य पत्रकारीकाल के पुत्र हैं ।  
 'चाँद', 'देश' तथा 'महावीर' पत्रों के सहकारी संपादक रह चुके हैं ।

नाम—( १३१३ ) गगानदसिंह ( कुमार ) एम्० ए०, एम्०  
 एल्० ए०, एम्० आर० ए० एस्०, श्रीनगर, जिला पूर्णियाँ  
 ( बिहार प्रांत ) ।

जन्म-काल—स० १३२२ ।

रचना-काल—स० १३८० ।

ग्रन्थ—इनकी लिखी हिंदी तथा अँगरेज़ी की कई पुस्तकें कलकत्ता  
 विरवविद्यालय द्वारा प्रकाशित हुई हैं ।

विवरण—यह साहित्य-सरोज कविकुलचंद्र राजा कमलानंद के  
 सुपुत्र हैं । यह देश तथा विदेश की कई साहित्यिक, सामाजिक तथा  
 राजनीतिक सस्थाओं के सदस्य हैं । आप एक सुकवि हैं ।

उदाहरण—

सागर ! तेरे निकट बैठकर मन चिंता से मस्त हुआ ।  
 ज्ञान-ध्यान या जो था जी में, सब चकराकर परत हुआ ।  
 गुण विरोध को तेरे तन में देखा ज्यों हा नुहा हुआ ;  
 पाया तब फिर मैंने उनको नीर क्षीर-सा मिला हुआ ।

तेरे अति गभीर नाद के भीतर हास्य छिपा रहता ।  
जब तू मानव-जीवन को ई अति क्षण भंगुर दिखलाता ।  
फिर जब कर धाकृति तू भीषण अपना गौरव दिखलाता ,  
हागा फिर विनयी सा नीचा सपने में भी क्या आता ।  
तेरे चक्र स्थल पर नदियाँ जब आ करके गिरती हैं ;  
कृष्ण प्रेम में पगी गोपिया की भी तो वे लगती हैं ।  
उन्हें मिलाकर निज शरीर में जग को तू ही सिखलाता ।  
अंत काल यह जगत् समूचा मद्म-देह में मिल जाता ।

नाम—( ४३१४ ) गगाप्रसाद मेहता एम० ए० ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२२ ।

रचना-काल—स० १९८० ।

ग्रंथ—चक्रगुप्त विरमादित्य ।

विवरण—उपयुक्त ग्रंथ बहुत ही रोचक-पूर्ण उच्च कोटि का है ।  
ऐसे ग्रंथ रत्नों की दिवी को आश्चर्यकृत है ।

नाम—( ४३१५ ) दावारीलाल साहित्यरत्न, न्यायतीर्थ,  
जब्हेरीबाग, इ दौर ।

जन्म काल—सं० १९२६ ।

कविता-काल—लगभग स० १९८० ।

ग्रंथ—( १ ) भारतोद्धार ( नाटक ), ( २ ) क्षत्रिय-रत्न  
( महाकाव्य ), ( ३ ) जैन-दर्शन, ( ४ ) सम्पन्न शतक, ( ५ ) स्फुट  
कहानियाँ ।

विवरण—यह श्रेष्ठ न-हज्जाजी के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

जब से संध्या हुई, तभी से होने लगा अग-अगार,  
छाया मतवालापन मुझमें भूल गइ सारा ससार ।

हृदय कुज में मादकता जब नाच रही हो  
 सौंदर्य भ्रमकाले रहा हो इठलाता  
 धाया शुभ सवाद सुनाती जब आवे न  
 तब उँडेलना रसिक रसाली आँसों में ।  
 नाम—( ४३१२ ) गदावरप्रसाद  
 विशारद, बत्ती, गागरी, मुँगेर ।

जन्म-काल—स० १९५९ ।

रचना-काल—स० १९८० ।

ग्रन्थ—अथशास्त्र, राजनीति का पारिभाषिक  
 विवरण—यह कायस्थ कुलोत्पन्न था, पत्र-  
 'चाँद', 'देश' तथा 'महावीर पत्रों के सहकारी ।

नाम—( ४३१३ ) गगानदसिंह ( कुमार  
 एल्० ए०, एम्० आर० ए० एस्०, श्रीनं  
 ( बिहार प्रांत ) ।

जन्म-काल—स० १९५५ ।

रचना-काल—स० १९८० ।

ग्रन्थ—इनकी लिखी हिंदी तथा अँगरेजी की  
 विरविद्यालय द्वारा प्रकाशित हुई हैं ।

विवरण—यह साहित्य-सरोज फकिरकुलचंद्र  
 सुपुत्र हैं । यह देश तथा विदेश की कई साहित्यिक  
 राजनीतिक सस्थाओं के सदस्य हैं । आप एक

उदाहरण—

सागर ! तेरे निकट बैठकर मन चिंता  
 ज्ञान-ध्यान या जो था जी में, सब  
 गुण विरोध को तेर तन में देखा ज्यों हा  
 पाया तब फिर मैंने उनको नीर क्षीर-सा

नाम—( १११८ ) नदकिशोर त्रिवारी 'निरासित', त्रिवारी-पुर ( बिहार ) ।

जन्म-काल—सं० १११७ ।

रचना-काल—लगभग सं० ११८० ।

प्रथ—( १ ) रट्टि-कुंज, ( २ ) अभिनय ।

विषय—यह 'चांद', 'महारथी' तथा 'गुधा' के सपादक रह चुके हैं ।

नाम—( १११९ ) पूर्णसिंह ( सरदार ) ।

रचना-काल—सं० ११८० ।

विषय—आपने कई उत्कृष्ट निबंधात्मक लघु कविताएँ भी आपनी आदि ही आप थे । मुन्तेई, ११८१ के लगभग आपका करीबत हो गया ।

नाम—( ११२० ) प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त', ग्राम निर्मोन, पिला शाहाबाद ।

जन्म-काल—सं० ११६९ ।

रचना-काल—सं० ११८० ।

प्रथ—स्पष्ट रचनाएँ ।

विषय—यह साहित्याचार्य पं० चंद्रशेखर शास्त्री के पुत्र हैं । आप हिंदी के प्रतिष्ठित सहाय, श्रीगरेजा तथा बँगला भी जानते हैं । इनकी रचनाएँ 'आज', 'सैनिक', 'मत्तवाला' 'चांद' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं । आजकल आप 'विद्यार्थी' का संपादन कर रहे हैं । आप मुन्तेई हैं ।

उदाहरण—

मुक्त

त्याग जिसने सारा पेरवय

बुल का ही है अपना बिया ।

लगी रही टकटकी द्वार पर आया को न मिला अजकाल,  
फिर भी आप नहीं प्राणधन, नष्ट हो गई सारी आश ।

नाम—( ४३१६ ) दुलारेलाल भार्गव, लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग स० १९१८ ।

रचना काल—लगभग स० १९७६ ।

विवरण—सपादक माधुरी तथा सुधा । सस्थापक गंगा पुस्तक-माला-कार्यालय, जहाँ से अब तक ३२० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, और अन्य प्रकाशित होती जाती ह । आप बिहारी के ढग पर अब तक लगभग २०० द हे लिख चुके हैं । हिंदी में अच्छी अच्छी पुस्तकें गंगा पुस्तकमाला में निकालकर आपने हिंदी की विशेष सेवा की है । साहित्य रचना भी परम श्रेष्ठ करते हैं, जैसा दुलारे दोहायली से प्रकट है । भारतेंदु के पीछे इनके बराबर हिंदी सेवा बहुत कम जागों से बन पड़ी है ।

नाम—( ४३१७ ) द्वारकाप्रसाद मिश्र, जबलपुर ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२८ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

आप एक बड़े ही हानहार और उत्साही लेखक तथा देश हितैषी हैं । वी० ए० और एल् एल्० बी० पास करके आप देश हितैषिता एवं राजनीतिक कामों में ऐसे सजग्न हो गए कि बकालत करने का अयसर ही न पाया । देश हित के कारण जेल भी जा चुके हैं । 'लाफमत के ज मदाता एवं संपादक रहे हैं । पहले वह साप्ताहिक रूप में निकला, और फिर दैनिक हो गया, पर आजकल बंद है । मिश्रजी जबलपुर के प्रसिद्ध रईस और देश प्रेमी सेठ गोविंददासजी के परम मित्र हैं । भारतीय व्यवस्थापक सभा ( Legislative Assembly ) के सदस्य रहे हैं ।



नाम—( ४३१८ ) नदकिशोर तिवारी 'नियसित', तिवारी पुर ( विहार )।

जन्म-काल—स० १९१७।

रचना-काल—लगभग स० १९८०।

प्रथ—( १ ) स्मृति कुत्र, ( २ ) अभिनव।

विवरण—यह 'चाँद', 'महारथी' तथा 'मुधा' के सपादक रह चुके हैं।

नाम—( ४३१९ ) पूर्णसिद्ध ( सरदार )।

रचना-काल—स० १९८०।

विवरण—आपने कई उत्कृष्ट निबंधात्मक खम्ब लिखे थे। जापान आदि हो आप थे। मुझे ई. १९८६ के लगभग आपका शरीरान्त हो गया।

नाम—( ४३२० ) प्रफुल्लचंद्र श्योमर 'मुक्त', प्राम निमेज, चिला शाहानाद।

जन्म-काल—स० १९१९।

रचना-काल—स० १९८०।

प्रथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—यह साहित्याचार्य पं० चंद्रशेखर शास्त्री के पुत्र हैं। आप हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, अँगरेजी तथा बँगला भी जानते हैं।

इनकी रचनाएँ 'आज', 'सैनिक', 'मत्तवाला' 'चाँद' आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित जाती रहती हैं। आपका आप 'विद्यार्थी' का सपादन कर रहे हैं। आप मुकवि हैं।

उदाहरण—

मुक्त

त्याग जिसने सारा पेरवय

दुःख को ही है अपना लिया।

लगी रही टकटकी द्वार पर आँगियों को न मिला अचक्रण,  
फिर भी आप नहीं प्राणधन, नष्ट हो गई सारी आश ।

नाम—( ४३१६ ) दुलारेलाल भार्गव, लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२८ ।

रचना काल—लगभग सं० १९७६ ।

विवरण—संपादक माधुरी तथा सुधा । सस्थापक गंगा पुस्तक-  
माला-कार्यालय, जहाँ से अब तक ३२० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी  
हैं, और अन्य प्रकाशित होती जाती हैं । आप बिहारी के ढग पर  
अब तक लगभग २०० दाह लिए चुके हैं । हिंदी में अच्छी-बुरी  
पुस्तकें गंगा पुस्तकमाला में निकालकर आपने हिंदी का विशेष  
सेवा की है । साहित्य रचना भी परम श्रेष्ठ करते हैं, जैसा  
दुलारे दोहावली से प्रकट है । भारतेंदु के पीछे इनके बराबर हिंदी  
सेवा बहुत कम लोगों से बन पकी है ।

नाम—( ४३१७ ) द्वारकाप्रसाद मिश्र, जबलपुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२८ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

आप एक बड़े ही हानहार और उत्साही लेखक तथा देश  
हितैषी हैं । बी० ए० और एल् एल्० बी० पास करके आप देश हित  
पिता एवं राजनीतिक कामों में ऐसे सज्जन हो गए कि वकालत करने  
का अवसर ही न पाया । देश हित के कारण जेल भी जा चुके हैं ।  
'लाकमत' के ज मदाता एवं संपादक रहे हैं । पहले वह साप्ताहिक  
रूप में निकला, और फिर दैनिक हो गया, पर आजकल बंद है ।  
मिश्रजी जबलपुर के प्रसिद्ध रईस और देश-प्रेमी सेठ गार्विदासजी  
के परम मित्र हैं । भारतीय व्यवस्थापक सभा ( Legislative  
Assembly ) के सदस्य रहे हैं ।

नाम—( ४३१८ ) नदकिशोर तिवारी 'निर्वासित', तिवारी-पुर ( बिहार ) ।

जन्म-काल—स० १९२७ ।

रचना-काल—व्यास स० १९८० ।

प्रथ—( १ ) स्मृति-कृत्र, ( २ ) अभिनय ।

विवरण—यह 'चाँद', 'महारथी' तथा 'मुधा' के सपादक रह चुके हैं ।

नाम—( ४३१९ ) पूर्णसिंह ( सरदार ) ।

रचना-काल—स० १९८० ।

विवरण—आपने कई उत्कृष्ट निबंधात्मक लेख लिखे थे । जापान आदि हो आए थे । मुन्ते हैं, १९८३ के लगभग आपका शरीर तो हो गया ।

नाम—( ४३२० ) प्रफुल्लचंद्र श्रीमन् 'मुक्त', माम निमैज, जिला शाहाबाद ।

जन्म काल—स० १९६६ ।

रचना-काल—स० १९८० ।

प्रथ—स्फुट रचनाएँ ।

विवरण—यह साहित्याचार्य पं० चंद्रशेखर शर्मा के पुत्र हैं । आप हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, अँगरेजी तथा बँगला भी जानते हैं । इनकी रचनाएँ 'आज', 'सैनिक', 'मतवाला' 'चाँद' आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं । आजकल आप 'विद्यार्थी' का सपादन कर रहे हैं । आप मुकवि हैं ।

उदाहरण—

मुक्तः

त्याग जिसने सारा पेरवय

दुःख को ही है अपना लिया ।



द्वय—

द्वानिधि कर भारत कल्याण ।

। क्रोध मद मान हटाकर, लोभ मोह धूल रूप भगाकर,

ह-निशातम घोर मिथ्याकर धमका दो रवि शान ॥ दया० ॥

।-कर्म-अमण्डल धरें हम, दश क्लेश सर्वत्र हरें हम,

।-दारिद्र्य सघ दूर करें हम, होव पुनस्तथान ॥ दया० ॥

। तत्रदवि का राज गहाँ हो, इन्द्रभुवन मुख-साज यहाँ हो,

। विरय गुरु सरताज यहाँ हो, बड़े देश का मान ॥ दया० ॥

। धीणा की भँकार मधुर वह, कृप्यचम का प्रेमराग वह,

। फैल जाय भगवत, धर धर वह सरस पृथ्वा तान ॥ दया० ॥

नाम—( ४३२७ ) भगीरथप्रसाद दोक्षित ( साहित्यरत्न ),

। लखनऊ ।

। जन्म-काल—स० १८२१ ( यटखर के निकट पई, जिला भागता ) ।

। रचना-काल—स० १८८० ।

। रचना—स्फुट गद्य लंका तथा पत्र-संपादन । एक काव्य भी बनाया है ।

। विवरण—आप बहुत दूढ़-भोज करके लेख लिखते हैं । काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से हिंदी लिखित पुस्तकों की न्योज में काम करते रहें । आजकल अध्यापक तथा पत्रकार हैं । सम्बलन-पत्रिका तथा अधध-समाचार के संपादक रह चुके हैं ।

। नाम—( ४३२८ ) माखनलाल चतुर्वेदी ( मध्यप्रात निवासी ) ।

। कविता-काल—स० १८८० ।

। प्रथ—स्फुट छंद तथा पत्र-संपादन ।

। विवरण—आप कमपीर के संपादक हैं । आपके साहित्यिक महत्त्व के विषय में कतिपय महाशया की सम्मति उँची है । आप एक सुकवि और सुलेखक हैं ।

गढ़ में भारी मेला और कवि-सम्मेलन हाता है। इस अवसर पर स्वयं श्रीमान् नभाप्रति का आसन ग्रहण करते हैं, तथा श्रीमती महेंद्र महारानी-देवी भी परदे की छाड़ से उपस्थित रहती हैं। सं० १११० में काशी में पधारकर श्रीमान् ने २०००) चार्पिठ का एक पारितोषिक धन भाषा की सर्वोत्तम कविता के लिये स्थापित किया है। हिंदी कविता तथा भाषा पर श्रीमान् का अगाध प्रेम है। स्वयं भी अच्छा काव्य लिखते हैं, तथा कविता में विशेष योध रखते हैं। श्रीमान् के एक मुपुत्र तथा तीन भाई हैं। इन (श्यामविहारी मिश्र) सं० ११८० तथा ११८८ में श्रीमान् के जीवन रियासत रहे, और सन् ११८६ में प्रधान मंत्री (chief adviser) हैं।

नाम—( ४३३६ ) सुशीलादेवी, मु गेर ।

ग्रन्थ—स्फुट कविता ।

विवरण—यह धीयुत काशीप्रसाद जायसवाल बैरिस्टर, पटना की ज्येष्ठा पुत्री हैं। इनका स्वश्वसुराज्य मुगेर में है। इनकी कविता प्रायः भक्ति भाव की हुआ करती है। नीचे उद्धृत इनकी कविता देहरादून-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर पढ़ी गई थी, और इस उपलक्ष में उन्हें एक स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया था।

उदाहरण—

विरव प्रगति के गायक बंधो, नित्य नया है तेरा गान,  
तरल तरंगों की तानों पर धिरक रही है जिसकी तान।  
मेघ-भृदग, नदी-नद-नूपुर, वात नाद धीप्पा कर धार,  
सुंदर साज सजाकर नटवर, बंद किया चेतन का द्वार।  
सात सरो के सुख सागर पर तैर रहा सारा ससार,  
शांत मुग्ध उस नील लता में उठता है मानस-उद्गार।  
आदि काल से तू गाता है, मुझको भी थब गाने दे,  
ये रागी ! ये चतुर गवैष् ! लय में लय मिल जाने दे।

नाम—( ४३३० ) शिवदुलारे त्रिपाठी ( उपनाम नूतन )  
गौराघाँ, जिला उन्नाव ।

जन्म-काल—स० १९४९ ।

रचना-काल—स० १९८० ।

प्रथ—( १ ) नूतन विलास, ( २ ) छात्र शिक्षा, ( ३ ) दगाएक,  
( ४ ) रहस्य रहस्य ( बन रहा है ), ( ५ ) रुक्मिणी हरण  
( बन रहा है ) ।

विवरण—परमोत्कृष्ट वीर काव्य लिखते हैं । हमारे मित्रनेवालों  
में हैं ।

उदाहरण—

वारी प्यारी लेखनी, दुलारी कविराजन की  
तो मैं जोर जौहर जमाल है, महत्ता है ;  
छूरी श्री कठारी कारी मद हैं बिचारी सारी  
तेरे आगे कुठित कृपान, कुद कत्ता है ।  
नूतन जू सतत समस्त महिमडल मैं  
भ्यापि रही अगम अपार तेरो सत्ता है,  
राजा-महाराजा उमरावन की चालै कौन,  
ताम्रत विहारी देखि चम्कित चकत्ता है ।

नाम—( ४३३८ ) सूर्य वर्मा ( वी० ए० ) ।

जन्म काल—स० १९६१ ।

रचना-काल—स० १९८० ।

प्रथ—सुबोध रामायण, धनुसत्यक निबंध तथा समालोचनाएँ ।

विवरण—सस्वर्ती के पुत्राने लेखक हैं । इनके पिता वा०  
रुद्रनाथरायण सलठीआ, जिला बस्ती निवासी, सरकारी स्कूलों के  
अध्यापक तथा हिंदी लेखक एवं बंगला के अनुवादक हैं । इनकी  
कई पुस्तकें स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं ।

नाम—( ४३३६ ) हरिभाऊ उपाध्याय । उज्जैन जिले के भौरासा-नामक ग्राम में उत्पन्न हुए । पिता का नाम प० सिद्धनाथजी है ।

जन्म-काल—सं० १३२२ ।

रचना-काल—सं० १६८० ।

ग्रंथ—कई पत्रा के संपादक रहे हैं ।

विवरण—आप बहुत दिन तक 'सरस्वता' में काम करते रहे । पीछे 'प्रभा', 'हिंदी नवजीवन', 'मालवमयूर', सस्ता साहित्य मंडल में काम किया, तथा त्यागभूमि का संपादन करते रहे । उद्यत देग प्रेम-वश कई बार बेल-यात्रा भी कर चुके हैं । कविता भी नवीन भाव पूण थच्छी करते हैं, तथा बड़े उत्साहो सज्जन ह ।

उदाहरण—

कहाँ से लाऊँ चोखे फूल ?

भौरों ने जूठे कर ढाले रहे न तब अनुकूल ;  
तेर भरू फूल चुन लाते पाते मगल मूल ।  
पर मैं जब-जब जाता हूँ, कटि ले आता भूख ,  
काँटों का यह याग लगाया, काँटा के ये फूल ।  
अर्पण हूँ तेरे चरणों में तीखे तीखे फूल ;  
कहाँ से लाऊँ चोखे फूल ?

ज्ञान खानि का रस नहीं हूँ और न काव्य-कला गुबद ;  
मैं तो कोरा क्षार सिंधु के जल का इलका-सा उरुद ।  
ग्रंथ नहीं, जो ब्यया-कथा को जग के उर में लिख पाऊँ  
सुझाफूल हूँ नहीं, स्वर्ग मु दरिया में आदर पाऊँ ।  
मैं तो खारे जल का बुद्बुद रीता आता जाता हूँ ।  
खाजी जग में आकर क्षण भर सुने में खय पाता हूँ ।

नाम—( ४३२० ) हेमचंद्र जोशी ( बी० ए० ) ।



विवरण—आप अहमोदा जिला निवासी प्रतिभाशाली नवयुवक लेखक हैं। अपनी देश-भाषा से आपको वास्तविकता से ही प्रेम रहा है। स्फुट लेखों के रूप में इनकी हिंदी-साहित्य-सेवा, मुख्यतः स० १२८० म मारम होकर, आज तक अविरत होती चली आ रही है। अपनी उच्च शिक्षा समाप्त करने पर बहुत दिनों तक आपने 'सत्ययुग', 'दैनिक भारतमित्र', 'कलकत्ता-समाचार' आदि पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया। 'वृत्त-कसरी' के आप जन्मदाता हैं। कुछ काल तक यह महाराजा यस्तर के निम्न अध्याप्य रहे थे, किंतु कटर देश-भ्रम होने के कारण इन्होंने नौकरी छोड़ दी, और यह देश-सेवा में सबलग्न हो गए। धीरोगिक शिक्षा प्राप्त करने के हेतु इस समय आप योरप में हैं, और पढ़ाई से छेप आदि बिलम्ब बराबर हिंदी-साहित्य की सेवा कर रहे हैं।

समय—संवत् १६८१

नाम—( ४३४१ ) कालीप्रसाद त्रिपाठी ( श्रीर ) चिलौली, जिला उन्नाव।

जन्म-काल—स० १६२६।

रचना-काल—स० १६८१।

ग्रंथ—( १ ) सुधाधर ( नाटक ), ( २ ) धन्योक्ति शतक, ( ३ ) दिखी-वतन, ( ४ ) जीहर, ( ५ ) कौमुदी भाष्य, ( ६ ) सुधन्वा-वध, ( ७ ) दोहावला भाष्य, ( ८ ) गंगा-खहरी पद्यानुवाद।

विवरण—आप प० कालीकुमार के पुत्र तथा प० रामकिंकरजी के पौत्र हैं। आपका घराना सदा से संस्कृत के उच्च विद्वानों से अलङ्कृत रहा है, और इन्होंने स्वयं संस्कृत की उच्च परीक्षाएँ उचीर्ण की हैं। ऊपर लिखे हुए ग्रंथों के अतिरिक्त इन्होंने संस्कृत में लगभग २०० श्लोकों का 'वैद्य भूषणम्' नामक ग्रंथ बनाया है। इस समय 'धर्मन-वध'-नामक एक काव्य ग्रंथ लिख रहे हैं।

उदाहरण—

पिल्लया कैसा माया-जाल ।

फँसकर जिसमे छुट्टी पाना अतिशय कठिन प्रिकाल ।  
 सूर्यपात से हा इसके कुछ शक्ति था मैं बाल ;  
 किंतु देखकर विश्व-म्यापिनी विभुता हूँ बेहाल ।  
 छोटे - बड़े, पढ़े - अनपढ़, सत - असत, रक - भूपाज ;  
 एक तनु भी तोड़ न पाण, अमित गण सब हाल ।  
 करते घृणा जाननेवाले इसकी कुटिला घाल ;  
 पर अज्ञानी उनसे रन्वते द्वेष महा विकराल ।  
 रग्नु विशाल ब्याल-सा इमका हृदय रहा है साल ;  
 'ध्रीकर' वही मुक्त हो सकता, जिस पर इश दयाल ।

नाम—( ४३४२ ) न० किशोरलाल किशोर' ग्राम छतनेरवर,  
 जिला दरभंगा ।

जन्म-काल—स० १६५८ ।

रचना-काल—सं० १६८१

प्रथ—( १ ) कुसुम-कलिका, ( २ ) महात्मा विदुर ( नाटक ),  
 ( ३ ) बाल-बोध रामायण, ( ४ ) आरोग्य और उसके साधन,  
 ( ५ ) मुक्ति-धारा ।

विवरण—आप कय कायस्थ हैं । आपके पिता का नाम मुशी  
 मनमाहनजाल है । हिंदी, उर्दू, फारसी, संस्कृत के अतिरिक्त  
 आपने बंगला भाषा का भी अच्छा अध्ययन किया है । स० १६८१  
 में आपने मैथिली-नामक अपनी स्वतंत्र पत्रिका निकाली । अब  
 आप समस्तीपुर में मुद्रतारगिरी करते हैं । आपको रचनाओं चक्रवर्ती,  
 त्रिश्वमोहन, डोम पुष्प तरण भारत, मिथिला मिहिर आदि पत्र-  
 पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं । आप मुकदि हैं ।

उदाहरण—

अली कली न फँसा प्रेम से भक्त बना है ;  
रस के वश मैं आज पदा मुधि भूल रहा है ।  
रवि अस्ताचल घला भला अब भी तो चेतो ,  
अरे त्रिया को धूम धूम थपना पथ ले तो ।  
पीढ़े अपने शाय को, मल करके रह जायगा ;  
कमल कली मुँद जायगी, निशि-नर नीर यहायगा ।

नाम—( १२४३ ) मधुसूदन श्रीमा 'स्वतंत्र', महिला, इटाडी  
( आरा ) ।

जन्म-काल—स० १९२१ ।

रचना-काल—स० १९२१ ।

ग्रन्थ—( १ ) कल-बध, ( २ ) धर्मवीर, ( ३ ) मोरप्यज,  
( ४ ) समाज दर्पण ( अग्रकाशित ) ।

विवरण—आप पं० जगन्नाथ श्रीमा के पुत्र हैं । आपकी कवि-  
ताप ( राष्ट्रीय ) प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में निकला करती हैं ।

उदाहरण—

आगे कैमे उड़ूँ, सुमता नही भवानक पथ है आज ;  
पीछे हटना नहीं जानता, रव्य लो भगवान मेरी लाज ।  
आशा तप विग्यास धैर्य है भक्ति पथ के प्रसुखाधार ;  
यदता हूँ नहि किंचित् कर है तुम पर मेरा रक्षा भार ।  
मन, बच, कम भाव से सत्र दिन रहूँ धर्म-पालन में लीन ;  
तप से कभी न विचलित होऊँ, कभी न हो मम साहस हीन ।  
मर जाऊँ यदि सत्य धर्म दित, यही रहे दिल में अरमान ;  
अखिल विश्व दित जन्म अनेकों धारण हों मेरे भगवान ।  
हृदय भक्ति नहि, भाव शुद्ध है, सद प्रकर से हूँ अति दीन ;  
इतना बल दे नाथ, हृदय में यही कामना लगी नवीन ।

नाम—( ४३४४ ) सूर्यान्तर्धर्मा, मेघवन, दरभंगा ।

जन्म-काल—स० १९६१ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९८१ ।

ग्रन्थ—( १ ) सेवाधर्म ( उपन्यास ), ( २ ) आत्मसुधार, ( ३ ) आदेश विद्यार्थी, ( ४ ) कृतज्ञ वधु, ( ५ ) हिंदू धर्म का स्वरूप, ( ६ ) नरेंद्र मठ, ( ७ ) नर पिशाच माधव, ( ८ ) सशक्तता का साधन, ( ९ ) ससार प्रवेश तथा व्यावहारिक ज्ञान, ( १० ) स्वप्न साम्राज्य आदि ।

विवरण—आप कायस्थ हैं । ग्रन्थ आपने अच्छे विषयों पर लिखे हैं ।

समय—सन् १९८२

नाम—( ४३४५ ) अनूप शर्मा एम० ए०, एल्-टी० ।

जन्म-काल—स० १९२७ वि० । पिता का नाम प० बदरीप्रसाद, त्रिपाठी ।

स्थान—नयीनगर ( सीतापुर ) ।

वर्तमान पता—हेडमास्टर, खैराबाद ।

कविता काल—स० १९८२ से ।

विवरण—कविता वीर रस प्रधान । काव्य-गुरु प० गयाप्रसाद शुक्ल 'मनेही' । सरस्वती, माधुरी आदि पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित होती रहती हैं । पुस्तकें ( १ ) प्रकाशित—सुनाल काव्य और अप्रकाशित—सिद्धाथ-चरित्र । वीर-काव्य अच्छा रचा है ।

उदाहरण—

नाम रतनाकर यथार्थ परयो है यार्तें  
चौदही रतन धारे सोहते रहत है,  
तरज तरगनि उर्मगनि के लगनि सों  
विरवमोहिनी को मन मोहते रहत है ।

निखिल नदी-नद को निपुन निधान एके  
 मोहित के रुदनि विपोहतै रहत है,  
 पेशो कु भजात । एतो पारिधि बढयो तो क्वा  
 रावरी कृपा की कोर जोहतै रहत है ।  
 मगन गगन है तुम्हारी भजनावली में  
 कोकिल फरोत रीर के समान कृपा को,  
 भिमद बजे ई घने घट मनराज के ये  
 सुनियत सानी न तिलोक म कहुँ जाको ।  
 दाही निशि-यासर से भाज दीप रूप लैके  
 चाँदनी की धारती लै भोग कद कृपा को,  
 क्याइए न नेत्री धार खोलिष दया के द्वार,  
 महति पुजारिनी सही है नाथ पूजा को ।

धावने क्या न पडावती द्वार थकी मग जाय घडी घडी श्राँव ।  
 क्यों न पियै अभिनदन काज पिरोवती मोतिन की लक्षी श्राँव ।  
 क्यों न सँघारती री मकरद, धरी धरविद की पम्बरी श्राँव ;  
 रातों क्यों न करोलन री वै घड़े-बड़ रूँद मदी मदी श्राँव ।

नाम—( ४३४६ ) श्रयधर्कशोरसहाय जमा 'चाण', ग्राम  
 कचनपुर, जिला गया ।

जन्म-काल—स० १३२० ।

ग्रन्थ—दशन और शिक्षा निपयक स्फुट लेख ।

विवरण—आपने अपनी उच्च शिक्षा काशी विश्वविद्यालय में  
 प्राप्त की, और वहीं से इन्होंने पी० ए० तथा एम्० ए० की उपाधियाँ  
 लीं । तर्कशास्त्र पर भी आपन परिश्रम किया है । इस समय  
 आप राँची ट्रेनिंग कॉलेज में हिंदी-साहित्य के अध्यापक हैं, और  
 'चित्तौरीद्वार नामक छद्मनाम काय लिलन में व्यस्त हैं । सामयिक  
 मासिक पत्रिकाओं में समय-समय पर आपके लेख निकला करते हैं ।

नाम—( ४३४७ ) उमाशंकर वाजपेयी ( एम० ए०, उमेश ) ।

जन्म-काल—माघ कृष्ण २, सवत् १९६४ । लखनऊ में ।

पिता का नाम प० शंभाराम वाजपेयी ।

विवरण—एक बार हिंदोस्तानी एकेडेमी से आपको १००) का पुरस्कार अच्छी रचना पर मिला । हम लोग का आप अपनी रचना सुनाया करते हैं । आप एक सुकवि और होनहार लेखक हैं । सुचक्रुद चरित्र खंड का य प्राय १०० पृष्ठा का रचा जो अमकशित है ।

उदाहरण—

चाहत न रिद्धि सिद्धि सपत्ति तुनी की नाथ,  
 चाहत न रूप धनु कीरति सुहारनी ।  
 चाहत न राज के समाज सुख साज बहु,  
 चाहत न दिव्य वस्त्र भूपन प्रभा घनी ।  
 चाहत न चिंतामनि मडित मुकुतधाम,  
 चाहत न नाग वाजि बाहन महा बन्धी ।  
 चाहत 'उमेश' एक लाडिली के पयिन की  
 तृदावन कुज की पुनीत रज की कनी ।  
 हिमालय के प्रति  
 उडु-उडु त्पागु आउ थिरता हिमचल तू,  
 मेरी हाँक सुनि क्यों न ऊपर उछरतो ;  
 मौन बनि बैज्यों, तोहिं लाज हू न थावै मूढ़,  
 कैमे निज गौरव को हाय ! तू बिमरतो ।  
 सुकवि 'उमेश' बोलि लेतो क्या न बधुन को,  
 क्यों न बड़ि बैरिन पै बज्रपात करतो ;  
 दखि देति दीनन की दारन दसा को थाउ  
 कुटिल कुचालिन पै टूटि क्या न परतो ।

कौन निज नाम रूप गुण से अज्ञान तुम,  
 इस अरुणी के अनमोल आभरण से,  
 देवदूत से हो कहो कौन छुतिमान तुम,  
 मोती से सरस शुचि मेघ वारि-क्षण से ।  
 वारिधि में वीचि के प्रथम खास से हो तुम,  
 कौन लघु जीवन के एक स्वर्ण क्षण से ;  
 उतरे न जाने ऊ न जाने किस लोक से हो,  
 शिशु तुम कौन नवशशि की किरण से ।  
 प्रेम मसि अकित तुम्हारी मनु मूर्ति वह  
 मिटती कभी न मृदु मानस-दुष्कूल से ;  
 जन मन भाईं शुभ सहज सुनाईं लल,

अति भयदाइ दुख जाते सब भूल-से ।  
 चद्रकातनयि से भी शीतल स्वभाव के हो,  
 काति में मदन से कि शाति सुख मूल से ;  
 मधु शत्रुवाली हरियाली में सुहृद तुम  
 कौन निज ढाली म रहे हो फूलि फूल से ।

नाम—( १३४८ ) कौशलेन्द्र राठौर, डालूपुर, फर्रुखाबाद ।

जन्म-काल—सं० १३५० ।

मृत्यु-काल—सं० १३८० में अग्नि प्रकोप से मृत्यु ।

विवरण—आप खूबसिंहजी राठौर के पुत्र थे । आपने काव्य-  
 शास्त्र का अध्ययन किया । हिंदी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, अंगरेजी  
 आदि भाषाओं का आपको अभ्यास था । कविता अच्छी रचते थे ।

उदाहरण—

सदाय बढ़ हो है सदायता तुम्हारी गेय,  
 झोबते न आन अपनी हो किसी हाल में ;

रखते अग्ल अनुराग हो सभी के प्रति  
 बांध रखला बैरियों को भी है प्रेम जाल में ।  
 कौशलेंद्र कृशता तुम्हारी ही शरण लेती,  
 खोन्ती तुम्हीं को है दरिद्रता दुकाल न ;  
 शांति पाती है तुम्हारी छाया में निदाघ धूप,  
 शीत छपता है मुट्टियों में शीत काल में ।

उनपै अचना मन वारिए ना, जो सनेह की जानत रीति नहीं,  
 बहै नेह नण नित जागे नणन सो है तहें की कजु धीति नहीं,  
 छुल्ल स्वारथ को है लगाव जुरो, यह प्रेम छौ नेम की नीति नहीं,  
 ठनसों हित कीहें फडा फल है, जिनके हित की परतीति नहीं ।

नाम—( ४३४६ ) चंद्रमाराय शर्मा विशारद ।

जन्म काल—स० १९२७ ।

रचना काल—स० १९८२ ।

ग्रन्थ—( १ ) धारा प्रकाशिका, ( २ ) नलोदय, ( ३ ) भारत  
 भारत, ( ४ ) त्रिपथगा, ( ५ ) गद्य - गमक, ( ६ ) पचगम्य,  
 ( ७ ) पिंगल प्रबोध, ( ८ ) सतसह टीका, ( ९ ) रामचंद्रिका  
 टीका, ( १० ) विचार मीमासा, ( ११ ) हिंदी निरुद्ध व्याकरण,  
 ( १२ ) विवेक-बोध, ( १३ ) व्याकरण बोध ।

विवरण—आप दामादरपुर, जिला बलिया निवासी पंडित  
 रामप्रतापराय के पुत्र तथा हिंदी के उत्साही लेखक हैं ।

नाम—( ४३२० ) जगन्नाथ मिश्र गौड़ 'कमल' वाकरगज  
 ( पटना ) ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२७ ।

कविता काल—लगभग स० १९८२ ।

विवरण—आप स्वर्गी चोर्ली के मुकवि हैं ।



उदाहरण—

जगत में सबका नियमित नाश ।  
 उषा का पश्चिम शृकुटि विलास,  
 निशा का किंचित् मञ्जुल हास,  
 छाया का यह सुंदर शृगार,  
 प्रकृति का है स्वच्छद विहार ।  
 अरण्य-मंडल का रजत प्रकाश,  
 गगन-मंडल का पुष्पित वास ।  
 धराधों का यह अद्भुत मंत्र,  
 प्रकृति का है क्षण भंगुर खेळ ।  
 कुसुम-कलियों की मृदु मुसकान,  
 हरित घिटपा की छत्रि अम्लान,  
 ललित लतिका कुसुमित हुम वृक्ष,  
 घटकना कलिका का स्वच्छद ।  
 सभा में है सौंदर्य - विकास,  
 सभी का होता तौ भी हास ।  
 क्षणिक है जीवन स्वप्न विकास,  
 जगत में सबका नियमित नाश ।

नाम—( ४३५१ ) भुवनेश्वरसिंह 'भुवन', ग्राम आनदपुर,  
 जिला दरभंगा ।

जन्म-काल—खगभग सं० ११९३ ।

रचना-काल—सं० ११८२ ।

ग्रंथ—स्पृष्ट रचनाएँ ।

विवरण—श्याम महाराजा दरभंगा के वंशज हैं । इनके प्रपितामह  
 और चतुर्मान महाराजा साहय दरभंगा के पिता सदादर भ्राता थे ।  
 श्याम मैथिल माझय सं० मदनेश्वरसिंह के पुत्र हैं । इन्होंने सं०

१९८२ से पत्र पत्रिकाओं में लेख लिखना प्रारंभ किया। इनके लेख सरल गद्य अथवा पद्य के अतिरिक्त समालोचनात्मक भी हुआ करते हैं। आपके और दो भाई हैं, और ये तीनों मिलकर 'सिंह-बधु' के नाम से लेखन-काय किया करते हैं। अपने पूज्य पिता की स्मृति में आपने मुजफ्फरपुर से 'लेखमाला'-नामक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका अपने ही संपादकत्व में निकाली है। आप खड़ी बोली में अच्छी रचना करते हैं।

उदाहरण—

छलछल छलक रहा है तेरे जीवन-मदिरा का प्याला,  
किस विपाद में किंतु कमल मुग्न था हुआ है यों फाला।  
सरल हृदय में दुःख देने को थाह ! गरल ने किया निवास,  
मज्जु भाषिणी ! मृदुल हँसी के बदने यह कैसा निवास।  
विरह विधुर यह अधर दुःख की झलक दिखाई देते हैं,  
नयन कोण में छिपे अध-रूप हृदय सुरा ही लेते हैं।

नाम—( ४३५२ ) भैरवगिरि गोस्वामी ग्राम कुमना, जिला सारन ( बिहार प्रांत )।

जन्म-काल—स० १९२७ ( ७ मार्च, सन् १९०० )।

रचना काल—स० १९८२।

ग्रंथ—मार्ति विजय ( रत्न काव्य )।

विवरण—आप संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् पं० दुर्यासा अग्रि विद्याराजस्वामि के पुत्र हैं। आपने १९७३ में 'काव्यतीर्थ' और १९७६ में 'साख्यतीर्थ' परीक्षाएँ पास कीं। तथा कुछ काल पर्यंत 'मित्रम्'-नामक संस्कृत-पत्रिका के संपादकत्व विभाग में काम किया। आपकी कुछ रचनाएँ 'माधुरी' और 'आयुर्वेद प्रदीप' में प्रकट हुई हैं। इस समय आप मुजफ्फरपुर में एक स्कूल के संस्कृत-अध्यापक हैं।

उदाहरण—

तम स्योम व्यापी तव तक निरा का ठहरता,  
दिशापूँ दीक्षात्मा जब तक न तिग्माशु करता ।  
प्रयत्नोत्साहों की पवन यदि होव भटकती,  
घटा चिंताघ्रा की हृदय नभ में तो न टिकती ।

लखी थी वैदेही कुशल कपि ने यद्यपि नहीं,  
उहँ भासा तो नी दग निरुट हों ज्यों वह कहीं ।  
छिपी भावी बातें हृदय दिम्बजाता विशद है,  
क्रिया में उत्साही निपुण जब होता निरत है ।

प्रणम्या का यों हो प्लवगवर ने ध्यान धरके,  
तजा प्रार्थीरा को उच्छल तनु सकोच करके ।  
बनी की दीवालों पे वह महावीर ठहरे,  
जहाँ शोभा दते बहुविधि लगे पादप हरे ।

नाम—(४३५३) मनोरजनप्रसाद एम्० ए०, ग्राम सूर्यपुरा,  
जिला शाहाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९५० ।

रचना काल—सं० १९८२ ।

ग्रन्थ—'राष्ट्रीय मुरली' (राष्ट्रीय कवितार्थों का एक संग्रह) ।

विवरण—आप बाबू राजेश्वरप्रसाद सबनज के सुपुत्र हैं ।  
अब आपने हुमराँव को ही अपना निवास-स्थान बना लिया है ।  
आपने अपनी प्रखर प्रतिभा से अपने छात्र-जीवन ही में विशेष कीर्ति  
प्राप्त कर ली थी । पी० ए० की परीक्षा में हिंदी और अंगरेजी-  
साहित्य लेकर आप सर्वप्रथम होकर उत्तीर्ण हुए । आपकी हिंदी-  
परीक्षा लेने में हम रायबहादुर श्यामविहारी मिश्र ) ने आपके  
उत्तर पत्र से विशेष संतुष्ट एवं प्रसन्न होकर आपको एक प्रशंसा पत्र  
दिया । 'फिरगिया' नामक प्रसिद्ध गीत के आप ही रचयिता हैं ।

आपकी कविताएँ 'शिक्षा', 'साहित्य पत्रिका' ( आरा ), 'पाठलिपुत्र'-  
'मताप', 'नयाँरा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में निकल चुकी हैं ।

उदाहरण—

इस सुभग उद्यान में जिस शान से  
आज तू फुली हुई है माजती ;  
चचरीकों पर तथा नरवृक्ष पर,  
माधुरी अपनी सर्भी पर दाजती ।  
मुग्ध भौरा है तुझे अबलोरु कर,  
पास तेरे मनभनाता बार - बार ,  
तरे ही गहने पहनकर पोडशी  
कर रही हैं सोलहो अपना श्रृंगार ।  
माजती यह मोहनी तब गध हे,  
रग भी तेरा है चटकीजा बदा ;  
जात होता ह मनो इस बाग में  
हो पदा यक शुभ्र मोती का घडा ।  
बाद रख पर माजती यह दिन सदा  
एक-सा रहता नहीं ससार में ,  
आज सुख का जिस जगह डेरा पदा,  
दुख होगा कल उसी आगार में ।  
आज तू फुली हुई है शान से,  
है सुरभि चारो तरफ फैला रही ।  
कल वही मैं देख लूँगा बाग में  
धूमती है तू पड़ी रहकर मही ।  
जो भ्रमर था देख तुझे गूँजता,  
भूल भी तुफके प्योगा वही ;

जो पवन पक्षा तुम्हें है भल रहा,  
 देखना कल पूछ भोंबेगा वही ।  
 रंग चटकीला तेरा मिट जायगा,  
 और माखी भी न पूछेंगे तुम्हें ;  
 ज्ञात मारेंगे तुम्हें तब हाथ सप,  
 यह धरा ही बस शरण देगी तुम्हें ।  
 ना धरा को गोद में रहकर पड़ी,  
 माखती हरदम कहेगी तू यही—  
 देख जो लोगो ! जरा फैला नज़र,  
 एक-सा दिन है सदा रहता नहीं ।

नाम—( ४३२४ ) रामकुमार वर्मा ( कायस्थ ), प्रयाग ।

जन्म-काल—स० १९६२ ।

रचना-काल—स० १९८२ ।

अर्थ—साहित्य-समाजोचना तथा कबीर का रहस्यवाद ।

विवरण—यूनियर लेक्चरर हिंदी, इलाहाबाद विरघविद्यालय ।

नाम—( ४३२५ ) रामवचन द्विवेदी 'अरविंद', ग्राम दुधौली,

जिला शाहजानाद ।

जन्म-काल—स० १९६३ ।

मृत्यु-काल—स० १९८६ ।

ग्रंथ—( १ ) वर्षे वृथा, ( २ ) हिंदी सदेश, ( ३ ) विनम,  
 ( ४ ) धीरों की वाणी, ( ५ ) श्रीकृष्ण-सदेश आदि ।

विवरण—आप स० रामधनत द्विवेदी के पुत्र तथा सरयूपारीय  
 व्याख्यान थे । इनकी रचनाएँ मुख्यतः धीर-रस पर हैं । आप एक  
 सुकवि थे ।

उदाहरण—

### वीरों का कढ़ा

होते हैं विद्रोह आन हम थे जो योगी ;  
भूमि विपक्षी विशिख वृद्ध से मदित होगी ।  
उल्लू श्वान शृगाल लास पर खुर लबेंगे ;  
काक चील श्री गाध खाल को खींच धरेंगे ।  
जाते हैं रणभूमि में, शत्रु सैन्य धहरायेंगे ;  
'एक लिंग जय' बोलकर, शोषित नदी बहायेंगे ।  
विपुल वीरता शीघ्र धीरता मन धर लेंगे,  
त्याग निरुता शीघ्र आज्ञामय उर कर लेंगे ।  
देंगे बाण कराल धनुष टकार करेंगे ;  
लखकर रुधिर प्रवाह न पीछे पैर धरेंगे ।  
जाकर हम रणभेद्य म, चढी नृत्य कराएँगे ;  
'एक लिंग जय' बोलकर शोषित नदी बहाएँगे ।

नाम—(१११६) वैद्यनाथ मिश्र 'विह्वल', हुसेनगज, लखनऊ।

जन्म काल—सं० १९२२ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९२२ ।

प्रथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप कायकुञ्ज ब्राह्मण प० गगनसादजी मिश्र के पुत्र तथा यमतावरखेरा ( जिला रायबरेली ) के निवासी हैं । अब आपका स्थायी रूप से रहना लखनऊ में होता है । आप हिंदी तथा उर्दू दोनों में अच्छी कविता करते हैं ।

उदाहरण—

छैलवा छमीले की छयन छवि छीनी छाप ,  
छहरि रही है छतियन में छमीली के ;

धर्म-वादीनी में चाह चमकि रहे हैं चल  
 चतुर चित्ते चित्र चाहक सुदीप्ती के ।  
 रास ह' रचाइ रग भूमि में रसिकराज,  
 रग रूप हैंगि रहे 'पिङ्गल' हैंगीली के ।  
 अजब की कोठरी में केसहु कहुँ ते जाय,  
 आठव कठिन धिनु कालिल कटोली के । (माधुरी)

नाम—( १३२७ ) त्रिगुणनाथसिंह, 'सरोज' विसर्वा,  
 जिला सीतापुर ।

जन्म-काल—सं० १९२७ ।

रचना-काल—सं० १९८२ ।

प्रथ—राधा विनय-पचीसी ( अमकाशित ) ।

विवरण—आप टाकुर गंगाधरसिंह, ताकुरद्वार रामपुर कर्ना

विसर्वा के तृतीय पुत्र श्रीवास्तव कायस्थ हैं । इन्होंने ताकुरद्वार-  
 स्कूल, लखनऊ तथा ला मार्टोनीयर-कॉलेज में शिक्षा पाई है । प्रजभाषा  
 के यह केवल अनन्य भक्त ही नहीं, धरत खड़ी योली में काम्य-  
 रचना के प्रकट रूप से विरोधी हैं । रचना ऊँची धोषी की  
 करते हैं ।

उदाहरण—

अमल अकास भयो खजन लखान लागे,  
 फूले इदीवर भीर भौर गुजरन की ।  
 धारि लिर छत्र चद रिहँसत मद मद,

धामा त्यों अमद छवि याही उडुगन की ।

बहत 'सरोज' सौंधी परिमल सनी पौन,  
 स्वप्न सरितान सों है जोषी सारसन की ।

प्रकृति बधाई मानो जगत को देन आई,  
 सुखद सोहाई श्रुतु शरद है मन की ।

उदाहरण—

मैं हूँ तेरा अनुचर प्रभो, मोह अज्ञान-प्रस्त,  
 संसारों की प्रगति जख हूँ निय उद्गाद प्रस्त ।  
 उवागी हूँ, तदपि रहता सर्वदा रिक्त हस्त,  
 मुद्रा - मुद्रा जपन करता त्याग स्वामी प्रशस्त ।  
 नाना रोग प्रसित रहता, खाजसा वृद्धि पाती,  
 चिंता म है निशि दिन प्रभो, विश्व नाया डुबाती ;  
 आशा से है यदपि मन को धैर्य होता सदा ही,  
 पर हाती है विफल जय, तो दुःख होता बड़ा ही ।  
 यों ही मेरा प्रतिदिवस है यय ही चीत जाता,  
 है कोई ना कलित मुझसे कार्य हाने न पाता ,  
 अज्ञानी हूँ, दम दिसि प्रभो, दोखता है धँधेरा,  
 अतयामा, बस अधिक्त क्या, ज्ञात ही हाज मेरा ।  
 आके नाँका भय जलधि के मध्य में डूबती है,  
 कैमे जाऊँ मुतट पर कैवत तो जा पता है ;  
 रक्खो जीता अतज जब में, या मुझे दो हुमा ही,  
 मैं तो तेरी शरण अब हूँ हो कृपा या कृपाही ।

नाम—( ४३८३ ) लक्ष्मीनारायण गुप्त 'अमौलिक'  
 जालौनवाले ।

जन्म-काळ—स० १३६३ ।

रचना-काळ—स० १३८६ ।

विवरण—पिता रामचंद्र अमवाल । सपन्न घर के पुरुष । आप  
 धरै ही उत्साही तथा होनहार खेत्तक हैं । अमौलिकजी खड़ी बोली  
 के मुकवि तथा श्रेष्ठ समाजोचक हैं । आपने कई ग्रंथ आप्ते आप्ते  
 लिखे हैं, जो शीघ्र ही पूरे होंगे, ऐसी आशा है ।



उदाहरण—

विरवोष्पूवास बड़े आँधी से  
 टूटती ई कहीं समीप ;  
 थोड़ी ! तुमने हा पाते ई  
 ये क्लिजमिल तारा के दीप ।

नाम—( ४३८४ ) शारदाप्रसाद 'भटारी' हरकुलियन प्रेस,  
 मुजफ्फरपुर ।

जन्म-कात—सं० १२६१ ।

विवरण—सुकवि ।

उदाहरण—

जिज्ञासा

समुना तट पर खड़ा जात हो  
 निरख रहा था प्रज्वलिता ;  
 पूखा की मजुन कलिया को  
 देख रिहँसती थी सरिता ।  
 नील गान से झाँक-झाँक  
 तारेगण मुसकाते थे ;  
 थिरक - थिरककर चन्द्रद्वय  
 आनन्द आनन्द बकाते थे ।  
 पुष्पां की माला लेकर  
 मधुर गति से बढ़ आती थी ,  
 उस छवि की मजुल चितवन  
 रत्नियों का चित्त पुराती थी ।  
 आकर रुकी, हँसी, फिर वाली  
 "तुम क्यों यहाँ खड़े हो ?

नदन वन मा छटा दस  
 क्या तुम पथ भूल पड़े हो ?  
 अथवा उत घनस्थान मूर्ति से  
 तुम भी गए ठगे हो ?  
 या मुझ-सा गि को विनष्ट  
 काने पर रख जगे हा ?"  
 समय—सयत् १६८७

नाम—( ४३८६ ) अथर्वविहारी श्रीवास्त्व 'विहारी', विहार,  
 पकड़ी नरोत्तम, सतजोडा बाजार, सारन ।

जन्म-काळ—स० १६९२ ।

रचना-काळ—स० १६८७ ।

विवरण—आप सुकवि हैं ।

उदाहरण—

चिता

धरी चिते ! चित-बीच सप-मा  
 यह तेरा हँसना कैसा ?  
 राजा की कल किन्नरारी-सा  
 भयकारी हँसना कैसा ?  
 धक्क धक्कल नत उठता है,  
 कभी मद पड़ जाती है,  
 जग की आश निराशा काया  
 दर्य प्रस्ट दिख जाती है ।  
 जन दबी-मी सरित-बूझ पर  
 अनुपम तेज-राशि जसती,  
 रिखा साधिका सी निजन म  
 विश्व रुदन पर जो हँसती ।

## सुमन में नवरस

पवन के पावनतम 'शृंगार',  
 उषा के मधु मधोहर 'हास',  
 सुमन से सीते सब ससार  
 'शांत' चित्त जरा नगुर विमल ।

सुमन, मन मत तेरी थोर  
 'भवान्त' धातुरता थावेश  
 लौचता 'शुद्ध' गति चित्तघोर  
 'वीर' ता के सुदर सदश ।

'शौद्र' वा 'विदूत' ज्येष्ठा मानु  
 युनक-सा घ'दृश्य' विभव विभोर,  
 कृल ! पर मत निज गौरव भूज,  
 भूल मिल फिर वृत्तोगे कृल ।

नाम— ( ४३८६ ) नवलकिशोर का 'नवल', सोन्हौली,  
 तारापुर ( मु गेर ) ।

जन्म काल—स० १८६२ ।

विररथ—सुकवि ।

उदाहरण—

## कविते !

वाणी-वीणा-भनकार कहें, कविवर द्विय का उद्धार कहें,  
 मालमय मंजु मलार कहें, या सुल-सरिता की धार कहें !  
 धर विमल बसत-बहार कहें, या ससृति-शोभा सार कहें  
 क्या सु-रति हृदय बर मार कहें, या कामिनि-कांत-दुलार कहें !  
 जीवन नौका - पतवार कहें, भ्रकरित सुभेम सितार कहें ;  
 क्या नय सुदरि-शृंगार कहें, या भ्रमर भ्रमरि गुजार कहें !

कथिते । मन नाहक वार कहे, या नवजावन-मचार कहे,  
क्या प्रेमी का आधार कहे, या नवज सुमा का हार कहे ।  
नाम—( ४३८० ) रिमलादेवी सौमानी, हैदराबाद ।

जन्म-काल—लगभग स० १८२४ ।

रचना-काल—स० १९८७ ।

विवरण—आपके लेख सामाजिक क्रांति उत्पन्न करनेवाले  
दुष्टा करते हैं । प्राय ( Circle Insp ) बा० फर्हेयाबाद की घम  
पनी हैं ।

नाम—( ४३८८ ) सूर्य चरण 'पारोठ' पुरोहित एम्० ए० ।

जन्म-काल—स० १९६८ ।

रचना-काल—स० १९८७ ।

ग्रंथ—( १ ) काना कुमुमानलि ( गद्य-काव्य ), ( २ ) रक्ति-  
रानी काव्य ( प्रकाशित ), ( ३ ) बलि फिसन रकमणारी ( राठौर  
महाराज पृथ्वीराज कृत, संपादित राजस्थानी काव्य, प्रकाशित  
हिंदुस्थानी एकेडेमी द्वारा ), ( ४ ) डोला मारु रादहा ( संपादित )  
प्रकाशित नागरा-प्रचारिणी सभा, काशी सन् १९३३, ( ५ ) हिंदु-गद्य  
मुमन-नाला मसद, ( ६ ) राजनिवास कवि भान कृत ( संग्रहित ),  
( ७ ) राउ जैतसी रउ छुद दिंगल भाषा ( ८ ) राजस्थानी वारो की  
कहानियाँ, ( ९ ) मारा पादल की बात, ( १० ) नीलिक पद्य का  
समूह, ( ११ ) ज्योत्स्ना गद्य काव्य ।

विवरण—विद्वान् कॉलेज पिछारी, जयपुर के वाइस प्रिंसिपल  
हैं । जन्म स्थान वांकाणेर राजस्थान है । संपादक तथा गद्य-काव्य  
प्रणेता हैं । अर्द्धे विषयों पर खलान्ध्र भ्रम किया है । आपकी पुस्तकें  
उपादेय हैं । मख्या ५, ६, ८ के अतिरिक्त अन्य समग्र पुस्तकें की  
रचना तथा संपादन पुरोहितना ने अपन मित्रा के सहयोग से  
किया है । १-नाला० रानसिंह एम्० ए०, २-धीप० नरोत्तमदास

एवामी एम्० ए०, ३ दीप० चाँदसिंह तथा इन्होंने प्रेमाश्रम नाम से सं० ११८० म मा० गस्था स्थापित पर वे सय पुस्तक तैयार की, गिाभी प्रथमा ए० गौरीशंकर दीरापद घोषा तथा बाबू खाम-मुद्दर दास आदि सन्ना न का है ।

समय—सूचन् ११८८

नाम—( ४३८६ ) जगदीशप्रसाद 'गिरोश' ।

जन्म-काल—स० ११३३ ।

रचना-काल—स० ११८८ ।

प्रथ—( १ ) मुक्ति का द्वार, ( २ ) स्फुट प्रंद ।

विवरण—मैनपुरी निवासी ए० सयनारायण अग्निहोत्री याने-द्वार के पुत्र । आजकल महावा में रहते हैं । उद्धत देश नेम के कारण दो बार फारागार हो आए हैं ।

उदाहरण—

हृदय, नू चल अगत की आर,

इस विमृत तम पूर्ण विश्व में ते स्मृति का दीप ।

सखे, सोइता तुम्हें पुकारें, आते तहाँ समीप ।

द्विपे क्रिय निर्वन में चित्तचार ?

क्या होगा जब हों ग मात का, स्वाति वि ग चात्तक का हाल ?

सरसिज की रवि-रहित दशा पर टटि दया कर देते डाल ।

कहाँ है हम आशा का धोर ?

हृदय, नू चल अगत की ओर ।

( एक मित्र का मृत्यु पर लिखित )

नाम—( ४३१० ) जगदवाप्रसाद शर्मा 'कलाधर' ।

जन्म-काल—स० ११३३ ( पेसारा, तिला जीनपुर ) ।

रचना-काल—स० ११८८ ।

रचना-काल—स० १९२६ ।

प्रथ—( १ ) अभिम-यु-वध, ( २ ) श्यामनीति, ( ३ ) ध्रुव-धरिय,  
( ४ ) सीय स्वयंवर, ( ५ ) स्फुट छंद ।

विवरण—साँड़ी, जिला हरदोई के प० राधाकृष्ण मिश्र के पुत्र ।  
इट्टेस पास । कुछ सरसूत, उदू भी जानते हैं । आनन्द भगवत  
नगर-शास्त्र-सूत के अचैतनिक हिंदी अध्यापक हैं । होनहार कवि हैं ।

उदाहरण—

कमल-साम सुहीरक हार सी, कवि मद् रवि-काति लजावनी,  
सकल कल्प हासिणि पावनी, सतत विष्णुपत्नी उर वासिनी ।  
मुभग वीन धरे कर मञ्जु में, यसन शाभित पीत प्रभामयी ।  
मुनुरु कक्ष्य किंकिन का करे, सदय हो करणामयि भारती ।

( सीय स्वयंवर से )

चौपाई

कयहुँ न नर का करिय हँसाई ; श्याम भाग्य जाना नहि जाई ।  
गुण सिखिदो बहुधा सुखदाई, श्याम गुणहि को हाति पदाई ।  
ज्ञानी रक मिलत बहुतेरे ; श्याम रमा भारता न नरे ।

( श्यामनाति से )

बस यही हमारी चिंता है, जो चिंता तुल्य जल उठती है ;  
जिसकी भारी ज्वाला के आग बुद्धि नहीं कुछ प्रती है ।  
फिर चन्द्र-यूह का भेद हम कैसे तोड़, कुछ ज्ञान नहीं ;  
अर ऐसे समै करे क्या हम ? भट्ट कह देना धामान नहीं ।  
बस यही मानरा है सारा, जो पुत्र तुम्ह बतलाया है ;  
यह ही था शोक-भेद सर कुछ, जो हमने तुम्हें बताया है ।

( अभिमन्यु वध से )

नाम—( १९६४ ) रामेश्वर शुक्र 'अचल' ।

जन्म-काल—स० १९७१ ।

रचना बाल—सं० १६८३ ।

विवरण—यह महाशय मातादीर्जा शुभल के सुपुत्र हैं। इनकी कहानियां में रमी लेखका का सा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पाया जाता है। कविताशा म भी उतनी ही परिपक्वता और आकषण है, जितना कहानियों में। समालोचना करने का ढंग भी इनका नया है। कई उपन्यास लिख चुके हैं, जो अप्रकाशित हैं। पर पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ आदर का स्थान पाती हैं। इस समय कलकत्ता विश्वविद्यालय सं, बी० ए० क्लाइनल में, पढ़ रहे हैं।

१६७६—६० के अन्य कवि गण

समय—संवत् १९७६

नाम—( ४३२२ ) परशुराम चतुर्वेदी ।

जन्म-काल—सं० १९२१ ।

ग्रंथ—यलिया जिले का इतिहास तथा साहित्य समालोचना आदि ।

विवरण—जारी, जिला बलिया निवासी प० रामछयीले के पुत्र हैं। पश्चात्य दशन में श्राव एम्० ए० हैं।

नाम—( ४३६६ ) पूर्णानंद शास्त्री ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२४ ।

ग्रंथ—उत्सव-तंत्र, शिष्या विधि और हिंदी-कविता नामक आपके छोटे ग्रंथ हैं ।

विवरण—यह जैनाबाद, जिला गुडगाँव के रहनेवाले ब्राह्मण हैं। आपने हिंदी और संस्कृत की कविता की है।

नाम—( ४३६७ ) महेशप्रसाद ( महादेवप्रसाद ) मिश्र 'रसिकेश', गोरखपुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२६ ।

कविता-काल—लगभग सं० १९७६ ।

नाम—( १४०१ ) गौरीशंकर द्विवेदी ।

जन्म-काल—स० १९२७ ।

रचना-काल—स० १९७७ ।

ग्रंथ—बंगला दिनचर्या का अनुवाद ।

विवरण—गोरखपुर जिले में जन्म । स० १९८४ में हिंदी-साहित्य सम्मेलन की उच्चमा परीक्षा में उत्तीर्ण । तृतीय खंड शायर-परीक्षा पास है । इतिहास और दर्शन के अध्यापक थे । स० १९८७ से 'कल्याण' के सहकारी संपादक हैं ।

उदाहरण—

### धनत गीत

कन-कल कल-कल बहती जाती समस्त सखिया अविचल ।

विश्व विज्ञान मुनाब शून्य थल;

पय धनत छाया है अविचल ।

निरालय अगणित सिक्का तल,

होता भिल्लमिल्ल भिल्लमिल्ल भिल्लमिल्ल ।

नाम—( १४०२ ) पिगलसिंह ।

ग्रंथ—भाव भूषण ।

विवरण—आप प्रथम मिहोर में रहते थे, किंतु अब भावनगर में रहते हैं । उक्त ग्रंथ आपने भावनगराधीश महाराजा भावसिंहजी के नाम से बनाया है ।

उदाहरण—

यौवन उमगवारी, यारिज-से नैनवारी,

अमृत से बैनवारी, हाव नाव भारी है,

मदन हुजासवारी मद मंद हासवारी,

बदन प्रकामवारी चंद उमिदारी है ।



मोतिन की माच्यारी, अधर प्रयाज्वारी,  
 हसन की चानवारी, नेक छवि न्यारी है ;  
 'दिगम्ब' कहत जेमी नूनवारी नारा सग  
 नेह ना कियो, तो णहि रूपा देह धारी है ।

नाम—( ४४०३ ) बक्षोराम ।

ग्रन्थ—बक्षी विलास ( नायिका भद्र ) ।

विवरण—यह प्रायगढ़-तावा के जोधवारण ग्राम के निवासी तथा  
 राधाशुभ चरण के पुत्र हैं ।

नाम—( ४४०४ ) बाडीलाल मोतीलाल शाह ।

विवरण—अहमदाबाद निवासी धीमाज जैन । आप गुजराती  
 जैन हितेच्छु के सपादक हैं । हिंदी मातृभाषा न होने पर भी हिंदी  
 के अच्छे लेखक हैं ।

नाम—( ४४०५ ) मुकुटधर पाडेय ।

जन्म-काल—स० १६५२ ।

रचना-काल—स० १६७७ ।

ग्रन्थ—( १ ) समाज-कटक, ( २ ) कार्तिक-माहात्म्य, ( ३ )  
 इटालीय युवक ।

विवरण—यह बालपुर जिला विलासपुर निवासी चिंतामणि पांडेय  
 के पुत्र हैं । आप प्रकृति पूनक हैं । करुणा तथा सहृदयता का आपकी  
 रचना में अच्छा मिश्रण है । आजकल इनका मस्तिष्क कुछ विगड़  
 गया है ।

उदाहरण—

लौच रहा था हल धातप में घृषा बैल एक सत्रास ;  
 उस देखकर बिकल बहुत हो पूछा मैंने जाकर पास—  
 "बूढ़े बैल, खेत में नाहक क्या दिन भर तुम मरते हो ;  
 क्यों नहीं घरागाह में चलकर मौन मजे से करते हो ?"

नाम—( ४४०१ ) गौरीशकर द्विवेदी ।

जन्म काल—स० १२२७ ।

रचना काव—स० १२७७ ।

ग्रन्थ—बंगला दिनचर्या का अनुवाद ।

विवरण—गोस्वपुर जिले में जन्म । स० १२८४ में हिंदी-साहित्य सम्मेलन की उत्तमा-परीक्षा में उत्तीर्ण । तृतीय एंड शास्त्री-परीक्षा पास है । इतिहास और दर्शन के अध्यापक थे । स० १२८७ से 'कल्याण' के सहायक संपादक हैं ।

उदाहरण—

### अनंत गीत

कल-कल कल-कल बहती जाती समुद्र सरिता अविच्छ ।

त्रिषु विहीन सुनील शून्य थल;

पथ अनंत छाया है अविच्छ ।

निरालय अगणित सिद्धता तल;

होता भिन्नमिल भिन्नमिल भिन्नमिल ।

नाम—( ४४०२ ) पिंगलसिद्ध ।

ग्रन्थ—भाष भूषण ।

विवरण—आप प्रथम सिहोर में रहते थे, किंतु अब भावनगर में रहते हैं । उक्त ग्रन्थ आपने भावनगराधीश महाराजा भावसिंहजी के नाम से बनाया है ।

उदाहरण—

यौवन उम्रगवारी, शरिज-से नैनवारी,

अमृत-से वैभवारी, हाव भाव भारी है,

मदन हुलासवारी मद मंद हासवारी,

मदन प्रकासवारी चंद उदियारी है ।

माधिन की मालगारी, यधर प्रवालगारी,  
हसन की चालधारी, नेरु छवि न्यारी है ;  
'पिंगल' कहत ऐसी गुनगारी नारा सग  
नेह ना कियो, तो णदि पृथा देह धारी है ।

नाम—( ४४०३ ) बच्चौराम ।

ग्रन्थ—बर्ही बिलास ( नायिका भद्र ) ।

विवरण—यह अश्विगढ़-दाया के जोध्यारण ग्राम के निवासी तथा  
राधावल्लभ चारण के पुत्र है ।

नाम—( ४४०४ ) दाडोलाल मोठीलाल शाह ।

विवरण—अहमदाबाद निवासी श्रीमाल जैन । आप गुजराती  
जैन हितेच्छु के सपादक हैं । हिंदी मातृभाषा न होने पर भी हिंदी  
के अच्छे लेखक हैं ।

नाम—( ४४०५ ) मुकुटधर पाडेय ।

जन्म-काल—स० १६६२ ।

रचना-काल—स० १६७७ ।

ग्रन्थ—( १ ) समाज कंटक, ( २ ) कार्तिक-माहात्म्य, ( ३ )  
इटाजीय युवक ।

विवरण—यह बालपुर जिला बिलासपुर निवासी चिंतामणि पांडेय  
के पुत्र हैं । आप प्रकृति पूजक हैं । करुणा तथा सहृदयता का आपकी  
रचना में अच्छा मिश्रण है । आजकल इनका भक्तिष्क कुछ विगड़  
गया है ।

उदाहरण—

खींच रहा था हल आतप में चूड़ा बैल एक सत्रास ;  
उसे देखकर बिकल बहुत हो पूछा मैंने जाकर पास—

“चूड़े बैल, खेत में नाहक क्या दिन भर तुम भरते हो ;  
क्यों नहीं चरागाह में चलकर मौन मजे से करते हो ?”

मुनकर मरी बात बैब ने कहा दुःख से भरकर प्राह—

“इस अनाथ, असहाय रूपक का होगा फिर कैसे निर्वाह ?”

नाम—( ४३०६ ) युगलसिंह ११७ १०, एल्-एन्-बी० बी०, पोरबानेर।

विवरण—आप राजपूत टाकुर और हिंदी, संस्कृत तथा अँगरेज़ी के विद्वान् हैं। आप इस समय नोत्रब्र हाइस्कूल के हेडमास्टर हैं। प्राय गद्य लिखा करते हैं।

नाम—( ४४०७ ) रामनृमारजी मिश्र, अलवर।

विवरण—आप अलवर इतिहास कार्यालय के प्रधान पंडित हैं। आप संस्कृत तथा हिंदी के प्रौढ़ लेखक होने के अतिरिक्त आद्युक्ति भी हैं। [ यह कवि महाशय हमें प० भावरमल्लजी त्रिवेदी, जसरापुर द्वारा शत हुण्ड हैं ]

नाम—( ४४०८ ) विश्वेश्वरदयाल मिश्र विशारद, आगरा।

विवरण—आप प० लखूमल्लजी मिश्र के पुत्र हैं। आगरे की नागरी प्रचारिणी समिति के आप प्रमुख सदस्य हैं। ‘चतुर्वेदी’-पत्रिका का आपने कई वर्षों तक संपादन किया।

नाम—( ४४०९ ) शालग्राम द्विवेदी विशारद, जबलपुर।

जन्म काल—लगभग स० १९२२।

ग्रंथ—( १ ) समर-सला ( अँगरेज़ी पुस्तक से अनुवादित ),  
( २ ) कौटिल्य का अर्थशास्त्र।

पाठशालोपयोगी पुस्तकें—

( १ ) नवीन पत्र प्रकाश ( २ ) मिडिल स्कूल पर-खन,  
( ३ ) विराम चिह्न, ( ४ ) व्याख्या विधान, ( ५ ) प्राथमिक रचना शिक्षक, ( ६ ) मिडिल स्कूल रचना शिक्षक इत्यादि।

विवरण—यह कान्यकुब्ज-वंशोत्पन्न हैं। कुछ काल तक ‘श्रीशारदा’ के उप-संपादक तथा शारदा पुस्तकमाला के संपादक रह चुके हैं।

इस समय यह स्थानीय मॉडल हाईस्कूल में हिंदी के अध्यापक हैं।  
 नाम—( ४४१० ) शालग्राम शर्मा 'कन', ग्राम महालतपुर,  
 तहसील साहावाद, जिला मधुरा।

जन्म-काल—सं० १९२२।

रचना काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—( १ ) वियोग-व्यथा ( अप्रकाशित ), ( २ ) स्फुट कविता।

विवरण—यह प० नूपरामसिंह जी के पुत्र हैं। प्रयोग से एस्०  
 एल० सी० परीक्षा पास करके आप मृलचंद्र वागला-हाईस्कूल,  
 साधरस में हिंदी अध्यापक का काम करते हैं।

उदाहरण—

फवार झलेश दियो पुनि कातिक, मारा सीम को चंद्र तपारै,  
 पूस पसेवत, माह जरावत, फागु गुरै मधुघा पथरावै।  
 माधव जेठ असाढ़ किरायत, सावन पी ध्वनि ही विथुरावै,  
 पी विनु कैसे निऊँ सजनी, फिरि भावै कि रैनि अँधेरी डरावै।

समय—सन् १९७८ के अन्य कविगण

नाम—( ४४११ ) ईश्वरीप्रसाद डॉक्टर ( सनाढ्य प्राण्य ),

प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९३४।

रचना काल—सं० १९७८।

विवरण—रीडर इतिहास इलाहाबाद विश्वविद्यालय। आपकी  
 विद्वत्ता बहुत प्रशंसनीय है।

नाम—( ४४१२ ) ओंकारनाथ पाट्य विशारद, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९२९।

कविता-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप स्थानीय प्रतिष्ठित जमींदार प० प्रेमराजजी के पुत्र हैं।

उदाहरण—

कबहुँ निरखि भरि नैन धाल जपकति सरिता की,  
लखति यजावति वेनु झुकी मनमोहन भाँकी ।  
यारिद देखौं श्याम, श्याम हरि-मूरति देखौं ;  
चमकति चपला चपल चोर चित राधा खेखौं ।

जहाँ जाऊँ उनको लगीं कोऊ टाँ न शेष है,  
कुज करील कदव हरि रोमन रोम प्रवेश है ।

नाम—( ४२१३ ) कृष्णदत्त शास्त्री, काव्यतीर्थ ।

जन्म-काल—स० ११२७ ( धावण कृष्ण १२ ) ।

कविता-काल—स० ११७८ ।

ग्रंथ—( १ ) कीचक्र-वध, ( २ ) पद्य पंचाशिका, ( ३ ) दोहा-  
वली । कुछ संस्कृत के भी ग्रंथ रचे हैं ।

विवरण—आप तिजारा निवासी जयरामदत्तजी के पुत्र हैं । आपके  
स्फुट लेख पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुआ करते हैं ।

नाम—( ४२१४ ) रतनचंद सोधिया ।

ग्रंथ—सफल गृहस्थ ।

विवरण—प० दरयावसिंह सोधिया के पुत्र तथा हिंदी के होनहार  
लेखक ।

नाम—( ४४१५ ) गिरिजादयाल 'गिरारा' वैद्यशास्त्री ।

जन्म-काल—स० ११२३ ।

ग्रंथ—( १ ) विधवा विलाप, ( २ ) स्फुट छंद ।

विवरण—आप धीवास्तव कायस्थ अथर्व चोक्र कोर्ट में नौकर हैं ।  
आपका जन्म बिसवाँ के निकट सरैयाँ में हुआ ।

उदाहरण—

अनुधि में रूप के विराजे हैं यहि हैं कि  
विद्रुम के पुंज पै सुनील मणि प्यारे हैं ।

गग की तरंग में 'गिरीश' मनु मनि हैं कि  
 वाहिनी - धनग के तुरग रग कारे हैं ।  
 मयुल मयंक के लजाट पै दिठौना है कि,  
 लजरीट - छौना हम पीजरे में हारे हैं,  
 छाजे छवि नैन कामिनी के मृगनी के कि,  
 भाजे धरविद पै मलिद मतवारे हैं ।  
 कधन के कूट पै धरे हैं काजकूट घट,  
 शीश पै मयक के कि राहु-केतु तारे हैं,  
 सुकवि 'गिरीश' ये पियूप के पियाले हैं कि  
 गगनापगा में भानुजा के नार न्यारे हैं ।  
 ललित ललाम छवि धाम के सुदारे या कि,  
 दामिनी के अक म विरागे धन कारे हैं,  
 चपक-लता-सी तरनी के नैन नोके हैं कि  
 चउरे रसाब दुम कोकिल बिहारे हैं ।  
 केसरि के सस्य अक पैठे द्वै निशक मृग,  
 पैठे विधु मडल कि मुदित चकोर ये ;  
 खेलत शिकार द्वै शिकारी केतकी के कुज,  
 तपसी 'गिरीश' जू कि मुरगिरि छोर ये ।  
 पुज पै कुसुम के विराजें द्वै शशक-शिशु,  
 या कि छवि-गृह में धुसे हैं युग चोर ये,  
 वाम लोचना के ललना के नैन बाँके हैं,  
 कि मदन महीप के शिलीमुख कठोर ये ।

नाम—( ४४१६ ) गिरीशचंद्र चतुर्वेदी, मैनपुरी ।

जन्म-काल—सं० १९२६ ।

कविता-काल—सं० १९७८ ।

विवरण—यह पदित वनवारीबालजी के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

शंख-मूल पीछे गज मोतिन की माल है कि,  
भूमिका भुजगत वै सेसनाग भासी है ;  
कुम है सुधा को किरौं टपकि अनिय रम ,  
बुद-बुद सौपन वै आवै कदुमा सी है ।  
कमल के कूट वै गिरी है लीरु बांधि बिग्नु,  
कैरीं करे ब्योम मध्य गग या थकासी है ,  
भासी मैन-मूर्ति सुखमा की प्रतिमा-सी दर,  
उचकि उसासी नद मदन प्रकासी है ।

नाम—( ३४१७ ) गुलाबचंद्र वैद्य ।

जन्म-काल—स० १३२३ ।

ग्रंथ—( १ ) आरोग्य मनीष, ( २ ) स्वरोदय, ( ३ ) विज्ञान,  
( ४ ) अनेकतमय तत्त्व विज्ञान, ( ५ ) सभा-सरोज ।

विवरण—धमरापती निवासी मूलचंद्र जैन के पुत्र ।

नाम—( ४४१८ ) ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल', प्रयाग ।

जन्म-काल—लगभग स० १६२२ ।

रचना काल—स० १६७८ ।

ग्रंथ—छा/कवि-कीमुद्दी ।

विवरण—मनोरमा और भास्तेंदु पक्षों के संपादक रहे हैं । इस समय भारत के संपादक हैं ।

नाम—( २३१६ ) नवनील चौबे, मथुरा ।

ग्रंथ—( १ ) स्वामागा पद्य रूपण ( नख शिख ), ( २ ) स्नेह शतक, ( ३ ) कुब्ज्या रचीसी, ( ४ ) मनोरथ-सुप्रासली, ( ५ ) नवीनी त्सव समह ( प्रकाशित ), ( ६ ) मूख-शतक, ( ७ ) कृष्णाष्टक ( समस्या पूर्ति ), ( ८ ) विंगल प्रकरण ( अपूण ), ( ९ ) गदा बली ( अपूण ) ।



विवरण—सर्त के अन्वये विद्वान् हैं । काव्य रचना मजभाषा में है । कदा जाता है, इनके पास प्राचीन कर्मियों की अण्ड्य कविताओं का बहुत बड़ा समूह है ।

नाम—( ४४२० ) पार्यती धाई ।

प्रथ—ईश्वरदास ।

विवरण—आप बानू गोकुलदास की पुत्री हैं ।

नाम—( ४४२१ ) पृथ्वीनाथ तथा महेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, सिकंदरपुर, जिला फर्रुखाबाद ।

विवरण—ये दोनों महाशय्य प० केशवदेवजी के पुत्र हैं । दोनों भाइयों की अवस्था लगभग ४० और ३६ वर्ष की है । ये लोग कविता, लेख आदि भी लिखा करते हैं । नाच उदाहरण दिए गए हैं ।

उदाहरण—

जिन केशव के रहि रासन में अनुशासन और न रहि गई,  
अरु भापत भूठ रहे जग में नित भेखत हाथ विपत्ति नई ।  
परतीति नही जिनको प्रभु का, नहिं देश विपत्ति बटाइ बह ;  
नहिं जानि सनह भरी जिनके तिन लोगन जाति विगारि दई ।  
हे पतित पापन दीनबधो, विनय मम मुन कीजिए,  
करके कृपा प्रभु हम सया को बुद्धि प्रभुवर, दीजिए ।  
दुख सिंधु में पड़कर प्रभो, असहाय गाते पा रह ;  
चंटे अविद्या-नाव पर उरटे बह धय जा रहे ।

नाम—( ४४२२ ) चण्डीप्रसाद ।

विवरण—आप मोतीबाब पत्नीबाब जैन के आता तथा हिंदी के होनहार लेखक हैं ।

नाम—( ४४२३ ) भोलानाथ मिश्र विशारद, मैनपुरी ।

जन्म-काल—स० १९६१ ।

कविता-काल—स० १९७८ ।

ग्रन्थ—स्फुट कविता ।

विवरण—यह प० दर्माबाब के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

जब लै कर पुण्य-कमान गयो शिव जीतन कोटि करयो छब है,  
सब पौरुष-पुत्र गमायो कहीं जरि छार परयो सुवि रेख्य है ।  
अथ सायक तेज गहै अबलागन मार त मार न सो बल है ;  
धिक विक्रम नीच मनोज तेरो, धिक तोदि, महा धिक तो बल है ।

नाम—( ४४२४ ) मोहनलाल थड़जात्या ।

जन्म-काल—स० १९६२ ।

ग्रन्थ—मुखी गृहस्थ ।

विवरण—यह कुचामण मारवाड़ प्रांत के निवासी हैं । मुग्गे  
गोविंदराम पंडेलबाब जैन के पुत्र हैं ।

नाम—( ४४२५ ) मौजी ।

कविता-काल—सं० १९७८ के पूर्व ।

ग्रन्थ—पास्त-पक्षीसी ।

विवरण—मालिया काठियावाड़ निवासी जाडेजा ठाकुर थे ।

नाम—( ४४२६ ) रामप्रकाश शर्मा डॉक्टर, ग्राम बधुआ,  
जिला दरभंगा ।

जन्म-काल—सं० १९६३ ।

ग्रन्थ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—यह नारदाजगोत्रीय भूमिहार ब्राह्मण दरभंगा जिल्ला  
घोड के निर्वाचित सदस्य हैं । इनकी रचनाएँ देश, महावीर आदि  
पत्रों में प्रकट होती हैं । आप छद्मि धाली के मुकवि हैं ।

उदाहरण—

कृष्णचेतावनो

अरे नराधम, स्वार्थ भृत्य, क्या गर्व भरा है,  
 त्वाज नहीं, खे राजदण्ड तू अकड़ गया है।  
 अमल क्षात्र-कुल विपु-कब्जक तूने प्रकटाया,  
 पूज्य पिता का स्वत्व छीनकर मार भगाया।

गुरु शिशु यथ सब ही किया स्वार्थ साधने के लिये ;  
 अन्नला को पदी किया, नीति-न्याय सब खो दिए।  
 कूटनीति से दुष्ट प्रजा को फाँस लिया है ;  
 उसके बल फिर राजमुकुट ले नारा किया है।  
 शिष्ट प्रजा ने न्यायनिष्ठ तुम्हको था जाना ;  
 इसी हेतु निर्माक चित्त निज प्रभु था माना।

पटाचंप पर हट गया, रक्षक अथ तक था बना,  
 भङ्कक निकला अतः म, कैसी दीव विद्वयना।

नाम—( ४४२७ ) लाल हरदेवसिंह 'प्यारेलाल', प्राम सबहद  
 विधूना, इटावा।

जन्म-काल—लगभग स० ११३३।

कविता-काल—स० ११७८।

प्रथ—स्फुट छंद ( लगभग २०० )।

विवरण—इनके पद्यों की एक प्रति लाल रघुनन्दनसिंह वर्मा, सब-  
 हद ( इटावा ) को प्राप्त हुई है, उसी में से निम्न लिखित  
 उदाहरण दिया गया है।

उदाहरण—

प्रभु को भजन करो दिन रात।

श्रीस्वामी सचराचर न्यापक श्याम गौर दोड भात ;  
 ताके बरा तिहुँलोक सदा हैं, वैहि सुमिरो हे तात !

छिन में रचें द्विनर्हि में भेटें, माया अलख लखात ;  
ताको शेष, महेश रटत नित, सुर सब सदा डरात ।  
तन, मन से नित धरी चित्त में धम करी बहु भाँत ।  
जइ चेतन में, सब वस्तुन में, राम द्वि राम दिखात ।  
मोहि गुरु केशवदास कृपा करि ज्ञान दियो हरपात ;  
कहत 'लाल हरदेवसिंह' जा अजबै चरित रहात ।

नाम—( ४४२८ ) विद्याधरजी मिश्र, मैनपुरी ।

जन्म काल—स० १९५३ ।

विवरण—यह पं० सीतारामजी के पुत्र माथुर चतुर्वर्दी ब्राह्मण  
हैं । इस समय यह श्यामसुंदर हाइस्कूल, चंदौसी में अध्यापक हैं ।

उदाहरण—

प्राचीन भारत भर धा भू को दिखाने के लिये,  
अथ था रही सुख शांतिदा होली प्रफुल्लित निज हिये ।  
है कर रही आदेश उत्तम चाब से प्रिय देश को ;  
भाषा पढ़ो कोई कहीं, त्यागो न तुम निज भेष को ।

नाम—( ४४२९ ) सुरदेवप्रसाद तिवारी ( उपनाम विनय-  
मोहन ) नरसिंहपुर निवासी ।

जन्म काल—लगभग स० १९२६ ।

रचना-काल—स० १९७८ ।

विवरण—स्फुट लेखक तथा समालोचक हैं । धीरात्मा के नाम से  
कविता भी करते हैं ।

समय—संवत् १९७६ के अन्य कविगण

नाम—( ४४३० ) अमरनाथ झा एम्० ए० ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

रचना-काल—स० १९७६ ।

ग्रंथ—( १ ) हिंदी-साहित्य-संग्रह, ( २ ) हिंदी साहित्य-रत्न ।

वियरण—आप महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगानाथ भा के पुत्र  
या प्रयाग विश्वविद्यालय के राबर हैं ।

नाम—( ४४३१ ) जटाधरप्रसाद शर्मा 'विकल', ग्राम  
राजितपुर, जिला मुजफ्फरपुर ।

जन्म काल—स० १९६२ ।

ग्रन्थ—( १ ) योगशास्त्र, ( २ ) धर्मशास्त्र, ( ३ ) अद्वैत,  
( ४ ) दनयती और सीता, ( ५ ) प्रेम प्रमोद, ( ६ ) कृष्ण-कंदन,  
( ७ ) पावस-बहार, ( ८ ) शिक्षक कंदन, ( ९ ) शिष्य शिवा ।

वियरण—यह प० योगेश्वर मिश्र के पुत्र हैं । स० १९७६ से  
इनकी रचनाएँ सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकट होती रही हैं ।

उदाहरण—

प्रथम मिथिल चुवन की मुस्मृति हृत्पट से हट जाने दे ;  
प्रथम प्यार का स्वात उमड़कर मिट्टा में मिल जाने दे ।  
प्रथम रश्मि की प्रभर प्रभा पत्ता पर छाज विकरन दे ;  
मुक्तामय शृंगार साजकर उनका धाज विचरने दे ।  
पट परिवर्तन का मुचमम यह सुंदर साज सजाने दे ;  
प्रियतम के सौंदर्य - छोट में धरे मुझे यह जान दे ।  
भूलो उसका गाग पवन छाड़ो यह धीन धजाना ।  
भूलो उसका प्रेम भवन, छाड़ो या जाना धजाना ।  
छोड़ो री कलियो तुम भी या बार बार मुसबाना ,  
भूलो री कलियो तुम भा यह प्रेम-पराग-खजाना ।  
भूल रहा हूँ, छेड़ो मत, सोने ठो, नहीं जगाना ।  
थाह रहा हूँ यों ही उनके धर्यों पर पल्लि जाना ।

नाम—( ४४३२ ) दूधनाथ उपाध्याय ।

ग्रन्थ—गोरक्षा पर आपकी पुस्तकें हैं ।

नाम—( ४४३३ ) धीरेन्द्र वर्मा ( कायस्थ ), प्रयाग ।

जन्म-काल—स० १९२८ ।

कविता-काल—सं० १९७६ ।

विवरण—इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रधानाध्यापक हैं । हिंदी का भरपूर ज्ञान रखते हैं ।

नाम—( ४२३४ ) रामचंद्र सघी एम्० ए०, जवलपूर ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२४ ।

प्रथ—शत ऋण का सुधार ।

विवरण—यह अग्रवाल वैश्य हैं, और स्थायी रूप से नारनौल (पंजाब) के रहनेवाले हैं । इस समय यह स्थानीय हितकारिणी हाईस्कूल में अध्यापक हैं ।

नाम—( ४४३२ ) रामबिलाससिंह 'भूपण' ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

प्रथ—( १ ) कमला, ( २ ) उषा, ( ३ ) भगवतीता-पद्मा सुवाद, ( ४ ) सेनापति कण, ( ५ ) दमयती-नाटक, ( ६ ) अनाथ महिलाओं की पुकार, ( ७ ) प्रणयिनी विद्योद ।

विवरण—ज़िला शाहाबाद निघासी सूबर थप्रिय ।

नाम—( ४४३६ ) शिवप्रसादसिंह

जन्म-काल—स० १९२४ ।

रचना-काल—स० १९७६ ।

प्रथ—भारत में अथ शाप ।

विवरण—यह अधिकांसिंह के पुत्र हैं, और बलिया के कवि एवं लेखक हैं ।

नाम—( ४२३७ ) सरदार शर्मा 'सोम कवि' ।

जन्म-काल—स० १९२४ ।

प्रथ—( १ ) दयानदाष्टक, ( २ ) निराकार उपासना, ( ३ ) समस्या पूर्ति पुंज, ( ४ ) सोम संपदा, ( ५ ) प्रेम-पराग,

( ६ ) कवि-कुल-कला, ( ७ ) मातृ पितृ भादरां भक्त धयण्यकुमार,  
( ८ ) अष्टौतों का आतनाद ।

विवरण—यह गिरुषा जिजा पद्य निगाली बल्लभट्ट डूंगरवत्त  
के पुत्र ।

उदाहरण—

भण चद-भम चद आदि हिंदी के कविनी ;

भङ्ग गिरोमणि सूर मनो भू ऊपर रवि जी ।

शक्ति-अदा-युत काव्य दिव्य हो जिनकी दमकी ;

कल कीरति अति अमल रूप हो होकर चमकी ।

नाम—( ४४३८ ) सुंदरसिंह चौहान, पिपरसड, जिला  
लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० ११४६ ।

रचना-काल—लगभग सं० ११७६ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

नाम—( ४४३६ ) सतदास कवीश्वर ।

जन्म-काल—सं० ११६४ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

विवरण—माध्व संप्रदाय ।

समय—संवत् ११८० के अन्य कविगण

नाम—( ४४४० ) अयोध्यानाथ शर्मा एम्० ए० ।

जन्म-काल—सं० ११६६ ।

रचना-काल—सं० ११८० ।

ग्रंथ—( १ ) उज्ज्वल तीर, ( २ ) गद्यमुष्णावली, ( ३ ) गद्यमुष्णाहार,

( ४ ) अयोध्याकाव्य, ( ५ ) जानकी मंगल, ( ६ ) पार्यतीमंगल ।

पाठ्य पुस्तकें—रचना विधि, बाल न्याकरण, कवीर प्रथावली ।

मधुर मोद मकरद सु ध्यारा  
 अहो हृदय उटती रस धारा,  
 भर नाता अतस्थल सारा,  
 जीवन-सुमन विकल यह सहसा  
 धिल उटता है सस्मित राग  
 कण्ठ राग रतित जब वेरा  
 होता प्रिय मुक्त पर अनुराग ।

नाम—( ४४४८ ) दामोदरसहाय, बाँकीपुर ।

विवरण—आपकी मृत्यु सं० १९८८ के निकट हो गई ।

नाम—( ४४४९ ) निहालकरण सेठी ।

विवरण—आप छदेखवाल जैन तथा काशी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं ।

नाम—( ४४५० ) पद्मकांत मालवीय, प्रयाग ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६२ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

प्रथ—( १ ) त्रिवेणी, ( २ ) प्याला आदि ।

विवरण—आप कृष्णकांत मालवीय के पुत्र एवं हिंदी के एक होनहार कवि और लेखक हैं ।

नाम—( ४४५१ ) पोर मुहम्मद 'मूनिस' बेतिया, चपारन ।

जन्म-काल—सं० १९२१ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९८० ।

प्रथ—मूनिस प्रथावली ।

विवरण—यह जाति के मुसलमान हैं, फिर हिंदी से विशेष प्रेम रखते हैं । इनके लेख प्रायः 'प्रताप', 'आयमित्र', 'बालक' आदि पत्रों में मिल सकते हैं ।



नाम—( ४४१२ ) वामूसिंह कुप्रिय पिपरसड, हरौनी,  
खिला लखनऊ ।

जन्म-काल—स० १११४ ।

रचना-काल—लगभग स० ११८० ।

ग्रन्थ—( १ ) विनाद-भावनी, ( २ ) ग्रन्थ विहार विनोद ( अपूर्ण ),  
( ३ ) स्फुट पद ।

नाम—( ४४१३ ) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', ग्वालियर राज्य में  
शाजापुर के निवासा हैं ।

जन्म काल—सं० ११६० ।

रचना-काल—स० ११८० ।

ग्रन्थ—कुछ काल तक 'प्रताप' पत्र के संपादक रहे, तथा बहुत-सी  
स्फुट रचनाएँ की हैं ।

विषय—धार्मिक स्वच्छंद प्रकृति के उत्साही व्यक्तित्व हैं । उत्तम  
देश भक्ति के कारण कई बार जेल भी हो गए हैं ।

नाम—( ४४१४ ) सुवनेश्वरनाथ मिश्र 'भाव्य' धी० ए०  
मिश्रौली, बिलौटी ( शाहाबाद ) ।

जन्म-काल—स० १११२ ।

रचना-काल—लगभग स० ११८० ।

उदाहरण—

बनी रहे हिय मधुर घेदना, बहते रहें धधु-निर्मर ;  
ध्याकुल प्राण सदा तेरे दर्शन हित बन रहें नटवर ।  
सदा खोजता जाऊँ मैं, पर तू अन्त में मिलता जा ।  
आतुर आँसों की शोभल हो मिलमिल-सा तू मिलता जा ।  
यों धक्कर इस खोज हूँ से करने क्यों कूच जब प्राण ;  
बिना प्रयास भाव वैभव स गूँज उठे हृत्प्री-सान ।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्ना बानू, युगलकिशोरजी अग्नीरी की पुत्री हैं।

नाम—( ४४१० ) सोमदेव ( शर्मा ) सोम-कवि ।

जन्म-काल—स० १९६४ ।

रचना-काल—स० १९८२ ।

रचना—स्फुट कविताएँ और साहित्य तथा आयुर्वेद पर लेख ।

विवरण—नयीगढ़, पो० यर्ला, जिला अलीगढ़ के धार्य भजनोपदेशक प० खुनदन शर्मा ( सारस्वत ) के पुत्र हैं । बनारस की साहित्य-शास्त्री परीक्षा पास, पञ्जाब की शास्त्री परी-ओत्तोण, संस्कृत और हिंदी प्रज्ञा भाषा तथा खड़ी बोली के कवि, राष्ट्रीय विचार के उदीयमान युवक, गद्य पद्य-लेखक, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आयुर्वेद मेडिकल-कॉलेज में ६ वर्ष अभ्यास किया ।

उदाहरण—

हा मोती ।

भारत जननि देवि ! अब तेरा खोया वही दुबारा ,  
उज्ज्वल मुख या तेरा जिपमे, जो प्राणों का प्यारा ।  
तू अभिमान किया करती थी, जिसका आश्रय लेके ;  
तेरा यह सरवस्य आज ही चला गया है तज के ।  
छाती शीतल फरनेवाला आँखों की नवज्योती  
निधन तुझ दुखिया का वह धन आज खो गया मोती ।

नाम—( ४४११ ) हरस्वरूप चतुर्वेदी, मैनपुरी ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२७ ।

विवरण—यह पंडित मुद्गालाक्षजी मिश्र के पुत्र हैं । अभी आप विद्यार्थी दशा में हैं ।

समय—संवत् १९८३ के अन्य कविगण

नाम—( ४४१२ ) आनदीप्रसाद मिश्र 'निर्द्वंद्व' ।

जन्म-काल—लगभग सं० १६२८ ।

जन्म स्थान—रुजरापाटन रियासत ।

निवास-स्थान—ग्राम भगवानपुर, जिला सुरदाबाद ।

ग्रंथ—समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में स्तुत लेख ।

विवरण—आप प० मुकुंदरामजी के पुत्र हैं । सार्वजनिक सस्थायों में अपनी युवावस्था से ही आप काम करने लगे हैं । समय-समय पर यह नागरी प्रचारिणी सभा के उपमधी तथा हिंदी-साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के व्यवस्थापक रहे हैं । 'अध्यापक' और 'शंकर' पत्रों के ये मृतपूर्व संपादक हैं । इस समय 'लिखौना' पत्र से इनका विशेष संबंध है ।

नाम—( ४४६३ ) कामेश्वरीप्रसाद, साहबगज ( छपरा ) ।

जन्म-काल—लगभग सं० १६२८ ।

रचना-काल—सं० १६८३ ।

उदाहरण—

अथ स्वायत्तम का परदा, सत्वर हटा दे मोहन !

अथ आत्म-त्याग-रवि की, आभा दिखा दे मोहन !

पूरब में फैल जावे, शुभ देश भक्ति लाखी

मन पल्लवों पे आशा, बूँदें बिछा दे मोहन !

महिला कमल-कली क्यों, अथ लौं न खिल रही है ?

विद्या-मलय बहाकर, इनको खिला दे मोहन !

अज्ञान के निराचर, हमको सता रहे हैं ।

चैतन्य शर से इनकी, गर्दन उड़ा दे मोहन !

चेतों, मित्रों, सखी हों, स्वर्तों को आज ले लें ;

बिगड़ी मेरी बना दे, शुभ दिन फिरा दे मोहन !

नाम—( ४४६४ ) गुलाबरल वाजपेयी 'गुलाब' ।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्ना गवू युगलकिशोरजी अन्वारी की पुत्री हैं ।

नाम—( ४४६० ) सोमदेव ( शमा ) सोमरुचि ।

जन्म-काल—स० १९६४ ।

रचना-काल—स० १९८२ ।

रचना—स्फुट कविताएँ श्रीर साहित्य तथा आयुर्वेद पर लेख ।

विवरण—नवीगढ़, पो० बला, झिन्ना अलीगढ़ के धार्य भजनोपदेशक प० स्युनंदन शर्मा ( सारस्वत ) के पुत्र हैं । बनारस की साहित्य-शास्त्री-परीक्षा पास, पत्रिका की शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण, संस्कृत और हिंदी प्रज्ञाभाषा तथा लड़ी बोली के कवि, राष्ट्रीय विचार के उदीयमान युग्म, गद्य पद्य लेखक, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आयुर्वेद मेडिकल-कॉलेज में २ वर्ष अभ्यास किया ।

उदाहरण—

हा मोती ।

भारत जननि दधि । अब तेरा खोया बही दुबारा ,  
उज्ज्वल मुख था तेरा जिममे, जो प्राणों का प्यारा ।  
तू अभिमान किया करता था जिमका आश्रय लेके ।  
तेरा वह सरवस्व आज ही चला गया है तज के ।  
छाता शीतल धरनेमाला आँखों की नवज्योती ,  
निर्धन तुझ दुखिया का वह धन आज खो गया मोती ।

नाम—( ४४६१ ) हरस्वरूप चतुर्वेदी, मैनपुरी ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२७ ।

विवरण—यह पंडित मुद्रालाहजी मिश्र के पुत्र हैं । अभी आप विद्यार्थी दशा में हैं ।

समय—संवत् १९८३ के अन्य कविगण

नाम—( ४४६२ ) आनंदीप्रसाद मिश्र 'निर्द्वंद' ।

सं० ११८३ चक्र

उत्तर नूतन

जन्म-काल—लगभग सं० १११८ ।

जन्म-स्थान—कजरापाटा रियासत ।

निवास-स्थान—ग्राम अगवानपुर, जिला मुरादाबाद ।

ग्रन्थ—समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में स्फुट लेख ।

विवरण—आप प० मुकुंदरामजी के पुत्र हैं । सार्वजनिक सस्थायों में अपनी युवावस्था से ही आप काम करने लगे हैं । समय समय पर यह नागरी प्रचारिणी सभा के उपमंत्री तथा हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की पराधाया के व्यवस्थापक रहे हैं । 'अध्यापक' और 'शंकर' पत्रों के ये भूतपूर्व संपादक हैं । इस समय 'खिलौना' पत्र से इनका विशेष संबंध है ।

नाम—( ४४१३ ) कामेश्वरीप्रसाद, साहबगज ( छपरा ) ।

जन्म-काल—लगभग सं० १६१८ ।

रचना-काल—सं० ११८३ ।

उदाहरण—

अथ स्वार्थतम का परदा, सत्वर हटा दे मोहन !

अथ आत्म त्याग-रवि की, आभा दिया दे मोहन ।

पूरव में फैल जाये, शुभ देश भक्ति लाजी,

मन पक्ष्यों की आशा, यूँ ही विष्ठा दे मोहन ।

महिला कमल-कली क्या, अथ लौं न लिख रही है ?

विद्या-मलय बहाकर, इनको खिजा दे मोहन ।

अज्ञान के निशाचर, हमको सता रहे हैं ।

चेतन्य शर से इनकी, गर्दन उड़ा दे मोहन ।

चेतों, मिलें, खड़ी हों, स्वत्वों को आज ले लें ;

विगढ़ी मेरी बना दे, शुभ दिन फिरा दे मोहन ।

नाम—( ४४१४ ) गुलावरन वाजपेयी 'गुलाब' ।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्ना यात्रु युगलकिशोरजी अखौरी की पुत्री हैं ।

नाम—( २४१० ) सोमदेव ( शर्मा ) सोमकवि ।

जन्म-काल—स० १९६४ ।

रचना-काल—स० १९८२ ।

रचना—स्फुट कविताएँ और साहित्य तथा आयुर्वेद पर लेख ।

विवरण—नवीगढ़, पो० बला, जिला अलीगढ़ के आय भवनोपदेशक प० खुर्नदन शर्मा ( सारस्वत ) के पुत्र हैं । बनारस की साहित्य-शास्त्री परीक्षा पास, पञ्जाब की शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण, संस्कृत और हिंदी प्रज्ञाभाषा तथा खड़ी बोली के कवि, राष्ट्रीय विचार के उदात्तनायक युवक, गद्य पद्य लेखक, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आयुर्वेद मेडिकल-कॉलेज में ६ वर्ष अभ्यास किया ।

उदाहरण—

हा मोती ।

भारत जननि देवि ! अब तेरा खोया वही दुलारा,  
उजबल मुख था तेरा जिसमें, जो प्राणों का प्यारा ।  
तू अभिमान किया करती थी, जिसका आश्रय लेके ;  
तेरा वह सरस्व आज़ ही चला गया है तज के ।  
छाता शीतल धरनेवाला आँसुओं की नख्योती  
निर्धन तुझ दुखिया का वह धन आज खो गया मोती ।

नाम—( ४४११ ) हरस्वरूप चतुर्वेदी, मैनपुरी ।

जन्म-काल—लगभग स० १९२७ ।

विवरण—यह पंडित मुन्नालालजी मिश्र के पुत्र हैं । अभी आप विद्यार्थी दशा में हैं ।

समय—संवत् १९८३ के अन्य कविगण

नाम—( ४४१२ ) आनंदीप्रसाद मिश्र 'निर्द्वंद्व' ।

जन्म-काल—लगभग सं० १६२८ ।

जन्म स्थान—भुलरापाटन रियासत ।

निवास-स्थान—भ्रान अवावानपुर, ज़िला मुरादाबाद ।

ग्रंथ—समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में स्फुट नेत्र ।

विवरण—आप प० मुकुंदरामजी के पुत्र हैं । सार्वजनिक सस्थाओं में अपनी युवावस्था से ही आप काम करने लगे हैं । समय-समय पर यह नागरी प्रचारिणी सभा के उपमंत्री तथा हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के व्यवस्थापक रहे हैं । 'अभ्यापक' और 'शक्र' पत्रों के ये भूतपूर्व संपादक हैं । इस समय 'खिलौना' पत्र से इनका विशेष संबंध है ।

नाम—( ४०६३ ) कामेश्वरप्रसाद, साहबगज ( छपरा ) ।

जन्म-काल—लगभग सं० १६२८ ।

रचना-काल—सं० १६८३ ।

उदाहरण—

अब स्वायत्तम का परदा, सन्वर हटा दे मोहन ।  
 अब धातम त्याग-रवि की, आभा दिवा दे मोहन ।  
 पूरब में फ़ैल चावे, शुभ देश भक्ति लाखी  
 मन पल्लवों के आशा, बूँद बिछा दे मोहन ।  
 महिला कमल-कली क्यों, अब लौं न खिल रही है ?  
 बिद्या-मलय बहाकर, इनको खिला दे मोहन ।  
 अज्ञान के निराचर, हमको सता रहे हैं ।  
 चैतन्य शर से इनकी, गर्दन उड़ा दे मोहन ।  
 चेहें, मिलें, खड़ी हा, स्वत्यों को आज ले लें,  
 बिगड़ी नेरी बना दे, शुभ दिन फिरा दे मोहन ।

नाम—( ४४६४ ) गुलावरन राजपेयी 'गुलाब' ।





विवरण—आप जाति के कायस्थ बाबू दामोदरसहायसिंह 'कवि किन्नर' के पुत्र हैं।

नाम—( ४४१० ) द्विज श्याम द्विवेदी, जिला बाँदा।

जन्म-काल—स० ११५३।

नाम—( १४१८ ) मार्कण्डेय पाठय 'मधु', सम्रेंदा, भगवान-पुर ( शाहाबाद )।

जन्म-काल—स० ११५३।

रचना-काल—लगभग स० ११८३।

विवरण—आप एक नवयुवक, उत्साही खेसक और 'देश-सेवक' पत्र के संपादक हैं।

उदाहरण—

बल छाती मनहर पनिहारिन जल भरने नहिं चाहै ;

झानी झँगिया के तारा से ही ब्रह्म भौंकेने चाहै।

प्रेम नगर का साँकर गलि से नेह निवारत चाहै ;

ध्रुवि-मयक के चित्रने चातक योंध जजीली चाहै।

निमल शीतल सरवर जल में प्रेम मीन को पाहै ;

उच्छ-भ्रमिक कर जानि थकेली ध्रुवि-वशीहि बभाहै।

सुरभित भाव-कुमुम की माता जीवन धन पहनाहै ;

लोचन-लाज जगाम जगाकर समय सकोच बुभाहै।

नाम—( ४४११ ) रघुवरदासजी महत, ग्राम हारट, तहसील हटा ( मध्यप्रान्त )।

जन्म-काल—स० ११४८।

रचना-काल—स० ११८३।

ग्रंथ—सुकुट कवितापूँ।

विवरण—आप शुभ्रवित्या मासिक पत्र 'किशोरमसाद' के पुत्र हैं। 'शर्म मूपण' पत्र में आपकी कवितापूँ प्रायः निकला करती हैं।

उदाहरण—

कोटिन अनग सुबि देव के निसार होय,  
 कोटिन तरनि नृति नुहद पै पाइ है ;  
 नालोत्पन्न सम ब्राह्मनि की विशाल शक्ति,  
 परति पै रदों की प्रभा दीरों की खलाई है ।  
 विहँसि विधिन जिभि ऊपा की चिन होय,  
 तिरली वितीनि चित मान्द म समाई है ,  
 अनुपम आभा रघुरान साव धानन की,  
 शक्ति प्रदायिनी श्री' संत मुखदाई है ।

नाम—( ४२०० ) रामेश्वरप्रसाद 'राम', वाड़ ( पटना ) ।

जन्म-काल—सं० १२२८ ।

उदाहरण—

चाह नहीं है, रायबहादुर बनकर मैं इतराऊँ ;  
 चाह नहीं है, बड़ा-बड़ा से सजकर हाथ दिखाऊँ ।  
 चाह नहीं है, जवन जाकर मैं भिस्तर बन घाऊँ ;  
 चाह नहीं है, बड़े जाट का मैं मेंबर बन जाऊँ ।  
 चाह यही है, जावन-पथ में राग द्रोप से तूर रूँ ।  
 चाह यही है, हिंद-देश की सेवा में भरपूर रूँ ।  
 चाह नहीं है, नेता बनकर सभा भवन में जाऊँ ;  
 चाह नहीं है, जनता की मैं पूजा शीरा चढ़ाऊँ ।  
 चाह नहीं है, कपट छद्म से त्यागवीर कहलाऊँ ;  
 चाह नहीं है, योगी बनकर तन में भस्म रमाऊँ ।  
 चाह यही जीवन की मेरे, दीनों का उद्धार करूँ ,  
 चाह यही है, भारत मा का हिल मिल बेड़ा पार करूँ ।

नाम—( ४२०१ ) सत्यनारायणसिंह, खुटाही पारु,  
 मुजफ्फरपुर ।

सं० ११८४ अंक

उत्तर नूतन

६२

जन्म-काल—सं० ११२८ ।

ग्रंथ—( १ ) पद्य सन्ध-घाप, ( २ ) हिंदी-गीता आदि ।

विवरण—घाप सावधूत-शुद्धांतरण धीयुत महाराजसिंह के पुत्र हैं ।

नाम—( ४२०२ ) सुरेश्वर पाठक, विद्यालकार, विशारद, रतौटा, राठगपुर, मुँगेर ।

जन्म-काल—सं० ११९३ ।

रचना-काल—लगभग सं० ११८३ ।

ग्रंथ—( १ ) रचना-मयक, ( २ ) पद्य विनय, ( ३ ) सपरी ( उपन्यास ) ।

विवरण—घाप प० अजयलाल पाठक के पुत्र श्रीर 'दश' पत्र के सहकारी संपादक हैं ।

समय—संवत् ११८४ के अन्य कविाण

नाम—( ४२०३ ) अजयविहारी अरवस्त्यो, 'विमल' ( कवि ) कान्यकुब्ज प्राक्षरण ।

जन्म-काल—सं० ११२६ ।

कविता-काल—सं० ११८४ ।

ग्रंथ—( १ ) नारी-संगत-रत्न, ( २ ) वेरया-शोष दशन, ( ३ ) जुआ शोष-दर्शन, ( ४ ) विधवा विज्ञाप आदि ।

विवरण—समादतगज लखनऊ में हिंदू-समाज सुधार कार्यालय सुद्धा हुआ है । उसमें आपने कई वर्ष परिश्रम करके लोक-हित के कार्य किए । बहुत से भजन भी आपने बनाए हैं ।

नाम—( ४२०४ ) ईश्वरीप्रसाद वर्मा 'शब्द' शोभासदन, मगरगली, ( पटना सिटी ) ।

जन्म-काल—सं० ११२६ ।

न पै पद्मिनी कौमुदी मोद-भाती ;  
सती को नहीं लपटी अदि भाती ।  
कहीं चाँदनी चक्र में चक्र-भाजा ;  
हुइ चक्रिता पा रही है कसाला ।

नाम—( ४२०८ ) गगासिंह एच्० एच्० महाराजा घरखारी ।

ग्रन्थ—तरंग-मंगल ( १३६४ ), ( प्र० त्रै० रि० ) ।

विवरण—धौर भी कई ग्रन्थ बनाए हैं । आपको हिंदी-कविता के विशेष प्रेम था ।

नाम—( ४२०९ ) मदनमोहन मिहिर ।

जन्म-काल—स० १९२६ ।

ग्रन्थ—( १ ) निसर्ग-गीत, ( २ ) जीवन-गीत, ( ३ ) प्रेम-गीत, ( ४ ) प्रकृति-कौतुक-वदना, ( ५ ) खोज ।

विवरण—आप नदूबाल मिहिर के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

हे मेरे आराध्य देव, कैसी है तेरी माया ।

जब जब तुमसे मिलने आई, कभी न तुमको पाया ;

नेत्र धके प्रभु-बाट जोहते, अब तो अश्रु-निकलता ।

दयासिंधु हो, दया न आती सुनकर मेरी दीन पुकार ;

अच्छा प्रियतम, तुम्हें बता दो, कैसे करूँ तुम्हें मैं प्यार ?

नाम—( ४२१० ) मंगलप्रसाद विश्वकर्मा ।

जन्म-काल—स० १९२९ ।

ग्रन्थ—( १ ) शेरसिंह, ( २ ) उत्सर्ग, ( ३ ) रोशनधारा, ( ४ ) रसुट कविता । ( खड़ी बोली की रचना करते हैं ) ।

नाम—( ४२११ ) मंगलप्रसादसिंह, पोखरपुर परसा  
( सारन ), बिहार प्रांत ।

जन्म-काल—स० १९६४ ।

रचना-काल—स० ११८४ ।

प्रय—( १ ) बिहार के नवयुवक-हृदय ( दो भाग ), ( २ ) बिहार के प्राचीन हिंदी-लेखक और कवि ।

विवरण—आप बिहार प्रांत के एक कान्वापुरागी पर साहित्योत्साही नवयुवक लेखक हैं । आप ठाकुर रामबहादुरसिंहजी के पुत्र हैं । हम लोगों को इस भाग की रचना में आपस निराल सहायता मिली है । एतदय आपका धन्यवाद है ।

नाम—( ४११० ) रामश्रवतार शर्मा खरोधी, भवानपुर ( पलामू ) ।

जम-काल—स० ११२२ ।

प्रय—( १ ) भारतप्रपंच का इतिहास, ( २ ) अनुवाद रमाकर, ( ३ ) शौचिक-जाति का इतिहास ।

उदाहरण—

विद्या का वर्णन

हैं अहर्निश इस जगत में ज्योति जिसकी जागती ।  
 देखते जिसकी प्रभा हिय की तमी है भागती ।  
 पात जिसकी मूक हो व्यापार पशुता मानती ।  
 दस जिसको साधुता शठता न इटता ठानती ।  
 तेज जिसका है निराबा देखकर जिसकी लपट ।  
 ह मुजसती मूसता मियते मनुब के छल-कपट ।  
 जो अर्जौचिक पशु है, ये आ धरा ये शामती ।  
 देव किधर नाग-नर-जड़-प्राण-मन को मोहती ।  
 व्योम-भू-पाताल में जिसकी छटाएँ सोहती ।  
 विश्व की सारी कलाएँ बाट जिसकी जोहती ।

नाम—( ४११३ ) रामप्रताप शुक्ल विशारद ।

—काल—स० ११६४ ।

नाम—( ४१३२ ) बलदेवप्रसाद ।

जन्म-काल—सं० ११९३ ।

रचना-काल—सं० ११८६ ।

प्रय—सुकुट लेख प्रीर छद ।

विरण—सकरकद गली, काशी निवासी । इनके पिता-पितामह  
ससृष्ट के प्रसिद्ध पदित तथा वैद्य थे ।

उदाहरण—

री चल उस जगती के अंचल, जहाँ सत्य ससार न हो ;  
जहाँ हृदय के रग मच पर, चिंता नृत्य अपार न हो ।  
चल चल उस जाती के अंचल, जहाँ प्रेम-व्यापार न हो ;  
जहाँ बनावट भीगी चितवन का, दिख पर आभार न हो ।  
दिन-मखि-स्पदन के पहियो से, पीस जाते तारे रोज ;  
किरण चूण क्या तुम उनकी हा, पिसते जा कि पिचारे रोज ।  
धूलि-क्या को साथ लिए हो, देती हो इस भाँति प्रबोध ;  
पद दजितां से प्रेम हृदय भर, मिळता भट ससार अपोध ।

नाम—( ४१३३ ) महादेवी वर्मा, प्रयाग निवासिनी ।

जन्म-काल—सं० ११९४ ।

रचना-काल—सं० ११८६ ।

प्रय—( १ ) नीहार, ( २ ) रश्मि । ( दोनो इनके पयों के  
संप्रद हैं ) ।

विरण—यह रहस्यवादात्मिका रचना करती हैं । अच्छी कवयित्री हैं ।

नाम—( ४१३४ ) माताप्रसाद त्रिपाठी 'महेश' लखरु  
शालियर निवासी ।

जन्म काल—सं० ११९६ ।

रचना-काल—सं० ११८६ ।

प्रय—सुकुट रचना ।

विवरण—आप खरकर में अध्यापक थे। अब तपस्वीजी हो गई हैं।

बदाहरण—

जब धल अनल अनिल क्य क्य मं नयजीवन सत्यर भर दे।

हृत्प्री की स्वर बहरी से निरव-मध झुठ कर दे।

तेरी मधुमय मादक तान सुनकर जागे हिंदुस्तान।

मधुर रागिनी गा रीणा पर कर दे पुनः प्रेम-सपार।

तान-वात पर मोहित हाकर थल्लि-थल्लि जावे सय समार।

तरे महत्त मगल गा सुनकर जाग हिंदुस्तान।

नाम—( १६३६ ) लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' पी० ए०, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग स० १३९६।

रचना-काल—स० १३८६।

विवरण—गल्प लेखक। इनकी श्री श्रीमती 'चकोरीजी' अर्थात् कविता करती हैं।

नाम—( ४६३६ ) रामेश्वरोदेवी मिश्र 'चकोरी', लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग स० १३७०।

रचना-काल—लगभग स० १३८६।

विवरण—आप लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' की पत्नी हैं। उष्ण कोटि का पत्र परिचर्या में आपकी रचनाएँ कई वर्षों से नियंत्रित रही हैं। अर्थात् कविता करती हैं।

नाम—( ४६३७ ) ललितानंदी पाठक पी० ए०, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग स० १३९८।

रचना-काल—स० १३८६।

विवरण—आप स्वर्गीय भीष्म पाठक की सुपुत्री हैं। हिंदी की अर्थात् लेखिका हैं।

नाम—( ४६३८ ) लक्ष्मीनारायणसिंहजी 'सुधाशु'।

जन्म काल—स० १९६२ ।

प्रथ—( १ ) कुमार ( संपादक कुमार-समिति, भागलपुर ),  
( २ ) भ्रातृ प्रेम ( प्रकाशक, धामुदेव मंडल, पूर्णिया ), ( ३ )  
गुलाब की कलियाँ ( प्रकाशक, ध्यानद-युक्तकमाख्या, पूर्णिया ), ( ४ )  
रस-रग ( प्रकाशक, सरस्वती प्रेस, काशी ) ।

विवरण—आपका जन्म रूपसपुर ( पो० घमदाहा, जिला पूर्णिया,  
बिहार ) ग्राम में हुआ था । आप बुंदेले क्षत्रिय हैं । आरंभ से ही  
आपको हिंदी से अनन्य प्रेम है । स्कूल जीवन में ही कुछ विद्यार्थियों  
ने 'कुमार' नामक मासिक पत्र छपाकर प्रकाशित किया, और आप  
उसके संपादक बने । उसके बाद 'भ्रातृ प्रेम'-नामक एक उपन्यास  
लिखा गया, और छपा । नव रसा पर एक-एक गल्प लिखकर  
आपने 'रस रग' प्रकाशित कराया, अनंतर आरहण्ड का आदोषन  
उठाया गया । आप सतति उसी का गवेषणा कर रहे हैं ।

नाम—( ४२३३ ) श्यामापति पाठेय एम० ए०, बिहार-प्रात-  
निवासी ।

जन्म-काल—लगभग स० १९६४ ।

रचना-काल—स० १९८२ ।

विवरण—गद्य पद्यकार ।

नाम—( ४२४० ) श्रीरत्न शुक्ल ।

जन्म-काल—स० १९६० ।

विवरण—जिला उन्नाव निवासी हिंदी के उत्साही लेखक ।

नाम—( ४२४१ ) सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' मुक्तफापुर,  
पटना ।

जन्म काल—स० १९६८ ।

प्रथ—कविका ( कविता-समूह ) ।



विवरण—आप १० रामावतार मिश्र के पुत्र और एक उत्साही नवयुवक कवि हैं ।

नाम—( ४२४२ ) सुधारानी विशारद, खालियर ।

जन्म-काल—लगभग सं० ११६० ।

रचना-काल—सं० ११८२ ।

विवरण—आप हिंदी की अच्छी लेखिका हैं ।

नाम—( ४२४३ ) हनुमह्याल अवस्थी 'हनुमत कवि' ।

जन्म-काल—स० ११६० ।

प्रथ—धरमग बावनी ।

विवरण—पिता का नाम श्यामबाल अवस्थी । पितृ विप्लव से इन कवि का पालन इनके मामा ने किया ।

उदाहरण—

नाशु - कपि - कटक बटोरिबे के हेतु पाय  
 चारिहु दिसान क गिरिन पर जातो कौन ;  
 वृहद पलीस यालि कीस को कराके बध  
 सो कित मुळ का मुराज पै मिठातो कौन ।  
 कृदि जातो उदधि अगाध कौन सिंह सम,  
 जलकि लँगूर ही तँ लक का जातो कौन ;  
 होतो हनुमत बली घोर जो न पप में, ती  
 साँची मुधि रामजी को सीय की मुनातो कौन ॥ १ ॥  
 बाबु रवि के-सो घर बदन कपीस को है,  
 स्वर्न - से सरीर पै लँगूर लमकत है ;  
 पीत कज से है मशु नैन पीत रग पारे,  
 धू बिलोकि काल को करेजो धमकत है ।  
 खोम लता राजत कपीस कमनाय, जाकी  
 धमकत जैसे बिगु चमकत है ।

यद्य नखवारे की मु हाँक हुमकत, मागी  
सीस पै गनीमन के गात्र गमकत है ॥ ३ ॥

नाम—( ४२४४ ) हरस्वरूपजी मिश्र 'हरेश', लरकर जालियर निवासी । पिता का नाम मुन्नालालजी मिश्र एम्० ए० ।

जन्म-काल—सं० १९६४ ।

रचना-काल—सं० १९८२ ।

प्रथम—स्फुट रचना ।

विवरण—घाण आगरा-कॉलेज से इस साल एम्० ए० तथा छात्र का इम्तिहान देंगे । कविता की ओर विशेष रुचि रखते हैं ।

उदाहरण—

भावना की भूख में उड़ाता गुण का सा गुद,  
तैरूँ बना हस कल्पना के मानसर में ;  
तरल तरंग में बनाके नाच कागज की  
तिनके की तरह चलाऊँ दिन - भर में ।  
खाता रहता हूँ मनमाने मनमोदक में,  
हूँसता हूँ देख - देख मञ्जुल मुकर में ;  
जानता नहीं हूँ कौन-सा है घर मेरा, किंतु  
धूमता हूँ अपना समझ घर घर में ।

नाम—( ४२४२ ) हरिकृष्ण 'प्रेमी', गुना ज्वालियर राज्य निवासी ।

जन्म-काल—सं० १९६८ ।

रचना-काल—सं० १९८२ ।

प्रथम—स्फुट कविता ।

विवरण—कविता बख्शी करते हैं। उद्भूत भाष-सुक्त देश-प्रेमी होने के कारण भाष इस समय जेल में हैं।

उदाहरण—

झालों में क्या-क्या है देखो झालों से झालोंपात्रे,  
 इन झालों ने बना दिए हैं झालों पंथे भलाबात्रे ।  
 इन पाणिन झालों ने तुमको यदि न कभी देखा होता,  
 तो मेरी छूटी किस्मत में कुछ तुम का देखा होता ।  
 बिय भी है, पीयूष बही है, प्रेम धरे यह क्या नाया ।  
 अखिल विरय की ब्याहा तुम्हें क्या केवल यह मेरी भाया ।

नाम—( ४६४६ ) हरिमोहन ग्रा धी० ए० ( अर्नर्स ),  
 बालीतपुर, मुजफ्फरपुर ।

जन्म-काल—सं० १९६२ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९८२ ।

प्रथ—सुट खेल तथा कविताएँ ।

विवरण—भाष 'बाइक' पत्र के सहकारी संपादक प० जगदीश  
 का 'जनसौदन' करि के पुत्र हैं ।

समय—सन् १९८६ के अन्य कविगण

नाम—( ४६४७ ) इ दुमती शर्मा, पटना ।

जन्म-काल—सं० १९६६ ।

प्रथ—सुट खेल ।

विवरण—यह स्वर्गीय धीमुक्त प० रामाचतारनी पद्म० ए०, पटना  
 की सुपुत्री हैं ।

नाम—( ४६४८ ) कालीचरण विशारद ।

जन्म-काल—सं० १९६६ ।

—सुट खेल ।

विवरण—काश्मिरगज निवासी वैश्य, सम्पन्न युवक, लेखक और कवि हैं।

नाम—( ४२४१ ) जगदीशानारायण तिवारी।

जन्म-काल—सं० ११६२।

ग्रंथ—( १ ) गीतिकाव्य, ( २ ) पाश्चात्य सम्पत्ता का दिवाण, ( ३ ) भक्ति-रहस्य, ( ४ ) कृष्ण उपदेश।

विवरण—आप हिम्मतपुर, जिला बलिया निवासी पंडित अविष्णु प्रसाद सरयूपारीय ब्राह्मण के पुत्र और साप्ताहिक जुगांतर के संपादक हैं।

नाम—( ४२२० ) ब्रह्मोदयी, बुलंदशहर।

जन्म-काल—लगभग सं० ११७०।

रचना-काल—सं० ११८६।

विवरण—आप नित्यानंद शर्मा एम्० ए० की धर्मपत्नी हैं। एम्० ए० तक अंगरेजी शिक्षा प्राप्त की है। आपके हिंदी के जेस परि काव्यों में निकलते रहते हैं।

नाम—( ४२२१ ) भगवतीप्रसाद त्रिवेदी 'कश्यपेश'।

जन्म-काल—सं० ११६६।

रचना-काल—सं० ११८६।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

विवरण—गढ़ी बरकप्राना मोहनबालगज, जिला लखनऊ में जन्म। आजकल दुर्गावाँ में रहते हैं। इनके पूर्वजों ने जिला बाराबंकी का त्रिवेदीगज बसाया तथा वहीं पास प्रहस्य किया।

उदाहरण—

पुगीत परिचय

वीन का तुकड़ हैं, कजिदजा का कूल हैं मैं,

रूप में मनुष्य, यही विधना की भूख हैं।

देश प्रेमियों के मनोप्यान का रसाज हैं मैं,  
 उर्हीं के मनोरथ - गर्भद की मैं मूज हैं ।  
 सुकवि जनों के षठ हार का तो पूज हैं मैं,  
 कृष्ण-राधिका के पा-तज की मैं पूज हैं ।  
 हिंदी, हिंद देश की समुद्रति का मूज हैं मैं,  
 शारदा भवानी का मैं भक्त अनुकूल हैं ।

नाम—( ४११२ ) भूधरनाथ मिश्र ।

जन्म-काल—स० ११६४ ।

रचना-काल—सं० ११८६ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

विवरण—रामपुर कलाँ, जिला सातापुर के पं० प्रभुदयाल  
 मिश्र के पुत्र तथा पं० अनूर शर्मा के शिष्य हैं । आप प्रायः चौर-  
 रस की रचना करते हैं ।

नाम—( ४११३ ) रामलखन पाडेय ।

जन्म-काल—सं० ११६१ ।

ग्रंथ—( १ ) बसंत-मुखा, ( २ ) विजय-वाटिका, ( ३ ) जलन-  
 विनोद ।

विवरण—मुहम्मदपुर, जिला गोंडा निवासी ।

नाम—( ४११४ ) रामेश्वरलाल रॉटिया सरदारशहर,  
 रियासत बीकानेर ।

जन्म-काल—स० ११६६ ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

नाम—( ४११५ ) निधावतीदेवी हरपुर ज्ञान, राजेपट्टी  
 ( सारन ) ।

जन्म-काल—स० ११६६ ।

विवरण—आप क्षत्रिय-कुलोत्पन्ना धीयुत कृष्णबहादुरसिंह की

जन्म-काल—सं० ११७० ।

रचना-काल—सं० ११८८ ।

प्रय—स्फुट रचना ।

उदाहरण—

किन्के हृदय-रक्त से रजित सभ्या की किरणें लुबिमान ।  
चमक-चमककर चमकाती हैं जीवन के वे सञ्जय गान ।  
जिनमें है उदास जगती के छिपे हुए फीके शर ।  
जिनके एक एक स्वर से तिसका करता भाई मुकुमार ।

नाम—( ४२७० ) दिनेशानदिनी चोरछा, नागपुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० ११७३ ।

रचना-काल—सं० ११८८ ।

विवरण—आपकी हिंदी गद्य-काव्य लिखने का प्रवृत्ता अभ्यास है । सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं । आप प्राकृतसर खामसुंदरलाल चोरछा की पुत्री हैं ।

नाम—( ४२७१ ) नाथूलाल त्रिवेदी ।

जन्म काल—सं० ११६२ ।

रचना-काल—सं० ११८८ ।

प्रय—प्रेम पचीमी ( अमुद्रित ) ।

विवरण—जीरापुर इंदौर निवासी ।

नाम—( ४२७२ ) पुरुषोत्तमलाल भागव एम्० ए०, शाली, सखनऊ निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० ११६२ ।

रचना काल—सं० ११८८ ।

विवरण—बाबू मुकुटविहारी भागव के पुत्र । गद्य पद्यकार ।

नाम—( ४२०३ ) प्रणवेश शर्मा, झानपुर निवासी ।

जन्म-काल—लगभग स० १९१३ ।

रचना-काल—स० १९८८ ।

विवरण—आपने 'अरर-नामक पुस्तक लिखी । 'सुख-संगीत' में भी अभिराम शर्मा की रचनाओं के साथ आपकी कविताएँ सम्मिलित हैं ।

नाम—( ४२०४ ) भगवान मिश्र 'निर्वाण', चंपानगर, भागलपुर ।

जन्म-काल—स० १९१३ ।

विवरण—कविता अच्छी लिखी है ।

उदाहरण—

धृति तितार के तारा पर उँगली की बंध पड़ती है मार,  
धृति-नोबर होती है तौ भी सुधा सनी सुदर न्नाह ।  
यह मुनकर उर बीच प्रवाहित हा उरती है नपरस धार ;  
हो जाता है ज्ञात कि यह है कति पूष सारा ससार ।  
सरस भाव सयुरु मनुज की मही दशा है नित है यार ;  
धनिक न विचलित दावे पाकर धु तों के आघात अपार ।  
प्रसुत धर उठते हैं भ्रष्ट हृदय-यत्र के सारे तार ;  
आघ शब्द से हो जाता है आप्यायित सारा ससार ।

नाम—( ४२०५ ) राजरानीदेवी मिश्र 'नलिनी', उजाय ।

जन्म-काल—लगभग स० १९०५ ।

रचना-काल—स० १९८८ ।

विवरण—आप द्वायावाद के ळग की अच्छी कविता करती हैं ।

नाम—( ४२०६ ) रामसिंह विशारद बी० ए०, बोस्नेर ।

विवरण—आप सोमर सत्ररूत गय-पत्र लेखक हैं । इस समय

आप हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

नाम—( ४२०० ) चागीश्वरोसिंह बगरहटा, शुमाङ्गयोद्दी  
( दरभंगा ) ।

जन्म काल—स० १६६३ ।

उदाहरण—

### सरस सूचना

अरुणोदय के प्रथम अरुणिमा की नभ में सुदूर मुसकान ;  
दिवस आगमन के पहले ही धन विहंग की फोमल तान ।  
विटप फलित होने के पहले नव किसलय छबि की छटकान ।  
कर देता मन मुग्ध काव्य के प्रथम फल्पना धाकर ध्यान ।  
होता प्रेम क्रिया के पहले नव यौवन मद का सचार ;  
धीर मिलन के प्रथम गँजते हत्तग्री के फोमल तार ।  
नाम—( ४२०८ ) विद्याधर शास्त्री, बीकानेर ।

प्रथ—यथार्थ दर्शन ।

विवरण—आप चूरु-निवासी गौड़ माझण २ । हिंदी गद्य के आप  
अच्छे लेखक हैं । आप इस समय नोबल हार्दस्ट्रल, बीकानेर में  
सस्ट्रत के अध्यापक हैं ।

नाम—( ४२०९ ) सीताराम वर्मा 'साधक', गुना, ग्वालियर-  
निवासी ।

जन्म-काल—स० १९०१ ।

रचना-काल—स० १९८८ ।

प्रथ—रुद्र रचना ।

उदाहरण—

जो तार मिथमिल - मिथमिल कर देला करते थे सपने ;  
जिन्हें देखकर मरी भी सखि, पलकें लगती थीं खँपने ।  
वह भी क्या रहे धपने !



यह मधु शत्रु की मादक सभ्या, यह चाँदी-सी उज्ज्वली रात,  
 यह किरणों का जाल मनोहर, यह सोने का मधुर प्रभात।  
 जानें कहीं गए अथात।

नाम—( ४२८० ) हरिकृष्ण प्रेमी, अजमेर।

रचना-काल—सं० १३८८।

प्रथ—दादूगर्नी।

विवरण—खड़ी बोली के कवि।

समय—संवत् १९८६

नाम—( ४२८१ ) गिरीश ओझा 'सुंदर'।

जन्म-काल—सं० १३६३।

रचना-काल—सं० १३८३।

प्रथ—स्तुत छंद तथा जेज।

विवरण—मिर्झालिया बाँसडीह के निरुद्ध जिला बलिया के  
 देवीशरण ओझा के पुत्र। गद्य पद्य-ज्ञेयक हैं।

नाम—( ४२८२ ) भगवतीचरण वर्मा, प्रयाग।

रचना-काल—सं० १३८३।

प्रथ—मधुकव्य (पद्य)।

विवरण—खड़ी बोली में रचना है।

नाम—( ४२८३ ) श्यामप्रिहारीलाल 'विरागी'।

जन्म-काल—सं० १३०१।

रचना-काल—सं० १३८३।

प्रथ—शमी अपूर्ण है।

विवरण—बाँसडीह, बलिया के मु० कृष्णकुमारदाज के कनिष्ठ  
 पुत्र। प्रयाग के क्लिती कॉलेज में अध्ययन कर रहे हैं। हिंदी के होन्-  
 हार गद्य पद्य-ज्ञेयक हैं।

समय—संवत् १६६०

नाम—( ४६८४ ) किशोरीरमण 'मतवाला' ।

जन्म-काल—स० १६०२ ।

रचना-काल—स० १६६० ।

धर्म—शुद्ध ब्रह्म तथा गद्य-लेख ।

विषय—राधारमण टडन बिसरा, जिन्हा सीवापुर के पुत्र हैं ।

'भारत', 'सुकवि' आदि में रचना कृपा करता है ।

नाम—( ४६८६ ) जगमोहननाथ अवस्थी 'मोहन' ।

जन्म-काल—स० १६६२ ।

रचना-काल—स० १६६० ।

विषय—आप अतनी के निकट खालीपुर में उत्पन्न हुए । आपके पिता का नाम प० शिवगोपाज है । हिंदा उर्दू मिस्त्रि पास करके अंगरेजी में इन्हें स परीक्षा पास की । इस समय डिस्ट्रिक्ट पाठ, बरेली में काम करते हैं । इनके लेख पत्र पत्रिकाओं में निकलते रहते हैं । हिंदी के अच्छे लेखक तथा कवि हैं ।

उदाहरण—

वीणा ग्यान, उँगलियाँ करित,  
 कैव भला बजाऊँ ?  
 गहन गर्व में गिरा हुआ हूँ,  
 तुम तक कैसे आऊँ ?  
 पय ठमकीन मकीन ज्योति तप  
 खलकर भागे आऊँ ;  
 भंड बुमुम निर्गंध न क्योंकर  
 पावन पागन चढ़ाऊँ ।  
 अमित उदार न छीय देना  
 'मोहन' का यह छन्द उपहार ;

'मिथर्व' हो मिथित कर खो,  
 कान्यकुब्ज नवयुवकाधार ।  
 सुमन आकाश

( १ )

नहीं चाहता मैं बन को  
 अपनी सुरास से भर दूँ ;  
 किंतु मिठाकर अपने को,  
 शृंगार किसी का कर दूँ ।

( २ )

नहीं चाहता कामिनियों के  
 कतु - लठ पर मूखूँ ,  
 नहीं चाहता मैं डाढी पर  
 फूज - फूजकर दूखूँ ।

( ३ )

नहीं चाहता प्रभु - पूजा में  
 लोग मुझे अपनावें ;  
 प्रणय प्रणयिनी भाव - भरा  
 मुझको उपहार बनावें ।

( ४ )

मैं 'सुहाग की रात' मात्र में  
 नहीं चाहता जाऊँ ;  
 धन बैरी या काम वाण की  
 नोक न मैं धन जाऊँ ।

( ५ )

निभृत-कुंज में लिबने दो,  
 बस हिला करे पलुदियाँ ;

आइंवर यिन मिट्टी में  
मिळ जाऊँ चावें परिर्मा ।

( ६ )

गुरकाकर भी देश - धूळि मं  
पँसुड़ी - पँसुड़ी सनी रहे ।  
बलि वेदी पर चरूँ, चीर  
मरी बलि-वदी चनी रहे ।  
रसिक - शिरोमणि मिश्रपद्य  
दो भाज-कज जो सौरम दान ।  
मोट तुच्छ ही सही, किंतु—  
धय कर जें यह स्वीकृत थीमान् ।

नाम—( ११०६ ) चोरद्वहादुरसिंह 'लाल' ससृष्ट हिंदी-  
कवि, सेमरो, जिला रायबरेली ।

जन्म काल—सं० ११६१ ।

रचना-काल—सं० १११० ।

प्रथ—ससृष्ट में ( १ ) वीरेंद्र वपनावली ( प्रकाशित ),  
( २ ) प्रह्लापि विलास, ( ३ ) स्तुति मालिका ।

विवरण—आप श्रीमान् रघुराजसिंह तथस्त्वुद्गदार सेमरो, जिला  
रायबरेली के द्वितीय पुत्र हैं । आपने ससृष्ट, भँगरेजी तथा हिंदी  
पढ़ी है । भँगरेजी में एम्० ए० की परीक्षा देकर पदनायक कर दिया ।  
कविता से विशेष प्रेम है, ससृष्ट और हिंदी की कविता अच्छी  
करते हैं । बड़े ही होशदार युवक हैं ।

उदाहरण—

देवि

त्वदीयपदरङ्गकान्तिपुञ्ज-

सन्धीप्तिमानयमुदेति

। सहधरिभः ।

वित्वाश्रये

निविश्वैभवदपिचित्त्व-

मम्य प्रसीद परमेश्वरि पाद्वि लोकात् ॥ १ ॥  
 -बादेष तव पदपत्र का ही कातिपुत्र दिनेश है,  
 उस काति का सुप्रकार भानोदय प्रकार विशेष है।  
 हे विरवके! इ आश्रये! ऐश्वर्य का तुम रूप हो,  
 मा! लोक की रक्षा करो, तुमहीं प्रसन्न स्वरूप हो।  
 नैपोरित सूर्यो घुमणिरच नैव  
 नैषाम्निराशिर्न च कान्तिपुम्न ।  
 उदेति ससारशिवाय नित्यं

त्वदीय पादाम्बुजरेणुपिचदः ॥ २ ॥

कर दे प्रवृत्त जो कर्म में, यह भातु तो वह है नहीं।  
 यह घुमणि अथवा अग्नि की भी राशि दिखजाता नहीं।  
 यह काति-पुत्र नहीं, उरु ससार-चारण जानते,  
 तब कज-पग-युग-रंशु का यत्त रिच हमको मानते।

प्रक्षायदजन्मस्थितिनाशहेतु

शक्ति सदा या श्रयते महय ।

सा त्व विशुद्धा प्रयतमसत्रा

मर्षस्वरी पातु सुखमदा न ॥ ३ ॥

प्रक्षाय के उत्पत्ति, पालन और नित संहार म—  
 ईश्वर बजाता काय नित जिस शक्ति क आधार में।  
 तुम हो वही निज भक्त की मानस विहारिणि अशिक्षे!  
 हे! शक्ति हो सुखदायिनी रक्षा करो 'अनिल'।

नाम—( ४२२७ ) ए० ए० दे 'अनिल'।  
 जन्म-काव्य—स० ११५२।

रचना-काव्य—स० ११५०।

विवरण—आप प्रयाग निवासी स्व० मजेंद्रकाव्य के तृतीय पुत्र

हैं। सन् १९२० ई० में खसनऊ से डॉक्टरी पास की। छात्ररूप  
 रायपुरेजी में प्राइवेट प्रेक्टिस करते हैं। बँगला, हिंदी तथा संगीत  
 के विशेष प्रेमी हैं। चित्राकन से भी प्रेम है। यद्ये ही बत्साही तथा  
 कवितासुरागी युवक हैं।

बदाहरण—

### भारतवर्ष

( १ )

नीच जबधि से उठकर आई  
 जिस दिन जननी भारतवर्ष,  
 जग विरव में मुख का कखरव  
 भक्ति, प्रति श्री' महान हर्ष।  
 प्रभा तुम्हारी प्रभात जाई,  
 शेष हुई दुख की रजनी,  
 दुःख घटना—“जय जग धात्री !  
 जगत्तारिणी ! जय जननी !”  
 धन्य हुई है धरणी तेरे  
 चरण-कमल का पा स्पर्श !  
 गाई—“जय जय जग-मोहिनी !  
 जग का जननी भारतवर्ष !”

( २ )

सखस्नान स वसत सिद्ध है,  
 पिछुर सिधु के शीकर छित्त ;  
 शीघ्र गरिमा विमल हास्य स  
 अमल कमल ध्यानन है दीत !  
 गगन घेरकर करते नर्तन  
 चारावर्ती तपन श्री' श्वर ;

मग्न - मुग्ध धर्यों पर फेरिब  
 जबधि गरजता जलमय मग्न !  
 धन्य हुई है धर्या तरे  
 धरय कमल का पा स्पर्श !  
 गाई—“जय जय जगन्मोहिनी !  
 जग की जननी भारतवर्ष !”

( ३ )

शुभ तुषार - किरीट शीप पर,  
 जबधि - उर्मि धरे जया ;  
 पद्म पिलवित मुप्रामात्रा  
 पद्म सिंधु, जमुना, गंगा !  
 उत्तरी दीप्त मीपण मय - भू में  
 कभी प्रकट होती, जननी !  
 रयाम सस्य के मधुर हास्य में  
 विहसित कभी निखिल शयनी !  
 धन्य हुई है धर्या तरे  
 धरय-कमल का पा स्पर्श !  
 गाई—“जय जय जग-मोहिनी !  
 जग की जननी भारतवर्ष !”

( ४ )

पवन गगन में प्रवल स्तन में  
 गरज - गरजकर अपरिघात ,  
 धवनत होकर पिक फन्तरय से  
 चूमै तेरा धरय - प्रसन्न !  
 नम पर धारिद कुबिण - पाठ से  
 फरके प्रलय - सखिब की वृष्टि,

पद म तेर कुज - कुज में  
 करता कुमुम गध की छटि !  
 धन्य हुई है धरणी तेरे  
 चरख - कमल का पा स्वर्ण !  
 गाई—“जय जय जगन्मोहिनी !  
 जग का जननी भारतवर्ष !”

( १ )

शांति वश में जननी तर ,  
 मधुर कठ में है भ्रमयोक्ति !  
 करती वितरण अन्न करों से,  
 चरखों से देती है मुक्ति !  
 जननी, तुम्हने सतति पर है  
 कितना वेदन, कितना दर्प !  
 जगत् - पाजिन ! जगत्कारिणी !  
 जग की जननी भारतवर्ष !  
 धन्य हुई है धरणी तेर  
 चरख-कमल का पा स्वर्ण !  
 गाई—“जय जय जगन्माहिनी !  
 जग की जननी भारतवर्ष !”

नाम—( ४२८८ ) दयाशंकर वाजपेयी ‘गिरीश’ ।

जन्म-काल—स० १९४६ ।

रचना-काल—स० १९६० ।

धर्म—स्फुट छंद ।

विवरण—आप प० कदारनाथ के पुत्र, जन्म स्थान केजोडी,  
 जिला रायचरोडी । आप हिंदी, बँगला जानते हैं, बँगरेजी की शिक्षा



इद्वैत तक पाई है। बहुत दिन तक रामा साहब खजूरगाँव के यहाँ सरसराहकार रहे, अब घर पर जमींदारी का प्रबंध करते हैं।

उदाहरण—

ज्या मातु गोद के निर्दारे परभात बाल,  
 उठिए 'गिरीश' नन मोद उपनाइए;  
 पक्षी गण गाय भी' बजाय बेनु पीन तुग्दै  
 ताल दै जगावत ह बाल, जग जाइए।  
 कमल पिलौना थी' दिठाना घचरीक चारु,  
 भाँगुली नवल टोप ररिमयी सजाइए;  
 प्रकृति सुरम्यता मुकुर प्रतिबिम्ब पेदि  
 किलकि-किलकिकर तालियोँ बजाइए।

नाम—( ४२८६ ) प० चंद्रशेखर मिश्र 'अशोप'।

विवरण—आपका जन्म कार्तिक कृष्ण १३, सवत् १९२२ म,  
 ग्राम रायपुर, तहसील पुरवा, जिला उधवा में हुआ। आपका पिता  
 का नाम प० गदाधरप्रसादजी मिश्र है। आप कान्यकुब्ज वास्य हैं।  
 प्रथम आपको उदूँभापा की शिक्षा दी गई, और भगवंत  
 नगर-स्कूल, जिला उधवा से उदूँमिडिल की परीक्षा सन् १९१२  
 ई० में पास की, परंतु अँगरेजी शिक्षा हिंदी और सस्कृत लेकर  
 स्पेशल क्लास से प्रारंभ की, और सन् १९१८ ई० में स्कूल-  
 बीविंग-परीक्षा गवर्नमेंट हाईस्कूल, रायबरेली से पास की, और  
 सेकेंड हयर एक्० ए० की परीक्षा सन् १९२० ई० में कैनिंग-  
 कॉलेज, छधनऊ से दी। सवत् १९७३ में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन  
 की प्रथमा परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर पुरस्कार प्राप्त  
 किया। सन् १९२३ से डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड ऑफिस, रायबरेली में  
 नौकर हैं, और इस समय एकाउंटेंट के पद पर नियुक्त हैं।

परमात्मा का भजन करना ही आपका लक्ष्य है

आज एक स दो-बड़े सभों सम्मेलनों में आज हुई समझौते की दौरे करने ही विषय में की है। कविता का आरंभ सन् १९१८ ई० में।

उदाहरण—

आने वह आनना है दिन में, जिसमें विष-बीज जात करते;  
 धरत पग हा कय साध में, जिसमें नद कीरे पुष्पा करते।  
 जित मणि की आनना धरत हा, उत करि भिगोव कय करते।  
 कल्पति 'मयव' की आनना सभों, जित धोखे गुहरे भी रिख करते।  
 मक-मिषु तर्क बहाली मुख, निराधार अपार गुना करते।  
 बिन रहे। कृग नई पार मिक, कहु सय 'मयव' किय करते।  
 कपी एक है कालिन में व सही, कलि में हमसे भी रिख करते।  
 नरगो में गुहारे जो आप्र मना, हात दाव को पार जगा करते।

नम—( १२१० ) पं० रामाचरजी गुरुल 'वापुर'।

विशय—इसका जन्म विष्णुजीव सन् १९२० में, जिजा राजबोडी के अठगंत मुहुरजा सापुर म हुआ। इनके पिता पं० बंकाचरजी गुरुल एक प्रसिद्ध पकीज तथा बड़े जमीदार थे। यह आने जीव भाताजी ने सबसे कवि हैं। अष्टम भाता पं० गणेशचरजी गुरुल जिजा सापुरजी म प्रसिद्ध 'पटशका' हैं। तथा दूसरे भाता पं० शारिकाचरजी गुरुल 'उकर गारा में मयव हैं। और प्रसिद्ध कवि हैं। सापुरका ही स वापुर'जी को दिहा से विष्णु अनुप था। इन्होंने पद-रचना भीत साज की ही वापु से आरंभ की थी। साहित्य-मग के भाव से मेरि होख आने एक साहित्यिक मजद की रपारग सापुरेजी में की है, जो 'वापुर-मंज' के नाम से प्रसिद्ध है। भापकी कवित्व-उरि के परिषयार्थ कुय धर जीव विपु गए हैं।

उदाहरण—

जादि मुमिरत सिद्धि सकल मुकाद होत,

पाप ह पराव धरि एकई रदन को;

विघ्न विनाशन में 'घातुर' चतुर जोई,  
 बार बिकराल काब - जाल भरदन को।  
 देश घ्री' विदेश हू में खेय न कबेश० जन  
 खोवत जो तिहुँ ताप श्रीगुन-सदन को,  
 बार-बार चरन-कमल ध्याय धंदत हौं,  
 बारन - बदन सुत मदन - कदन को।  
 कज लागे खिन्न मर्खिद मँडरान लागे,  
 विहँगावली हू इत उत बगरै लगी,  
 भरि मकरद सुधा सौरभ बिलारि रखो,  
 पुहुप लतान टोली भूमि महरै लगी।  
 काबिमा दुराय स्वर्ण अथर गगन धारि,  
 'घातुर' समीर सीरी-सीरी सहरे लगी,  
 प्रकृति-नटी मनो उत्तारि वख रंधाम धारे,  
 बसन सुरग अग छवि अहरै लगी।

नाम—( ४२६१ ) भगवानवक्स ठाकुर 'भगवान' चिलौली,  
 रायवरेली।

जन्म-काल—स० १६२१

ANARCHAND BHAIRODAS SETHIA  
 JAIN LIBRARY.  
 BIKANER, RAJPUTANA.

विवरण—स्फुट कविता।

उदाहरण—

मेरो धाम प्रान लघु नाम है चिलौली, ताहि  
 शाख जो तिबोई की है प्रात है बरेली राय,  
 तामें अति लघु जमींदार भगवान हू है,  
 पितु बागेश्वर शील सिधु सहजै स्वभाय।  
 माधीसिंह नाम क्याति जानिपु पितामह का,  
 जाति कान्ह प्रथ, गोत्र मरदाज मुनिराय।



## कवि-नाम्नावली

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
अरुला	३४	धमरनाथ झा (एम्.ए.)	६००
अत्रिबानन्द शर्मा	४३३	अमृतबाल	२७७
अखेराज	७७	अमृतानन्द स्वामी	१२२
अचलसिंह	८६	अमीरअली	२७७
अजबदास	२७१	अमीरराय	२६०
अजमरीजी	२६४	अमीरराय नभुआ	४२३
अनजुलाल सेठी	१६८	अयोध्यानाथ	१७३
अनकृबाल	१०४	अयोध्यानाथ शर्मा	६०३
अनन्य प्रधान	३१०	अयोध्यासिंह उपाध्याय	१७६
अनिन्द चौबे	२६७	अयध उपाध्याय	४७६
अनिन्ददास	२७४	अयधकिशोरसहाय वर्मा	६४७
अनिन्दबाल	६६३	अयधविहारी	६२३
अनिन्दसिंह	२६०	अयधविहारीबाल शर्मा	६४२
अनूपबाल मडल	४७६	अयधविहारी धीवास्तव	६८०
अनूप शर्मा	६४६	अयधविहारीबाल माथुर	४००
अनतराम	२७७	अशरफ़ीबाल	४३६
अभिराम शर्मा	६२६	अक्षयवट मिश्र	२३४
अमरकृष्ण चौबे	२४६	अक्षयवरप्रसाद	२७७
अमरदास	७८	अज्ञात ३८, ४७, ७३, १२२	
अमरनाथ झा	६८६	अज्ञानदास	४२



## कवि-काम-कली

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
अकला	३३	अमरनाथ झा (पृ००८०)	६००
अखिलानंद शर्मा	२३३	अमृतलाल	२५७
अखेराज	७७	अमृतानंद स्वामी	१२२
अचलसिंह	८६	अमीरखली	२७७
अनवरदास	२७१	अमीरराय	२६०
अमेरीजी	२६२	अमीरराय भुष्मा	४२३
अनजुलाब सेठी	१६८	अयोध्यानाथ	१७३
अद्वैतलाल	१०४	अयोध्यानाथ शर्मा	६०३
अनन्य प्रधान	३१०	अयोध्यासिंह उपाध्याय	१७६
अनिरुद्ध चौबे	२६७	अवध उपाध्याय	४७६
अनिरुद्धदास	२७४	अवधकिशोरसहाय वर्मा	६४७
अनिरुद्धलाल	६६६	अवधविहारी	६६३
अनिरुद्धसिंह	२६०	अवधविहारीलाल शर्मा	६४२
अनूपलाल मडल	४७६	अवधविहारी श्रीवास्तव	६८०
अनूप शर्मा	६४६	अवधविहारीलाल माथुर	४००
अनतराम	२७७	अशरफीलाल	४३६
अभिराम शर्मा	६२६	अक्षयवट मिश्र	२३४
अमरकृष्ण चौबे	२४६	अक्षयवरप्रसाद	२७७
अमरदास	७८	अज्ञात ३८, ४७, ७३, १२२	१२२
अमरनाथ झा	६८६	अज्ञानदास	२२





## कवि-काष्ठाकली

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
अक्ता	३४	अमरनाथ झा (एम्०ए०)	६००
अखिलानंद शर्मा	४३३	अमृतलाल	२७७
अपेराज	७७	अमृतानंद स्वामी	१२२
अचलसिंह	८६	अमीरअली	२७७
अजबदास	२७१	अमीरराय	२६०
अजमेराजी	२५४	अमीरराय भभुआ	४२३
अनजुलाब सेठी	१६८	अयोध्यानाथ	१७३
अइकूलाल	१०४	अयोध्यानाथ शर्मा	६०३
अनय प्रधान	३१०	अयोध्यासिंह उपाध्याय	१७५
अनिरुद्ध चौबे	२६७	अवध उपाध्याय	४७५
अनिरुद्धदास	१७४	अवधकिशोरमहाय वर्मा	५४७
अनिरुद्धलाल	५६६	अवधविहारी	६२३
अनिरुद्धसिंह	२६०	अवधविहारीलाल शर्मा	६४२
अनूपलाल मडल	४७५	अवधविहारी धीवास्तव	५८०
अनूप शर्मा	५४६	अवधविहारीलाल माथुर	४००
अनतराम	१७७	अशरफीलाल	४३६
अभिराम शर्मा	१२६	अक्षयवट मिश्र	२३४
अमरकृष्ण चौबे	२४६	अक्षयवरप्रसाद	२७७
अमरदास	७८	अज्ञात ३८, ४७, ७३, १२२	
अमरनाथ झा	५८३	अज्ञानदास	४२

नाम	पृष्ठ
आत्माराम	४२, २७३
आत्माराम देवकर	३४२
आनदतनय	४८
आनदीप्रसाद मिश्र	६१८
आयदेव	१०
आशाधर	६४
इक्रबाल घहादुर वर्मा	२००
इंद्रजी	३७८
इंद्रजीत	२८७
इंद्रजीत महारानकुमार	२२
इंद्रदेवनारायण शर्मा	१२३
इंद्रदेवलाल	४३७
इंदिरादेवी	६४३
इंदुपालादेवी	२२२
इंदुमती शर्मा	६३६
इशाभल्लार्खी	६८
ईश्वरदत्त	२७२
ईश्वरी	१७०
ईश्वरीप्रतापनारायण राय	१२३
ईश्वरीप्रसाद	२७२, २६३
ईश्वरीप्रसाद वर्मा	६२३
ईश्वरीप्रसाद शर्मा	२०२
उषेश्वरप्रसादसिंह	२७०
उदिया बाबा	४७२
उद्वव चिद्घन	२१

नाम	पृष्ठ
उदयनारायण	४४६
उदयनारायणसिंह	३१०
उदयभा	६७
उदयलाल	२७८
उदयशकर भट्ट	२२२
उदितनारायणलाल	२७८
उदित मिश्र	४७२
उपेंद्रनाथ मिश्र	६२२
उमरावसिंह कारुणिक	१७४
उमरावसिंह पांडे	४७६
उमापतिजी	२४
उमाशकर	४२४
उमाशकर वाजपेयी	२४८
ऊधव	१२३
ऊधोदास	३१०
ऋषिकेश	६८
ऋषिदेव ओम्हा	१६८
ऋषिलाल	२६१
ऋषिलाल साह	४१६
एन्०एल्० दे 'अनिळ'	६२३
एनानंद	८४
ओमप्रकाश	६४०
ओरोलाल शर्मा	२८४
ओंकारनाथ पांडेय	२६३
ओंकारनाथ वाजपेयी	४२७

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
अगदप्रसाद	२७१	कृष्णकुमारजाज	३०४
अयादच	१२२	कृष्णचन्द्र	४१६
अधिकदत्त त्रिपाठी	४०३	कृष्णदत्त शास्त्री	५६४
अविक्रमसाद वाजपेयी	४२३	कृष्णदास	३३
अविक्रमसाद त्रिपाठी	२६६	कृष्णदास वैश्य	३७६
अण्डहा	१६	कृष्णानन्द पाटक	४३४
कर्दवलाल गोस्वामी	४५०	कृष्णरत्नदेव स्वामी	२१६
कनककुशल भट्टारक	६६	कृष्ण प्रसन्नभट्ट	२८६
कनकलता	१६८	कृष्णलाल वर्मा	२८४
कन्हैयालाल	२६६, २८६	कृष्णनिहारी मिश्र	३७६
कन्हैयालाल जैन	४७२	कृष्णसिंह	४५४
कन्हैयालाल पोद्दार	१७७	कान्दलाल	२७४
कन्हैयालाल माधुर	२५५	कामताप्रसाद	१२०
कनरहीन	६२३	कामताप्रसाद गुरु	१६८
कमलदवनारायण	६०४	कामेश्वरीप्रसाद	६१६
कमलाप्रसाद	२५६	कार्तिकेयचरण	५१७
कमलाबाई किवे	४७७	कालिकाप्रसाद	१०३, ११२
कमलावती	२८६	कालिदास कपूर	४७७
कणदान	५८	कालीचरण	६३६
कर्णसिंह चहैदौजी	४५०	कालीप्रसाद भटनागर	६३०
करुणाशकर	६३०	कालीप्रसाद भट्ट	११८
करुणाथकुमार	६४२	कालीप्रसाद त्रिपाठी	५४३
कल्या प्रजवलभजी	४७७	कालीशकर ग्यास	२८४
कृपाराम	७८	कालूराम	८३
कृष्णकांत मालवीय	३६०	कालूराम द्विवेदी	३४२

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
काशीनाथ	११५	केसरकुमारीदेवी	६१३
काशीनाथ द्विवेदी	५१८	केहरि	३५
काशीप्रसाद नायसवाल	३०८	कैलासनाथ	२६८
क्रिश्नलाल	३०३	कैलासरानी बाटल	३१०
किशारसिंह	३१०	कौशलेन्द्र राठौर	५४३
किशारसिंह काधल	६६	ककणपाद	२५
किशोरीदास	४७७	कवलपाद	२३
किशोरीरमण	६५०	खगेश कवि	४५५
किशोरीलाल गोस्वामी	१७३	खड्गजीत मिश्र	२६१
कीर्तिनारायणसिंह	४२३	खरगसेन	८२
कुन्करिपा	१२	खलरुसिंहदेव	३६३
कुजदासी	२६१	खुजासीराम	२८७
कुनविहारीशरण	३१०	खूबकृष्ण	१२३
कुन्दलाल	२७२	खूबचद शास्त्री	६१३
केदारनाथ	३०७, २७८	खूबचद सोधिया	५६४
केदारनाथ चतुर्वेदी	२७८	खेमदास	३३
केदारनाथ मिश्र	६११	खजनसिंह	४०१
केराव मिश्र	३१	गजराजसिंह	२७४
केशव ( रीवा निवासी )	४७६	गजाधरप्रसाद	२६१
केशवप्रवरा सगमकर	७२	गणधर सूरि	८७
केशवप्रसाद ब्राह्मण	३०३	गणपतराव	६५
केशवराव	५३, ८३	गणपति	१२३
केशवलाल झा	४०५	गणपति मिश्र	२८२
केशव स्वामी	४४	गणेशदत्त शर्मा	५०३
केशवानन्द रामचन्द्र	५५	गणेशदत्त शास्त्री	२४०

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
गणेशप्रसाद	२८६, ४२७	गिरीशचन्द्र चतुर्वेदी	१६५
गणेशप्रसाद मिश्र	२६७	गिरीशचन्द्र पत	६४५
गणेश रामचन्द्र	४३७	ग्रीवृज	१२१
गणेशविहारी मिश्र	१७६	गुणभद्र सूरि	८८
गणेशशरणा विद्यार्थी	४०४	गुरदयाल त्रिपाठी	२६१
गदाधरप्रसाद	४३७, ६३०	गुरदीन भाट	२६६
गदाधरप्रसाद अत्रष्ट	१२६	गुरनारायण भट्ट	३२
गदाधरसिंह	२०८, ३६१, २६७	गुरभद्रसिंह	४०७
गनपाल	४३७	गुलाबचन्द्र	१६६
गन्धू कवि	८३	गुलाबराज	६१६
गयाप्रसाद	४२७, १०६	गुलाबराय	३६४
गयाप्रसाद शर्मा	१७०	गुडरीपाद	१४
गयाप्रसाद शास्त्री	३७५	गदालाल मिश्र	२६७
गयाप्रसादजी 'सनेहा'	२५६	गोकुलचन्द्र	६०
गयद कवि	३६	गोकुलचन्द्र मिश्र	३११
गरीबदास गोस्वामी	११५	गोकुलनाथ	२६७
गिरिनाकुमार घोष	३११	गोकुलप्रसाद	२४५, ३११
गिरिनादयाल 'गिरीश'	१३४	गोकुलानन्दप्रसाद	३०४
गिरिनाशरण	४३७	गोप भाट	१२४
गिरिधर	४८, ६०, १०२	गोप्यधलीदेवी	२२४
गिरिधरप्रसाद	२६७	गोपालजी	१२१
गिरिधर शर्मा	३४८	गोपाल दामोदर तामस्कर	४६१
गिरिधारी	२६१	गोपालदास	२६७, २७२
गिरिधारीलाल	३११	गोपालदास बरैया	२७८
गिरिश शोभा	६४३	गोपालदास बल्लभशरण्य	२६८

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
गोपालदीन शुक्ल	२८०	गौरीशंकर भट्ट	२८२
गोपालदेवी	२५६	गौरीशंकर पथिक	४०१
गोपालनाथ	१२४	गौरीशंकरप्रसाद	४२४
गोपालप्रसाद	२६१	गंगादीन	७०
गोपाललाल	२७४	गंगाधर व्यास	६६
गोपालचन्द्रम	२८७	गंगाधर प्रधान	६१
गोपालशरणसिंह	४५१	गंगानाथ भ्वा	२३५
गोपालसिंह	५३	गंगानारायण द्विवेदी	४५२
गोपीकृष्ण विजयवर्गीय	६०४	गंगानन्दसिंह	५२६
गोपीनाथ वर्मा	६०४, ६१२	गंगामसाद	२५१
गारेलाल	३०५	गंगामसाद अग्निहोत्री	२१६
गावदू न	५४	गंगामसाद उपाध्याय	३५५
गोवर्द्धननाथ	४२७	गंगामसाद गुप्त	२४०
गोवर्द्धनलाल	२६८, ४२०, ४६६	गंगामसाद मेहता	५२७
गोविन्ददास	४८, ३०७	गंगामसाद धीवास्तव	४०१
गोविन्ददास व्यास	४२०	गंगामसादसिंह	६१७
गोविन्दप्रसाद जूदेव	४५६	गंगावन्धु ठाकुर	२६१
गोविन्दलाल अग्र	५५८	गंगाराम	७३
गोविन्द शुक्ल	४५५	गंगाशरणसिंह	५७५
गोविन्दबल्लभ पंत	३८०	गंगाशंकर पचीजी	२०६
गौरचरण	४३७	गंगासिंह महाराजा	६२६
गौरीशंकर	२६८, २७५	गंगेश	४०
गौरीशंकर ओझा	६४५	गधर्वसिंह वर्मा	६३१
गौरीशंकर गुरु	१६६	घनरयामात्री	६०४
गौरीशंकर द्विवेदी	४०८, ५६०	घासीराम व्यास	५१६

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
चक्रधरसिंह राजा	११४	चंद्रभानुसिंह	३६८
चक्रपाणि त्रिपाठी	३००	चंद्रमतीदेवी	४७६
चतुर	१२४	चंद्रमनोहर	३४६
चतुरद	३६	चंद्रमाया	२२०
चतुरदान	१२४	चंद्रमौलि सुकुब	३२६
चतुरदास	१२४	चंद्ररान भदारी	४२१
चतुभुज	३०	चंद्रलाल गोस्वामी	४३८
चतुभु जबास स्वामी	३११	चंद्रशेखर	४३४
चतुभु जसहाय	३०८	चंद्रशेखर मिश्र	४२१
चतुरसिंह राष्ट्रवर	३८१	चंद्रशेखर शास्त्री	३६२, ६१४
चतुरसिंह रूपादेवी	४२४	चदायाइ जैन	३८२
चतुरसेन शास्त्री	३७६	चंद्रावतीदेवी	२७८
चावडीजी	८०	चंद्रिकाप्रसाद मिश्र	४३८
चाँदव्य शासन	६२	चपा दे रानी	७६
चाँदसिंह	३१२	चपाराम	३१२
चिरजीलाल	३१२	चपालाल जीहरी	४२१
चुष्मीलाल पाठेय	४२२	छकनलाल	२६२
चुष्मीलाल मिश्र	३०४	छबीले गोस्वामी	३१३
चेतराम	७२	छमीलेलाल गोस्वामी	३१२
चडीप्रसाद	६०४	छत्रशाहदेव	१२४
चदकला पाइ	२००	छुटनलाल	२८८
चद्रकला	६४२	छेदालाल	४२६
चंद्रधर शर्मा	४३७	छेदासाह	४२४
चंद्रभान	८६	छेदीदास बाबा	१२४
चंद्रभानुराय	४२२	छोटेराम शुक्ल	३६६

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
छाटेजाल	२७३	जगन्नाथप्रसाद 'मिर्चिब'	६३१
छुगलाल मिश्र	२८२	जगन्नाथप्रसादसिंह	६२०
जगतनारायणलाल	४२६	जगन्नाथ मिश्र	२५०
जगद्विहारी सेठ	४०८	जगन्नाथशरण	२६२
जगदीशचंद्र शर्मा	६१४	जगन्नाथ शुक्ल	२८४
जगन्नीश झा	३६५	जगन्नाथसिंह चौहान	३००
जगदीशदत्तजी शास्त्री	४७६	जगन्नाथसिंह परखेरवा	४४८
जगदीशनारायण	६२०	जगन्नाथरायणदेव	४८०
जगदीशप्रसाद 'गिरीश'	५८३	जगन्नाथसिंह	३१३
जगदेवलाल	२६६	जगन्मोहननाथ	६२०
जगदयाप्रसाद	४५६	जगन्नाथ	२८
जगदयाप्रसाद शर्मा	५८३	जगन्नाथप्रसाद शर्मा	६०१
जगन्मोहन वर्मा	२१७	जगन्नाथ	६०
जगन्नाथ	३१	जन प्रबोध	६८
जगन्नाथ चौबे	२०१	जन पंडित	१२४
जगन्नाथ जोशी	३६	जनार्दन झा	३१३
जगन्नाथदास 'रत्नाकर'	१८४	जनार्दन झा 'द्विज'	५७६
जगन्नाथ 'द्विज'	२८४	जनार्दन पाठक	६१३
जगन्नाथ द्विवेदी	२६६	जनार्दन भट्ट	३६७
जगन्नाथप्रसाद	२८४	जनार्दन मिश्र	३५०, ६०५
जगन्नाथप्रसाद कायस्थ	२८७	जगन्नाथ	७४
जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी	२१०	जयधनत सूरि	८१
जगन्नाथप्रसाद मिश्र 'उपासक'	६२४	जयकृष्ण मिश्र	४५१
जगन्नाथप्रसाद मिश्र	६२०	जयगोविंद	११६
		जयचंद्र विद्यालंकार	५०७



नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
जयदयाल	७०	मिनदास	१२५
जयदेव उपाध्याय	२८४	मिनसेन	६७
जयदेवजी भाट	२२२	जी० एस्० पधिक	३८३
जयनारायण झा	५६५	जीतसिंह	२७८
जयलाल	४३८	जीवनदास	८७
जयपाल महामह	४२१	जीवनराम पाडे	४६६
जयपाल महाराज	२६६	जीवनविजय	६६
जयमगजसिंह	२८२	जीवराम	११३
जयशंकरप्रसाद	३३७	जीवाभरू	११८
जयानतपाद	२६	जीवारामभा चौव	११३
जयानसिंह महाराज	२६६	जुगलकिशोर	३१३
जसराज	४७	जुगलप्रसाद जमींदार	४४८
ज्योतिप्रसाद मिश्र	२६३	जुगुबानंद	२७८
ज्योतिषचंद्र घोष	५२०	जैन पैठ	३४३
ज्याति स्वरूप	३१३	जैनेंद्रकिशोर	२०१
ज्वालादत्त शर्मा	३१३	जैनेंद्रकुमार	६२४
ज्वालादेवी	३१३	जैनेंद्रकुमार जैन	२६७
ज्वालाप्रतापसिंह	३०५	जींदरीलाल	२८७
ज्वालाप्रसाद गुप्त	६०५	जगलीलाल मह	१८५
जागेरवरप्रसाद	२८२	श्यामरमणजी	४०४
जानकीदास	२६७	ठाकुरदास जैन	४०८
जानकीप्रसाद द्विवेदी	३३६	ठाकुरप्रसाद खत्री	१८०
जानकीराम	७८	झाल	१२५
जानकीशरण	२७६	झाभिया	१६
जालंधरपाद	२३	चारिणीप्रसाद मिश्र	४७०

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
नादिर	७४	पतितदास	२८७
नारायणची पुरुषोत्तम	४२१	पद्मकांत मालवीय	६०२
नारायणप्रसाद बेताव	४२७	पद्मालाल ८७, २७३, २८५, ४३४	
नारायणलाल	३०५	पद्मालाल बाकलीवाल	३१४
नारायण स्वामी १२६, २२६		पद्मालाल भया गयावाल	४१७
निकुन शलि	२३६	पद्मालाल सिंधी	४८१
निरजन माधो	५५	परमसुख	८६
निरजनानंद स्वामी	२८८	परमानंद भाई	२४७
निष्कुलानंद स्वामी	१२६	परमेश	१२६
निश्चलदास	८८	परमेश्वरदयालु	३००
निहालकरण सेठी	६०६	परशुराम चतुर्वेदी	५८७
नूतन कवि	४३६	परसदाम बैरागी	२६२
नेमा	७७	परिमल	८७
नेमिदत्त	८२	पहलवानसिंह	२७३
नैनसुख	५५, ५७	प्यारेलाल कायस्थ	७३६
नैनानंद	८३	प्यारेलाल गुप्त	४११
नोहरसिंह	१२६	प्यारेलाल चिनोरिया	४७१
नौरगीलाल	११७	प्यारेलाल मिश्र	४५८
नंदक्रिशोर	४४६	प्यारेलाल श्रीवास्तव	६४४
नंदकिशोर झा	६४३	प्रणयेश शर्मा	६४७
नंदक्रिशोर तिवारी	५२६	प्रतिपादसिंह	३५२
नंदक्रिशोरलाल	५४४	प्रद्युम्नसिंह	२८३
नंदक्रिशोर शुक्ल	३४५	प्रफुल्लचंद्र भोभा	५२६
नंदकुमारदेव शर्मा	२४६	प्रबोधचंद्र	२२५
पजनसिंह	२७६	प्रभाकर	८४

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
प्रभाकर भट्ट	२८२	पूष्पसिंह	२२६
प्रभाकर धीरेंद्र	६३२	पूष्पानन्द शास्त्री	२८७
प्रभूदान चरण	३१०	प्रेमकृपारि महाराणी	३८२
प्रयागनारायण मिश्र	२१४	प्रेमानन्द	४२
प्रवामीलाल वर्मा	४८१	प्रेमचन्द	३६२
प्रवीण	८६	प्रेमदास	२६२
प्रसादलाल	४८२	प्रेम भटनागर	६३३
प्रसिद्धनारायणसिंह	२३०	प्रो० आदित्य शर्मा	६२८
पृथ्वीनाथ-महेंद्रनाथ	२६७	पगु कवि	७२
पृथ्वीपालसिंह	६३२	प० धर्मशेखर मिश्र	६६७
पृथ्वीसिंह राजा	६४	प० द्वारकाप्रसाद शुक्ल	२६७
पावतीदेवी	२१२	प० रामानुजारजी शुक्ल	६२८
पावतीबाई	२२७	फत्तसिंह	६२
भागनि कवि	६३	श्रीराम	२६
त्रिवाञ्छी	३१४	ताजिलमर्दाना	८५
विगलसिंह	२६०	फूलदेवसहाय	२१६
पीतावर पंडित	१२७	पद्मसुराम पाठे	३०६
पीतावर भट्ट	२७०	धर्मतावरसिंह	३६, ६२
पीरमोहम्मद 'गूमि''	६०६	बगीराम	१२७
पुच्छलाल	२७५	बचईलाल	४२८
पुरुषोत्तमदास रात्री	३६२	बचक धीरे	११८
पुरषोत्तमप्रसाद	४३४	बचनश मिश्र	३००
पुरषोत्तमलाल	६४६	बजरंगसिंह	४२२
पूरण	२३	बतोळे उपाध्याय	३१४
पूरनमल	४३६	बदरीदत्त शर्मा	१६०

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
बदरीनाथ भट्ट	३७५	महलदत्तजी	४३६
बदरीनाथ शर्मा	६३३	महलदेवनारायण	४३४
बदराप्रसाद	२६३	महानन्द सन्यासी	३०८
बदराप्रसाद त्रिपाठी	२५१	मह्लादेवी	६४०
बद्रीसिंह वर्मा	४५३	बाहीलाल-भोतीलाल	५६१
बदरूप्रसाद	४२८	बावेली विष्णुप्रसाद	
बनचाराबाबू	१०४, ३०६	बुँवरिजी	१७४
बनरारीलाल चतुर्वेदी	२३०	बाहीलाल भोतीलाल	५६१
बनारसी ठेंक	५७७	बाबा साहब मजूमदार	२८३
बनारसीदास चतुर्वेदी	३०६	बाबूराव विष्णु पराङ्कर	२५८
बयाबाई	४३	बाबूलाल	२८८
बरजोरसिंह	२८८	बाबूसिंह	६०७
बलदेवदास	२६७	बारहट मुरारदानजी	२५८
बलदेवप्रसाद	२८८, ६३४	बाल कवि	३८
बलदेवप्रसाद मिश्र	२११, ५३१	बालकृष्णदेव	५३२
बलभद्र	३६	बालकृष्णराव	५८५
बलभद्रसिंह	२७६	बालकृष्ण शर्मा	४७३, ६०७
बलुभ	४८	बालगोविंद	२८५
बसिष्ठनारायण	६१३	बालचंद्राचार्य	४६४
बस्त्रबिग	४४	बालमुकुंद गुप्त	१८१
बहादुरसिंह	११०	बालमुकुंद पांडे	२८३
बहिरम	१२७	बालमुकुंद वानपंथी	४८२
बर्डीराम	५६१	बालमुकुंद शर्मा	२८८
बजनाथ	४३४	बांकेलाल चौबे	४२८
बलदत्त चौबे	२६३	बिहदसिंह महाराजा	५६

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
विश्विभोजजी	५३३	भगवानदास हाजना	४४०
बिहारीलाल जैन	१६१	भगवानदीन द्विवेदी	२६८
बिहारीलाल ब्रह्मभट्ट	४६२	भगवानदीन 'दीन'	२०२
उधचन्द्रपुरी सन्यासी	४८३	भगवानदीन मिश्र	२२६, ४४०
बुधन चौहान	२६८	भगवान मिश्र	६४७
उधराव	७०	भगवानब्रह्म	३८०, ४८४
उधसिंह	५३	भगवानब्रह्म ठाकुर	६५६
तुदिनाथ झा	३६६	भगवानवत्ससिंह	४२५
तुदिसागर मिश्र	४२८	भगवत	२७०
सु देला गाला	२१६	भगीरथ दीक्षित	२६८
वेचन शर्मा	४११	भगीरथप्रसाद दीक्षित	५३५
बेनीप्रसाद	४७३	भवानीचरण	४४०
बैजनाथ	४४७	भवानीदयाल	३८४
बैजनाथ भोंडले	६३	भवानीदास	१२७, २४७
बैजनाथसिंह	३१४	भवानीप्रसाद	१२७
बोधईराम	२७६	भवानीप्रसाद पुराहित	२०२
भगत लाल	४४६	भागवतप्रसाद	२०२
भगतीराम	६०	भागवतीदेवी	२६८
भगवत्प्रसाद शुक्ल	५३४	भागीरथ	३३
भगवताचरण शर्मा	६४६	भागीरथ स्वामी	४२६
भगवतीदास	५१	भादेपा	२१
भगवतीप्रसाद	४८४, ६४०	भारतचंद्र राय	१२७
भगवान	६३	भालेराव	३८५
भगवानदास	२०१, २४२	भीमसेन	२६२
भगवानदास केला	४४०	भुवनेश्वरनाथ	६०७

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
सुप्रनेश्वर मिश्र	१६३	मधुरप्रता	२६३
सुप्रनेश्वरसिंह	२५१	मधुसूदन घोष	२७५
शुभरनाथ मिश्र	६४१	मधुसूदन गोस्वामी	४२२
शुभरनाथ शर्मा	६०८	मधुसूदन चण्डलभ	१२८
शुभतिराम	७७, ८५	मन्ना द्विवेदी गापुरी	३४५
शुभुम्	१७	मनराखनलाल	१२८
शरय श्रयभूत	४५	मनिराम	१२६
शरवगिरि गोस्वामी	२५२	मन्नु कवि	१०७
शैरप्रदान	२७६	मन्नीलाल	४२५
शैखवल्लभ	२७०	मन्नीलालजी मिश्र	४२६
शागवतीदेवी	१८७	मनार ननमसाद	२५३
शोलानाथ	४४१	मनोहरकृष्ण	४४६
शालानाथ मिश्र	२६७	मनोहरदास स्वामी	६०
शोलालाल दास	२५६	मनोहरदास सोनी	८३
श्रीन	१२८	मनोहरप्रसाद	३१५
शक्तजनलाल शास्त्री	३६८	मनाहरप्रसाद मिश्र	२६८
मथुराप्रसाद	७६, ६१३,	मयाराम	५८
मथुराप्रसाद पाण्डेय	२२२	मयूर मदारीसिंह	४२६
मथुराप्रसादजी मिश्र	२१२	सद्दाभा गाधी	२०४
मथुराप्रसाद राजर्षेयी	३७७	महात्माराम	३००
मदनमोहन	४६	महादेवप्रसाद	४२२
मदनमोहन मिश्र	६२६	महादेवप्रसाद मिश्र	४४७
मदनमोहनलाल दीक्षित	४५३	महादेवशरण पाण्डे	४३०
मध्व मुनीश्वर	४६	महादेवी वर्मा	२६८, ६३४
मधुकर	६३	महाराज दीर्घसिंह	६०८

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
महाराज रघुराजसिंह	४५८	माणिकचन्द	८६
महाराज कल्याणसिंह	७३	माणिकजी मुनि	४६५
महाराज राजसिंहजी	५२	माणिकदास	८६
महाराज विक्रमाजीतसिंह	०१	माणिक्यचन्द्र जैन	३५७
महावीरदास	१२६	मातादीन तिवारी	३८६
महावीरप्रसाद कायस्थ	३०८	मातादीन शुक्ल	३८६
महावीरप्रसाद चौधरी	४११	मातादीनसिंह गीतम	४८२
महावीरप्रसाद मालवीय	२०३	माताप्रसाद शर्मा	५१३
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव	३७७	माताप्रसाद त्रिपाठी	६३७
महावीरसिंह वर्मा	४६३	माधव	५७
महासिंधु	१२६	माधवदास	५६
महासिंह	७६	माधवदास स्वामी	३१५
महिपालधहादुरसिंह	४६४	माधवप्रसाद कान्हर	
महिरामजी	१२६	कायस्थ	२६३
महीपतिसिंह	२७०	माधवप्रसाद शुक्ल	४३५
महीपा	२२	माधवराव सप्रे	१७२
महेन्दुलाल गग	२२३	माधवसिंह	१०६
महेशचरसिंह	३६३	माधवसिंह राजा धागता	१३०
महेशचन्द्रप्रसाद	६१५	माधी तिवारा	३००
महेशनाथ शर्मा	४८४	माधीसिंहजी	४२५
महेशप्रसाद	२६६, ५८७	मानसिंह	३६, ८१
महेशब्रह्मसिंह	३३०	मानसिंहजी	४४
मृत्युञ्जयप्रसाद	६१६	मानिकदास	१३०
मार्कण्डेय पाडेय	६२१	मालिकराम त्रिवेदी	११६
माखनलाल चतुर्वेदी	५३५	भित्तानसिंह	३०१

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
मीठालालनी व्यास	१२१	मैथिल परमईस	२६४
मीरादास	६६	मैथिलीशरण गुप्त	३८७
मारा लैयद ताहर	१३०	मोठीलाल जैन	४७१
मुक्तानद स्वामी	८०	मोनपा	२१
मुकुन्धर पाटेय	२६१	मोहनदत्त	६२
मुकुटलाल	३०१	मोहनदास	०३०
मुकुदलाल	४३०	मोहनदास महत	१३०
मुकुन्दप्रलभ	४८५	मोहनलाल चतुर्वेदी	१०५
मुफ्तारसिंह जाट	४५२	मोहनलाल बडवात्या	२६८
मुनि जिन विजयग्री	४३०	मोहनलाल महतो	४१३
मुनिराज	७१	मोहनसिंह	५३६
मुनुर्वा प्राण्य	२६३	मोजो	५६८
मुरलीधर पाटेय	२८५	मौदजी	१३१
मुरारिदानजी कविराजा	२०४	मगलदास महत	१११
मुसहीराम	२८५	मगलदेव शाही	४१४
मुहम्मदअब्दुलसत्तार	२८७	मगलप्रसाद विश्वकर्मा	६२६
मुहम्मदवज़ीरख़ाँ	३५७	मगलाप्रसादसिंह	६२६
मुशी लक्ष्मीनारायणजी	४८८	मगलीलाल	३०६
मुशीलाल	२७०	मशु	१३०
मूदजी	१३०	यशोदादवी	४४१
मूलचव शानी	१३०	यज्ञदत्त शर्मा	४६५
मूत्राराम	३०१	यज्ञनारायणसिंह	४८६
मेहर्षिसिंह चौहान	६०८	यज्ञराज	३०१
मेदनीप्रसाद पाटेय	२८५	यज्ञराजदास भाट	२६४
मेरुविजय	५६	यज्ञेरयर	२७०



नाम	पृष्ठ
पञ्चेश्वरसिंह	४७६
याज्ञिकप्रथ	२५८
युगल माधुरी	३०२
युगलसिंह	५६२
रघुनाथ	७६, १३१
रघुनाथदास	२६३
रघुनाथदास पांडेय	१०८
रघुनाथप्रसाद	१०२, २७६
रघुनाथप्रसाद शर्मा	२०४
रघुनाथ व्यास	३७
रघुनाथ शाकद्वीपी	२७६
रघुनाथसिंह बी०पू० ठाकुर	२५२
रघुनदन	३७
रघुनदन शर्मा	६१६
रघुनदनसिंह	४४१
रघुनदनसिंह वर्मा	४५८
रघुपतिसहाय दायस्थ	२६४
रघुवरदासजा महत	६२१
रणजांत मन्त्र	३०६
रणधीरसिंह	६२
रणमन्त्र	२७६
रणवीरसिंह	४६५
रणजयसिंह	५७२
रत्नावली शर्मा	४६५
रतनेश	७६

नाम	पृष्ठ
रतनेश मिश्र	४३०
रमाकांत माळवीय	३८६
रमादेवी त्रिपाठी	४७७
रमाशंकर अक्वस्थी	३८६
रमाशंकर मिश्र	५५६
रमेशचंद्र मिश्र	५८५
रमेश पांडे	४५२
रमेशप्रसाद	७८६
रविपेयाचाय	६७
रसदेव	२६४
रसरशि	१३१
रसरगमणि	१३१
रसाल	५३
रसिकनाथ	८५
रसिकलाल	६५
राखन	२६४
रायचमसादसिंह महत	४४२
रायचंद्र त्रिपाठी	४४८
राजकुमार रघुवीरसिंह	५७१
राजकुमार वर्मा	४०६
राजकुमार श्रीशिवेंद्र साही	१३२
राजदेवी कुँवरि	४३०
राजधरलाल	२०५, ३०६
राजमन्त्र	३२
राजहसप्रसाद	४६३

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
रानी भगवानवतसिंह	३८६	रामग्रधीन कापख	४४८
राजाराम शास्त्री	२२१	रामग्रधीन सोनार	१०८
राजेश्वरभ्याद	२७१	रामग्रवतार शर्मा	६२७
राजेश्वरीद्वी मिश्र	६४७	रामग्रपि	१३३
राजदमसाद	४२६	रामकिशोर	१३३
राजदमसादपनारायणसिंह	३०८	रामकुमार	४२६
राजदम सुनि	५१	रामकुमारजी मिश्र	५६२
राजेंद्रसिंह	४३३	रामकुमार वमा	६५६
राजेंद्रसिंह व्यवहार	१०२	रामगुलाम	३०२
राधधडीजी	८०	रामगोपाल मिश्र	३०८
राधाकृष्ण	४३५	रामगोविंद त्रिवेदी	५१३
राधाकृष्ण भवस्वी	४३५	रामचरण नागार्च	४४३
राधाकृष्ण स्ना	४५६	रामचरण भट्ट	४२५
राधाकृष्णदास	१८२	रामचरणलाल	४३०, ४८६
राधाकृष्ण मिश्र	४६६	रामचरित उपाध्याय	४४३
राधाकृष्ण मेहता	४३५	रामचीत पादे	४५३
राधाकृष्ण वाजपेयी	४३०	रामचंद्र	५०, ८५
राधाचंद्र चौबे	२६४	रामचंद्र धामदराय	२६४
राधामोहनजी मिश्र	२६३	रामचंद्र 'चंद'	२६४
राधामोहनजी रावत	२८०	रामचंद्रजी पुजारी	४७१
राधारमणप्रसादसिंह	४४३	रामचंद्र टडन	३६०
राधादल्लभ	१३२	रामचंद्र द्विवेदी	३५४
राधिकादास	१३३	रामचंद्र दुबे	२३०
राधेश्याम	३१५	रामचंद्र शर्मा	५३६
राधेश्याम फयावाचक	३६०	रामचंद्र शर्मा काव्यकूठ	५६१

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
रामचंद्र शास्त्री	३५८	रामनारायणलाल	४३१
रामचंद्र शुक्ल	३६३	रामनारायण शर्मा	४१४
रामचंद्र शुक्ल 'सरस'	५७२	रामप्रकाश	५२८
रामचंद्र संधी	६०२	रामप्रताप शुक्ल	६२७
रामजीदास	७२६	रामप्रतापसिंहजी	१०६
रामजीबाल शर्मा	४४४	रामप्रतापसिंह राजा	७४६
रामजीवन शर्मा	४७४	रामप्रसाद त्रिपाठी	४८७
रामजी उर्मा	५१३	रामप्रियाजी	३४७
रामजीशरण-		रामश्रीति शर्मा	६०८
विध्याचलप्रसाद	३५८	रामयज्ञ्य पुरोहित	२६४
रामदयाल ३०६, ८२, १०३		रामभरोसे पांडे	२६४
रामदास गौड़	१८७	रामभरोसेसिंह	६०६
रामदास राय २८०, २८७		राममनाहर मिश्र	११६
रामदीन	१३३	रामरत्नसिंह	४१५
रामदानजी	२४४	रामरत्नजी परमहंस	४४५
रामदेवजी प्रोफ़ेसर	३६०	रामरूपदास	१५७
रामधारीप्रसाद	४८७	रामलक्ष्मण पांडेय	६४१
रामनरेरा त्रिपाठी	३६८	रामलखनलाल	३०२
रामनाथ ज्योतिषी	२१३	रामलाल ३०६, २६७ और २६५	
रामनाथ रत्नचारण्य	११७	रामलालजी	६१६
रामनाथ शुक्ल	२६३	रामलाल द्विवेदी	२३५
रामनारायण ३०२, ४४४		रामलाल शर्मा २६४, ३१६	
रामनारायण पांडे	३१५	रामलोचन पांडेय	२३५
रामनारायण मिश्र १६३, २५३		रामलोचनशरण्य	४८७
और ५१६		रामलोचन शर्मा	-

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
रामवचन द्विवेदी	२२२	रामेश्वरबाबू	६४१
रामबिज्ञाससिंह	६०२	राय कवि	१६
रामबृक्ष शर्मा	२६१	राय देवीनसाद 'पूर्ण'	२३१
रामशरण गुप्त	३०७	रायमल	४४
रामशंकर तिवारी	२३७	रायसिंह	१३३
रामशंकर शुक्ल	२३७	राहुल साकृतायन	४१६
रामसहाय पाठे	२२१	रवदत्त मिश्र	२६३
रामसहाय मिस्त्री	३७१	रूप	४२
रामसिंह	६४७	रूपदास	६४
रामसिंहजी के० सी०		रूपनारायण पांडेय	२२६
थाइ० इ०	२३६	रूपबाबू	६१६
रामसुतात्मज	४०	रूपसिंह महाराजा	३२
रामाजी दादा शिंदे	६१	रोशनसिंह	२६२
रामार्धन शर्मा	२२६	रंगनाथ	१३२
रामानंद शर्मा	६०६	रंगनाथ स्वामी निगडाकर	४६
रामायतार द्विवेदी	४२३	रंगनारायणपात्र	२६७
रामायतार पांडेय	७२६	रंगीदास	१३२
रामाज्ञा द्विवेदी	२८८	रंगीबदास	१३२
रामेश्वर भा	२७२	रत्नपतिजी	६३
रामेश्वरप्रसाद	२८०, ६२२	रत्नदीराम	२८
रामेश्वरब्रह्मसिंह	१६४	रत्नमन कवि	१३३
रामेश्वर शुक्ल	२८६	रत्नाराम मेहता	१७३
रामेश्वरीदेवी मिश्र		रत्नाराजकर भा	३०३
'बकोरी'	६३२	रत्नतक्रिपोरी	४३२
रामेश्वरी नेहरू	३००	रत्नतकुमारसिंह	३६६

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
ललितादेवी पाठक	४३५	बालजी	२६४, २८१
लपलीप्रसाद पाठे	३७६	बालजीत	८५
लक्ष्मणनारायण गर्दे	४००	बालरामदादुर	१३३
लक्ष्मण भगत	२१५	बालमणि	८१, २७१, २६६
लक्ष्मण शास्त्री	३६०	बाजरघुषरप्रसाद	४४७
लक्ष्मणसिंह तिवारी	२६७	बालसिंह	४११
लक्ष्मणाय्याचार्य गोस्वामी	२००	बाल हरदेवसिंह	५१६
लक्ष्मणाय्याचार्य महत	२६०	बाबा कन्नोमल	२३८
लक्ष्मीकांत	४२६	बाला दे	४०
लक्ष्मीदत्त त्रिपाठी	४५६	बाबारामजी	३१६
लक्ष्मीधरजी	७५	बालावती भँवर	४८६
लक्ष्मीधर वाजपेयी	३६७	बुद्धमान हफीम	८८
लक्ष्मीनाथ गोसाद	६६	बुद्धिपाद	१०
लक्ष्मीनारायण २७१,		लोचनप्रसाद पाठेय	४०२
३१६ श्रीर ४३५		बौद्धसिंह	४०५
लक्ष्मीनारायण गुप्त ३६१, ५०८		वचनेश	४५३
लक्ष्मीनारायण दीनदयाल ५३७		वसराज गिरि	८०
लक्ष्मीनारायण शर्मा	६१६	वनमाखी शुक्ल	४६६
लक्ष्मीनारायणसिंहजी	६३५	वली हाजी	८७
लक्ष्मीनारायणसिंहजी	३७०	वसुदेवानंद	५६
लक्ष्मीनिधि मिथ	४८८	वसंतराज	७१
लक्ष्मीप्रसाद मिथी	३७१	वज्रकिशोर शर्मा	६४४
लक्ष्मीबाल	११२	वज्रजीवनबाल	६२८
लक्ष्मीशंकर मिथ	६३५	वज्रनाथ मिथ	४४६
बाल कवि	११७	वज्रनाथ-रमानाथ	५०६

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
प्रजनाथ शास्त्री	२६३	विधनाथ	६८
प्रजनदनसहाय	२३७	विधनाथप्रसाद	६१७
प्रजभूपण गोस्वामी	५३४	विश्वनाथ शर्मा	२७६
प्रजभूपणलाल	६१७	विश्वमाहनकुमारसिंह	६१०
प्रज्ञप्रोहनशरण	४८४	विश्वेश्वरदयाल चतुर्वेदी	२६५
प्रनरत्नदास	४०२	विश्वेश्वरदयाल मिश्र	५६२
प्रनरत्न भट्टाचार्य	२४२	विश्वेश्वरनाथ रेड	३७२
प्रजेश महापात्र	४२५	विश्वेश्वरप्रसाद	४३१
प्रज्ञेन्द्र	६१	विश्वभरदत्त	२८३
वागीश्वरसिंह	६४८	विश्वभरदास	७५
वाचस्पति तिवारा	२६७	विश्वभरनाथ शर्मा 'कौशिक'	३६४
वामनाचार्य	४३५	विश्वभर भट्ट	३६
वासुदेव	४४५	विष्णु	५७
विट्ठल	५६	विष्णुकुमारी	६१७
विद्याधर	४५	विष्णुदत्त शुक्ल	४१६
विद्याधरजी मिश्र	६००	विष्णुलाल शर्मा	२७६
विद्याधर शास्त्री	६४८	विहारीलाल लाला	१३४
विद्याभूपण	४८६	विष्याचलप्रसाद	४४५
विद्यावतीदेवी	६४१	विघ्नेश्वरसिंह	४८६
विपिनविहारी मिश्र	५३६	विघ्नेश्वरप्रसादसिंह	६४३
विपिनविहारीलाल	४८३	वीणापा	१२
विपिनविहारासिंह	४८६	वीरसिंह उपदेशक	४५३
विमलादेवी	६१६	वीरसिंह देव यहादुर	५३६
विमलादेवी सोमानी	५८२	वीरेश्वर	५६
विरूपा	१४		

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
धारेश्वर उपाध्याय	४३१	श्याममेवक मिश्र	२६६
धारेन्द्रप्रशादुरसिंह	३५२	श्यामसुंदर	२२१
वेत्तोप्रसाद	५६७	श्यामसुंदर चतुर्वेदी	६४२
वेणीनाथ	४४५	श्यामसुंदरदास खत्री	२४४
वेणीराम	१०८	श्यामसुंदरलाज	४२६, ४६१
वैकटश स्वामी	२६५	श्यामपति पांडेय	५७२, ६३६
वैजनाथ मिश्र	५८६, ७६०	श्यामराज्य पशी	५२३
वृंदावनराम	२३६	श्यामप्रसाद मिश्र	३६२
शृदावनलाल वर्मा	३३१	शारदामसाद	१८६, २६५
शृदावत वैश्य	१३३	शारदाप्रसाद भदारी	५७६
परीधर मिश्र	४७२	शालग्राम द्विवेदी	५३२
परीधर शास्त्री	६१०	शालग्राम भागव	४६०
शबररा	८	शालग्राम शर्मा	५६३
शमानंद पाठक	३६४	शालग्राम शास्त्री	४४५
शरच्चंद्र सोम	१८३	शाहमुनि	६६
शत्रुजीतसिंह	२८१	शाहिपा	२७
श्यामकरण	१३५	शाक्तिविनयजी मुनि	४८६
श्याम गुसाई	३७	शिवकरणप्रसाद	४४६
श्याम प्रणजो	३७	शिवकुमार	४६३
श्यामजी शर्मा	२६६	शिवकुमारसिंह	४३१
श्यामदारीप्रसाद	८६४	शिवकुमारीदेवी	६१७
श्यामहाज	४५१	शिवदयाज	४२६
श्यामविहारो मिश्र	२२७	शिवदयाल पांडे	१०१
श्यामविहारीलाल	६४६	शिवदाम	३७
श्यामविहारी	३२	शिवदास गुप्त	४२६

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
शिवदास पांडेय	२८६, ४६०	शिवाधार पांडेय	४१६
शिवदीन केशरी	१३४	श्रीकृष्णगोपाल	४६७
शिवदुलारे	२७६	श्रीगोविंद साहिय	२६५
शिवदुलारे मिश्र	५८३	श्रीनार्थसिंह	४१७
शिवदुलारे त्रिपाठी	५४१	श्रीपालचंद्र	३१७
शिवनरेशसिंह	२६५	श्रीप्रकाश	४१७
शिवनार्थसिंह	३४०	श्रीमज्जुकेशानंद स्वामी	१३५
शिवनारायण	४५०	श्रीलक्ष्मणसिंह	४३५
शिवनारायण भा	२८६	श्रीजानजी टेंडू	३०३
शिवप्रसाद	४४५, २७७	भारत शुक्ल	६१०, ६३६
शिवप्रसाद गुप्त	३७३	श्रीरामनेत	३१७
शिवप्रसाद शर्मा	१०८	शीतलप्रसाद	४३६
शिवप्रसादसिंह	६०२	शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी	२८१
शिवपूजनसहाय	४१६	शीतलप्रसादसिंह	२७१
शिवशालकराम	४३२	शीतलप्रसाद	६१०
शिवमगलसिंह	४२६	शीतलप्रसादसिंह	२६६
शिवरत्न शुक्ल	३४०	शीलमणि	२६५
शिवराजन	६०	शुकदेवनारायण	४२३
शिवराम कल्याणकर	४१	शुकदेवप्रसाद तिवारी	४३२
शिवराम महादव	४७२	शुकदेवविहारी मिश्र	२३२
शिवलाल मिश्र	३१	शुभच	६४
शिवलाल राय	४४५	शेख मुजतान	२६
शिवविहारीलाल मिश्र	१८६	शैलजी	२७३
शिवसहाय चतुर्वेदी	४६६	शकरप्रसाद	३०३
शिवसागरराम शर्मा	४४८	शकरप्रसाद दीक्षित	६२८



नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
शंकरराव जोशी	२०८	सरूपसिंह	८६
शंकरबाबू व्यास	४२२	सरूपानंद	२८
शंभुदयाल दीक्षित	६४२	साधुशरणप्रसाद	२०७
शंभुराम	४२०	सामलदास	७६
शंभुनाथ	२६२	सामल भट्ट	३२
संजयनारायण पांडेय	२२३	साळिमाम	४४८
सगुनचंद्र	४२०	सावित्रीदेवी	४३६
सच्चिदानंद उपाध्याय	४१७	सायलियाविहारीबाबू	२१६
सत्यदेव	३४७	साहनर्ही	३२
सत्यनारायण पांडेय	४२०	साहचराम महंत	८२
सत्यनारायणसिंह	६२२	स्वामी नित्यानंद	१३२
सत्यनारायण त्रिपाठी	२४८	सियारामशरण गुप्त	४१८
सत्यराम	१३२	सीताराम	२८३
सत्यनंत शर्मा	४२२	सीताराम उपाध्याय	१६२
सत्यनंत शर्मा सुजन	६३६	सीताराम धारण्य	३०६
सत्यानंद जोशी	४३६	सीताराम निध	१२२, २८३
सत्यानंद सन्यासी	४४८	सीताराम वर्मा	६४८
सदाशिव दीक्षित	४६८	सुखदेवप्रसाद तिवारी	६००
सरदार शर्मा	६०२	सुपराम चौधरी	१६६
सरयूप्रसाद अक्वथी	४६६	सुनलाल	३८
सरयूप्रसाद आधारी	२३६	सुनलाल शास्त्री	६२८
सरयूप्रसाद जायसवाल	२०६	सुखसाहस्र	६२
सरस्वतीदेवी	३६२	सुखसपत्तिराय	२६१
सरहपा	६	सुखानंद स्वामी	६८
सरूपचंद्र	८२	सुदर्शनाचार्य	२०७

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
सुधासुग्री	२६५	सूर्यानंद वर्मा	१४१
सुधारानी	६३७	सामदेव शर्मा	६१८
सुमश्वदास	४६१	सामेश्वरदत्त शुक्ल	३७८
सुमल	२६५	सोहिरायानाय	९१
सुभद्राकुमारीचौहान	३६२	सतदार	३१७
सुमित्रानंदन पंत	४१८	सतदाम कबीश्वर	६०३
सुरेश्वर पाठक	६२३	सत निहाजसिंह	३६५
सुराभादेवा	५१०	सतराम	४३३
सुंदर	३४	सत हजुरी	२६६
सुंदरलाल	३०६	सपतराय	८२
सुंदरलालजी	२५३	सपत्ति	२८६
सुंदरलाल त्रिपेदी	४६६	सुजातलाल	१३६
सुंदरसिंह चौहान	६०३	सुनुमदयाज अचस्थी	६३७
सुंदरीशरण	४४६	सुनुमानप्रसाद	३०६, ४३३
सुयकरय 'पारीक'	५८२	सुनुमानप्रसाद पोद्दार	३६३
सुयकांत त्रिपाठी निराला	५०६	सुनुमतसिंह	१६७
सुयकुमार वर्मा	२३४, ३१७	सुमीरदान चारण	२६६
सुजातलालजी	४६६	सुद्वारनगद जालान	५१५
सुस्तसिंह	२७३	सुर्दानलाल	३०३
सुयनारायण	२६६	सुप्रसाद	४१६
सुयनारायण दाक्षिण	४४६	सुस्वरूप बनुबेदी	६१८
सुयनारायण पाडेय	४६३	सुस्वरूपजी मिश्र	६३८
सुयनारायण व्यास	६११	सुसदायलाल	४४६
सूर्यप्रसादजी त्रिपाठी	३७३	सुरि	८८
सुय वर्मा	५४१	सुरिकृष्ण	७७

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
हरिदृष्य 'श्रेणी'	४२८, ४३८, ६४६	हरिराम चौधरी	३१०
हरिगाविंद	३००	हरिरामजी त्रिवेदी	२०७
हरिवर्यासिंह	२७१	हरीशिव्य	७२
हरिदत्त 'दीन'	३६०	हरीशकर	७५
हरिदाम	२६८	हरीहरलाल गोस्वामी	४४६
हरिदास जैन	४२६	हृदयनारायण त्रिपाठी	५७५
हरिनाथजी	१३६	हाजीअलीख़ाँ	११३
हरिपार्थसिंह	२८६	हितप्रसाद	२६६
हरिपुण्य	६७	हितमीतमदास	२६८
हरिभाऊ उपाध्याय	५४२	हीराबाब	५६
हरिमोहन का	६३६	हीराबाब खन्ना	३६३
हरिमगळ मिश्र	२६६	हीरा सखी	२६६
हरिवशदीन	३०६	हेमचंद्र जोशी	५४२१
हरिवशनारायण	१३६	हेमराज	५४
हरिगच्छर	२६६	हेमतकुमारी चौधरी	२०८
हरिसिंह महाराजा	३५	हेमतकुमारीदेवी	३७६
हरिहरप्रसाद परिव्राजकाचार्य	३१७	हसराम	६६
हरिहरप्रसादसिंह	१११	चमापति	२४८
हरीकृष्ण जीहर	३४८	त्रिकमदास	१३६
हरीनाथ ( अरिष्ट पंडित )	२२४	त्रिभुवननारायणसिंह	५५७
हरिराम उस्ताद	३१७	त्रिलोचन का	६६०
		ज्ञानअली	१००
		ज्ञानचंद्र	५५



# श्रेष्ठ साहित्य

## दुलारे-दोहावली

( द्वितीयावृत्ति )

( लेखक—सुधा संपादक श्रीदुलारेलाल भागवत )

हिंदी-संसार में महाकवि बिहारीदास की कितनी क्याति है, यह किसी हिंदी भाषा के जानकार से छिपा नहीं। कितने ही विद्वान् समालोचकों का मत है कि यह हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कलाकार हैं। उनके बाद आज तक किसी ने भी ऐसा चमत्कार नहीं पैदा किया था, परंतु यह कक्षक भय दूर होने को है। अभी कुछ ही विद्वान् ऐसी सम्मति रखते हैं कि सुधा संपादक कविवर श्रीदुलारेदासजी भागवत के दोहे महाकवि बिहारीदास के दोहों की शृंखला के होते हैं, और बाज़-बाज़ प्रचुरता में बढ़ भी गए हैं; परंतु यह निरसंदेह कहा जा सकता है कि अपिर् भविष्य में, जब कविवर श्रीदुलारेदासजी भागवत के भी कई सौ ऐसे ही दोहे प्रकाशित हो जाएंगे, लोगों को उनकी श्रेष्ठता का जोहा मानना होगा। कहा जाता है, मजभाषा में अथ पहले की-सी कविता नहीं छिजी जाती, परंतु 'दुलारे दोहावली' ने इस कथन को बिजकुल भ्रम साबित कर दिया है। हिंदी के वर्तमान कवियों और समालोचकों में जो अग्रगण्य माने जाते हैं, उन्होंने मुक्त कूट से स्वीकार किया है कि कविवर श्रीदुलारेदास वर्तमान समय में मजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, और उनकी दोहावली मजभाषा-साहित्य की वर्तमान सर्वोत्तम कृति। यदि आपको मजभाषा की कोमलकान्त पदावली, श्र गार

धीर कल्प-रस के कामलतम मनोभावों की मधुख, सत्राव कहरा  
मूर्तिप्रा, धीर-रस की आनखिनी सृष्टिप्रा, देव प्रेम का पवक  
दुधा प्यावा, शां-रस की सुधा घारा, रसानुद्वज अक्षय्य मय  
का मुहाबरेदार प्रयोग धीर मीर में कहने का अर्गुत कौशल प्रा  
एक ही अगह देखना हो, वो हम दुबारे दोहावजा का अम  
मँग खीमिप । सारी प्रति ७), सिद्ध प्रति १), नित्यरार प्रति ४)

## बिहारी स्ताकर

महाकवि बिहारी की जगप्रसिद्ध सतसई पर अद्वितीय हिंदी भाष्य ।  
भाष्यकार, प्रबभाषा-साहित्य के पारदर्शी ममज्ञ विद्वान् स्वर्गीय बापू  
जगन्नाथदास 'रत्नाकर' पा० पृ० । सगादक, श्रीदुबारेबाह्य भागव ।  
सुधा भाकार । पुनाई-सक्राह आदर्श । मिहद और सत्रावट भी अपूर्व ।  
हिंदी में इसक छोड़ का कोई सटीक महाभाष्य नहीं । हम पूर्य अय  
ने हिंदी-मसार के प्रबभाषा-साहित्य में सुगांतर उपरिधत कर दिया ।  
पृ० पा० का विशेष योग्यता धीर भागरे, बभाम आदि विरवविधाअय  
में कोत है । बिहारी, अयगाह आदि के अतजा चित्र । मूल्य १)

## मतिराम प्र थावली

( द्वितीयावृत्ति )

महाकवि मतिराम हिंदी क अपरजों में से हैं । उनके ग्रंथों का  
अपना सम्काण नहीं नहीं मिलता । हमने पं० कृष्णबिहारीजी मिश्र  
से सगादन काकर यह प्रयोगजा निकाला है । हिंदी संसार में यह  
अद्वितीय थाजू है । मतिराम सतसई भी, जो बहुत धन खप्य करने  
पर हमें मिला है, इसमें सम्मिलित कर शी गई है । टिप्पणियाँ,  
शब्दाथ कोट, आओपनात्मक विस्तृत भूमिका भी है, और बी० पृ०,  
पृ० ५० धीर साहित्य सम्बेदन की परीक्षा में पाठ्य पुस्तक ।  
मूल्य २।।), सत्रिद्ध ३)

## विश्व साहित्य

लेखक, सरस्वती सपादक धीरुत पदुमन्नाळ पुन्नाजाळ बद्रशी  
 बी० ए० । यदि आप एक ही पुस्तक पढ़कर ससार की सभी उन्नत  
 भाषाओं के साहित्य का रसास्वादन करना चाहते हैं, तो इस पुस्तक  
 का पाठ अवश्य फीनिप । इसमें साहित्य का प्रकृत रूप, उसका  
 वास्तविक तंत्र, उसका मूल सिद्धांत, उसकी सभी परिभाषा  
 और उसके प्रत्येक भग की सुवाच व्याख्या बड़े विस्तार के साथ  
 की गई है । मूल्य १॥), सजिल्द २)

## हिंदी-नवरत

( परिवर्धित, संशोधित तथा सुसज्जित चतुर्थ संस्करण )

लेखक, हिंदी-ससार के प्रख्यातनामा समालोचक 'मिश्रबधु' । इस  
 पुस्तक की प्रशंसा बड़े बड़े विद्वानों ने की है । हिंदी भाषा के सर्वोत्तम  
 कवियों के आलोचना पूर्ण जीवन चरित्र इसमें हैं । साहित्य प्रेमी  
 और साधारण जन सबको समान भाव से यह पुस्तक पानव देता है ।  
 इस बार यह पुस्तक पहले से लगभग दुगुनी पकी और दसगुनी  
 उपयोगी हो गई है । इसे सामयिक और सवाग पूर्ण बनाने में कोई  
 भी चेष्टा बाकी नहीं रखती गई । अथ तक की साहित्यिक खोजों के  
 अनुसार संशोधन और सुवृद्ध न होने से पुस्तक अप टु-डेट हो गई है ।  
 ११ रंगान और सादे चित्रों से समलकृत, सुंदर मुनदरी रेशमी जिल्द  
 से इस पुस्तक को शोभा ही निराकी हो गई है । यह संस्करण सब  
 तरह आदर्श, अद्वितीय और सवाग-सुंदर है । मूल्य १॥), सजिल्द २)

## साहित्य-सदर्भ

लेखक, साहित्य महारथी ए० मदावीरमसादजी द्विवेदी । द्विवेदीजी  
 का परिचय देना सूर्य को दीपक दिखाना है । इस पुस्तक में

के समय समय पर खिरे गण समाखाचनात्मक तथा महारव-पूर्ण खेखों का समग्र है। मनोरंजन की सामग्री भी काफ़ी है। पुस्तक उच्च कक्षाओं में पाठ्य पुस्तक होने योग्य है। मूल्य १॥१, सखिद २)

## साहित्य-सुमन

( चतुर्पावृत्ति )

खेखक, स्व० पं० बाबकृष्ण भट्ट। भट्टजी की भाषा हिंदी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखता है। यही कारण है कि यह यू० पी० की विशेष योग्यता और अन्य भाषाओं में भिन्न भिन्न परीक्षाओं में पाठ्य पुस्तक बना ली गई है। इनके खेखों में उप-यास और कथा नियमों का पूरा मज़ा आता है। जी भी नहीं ऊबता। निरंतर पढ़ नई ज्ञातव्य भाषाओं का पता लगता आता है। मूल्य ॥२०, सखिद १०)

## काव्य कल्पद्रुम

( तृतीय परिवर्द्धित संस्करण )

खेखक, कवियर श्रीकभैयाजाजजी पोहार। यह संस्करण सर्वथा नवीन रूप में है। सबसे प्रथम नौ रस का विवेचन है। हिंदी में नौ रस पर ऐसा ग्रंथ आज तक प्रकाशित नहीं हुआ। नौ रस पर जो गणेश-पूर्ण विवेचन है, वह हिंदी के लिये अभूतपूर्व है। संस्कृत में जो विषय भिन्न भिन्न पुस्तकों में हैं, उन सबका एक ही स्थान पर समावेश कर दिया गया है। विषय को बड़ी सरलता से समझाया है।

उत्तरांचल में नवीन रचना के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध प्राचीन और अखन्य ग्रंथों के बड़े ही हृदयग्राही पद्य चुनकर दिए हैं।

अब हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों के लिये ही उपयोगी नहीं है, वरन् संस्कृत साहित्य के विद्वानों के लिये भी अवश्य इष्टम्य है।



लेखक के साहित्यिक आजीवनारामक लेख जिन्होंने पढ़े हैं, वे इस बात का अंदाज़ा लगा सकते हैं कि लेखक का इस विषय पर कितना गहरा ज्ञान है। विश्वविद्यालय की सर्वोच्च परीक्षाओं में पाठ्य ग्रंथ है। मूल्य साक्षी २॥१, सनित् ३।

### तुलसी-कृत रामायण

रामायण हिंदुओं का कितना पवित्र ग्रंथ है! इसका आदर्श भारतवर्ष के कोने-कोने में, मंडलों से ओपशियों-पर्यंत, है। इसके सैकड़ों संस्करण निकल चुके हैं। पर वास्तव में अथ तक विरले ही संस्करण विजडुज शुद्ध और चंपकरहित प्रकाशित हुए हैं। रामायण ऐसे पवित्र, अममोच्य ग्रंथ की इस महान् धमी को देखकर दुःख होता था, और इसी को पूरा करने के विचार से हमने इसे खडों में छापना शुरू किया है। भरसक बहिरंग और अंतरंग, दोनों को सुंदर बनाने की काशिश की है। चित्रों की सुंदरता और भावों पर पाठकों का प्रेम उमदता है, इसी कारण हमने इसमें अनेक रंगीन और सादे चित्र भी दिए हैं, साथ-साथ अतर्क्याओं का भी समावेश कर दिया गया है। संक्षेप में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि रामायण को सचमकार से सुंदर एवं सर्व सुजम बनाने का प्रयत्न किया गया है।

यह रामायण २० खडों में प्रकाशित हो रही है। प्रत्येक खड में ८० पृष्ठ, बीसों सादे और २० रंगीन चित्र रहेंगे। साइज सुधा का-सा मध्य होगा। मूल्य प्रत्येक खड का १॥१) होगा, अर्थात् कुल रामायण २५) की होगी। कारण, उसमें १६०० से ऊपर पृष्ठ और सैकड़ों रंगीन तथा सादे चित्र रहेंगे।

हिंदी प्रेमी मात्र से अनुरोध है कि कृपा कर वे स्वयं प्राइड बनने, और अपने इष्ट मित्रों को भी बनाएँ। इस सहायता से हमारे

क्षोयन की एक योजना गूढ ही जायगी, और आपके हाथों में एक अनुपम प्रथम-रथ ही जायगा। मुख्य दृष्ट प्रकार रक्खा गया है—

१ प्रत्येक खर का मूल्य ११) है। डाक-गण्य अलग।

२ प्रथम चार खंडों का मूल्य ५) ही खिया जायगा। किंतु ये ५) एक साथ, आरम्भ में ही, भेजने होंगे। डाक-धर्य मात्र रहेगा।

३ पूरे २० खंडों का गियायता मूल्य २०) होगा। डाक-धर्य कुछ भी न खिया जायगा। २०) पेशगी भेज देने होंगे।

आप भी प्राइव्क में नाम लिखायें, और साथ ही अपने मित्रों से अनु रोध करें। एक प्रति मंगाकर देखें। छपते ही २०० प्रतिगों बिक गईं।

व्यवस्थापक गंगा-अ थागार, लखनऊ

